मुख्याधिकारी

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के शुद्धाचारी पूज्य श्री खुबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य स्व. तपस्वीजी श्री केवल ऋषिजी महाराज! आप श्रीने मुझे साथ ले महा परिश्रम से हैद्राबाद जैसा बड़ा क्षेत्र साधुमार्गीय धर्म में प्रसिद्ध किया व परमोपदेश से राजाबहादुर दानवीर लाला सुखदेव सहायजी ज्वाला प्रसादजी को धर्मप्रेमी बनाये उनके प्रतापसे ही शास्त्रोद्धार जैसा महा कार्य हैद्राबाद में हुए इस लिये इस कार्य के मुख्याधिकारी आपही हुए जो जो भव्य जीवों इन शास्त्र द्वारा महालाभ प्राप्त करेंगे वे आपही के कृतज्ञ होंगे

शिशु अमोल ऋषि

उपकारी महात्मा

परम पूज्य श्री कहानजी ऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के कविवरेन्द्र महा पुरुष श्री तिलोक ऋषिजी महाराज के पाटवीय शिष्य वर्य, पूज्यपाद गुरु वर्य श्री रत्नऋषिजी महाराज! आप श्री की आज्ञासे ही शास्त्रोद्धार का कार्य स्वीकार किया और आप के परमाशिर्वाद से पूर्ण कर सका इस लिये इस कार्य के परमोपकारी महात्मा आप ही हैं आप का उपकार केवल मेरे पर ही नहीं परन्तु जो जो भव्यों इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे उन सबपर ही होगा

दास अमोल ऋषि

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के पूज्य पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कवि श्री नागचन्द्रजी महाराज! इन शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचीन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समय २पर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदद देते रहनेसेही मैं इस काय को पूर्ण कर सका इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्वारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे

गुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य, आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्रीअमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश काय को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तले दबे हुओ हम आप के बडे आभारी हैं

मघकी तर्फ से

अपनी छती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाका बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोपचार का सयोग मिला दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगीसे वातालाप,कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया जिन से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके इस लिये इस कार्य पहले उक्त मुनिवरों का भी बड़ा उपकार है

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहन लालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी,तपस्वीजी माणकचन्द्जी,कवीवर श्री अमी ऋषिजी,सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी व श्री नथमलजी व श्री जोरावरमलजी कविवर श्री नानचन्द्रजी प्रवर्तिनी सतीजी श्री पार्वतीजी गुणग्र- सतीजी श्री रंभाजी धोराजी सर्वज्ञ भंडार, भीनासरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बाँठीया, लींबडी भंडार, कुचेरा भंडार, इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जौहरी वर्ग में श्रेष्ठ दयाधर्मी दानवीर राजा बहादुर लालाजी साहेब श्री सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी!

आपने साधु सेवा के और ज्ञान दान जैसे महा लाभके लोभी बन जैन साधुमार्गीय धर्म के परम माननीय व परम आदरणीय बत्तीस शास्त्रों को हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने को रु २००००, का खर्चकर अमूल्य देना स्वीकार किया और यूरोप युद्धारंभ से सब वस्तु के भाव में वृद्धि होने से रु ४०००० के खर्च में भी काम पूरा होनेका संभव नहीं होते भी आपने उस ही उत्साह से काम को समाप्त कर सबको अमूल्य महालाभ दिया, यह आप की उदारता साधुमार्गीयों की गौरव दर्शक व प्रशंसनीय है!

खोलाला (काठीयावाड़) निवासी धर्म प्रेमी कार्यदक्ष कृतज्ञ मणिलाल शिवलाल शेठ! इन्होंने जैन ट्रेनिंग कॉलेज रतलाम में संस्कृत प्राकृत व अंग्रेजी का अभ्यास कर तीन वर्ष उपदेशक रह अच्छी कौशल्यता प्राप्त की इन से शास्त्रोद्धार का कार्य अच्छा होगा ऐसी सूचना गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज से मिलने से इन को बोलाए, इन्होंने अन्य प्रेस में शुद्ध अच्छा और शीघ्र काम होता नहीं देख शास्त्रोद्धार प्रेस कायम किया और प्रेस के कर्मचारियों को उत्साही कार्य दक्ष बना काम किया तैसे ही भाषानुवाद की प्रेसकॉपी बनाई, यद्यपि यह भाई पगार से रहे थे तथापि इन्होंने इस कार्य की सेवा वेतन के प्रमाण से अधिक की इस लिये इनको भी धन्यवाद देते हैं

भूमिका.

यद्यपि यह शास्त्रोद्धार मीमांसा सब शास्त्रों के प्रस्तावना रूप है इसलिये इस की प्रस्तावना करने की कुछ जरूर नहीं है, तथापि यह अलग एक ग्रन्थ ही रूप होने से इस का संक्षिप्त उल्लेख पाठक गणों को दर्शाने के लिये यहां उचित समझ कर कुछ वचोद्गार प्रगट करता हूं

स्याद्वादोवर्तते यस्मिन्। पक्षपातो न विद्यते॥ नास्त्यन्य पीडन किंचिज्जैनधर्म स उच्यते ॥१॥

अर्थात्—जो धर्म स्याद्वाद शैली युक्त होने से ही जिस में किसी का भी पक्षपात नहीं है और जिस धर्म क्रिया में किंचिन्मात्र किसी भी जीव को पीडा का प्रसंग प्राप्त नहीं होता है उस ही धर्म को जैन धर्म कहते हैं

एसे जैनधर्म के प्रवर्तक व स्वरूप दर्शक अर्हन्त प्रणित और गणधरों रचित जो शास्त्रों हैं सो सब अर्धमागधी प्राकृत भाषा में है इस भारत वर्ष की पुण्य भूमि रूप आर्यालय की भी प्राचीन भाषा यही थी ऐसा अनुमान ६०० ७०० वर्ष पहिले के रचित ग्रन्थों पर से ही सहज होता है नन्तर इस भाषा का अपभ्रंश हो यह मिश्र भाषा बनी कि जिस में इस वक्त में बोलाती हुई हिन्दी गुजराती महाराष्ट्रिक भाषा का रूप झलकने लगा १५वी १६वी शताब्दी के ग्रन्थों पर से यह भी माल्म होता है नन्तर यही भाषा अलग २ भाषा के सचे में ढलकर अपने २ खास नाम रूप बनी तो भी हरेक में मागधी भाषा का मेल अभीतक कायम रहा है मतलब की जो यह शास्त्रों का भाषानुवाद हिन्दी

भाषा मय किया गया है यह कुछ अलग नहीं है परन्तु माता पुत्री रूप घनिष्ट संबंधवाली ही है

मेरी मातृ भाषा मारवाडी है और जन्म क्षेत्र भाषा यवनी (उरदू) है दीक्षा लिये बाद शास्त्रों के मय में तथा अन्य अनेक ग्रन्थों के पढने से तथा बारा महिने गुजरात में और इग्यारह महिने बम्बइ में रहने से गुजराती भाषा भी अच्छी तरह बोलने लिखने लगा और पश्चात महाराष्ट्र [दक्षीण] देश में आने का प्रसंग प्राप्त होने से इस देश निवासी लोगों पर स्वदेशी भाषा का असर अधिक होने से उपकार अच्छा होगा ऐसा जान खास शिक्षक द्वारा व्याकरण युक्त मराठी भाषा का अभ्यास किया इस प्रकार मुझे चारों भाषा में बोलने का तथा लिखने का बहुधा प्रसंग प्राप्त होने से तथा लिखती व बोलती वक्त में भाषा से भी विषय का अधिक सुधारा करने का लक्ष रहने से भाषा की गडबड होजाती है इसलिये पाठक गण जो मूलाशय पर लक्ष रख कर ही मेरे हस्त लिखित ग्रन्थों का पठन करेंगे तो ही उन का यथा तथा लाभ प्राप्त कर सकेंगे

इस शास्त्रोद्धार मीमांसा के चार प्रकरण (विभाग) किये गये हैं प्रथम प्रकरण "सनातन शास्त्रोद्धार" इस में अनादि से अनन्त काल तक शास्त्रों की आस्ति किस प्रकार से है, तथा श्री ऋषभदेव भगवान से लगा कर वर्तमान काल तक शास्त्रोद्धार किस प्रकार से हुवा लुप्तालुप्त किस प्रकार से हुवे जिसका व अब भी शास्त्रोद्धार होने की परमावश्यकता है वगैरह कथन किया है दूसरा प्रकरण 'वर्तमान शास्त्रोद्धारक" इस में मेरी तीन पीढियों का कथन मेरे हाथ से लिखा है इसे पढकर अनाभिज्ञ जनों आत्मश्लाघा का दोषारोप मेरे पर जरूर करेंगे ऐसा मैं जानता हुवा भी मैंने यह लिखा, इस का कारण—अपने जीवन का आप स्वयं जिस प्रकार ज्ञाता होता है उस प्रकार दूसरा नहीं हो

सकता है भव्य भव्य का जीवन लिखते हुवे उस में अनुमान से कितनीक अत्युक्ति भी लिख डालते हैं पर दोषारोप इस में नहीं हो सकता है हां जिस प्रकार गुण लिखे जाते हैं उस प्रकार दुर्गुणों का चित्र कोइ क्वचित ही करते होंगे, परन्तु कुछ इस दोष का भी निराकरण इस में देखा जायगा इतने पर भी जो आत्मश्लाघा का दोषारोपण करने वाले कदाचित् महावीर भगवान पर भी यह दोषारोप करेंगे, क्योंकि भगवानने आचारांग के दोनों श्रुतस्कन्ध के अन्त में तथा भगवती सूत्र में अपने जीवन का कथन किया है कोइ कहेंगे कि वे तो वीतराग थे तो अनिकसेनादि साधुओं में के एक साधुने देवकी रानी के आगे और अनाथी निर्ग्रन्थ ने श्रेणिक राजा के आगे अपना संक्षिप्त जीवन कहा है इसलिये प्रसंगानुपेत अपना जीवन आप कथे तो कुछ दोष का कारण नहीं है इस जीवन में से दूसरा श्रद्धा प्रश्नोत्तर, सत्संग वगैरा प्रकरणों इस जमाने के श्रावक और साधुओं को बडे अनुकरणीय हैं तीसरा प्रकरण "अमूल्य शास्त्र दान दाता" इस में लालाजी की चार पीढीओं का जीवन चित्रागया है इसे पढकर कोइ खुशामदी की, ऐसा दोषारोपण करेंगे उन को जानना चाहिये कि दश श्रावकों का उपासकदशांग में तथा तुंगीया नगरी के श्रावकों का वगैरा कथन जो शास्त्रों में किया है वह खुशामदी नहीं कह जायगी, परतु संक्षिप्त गुणोंका कथन ही माना जायगा, तैसे ही यह भी जानना लालाजी का जीवन इस वक्त के श्रीमान धर्मात्माओं को बहुत ही अनुकरणिय है चौथा प्रकरण 'वर्तमान शास्त्रोद्धार" इस में यहां हुआ शास्त्रोद्धार कार्यारंभ से लगा कर अंत तक जिस २ प्रकार का बनाव बना जिस का कथन है 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि" इस कथनानुसार इस कार्य कर्ताओं पर किस२ प्रकार विघ्न प्राप्त हुवे और उन विघ्नों में किस २ प्रकार सहनशीलता धारन कर कथनानुसार तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में बत्तीस शास्त्रों के अंदाज २४०००० श्लोकों का लेख तथा साढी चार वर्ष में सब छपाइ

का काम समाप्त किस प्रकार किया है इस का दिग्दर्शन है, वसमान में अन्य स्थान होते हुवे शास्त्रोद्धारादि कामों के जोड में रख अवलोकन करेंगे तो जरुर ही यह बेजोड जाना जायगा विशेष क्या कहें यह प्रकरण आगे कार्य कर्ताओं को मार्गानुसारी बनाने जैसा है पांचवी "अन्तिम विज्ञप्ति" हैं जिस में आत्म बोध व श्लाघा का खुलासा किया है, वैसे ही आज तक यहां प्रगट हुए अमूल्य दीगइ १२५९५० पुस्तकों का लिए तथा लालाजी की तरफ से जैनधर्मार्थ ११६००० रुपे की सखावत का लिष्ट भी ध्यान में लिजीये !

इस मीमांसा का लेख लिखती वक्त मेरे पास ऐतिहासिक ग्रन्थों का अभाव होने से कितनेक स्थान चूक हो गई है जैसे वरजगजी यति के पास से श्री लवजी ऋषिजी ठाणे चार से निकले यह भ्रम हैं परतु श्री लखमी ऋषिजी, श्री थोभणजी ऋषिजी, और संखजी ऋषिजी यह ३ निकले हैं पीछे से कहानजी ऋषिजी महाराज की दीक्षा हुई है और जो लोंकाजी की दीक्षा तथा संथारा का लेख किया है वह सं० १८०० की लिखी हुई प्राचीन पाटावली की प्रत खींम्वरी भंडार से प्राप्त हुई जिस में से लख किया गया है

मैं श्री माधवजी स्वामीका बडाही 'आभार' मानता हूं क्योंकि इनही महापुरुषकी कृपा द्वारा उक्त प्राचीन पाटावली प्राप्तकर सका और शास्त्रों तीर्थंकर भाषित हैं या आचार्य भाषित हैं इस बाबत बहुत विद्वान पूज्य मुनिवरों से कितनेक प्रश्नोत्तर पत्र द्वारा पूछे गये थे परंतु सर्वोत्तम और यथोचित खुलासा इन ही महात्मा के तरफ से प्राप्त हुवा इस लिये मैं इन महात्मा का आभारी हूं

अमोल ऋषि

बालब्रह्मचारी पण्डित मुनिवर श्री अमोलक ऋषिजी महाराज के सद्बोध से
प्रसिद्धि में आ अमूल्य दीगई पुस्तकें

नंबर	पुस्तकों के नाम	आवृति	रॉयल व डेमी फारम पेज	पृष्ठ संख्या	प्रत संख्या
१	जैनतत्त्व प्रकाश	प्रथमावृति	डेमी ८ पेजी	५८१	२०००
"	"	द्वितीयावृति	रॉयल ८ पेजी	७०२	२०००
"	"	तृतीयावृति	"		२०००
२	परमात्म मार्ग दर्शक	प्रथमावृति	"	५१४	१०००
३	मुक्ति सोपान गुणस्थान रोहण अढीशत द्वारी	"	"	३४०	१०००
४	धर्मतत्त्व संग्रह	"	डेमी ८ पेजी	२००	१५००
	"	द्वितीयावृति	रॉयल १६ पेजी	२५५	१०००
	" गुजराति	प्रथमावृति	"	१४०	१२००
५	ध्यानकल्पतरु ग्रंथयुत	"	डेमी ८ पेजी	१८८	१२५०
	"	द्वितीयावृति	"	४११	१५००
	" गुजराति	प्रथमावृति	"		५००

१	अपोद्धार कथाग र	प्रथमावृत्ति	डेमी ८ पेजी	११४	१५००
७	मदन श्रेष्ठ चारित्र	,,	रॉयल १२ पेजी	१२८	१०००
८	धन्यसेन लीलावति चरित्र	,,	,,	२८८	१२००
९	जयसेन विजयसेन चरित्र	,,	,,	१८८	१०००
१०	वीरसेन कुसुमश्री चरित्र	,,	,,	१७०	१०००
११	जिनदास सुगुणी चरित्र	,,	,,	१२०	१०००
१२	सिंहल कुमार चरित्र	,,	,,	५०	१०००
१३	मंदिरासती चरित्र	,,	,,	४८	१०००
१४	भुवन सुन्दरी सती चरित्र	,,	,,	३०	१०००
१५	सम्वेग सुधासोनी चरित्र	,,	,,	२८	२०००
१६	भीमसेन हरीसेन चरित्र	,,	रॉयल १६ पेजी	१२६	१०००
७	श्रीकेवल ऋषिजी जीवन	,,	,,	१६०	११००
१८	सती संवत्सरी	,,	,,	७२	२००
१९	सद्धर्मबोध-मराठी भाषा में	,,	,,	११२	१०००
	,,	द्वितीयावृत्ति	,,	१२२	१०००
	,,	तृतियावृत्ति	,,	१४४	१०००
	,,	चतुर्थावृत्ति	,,	१५६	१५००
	,,	पंचमावृत्ति	,,	१७०	२०००

२०	जैनापूल्य सुधा पद्य	प्रथमावृति	डेमी १६ पेजी	१४९	१०००
२१	तत्त्वनिर्णय	"	डेमी ८ पेजी	२०	२०००
२२	नित्य स्मरण	"	रॉयल ३२ पेजी	४०	२०००
२३	नित्य पठन	"	रॉयल १६ पेजी	१८	५००
२४	श्री तीर्थंकर सहस्री	"	डेमी २४ पेजी	४८	१५००
२५	प्रात पाठ	"	डेमी ३२ पेजी	३२	२०००
२६	श्री वीरस्तुति पद्यात्मक	"	रॉयल ३२ पेजी	४०	२०००
२७	शास्त्रोद्धार मीमांसा	"	रॉयल १२ पेजी	१२४	११२९

इतनी पुस्तकों श्री अमोलक ऋषिजी महाराज की बनाई हुई है ४६५७५

श्री अमोलक ऋषिजी महाराज के हाथ से शुद्धावृति लिखवाकर छपी पुस्तके

नंबर	पुस्तकों के नाम	आवृत्ति	रॉयल व डेमी फारम	पृष्ट संख्या	प्रत संख्या
१	केवलानन्द छन्दावली	प्रथमावृत्ति	रॉयल १६ पेजी	९६	२०००

१	केवलानन्द छन्दावली	द्वितीयावृत्ति	रॉयल १६ पेजी	११८	५००
		तृतीयावृत्ति	,,	१४३	१०००
		चतुर्थावृत्ति	,,	१३२	१०००
२	मनोहर रत्नघनावली	प्रथमावृत्ति	,,	१५४	१०००
३	जैनसुबोध हीरावली	,,	,,	२७८	१०००
४	जैनसुबोध रत्नावली	,,	,,	२००	१०००
५	जैन शिशु बोधिनी	,,	डेमी १६ पेजी	४८	१५००
६	जैन गणेश बोध	,,	,,	२०२	१२००
७	साथ भक्तामर हिन्दी	,,	डेमी १६ पेजी	५०	१०००
८	भक्तामर मूल	,,	,,	१८	१०००
९	युरोप में जैन धर्म	,,	,,	२८	५००
१०	मास पाठ धर्मफल प्रश्नोत्तरी	,,	डेमी ३२ पेजी	५८	१००००
११	अनुपूर्वीयों	सात आवृत्ति	डेमी ६४ पेजी	२८	१००००
१२	पञ्चकल्याण	प्रथमावृत्ति	रॉयल १६ पेजी	१३	१८००
					३३७००
					कुल ८०२७५

मणिलालजी के हाथ से लिखी और श्री अमोलक ऋषिजी महाराज से शुद्ध कर छपी पुस्तके

नंबर	पुस्तकों के नाम	आवृत्ति	रॉयल व डेमी फारम	पृष्ठ संख्या	प्रत संख्या
१	जैन सुबोध अमृतावली	प्रथमावृत्ति	डेमी १२ पेजी	३०५	१०००
२	श्रावक नित्य स्मरण	द्वितीयावृत्ति	डेमी ८ पेजी	११८	१०००
३	आत्महित बोध	”	डेमी १६ पेजी	१५५	१५००
४	श्रावक व्रत	प्रथमावृत्ति	”	७५	२०००
५	गुलाबी प्रभा	”	रॉयल १६ पेजी	९४	१२५०
६	शास्त्र स्वाध्याय	”	रॉयल ३२ पेजी	६४	५००
७	स्वर्गस्थ मुनि युगल	”	रॉयल १६ पेजी	६६	५००
८	जैन ज्ञान संग्रह	”	डेमी ८ पेजी	७२	५००
					८२५०
					कुल ८८५२५

श्री साधुमार्गीय जैनधर्म के परम माननीय व आदरणीय अर्हन्त प्रणित
३२ शास्त्रों सब रायल फारम १२ पेजी परही छपाये गये
जिन के नाम पृष्ठ संख्या व प्रत संख्या

नंबर	शास्त्रों के नाम	पृष्ठ सं.	प्रत सं	नंबर	शास्त्रों के नाम	पृष्ठ स	प्रत सं
१	आचारांगजी	६२८	११००	११	विपाकजी	२०४	११२५
२	सुयगडांगजी	५५८	११२५		सुख विपाकजी	२४	१००
३	ठाणांगजी	९००	११२५	१२	उववाईजी	२१६	११२५
४	समवायांगजी	३१२	,,	१३	रायप्रसेणीजी	३०८	,,
५	भगवतीजी	३०९०	,,	१४	जीवाभिगमजी	७३८	,,
६	ज्ञाता धर्मकथांगजी	६९२	,,	१५	पन्नवणाजी	१३५८	,,
७	उपासक दशांगजी	१५६	,,	१६	जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिजी	६२४	,,
८	अंतगड दशांगजी	१३८	,,	१७	चन्द्रप्रज्ञप्तिजी	६१२	,,
९	अनुत्तरोववाइ दशांगजी	४०	११२५	१८	सूर्य प्रज्ञप्तिजी	४००	,,
१०	प्रश्न व्याकरणजी	२२८	११२५				,,

१० } २० २१ २२ २३	निरियावलिकादि पंचक	१८०	११२५	२६	निशीथजी	२४३	११२५
				२७	दशाश्रुतस्कन्धजी	१४८	"
				२८	दशवैकालिकजी	२४४	१५००
				२९	उत्तराध्ययनजी	६५२	१५००
				३०	नन्दीजी	२११	११२५
२४	व्यवहारजी	,	"	३१	अनुयोगद्वारजी	३८०	"
२५	बृहद्कल्पजी	९६	,	३२	आवश्यकजी	४८	,

यों पुस्तकों शास्त्रों सब मिलकर १२०९५० होते हैं परंतु निरियावलिकादि पंचक पांच शास्त्र होकर एक ही शास्त्र गिना है इस लिये ४०००४ अधिक गिनने से सब १२४९५० पुस्तकें प्राय × अमूल्य ही दी गई हैं } ३२४२५ कुल १२०९५०

× यहां प्राय' शब्द लगाने का यह मतलब है कि—जैनामूल्य सुधा बंबइ के श्री रत्नचिंतामणी जैन मित्र मंडल की तरफ से, गुजराती स्थानकस्वतरु मांगरोल वालेकी तरफ से, १०० प्रत शास्त्रों की मणिलाल भाइ की तरफ से, और अनन्तप्रकाश प्रथमावृत्ति की कुछ प्रतों लालालाल भाइ की तरफ से मूल्य लेकर दीगइ है बाकी सब अमूल्य ही दीगइ है

श्रीमान् राज्यमान् दानवीर जैन स्थम्भ राजाबहादुर लालाजी सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी हैद्राबाद (दक्षिण) वालोंने जैन धर्म के लिये किया हुआ १२६००० रुपे के सद्व्यय की यादि

रु० ४२०००, जैन धर्म के परममाननीय बत्तीस शास्त्रोद्धार के कार्यार्थ
रु० २००००, प्रगटस्थान कॉन्फरन्स, प्रेस, स्थानकादि चन्दे वगैरा शुभकार्यों में
रु० १००००, कान्फरन्स के मडप भोजन व इनाम में दिया हुआ खर्च
रु० १००००, तीन महा पुरुषों की दीक्षा के लिये किया हुआ खर्च
रु० ७०००, जैनतत्त्व प्रकाश वगैरा पुस्तकों के अमूल्य देने में
रु० ११०००, जैन सीक्षतेओं को तथा आये गये को दिया हुआ गुप्तदान
रु० २००००, फुटकर मकान का भाडा प्रभावना जीवदया आदि का खर्च
रु० १६०००, जैन मंदिर जो हैद्राबाद में साधु के दर्शन हुए पहिले बनाया हुआ
यों १२६०००, रुपे का खरच तो शिर्फ जैन धर्मार्थ किया ऐसा अंदाज से यहां लिखा जाता है इस से कमी होने का संभव नहीं है.

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

॥ शास्त्रोद्धार–मीमांसा. ॥

॥ मङ्गलाचरणम् ॥

॥ णमो अरिहंताणं, णमोसिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥

इष्टित र्थ की सिद्धि के लिये प्रथम अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधु को विशुद्ध मन वचन व काया के योगों से साविनय नमस्कार करता हू

श्री गुमानपाई गोलेछा की तरफ से भेंट–

॥ प्रवेशिका ॥

गाथा—णाणस्स सव्वस्स पगासणाए । अण्णाण मोहस्स विवज्जणाए ॥
रागस्स दोसस्स य संखएण । एगंत सोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥
उत्तराध्ययन अ० ३२ ॥

(१) इस अनादि अनंत विश्वालय के निवासी जीवों के हृदय में अनादि परिणत राग द्वेष रूप मोह से उत्पन्न होती अज्ञान रूप घोर अंधकार आच्छादित हो रहा है इस से जीव एकांत निरामय शाश्वत मोक्ष के सुख प्राप्त नहीं कर सकता है इस अज्ञान से उत्पन्न होता मोह और मोह से उत्पन्न होते राग द्वेष का समूल नाश करके सर्व स्थान में प्रकाश करनेवाला और मोक्ष सुख देनेवाला ज्ञान ही है (२) मानो इस ही ज्ञान का महात्म्य बताने के लिये अनादि सिद्ध सर्व माननीय श्री नमस्कार महा मंत्र में परमेश्वर श्री सिद्ध भगवान का द्वितीय पद में नमस्कार कर प्रथम ज्ञानप्रसारक ज्ञान दाता श्री अरिहंत भगवान को नमस्कार किया है (३) श्री अरिहंत भगवानने श्री उत्तराध्ययन के २८ वे अध्ययन में मोक्ष गमन के चार कारन बताये हैं उस में प्रथम पद ज्ञान को ही दिया है

गाथा—णाणं च दसण चेव । चरित्तं च तवो तहा ॥
एय मग्ग मणुपत्ता । जीवा गच्छंति सोग्गई ॥ १ ॥

अर्थ १ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र और ४ तप, इन चारों का अनुक्रम से आराधन करनेवाला जीव सुगति मोक्षगति में जाता है इस लिये ज्ञान ही सब से उत्तम है (४) श्री दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन में कहा है कि—" पढम नाण तओ दया " प्रथम ज्ञान और फिर दया अर्थात् ज्ञान से जीवाजीव का स्वरूप जानेगा जीवाजीव का स्वरूप जानने से उस की दया पाल सकेगा

इस प्रकार ज्ञान की महिमा शास्त्र में स्थान २ पर की है श्री जिनेश्वर भगवानने ज्ञान के पांच प्रकार कहे हैं जिस में से अधिक उपकारी श्रुत ज्ञान फरमाया है श्री अनुयोग द्वार सूत्र के प्रारंभ में ही ज्ञान का कथन किया है सो देखिये

सूत्र—णाणं पंचविहं पण्णत्तं तंजहा—आभिणिबोहियणाणं, सुयणाणं, ओहि णाणं, मणपज्जव णाणं, केवल णाणं, तत्थ चत्तारि णाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं, णो उद्दिस्संति, णो समुद्दिस्संति, णो अणुण्णविज्जंति, सुयणाणस्स उद्देसो, समुद्देसो अणुण्णा अणुयोगोय पवत्तइ—अनुयोगद्वार

॥ प्रवेशिका ॥

गाथा—णाणस्स सव्वस्स पगासणाए। अण्णाण मोहस्स विवज्जणाए॥
रागस्स दोसस्स य संखएणं। एगंत सोक्खं समुवेइ मोक्खं॥ २॥
उत्तराध्ययन अ० ३२॥

(१) इस अनादि अनंत विश्वालय के निवासी जीवों के हृदय में अनादि परिणत राग द्वेष रूप मोह से उत्पन्न होती अज्ञान रूप घोर अंधकार आच्छादित हो रहा है इस से जीव एकांत निरामय शाश्वत मोक्ष के सुख प्राप्त नहीं कर सकता है इस अज्ञान से उत्पन्न होता मोह और मोह से उत्पन्न होते राग द्वेष का समूल नाश करके सर्व स्थान में प्रकाश करनेवाला और मोक्ष सुख देनेवाला ज्ञान ही है (२) मानो इस ही ज्ञान का महात्म्य बताने के लिये अनादि सिद्ध सर्व माननीय श्री नमस्कार महा मंत्र में परमेश्वर श्री सिद्ध भगवान का द्वितीय पद में नमस्कार कर प्रथम ज्ञानप्रसारक ज्ञान दाता श्री अरिहंत भगवान को नमस्कार किया है (३) श्री अरिहंत भगवानने श्री उत्तराध्ययन के २८ वे अध्ययन में मोक्ष गमन के चार कारन बताये हैं उस में प्रथम पद ज्ञान को ही दिया है

गाथा—णाणं च दंसणं चेव । चरितं च तवो तहा ॥
एय मग्ग मणुपत्ता । जीवा गच्छंति सोग्गई ॥ ३ ॥

अर्थ १ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र और ४ तप, इन चारों का अनुक्रम से आराधन करनेवाला जीव सुगति मोक्षगति में जाता है इस लिये ज्ञान ही सब से उत्तम है (४) श्री दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन में कहा है कि—" पढम नाण तओ दया ", प्रथम ज्ञान और फिर दया अर्थात् ज्ञान से जीवाजीव का स्वरूप जानेगा जीवाजीव का स्वरूप जानने से उस की दया पाल सकेगा

इस प्रकार ज्ञान की महिमा शास्त्र में स्थान २ पर की है श्री जिनेश्वर भगवानने ज्ञान के पांच प्रकार कहे हैं जिस में से अधिक उपकारी श्रुत ज्ञान फरमाया है श्री अनुयोग द्वार सूत्र के प्रारंभ में ही ज्ञान का कथन किया है सो देखिये

सूत्र—णाणं पंचविह पण्णत्तं तंजहा—आभिणिबोहियणाणं, सुयणाणं, ओहि णाणं, मणपज्जव णाणं, केवल णाणं, तत्थ चत्तारि णाणाइं ठप्पाइं ठवणिज्जाइं, णो उद्दिस्संति, णो समुद्दिस्संति, णो अणुण्णविज्जंति, सुयणाणस्स उद्देसो, समुद्देसो अणुयोगोय पवत्तइ—अनुयोगद्वार

अर्थ-श्री तीर्थंकर भगवानने ज्ञान के पाच प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ आभिनिबोधिक ज्ञान (मतिज्ञान) २ श्रुत ज्ञान, ३ अवधि ज्ञान, ४ मन पर्यव ज्ञान और ५ केवल ज्ञान इन पाच में से श्रुत ज्ञान सिवाय शेष चार ज्ञान का वर्णन नहीं करना क्यो कि-वे लोक में व्यवहारोपयोगी नहीं हैं अर्थात् परोपकार नहीं करसकते हैं मात्र एक श्रुत ज्ञान से ही १ उद्देश-पढने की आज्ञा, २ समुद्देश-पढा हुवा ज्ञान में स्थिर करना, ३ अनुज्ञा-अन्य को पढाने की आज्ञा करना और ४ अनुयोग विस्तार से पढाना यह चार कार्य किये जाते है इस लिये यही परोपकारी है

यह तो स्पष्ट ही है कि पूर्वोक्त चार ज्ञानवाले उत्तम पुरुष ज्ञान में जाने हुवे पदार्थ के तत्त्वातत्त्व का स्वरूप श्रुत ज्ञान द्वारा ही अन्य लोगों को समझा सकते हैं इस श्रुत ज्ञान के ही परम प्रताप से श्रोतागण ज्ञानी बनकर सम्यक्त्वादि गुणों के धारक होते हैं और चारित्र व तप का आचरण कर अनंत अक्षय शाश्वत मोक्ष सुख प्राप्त करने में समर्थ होते हैं इस लिये मुमुक्षु जीवों को प्रथम श्रुत ज्ञान की ही परम आवश्यकता है

प्रथम प्रकरण "सनातन शास्त्रोद्धार"

यद्यपि आत्मा का निजगुन ज्ञान अनादि अनत है तथापि वह "धातु मृत्तिकावत्" अनादि कर्म बंध से आच्छादित हो रहा है अब जिस प्रकार अग्नि क्षारादि प्रयोग से अनादि सबधवाली धातु को छोडाकर निज स्वरूप में लाने के लिये सुवर्णकार कारणभूत होता है वैसे ही जीव को भी अनादि कर्म सबध से मुक्त कर निज स्वरूप में लाने के लिये दो कारन हैं तद्यथा—" तन्निसर्गादधिगमाद्वा " अर्थात् १ निश्चय में तो निसर्ग से अर्थात् अनतानुबधी कषायादि मोहनीय कर्म की प्रकृतियों का क्षय व क्षयोपशम से और व्यवहार में अधिगम स अर्थात् गुरु के सद्बोध से, व्यवहार से निश्चय का साधन होता है, और निश्चय से व्यवहार फलद्रूप होता है, यों परस्पर दोनोंका घनिष्ट सबध है तथापि छद्मस्थ के लिये व्यवहार साधन की मुख्यता होने से इस स्थान इस का ही विस्तार से कथन किया जायगा

श्री उत्तराध्ययन सूत्र के तीसरे अध्ययन में भगवानने कहा है तद्यथा—

गाथा—कम्माण तु पहाणाए । आणुपुव्वी कयाइओ ॥
जीवा सोहि मणुप्पत्ता । आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥

जिस प्रकार नदी में पडे हुए अनेक पत्थरों में से मात्र कोइक पत्थर पानी के सघर्षण से घसाता हुवा वर्तुल, चिकना व स्वच्छ बनता है वैसे ही इस अनादि अनत ससार रूप नदी के प्रवाह में अनन्त जीव रूप पत्थरों में से किसी जीव को स्वभाव से उत्कर्ष प्राप्त करने का अवसर मिलता है, तब सूक्ष्म निगोद में रहा हुवा चैतन्य स्वभाव रूप अक्षर के अनतवे भाग ज्ञानमय आत्म शक्ति से प्राप्त होती शीत ऊष्ण वेदना वेदता हुवा, कर्मों की अकाम निर्जरा होने से ज्ञान की विशुद्धता को प्राप्त होता है उस ज्ञान शक्ति के परम प्रताप से ही जीव आवकाहिक निगोद में से उचक कर बाहिर निकलता है आगे ज्यों ज्यों ज्ञान शक्ति वृद्धि पाने लगती है त्यों त्यों कर्म वेदने के अनुभव की वृद्धि होती है उस ज्ञान शक्ति के परम प्रभाव से वेदना वेदते हुए जीव के

कर्मांश कमी होते २ सूक्ष्म नाम कर्म को निर्जरे तब वह बादरपने को प्राप्त होता है फिर स्थावर नाम कर्मकी निर्जरा कर त्रस नाम कर्मको प्राप्त होता है यों द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, असज्ञी पचेन्द्रिय सज्ञी पचेन्द्रिय, मनुष्यत्व, आर्यपना, यों क्रमश उन्नत अवस्था को प्राप्त होता हुआ यावत् सर्व घनघातिक कर्मों का नाश कर सर्वज्ञ सर्वदर्शी बनता है उस केवलज्ञान के परम प्रताप से सब कर्मों का नाश कर सिद्ध बुद्ध मुक्त हो मात्र केवलज्ञानमयही आत्मा बन जाता है तब वह परम आनदी व परम सुखी होता है

उक्त कथनानुसार घनघातिक कर्मों का नाश होने से आरिहत पद को प्राप्त होने वाला आत्मा अपनी गतानुगत अवस्था के ज्ञाता बन, जिस प्रकार अपना आत्मा निगोद से निकल कर अरिहत पद पर्यंत उन्नत अवस्था को प्राप्त हुआ है और भविष्यत् में सिद्ध के अनत अक्षय परम सुख को प्राप्त करने में समर्थ बना है उस ही प्रकार अन्य आत्मा भी बनो, मानो इस ही परम हेतु से (निश्चय में शेप अघातिक कर्मों का क्षय करने के लिये) देव दानव व मानव सब अपनी २

भाषा में समज सके, चारों ओर चार २ कोश में बैठी हुइ परिषदा अच्छी तरह श्रवण कर सके ऐसी दीव्य ध्वनि से ज्ञान का प्रकाश करते हैं और अरिहंत भगवान के अतिशय से आकर्षायी हुई बारह प्रकार की परिषद में अनेक जीव एकत्रित हो इस अपूर्व अनुपम परम प्रभाविक वाणी का श्रवण करते हुए नागपुंगीवत् तल्लीन—मस्त बन जाते हैं इतना ही नहीं अपितु उन के आत्माओं में शान्त, वैराग्य वीररस का प्रभाव विद्युत्शक्ति समान उछलने से कितनेक चक्रवर्ती बलदेव, मण्डलिक राजा सामान्यराजा राजपुत्र, क्षत्रिय, प्रधान, पुरोहित, सेनापति, इभ्य, श्रेष्टि वगैरह अपरिमित ऋद्धि संपदा आदि परिवार का श्लेष्मवत् त्याग कर आत्मोद्धार के लिये तत्पर हो अरिहंत कथित संयम मार्ग अंगीकार करते हैं कितनेक प्रत्याख्यानावरणीय कर्मोदय से संयम ग्रहण करने में असमर्थ होते है वे श्रमणोपासक बन कर सम्यक्त्व सहित बारह व्रत अंगीकार करते हैं, और अग्यारह प्रतिमा आदि क्रिया गृहवास में रहकर करते है कितनेक अप्रत्याख्यानावरणीय कर्मोदय से श्रावक व्रत आचरने में

असमर्थ बनकर अरिहत कथित मार्ग में श्रद्धालु बनकर अपना सर्वस्व अरिहत प्ररूपित धर्म के लिये अर्पण कर के राज्यादि सुख के भोक्ता होते हुए भी जलकमलवत् निर्लेप रहते हैं इस तरह जिनवाणी के परम प्रभाव से अनेक साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका देवता, देवी, तिर्यंच तिर्यंचणी रूप सघ होता है एसी तरह × जिन वाणी के परम प्रभाव से चौथे आरे में सर्वज्ञ प्रणित धर्म सपूर्ण आर्यावर्त में अद्वितीय रूप को धारन कर रहा था इन के सामने अन्य धर्म सूर्याभिमुखखद्योतवत् लुप्तप्राय ही हो रहे थे यह श्रुत ज्ञान ऐसा परम प्रभाविक है !

मागधी

जिस प्रकार वर्तमान समय की इस भारत वर्ष में हिन्दी भाष सार्वजनिक होने से उस में कोई भी मनुष्य समज सकता है उस ही प्रकार अरिहत के विद्यमान समय में अर्ध माग धी भाषा सार्वजनिक व बहु मान्य थी और खास करके मगध देश में इस का प्रचार बहुत था वैसे ही उस समय देवताओं का

× ४ जाति के देव, ४ जाति की देवांगना एवं ८ और ९ मनुष्य, १० मनुष्यणी, ११ तिर्यंच और १२ तिर्यंचना

आवागन भी भूमि पर बहुत होता था भगवती सूत्र के ५ वे शतक के ४ उद्देशे के * कथनानुसार देवताओं की भाषा भी अर्धमागधी होती है वह भाषा लोगों को बहु प्रिय थी इसी लिये अरिहत की दीव्य ध्वनि द्वारा निकलती हुइ वाणी अर्धमागधी भाषा मय परिणमती थी वह वाणी वर्णालंकार से सरकार युक्त, उच्च (बुलन्द)सरल, तुच्छता रहित , भाषा के गौरव युक्त उच्चार में वैसे ही तत्व में गंभीर, प्रतिध्वनि उत्पादक, राग युक्त, विविध रस मय, चित्ताकर्षक, विशेषार्थी, अविरुद्ध स्पष्टार्थी, नि शंकित, निर्दोष, देशकाल उचित, तत्वरूप, मार्मिक, सार्थक, अभिन्न, मध्यस्थ, चमत्कारिक, शकानिवारक, सापेक्षिक सात्विक, और पूर्ण उत्साह वर्धकादि गुण युक्त होने से परिषदा में रहे हुवे मनुष्य पशु पक्षी देवादि सब अपनी २ भाषा में समझते हैं तथापि उस परम वागेश्वरी को यथारूप सम्यक् प्रकार ग्रहण करने की सामर्थ्यता तो मात्र अरिहत के ज्येष्ट शिष्य गणधर ही धराते हैं क्यों कि-

---

* सूत्र देवाण भंते ! कयराए भासाए भासता कयरा वा भासा भासिज्जमाणे विसिस्सइ ? गोयमा ! देवाणं अद्ध मागहीए भासाए भासंति, सावियाणं अद्ध मागही भासा भासिज्जमाणी विसिस्सइ ॥ श० ५ उ ४ ॥

वे विशुद्ध विशाल विस्तीर्ण बुद्धि के धारक पूर्वों के ज्ञान के पाठी व परम स्मरण शक्तिवाले होते हैं अरिहंत रूप हेमाचल के मुखारविन्द रूप पद्मद्रह से दीव्य ध्वनि रूप परम पवित्र गंगा नदी, वाणी रूप पानी के प्रवाह को गंगा प्रपात कुंड रूप गणधर ग्रहण कर जगदोद्धारार्थ आगे चलाने के लिये सूत्र रूप रचना कर अनादि प्रवाह अनुसार गुण निष्पन्न नामों की प्रथक् २ स्थापन करते हैं यथा—श्री नंदी सूत्र में शास्त्रों के नाम इस प्रकार कहे हैं

सूत्र—अहवा त समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा अंगपविट्ठंच अनंग पविट्ठंच ॥ १ ॥ से किं त अनंग पविट्ठ च ? अनंग पविट्ठ च दुविहा पण्णत्तं तंजहा आवस्सय च आवस्सयवइरित्त च ॥ २ ॥ से किं तं आवस्सय ? आवस्सयं छव्विहा पण्णत्ता ? तंजहा सामाइयं, चउवीसथओ, वंदणयं, पडिक्कमणं, काउसग्गो, पच्चक्खाण, से तं आवस्सय ॥ ३ ॥ से किं तं आवस्सयवइरित्तं आवस्सयवइरित्त दुविहा पण्णत्ता तंजहा कालिय च उक्कालिय च ॥ ४ ॥ से किं तं उक्कालिय ? उक्कालिय अणगविहा पण्णत्ता तंजहा—१ दसवेयालिय २ कप्पियाकप्पिय ३ चुलकप्पसुयं, ४ महाकप्पसुय, ५ उववाइय, ६ रायपसेणिय, ७ जीवाभिगमो ८ पण्णवणा, ९ महा पण्णवणा, १०

पमायप्पमाय ११ नंदी, १२ अणुओगदाराइ १३ देविंदथुई १४ तदुलवेयालियं १५ चंदाविजय १६ सूरपण्णत्ति १७ पोरसी मंडल, १८ मंडलप्पवेसो १९ विज्जाचरण २० विणिच्छिओ गणिविज्जा, २१ झाण विभत्ति २२ मरणविभत्ति २३ मरण विभत्ति, २४ वीयरागसुयं, २५ सलेहणासुय, २६ विहारकप्पो, २७ चरणविही, २८ आउरपच्चक्खाण २९ महा पच्चक्खाणं, ३० एव माइयं से त उक्कालियं ॥ ५ ॥ से किं तं कालियं ? कालियं अणेगविहं पण्णत्ता तंजहा १ उत्तरज्झयणाइ, २ दसाओ, ३ कप्पो ४ ववहारो, ५ निसीथ ६ महानिसीथ, ७ ईसिभासियं ८ जंबुद्दीव पण्णत्ति ९ चंदपण्णत्ती, १० दीवसागर पण्णत्ती ११ खुड्डिया विमाणप विभत्ति १२ महल्लिया विमाणप विभत्ति १३ अंगचुलिया, १४ वग्गचुलिया, १५ विवाह चुलिया, १६ अरुणोववाए १७ वरुणोववाए १८ गरुलोववाए १९ धरणोववाए २० वेसमणोववाए २१ वेलंधरोववाए २२ देविंदोववाए २३ उट्ठाणसुय २४ समुट्ठाणसुय, २५ नागपरियावणियाओ, २६ निरयावलियाओ, २७ कप्पियाओ, २८ कप्पवडिंसीयाओ, २९ पुप्फियाओ ३० पुप्फचूलियाओ, ३१ वण्हिदसाओ एव माइयाइ चउरासीइ पइण्णग सहस्साणीइ भगवओ उसह सामियस्स आइतित्थयरस्स तहा संखिज्जाइ पइण्णग सहस्साइ मज्झिमगाण जिणवराण, चोद्दस पइण्णग सहस्साणि भगवओ वद्धमाण सामिस्स अहवा जस्स जत्तिआ सीसा उप्पत्तियाए विणइयाए, कम्मियाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्सतियाइ पइण्णग सहस्साइ पत्तेयबुद्धावि तत्तिया चेव से त कालिय से तं आवस्स

पइरित्तं से त अणंगपविट्ठं ॥ ३ ॥

पूर्वोक्त श्रुत ज्ञान के समास के दो प्रकार श्री तीर्थंकर देवने कहे हैं जिन के नाम १ अग प्रविष्ट और अग बाहिर ॥ १ ॥प्रश्न—अग बाहिर किसे कहते हैं ? अग बाहिर के दो भेद कहे हैं तद्यथा—आवश्यक व आवस्यक व्यातिरिक्त ॥ २ ॥ प्रश्न—आवश्यक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—आवश्यक के छ भेद कहे हैं तद्यथा—१सामायिक, २ चउवीसत्व, ३ वदना, ४ प्रतिक्रमण ५ कायोत्सर्ग और ६ प्रत्याख्यान यह आवश्यक शास्त्र हुए ॥ ३ ॥ प्रश्न—आवश्यक व्यतिरिक्त किसे कहते हैं ? उत्तर—आवस्यक व्यतिरिक्त के दो भेद कहे हैं तद्यथा १ कालिक सूत्र कि जो दिन के तथा रात्रि के प्रथम व चतुर्थ प्रहर में ही पढे जाते हैं और २ उत्कालिक शास्त्र ३२ अस्वाध्याय छोड कर चाए किसी समय पढसके ५ प्रश्न-उत्कालिक शास्त्र कितने हैं ? उत्तर उत्कालिक शास्त्र अनेक हैं तद्यथा १ दशवैकालिक, २ कल्पाकाल्पिक, ३ छोटा कल्पसूत्र, ४ बडाकल्पसूत्र, ५ उपपाति का ६ राजप्रश्नीय, ७ जीवाभिगम, ८ प्रज्ञप्ना, ९ महाप्रज्ञप्ना, १० प्रमादाप्रमादी, ११ नदी, १२ अनुयोग द्वार, १३ देवेन्द्रस्तुति.

१४ तदुलवियाली, १५ चद्रविद्या, १६ सूर्य प्रज्ञप्ति, १७ पौरसी मडल, १८ मडलप्रवेश, १९ विधाचारण विनिश्चिति, २० गणि विद्या, २१ गाणत्रिभक्ति, २२ आत्मविभक्ति २३ मृत्यु विभक्ति २४ वीतराग सूत्र, २५ सलेहणा सूत्र, २६ विहार कल्प २७ चरण विधी, २८ आयु प्रत्याख्यान, २९ महा प्रत्यख्यान इत्यादि

चौरासी हजार पइन्ना प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभ देव स्वामी के समय में गणधरोंने बनाये, ऐसे ही सख्याते पइन्ने आजितनाथजीसे पार्श्वनाथजी पर्यंत बीच के तीर्थंकरों के गणधरोंने बनाये और चउदह हजार पइन्ने श्री महावीर स्वामी के गणधरोंने बनाये यों जिन तीर्थंकर के समय में जितने साधु होते हैं उतने पइन्ने उत्पातिकादिक चारों बुद्धि से बनाते हैं तैसे ही प्रत्येक बुद्ध× भी उतने पइन्ने बनाते हैं यह कालिक सुत्र हुए यह आवश्यक व्यतिरिक्त और अनंग प्रविष्ट शास्त्र के नाम हुए ॥ ६ ॥ अगप्रविष्ट शास्त्र कितने हैं ? उत्तर—अगप्रविष्ट शास्त्र बारह हैं तद्यथा— (१) आचाराग

× यद्यपि प्रत्येक बुद्ध जाति स्मरणादि कर किसी के उपदेश बिना स्वयंमेव शास्त्र धारन कर एकल विहारी होते हैं तथापि जिन तीर्थंकर के समय में होते हैं उन के शिष्य कहे जाते हैं

☛ पृष्ट १४वे की ४ थी ओली के इत्यादि के आगे निम्नोक्त पढनाजी !

उत्कालिक सूत्र जानना ॥ ५ ॥ प्रश्न—कालिक सूत्र किसे कहते हैं? उत्तर—कालिक सूत्र के भी अनेक भेद कहे हैं तद्यथा—१ उत्तराध्ययन, २ दशाश्रुतस्कन्ध ३ बृहत्कल्प ४ व्यवहार, ५ निशीथ, ६ महानिशीथ, ७ ऋषिभाषित, ८ जम्बूद्वीप, प्रज्ञप्ति ९ चन्द्रप्रज्ञप्ति, १० द्वीपसागर प्रज्ञप्ति, ११ लघुविमान विभक्ति, १२ महाविमान विभक्ति १३ अंगचूलिका, १४ वगचूलिका, १५ विविध चूलिका, १६ अरुणोपपाती, १७ वरुणोपपाति, १८ गुरुलोपपाति, १९ धरणोपपाति, २० वैश्रमणोपपाति, २१ वेलधरोपपाति, २२ देवेन्द्रोपपाति, २३ उत्थान सूत्र, २४ समुपस्थान सूत्र, २५ नाग परियावलिका, २६ निरियावलिका, २७ कालिका २८ कल्पवर्डिसिका, २९ पुष्पिका, ३० पुष्पचूलिका, ३१ वन्हिदशा, इत्यादि

आचाराग — इस में श्रमण निर्ग्रंथ के ज्ञानादि पाच आचार, ईर्यासमिति आदि गो चार, विनय वय्यावृत्यादि विहार स्थान, मूल उत्तर गुण तप सयम उपधान वगैरह वर्णन है इस के १ श्रुतस्कध, २५ अध्ययन ८५ उद्देशे और १८००० पद हैं २ सूत्र कृताग,

सुयगडाग — इस में स्वसमय की स्थापना व परसमय की स्थापना, जीवाजीव तथा लोकालोक तथा जीवादि नव पदार्थों के सद्भाव असद्भाव का स्वरूप, १८० क्रियावादि ८० अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी, और ३२ विनयवादी, यों ३६३ पाखड मत का अनेक हेतु द्रष्टात द्वारा सुष्ट सम्मत से सत्कथन का प्रतिपादन किया है और असत्कथन को उत्थापन किया है कि बहुना मुक्त पथ के सोपान समान इस शास्त्र में कथन है इस के २ श्रुतस्कध, १३ अध्ययन ३३ उद्देशे, और ३६००० पद हैं (३) स्थानाग—इस

स्थानाग — में स्वसमय परसमय की स्थापना, जीवाजीव लोकालोक की स्थापना, द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्याय व नदी समुद्र भवन, विमान, आगर, निधान, उत्तम पुरुषों, ज्योतिषी, वगैरह के एक २ भेदसे, दश २ भेद पर्यंत के कथन का सग्रह है इस का एक ही श्रुतस्कध है अध्ययन १० हैं २१ उद्देशे और ७२००० पद हैं (४) समवायाग—इस में स्वसमय

समवायाग — परसमय का उक्त सूत्र जैसे सूचन मात्र एक दो तीन यावत् कोटाकोटी बोल पर्यंत

संक्षिप्त वर्णन किया है द्वादशांग के नाम अधिकार, जीवादिअधिकार, श्रमण समाचारी, चतुर्गति आहार लेश्या, उपपात, अवगाह, अवधि, वेदना, विधान, परिधि प्रमाण, कुलकर, तीर्थंकर, गणधर, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, कर्मभूमी व अकर्मभूमि आदि के कथन का संग्रह है इस का एक ही श्रुत स्कंध, एक ही उद्देश, और १८००० पद हैं (५) विवाह प्रज्ञप्ति (भगवती) इस में स्वसमय परसमय जीवाजीव, लोकालोक, नर सुर व ऋषि आदि का वर्णन विविध प्रकार के ३६००० प्रश्नोत्तर, द्रव्य, गुण, काल, भेद (पर्याय) प्रदेश, परिणाम, अनुगम, निक्षेप, प्रमाण वगैरह का संग्रह है इस का एक ही श्रुतस्कंध, कुछ अधिक १०० अध्ययन, १००० उद्देश, १००० समुद्देश और २८८००० पद हैं (६) ज्ञाताधर्मकथांग—इस में नगर, उद्यान, चैत्य, (यक्षालय) वनखण्ड, राजा माता, पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, इस लोक, पर लोक, ऋद्धि का विशेपत्व, भोग का परित्याग, दीक्षाग्रहण, सूत्र परिग्रहीत, तपोपधान, परिषह सहिष्णुता, भक्त प्रत्याख्यान, पादोपगमन, स्वर्ग गमन, पुन सुकुल में उत्पन्न होना यावत् अंत क्रिया और धर्म भ्रष्टों के उदाहरण, शिक्षा वगैरह के कथन का संग्रह है इस के

दो श्रुत स्कध और १९ अध्ययन हैं इस सूत्र में द्विविध समास हैं, प्रथम दृष्टाना रूप और दुसरा चरित्र जैसे कथन रूप इस सूत्र में ३५०००००० धर्मकथा और ५७६००० पद हैं (७) उपासक दशांग—इस में श्रावकों के नगर उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता, पिता तीर्थंकर के समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, इस लोक पर लोक ऋद्धि का विशेषत्व, श्रावक के बारह व्रत, अग्यारह प्रातिमा, तपोपधान, सूत्र परिग्रहण, उपसर्ग, शल्यैषणा, भक्त प्रत्याख्यान, पादोपगमन स्वर्ग गमन पुन सुकुलोत्पन्न यावत् अत क्रिया वगैरह कथन है इस का एक श्रुत स्कध, १० अध्ययन १० उद्देशे हैं और सख्याते १०५२००० पद हैं [८] अतकृतदशा इस में कर्मों के अत करनेवाले के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता, पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, इस लोक, पर लोक, ऋद्धि विशेष, भोग परित्याग, दीक्षा, सुत्र ग्रहण, तपोपधान, साधु की बारह प्रातिमा, दश यातिधर्म, समिति, गुप्ति, अप्रमादित योग, स्वाध्याय, ध्यान, उत्तमसयम, परिषहजय, कर्मघात, केवलज्ञान, दीक्षा और कर्यान्तकर मोक्षप्राप्ति वगैरह कथन है इस का एक श्रुतस्कध, दश अध्ययन सात वर्ग सात उद्देशे, दश समुद्देशे, सख्यात २३०४००० पद हैं (९) अनुत्तरोपपातिक

उपाशकदशा

अन्तकृतदशा

अनुत्तरोपपाति

ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, तं चेव सव्व, णवर थिबुग सठिया, चत्तारि लेसाओ, आहारो णियमाछद्दिसिं उववाओ तिरिक्खजोणिय मणुस्स देवेहिं ॥ ठिती जहन्नेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सत्तवास सहस्साइं, सेस तं चेव ॥ जहा बायर पुढवि काइयाण जाव दुगतिआ तिआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो । सेत बायर आउक्काइया ॥ सेत आउक्काइया ॥ १६ ॥ से किंत वणस्सइ काइया ? वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सुहुम वणस्सइ काइया बायर वणस्सइ काइया ॥ से किंतं त सुहुम वणस्सइ काइया ? सुहुम वणस्सइ काइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तहेव

परन्तु इस में इतनी विशेषता है इस का संस्थान पानी के परपोटे जैसे मानना, कृष्ण, नील, कापोत व तेजो ऐसी चार लेश्याओं मानना आहार नियमा छ दिशी का, तिर्यंच मनुष्य व देव में से उत्पन्न होवे, इन की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट सात हजार वर्ष की, यावत् इन को दो गति व दो आगति है ये प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं यों बादर अप्काय के भेद हुए यह अप्काय का कथन हुवा ॥ १६॥ प्रश्न-वनस्पतिकाया किस को कहते हैं? उत्तर-वनस्पतिकाया के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म वनस्पतिकाया व बादर वनस्पतिकाया प्रश्न-सूक्ष्म वनस्पतिकाया किसे कहते हैं? उत्तर-सूक्ष्म वनस्पति के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त

फला बहुबीयका ॥ सेत रुक्खा ॥ एव जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्व जाव जेया वण्णे तहप्पगारा सेत कूहणा ॥ णाणाविह संठाणा रुक्खाण एगजीविया पण्णत्ता खंधोवि एगजीवा ताल सरल नालियरीणं जह सगल सरिसवाण पत्तेयसरीराण ॥ गाहा—जह वातिलस कुलिया गाहा-सत्त पत्तेयसरीर बायरवणस्सइ- काइया ॥ सेकिंत साहारण सरीर बादरवणस्सइकाइया ? साहारण सरीर बायर वणस्सइकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा आलुए मुलते सिंगबेरे हिरिलि सिरिलि सिस्सिरिलि किट्ठिया छिरिया, छिरविरालिया, कण्हकदा, वज्जकदो, सूरणकदो, खल्लूडो, किमिरासि, भद्दमोत्था,

वृक्ष का अधिकार कहा यह वृक्ष का अधिकार हुवा इस का विशेष खुलासा पन्नवणा सूत्र से जानना यहां कूहणा पर्यंत सब अधिकार कह देना प्रश्न वृक्षमें रहे हुवे जीवोंका संस्थान कैसा कहा? उत्तर वृक्ष में रहे हुवे जीवों का संस्थान अनेक प्रकार का कहा है वृक्ष में एक जीव कहा और स्कंध में भी एक जीव कहा, वैसे वृक्षों ताल, सरल, नालयेरी प्रमुख हैं प्रश्न-वृक्षादिक में पृथक् २ अनेक प्रत्येक शरीरी जीवों कैसे रहे हुवे हैं ? उत्तर-जैसे अनेक सरसव के दाने को गुड में मीलाकर उस का लड्डु बनावे वह लड्डु एक पिंड रूप रहता है इस में सब सरिसव प्रतिपूर्ण रूप से रहे हुए हैं अपनी २ अवगाहना से अलग २ है, ऐसे ही प्रत्येक शरीरी जीवों का समुह है वह अलग २ अपनी २ अवगाहना से रहे हैं ऐसे ही तिलों की बनी हुई तिल पपडी एक ही कहलाती है, परंतु उस में तिल के दाने पृथक् २ रहे हुवे हैं, वैसे ही प्रत्येक

रुक्खा दुविहि पन्नत्ता तजहा एकट्ठियाय बहुबीयाय से किंत एकट्ठिया? एकट्ठिया अनेक विहापण्णत्ता तजहा-निंबु जबु जाव पुन्नाग रूक्खे सीवन्नि तहा असोगेय, जेयावन्ने तहप्पगारा। एतेसिण मूलावि असखेज्ज जीविया एव कदा खधा तया साला पवाला पत्ता पत्तेय जीवा, पुप्फाइ अणेगजीवाइ फला एगट्ठिया सेत्त एगट्ठिया॥ सेकित बहुबीयगा? बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता तजहा अत्थिय तिंदुय उंबर कविट्ठे आमलक फणस दाडिम नग्गोह काउबरीय तिलय लउय लोद्धेधते जेयावन्न तहप्पगारा, एतेसिण मूलावि असखेज्जजीविया जाव

कुहाण प्रश्न-वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? उत्तर-वृक्ष के दो भेद कहे हैं तद्यथा एक बीजवाले व बहुत बीजवाले प्रश्न एक बीजवाले के कितने भेद कहे हैं? एक बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-निंबु, जाम्बु यावत् पुन्नाग वृक्ष, सीवनी वृक्ष तथा अशोक वृक्ष और अन्य भी इस प्रकार के वृक्ष इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हैं ऐसेही कंद, स्कंध, त्वचा, शाल, प्रवाल, पत्र, में प्रत्येक जीवों हैं, पुष्प में अनेक जीवों हैं और फल एक बीजवाला होता है यह एक बीजवाले वृक्ष का वर्णन हुवा प्रश्न बहुबीजवाले वृक्ष के कितने भेद कहे हैं? बहु बीजवाले के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-अस्थिक, तिंदुक, उम्बर, कपिठ, आमला, फणस दाडिम, कदम्ब, न्यग्रोध, (बड) तिलक, लोध्र, और अन्य भी इस प्रकार के बहुत बीजवाले वृक्षों हैं इन के मूल में असंख्यात जीवों कहे हुवे हैं यावत् फल बहुत बीजवाले हैं यह बहुबीजवाले

सूत्र

सरीरगा, अणित्थत्थ संठिया, ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दसवास सहस्साई जाव दुगतिया, तिआगतिया, परित्ता अणंता पण्णत्ता ॥ सत्त बादरवणस्सइकाइया ॥ सेतं थावरा ॥ १८ ॥ से किंतं तसा ? तसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा तेउकाइया वाउकाइया उराला तसा पाणा॥ सेकिंत तेउकाइया? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सुहुमतेउकाइयाय बायर तेउकाइयाय ॥ से किंतं सुहुम तेउकाइया ? सुहुम तेउकाइया जहा सुहुम पुढविकाइया, णवर सरीरगा सूयकलाव संठिया, एकगतिया, दुयागतिया, परित्ता, असंखेज्जा, पण्णत्ता सेसं

अर्थ

संस्थान विविध प्रकार का, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश हजार वर्ष की यावत् दो गति व तीन आगति है इस में अनंत जीवों कहे हैं यह बादर वनस्पतिकाया का कथन हुआ यों स्थावर के भेद संपूर्ण हुए ॥ १८ ॥ प्रश्न त्रस के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर त्रस के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तेउकाया, वायुकाया व औदारिक त्रस प्रश्न तेउकाया किसे कहते हैं ? उत्तर-तेउकाया के दो भेद कहे हैं, सूक्ष्म तेउकाया व बादर तेउकाया प्रश्न सूक्ष्म तेउकाया किसे कहते हैं ? सूक्ष्म तेउकाया का सूक्ष्म पृथ्वीकाय जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का संस्थान सूचिकलाप का है, तेउकायावाले एक गति में जाते हैं और मनुष्य व तिर्यंच यों दो गति में से आते हैं इस में असंख्यात जीवों कहे हैं

पिडहलिहा, लोहारिणी हुटे, हुत्थिमु, अस्सकन्नी, सिंहकन्नी, सिउंढी मुसुंढी, जयाव्रण्णे तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्तक य अपज्जत्तकाय॥ तेसिण भंते ! जीवाण कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा ओरालिते, तेयते, कम्मते, तहेव जहा बायरपुढविकाइयाण णवर सरीरो-गाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भाग, उक्कोसेण साइरेग जायणसहस्सं

शरीरी जीव वृक्षों में अलग २ रहे हुवे हैं बाह्य में एक ही रूप दीखने पर जीवों पृथक् २ रहे हुवे हैं यह प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाया के भेद हुए अब साधारन वनस्पतिकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर साधारन वनस्पतिकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा आलू, मूले, अदरख, हिरली, सिरली सिसरली, किट्टिया, छिरिया, छिरविरालिया, कृष्णकंद, वज्रकंद, सूरणकंद, खल्लूडा किमिराशी, भीडीमोथ, पिंडहलदी, लोहारिनी, थोहरी, हस्तिमुखा, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सिहकुंडी, व मुसंढी और इस प्रकार की अन्य वनस्पतिकाया कही हुई है इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त अहो-इन वनस्पतिकायिक जीवों के कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन को उदारिक, तैजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर कहे हैं एसे ही सब बादर पृथ्वीकाया जैसे जानना परन्तु विशेषता यह है कि इन की शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट साधिक एक हजार योजन,

सेसं तचेव जाव एगगतिया, दुयाअगितया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता॥सेत तेउकाइया ॥ ११॥ सेकिंत वाउकाइया? वाउकाइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सुहुम वाउकाइया, बायर वाउकाइया ॥ सुहुम वाउकाइया जहा सुहुम तेउकाइया,णवर सरीर पडाग सठिया, एगगतिया दुयागतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता,सेत्त सुहुम वाउकाइया ॥ सेकिंत बायर वाउकाइया? बायर वाउकाइया अणगविहा पण्णत्ता तजहा-पातीणवाते,पडीणवाते, एव जयावण्णे तहप्पगारा, तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तसिण भते!जीवाण कति सरीरगा पन्नत्ता? गोयमा!चत्तारि सरीरगा पन्नत्ता तजहा

अर्थ तेउकाया का स्वरूप हुवा ॥ १० ॥ प्रश्न-वायुकाया के कितने भेद कहे हैं? उत्तर वायुकाया के दो भेद कहे हैं तद्यथा-सूक्ष्म वायुकाया व बादर वायुकाया सूक्ष्म वायुकाया का सूक्ष्म तेउकाया जैसे जानना परंतु सूक्ष्म वायुकाया का सस्थान पताका का है यावत् एक गति व दो आगति है और इस में असख्यात जीवों कहे हुवे हैं यह सूक्ष्म वायुकाया का स्वरूप हुवा प्रश्न बादर वायुकाया किसे कहते हैं? उत्तर-बादर वायुकाया के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-पूर्व का वायु, पश्चिमका वायु, यों सब वायुकाया के भेद जानना इस का कथन पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है इस के सक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा-पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, वैक्रेय,

तंचर ॥ सेत्त सुहुम तेउक्काइया ॥ सेकिंत बायर तेउक्काइया ? बायर तेउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा-इंगाले, जाले, मुम्मुरे, जाव सूर,कतमाणि, निस्सिते जेया वण्णे तहप्पगारा त समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा—ओरालिते,तेयते,कम्मते, सेस तचेव, सरीरगा सूयिकलावसठिया, तिन्निलेसा ॥ ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाइं॥तिरियमणुस्सेहिंतो उववाउओ,

यह सूक्ष्म तेउकाया का स्वरूप हुआ,प्रश्न-बादर तेउकाया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर बादर तेउकाया के अनेक भेद कहे हैं अंगार, ज्वाला, मुमुरे यावत् सूर्यकांत मणि और वैसे ही अन्य प्रकार के तेउकाया के जीवों हैं इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं तद्यथा पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर-इन जीवों को उदारिक, तेजस व कार्माण ऐसे तीन शरीर कहे हैं शेष सब बादर पृथ्वी-काया जैसे जानना परंतु विशेषता यह है कि इस का सस्थान सूई के समुह का है, इन जीवों को तीन लेश्या कही है, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन रात्रि दिन की, तिर्यंच व मनुष्य में से उत्पन्न है, शेष वैसे ही जानना यावत् एक गति व दो आगति है इस में असख्यात जीवों कहे हुए हैं यह

सूत्र

से किंतं बेइंदिया? बेइंदिया अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय पुलाकिमिया जाव समुद्दलिक्खा, जेयावण्ण तहप्पगारे, तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तउ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—ओरालिते तेयते कम्मत॥ तेसिणं भंते! जीवाणं के महालिया सरीरा गाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं, छेवट्ठ संघयणी, हुंडसंठिया, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि-लेसाती, दोइंदिया, तओ समुग्घाया वयणा कसाया मारणंतिया॥नो सण्णी असण्णी॥नपुंसक

अर्थ

उत्तर उदार त्रस प्राणियों के चार भेद कहे हैं तद्यथा बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय व पचेन्द्रिय॥ २१ ॥ प्रश्न-बेइन्द्रिय किस को कहते हैं ? उत्तर-बेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-कृमी, कीडे, गिंडोल, शंख, कोड, जलो, चदनक, अलसिया, इलड, फूगग इत्यादि अनेक प्रकार के कहे हैं इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न इन बेइन्द्रिय जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन को तीन शरीर कहे हैं उदारिक, तेजस व कार्माण प्रश्न इन जीवों के शरीर की अवगाहना कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट बारह योजन की, संघयन छेवट, संस्थान हुंडक, चार कषाय, चार संज्ञा, तीन लेश्या, दो इन्द्रिय, वेदना, कषाय व मारणांतिक यों तीन समुद्घात हैं ये जीवों

उरालिने, वउव्वेते, तेयते, कम्मए, सरीरगा पडागसठिया, चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता तजहा—वेयणा समुग्घ ते, कसाय समुग्घाते, मारणतिय समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घ ते, ॥ आहारो णिव्वाघाएण छ द्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पचद्दिसिं॥ उवव ते देवमणुया, नेरइतेसु णात्थि॥ठिती जहन्नेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णिवाससहस्साइ, सेस तचेव एगगतिया, दुआगातिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता समणाउसो ? सेत्त बायर वाउकाइया ॥ सेत वाउकाइया ॥२०॥ से किंत उराला तसा पाणा ? उराला तसपाणा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा—बेइदिया तेइदिया चउरिंदिया पचेंदिया ॥२१॥

तैजस व कार्माण यों चार शरीर कहे हैं इस का सस्थान पताका का है चार समुद्घात-वेदना, कषाय, मारणांतिक व वैक्रेय आहार निव्याघात से छ दिशिका और व्याघात आश्री क्वचित् तीन दिशी, क्वचित् चार दिशी व क्वचित् पांच दिशी का आहार करे नरक, मनुष्य व देव में से उत्पन्न नहीं होता है परंतु एक तिर्यंच में से उत्पन्न होता है स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष शेष सब वैसे ही जानना यावत् एक गति व एक आगति इस में असख्यात जीवों कहे हुए हैं यह बादर वायुकाया का भेद हुआ यह वायुकाया का स्वरूप हुआ ॥ २०॥ प्रश्न-उदार त्रस प्राणियों के कितने भेद कहे हैं ?

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अतोमुहुत्त-उक्कोसेणं बारसमवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइदिया ॥ २२ ॥ सेकित तेइदिया ? तेइदिया अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाइ ठिति जहण्णेण अतो मुहुत्तउक्कासेण एक्कूणपण्ण राइदियाइ सेस तहेव

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा उदाइ रोहिणिये, धनेरीये, कान खजुरे, पद्मल, यूका पीपिलोका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुंथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

वेयका, पच्चपज्जत्तीओ पचअपज्जत्तीओ, सम्मद्दिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि,नो.सम्मामिच्छदिट्ठी॥ नो चक्खुदसणी अचक्खुदसणी नो ओहिदसणी नो केवलदसणी ॥ तेण भते ! जीवा किंणाणी अण्णाणी ? गोयमा ! णाणीवि अण्णाणीवि ॥ जे णाणी ते नियमा दुणाणी तजहा—अभिणिबोहियणाणीय सुयणाणीय ॥ ज अण्णाणी तेनियमा दुअण्णाणी मतिअण्णाणी, सुयअण्णाणीय ॥ ना मनजोगी, वइजोगी कायजोगीवि, सागरोवउत्तावि, अणागारोवउत्तावि, ॥ आहारो नियमा छद्दिसी, उववातो

सज्ञी नहीं परतु असंज्ञी है, उन को एक नपुसक वेद है, पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति है वे जीवों समदृष्टी व मिथ्यादृष्टी भी हैं, चक्षुदर्शन अवधि दर्शन व केवल दर्शन उन को नहीं है परतु एक अचक्षु दर्शन है प्रश्न-वे जीवों क्या ज्ञानी है या अज्ञानी है ? उत्तर ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञान में आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान यों दोनों प्रकार के ज्ञान है और अज्ञान में मति व श्रुत अज्ञान है मन योग नहीं है परतु वचन योग व काया योग है, वे साकारोपयोगी व अनाकारोपयोगी दोनों हैं आहार छ दिशी का ही लेते हैं, मनुष्य व तिर्यच में से उत्पन्न होते हैं परतु नारकी देव से नहीं उत्पन्न होते हैं और असख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य व तिर्यच भी नहीं उत्पन्न होते हैं

सूत्र

तिरियमणुस्सेसु णेरइयदेव असंखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिती—जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण बारसमवच्छराणि, समोहयावि मरति असमोहयावि मरति, कहिं गच्छति ? नेरइय देवअसखेज्जवासाउअवज्जेसु गच्छति, दुगतिया, दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता, सेत्त बेइदिया ॥ २२ ॥ सेकिंत तेइदिया ? तेइदिया अणगविहा पण्णत्ता तजहा—उवइया रोहिणीया हत्थिसोंडा जेयावण्ण तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तजहा-पज्जत्ताय अपज्जत्ताय,तहेव जहा बेइदियाण णवर सरीरोगाहणा उक्कोसेण तिन्निगाउयाई ठिति-जहण्णेण अतो मुहुत्तउक्कोसेण एक्कूणपण्ण राइदियाइ सेस तहेव

अर्थ

स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह वर्ष, समोहता व असमोहता दोनों मरण मरते हैं वे कहां जाते हैं ? नारकी देव व असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले मनुष्य तिर्यंच छोडकर शेष मनुष्य में तिर्यंच में जाते हैं दो गति व दो आगति है वे असख्यात जीवों हैं यों बेइन्द्रिय का अधिकार हुवा ॥२२॥ प्रश्न—तेइन्द्रिय के कितने भेद हैं ? उत्तर—तेइन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा जुवां रोहिणिये, घनेरीये, कान खजुरे, खटमल, यूका पीपिलीका, मकोडा, इहाल, दूली, गधइया, विष्टा के कीडे, कुथवे, इत्यादि अनेक प्रकार के तेइन्द्रिय जीव जानना इन के दो भेद कहे पर्याप्त व अपर्याप्त यों सब बेइन्द्रिय जैसे जानना परंतु इन में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट तीन गाउ की, इन्द्रियों तीन, स्थिति जघन्य अंत

सूत्र

दुगातिया दुआगतिया परित्ता असखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेतं तेइंदिया ॥ २३ ॥ सेकिंत चउरिंदिया ? चउरिंदिया अणेग विहा पण्णत्ता तंजहा—अंधिया पोत्तिया जाव गोमयकीडा, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ता अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कतिसरीरगाय पण्णत्ता ? गोयमा ! तओसरीरगा पण्णत्ता तहेव, णवरं सरीरोगाहणा उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं, इंदिया चत्तारि, चक्खुदंसणीवि अचक्खु दंसणीवि, ठिई—उक्कोसेणं छ

अर्थ

मुहूर्त उत्कृष्ट ४९ दिन, शेष सब वैसे ही यावत् दो गति व दो आगति प्रत्येक शरीरी असंख्यात हैं। यों तेइन्द्रिय का कथन हुवा ॥ २३ ॥ प्रश्न—चतुरेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुरेन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं ? जिन के नाम—अंधिका पोतिका बिच्छू, बग मकडी, भ्रमरी, तीड मासिका, दंश, मच्छर कसारी यावत् गोमय कीट और भी चतुरेन्द्रिय जीवों कहे हैं इन के दो भेद कहे हैं, पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं, इनका कथन पूर्वोक्त जैसे जानना, परंतु इस में शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट चार गाउ, चार इन्द्रियों, चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन दोनों, स्थिति उत्कृष्ट छ मास की यों सब तेइन्द्रिय जैसे कहना यावत् असंख्यात कहे हैं. यह

सूत्र

म्मामा, सेस जहा बेइंदियाण जाव असंखिज्जा पण्णत्ता, सेत चउरिंदिया ॥ २४ ॥ से किंत पचेंदिय ? पचेंदिया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-नेरइया तिरिक्खजोणिया मणुस्स देवा ॥ २५ ॥ से किंत नेरइया ? नेरइया सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रयणप्पभा पुढवि नेरइया, जाव अहे सत्तम पुढवी नेरइया ॥ तेसमासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिण भंते! जीवाण कति सरीरगा पण्णत्ता ?गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता, तंजहा-वेउव्विते, तेयते, कम्मए ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

अर्थ

चतुरेन्द्रिय का स्वरूप हुवा ॥ २४ ॥ प्रश्न पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर पचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं तद्यथा-नारकी, तिर्यंच, मनुष्य व देवता ॥ २५ ॥ प्रश्न-नारकी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-नारकी के सात भेद कहे हैं तद्यथा रत्नप्रभा नारकी यावत् सातवी तमतम प्रभा नारकी इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे है ? उत्तर—इन जीवों को वैक्रय, तेजस व कार्माण यह तीन शरीर कहे हैं २ इन जीवों की कितनी शरीर की अवगाहना है ? उत्तर—इन के शरीर की अवगाहना के दो भेद कहे हैं जैसे भवधारनीय सो जन्म से शरीर होवे और २ उत्तर वैक्रेय सो अन्य रूप बनावें, इन में से भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की और उत्तर वैक्रेय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के

के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तजहा भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण पचधणुसयाइं॥तत्थण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जति भागं उक्कोसेण धणुसहस्स ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा!छण्हं सघयणाण असंघयणी, णेवट्ठी णेवछिरा, णेवण्हारु णेवसघयणमत्थि जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया असुभा

संख्य तथा भाग उत्कृष्ट एक हजार धनुष्य की, ३ प्रश्न—इन जीवों के शरीर कौनसे सघयनवाले हैं ? उत्तर—इन जीवों को छ सघयन में से एक भी सघयन नहीं है क्यों कि इन को हड्डियों, स्नायु, नारु वगैरह कुच्छ भी नहीं है परंतु जो अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अशुभ, अमनोज्ञ व अमणाप पुद्गलों हैं वे इन के संघातनपने परिणमते हैं ४ प्रश्न—इन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—इन जीवों के शरीर दो प्रकार के संस्थानवाले हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों के हुंडक संस्थान है, (जैसे पंखि पांख, मरदन के रोम वगैरह नीकालने से कुरूप दीखता है इस से भी विशेष भयकर उन नेरियों के शरीर दीखाते हैं) उत्तर वैक्रेय को बहुत सुंदर रूप बनावे तथापि अशुभ नाम कर्मोदय से अत्यंत अशुभ ही होते हैं. ५ कषाय चार हैं ६ संज्ञा चार हैं, ७ लेश्या तीन हैं (पहिली दूसरी में

अमणुण्णा अमणामा एतेसिं सघातत्ताए परिणमति ॥ तेसिण भते ! जीवाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेहुड सठिया, तत्थण जेते उत्तरविउव्विया तेवि हुडसठिया पण्णत्ता ॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, तिण्णिलेसातो पचइंदिया, चत्तारि समुग्घाया आइल्ला, सण्णीवि असण्णीवि, नपुसकवेदका, छपज्जत्तीओ, तिविहा दिट्ठिओ, तिन्निदसणा ॥ णाणीवि अन्नाणीवि जेणाणी तेनियमा तिन्नाणी पण्णत्ता तजहा—आभिणिवोहियणाणी, सुयणाणी ओहिणाणी, जे

कापोत लेश्या तीसरी में कापुत व नील, चौथी में नील, पांचवी में नील व कृष्ण और छठी सातवी में कृष्ण लेश्या)८इन्द्रियों पांच,९समुद्घात चार वेदनीय,कषाय,मारणांतिक और वैक्रेय१०नरकमे सज्ञी असज्ञी दोनों है (प्रथम नरकमें असंज्ञी पचेन्द्रिय भी उत्पन्न होते हैं,इसलिये यहां असज्ञी होते हैं)११वेद नपुसक१२पर्याप्ति छ,१३दृष्टि तीन१४दर्शन तीन केवल दर्शनपावे नहीं१५ज्ञानी भी हैं अज्ञानी भी है ज्ञानमें मति, श्रुति व अवधि यों तीनज्ञानहै और अज्ञानमें मति व श्रुति ज्ञान है,दो अज्ञान है जो असज्ञी प्रथम नरक में उत्पन्न होतेहैं उनको अपर्याप्तावस्था में मति व श्रुति ऐसे दो अज्ञान ही पाते हैं तथा मति श्रुति व विभंग ज्ञान यों तीन अज्ञान भी हैं १६ योग तीन १७ उपयोग दो १८ आहार छ ही दिशी का लेते हैं, स्वाभाविक कारण से

अन्नाणी ते अत्थेगतिय। दुअण्णाणी अत्थेगतिया तिअन्नाणी, जे दुअन्नाणी ते णियमा मतिअन्नाणी, सुत अन्नाणी जे ति अन्नाणी ते नियम मइअन्नाणीय, सुत अन्नाणीय विभंग णाणीय ॥ तिविधो जोगो, दुविहो उवओगो, छदिस आहारो, उसण्णकारणं पडुच्च वण्णतो कालाइ जाव आहार माहारेति, उववाओ तिरिय मणुस्सेसु, ठिती जहण्णेण दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ॥ दुविधा मरंति उवट्टुणा भाणियव्वा जातो आगता णवर समुच्छिमेसु पडिसेहो, दुगतिआ दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्तं नेरइया ॥ २६ ॥ सेकिंत पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम पंचिंदिय

काले वर्ण के पुद्गल यावत् अन्य भी वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करते हैं, १० नेरीये मनुष्य व तिर्यंच में से उत्पन्न होते हैं २० स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की २१ समोहता व असमोहता दोनों प्रकार के मरण मरते हैं २२ मनुष्य तिर्यंच दोनों गति में आते हैं परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य तिर्यंच व समूर्च्छिम मनुष्य में नहीं उत्पन्न होते हैं दो गति व दो आगति है वे असंख्यात जीवों कहे हुए हैं यह नारकी का दण्डक हुवा॥ २६॥ प्रश्न—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय व गर्भज

तिरिक्खजोणियाय गब्भवक्कतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया? समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा–जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा पंचविधा पण्णत्ता तंजहा–मच्छगा, कच्छगा, मगरा, गाहा, सुसमारा,॥ सेकिंत मच्छा? मच्छा एवं जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पण्णत्ता तंजहा–ओरालिए तेयए कम्मए ॥ सरीरोगाहणा

अर्थ

तिर्यंच पंचेन्द्रिय प्रश्न—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं १ जलचर २ स्थलचर और ३ खेचर प्रश्न-इसमें से जलचर किसे कहते हैं ? उत्तर-जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ मगर, गाहा, सुसमारा प्रश्न—मत्स्य किसे कहते हैं ? उत्तर—मत्स्य के अनेक भेद कहे हैं इस का वर्णन श्री पन्नवणा सूत्र में कहा हुवा है, इस के सामान्य से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को तीन शरीर कहे हैं—उदारिक, तेजस व कार्माण, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा

जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भागे, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, छेवट्ट सघयणी, हुडसठिना, चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णाओ, तओ लेसाओ इदियापच, समुग्घाता तिण्णि, णो सण्णी असण्णी, णपुसकवेदा, पज्जत्तीय अपज्जत्तिओय पचिंदिओ, दो दिट्ठिओ दो दसणा, दोणाणा दो अण्णाणा दुविहे जोगे दुविहे उवओगे, आहारो छद्दिसि, उववातो तिरिय मणुस्सेहिंतो, नो देवेहिंतो, नो नरइएहिंतो तिरिएहिंतो असखेज्जवासाउय वज्जेसु मणुस्सेसु अकम्मभूमिग अतरदीवग असखेज्जवासाउय वज्जेसु, ठिति जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकडी, मारणंतिय समुग्घातेण दुविहावि मरति,

भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन सघयन एक छेवटा, सस्थान एक हुंडक, कषाय चार, संज्ञा चार, लेश्या तीन, इन्द्रिय पांचों, पहिली तीन समुद्घात, संज्ञी नहीं परतु असंज्ञी, वेद एक नपुसक पांच पर्याप्ति व पांच अपर्याप्ति, दो दृष्टि, दो दर्शन दो ज्ञान, व अज्ञान दो, योग दो, उपयोग दो, आहार छ दिशी का, तिर्यच व मनुष्य में से उत्पन्न होवे परंतु असख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यच व अकर्म-भूमि व अतरद्वीप के मनुष्य में से यहां नहीं उत्पन्न होते हैं, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, मारणांतिक समुद्घात से दोनों मरण मरते हैं, प्रश्न—यहां से नीकलकर कहां उत्पन्न होवे? उत्तर—असंज्ञी मत्स्य में से नीकलकर नरक, तिर्यच मनुष्य व देव यों चारों गति में उत्पन्न होवे हैं नारकी में

अणतरं उव्वट्टिता कहिं उववज्जेज्जा ? नेरइएसुवि तिरिक्खजोणिएसुवि, मणुस्सेसुवि, देवेसुवि ॥ नेरइएसु रयणप्पहाए सेसेसु परिसेधो, तिरिएसु सव्वेसु उववज्जति, सखेज्ज-वासाउएसुवि असंखज्जवासाउएसुवि चउप्पएसवि, पक्खीसुवि, माणुस्सेसु सव्वेसु कम्मभू-मिएसु नो अकम्मभूमिएसु, अतरदीवेसुवि, सखेज्जवासउएवि, असखेज्जवासाउएसुवि, देवेसु जाव वाणमतरा, चउगतिया, दुआगतिया, परित्ता असखिज्जा पण्णत्ता ॥ सेत जल-यर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥२७॥ से किंत थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ? थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता

उत्पन्न होवे तो रत्नप्रभा में उत्पन्न होवे शेष नारकी में उत्पन्न होवे नहीं, तिर्यंच में उत्पन्न होवे तो सख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे, मनुष्य में उत्पन्न होवे तो कर्मभूमि, अकर्मभूमि अतर्द्वीप व समूर्च्छिम मनुष्य सख्यात वर्ष के आयुष्यवाले व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले सब में उत्पन्न होवे देव में उत्पन्न होवे तो भवनपति व वाणव्यन्तर में उत्पन्न होवे क्यों कि असज्ञी वहां तक ही उत्पन्न होते हैं इस से चार की गति व दो की आगति है ये असख्यात है यह जलचर संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥२७॥ प्रश्न—स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं चतुष्पद स्थलचर समूर्च्छिम

सूत्र

तजहा—चउप्पद थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, परिसप्प थलयर समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलयर चउप्पय समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—एकखुरा, दुखुरा, गंडीपदा, सण्णपदा जाव जेयावण्णे तहप्पगारा तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता तजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तओ सरीरा, सरीरो-गाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउय पुहुत्त, ठिति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण चतुरासीति वाससहस्साइ, सेस जहा जलयराण जाव चउगतिया

अर्थ

तिर्यंच पचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय के चार भेद कहे हैं जैसा १ एक खुरवाले अश्वादि, २ दो खुरवाले गवादि, ३ गंडीपद गोल पांववाले हस्ति आदि और ४ सणिपद सो पजे व नखवाले सिंह व्याघ्रादि इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन को तीन शरीर, अवगाहना जघन्य अगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक गाउ, (कोस) स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चोरासी हजार वर्ष, शेष सब जलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय जैसे जानना यावत् उन की चार की

दुआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्त थलयर चउप्पद समुच्छिम पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २८ ॥ सेकिंत थलयर परिसप्प समुच्छिमा ? थलयर परिसप्प समुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उरपरिसप्प समुच्छिमा भुयगपरिसप्प समुच्छिमा॥ सेकिंत उरगपरिसप्प समुच्छिमा? उरगपरिसप्प समुच्छिमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-अही अयगरा आसालिया, महोरगा ॥ से किंत अही? अही दुविहा पण्णत्ता तंजहा—दव्वीकरा, मउलिणोय ॥ से किंत दव्वीकरा,? दव्वीकरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा आसीविसा, जाव सेत्त दव्वीकरा ॥ सेकिंत मउलिणो ? मउलिणो अणेगविहा

अर्थ

गति व दो की आगति है वे परित्त असंख्यात हैं यह स्थलचर चतुष्पद समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥ २८ ॥ प्रश्न—स्थलचर परिसर्प संमूर्च्छिम के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर परिसर्प समूर्च्छिम के दो भेद कहे हैं १ उरपरिसर्प व भुज परिसर्प समूर्च्छिम प्रश्न—उर परिसर्प संमूर्च्छिम तिर्यंचके कितने भेद कहे हैं? उत्तर—उर परिसर्प समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रियके चार भेद कहे हैं तद्यथा १ अहि, २ अजगर, ३ असालिया, और ४ महोरग प्रश्न—अहि के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अही के दो भेद कहे तद्यथा—१ दर्विकर अर्थात् फणा करनेवाला और फण नहीं करने वाला प्रश्न—दर्वीकर के कितने भेद है ? उत्तर-दर्वीकर के अनेक भेद कहे हैं १ आशीविष,

सूत्र

पण्णत्ता तंजहा–दिव्वा, गोणसा जाव सेत मउलिणो ॥ सेत्त अही ॥ सेकिंत अयगरा ? अयगरा एगागारा पण्णत्ता सेत अयगरा ॥ सेकिंत आसालिया ? आसलिया जहा पण्णवणाए ॥ सेत्तं आसालिया ॥ सेकिंत महोरगा ? महोरगा जहा पण्णवणाए ॥ सेत्त महोरगा ॥जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा

अर्थ

दृष्टिविष, उग्रविष, भोगविष त्वचाविष, लालविष, श्वासविष, काला सर्प ऐसे अनेक भेद कहे हैं प्रश्न—अजगर के कितने भेद हैं ? उत्तर—अजगर का एक ही भेद है प्रश्न—आसालिया के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस का कथन पन्नवणा में है वहां ऐसा कहा है कि आसालिया सर्प मनुष्य क्षेत्रमें उत्पन्न होवे परंतु इस से बाहिर उत्पन्न होता नहीं है कर्म भूमि क्षेत्र में कर्म भूमि पना प्रवर्तता होवे वहां उत्पन्न होता है चक्रवर्ती, वासुदेव या मांडलिक राजा के पुण्य क्षीण हो गये होवे और उन के नामादिक का विनाश होने का होवे तब वहां आसालिया समूर्च्छिमपने उत्पन्न होता है उत्पत्ति समय उस की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग में होती है परंतु बढते २ बारह योजन की अवगाहना हो जाती है वह जमीन नीचे उत्पन्न होता है जब वह उलटता है तब वहां गढा खड्डा होता है जिस से चक्रवर्ति आदि नगर व सेना सहित नष्ट होजाते हैं इस की स्थिति अंत मुहूर्त की हैं प्रश्न—महोरग किसे कहते हैं ? उत्तर इस का विवेचन भी पन्नवणा सूत्र में हैं महोरग अढाइ द्वीप से बाहिर उत्पन्न होता है

पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय तंचेव णवर सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग, उक्कोसेण जोयण पहुत्त ॥ ठिति उक्कोसेण तेवण्ण वास सहस्साइं, सेसं जहा जलयराण, जाव चउगातिया, दुयागातिया, परिता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत उरपरिसप्पा ॥ २९ ॥ सेकिंत भुयपरिसप्प संमुच्छिम थलयरा ? भुयपरिसप्प संमुच्छिम थलयरा अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा—गोहा, नउला, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणं धणु पुहुत्त ठिति उक्कोसेण

अर्थ

इस का शरीर उत्सेध अंगुल प्रमाण होता है यह जल स्थल सर्व स्थान में गमन कर सकता है इन चारों प्रकार के उरपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहे हैं इन का कथन जल चर संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे जानना शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक योजन, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेपन हजार वर्ष की शेष सब जलचर जैसे यावत् चार की गति व दो की आगति जानना वे परित असंख्याते कहे हैं यह उरपरिसर्प का कथन हुवा ॥२९॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प संमूर्च्छिम स्थलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—भुजपरिसर्प स्थलचर समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा-गो, नकुल, घुस चूहे, गिलहरी और इस

सूत्र

वायालीस वाससहस्साइ सेस जहा जलयराण जाव चउगतियां दुयागतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत्त भुयपरिसप्प समुच्छिमा॥सेत थलयरा ॥२०॥ सेकिंत खहयरा? खहयरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी,लोमपक्खी,समुग्गपक्खी विततपक्खी ॥ से किंत चम्मपक्खी ? चम्मपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा वग्गुलि जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ सेत्त चम्मपक्खी ॥ से किंत लोमपक्खी ? लोमपक्खी अणेगविहा पण्णत्ता तजहा—ढका कैंका जाव जेयावण्णे तहप्पगारा, सेत्त लोमपक्खी ॥ सेकिंत समुग्गपक्खी ? समुग्गपक्खी एगागारा पण्णत्ता जहा पण्णवणाए ॥ एव

अर्थ

प्रकार के अन्य सब भुज परिसर्प स्थलचर हैं इन के दो भेद कहे हैं-पर्याप्त व अपर्याप्त इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट ४२हजारवर्ष की, शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व दो आगति यह परित्ता असंख्यात है यह भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय का कथन हुवा॥२ ॥ प्रश्न—खेचर के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर के चार भेद कहे हैं तद्यथा १ चर्म पक्षी चर्मकी पांखवाले, २रोम पक्षी राम(बाल)की पांखवाले, समुद्गपक्षी मीडी हुई पांखवाले और वितत पक्षी खुली पांखवाले प्रश्न—चर्म पक्षी किस को कहते हैं? उत्तर—१ चर्म पक्षी के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा चमचाडी वग्गुली व इसप्रकार के अन्य भी होते हैं२ रोम पक्षी के भी

मूत्र

वीततपक्खी, जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा--
पज्जत्ताय अपज्जत्ताय, णाणत्त सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेजइ भाग।
उक्कोसेण धणु पुहुत्त, ठिति उक्कोसेण बावत्तरि वाससहस्साइ सेसं जहा जलयराण
जाव चउगातिया दुयागतिया ॥ परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्त खहयरा समुच्छिमा
पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेतं समुच्छिम पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ ३० ॥
सेकिंतं गब्भवक्कतिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कतिय पंचेंदिय तिरिक्खजो-
णिया तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा थलयरा खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा?

अर्थ

अनेक भेद कहे हैं—ढेक, केक, और इस प्रकार के अन्य पक्षी, प्रश्न—३ समुद्र पक्षी किसे कहते हैं ?
उत्तर—समुद्र पक्षी का एक ही प्रकार है यह पक्षी अढाइद्वीप की बाहिर होता है इस का कथन
पन्नवणा सूत्र में कहा हुआ है और वितत पक्षी का अधिकार भी पन्नवणा सूत्र में कहा है इस के संक्षेप से
दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त विशेष में इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा
भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट ७२ हजार वर्ष शेष सब जलचर जैसे कहना
यावत् चार गति व दो आगति मानना यह परित्त असंख्यात हैं यह खेचर समूच्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय

जलयरा पंचविहा पण्णत्ता तंजहा—मच्छा कच्छभा मगरा गाहा सुसुमारा, सव्वेसिं भेदो भाणियव्वो तहेव जहा पण्णवणाए जाव जेयावण्णे तहप्पगारा ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—उरालिए, वेउव्विते, तेयए, कम्मए ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयण सहस्सं, छव्विह संघयणी पण्णत्ता तंजहा वइरोसभणाराय संघयणी, उसभनाराय संघयणी, नाराय संघयणी, अद्धनाराय

अर्थ

का अधिकार हुवा यह समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा ॥१०॥ प्रश्न—गर्भ में उत्पन्न होने वाले तिर्यंच के कितने भेद हैं ? उत्तर-गर्भज के तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ जलचर २ स्थलचर व ३ खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर जलचर के पांच भेद कहे हैं मत्स्य, कच्छ, मगर, गाहा व सुसुमार यों सब भेद पन्नवणा में कहा वैसे ही जानना यावत् इनके दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न-इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों चार शरीर कहे हैं तद्यथा १ औदारिक, २ वैक्रेय, ३ तेजस व ४ कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग में उत्कृष्ट एक

सघयणी, कीलिया सघयणी, सेवट्ट सघयणी ॥ छव्विह सठणीया पण्णत्ता तजहा— समचउरस संठिया, नग्गोह परिमडले, साति, खुज्ज, वामणे, हुडे,॥ चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णातो, छलेसातो, पंच इदिया, पंच समुग्घाया आइल्ला,सन्नी नो असण्णी, तिविहावेदावि,पज्जत्तीतो अपज्जत्तीतो,दिट्ठि तिविहा, तिण्णि-दंसणा णाणीवि अण्णावि, जेणाणी ते अत्थेगतिया दुणाणी अत्थगतिया तिणाणी, जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी, सुयणाणी जे तिण्णाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय ॥ एव अण्णाणीवि ॥ जोगेतिविहे, उवआगे दुविहे, आहारो छदिसिं,

अर्थ हजार योजन, वज्र ऋषभ नाराच वगैरह छ संघयन, समचतुस्रादि छे सस्थान, चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांचों इन्द्रियों पाहिली, पांच समुद्घात, संज्ञी है परतु असंज्ञी नहीं है, तीनों वेद, छ पर्याप्ति, छ अपर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन सिवाय दर्शन तीन, ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं ज्ञानी में कितनेक दो ज्ञानवाले व कितनेक तीन ज्ञानवाले हैं जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान है और जिन के तीन ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञान ऐसे तीन ज्ञान हैं, ऐसे ही तीन अज्ञान का जानना. मन वचन व काया ऐसे तीनों योग हैं, दोनों प्रकारके उपयोग हैं, छ दिशी का आहार करते हैं प्रथम नारकी में यावत् सातवी नारकी में से, असंख्यात वर्ष के

उव्वातो नेरइतेहिं जाव अहेसत्तमा,पुढवीसु, तिरिक्खजोणिएसु सव्वेसु, असंखेज्जवासाउयवज्जेसु, मणुस्सेसु अकम्मभूमग अंतरदीवग, असंखेज्ज वासाउयवज्जेसु, देवेसु जाव सहस्सारा ठिती—जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी,दुविहावि मरंति अणंतरं उव्वट्टित्ता, नेरइतेसु जाव अहे सत्तमा तिरिक्ख जोणिएसु मणुस्सेसु, सव्वेसु देवेसु जाव सहस्सारे॥चउगतिया चउआगतिया,परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेतं जलयरा ॥२१॥से किंतं थलयरा? थलयरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चउप्पया, परिसप्पया ॥ से किंतं चउप्पया ? चउप्पया ! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—एगखुरा, सो चेव भेदो जाव

आयुष्यवाले तिर्यंच छोडकर शेष सब तिर्यंच अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य और सहस्रार देवलोक पर्यंत के सब देवों में से आकर उत्पन्न होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड दोनों मरण मरते हैं, वहां से नीकलकर प्रथम नारकी से सातवी नारकी, सब तिर्यंच, सब मनुष्य व सहस्रार देवलोक के पर्यंत सब देवलोक में जाते हैं, चार गति व चार आगति प्रत्येक असंख्याते हैं यह जलचर का स्वरूप हुवा ॥ २१ ॥ प्रश्न—स्थलचर किसे कहते हैं ? उत्तर—स्थलचर के दो भेद कहे हैं चतुष्पद व परपरिसर्प प्रश्न—चतुष्पद के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद के चार भेद वगैरह सब पूर्वोक्त जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे

जेयावण्णे तहप्पगारे ॥ ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ चत्तारि सरीरगा ॥ ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेण छ गाउयाइं, ठिति उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं ॥ णवरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु चउत्थ पुढविं, ताव गच्छति सेस जहा जलयराणं जाव चउगतिया चउ आगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सत्त चउप्पया ॥ से किंत परिसप्पा ? परिसप्प ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—उरपरिसप्पाय भुजगरिसप्पाय ॥ से किंत उरपरिसप्पाय ? उरपरिसप्पाय च आसालिया चउ भेदो भाणियव्वो ॥ चउ सरीरा सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स

अर्थ जो भेद कहे हैं इन को चार शरीर, अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट छ गाउ की, स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम स्थलचर मरकर चौथी नारकी तक उत्पन्न हो सकते हैं शेष सब जलचर जैसे जानना यावत् चार गति व चार आगति जानना परित्ता असंख्याते कहे हुए हैं यह चतुष्पद का कथन हुआ प्रश्न—परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—परिसर्प के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्प व भुज परिसर्प, इन में से उर परिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उर परिसर्प में आसालिया वगैरह सब भेद जानना, इन को चार शरीर, इन की अवगाहना जघन्य अंगुल का

सूत्र

असखेज्जइ भाग उक्कोसेण जोयण सहस्स, ट्ठिति—जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं; उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वाट्टिता नेरइएसु जाव पचमि पुढवि ताव गच्छति, तिरिक्खमणुस्सेसु सव्वसु देवेसु जाव सहस्सारा, सेस जहा जलयराण। जाव चउगतिया, चउ आगतिया, परित्ता असखेज्जा सेत उरपरिसप्पा ॥ ३२ ॥ से किंत भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा भेदो तहेव चत्तारि सरीरगा सरीरोगाहणा। जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण गाउयपुहुत्त, ठिंति—जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेसेसु ठाणेसु जहा उरपरिसप्पा, णवर दोच्च पुढविं ताव गच्छति ॥ सेत भुयपरिसप्पा ॥

अर्थ

असख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, स्थिति जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट क्रोड पूर्व, उर परिसर्प का नीकला हुवा पांचवी नारकी तक जा सकता है, शेष सब जलचर जैसे यावत् चार गति व चार आगति वाले हैं, वे परित्ता असख्याते हैं यह उरपरिसर्प का कथन हुवा ॥ ३२ ॥ प्रश्न—भुजपरिसर्प के कितने भेद कहे हैं ? भुज परिसर्प के भेद वगैरह सब पूर्वोक्त प्रकार जैसे जानना, यावत् इन के पर्याप्त व अपर्याप्त वैसे दो भेद कहे हैं, इन को चार शरीर, शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, भुजपरिसर्प मरकर दूसरी नारकी तक जाते हैं शेष उर परिसर्प जैसे कहना यावत् चार गति में से आवे व चार गति में

सेंत थलयर ॥३३॥ सेकिंत खहचरा ? खहचरा चउव्विहा पण्णत्ता तजहा चम्मपक्खी तहेव, भेदो भाणियव्वो ॥ ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइ भाग उक्कोसेण धणुपुहुत्त, ठिति जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जति भागो, सेस जहा जलयराण णवरं जाव तच्च पुढविं गच्छति जाव सेत खहयर गब्भवक्कतिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्त तिरिक्खजोणिया ॥ ३४ ॥ सेकिंत मणुस्सा ? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्सा, गब्भवक्कतिय मणुस्सा भेदो

अर्थ

जाने वे पारिसा असख्याते हैं यह भुजपरिसर्प का कथन हुवा ये स्थलचर के भेद हुए ॥ ३३ ॥ प्रश्न—खचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर खेचर के चार भेद कहे हैं जिन के नाम-चर्म पक्षी, २ रोमपक्षी, ३ समुद्र पक्षी व ४ वितत पक्षी वगैरह सब कथन पूर्वोक्त जैसे जानना अवगाहना जघन्य अगुलका असख्यातवा भाग उत्कृष्ट प्रत्येक धनुष्य स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपमका असख्यातवा भाग शेष सब जलचर जैसे जानना, परतु खेचर में से मरकर जीव तीसरी पृथ्वी तक ही जा सकता है, यह गर्भज खेचर तिर्यंच पचेन्द्रियका कथन हुवा यह तिर्यंच पंचेन्द्रियका अधिकार हुवा॥३४॥प्रश्न-मनुष्यके कितने भेद कहे हैं उत्तर मनुष्य के दो भेद कहे हैं, तद्यथा १ समूर्च्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य, इस का सब भेद जैसे पन्नवणा में कहे वैसे ही यहां

जहा पण्णवणा ते तहा निरवसेसं भाणियव्वं जाव छउमत्थाय केवलीया॥ते समासतो दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ तेसिणं भंते जीवाणं कतिसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसरीरा पण्णत्ता तंजहा-ओरालिते जाव कम्मते ॥ सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, छव्विह संघयणी, छव्विह संठिया ॥ तेणं भंते ! जीवा किं कोहकसायी जाव लोभकसायी अकसायी ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ तेणं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव णो सण्णोवउत्ता ? गोयमा ! सव्वेवि तेणं भंते ! जीवा किं

मानना, यावत् छद्मस्थ केवली पर्यंत कहना, इन के संक्षेप से दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त, प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर—इन जीवों को पांच शरीर कहे हैं, औदारिक, वैक्रेय, आहारिक, तेजस व कार्मण इन के शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउ की, छ संघयन, छ संस्थान, प्रश्न—वे जीवों क्या क्रोध कषायी यावत् लोभ कषायी व अकषायी हैं ? उत्तर वे जीवों क्रोध कषायी भी हैं यावत् अकषायी भी हैं, प्रश्न-वे जीवों क्या आहार संज्ञी यावत् नो संज्ञी हैं उत्तर व जीवों आहार संज्ञी भी है यावत् नो संज्ञावाले भी हैं, प्रश्न-वे जीवों क्या कृष्ण लेशी यावत् अलेशी है ? उत्तर—वे जीवों कृष्ण लेशी यावत् अलेशी भी है, प्रश्न—वे जीवों क्या समदृष्टि यावत् अने-

किण्हलेसा जाव अलेसा ? गोयमा ! सव्वेवि ॥ सइंदिओवउत्ता जाव नो इंदिओ
वउत्तावि ॥ सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा-वेयणा समुग्घाते जाव केवलीसमुग्घाते,
सन्नीवि नो सन्नी नो असन्नीवि ॥ इत्थिवेदावि जाव अवेदावि ॥ पंचपज्जत्ती
पंचअपज्जत्ती, तिविहा दिट्ठी, चत्तारिदंसणा ॥ णाणीवि अण्णाणीवि, जेणाणी
अत्थेगतिया दुणाणी, अत्थेगतिया तिणाणी, अत्थेगतिया चउणाणी, अत्थेगतिया
एगणाणी जे दुणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणीय, सुयणाणीय; जे तिणाणी
ते आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणीय, अहवा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी

अर्थ — न्द्रिय है ? उत्तर—वे जीवों सइन्द्रिय भी हैं यावत् अनेन्द्रिय भी है, उन जीवों को वेदनीय से केवली पर्यंत सातों समुद्घात कहे हैं नहीं संज्ञी व नो संज्ञी नो असंज्ञी हैं, वे जीवों स्त्री वेदी भी हैं यावत् अवेद भी हैं, तीनों दृष्टि हैं, चार दर्शन हैं वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं जो ज्ञानी हैं उन में से कितनेक को दो ज्ञान, कितनेक को तीन ज्ञान, कितनेक को चार ज्ञान और कितनेक एक ज्ञान है जिन को दो ज्ञान हैं उन को आभिनिबोधिक व श्रुत ज्ञान है तीन ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञान अथवा आभिनिबोधिक श्रुत व मनःपर्यव ज्ञान हैं, चार ज्ञानवाले को आभिनिबोधिक, श्रुत, अवधि व मनःपर्यव ज्ञान है और एक ज्ञानवाले को केवल ज्ञान है. ऐसे ही अज्ञानी में कितनेक दो अज्ञानवाले व कितनेक तीन

मणपज्जवणाणीय,जे चउणाणी ते नियमा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणीय,जे एगणाणी ते नियमा केवलणाणी ॥ एवं अण्णाणीवि दुअण्णाणी तिअण्णाणी ॥ मण जोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि अजोगीवि, दुविहो उवओगो आहारोछदिसिं, उववातो नेरइएहिं अहेसत्तम वज्जेहिं, तिरिक्खजोणिएहिं, तेउवाउ असखेज्ज वासाउअवज्जेहिं, मणुस्सेहिं अकम्म भूमिग अतरदीवग, असखेज्जवासा-उयवज्जेहिं, देवेहिं सव्वेहिं, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओ-वमाइ, दुविहा विमरति उव्वट्टित्ता नेरइयाइसु जाव अणुत्तरोववाईएसु, अत्थेगतिया

अज्ञानवाले हैं योग में मन योग,वचन योग,काया योग तीनो योग वाले भी हैं व अयोगी भी है उपयोग दोनों प्रकार का, आहार छही दिशि का, उपपात-सातवी नारकी छोडकर शेष सब नारकी में से,तेउ,वायु व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय छोडकर शेष सब तिर्यंच, अकर्मभूमि, अंतर द्वीप व असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले मनुष्य छोडकर सब मनुष्य में और सब देव में से नीकलकर मनुष्य होते हैं स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की, दोनों प्रकार के मरण मरते हैं, यहां से नीकलकर नारकी यावत् अनुत्तरोपपातिक देव में उत्पन्न होवे हैं और कितनेक सीझते हैं, बुझते हैं यावत् सब दुःखों का

सिज्झति जाव अतकरेंति ॥ तेण भते ! जीवा कतिगइया कतिआगतिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचगतिया, चउआगतिया परित्तासंखेज्जा पण्णत्ता ॥ सेत मणुस्सा ॥ ३५ ॥ सेकिंत देवा ? देवा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तजहा—भवणवासी वाणमतरा जोइसा वेमाणिया, सेकिंत भवणवासी? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तजहा-असुरकुमारा जाव थणिय कुमारा ॥ सेत भवणवासी ॥ सेकिंतं वाणमंतरा ? वाणमतरा देवभेदो सव्वो भाणियव्वो, जावते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥

अर्थ

अंत करते हैं, प्रश्न—इन जीवों की कितनी गति व कितनी आगति कही ? उत्तर—इन जीवों को पांच गति व चार आगति है, मनुष्य संख्याते कहे हैं यह मनुष्य का कथन हुवा ॥ ३५ ॥ प्रश्न—देव के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक प्रश्न-भवनवासी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-भवनवासी के दश भेद कहे हैं असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार, प्रश्न—वाणव्यंतर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक सब देव का कथन करना यावत् इन के दो भेद पर्याप्त व अपर्याप्त प्रश्न—इन जीवों को कितने शरीर कहे हैं ? उत्तर इनजीवों को वैक्रेय, तेजस व कार्माण ऐसे तीन

सूत्र

तेसिण भंते ! जीवाणं कति सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा—वेउव्विये, तेयते, कम्मए ॥ उगाहणा दुविहा—भवधारणिज्जाय, उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जासा भवधारणिज्जासा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जभाग उक्कोसेणं सत्तरयणी, उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जति भाग उक्कोसेण जोयण सतसहस्स ॥ सरीरगा छण्ह संघयण असंघयणा, णेवट्ठि णेवछिरा णेवण्हारू नेव

अर्थ

शरीर कहे हैं अवगाहना के दो भेद भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय, इस में से भवधारनीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन इन को छ संघयन में से एक भी संघयन नहीं है क्यों कि इस को हड्डी, शिरा नसें व संघयन नहीं हैं परंतु जो इष्ट कंत वगैरह पुद्गलों हैं वे संघयनपने परिणमते हैं प्रश्न—उन जीवों को कौनसा संस्थान है ? उत्तर—उन जीवों के संस्थान के दो भेद कहे हैं भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय इस में भवधारनीय को समचतुरस्र संस्थान है और उत्तर वैक्रेय का संस्थान विविध प्रकार का है, इन को चार कषाय, चार संज्ञा, छ लेश्या, पांच इन्द्रियों, पांच समुद्घात है भवनपति वाणव्यंतर में संज्ञी असंज्ञी दोनों और ज्योतिषी वैमानिक में संज्ञी, वेद दो स्त्रीवेद व पुरुष वेद भवनपति, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व

ण मत्थि, जे पोग्गला इट्ठा कंता जीव तेसिं संघायत्ताये परिणमंते ॥ तासिण भंते ! जीवाण किं संठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय॥तत्थण जेते भवधारणिज्जा तेण समचउरंस संठिया पण्णत्ता, तत्थण जेते वेउव्विया तेण णाणा संठाण संठिया पण्णत्ता चत्तारि कसाया, चत्तारि सण्णा छ-लेसाओ, पंचइंदिया, पंचसमुग्घाया, सण्णीवि असण्णीवि, इत्थिवेदावि पुरिसवेदावि, नो नपुंसगवेदा, पज्जत्तापज्जत्तीओ पंच, दिट्ठि तिविहा, तिन्निदंसणे॥नाणीवि अन्नाणीवि जे नाणी ते नियमा तिनाणी, अन्नाणी भयणाए, दुविहा उवओगे, तिविहा जोगे आहारो नियमाछद्दिसिं, उसण्णकारण पडुच्च वण्णओ हालिद्द सुक्किलाइ जाव आहार

अर्थ

पहिला दूसरा देवलोक पर्यंत दोनों वेद, आगे एक वेद पांच पर्याप्ति, दृष्टि तीन, केवल दर्शन वर्ज कर तीन दर्शन, वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी दोनों हैं, जो ज्ञानी है वे आभिनिबोधिक, श्रुत व अवधि ज्ञानी है, और अज्ञानी हैं उनको मति, श्रुत अज्ञान व विभंग ज्ञान की भजना (क्योंकि असंज्ञी उत्पन्न होते हैं तब जबलग पर्याय पूर्ण नहीं करते हैं तब लग मात्र दो अज्ञान ही होते हैं,) दोनों प्रकार के उपयोग, तीनों योग हैं, नियमा छ दिशी का आहार करे, स्वाभाविक कारन से वर्ण से पीला शुक्ल का यावत् आहार करे तिर्यंच व मनुष्य में से आठवे देवलोक तक उत्पन्न होवे, उपर एक मनुष्य ही उत्पन्न होवे,

सूत्र

माहारंति, उववातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टिया णो णरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेतं देवा ॥ सेत्त पचेंदिया ॥ सेत्त उराला तसापाणा ॥ ३६ ॥ तस्सणं भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीसवाससहस्साइं ठिति

अर्थ

स्थिति जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुवा यों पंचेन्द्रिय का कथन हुवा और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुवा ॥ ३६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कही? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न स्थावर की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जघन्य

पण्णत्ता ॥ ३७ ॥ तस्सणं भंते ! तस्सत्ति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण असखेज्जकाल असंखेज्जाओ उसप्पणि उसप्पिणिओ कालतो, खेत्तो असखेज्जा लोगा ॥ थावराण भंते! थावरेत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण अणतकाल अणताओ उस्सप्पिणीओव सप्पिणीओ, कालतो खेत्तता अणता लोगा, असखेज्जा पोग्गल परियट्टा, तेण पुग्गल परियट्टा आवालियाए असखेज्जति भागे ॥ ३८ ॥ तसस्सण भंते ! केवति काल

अर्थ

की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की स्थिति है ॥३७॥ प्रश्न-अहो भगवन्! त्रस त्रसपने में कितना कालतक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! त्रस त्रस में जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट असख्यात काल, असंख्यात अवसर्पणी उत्सर्पिणी, क्षेत्र से असख्यात लोकाकाश प्रमाण रहे प्रश्न-अहो भगवन् ! स्थावर, स्थावर में कितना काल तक रहे ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर, स्थावर में जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, अनंत अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी, क्षेत्र से अनंत लोकाकाश, असख्यात पुद्गल परावर्त वे पुद्गल परावर्त आवलिका के असंख्यातवे भाग के समय जितने जानना ॥ ३८ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! काल से त्रस का अंतर कितना कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना प्रश्न-

माहारंति, उववातो तिरियमणुस्सेसु, ठिति जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ दुविहावि मरंति, उव्वट्टिता णो णेरइएसु गच्छंति तिरियमणुस्सेसु जहा संभवं नो देवेसु गच्छंति, दुगतिया दुआगतिया, परित्ता असंखेज्जा पण्णत्ता सेत्तं देवा ॥ सेत्तं पंचेंदिया ॥ सेत्तं उराला तसापाणा ॥ ३६ ॥ तस्सणं भंते! केवतियं कालठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ थावरस्सणं भंते! केवतियं कालठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसंवाससहस्साइं ठिति

अर्थ

स्थिति जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम दोनों प्रकार के मरण मरते हैं वहां से नीकलकर नारकी व देवमें नहीं उत्पन्न होते हैं, परंतु तिर्यंच व मनुष्य में उत्पन्न होते हैं आठवा देवलोक में से नीकलकर तिर्यंच होते हैं इन की दो गति व दो आगति है वे असंख्याते हैं यह देवका भेद हुवा यों पंचेन्द्रिय का कथन हुवा और यह उदारिक त्रस प्राणियों का कथन संपूर्ण हुवा ॥ ३६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! त्रस जीवों की कितनी स्थिति कहीं? उत्तर अहो गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही यह एक भव आश्री ग्रहण की है प्रश्न-स्थावर की कितनी स्थिति कही? उत्तर-स्थावर

॥ द्वितीया प्रतिपत्ति. ॥

तत्थ जेते एव माहसु तिविधासंसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु इत्थी पुरिसा णपुसगा ॥ १ ॥ सेकिंत इत्थीओ ? इत्थीओ तिविहा पण्णत्ताओ तंजहा तिरिक्खजोणित्थीओ, मणुस्सित्थीओ देवित्थीओ ॥२॥ सेकिंत तिरिक्खजोणित्थीओ ? तिरिक्खजोणित्थीओ ति विधाओ पण्णत्ताओ तंजहा जलयरीओ, थलयरीओ, खहयरीओ, सेकिंत जलयरीओ ? जलयरीओ पंचविहाओ पण्णत्ताओ तंजहाओ मच्छीओ जाव सुसुमारीओ, सेत्तं जलयरीओ॥३॥सेकिंत थलयरीओ? थलयरीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा चउप्पदीओ परिसप्पिणीओय॥ सेकिंत चउप्पदीओ? चउप्पदीओ चउव्विहाओ

अर्थ — जो आचार्य ऐसा कहते हैं कि तीन प्रकार के संसार समापन्नक जीव हैं वे इस प्रकार कहते हैं तद्यथा-स्त्री, पुरुष व नपुंसक ॥ १ ॥ प्रश्न-स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर स्त्री के तीन भेद कहे हैं, तिर्यंच स्त्री, मनुष्य स्त्री व देव स्त्री ॥ २ ॥ प्रश्न-तिर्यंच स्त्री के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर तिर्यंचणी के तीन भेद कहे हैं जलचरी, स्थलचरी व खेचरी प्रश्न जलचरी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर-जलचरी के पांच भेद कहे हैं मच्छी यावत् सुसुमारी यह जलचरी के भेद हुए ॥ ३ ॥ प्रश्न स्थलचरी किसे कहते हैं? उत्तर स्थलचरी के दो भेद कहे हैं तद्यथा चतुष्पदी व परिसर्पिणी प्रश्न चतुष्पदी किसे कहते हैं? उत्तर

सूत्र

अतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ थावर-रसण भते ! केवतिय काल अतर होति ? जहा तस्स संचिट्ठणाए ॥ ३९ ॥ एतेसिण भते! तसाणं थावर णय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसा, थावरा अणंतगुणा ॥ सेत्त दुविहा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता दुविहा पडिवत्ती सम्मत्ता ॥ १ ॥ ( ) ( ) ( )

अर्थ

अहो भगवन् ! स्थावर का कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! स्थावर का अतर त्रस की स्थिति जितना है ॥ ३९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इन त्रस व स्थावर में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे त्रस हैं उस से स्थावर अनंतगुने अधिक है यह दो प्रकार के संसार समापन्नक जीवों का वर्णन हुवा यह दो प्रकार के जीव की पहिली प्रतिपत्ति कही ॥ १ ॥

खहयरीओ? खहयरीओ चउव्विह पण्णत्ताओ तजहा-चम्म पक्खीओ जाव सेत्त खहयरीओ॥ सेत्त तिरिक्खजोणित्थीयाओ॥५॥ सेकिंतं मणुस्सत्थियाओ? मणुस्सत्थियाओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा-कम्मभूमियाओ, अकम्मभूमियाओ, अतरदीवियाओ ॥ सेकित अतर दीवियाओ? अंतरदीवियाओ अट्ठावीसतिविहाओ पण्णत्ताओ तजहा-एगरुईओ, आभासीओ जाव सुद्धदंताओ सेत्तं अतरदीवे॥सेकित अकम्मभूमियाओ?अकम्मभूमियाओ तीसति विधाओ पण्णत्ताओ तजहा-पचसु हेमवएसु,पचसुएरण्णवएसु,पचसुहरीवासेसु, पचसु रम्मगवासेसु पचसु देवाकुरुसु पचसु उत्तरकुरुसु, सेत्त अकम्मभूमग, मणुस्सीओ ॥ सेकितं

इत्यादि पर भुज परिसर्प के भेद जानना ॥४॥ प्रश्न-खेचरी किसे कहते हैं? उत्तर-खेचरी के चार भेद कहे हैं, तद्यथा १-चर्म पक्षिणी, २रोम पक्षिणी, ३समुद्र पक्षिणी व ४ वितत पक्षिणी यों यह खेचरी के भेद हुए॥५॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री किसे कहते हैं? उत्तर-मनुष्य स्त्री के तीन भेद कहे हैं कर्म भूमि की, अकर्म भूमि की व अंतर द्वीप की उत्पन्न हुई प्रश्न-अंतर द्वीप की स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर अंतर द्वीप की स्त्रियों के अट्ठाइस भेद कहे हैं तद्यथा-एक रूप द्वीप की स्त्रियों यावत् शुद्ध दंत द्वीप की स्त्रियों, यह अंतर द्वीप की स्त्रियों का कथन हुआ प्रश्न अकर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर-अकर्म भूमि की स्त्रियों के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय,पांच एरणवय, पांच हरिवास,पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच

पण्णत्ताओ तंजहा एगखूरीओ जाव सणप्पइओ। सेकिंतं परिसप्पीओ? परिसप्पीओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-उरगपरिसप्पिणीओय भुयपरिसप्पीणीओय सेकिंत उरगपरिसप्पिणीओ उरग परिसप्पिणीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-अहीओ आयगरीओ महोरगीओ, सेत उरपरिसप्पिणी ॥ सेकिंतं भुजपरिसप्पिणीओ? भुजपरिसप्पिणीओ अणगविहाओ पण्णत्ताओ तंजहा-गोहीओ, णउलीओ, सेधाओ, सेल्लाओ, सेरडीओ, सेरिंधीओ, सावाओ, सराओ, पंचलोइयाओ, चउप्पइयाओ, मूसियाओ, सुसुसियाओ, घरोलियाओ, गोहियाओ, जोड्डियाओ, थिरावालियाओ सेत्तं भुयपरिसप्पीओ॥ ४॥ सेकिंतं

चतुष्पदी के चार भेद कहे हैं १ एक खुरवाली घोडी इत्यादि २ दो खुरवाली गाय भैंस इत्यादि ३ गंडीपदी गोल पांववाली हथनी इत्यादि और सणीपदी नखवाली सिंहनी इत्यादि प्रश्न परिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर परिसर्पिनी के दो भेद कहे हैं उरपरिसर्पिनी व भुजपरिसर्पिनी प्रश्न-उर परिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर उर परिसर्पिनी के तीन भेद कहे हैं सर्पिणी, अजगरी व महोरगी यह उर परिसर्पिनी हुई, प्रश्न-भुजपरिसर्पिनी किसे कहते हैं? उत्तर भुज परिसर्पिनी के अनेक भेद कहे हैं गोही, नकुली, रोहिनी, सल्लयनी, काचरीयों, सेरंधियों, साविकों, सारीयों, पचलोइ, चूहरी, घरोली

सूत्र

वाणमतर देवित्थियाओ अट्ठविहाओ पण्णत्ताओ तजहा पिसाय वाणमंतर देवित्थियाओ जाव सेत्त वाणमतर देवित्थियाओ॥सेकिंत जोतिसिय देवित्थियाओ? जोतिसियदेवित्थियाओ पचविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—चद विमाणजातिसिदेवित्थियाओ, सूरविमाण देवित्थियाओ, गहविमाण देवित्थियाओ, णक्खत्तविमाण देवित्थियाओ, ताराविमाण जोतिसिय देवित्थियाओ, सेत्त जोतिसिय देवित्थियाओ ॥ सेकिंत वेमाणिय देवित्थियाओ ? वेमाणिय देवित्थियाओ दुविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—सोहम्मकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ,ईसाणकप्प वेमाणिय देवित्थियाओ, सेत्त विमाणित्थिओ ॥७॥ इत्थीण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेण आएसेण जहन्नेण अतोमुहुत्त

अर्थ

देव की स्त्रियों यह वाणव्यतर के भेद हुए प्रश्न-ज्योतिषी देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-ज्योतिषी देव स्त्रियोंके पांच भेद कहे हैं तद्यथा १ चंद्र विमान ज्योतिषीकी स्त्री २ सूर्य विमान ज्योतिषीकी स्त्री, ३ग्रह, विमान ज्योतिषी की स्त्री,४नक्षत्र विमानज्योतिषीका स्त्री,५ व तारा विमान ज्योतिषीकी स्त्री प्रश्न वैमानिक देवकी स्त्रियों किसे कहते हैं? उत्तर-वैमानिक देव स्त्रियोंके दोभेद कहे हैं तद्यथा-१ सौधर्म देवलोक के वैमानिक देवकी व २ ईशान देवलोक के वैमानिकदेवकी स्त्री यह वैमानिक देवकी स्त्रीका कथन हुवा॥७॥प्रश्न अहो भगवन्!स्त्री वेदकी कितने कालकी स्थिति कही?उत्तर-अहो गौतम!जघन्य अतर्मुहूर्तकी तिर्यंच व मनुष्य स्त्री आश्री उत्कृष्ट पचावन

सूत्र

कम्मभूमियाओ ? कम्मभूमियाओ पण्णरसविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—पचसुभरहेसु, पचसुएरवएसु, पचसुमहाविदेहेसु, सेत कम्मभूमगमणुस्सीओ ॥ सेत्त मणुस्सीओ ॥५॥ सेकिंत देवित्थियाओ? देवित्थियाओ चउव्विहाओ पण्णत्ताओ तजहा—भवनवासिदेवित्थियाओ, वाणमतर देवित्थियाओ जोतिसि देवित्थियाओ, वेमाणिय देवित्थियाओ सेकित भवणवासि देवित्थियाओ ? भवणवासि देवित्थियाओ दसविहाओ पण्णत्ताओ तजहा—असुरकुमार भवणवासि देवित्थियाओ जाव थणितकुमार भवणवासिदेवित्थियाओ सेत भवणवासिदेवित्थियाओ ॥ सेकिंत वाणमतर देवित्थियाओ?

अर्थ

उत्तर कुरु की स्त्रियों यह अकर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा प्रश्न-कर्म भूमि की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर कर्म भूमि की स्त्रियों के पन्नरह भेद कहे हैं पांच भरत, पांच एरवत व पांच महा विदेह यह कर्म भूमि की स्त्रियों का कथन हुवा यह मनुष्यणी का भेद हुवा ॥५॥ प्रश्न-देव स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-देव स्त्रियोंके चार भेद कहे हैं तद्यथा १ भवनवासी, २ वाणव्यतर, ३ ज्योतिषी व ४ वैमानिक स्त्रियों प्रश्न भवनवासीनी किसे कहते हैं ? उत्तर भवनवासीनी देव स्त्रियों के दश भेद कहे हैं, असुर कुमार भवनवासी की स्त्री यावत् स्तनित कुमार भवनवासी की स्त्री प्रश्न वाणव्यतर देव की स्त्रियों किसे कहते हैं ? उत्तर-वाणव्यतर देव की स्त्रियों के आठ भेद कहे हैं पिशाच वाणव्यतर देव की स्त्रियों यावत् गंधर्व वाणव्यतर

भंते ! केवइय काल ठिरपण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीण जहण्णेणं अतो मुहुत्तं उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिउवमाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं अन्तो मुहुत्त, उक्कोसेण देसणा पुव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त

तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंचणीकी स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यंचणी की जानना खेचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य

उक्कोसेणं पणपन्न पलिओवमाइं एकेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं णवपलि-ओवमाइं, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं. ॥ एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं अंतमुहुत्त उक्कोसेणं पण्णास पलिओवमाइ ॥ ८ ॥ तिरिक्खजोणियाणं भते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं ॥ जलयर तिरिक्खजोणियाणं भते! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी॥ चउपदप्पलयर तिरिक्खजोणियाणं भते ! केवतियंकालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो

पल्योपमकी स्थिति ईशान देवलोककी अपरिग्रही देवी आश्री एक आदेशसे जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पचास पल्योपम सौधर्म देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट नव पल्योपम ईशान देवलोक की परिग्रही देवी आश्री एक आदेश से जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सात पल्योपम सौधर्म देवलोक की परिग्रही देवी आश्री ॥ ८ ॥ अहो भगवन् तिर्यंचों की स्थिति कितनी कही है ? अहो गौतम ! तिर्यंचों की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की अहो भगवन्-जलचर तिर्यंचों की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जलचर तिर्यंचों की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड अहो भगवन् चतुष्पद स्थलचर

मुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उरपरिसप्प थलयरा तिरिक्ख जोणित्थिणं भंते ! केवइयं कालं ठिइपण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी एवं भुयपरिसप्पि ॥ खहयर तिरिक्ख जोणित्थीण जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागो ॥ ९ ॥ मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतो मुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, कम्मभूमग मणुस्सित्थीणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं

अर्थ

तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-चतुष्पद स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम की प्रश्न-उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंचणी की स्थिति कितनी कही है ? उत्तर-जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड ऐसे ही भुज परिसर्प तिर्यंचणी की जानना खेचर तिर्यंचणी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग ॥ ९ ॥ प्रश्न-मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम और धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम क्रोड पूर्व प्रश्न-कर्म भूमि मनुष्य स्त्री की कितनी स्थिति कही है ? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य

पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिउवमाइ,धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ भरहेरवय कम्मभूमग मणुस्सित्थीण भते! केवतिय काल ठीती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, धम्म चरण पडुच्च जहण्णण अतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थीण भते ! केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचर पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण देसूणा

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड भरत व एरवत कर्म भूमि क मनुष्य की स्त्री की कितनी स्थिति कही? उत्तर-क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम धर्माचरण आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छकम (आठवर्षकम) क्रोड पूर्व प्रश्न-पूर्वविदेह व अपर विदह कर्मभूमिवाले मनुष्यणी की कितनी स्थिति है ? उत्तर क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, धर्माचरण आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व अकर्म भूमि की मनुष्यणी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम

पुव्वकोडि ॥ अकम्मभूमगमणुस्सित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिउवम पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण, ऊणग उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ हेमवए एरन्नवए जहण्णेण देसूण पलिओवम, पलिउवमस्स असंखज्जइ भागे ऊणग, उक्कोसेण पलिउवम, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइं दोपलिओवमाइं, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेऊणाइं, उक्कोसेण दोपलिउवमाइं, सहरण पडुच्च

अर्थ साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड, हेमवय एरणवयके क्षेत्रकी मनुष्यणीकी स्थिति जघन्य पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम एक पल्योपम, उत्कृष्ट एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड प्रश्न हरिवर्ष रम्यक वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्वक्रोड प्रश्न-देवकुरु उत्तरकुरुकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही ? उत्तर-जन्म आश्री पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री

जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म-भूमगमणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहन्नेण देसूणाइं तिण्णि पलिओवमाइं, पलिओवमस्स असंखज्जति भागेण ऊणगाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी॥ अंतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जम्मग पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम, पलिओवमस्स, असंखेज्जतिभागेणऊणय, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखातिभागं, सहरण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥१०॥ देवित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण दसवास सहस्साइं उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइं, भवणवासि देवित्थीण भंते! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण दस वाससहस्साइं उक्कोसेणअद्ध पंचमाइं पलिओवमाइं

जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व प्रश्न अंतर द्वीपकी मनुष्यणीकी कितनी स्थिति कही? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम के असंख्यातवे भाग में कुछ कम और उत्कृष्ट पल्योपमका असंख्यातवा भाग संहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व क्रोड ॥१०॥ प्रश्न देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ५५ पल्य की प्रश्न भवनवासी देवी की कितनी स्थिति कही? उत्तर जघन्य दश हजार वर्ष

एव असुर कुमार भवणवासि देवस्थीयाएवि ॥ नागकुमार भवणवासी देविरियपाए जहण्णेण दसवास सहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिओवम, एव सेसाणवि जाव थणिय कुमाराण ॥ वाणमतरीण जहण्णेण दसवास सहस्साइ, उक्कोसेणं अद्ध पलिओवम ॥ जोतिसीणं जहण्णेण अट्ठभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्धपलिओवम पण्णासाए वास सहस्सेहिं अज्झतिय, चदविमाण जोतिसिय देविरियपाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण तचेव, सूरविमाण जातिसिय देविरियपाए, जहण्णेण चउभाग पलिआवम, उक्कासेण अद्ध पलिओवम, पचहिं वाससतेहिं, मज्झहिय, गहविमाण

अर्थ

उत्कृष्ट स डे चार पल्योपम की ऐसे ही असुर कुमार भवनवासी की देवी की जानना नाग कुमार भवन वासी देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछकम पल्योपम की, ऐसे ही स्वनित कुमार पर्यंत शेप सब भुवनपति की देवी की स्थिति कहना ॥ वाणव्यतर देवी की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आधा पल्योपम ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक, चद्र विमान देवी की जघन्य एक पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पचास हजार वर्ष अधिक सूर्य विमान ज्योतिषी देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट आधा पल्योपम व पाच सो वर्ष अधिक, ग्रह विमान ज्योतिषी की देवी की जघन्य पल्योपम का

जोतिसिय देवित्थिण जहण्णण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम णक्खत्त-चाविमाण जोतिसिदेवित्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग पलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेणं अट्ठभाग पलिओवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइं, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भंते ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइं ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवणं उक्कोसेण णवपलिओवमाइं ॥ ११ ॥ इत्थीण भंते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट आधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्री ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचपन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की उत्पत्ति नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

इत्थिचि कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! एकादेसेणं जहण्णेणं एकसमयं, उक्कोसेण देसुत्तरं पलिओवमसत पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियं ॥ एकेणादेसेणं जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण अट्ठारस पलिओवमाइ, पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइ ॥ एकेणा-देसेण जहण्णेण एकसमयं उक्कोसेण चोद्दसपलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियाइं॥ एकणादेसेण जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण पलिओवमसय पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहिय॥

उत्तर अहो गौतम ! एक आदेश से जघन्य एक समय (उपशम श्रेणी से पीछे पडता हुवा स्त्रीवेदी जीव काल करे इस अपेक्षा) उत्कृष्ट ११० पल्योपम, प्रत्येक पूर्व क्रोड अधिक, कोई स्त्री वेदी जीव दो भव दूसरे देवलोक की अपरिग्रही देवीपने करेतो इस के ११० पल्योपम होवे और बीच में मनुष्यणी का भव कर सो अधिक जानना (देवी वहां से चवकर असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाली स्त्री में नहीं उत्पन्न होती है) दूसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट अठारह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक यहां दूसरे देव लोक की परिग्रहीदेवी के दो भव और अन्य तिर्यंचणी या मनुष्यणी के भव आश्री जानना तीसरे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौदह पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक, पहिले देवलोक की परिग्रही देवी आश्री चौथे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो पल्योपम प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक पहिले देवलोक की अपरिग्रही देवी आश्री, पांचवे प्रकार से जघन्य एक समय उत्कृष्ट प्रत्येक पल्योपम व प्रत्येक पूर्व

जातिसिय देविात्थिण जहण्णण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण अद्ध पलिओवम णक्खत्ताविमाण जोतिसिदेविात्थियाए जहण्णेण चउभाग पलिओवम उक्कोसेण साहिय चउभाग प्रलिओवम, ॥ तारा विमाण जोतिसिय देवित्थियाए जहण्णेण अट्ठमाग पलितोवम, उक्कोसेण सातिरेग अट्ठभाग पलिओवम वेमाणिय देवित्थियाए जहण्णेण पलितोवम, उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइ, सोहम्म कप्पवेमाणिय देवित्थीण भत ! केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमं उक्कोसेणं सत्तपलिओवमाइ ॥ ईसाण देवित्थीण जहण्णेण सातिरेग पलिओवण उक्कोसम णवपलितोवमाइ ॥ ११ ॥ इत्थीण भते !

चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम, नक्षत्र विमान की देवी की जघन्य पल्योपम का चौथा भाग उत्कृष्ट पल्योपम के चौथे भाग से कुछ अधिक तारा विमान वासिनी देवी की जघन्य पल्योपम का आठवा भाग उत्कृष्ट साधिक पल्योपम का आठवा भाग वैमानिक देवी की जघन्य एक पल्योपम उत्कृष्ट पचावन पल्योपम सौधर्म देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट सात पल्योपम की परिग्रही देवी आश्रो ईशान देवलोक की देवी की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट नव पल्योपम की और अपरिग्रही देवी की स्थिति पचावन पल्योपम की है आगे स्त्रियों की उत्पत्ति नहीं है ॥ ११ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! एक जीव स्त्रीवेद का स्त्री वेद पने रहे तो कितना काल तक रहे ?

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थीति कालतो केवचिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियात्रि भरहेरतियात्रि, णवर खेत्तं पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ, देसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइ ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सखेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन्! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्वक्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परंतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्राड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छकम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

सूत्र

एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं पलिओवमपुहुत्तं पुव्वकोडी पुहुत्तमब्भहियं॥१२॥तिरिक्खजोणिण भंते! तिरिक्खजोणित्थित्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहण्णेण अंतामुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियाइ, जलचराए जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त मब्भहियं॥चउप्पदथलयरातिरिक्ख जहा उहिता, तिरिक्खीउरगपरिसप्पि भुयगपरिसप्पित्थिण जहा जलचराण॥ खहयरी जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पलितोवमस्स असंखेज्जतिभाग पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियं

अर्थ

क्रोड अधिक सात भव तिर्यंचणी के पूर्व कोडी आयुष्य के और आठवे भव में देवकुरु उत्तर कुरु में तीन पल्योपम के आयुष्य वाली युगलनी होकर सौधर्म देवलोक में जघन्य स्थिति वाली देवी होवे ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यचणी तिर्यचणीपने कितना काल तक रहती है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक सात भव पूर्व क्रोड की स्थिति के करे आठवा भव तीन पल्योपम की स्थिति का करे और नवमा भव पूर्व क्रोड की स्थिति का करे जलचरी जलचरीपने रहे तो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड, चतुष्पद स्थलचरी का औधिक जैसे मानना, उर परिसर्प व भुज परिसर्प का जलचरी जैसे जानना खेचरी का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग व प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक जानना॥१३॥ प्रश्न-अहो भग-

मणुस्सित्थीण भंते ! मणुस्सित्थीति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडि पुहुत्तमब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडी ॥ एव कम्मभूमियावि भरहेरवतियावि, णवर खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइं, दसूणा पुव्वकोडी अब्भहियाइं ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ पुव्वविदेह अवरविदह मणुस्सखत्त पडुच्च जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडि पुहुत्त॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण

भन् ! मनुष्यणी मनुष्यणीपने कितना काल तक रहती है ? अहो गौतम ! क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम व पूर्व क्रोड अधिक, धर्माचरण आश्री, जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछकम पूर्व क्रोड ऐसे ही कर्मभूमि व भरत एरवत का जानना परंतु क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व देशऊना क्रोड पूर्व अधिक धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड पूर्व विदेह व अपर विदेह मनुष्यणी की क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक पूर्व क्रोड धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुच्छ कम पूर्व क्रोड अकर्मभूमि की मनुष्यणी अकर्मभूमि में कितना काल तक

सूत्र

एक समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥ अकम्मभूमिक मणुस्सित्थिण, अकम्मभूमए कालओ केवच्चिर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणऊण उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ ॥ सहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडिए अब्भहियाइ ॥हेमवतरण्णवे अकम्मभूमिमणुस्सित्थिण भते! हेमवतरण्णवे कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलिओवमस्स असखेज्जति भागेण ऊणग उक्कोसेण पलिओवमग, साहारण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण

अर्थ

रहती है ? उत्तर जन्म आश्री पल्योपम का असख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक, प्रश्न—हेमवय एरणवय की मनुष्यणी हेमवय एरणवय में कितने काल तक रहती है ? उत्तर—जन्म आश्री पल्योपम का असख्यातवा भाग कम एक पल्योपम उत्कृष्ट एक पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक पल्योपम व कुच्छ कम पूर्व क्रोड अधिक कोई देव कर्मभूमि की स्त्री को हेमवय एरणवय क्षेत्र में साहरन करके लावे वह वहां कुच्छ कम पूर्व क्रोड का आयुष्य भोगव कर काल कर जावे और उस ही क्षेत्र में

पलिओवम देसूणा पुव्वकोडीए अब्भहिय ॥हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण भते! कालओ केवचर होई? गोयमा ! जम्मण प-ुच्च जहण्णेण देसूणाइ दो पलितोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणं ऊणगाइ, उक्कोसेण दोपलितोवमाइ ॥ साहरण पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दो पलिओवमाइ देसूणाइ पुव्वकोडि अब्भहियाइ ॥ देवकुरु उत्तरकुरु जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूणाइ तिन्नि पलिओवमाइ पलितोवमस्स असखेज्जइ भागेणं ऊ गाइ उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ, सहरण पडुच्च जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥अतरदीवा कम्मभूमगमणुस्सि २ जम्मण पडुच्च जहण्णेण देसूण पलिओवम पलितोवमस्स असखेज्जति भागेण ऊण

अर्थ युगलनीपने उत्पन्न होवे उस आश्री हरिवर्ष रम्यक् वर्ष अकर्मभूमि मनुष्यणीकी जन्म आश्री पल्य का असंख्यातवा भाग दो पल्योपम उत्कृष्ट दो पल्योपम की साहरन आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो पल्योपम व कुच्छ कम क्रोड पूर्व अधिक जानना देवकुरु उत्तरकुरु की जन्म आश्री जघन्य पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम तीन पल्योपम उत्कृष्ट तीन पल्योपम साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम व कुच्छ कम क्रोडपूर्व अधिक अंतर द्वीप की देवीका जन्मय आश्री जघन्य पल्योपम के

सूत्र

उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग,सहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभाग देसूणाए पुव्व कोडीए अब्भहियं ॥१४॥ देवित्थीण (देवीणं) भंते! देवित्थित्ति कालओ केवच्चिरहोइ? गोयमा! जच्चेव संचिट्ठणा ॥१५॥ इत्थीणं (इत्थीएणं) भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं अनंतकाल वणस्सति कालो एवं सव्वासिं तिरिक्खित्थीणं ॥ मणु-

अर्थ

असंख्यात वे भाग मे कुच्छकम उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग व कुच्छकम क्रोड पूर्व अधिक॥१४॥प्रश्न अहो भगवन्! देवता की स्त्री देवी पने कितने काल तक रहती है? उत्तर-अहो गौतम! जैसे देवी की स्थिति कही वैसे ही जानना क्यों की देवी चवकर पुनः देवीपने नहीं उत्पन्न होती है ॥ १५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन्! स्त्री का स्त्री पने कितना अंतर होता है? अर्थात् स्त्री वेद में से नीकला पुनः कितने समय में स्त्री पना प्राप्त करे? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति आश्री इतना स्त्री वेद का अंतर जानना ऐसे ही तिर्यचणी व मनुष्यणी का जानना मनुष्य में क्षेत्र आश्री जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल, धर्माचरण आश्री जघन्य एक समय उत्कृष्ट अर्ध पुद्गल परावर्त में कुच्छ कम ऐसे ही पूर्व महाविदेह व अपर महाविदेह क्षेत्र आश्री जानना अकर्मभूमि की मनुष्यणी का कितने अंतर

स्सित्थीण मणुस्सित्थिए खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त,उक्कोसेण वणस्सइ कालो॥ धम्म चरण पडुच्च जहण्णेण समउ उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरि यट्ट देसूण, एव जाव पुव्व विदेह अवर विदेहियाओ ॥ अकम्म भूमगमणुस्सित्थिण भंते ! केवतिय काल अतर होइ ? गोयमा ! जम्मण पडुच्च जहण्णेण दसवास सहस्साति अतोमुहुत्त मब्भहियाइ उक्कोसेण वणस्सइकालो, सहरणं पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइकालो एव जाव अतरदीवियाओ ॥

अर्थ

कहा ! उत्तर—जन्म आश्री जघन्य दश हजार वर्ष अतर्मुहूर्त अधिक क्यों कि अकर्मभूमि की स्त्री मरकर जघन्य स्थितिवाले देवतापने उत्पन्न होवे वह दशहजारवर्ष का आयुष्य भोगवकर कर्मभूमि मनुष्यकी स्त्रीपन उत्पन्न होवे वहां से मरकर अकर्म भूमि में स्त्रीपने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अनंत काल का अंतर पड़ साहरन आश्री जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल ऐसे ही अतर द्वीप पर्यंत कहना प्रश्न अहो भगवन ! देवता की स्त्री मरकर पुनः देवता की स्त्रीपने उत्पन्न होवे तो कितना काल का अंतर होवे ? उत्तर-अहो गौतम !, जघन्य अंतर मुहूर्त क्योंकि देवी मरकर कर्म भूमि में उत्पन्न होवे वहां पूर्ण पर्याय बांध कर पुनः स्त्री पने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अनंत काल जानना ऐसे ही असुरकुमार भवन पति की देवी से ईशान देवलोक की देवी पर्यंत सबका कहना ॥

देवित्थिण सव्वेसिं जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सतिकालो ॥१६॥ एतासिण भंते! तिरिक्खजोणियाण मणुस्सित्थियाण देवित्थियाण कयरा २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा? सव्वत्थोवाओ मणुस्सित्थीयाओ, तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, ॥ एतासिण भंते! तिरिक्खजोणित्थियाण जलयरीण थलयरीणं खहयरीणय कयरा २ हिंतो अप्पाओवा बहुयाओवा तुल्लाओवा विसेसाहियाओवा? गोयमा! सव्वत्थोवाओ खहयरि तिरिक्खजोणियाओ तिरिक्खजोणियाओ संखेज्ज गुणाओ, जलयर तिरिक्ख संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भंते! मणुस्सित्थिण कम्म भूमियाण अकम्मभूमियाण, अंतरदीवियाणय कयरा २

मूल

अर्थ

॥ १६ ॥ प्रश्न-अहो भगवन्! तिर्यंचणी, मनुष्यणी, व देवी में कौन किस से अल्प, बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? अहो गौतम! सब से थोडी मनुष्य की स्त्री क्यों कि वे संख्यात क्रोडाक्रोड है, इस से तिर्यंच की स्त्री असंख्यातगुनी, इस से देवियों असंख्यातगुनी प्रश्न-अहो भगवन्! तिर्यंचणी में जलचरी स्थलचरी व खचरी में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है? उत्तर-अहो गौतम! सब से थोडी खेचरी तिर्यंचणी, उस से स्थलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी, उस से जलचरी तिर्यंचणी संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन्! कर्मभूमि की स्त्रियों, अकर्मभूमि व अंतर द्वीप की स्त्रियों में कौन किस से

सूत्र

हितो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ अंतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि-तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्लाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवय हेरण्णवयवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ भरहेरवयवास कम्मगभूमग मणुस्सित्थियाओ, दोवि तुल्लाओ संखेज्ज-गुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थियाओ दोवि तुल्लाओ संखेज्जगुणाओ॥

अर्थ

अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अन्तर द्वीप की स्त्री, इस से देवकुरु उत्तरकुरु की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक् वर्ष की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी इस से हेमवय एरणवय की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से भरत एरवत क्षेत्र की मनुष्य स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी, इस से पूर्व विदेह व अपर विदेह क्षेत्र की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यात गुनी प्रश्न—अहो भगवन् ! देवियों में भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक की देवियों में से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडी वैमानिक की देवियों, क्यों की अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशि का दूसरा वर्ग मूल को तीसरे वर्ग मूल से गुनने से जितनी राशि होवे उतने प्रमाण उन को हुई लोक की

सूत्र

एतासिण भंते ! देवत्थियाणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसियाणं वेमाणिणीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ वेमाणियाओ देवित्थियाओ, भवणवासी देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवत्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ एतासिण भंते ! तिरिक्ख-जोणियाण जलयरीण थलयरीण खहयरीण मणुस्सित्थीयाण कम्मभूमियाण अकम्म भूमियाण, अंतरदीवियाणं, देवित्थियाणं, भवणवासिणीण, वाणमंतरीण, जोतिसि-

अर्थ

प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश हैं उसे बत्तीसवे भाग देनेसे उतने प्रमाण हैं, इससे सौधर्म ईशान देवलोक की देवियों असंख्यात गुनी क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशिका प्रथम वर्ग मूल उसे दूसरे वर्ग मूलसे गुणनेसे जितनी प्रदेश राशि होवे इतने प्रतर की श्रेणी में जितने प्रदेशराशि होवे, उसे बत्तीसका भाग देनेसे जो प्राप्त हो उतनी है, इससे व्यंतर देवकी देवियों असंख्यातगुनी क्यों कि असंख्यात योजन प्रमाण एक प्रदेशिक श्रेणीप्रमाण जितने खण्ड एक प्रतर में हैं उस को भी बत्तीस का भाग देने से जो आवे उतनी व्यन्तर की स्त्रियों हैं उस से ज्योतिषी की स्त्रियों संख्यातगुनी क्यों कि २५६ अंगुल प्रमाण एक प्रतर की श्रेणी मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से बत्तीसवा भाग रहित करने से जितनी प्रदेश राशि होवे उतनी है. अहो भगवन् ! तिर्यंच स्त्रियों में जलचरी, स्थलचरी, खेचरी, मनुष्य स्त्रियों में कर्म-

याणं वेमाणिणीणय कयरा २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अतरदीवग अकम्म भूमग मणुस्सित्थियाओ देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवितुल्ला संखेज्जगुणाओ, हरिवास रम्मगवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, हेमवतेरण्णवास अकम्मभूमग मणुस्सित्थियाओ दोवि संखेज्जगुणाओ, भरहेरवयवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ, पुव्वविदेह अवरविदेहवास कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणाओ वेमाणिय

मनुष्य की, अकर्मभूमि व अतर द्वीप की स्त्रियों व देव स्त्रियों में भवनवासीनी, वाणव्यन्तरी, ज्योतिषीनी व वैमानिकीनी देव की स्त्रियों में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडी अंतरद्वीप अकर्मभूमिवाले मनुष्य की स्त्रियों हैं इस से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इस से हरिवर्ष रम्यक वर्ष के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी इस से हेमवय एरणवय की मनुष्यणीयों परस्पर तुल्य संख्यातगुनी, इस से भरत एरवत की मनुष्यणियों संख्यातगुनी, इस से पूर्व विदह व पश्चिम विदह की स्त्रियों संख्यातगुनी, इस से वैमानिक देवता की स्त्रियों असंख्यातगुनी, आकाश प्रदेश राशि प्रमाण होने से, इस से भवनपति देवों की स्त्रियों असंख्यातगुनी, इस से खेचर तिर्यचनी असंख्यातगुनी, प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही हुई आकाश श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है, इस से स्थलचर तिर्यचणी संख्यातगुनी, अ वेशाय बडी

पंचिंदियाओ असंखेज्जगुणाओ, भवणवासि देवित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्जगुणाओ, थलचर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ वाणमंतरदेवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ ॥ १७ ॥ इत्थिवेदस्सणं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंध ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढा सत्तभागाओ पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणं, उक्कोसेणं पण्णरस

प्रतर का असंख्यातवा भाग उस में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से जलचर तिर्यंचणी संख्यातगुनी अतिक्षय प्रदा प्रतर का असंख्यातवा भाग में रही हुई असंख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश राशि प्रमाण है इस से वाणव्यंतर देव की देवियों संख्यातगुनी, संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमान एक प्रदेश श्रेणि मात्र खंड जितने एक प्रतर में होवे उस में से १ पच्चीसवा भाग कम करने से जितनी राशी रहे उतनी है इससे ज्योतिषी की देवियों संख्यातगुनी पूर्वोक्त प्रकार ॥ १७ ॥ अब स्त्री वेद की स्थिति कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! स्त्री वेद कर्म की कितने काल पर्यंत स्थिति होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम व एक सागरोपमका सातवा भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम क्यों कि स्त्री वेदादिक कर्म की अपनी २ उत्कृष्ट स्थिति बंध से मिथ्यात्व की उत्कृष्ट स्थिति ७० सित्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम की प्रमाण से भाग

सूत्र

सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरस वास सयाइ, अवाधा, अवाहुणिया कम्मठिती कम्मणिसेओ ॥ १८ ॥ इत्थिवेदेण भंते ! किंपकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! फुफ अग्गि समाणे पण्णत्ते ॥ सेत्त इत्थियाओ ॥ १९ ॥ सेकिंत पुरिसा ? पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा-तिरिक्खजोणिय पुरिसा, मणुस्स पुरिसा, देवपुरिसा ॥ २० ॥ सेकिंत तिरिक्खजोणिय पुरिसा ? तिरिक्खजोणिय पुरिसा तिविहा पण्णत्ता तजहा-जलचरा थलचरा खहचरा ॥ इत्थि भदो भ णियव्वो जाव खहयरा॥सेत्त खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा ॥ २१ ॥ सेकिंत मणुस्स पुरिसा ? मणुस्स पुरिसा

अर्थ

करने से इतनी होती है उत्कृष्ट पन्नरह क्रोडाक्रोड सागरोपम अबाधाकाल पन्नरह हजार वर्ष का कहा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! स्त्रियों का विषय कैसे कहा है ? उत्तर—जैसे बकरी की मींगनियों की अग्नि जाज्वल्यमान होती है और छेडने से विशेष दीपायमान होती है, वैसे ही, तथा काष्ट की धगधगती अग्नि समान कामाग्नि है यह स्त्री वेद का अधिकार सपूर्ण हुआ ॥ १९ ॥ प्रश्न—पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—पुरुष के तीन भेद कहे हैं तद्यथा तिर्यंच पुरुष, मनुष्य पुरुष व देव पुरुष ॥२०॥ प्रश्न—तिर्यंच पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच पुरुष के तीन भेद कहे हैं—जलचर, स्थलचर, व खेचर या स्त्री भेद में जैसा कहा वैसे ही यहां जानना यह तिर्यंच का कथन हुआ ॥ २१ ॥ प्रश्न—मनुष्य

तिविहा पण्णत्ता तंजहा-कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा सेत्त मणुस्स पुरिसा ॥ २२ ॥ सेकिंत देव पुरिसा ? देवपुरिसा चउव्विहा इत्थिभेदो भाणिय वो जाव सव्वट्ठसिद्धा ॥ २३ ॥ पुरिसस्सण भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा !

पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—मनुष्य पुरुष के तीन भेद कहे हैं—कर्मभूमि, अकर्मभूमि व अंतर-द्वीप यह मनुष्य पुरुष के भेद हुवे ॥ २२ ॥ प्रश्न—देव पुरुष के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—देव पुरुष के चार भेद कहे हैं यों जैसे स्त्री भेद में कहा वैसे ही जानना यहां सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत कहना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम तिर्यंच पुरुष व मनुष्य पुरुष का स्त्री जैसे कहना देव पुरुष की यावत् सर्वार्थ सिद्ध देवों की स्थिति पन्नवणा से जानना विशेष में—भवनपति में असुरकुमार देव की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम से कुछ अधिक, नागकुमार दि नवजाति के भुवनपति देवकी जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट कुछ कम दो पल्योपम की वाणव्यन्तर देवकी जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट एक पल्योपम की, ज्योतिषी देवकी आयु में जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, चन्द्रमा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लाख वर्ष की, सूर्य की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट एक पल्योपम एक हजार वर्ष की

जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं मणुस्स पुरिसाण जचव इत्थिम ठिती साचेव भाणियव्वा ॥ देव पुरिसाणंि जाव

ग्रह की, जघन्य पाव पल्योपम की, उत्कृष्ट एक पल्योपम की, नक्षत्र की, जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट आधा पल्योपम की, तारा की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्ट पाव पल्योपम से कुछ अधिक जानना वैमानिक की ओघ से जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की, विशेष से— १ सौधर्म देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट दो सागरोपम की, २ ईशान देवलोक के देव की जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट दो सागरोपम कुछ अधिक, ३ सनत्कुमार देवलोक के देवता की जघन्य दो सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, ४ माहेन्द्र देवलोक के देवों की जघन्य दो सागर कुछ अधिक उत्कृष्ट सात सागरोपम कुछ अधिक, ५ ब्रह्मदेवलोकके देवता की जघन्य सात सागरोपम की उत्कृष्ट दश सागरोपम की, ६ लांतक देवलोक के देवता की जघन्य दश सागरोपम की उत्कृष्ट चौदह सागरोपम की, ७ महाशुक्र देवलोकके देव की जघन्य चौदह सागरोपमकी उत्कृष्ट सतरह सागरोपम की, ८ सहस्रार देवलोक के देव की जघन्य सतरह सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह सागरोपम की ९ आणत देवलोक की जघन्य अठारह सागरोपम की उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम की, १० प्राणत देवलोक की जघन्य उन्नीस सागरोपम की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की, ११ आरण देवलोक के देव की जघन्य

सूत्र

सव्वट्ठसिद्धाण ताव ठिनीए जहा पण्णवणाए तहा भाणियव्वा ॥ २४ ॥ पुरिसेणं भंते ! पुरिसात्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण

अर्थ

२ मि सागरोपम की उत्कृष्ट इक्कीस सागरोपम की, १२ अच्युत देवलोक की जघन्य इक्कीस सागरोपम की उत्कृष्ट बाईस सागरोपम की (ए कल्पोत्पन्न देव की स्थिति कही) १ भद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य बावीस सागरोपम की उत्कृष्ट तेवीस सागरोपम की, २ सुभद्र ग्रैवेयक के देव की जघन्य तेवीस सागरोपम की उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम की, ३ सुजात ग्रैवेयक के देव की जघन्य चौवीस सागरोपमकी उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपमकी, ४ सुमनस ग्रैवेयक के देवकी जघन्य पच्चीस सागरोपम की उत्कृष्ट छब्बीस सागरोपम की, ५ सुदर्शन ग्रैवेयक के देव की जघन्य छब्बीस सागरोपम की उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम की, ६ प्रिय [illegible]क के देव की जघन्य सत्तावीस सागरोपम की उत्कृष्ट अट्ठावीस सागरोपम की, ७ आ[illegible]क देव की जघन्य अठावीस सागरोपम की उत्कृष्ट गु[illegible] सागरोपम की, ८ सुमतिभद्रग्रैवेयक के [illegible]घन्य उगनीस सागरोपमकी और उत्कृष्ट तीस सागरोपम की और ९ यशोधरग्रैवेयक के देव की जघन्य [illegible] सागरोपम की उत्कृष्ट एकतीस सागरोपम की ॥ विजय वैजयंत जयंत और अपराजित विमान वासी [illegible]की जघन्य एक तीस मध्यम बत्तीस उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम की और सर्वार्थ सिद्ध विमान वासी देवताओं की स्थिति जघन्योत्कृष्ट तेतीस ही सागरोपम की ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुषका [illegible]रूप पने निरंतर रहतो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो

सागरोवमसयपुहुत्त सातिरेगं ॥ तिरिक्खजोणिय पुरिसाण भंते ! कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिन्निपलिओवमाइ पुव्वकोडि पुहुत्त मज्झहियाइ ॥ एव तहेव सचिट्ठणा जहा इत्थीण जाव खहयरतिरिक्खजोणिय पुरिसस्स सचिट्ठणा ॥ मणुस्स पुरिस्साण भंते ! कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णिपलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्त

अर्थ

सागरोपम कुछ अधिक फिर पुरुष वेद का अवश्य पलटा होवे प्रश्न-अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक पुरुष तिर्यंच पुरुषपने रहे तो कितने काल रहे ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम ऊपर पूर्व कोटी पृथक्त्व अधिक (सात भव पूर्व कोटी आयुष्य वाले तिर्यंच के कर्मभूमि के क्षेत्र आश्रिय और एक भव युगल तिर्यंच का तीन पल्योपम का मानना] यों जिस प्रकार तिर्यंचनी स्त्री का सचिठन काल कहा वैसा ही जलचर स्थलचर पुरुष का भी सचिठना काल जानना अर्थात् जलचर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, चतुष्पद स्थलचर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, उरपरि सर्प की तथा भुजपर की जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व, खचर पुरुषकी जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व उपर के पल्योपम का असंख्यात भाग पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक सात कर्मभूमी के भवकरे आठवा अन्तरद्वीपका भवकरे) प्रश्न-मनुष्य का पुरुषपना

सूत्र

मणुस्सहियाइ ॥ धम्मचरणं पडुच जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडि, एवं सव्वत्थ जाव पुव्वविदेह अवरविदेह अकम्मभूमक मणुस्स पुरिसाण जहा अकम्मभूमग मणुस्सित्थीण जाव अंतर दीवगाण ॥ देवपुरिसाण जच्चेव ठिती सच्चेव संचिट्ठणा जाव सव्वट्ठसिद्धगाण ॥ २५ ॥ पुरिसाण भंते ! केवतिय काल अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥

अर्थ

कितने काल तक रहे? उत्तर—अहो गौतम! क्षेत्र की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक उक्त प्रकार ही मानना, और चारित्र धर्माचरण आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देश ऊन पूर्व कोटी वर्ष यावत् पूर्व महाविदेह का तथा अकर्मभूमि के मनुष्य पुरुष का जैसा अकर्म-भूमि की स्त्री का कहा यावत् अंतरद्वीप का पुरुष का भी अंतरद्वीप की स्त्री जैसा ही कहना और देव पुरुषों का पुरुषपने का काल तो इनकी स्थिति कही उतना ही जानना क्यों कि इन का पुरुष (दूसरा) भव होता नहीं है इस लिये सर्वार्थ सिद्ध तक का पुरुष वेद का काल इन की स्थिति जैसा ही कहना ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! पुरुष वेद को प्राप्त करने का कितना अन्तर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय का (उपशम श्रेणी में वेद का उपशम कर पश्चात् से पुनः पुरुष वेद को

तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥ एवं जाव खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसाण ॥ मणुस्स पुरिसाण भंते ! केवतिय काल अंतर होति ? गोयमा ! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय उक्कोसेणं अणतकाल अणता

अर्थ

समय मार्ग दर्शकर तुरं मृत्यु पावे उस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना (प्रश्न—स्त्री और नपुंसक दोनों श्रेणि करते हैं उन का एक समय का अन्तर क्यों न हो ? उत्तर— श्रेणिगत मृत्यु पाकर नियमा से पुरुष दपने ही उत्पन्न होता है परंतु देवीपने या अन्य गति में नहीं जाता है इस लिये) तिर्यंच योनिक पुरुष में विशेषता बताते हैं तिर्यंच योनिक पुरुष का जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जलचर स्थलचर खचर पुरुष का भी इतना ही अंतर जानना प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य पुरुष मरकर पीछा पुरुष होवे तो कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! पुरुष का जघन्य से क्षेत्र आश्रिय अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना और चरित्र धर्म आश्रिय जघन्य एक समय [परिणाम के पडदे आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल अर्ध पुद्गल परावर्तन, इस ही प्रकार भरत एरावत के मनुष्य पुरुष, पूर्व विदेह पश्चिम विदेह पुरुष का जन्म आश्रिय

सूत्र

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जावं अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतामुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

अर्थ

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां मे मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और सहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोई देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने मे पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बोलो रहा यह सब के वैसा जानना यावत् अतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो एवं जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन्! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नवते आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

सूत्र

उस्सप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढ पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

अर्थ

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां मे मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अंतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने मे पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा संहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बीस्सा रस पर्वत के जैसा जानना यावत् अन्तर्द्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

सूत्र

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

अर्थ

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार जाती के देव मे लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

सूत्र

उस्सप्पिणी ओसप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गल परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

अर्थ

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और तुर्त परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष [illegible] रहा [illegible] के जैसा जानना यावत् अंतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना [illegible]

पुरिसाण भते ! केवतिय कालं अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण वास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल जानना इस प्रकार ही असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववें आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अतर जघन्य वर्ष पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायसे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवें] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

सूत्र

उरसप्पिणी सप्पिणी जाव अवड्ढं पोग्गले परियट्ट देसूण, कम्मभूमकाण जाव विदेहो जाव धम्मचरणे एक्कोसमओ सेस 'जहित्थीण जाव अतरदीवकाण ॥ देव पुरिसाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ भवणवासि देवपुरिसाण ताव जाव सहस्सारो जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ आनतदेव

अर्थ

तथा चारित्र धर्म आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट अन्तर जानना ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! अकर्म भूमी मनुष्य पुरुष का अन्तर कितने कालका होता है ? उत्तर अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष का (अकर्मभूमि पुरुष मरकर जघन्य दश हजार वर्ष के आयुष्य वाला देवता होवे वहां से मरकर कर्म-भूमि मे पुरुष पने उत्पन्न हो अन्तर मुहूर्त में मरकर पुनः युगल मनुष्य हो जावे) और उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना अन्तर जानना ॥ और संहरन आश्रिय जघन्य अतर मुहूर्त [कोइ देव कर्मभूमि मनुष्य का साहरन कर अकर्मभूमि के क्षेत्र में ले जावे और दुर्ग परिणाम पलटने से पीछा कर्मभूमि के क्षेत्र में रख दे इस आश्रिय] और उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अंतर जानना इस ही तरह हेमवय एरणवय अकर्मभूमि में जन्म आश्रिय तथा सहरण आश्रिय जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहना शेष बीकाः रहा वह स्त्री के जैसा जानना यावत् अतरद्वीप अकर्मभूमि मनुष्य की वक्तव्यता कहना अब

पुरिसाण भंते ! केवतिय कालं अंतरं होति ? गोयमा ! जहण्णेण मास पुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो एव जाव गेवेज्ज देव पुरिसाणवि ॥ अणुत्तरोववातिय देव

देव पुरुष का अंतर कहते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! देवता पुरुष वेदी मरकर पीछा देवता कितने काल से होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (देवभव से चवकर गर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्यपने उत्पन्न होकर अंतर्मुहूर्त बाद मरकर पीछा देवता होवे इस आश्रिय, उत्कृष्ट वनस्पतिका काल मानना इस प्रकार ही असुरकुमार आदी के देव से लगाकर आठवे सहस्रार देवलोक के देव पुरुष तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नववे आणत देवलोक के देव पुरुष मरकर पीछे आणत देवलोक में देवपने उत्पन्न होवे उस का कितना अंतर ? उत्तर—अहो गौतम ! आणतकल्प देवका अंतर जघन्य वर्ष मास पृथक्त्व (कर्मभूमी मनुष्य गर्भवासमें नव महिने पूर्ण करके नववे देवलोकमें उत्पन्न होने जैसे अध्यवसायमे करनी कर देवता होवे उस आश्रिय इतने आयुष्य विना ऊपर देवलोक में देवता होने जैसी करनी नहीं हो सकती है] उत्कृष्ट वनस्पतिके काल जितना अन्तर जानना ॥ ऐसेही प्राणत आरण और अच्युत देवलोक तथा ग्रैवेयक के देव पुरुष का अन्तर जानना ॥ अहो भगवन् ! चार अनुत्तरोपपातिक देव पुरुष का कितना अन्तर होता है ? अहो गौतम ! जघन्य वर्ष पृथक्त्व [कर्मभूमी मनुष्य हो नव वर्ष की उम्मर में दीक्षा ले इस करनी से अनुत्तर विमान वासी देव होवे] उत्कृष्ट कुछ अधिक संख्यात सागरोपम का अन्तर

सूत्र

पुरिसस्स जहण्णेणं वासपुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं, अणुत्तराण अंतरे - एक्को आलावओ ॥ २९ ॥ अप्पाबहुयाणि जहेव इत्थीण ॥ एतेसिणं भंते ?

अर्थ

मानना [अनुत्तर विमान के देव मरकर मनुष्य होकर अन्य विमानिक देवके तथा मनुष्य के भवकरे उस आश्रिय मानना और सर्वार्थ सिद्ध के देवकी उत्पत्ति तो एक ही वक्त होती है ये मनुष्य हो निश्चय से मोक्ष जाते हैं, इस लिये यहां का अन्तर नहीं कहा है + ॥२९॥ अब पुरुषों की अल्पाबहुत्व पांच प्रकारसे कहते हैं (१) सब से थोडे मनुष्य, क्यों कि संख्यात कोटा-कोटी प्रमाण है, उस मे तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग में रहकर असंख्यात श्रेणि में रही हुई जो आकाश प्रदेश की राशि उस प्रमाण है, उस से देव पुरुष असंख्यातगुना, क्यों कि अतिशय बडा प्रतर के असंख्यातवे भाग में रही जो असंख्यात श्रेणि की आकाश प्रदेशकी राशी हैं उतन हैं तिर्यंच योनिक पुरुष की अल्पाबहुत्व तिर्यंच योनिक स्त्रीके जैसा ही कहना और मनुष्य पुरुष की अल्पाबहुत्व मनुष्य की स्त्रियों जैसे कहना (४) देव पुरुष की

+ यहां कितनेक भवनपति देव से ईशान देवलोक तक जघन्य अन्तर्मुहूर्त का, सनत्कुमार से सहस्रार पर्यन्त नव दिन का, आनत देवलोक से अच्युत देवलोकतक नव महीने का, नव ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान तक नववर्ष का पुरुष वेद का अन्तर कहते हैं.

देवपुरिसाण भवणवासिण वाणमंतराण जोतिसियाणं वेमाणियाण कयरे २ हिंतो

अल्पाबहुत्व सब से थोडे अनुत्तर विमान के पुरुष क्योंकि जो क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भागमें है उस में जो आकाशप्रदेश की राशी है उस प्रमाने हैं,२ उस से ऊपर की ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने क्यों की जो बहुत बडा क्षेत्र पल्योपम उस के असंख्यातवे भाग में रहे, जो आकाश प्रदेश उस की राशि जितने हैं, विमान की बहुल्यता कर अनुत्तर विमान पांच ही है और ऊपर के त्रिक में सो विमान हैं, उस में प्रत्येक विमान में अलग २ असंख्यात देवता हैं, (ऐसे ही आगे में भी २ नीचे २ विमान आगत हैं उन में देवता भी ज्यादा २ है ऐसी कल्पना आगे भी करना,) ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवत संख्यातगुना, ४ उस से नीचे की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरण देवलोक के देवता संख्यातगुने,+७ उस से प्राणत देव लोक के देवता संख्यातगुना, ८ उस से आनत देवलोक के देवता संख्यातगुने, उक्त प्रकार से ही इन को भी कहना ९ उस से सहस्रार कल्पवासी देव असंख्यातगुना, [क्यों कि घनाकार लोक उस की

+ यद्यपि आरण और अच्युत कल्प बराबरी से हैं और उन की विमान की संख्या भी एकसी है तथापि उत्तर दिशा से दक्षिण में कृष्ण पक्षिक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं इस आश्रिय जानना जिन का अर्द्ध पुद्गल परावर्त से अधिक संसार भ्रमण होता है वे कृष्ण पक्षी कहे जाते हैं और कमी संसारवाले शुक्लपक्षी कहे जाते हैं.

मूल अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवपुरिसा

अर्थ एक प्रदेश की श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश होते हैं उतने यह होते हैं] १० उस से महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने क्यों कि जो बहुत बडी ऐसी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में जो आकाश प्रदेश की राशी है उस प्रमान जानना और सहस्रार कल्प में छ हजार विमान है, महा शुक्र में चालीस हजार विमान है इस लिये, ११ उस से लंतक देवलोक के देवता असंख्यातगुन क्यों कि उस से भी बडी जो श्रेणि उस के असंख्यातवे भाग में उस का प्रमान है १२ उस से ब्रह्मदेवलोक के देवता असंख्यातगुने, उक्त प्रकार से भी बहुत बडी श्रेणि उस के असंख्यातवे भागमें रहे जो आकाश प्रदेशकी १३ उस से माहेन्द्र कल्प के देवता असंख्यात गुने, १४ उस से सनत्कुमार के देवता असंख्यात गुने, सनत्कुमार में बारलाख विमान है और माहेन्द्र देवलोक में आठलाख विमान हैं इस आश्रिय तथा दक्षिण में कृष्ण पक्षी जीव अधिक उत्पन्न होवे उस आश्रिय [सनत्कुमार से लगाकर सहस्रार देवलोक तक अलग २ अपने २ स्थान में विचारने से घन कर लोककी एक श्रेणिके असंख्यात वे भाग में आकाश प्रदेश की राशी हैं उस के प्रमान इन का प्रमाण जानना उक्त श्रेणिकेही असंख्यात भाग किये हैं वह इस लिये कि उस के असंख्यात भेद हैं इस लिये इस प्रकार अलग बहुत कहा है] १५ उस से ईशान देवलोक के देवता असंख्यात

भवणवाति देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, जोतिसिय

गुने (क्योंकि प्रमाण मात्र क्षेत्र प्रदेश की राशी का दूसरा वर्ग मूल उसे तीसरे वर्ग मूल के वर्ग से गुना करने से जितनी प्रदेश की राशि हो उतनी संख्यावाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमाण उन का प्रमाण) १६ उस से सौधर्म देवलोक के देवता संख्यात गुन (विमान के अधिक पने से सौधर्म में बत्तीस लाख और ईशान देवलोक में अठाईस लाख विमान हैं, तथा सौधर्म देवलोक दक्षिण दिशा में होने से वहां कृष्ण पक्षीक जीव अधिक उत्पन्न होते हैं और ऊपर के सब देवलोक में असंख्यात गुना कह कर यहां संख्यात गुने ही कहे यह वस्तु स्वभाव जानना) १७ उस से भवनपति देवता असंख्यात गुन) क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशि का प्रथम वर्ग मूल दूसरे वर्ग मूल से गिनते हुवे जितनी प्रदेश राशी होवे उतनी संख्या वाली घन करे लोक की एक प्रदेश श्रेणि उस में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का जो बत्तीसवा भाग उस प्रमाण उन का प्रमाण जानना) १८ उन से वाणव्यन्तर देव पुरुष संख्यात गुने (क्यों कि संख्यात योजन कोटा कोटी प्रमाण की जो एक प्रदेश श्रेणी मात्र जो टुकडे के एक प्रतर में जितने होवे उनका ही बत्तीसवा भाग उस प्रमाण उन का प्रमाण है) और १९ उन से ज्योतिषी देवता संख्यात गुना क्यों कि दो सौ छप्पन अंगुल प्रमाण का एक प्रदेश श्रेणि मात्र टुकडा उस एक प्रतर में जितने होवे उस के

सूत्र

देवपुरिसा संखेज्जगुणा ॥ २७ ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभूमगाणं अंतरदीवगाणं, देव पुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं वेमाणियाणं सोधम्माणं जाव सव्वट्ठसिद्धगाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अंतरदीवग मणुस्स पुरिसा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्ज-गुणा, हरिवास रम्मवास अकम्मभूमग पुरिसा दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा, हेमवय हेरण-वएवास अकम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा, भरहएरवयवास कम्मभूमग

अर्थ

संख्यात गुने जानने हैं॥२७॥ प्रश्न अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक के पुरुष तथा जलचर खेचर पुरुष तथा कर्मभूमि के पुरुष में कर्मभूमि के पुरुष अकर्मभूमि के पुरुष, अंतरद्वीप के, तथा देव पुरुष में भवनपतिदेव, वाणव्यंतरदेव ज्योतिषी देव, वैमानिक देव सौधर्म देव का पुरुष यावत् सर्वार्थ सिद्ध के देव इन में कौन २ किससे ज्यादा यावत् विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतरद्वीप के पुरुष, २ उन से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उन से हरीवास रम्यक्वास के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ४ उस से हेमवय एरणवय के पुरुष परस्पर तुल्य संख्यातगुना, ५ उन से भरत क्षेत्र एरवत क्षेत्र के पुरुष संख्यातगुने, ६ उन से पूर्व महा विदेह पश्चिम महा विदेह के पुरुष

मणुस्स पुरिसा दोवि सखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि सखज्जगुणा, अणुत्तरोववाति देव पुरिसा असखेज्जगुणा, उवरिमगेवेज्जग देव पुरिसा सखज्जगुणा, मज्झिम गेवेज्ज देव पुरिसा सखेज्जगुणा, हिट्ठिमगेवेज्ज देव पुरिसा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देव पुरिसा सखेजगुणा, आरणकप्पेदेव पुरिसा सखज्जगुणा, पाणयकप्प देव पुरिसा सखेज्जगुणा, आणतकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, सहस्सार कप्पेदव पुरिसा असखेज्जगुणा, महसुक्ककप्पेदेव पुरिसा असखेज्जगुणा, जाव माहिंद कप्पे देव पुरिसा असखज्जगुणा, सणकुमार कप्पे देव पुरिसा असखेज्जगुणा, ईसाणकप्पे देव

अर्थ

सख्यातगुने, ७ उन से अनुत्तर विमान के देवता असंख्यातगुने, ८ उन से ऊपर के ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ९ उन से मध्यम ग्रैवेयक के देव संख्यातगुने, १० उन से नीचे के ग्रैवेयक के देवता सख्यातगुने, ११ उन से अच्युत देवलोक के देव सख्यातगुने, १२ उन से आरण देवलोक के देव सख्यातगुने, १३ उन से प्राणत कल्प के देव संख्यातगुने, १४ उनसे आणत कल्प के देव संख्यातगुने, १५ उन से सहस्रार देवलोक के देव असंख्यातगुने, १६ उन से महाशुक्र कल्प के देव असंख्यातगुने, १७ उन से लंतक देवलोक के देव असंख्यातगुना, १८ उन से माहेन्द्र देवलोक के देव असंख्यातगुना, १९ उन से सनत्कुमार देवलोक के देव असंख्यातगुना, २० उन से ईशान देवलोक के देव असंख्यातगुने,

सूत्र

पुरिसा असखेज्जगुणा, सोधम्मकप्पे देव पुरिसा सखेज्जगुणा, भवणवासि देव पुरिसा असखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्ख-जोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, वाणमतर देव पुरिसा सखेज्जगुणा, जोतिसिय देव पुरिसा सखेज्जगुणा ॥ २८ ॥ पुरिस वेद-स्सण भंते! कम्मस्स केवइय काल बंधठिती पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण अट्ठ संवच्छ-राणि, उक्कोसेण दस सागरोवम कोडाकोडीओ दस वाससयाइ अबाहा अबाधूणिया, कम्मट्ठिती कम्मणिसेओ ॥ २९ ॥ पुरिस वेदस्सण भंते! किं पगारे पण्णत्ते?

अर्थ

२१ उस से सौधर्म देवलोक के देव असख्यातगुने, २२ उन से भवनपति के देव पुरुष असंख्यातगुना, २३ उन से खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यातगुना, २४ उन से स्थलचर तिर्यंच पुरुष सख्यातगुना, २५ उन से जलचर तिर्यंच पुरुष सख्यातगुना, २६ उन से वाणव्यंतर देव पुरुष सख्यातगुना, २७ उन से ज्योतिषी देव पुरुष सख्यातगुना ॥ २८ ॥ अहो भगवन्! पुरुष वेद कर्म बन्ध की स्थिति कितने काल की कही है? उत्तर—अहो गौतम! जघन्य से आठ वर्ष (इस से कमी अच्छे बुरे अध्य-वसाय का अभाव है) उत्कृष्ट दश सागरोपम कोडाकोडी उस में से एक वर्ष का जो इस का अबाधा काल है उतना कम मानना, इतनी कर्म बन्ध की स्थिति जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन्! पुरुष वेद

गोयमा ! वणदवग्गिजाल समाणे पण्णत्ते ॥ सेत पुरिसा ॥ ३० ॥ से किंतं णपुसगा २ तिविहा पण्णत्ता तंजहा—णेरइय णपुंसका, तिरिक्खजोणिय णपुंसका, मणुस्स णपुसका ॥३१॥ से किंत णेरइय णपुंसका २ सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा-रतणप्पभा पुढवि णेरइय णपुसका जाव अहे सत्तमा पुढवि णेरइय णपुंसका ॥ सेत णेरइय णपुसका॥से किंत तिरिक्खजोणिय णपुंसका? तिरिक्खजोणिय णपुंसका पंचविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका,बेइंदिय, तेइंदिय चउरिंदिय तिरिक्ख-

अर्थ

का विषय किस प्रकार का होता है ? उत्तर—अहो गौतम ! दावानल की ज्वाला समान अर्थात् आरम काल में तीव्र कामाग्नि दाह होता है और फिर कभी पडजावे ॥ ३० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक कितने प्रकार के कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ नारकी नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक के कितने प्रकार कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! नरक नपुंसक के सात प्रकार कहे हैं, वे यथा रत्नप्रभा पृथ्वी यावत् तमस्तम पृथ्वी यह नरक नपुंसक के भेद जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! पांच प्रकार कहे हैं वे यथा—१ एकेन्द्रिय नपुंसक, २ बेइन्द्रिय नपुंसक, ३ तेइन्द्रिय नपुंसक, ४ चौरिन्द्रिय नपुंसक, और ५ तिर्यंच पंचेन्द्रिय

सूत्र

जोणिय णपुसका, पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका॥एव तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंत पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा साचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पचिंदिय

अर्थ

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसक होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकित मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सणं भंते ! केवतियं कालठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

अर्थ

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

सूत्र

जोणिय णपुसका, पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका॥ एवं तेइंदियावि॥ चउरिंदियावि सेकिंत पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा साचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पचिंदिय

अर्थ

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं—वे पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक. इन नपुसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह नपुंसक होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्खजोणिय णपुंसका ॥ सेकिंत मणुस्स णपुंसका ? मणुस्स णपुंसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अतरदीवका भेदो भाणियव्वो ॥ ३२ ॥ णपुंसकस्सणं भंते ! केवतियं कालठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥ नेरइय णपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं सव्वेसिं ठिती भाणियव्वा जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ तिरिक्खजोणिय नपुंसकस्सणं भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

अर्थ

प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! मनुष्य नपुंसक के तीन प्रकार कहे हैं १ कर्मभूमी नपुंसक, २ अकर्मभूमी नपुंसक और ३ अन्तर द्वीप के मनुष्य नपुंसक ॥ ३२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन ! नपुंसक वेद की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतमुहूर्त की उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम की सातवी नरक की अपेक्षा जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट तेंतीस सागर की यों अलग २ सब नारकी की स्थिति अलग २ कहदेना प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त

सूत्र

जोणिय णपुसका, पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥ सेकिंत एगिंदिय तिरिक्खजो-णिया ? एगिंदिय तिरिक्खजोणिया अणेगविहा पण्णत्ता सेत एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका ॥सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका? बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका अणेगविहा पण्णत्ता सेत्त बइंदिय तिरिक्खजोणियाणपुसका॥एव तेइंदियावि॥चउरिंदियावि सेकिंत पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसगा ? पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया णपुसका तिविहा पण्णत्ता तंजहा—जलयरा, थलयरा, खहयरा ॥ सेकिंत जलयरा ? जलयरा सोचेव इत्थिभेदो आसालिय सहितो भाणियव्वो ॥ सेत्त पंचिंदिय

अर्थ

नपुंसक प्रश्न—अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक के अनेक भेद कहे हैं-१ पृथ्वी पानी अग्नि वायु वनस्पति इति एकेन्द्रिय नपुंसक के भेद हुवे प्रश्न—अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय नपुंसक के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय नपुंसक भी अनेक प्रकार के कहे हैं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक तीन प्रकार के कहे हैं वे यथा—१ जलचर तिर्यंच नपुंसक, २ स्थलचर तिर्यंच नपुंसक, और ३ खेचर तिर्यंच नपुंसक इन नपुंसक तिर्यंच में आसालिया भी ग्रहण कर लेना, क्यों कि वह असन्नी होता है उस में एक ही भेद है यह तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक के भेद कहे हैं

तिरिक्ख सव्वेसिं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ मणुस्स णपुंसगस्सणं भंते ! केवतिय कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥ धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥ कम्मभूमग भरहेरवय पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सणपुंसकस्सवि तहेव, अकम्मभूमक मणुस्सणपुंसकस्सणं भंते ! केवतिय कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त, साहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, एवं जाव अन्तरदीवकाणं ॥ ३३ ॥ णपुंसएणं भंते ! णपुंसएति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं

भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की स्थिति कितने काल की कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रित जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष की और चारित्र धर्माचरन आश्रित जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्षकी युगल नपुंसक नहीं होते हैं; परंतु युगल मनुष्यके उच्चार प्रस्रवणादि चवदह स्थान में जो समूर्च्छिम मनुष्य होते हैं उन में नपुंसक वेद पाता है उन की स्थिति अन्तरमुहूर्त की ही होती है और संहरण आश्रित भी जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटी वर्ष की ही मानना ऐसे ही अंतरद्वीप मनुष्य तक कहदेना ॥ ३३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक का नपुंसक

सूत्र

उक्कोसेण पुव्वकोडी एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्सण भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्सण भते केवतिय कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीस वाससहस्साइ सव्वेसिं एगिंदिय णपुंसकाण ठिती भाणियव्वा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णपुसकाण ठिती भाणियव्वा ॥ पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्सणं भते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥ एव जलयर तिरिक्ख, चउप्पद थलयर; उरगपरिसप्प, भुयगपरिसप्प, खहयर

अर्थ

की उत्कृष्ट पूर्व कोटि की प्रश्न- अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक की कितने काल की स्थिति कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की, पृथ्वीकाय की उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष, अप्काय की सात हजार वर्ष, तेउकाय की तीन अहोरात्रि, वायुकाय की तीन हजार वर्ष की, वनस्पतिकाय की दश हजार वर्ष की, बेइन्द्रिय की बारा वर्ष की, तेइन्द्रिय की ४९ दिन की, चौरिन्द्रिय की छ महीने की, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनी की क्रोड पूर्व की युगल तिर्यंच नपुंसक नहीं होते हैं इसलिये, और इन तिर्यंच की जघन्य स्थिति अन्तरमुहूर्त की जानना प्रश्न—अहो

काणय जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखेज्जकाल पण्णत्ता; पचेदिय तिरिक्ख जोणिय नपुसएण भते ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी पुहुत्त, एव जलयर तिरियचउप्पद थलयर उरपरिसप्प, महोयरगाणवि । मणुस्स णपुसकरसण भते ? गोयमा! खेत्त पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडिय पुहुत्त, धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एव कम्म भूमभरहेरवय पुव्वविदह अवरविदेहेसुवि भाणियव्व,अकम्मभूमक मणुस्सणपुसएण भते !

अर्थ

जानना विशेष में पृथव्यादि चारों स्थावर की असंख्यात काल की, वनस्पति की अनत काल की, तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी वर्ष पृथक्त्व की (आठ भव पूर्व कोटी का जानना) इस प्रकार ही जलचर, स्थलचर, उरपरसी, भुजपरसी तथा महोरग तिर्यंच नपुंसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! मनुष्य नपुंसक की कायास्थिति कितने काल की है ? - उत्तर—अहो गौतम ! क्षेत्र आश्रिय जघन्य अतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट पूर्व कोटी पृथक्त्व जानना. धर्माचरण आश्रिय जघन्य एक समय की उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटी वर्ष की जानना इस ही प्रकार भरत एरवत क्षेत्र में तथा पूर्व पश्चिम महा विदेह के मनुष्य नपुसक की स्थिति जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक की स्थिति कितनी है ! उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य भी अंतर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट भी अत-

सूत्र

एक समय उक्कोसेण तरुकालो ॥ नेरइय णपुंसएण भतेत्ति ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाईं, एवं पुढवीओ ठिती भाणियव्वा ॥ तिरिक्खजोणिय णपुंसएण भतेत्ति ? गोयमा ! तिरिक्खजोणिय नपुंसएण जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो, एव एगिंदियनपुंसकस्स, वणस्सइ कायस्सवि एवमेव सेसाण जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल असखेज्जाओ उस्सप्पिणिओ कालतो, खेत्तो असखेज्जा लोया ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय नपुंस-

अर्थ

पने रहे तो कितने काल तक रहता है ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक समय (उपशम श्रेणि से पड़कर आश्रिय एक समय वेद को स्पर्श मनुष्य पूर्ण करे देव होवे इस आश्रिय) और उत्कृष्ट वनस्पति का काल मानना (आवलिका के असंख्यातवे भाग में जो समय की राशी है उस प्रमाण पुद्गल परावर्तन को वनस्पति का काल कहते हैं) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक का जीव नपुंसक नरक के नपुंसकपने रहे तो कितना काल रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम (नरक मरकर पुन नरक का भव नहीं करता है इस आश्रिय मानना) ऐसे ही भवस्थिति जैसे सातों नरक का कहना अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक नपुंसकपने रहे तो कितने काल तक रहे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के जितना काल

सूत्र

एव सव्वसि जाव अहे सत्तमा तिरिक्खजोणिय णपुंसकस्स जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेग॥एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकस्स जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दोसागरोवम सहस्साइ सखज्जवास मब्भहियाइ,पुढवि आउतेउ वाऊण जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सति कालो, वणस्सति काइयाण जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज कालं जाव असखज्जालोया, सेसाण बेंदियादीण जाव खहयराण

अर्थ

मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम ॥ एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट सख्यात वर्ष अधिक दो हजार सागरोपम का [त्रस काय की कायस्थिति इतने काल की है इस लिये एकेन्द्रिय का इतना अन्तर पडे] पृथ्वी, पानी, तेऊ, वायु इन चार स्थावरों का जघन्य अन्तरमुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना जानना वनस्पति काय का जघन्य अन्तर मुहूर्त का उत्कृष्ट असख्यात काल का, और क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश प्रदेशों का समय २ एकेक प्रदेश एकेक समय में हरन करते उस में जितनी उत्सर्पिनी अवसर्पिनी होवे उतना वनस्पति के भव से मरकर दूसरे में उत्कृष्ट इतने काल रहने का सभव है, फिर ससारी जीव नियमा से वनस्पति में अवतरे बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पचेन्द्रिय तिर्यंच नपुंसक का तथा जलचर स्थलचर खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक का

सूत्र

गोयमा! जम्मग पडुच जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त (अंतोमुहुत्तपुहुत्त) सहरण पडुच जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी, एवं सव्वेसिं जाव अंतरदीवगाण ॥ २४ ॥ णपुंसगस्सणं भंते ! केवतियं काल अंतर होति ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेग ॥ नेरइय णपुंसकस्सण भंते! केवतिय काल अंतरं होति ? गो॰ जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तरुकालो ॥ रयणप्पमा पुढवि नेरइय णपुंसकस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तरुकालो ॥

अर्थ

मुहूर्त पृथक्त्व की, संहरन आश्रिय जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट देश कम पूर्व कोटि वर्ष की ऐसे ही हेमवय एरणवय हरीवास रम्यकवास देवकुरु उत्तरकुरु में संमूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य की स्थिति मानना ॥२४॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक नपुंसकपने को छोडकर पीछा नपुंसक होवे उसके बीच में कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट कुछ अधिक प्रत्येक सो सागरोपम का प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक मरकर पीछा नारकी नपुंसक होवे उन के बीच में कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त (नारकी मर तिर्यंच या मनुष्य का भव अंतर्मुहूर्त की स्थिति का कर पीछा नरक में उत्पन्न होवे उस आश्रिय,) उत्कृष्ट वनस्पति का काल जितना अन्तर जानना इस ही प्रकार रत्नप्रभा आदि सातों ही नरक का अन्तर जानना ॥ तिर्यंच योनिक नपुंसक का जघन्य अन्तर

वणस्सतिकालो, संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो; एवं जाव अंतरदीवगात्ति ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण मणुस्स णपुंसकाणय कयर२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुंसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३५ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुंसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमाण में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतनी प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत है

सूत्र

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं अणंतकालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्स णं भंते! केवतियं कालं अंतरं होति? गोयमा! जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं

अर्थ

तथा सामान्य से मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रित अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरण आश्रित जघन्य एक समय [पडवाइ आश्रित] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश कम आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन्! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे? उत्तर—अहो गौतम! जन्म आश्रित जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, संहरन आश्रित—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना; ऐसे ही हेमवंत हिरण्यवंत हरिवर्ष रम्यकवर्ष देव-

वणस्सतिकालो, संहरणं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणस्सतिकालो, एवं जाव अंतरदीवगावि ॥ ३५॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय नपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं मणुस्स णपुंसकाणय कयरे२ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स णपुंसका, नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! नेरइय णपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढवि नेरइयं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

कुरु उत्तर कुरु तथा अंतरद्वीप के मनुष्य नपुसक का अंतर मानना, तथा साहरन आश्रिय भी जघन्य उत्कृष्ट अंतर कहना ॥ ३५ ॥ अब पांच प्रकार से अल्पाबहुत कहते हैं (१) प्रश्न—अहो भगवन् ! नरक नपुंसक, २ तिर्यंच नपुंसक, और ३ मनुष्य नपुंसक इन में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे मनुष्य नपुंसक, क्यों कि श्रेणि के असंख्यातवे भाग में वर्तती जो आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाण है, २ उन से नरक नपुसक असंख्यातगुना क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र की प्रदेश राशी उस में रहा जो वर्ग मूल उस से गुनाकार करने से जितनी प्रदेश राशी होवे उतने प्रमाण में घनाकार लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश हैं उतने प्रमाण हैं इस लिये और ३ उन से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने हैं क्यों कि निगोद के जीव अनंत है

सूत्र

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वनस्सतिकालो मणुस्स णपुंसकस्स खेत्त पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सति कालो ॥ धम्मचरण पडुच्च जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अणतकाल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट, देसूण एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेह अवरविदेहकस्सवि ॥ अकम्मभूमक मणुस्स णपुंसकस्सण भंते! केवतिय काल अंतर होति? गोयमा! जम्मण पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण

अर्थ

तथा सामान्य मे मनुष्य नपुंसक का इन सब के नपुंसक वेद का अंतर जघन्य अंतर मुहूर्त का उत्कृष्ट अनंत काल का—वनस्पति काल जितना ॥ कर्मभूमि नपुंसक का क्षेत्र आश्रिय अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना धर्माचरन आश्रिय जघन्य एक समय [पडवाइ आश्रिय] उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना, यावत् देश कम आधा पुद्गल परावर्तन का, ऐसे ही भरत एरवत क्षेत्र, पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के कर्मभूमि मनुष्य नपुंसक का कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के मनुष्य नपुंसक का कितना अंतर पडे ? उत्तर—अहो गौतम ! जन्म आश्रिय जघन्य अन्तर मुहूर्त, उत्कृष्ट वनस्पति काल जितना, संहरन आश्रिय—जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना, ऐसे ही हेमवय एरणवय हरिवर्ष रम्यकवर्ष देव-

जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका, थलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका सखेज्जगुणा, जलचर तिरिक्खजोणिय णपुंसका सखेज्जगुणा, चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिय तेइंदिय विसेसाहिया, बेइंदिय विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया, एव आउ वाउ वणस्सति काइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय

चौरिन्द्रिय में पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक में व जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक इन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे खेचर नपुंसक, २ उस से स्थलचर नपुंसक संख्यातगुने, ३ उससे जलचर नपुंसक संख्यात गुने, ४ उस से चतुरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक ५ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ६ उन से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ७ उस से तेउकायिक एकेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, ८ उस से पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ८ उस से अप्काय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, ९ उस से वायुकाय एकेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, और १० उस से वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने हैं प्रश्न-अहो भगवन् ! कर्मभूमि मनुष्य के नपुंसक, अकर्मभूमि मनुष्य नपुंसक, और अंतरद्वीप के नपुंसक में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे अंतरद्वीप के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक, २ उस से देव कुरु

सूत्र

अहेसत्तमपुढवि नेरइय णपुंसका, छट्ठपुढवि णेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, जाव दोच्च पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं पुढविकाइय एगिंदिय णपुंसकाणं जाव वणस्सकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं तेइंदिय चउरिंदिय पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं जलयर थलयर खहयराणय कयरे २ हिंतो

अर्थ

प्रश्न अहो भगवन् ! नरक के नपुंसक में रत्नप्रभा से लगाकर तमस्तम प्रभा तक परस्पर कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे नीचे की सातवी नरक के नपुंसक क्यों कि वे अति थोडी श्रेणिक असंख्यात भाग में रहे हुवे जो आकाश प्रदेश राशी होवे उस समान हैं २ उस से छठी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यात गुने, ४ उस से चौथी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने और उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यात गुने, ७ उस से प्रथम नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, इन सातों नरक में पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये से दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुने हैं, क्यों कि कृष्ण पक्षी जीव दक्षिण दिशा में अधिक उत्पन्न होते हैं १ प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रियादि पांचों-स्थावर में, बेन्द्रिय तेन्द्रिय

क्खजोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुंसगाण, बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दीविकाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुंसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि संखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

अर्थ

मुने अंतरद्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुंसक, २ उस से छठी के असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुने ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतरद्वीप के नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असंख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यकवास के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरतएरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

सूत्र

णपुंसका अणंतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिक णपुंसकाण अंतर दीवकाणय कतरे२जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अंतरदीवगा अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म भूमगा दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, एव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्म भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥ एतेसिणं भंते! नेरइय णपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाण जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

अर्थ

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुन, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक ॥ ३९ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन्! नारकी नपुंसक रत्नप्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय यानिक पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

मूल

क्खजोणिय णपुसकाण जाव वणस्सति काइय एगिंदिय णपुसगाण, बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराणं मणुस्स णपुंसकाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतर दीविकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा अहेसत्तम पुढवि नेरइय नपुसका, छट्ठ पुढवि नेरइय नपुसका असंखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, अतरदीवग मणुस्स णपुसका असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि संखेज्जगुणा, जाव पुव्वविदेह

अर्थ

मूवे अंतर्द्वीप इन सब में कौन किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? उत्तर-अहो गौतम! १ सब से थोडे सातवी नरक के नपुंसक, २ उस से छट्ठी के असंख्यातगुने, ३ उस से पांचवी के असंख्यातगुने, ४ उस से चौथी नरक के असंख्यातगुन ५ उस से तीसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुणा, ६ उस से दूसरी नरक के नपुंसक असंख्यातगुने, ७ उस से अंतर्द्वीप के नपुंसक संख्यातगुने, ८ उस से देवकुरु उत्तरकुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य असंख्यातगुने, ९ उस से हरिवास रम्यक्वास के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १० उस से हेमवत एरणवय के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य पीछे से संख्यातगुने, ११ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य

सूत्र

णपुंसका अणंतगुणा, ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्स णपुंसकाणं कम्मभूमिकाणं अकम्मभूमिक णपुंसकाणं अंतर दीवकाणय कतरे२जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अतरदीवगा अकम्मभूमगा मणुस्स णपुंसका देवकुरु उत्तरकुरु अकम्म भूमगा दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, एव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्म भूमग मणुस्सणपुंसगा दोवी संखेज्जगुणा ॥ ३९ ॥ एतेसिणं भंते! नेरइय णपुंसकाणं रयणप्पभा पुढवी नेरइय णपुंसकाणं जाव अहे सत्तमपुढवि नेरइय णपुंसकाणं तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं एगिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइय एगिंदिय तिरि-

अर्थ

उत्तर कुरु के समूर्च्छिम नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के समूर्च्छिम मनुष्य नपुंसक परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत क्षेत्र के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ६ उस से पूर्व महाविदेह के और पश्चिम महा विदेह के मनुष्य परस्पर तुल्य और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक ॥ ३९ ॥ (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी नपुंसक रत्नप्रभा से सातवी नरक तक, तथा तिर्यंच योनिक नपुंसक एकेन्द्रिय पानिक पृथ्वीकाया से आरंभ कर यावत् वनस्पतिकाया तक; तथा बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय में जलचर स्थलचर खेचर, और मनुष्य नपुंसक में कर्मभूमि अकर्म-

वेदस्सणं भते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोन्निय वाससहस्साइ, अबाधा अबाहूणिया कम्माट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिंण भते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे वह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बडा नगर आग्नि कर प्रज्वलित हुवा बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, अहो श्रमण आयुष्मन्तो ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

सूत्र

अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा, रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, थलयर संखेज्जगुणा जलयर संखेज्जगुणा, चतुरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय णपुंसगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया एगिंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइय विसेसाहिया वणस्सइकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥ ३७ ॥ णपुंसक

अर्थ

पीछे वैसे संख्यातगुने, १२ उस से पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के नपुंसक मनुष्य परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से प्रथम नरक के नेरीये नपुंसक असंख्यातगुने, १४ उस से खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय नपुंसक असंख्यातगुने, १५ उस से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुने, १६ उस से जलचर तिर्यंच नपुंसक असंख्यातगुने, १७ उस से चौरिन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक, १८ उस से तेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक १९ उस से बेन्द्रिय नपुंसक विशेषाधिक. २० उस से तेउकाय असंख्यातगुने, २१ उस से पृथवीकाय नपुंसक विशेषाधिक, २२ उससे अपकाय नपुंसक विशेषाधिक, २३ उससे वायुकाय नपुंसक विशेषाधिक और २४ उससे वनस्पतिकाय नपुंसक अनंतगुने ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! नपुंसक वेद कर्म की स्थिति

वेदस्सणं भते ! केवइकाल ठिति पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाण ऊणगा, उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ, दोण्णिय वाससहस्साइं, अबाधा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ ३८ ॥ णपुंसकवेदेण भते ! किं पकारे पण्णत्ते ? गोयमा ! महाणगरदाह समाणे पण्णत्ते समणाउसो ! सेत्त णपुंसगा ॥ ३९ ॥ एतेसिंण भते ! इत्थीण पुरिसाणं णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहिया ? गोयमा !

उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दो सागरोपम के सात भाग करे उस में के दो भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम जितनी और उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम प्रमाण अबाधा काल दो हजार वर्ष का अर्थात् नपुंसक वेद मोहनीय कर्म का बन्ध किये बाद उत्कृष्ट दो हजार वर्ष पीछे वह नपुंसक भाव को प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नपुंसक वेद का विषय (वेदोदय का विकार) किस प्रकार का कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! जिस प्रकार बहुत बडा नगर अग्नि कर प्रज्वलित हुआ बहुत काल तक प्रज्वलित रहता है, वैसे ही नपुंसक का वेदोदय सदैव प्रज्वलित रहता है, अहो श्रमण आयुष्मन्ओ ! ऐसा नपुंसक वेदोदय कहा है इति नपुंसक वेदाधिकार ॥ ३९ ॥ अब तीनों वेद के आश्रिय आठ प्रकार से अल्पाबहुत्व कहते हैं इन आठों में प्रथम सामान्य प्रश्न अहो भगवन् ! स्त्री पुरुष और नपुंसक इन में

सूत्र

सव्वत्थोवा पुरिसा, इत्थीओ संखेज्जगुणाओ, णपुंसका अणंतगुणा ॥ एतेसिणं भंत ! तिरिक्खजोणित्थीण तिरिक्खजोणिय, पुरिसाण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाणय कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिय पुरिसा, तिरिक्खजोणिइत्थीओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणतगुणा ॥ एतेसिणं भंते ! मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्स णपुंसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा मणुस्सित्थीओ

अर्थ

कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष वेदी, उस से स्त्री वेदी संख्यातगुने हैं, उस से नपुंसक वेदी अनंतगुने हैं (२) अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ कमी ज्यादा विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे तिर्यंच योनिक पुरुष, २ उस से तिर्यंचनी स्त्रीयों संख्यातगुनी और ३ उस से तिर्यंच नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न अहो भगवन् ! मनुष्य की स्त्री पुरुष और नपुंसक में कौन २ ज्यादा कमी विशेषाधिक हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब से थोडे पुरुष हैं, २ उस से मनुष्य की स्त्री संख्यातगुनी, सत्तावीसगुनी है ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, संमूर्च्छिम आश्रिय (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! देवकी स्त्रीयों पुरुष और (देवता में नपुंसक वेद नहीं पाता है इसलिये नरक लिखाती है) नारकी के नपुंसक इन में अल्प बहुत यावत् विशेषाधिक कौन २ हैं ?

सखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुसका असखेज्जगुणा ॥ एतेसिण भंते ! देवित्थीण देव पुरिसाण नेरइय नपुसकाणय, कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थे वा नेरइय नपुसगा, देव पुरिसा असखेज्जगुणा, देवित्थीओ सखेज्जगुणीओ ॥ एतेसिण भंते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाण तिरिक्खजोणिय नपुसगाणं, मणुस्सित्थीण मणुस्स पुरिसाण मणुस्सनपुसगाण, देवित्थीण देव पुरिसाण, नेरइय नपुसकाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्स पुरिसा,

उत्तर—अहो गौतम ! सब से थोडे नरक के नपुंसक (नरक में स्त्री वेद पुरुष वेद का अभाव है) क्यों कि अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेश राशी का प्रथम वर्ग मूल का गुना करने से जितने प्रदेश की राशी होवे उस का घन किया सो लोक उस की प्रदेश श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उतने प्रमाण में उन का प्रमाण है, २ उन से देव पुरुष असंख्यात गुने, क्यों कि असंख्यात योजन की कोडाकोडी प्रमान सूची में जितने आकाश प्रदेश होवें उतने घनकरे हुवे लोक की एक प्रदेश की श्रेणी में जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में उन का प्रमान है, और उस से देवता की स्त्री संख्यातगुनी, क्यों कि बत्तीस गुनी, है (४) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक स्त्रीयों पुरुषो तथा नपुसक वैसे ही मनुष्य योनिक स्त्री पुरुष तथा नपुंसको, वैसे ही देव की स्त्री तथा पुरुषों और वैसे ही नारकी के नपुसको इन में कौन २ कमी ज्यादा

मणुस्सित्थीआ संखेज्जगुणाओ, मणुस्स णपुंसका असंखेज्जगुणा, नरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणित्थीयाओ संखेज्जगुणाओ, देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ, तिरिक्खजोणिय णपुंसका अणतगुणा ॥ एतासिणं भंते ! तिरिक्खजोणित्थीण जलयरीण, थलयरीण खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाणं जलयराण थलयराण खहयराण तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण पुढवि काइय एगिंदिय तिरिक्ख-

अर्थ

तथा विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे मनुष्य पुरुष, २ उस से मनुष्य स्त्रियों संख्यात गुनी, ३ उस से मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुन, ४ उस से नारकी नपुंसक असंख्यातगुने, क्योंकि संख्यात श्रेणिगत आकाश प्रदेश की राशी प्रमाण है ५ उस से तिर्यंच योनिक पुरुष असंख्यातगुने, क्यों कि प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश की राशी उस प्रमाण हैं, ६ उससे तिर्यंच योनिक स्त्री संख्यातगुनी क्यों कि तीन गुनी हैं, ७ उस से देव पुरुष असंख्यातगुने क्यों कि बहुत बडी प्रतर के असंख्यातवे भाग वर्तती जो असंख्यात श्रेणि प्रदेश आकाश प्रदेश की राशी उस प्रमाणे हैं, ८ उस से देवीयों संख्यातगुनी क्यों कि बत्तीसगुनी है, ९ उस से तिर्यंच योनिक नपुंसक अनन्तगुने, निगोद आश्रिय (५) प्रश्न—अहो भगवन ! तिर्यंच योनिक जीवों जलचर की

जोणिय णपुसकाण जाव वणस्सतिकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय नपुसगाणं, बेइंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण, तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसकाण जलयराण थलयराण खहयराण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया? गोयमा! सव्वत्थोवा खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ असंखेज्ज गुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा थलयर तिरिक्खजोणित्थीओ सखेज्जगुणाओ, जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्ख-

अर्थ

स्थलचर की तथा खेचर की स्त्रियों, तैसे ही तिर्यंच पचेंद्रिय जलचर स्थलचर तथा खेचर पुरुषों, तैसे ही तिर्यंच नपुसक एकेन्द्रिय पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया, बेइन्द्रिय यावत् पचेन्द्रिय नपुंसक, जलचर स्थलचर खेचर नपुंसक, इन सब में कौन २ अल्पबहुत यावत् विशेषाधिक है? उत्तर—अहो गौतम! १ सब से थोडे खेचर पुरुष, २ उस से खेचरनी सख्यातगुनी, ३ उस से स्थलचर पुरुष संख्यातगुने, ४ उस से स्थलचरनी सख्यातगुनी, ५ उस से जलचर पुरुष सख्यातगुने, ६ उस से जलचरनी सख्यातगुनी, ७ उस से खेचर नपुसक सख्यातगुने, ८ उस से स्थलचर नपुंसक सख्यातगुने, ९ उस से जलचर नपुंसक सख्यातगुने, १० उस से चउरिन्द्रिय विशेषाधिक, ११ उस से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, १२ उस से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, १३ उस से तेउकाया असंख्यातगुनी, १४ उस से पृथ्वीकाया विशे

सूत्र

जोणित्थीयाओ संखेज्जगुणओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुसका पचेंदिया सखज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुसका विसेसाहिया आउ नपुसका विसेसाहिया, वाउनपुसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुसका

अर्थ

पाधिक, १५ उस से अप्काया विशेषाधिक, १६ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (३) प्रश्न—अहो भगवन् ! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है ? उत्तर—अहो गौतम ! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रियों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब में थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उससे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

मूल

अणतगुणा ॥ एतासिण भते ! मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाण अकम्मभूमियाण अतरदीवीयाण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतरदीविकाणं मणुस्स णपुसकाण कम्मभूमगाणं, अकम्मभूमगाण अतरदीविकाणय कयरे२हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमक मणुसित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाए एतेसिण दोण्णि तुल्ला स०वत्थोवा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाओ एतेसिण दोण्णिवि तुल्ला सखज्जगुणा, हरिवास रम्मकवास अकम्म-

अर्थ

६ उस से भरत एरवत क्षेत्र की स्त्रीयों परस्पर तुल्य और संख्यातगुनी क्यों कि सत्तावीस गुनी हैं ७ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक, ८ उस से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह स्त्रीयों परस्पर तुल्य उस से संख्यातगुनी अधिक हैं क्योंकि सत्ताइस गुनी हैं, ९ उस में अकर्मभूमि के मनुष्य नपुसक असंख्यातगुने, १० उस से देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य नपुंसक दोनों असंख्यातगुने अधिक, ११ उस से हरीवास रम्यक वास के मनुष्य नपुंसकों दोनों परस्पर तुल्य संख्यातगुने अधिक, १२ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य नपुसकों दोनों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, १३ उस से भरतैरावत के मनुष्य नपुसको परस्पर तुल्य संख्यातगुन, १४ उन से पूर्व महाविदेह पश्चिम महाविदेह के मनुष्य नपुंसको परस्पर तुल्य भरतए रावत से संख्यातगुने अधिक [७] प्रश्न—अहो भगवन् ! देवता की स्त्रीयों सामान्य

सूत्र

जोणित्थीयाओ संखेज्जगुणओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय नपुंसगा संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय णपुंसका पंचेंदिया संखेज्जगुणा चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिय, बेइंदिय णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढवि णपुंसका विसेसाहिया आउ नपुंसका विसेसाहिया, वाउनपुंसका विसेसाहिया वणप्फइ एगिंदिय णपुंसका

अर्थ

पाधिक, १५ उस से अप्काया विशेषाधिक, १६ उस से वायुकाया विशेषाधिक, १७ उस से वनस्पति-काया एकेन्द्रिय नपुंसक अनंतगुने (६) प्रश्न—अहो भगवन्! कर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अकर्मभूमी मनुष्य पुरुषों, अंतरद्वीप मनुष्य पुरुषों, सामान्यपने नपुंसकों, कर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अकर्मभूमी मनुष्य नपुंसकों, अंतरद्वीप मनुष्य नपुंसकों, इन में कौन २ अल्प बहुत यावत् विशेष है? उत्तर—अहो गौतम! अंतरद्वीप के मनुष्य स्त्रियों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और सब से थोडे हैं क्यों कि युगलिये हैं, २ उससे देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक, ३ उस से हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्री तथा पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ४ उस से हेमवय एरणवय के मनुष्य स्त्री पुरुषों परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ५ उस से भरत एरवत के मनुष्य पुरुषों संख्यातगुने,

मूल

असंखेज्जगुणा, देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा, एव तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमक मणुस्स णपुंसका दोवि संखेज्जगुणा ॥ एतासिणं भंते ! देवित्थीण भवणवासीण वाणमंतरीण जोइसिण वेमाणिणीण देवपुरिसाण भवणवासीण जाव वेमाणियाण सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाण अणुत्तरोववाइयाण, नेरइय णपुंसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय

अर्थ

नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १२ उस से आठवे सहस्रार देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १३ उस से सातव महाशुक्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने, १४ उस से पांचवी नरके नेरीये असंख्यातगुने, १५ उस से छठे लांतक देवलोक के देव असंख्यातगुने, १६ उस से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने १७ उस से पांचव देवलोक क देवता असंख्यातगुने, १८ उस से तीसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुन, १९ उस से चौथे महेन्द्र देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उस से तीसरे सनत्कुमार देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उस से दूसरी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उस से दूसरे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उस से दूसरे देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २४ उस से प्रथम देवलोक के देवता संख्यात गुने, २५ उस से प्रथम देवलोक की देवी संख्यातगुनी, २६ उस से भवनपति देवता असंख्यात

सूत्र

भूमक मणुस्सित्थीयाओ मणुस्स पुरिसाय एतेण दोण्णिवि तुल्ला संखेज्जगुणा, हेमवते हेरण्णवते अकम्मभूमक मणुस्सित्थीओ मणुस्स पुरिसाय दोवितुल्ला संखेज्जगुणा, भरहेरवत कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा, भरहेरवय मणुस्सित्थीयाओ दोवि संखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्स पुरिसा दोवि संखेज्जगुणा, पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमग मणुस्सित्थीओ दोवि संखेज्जगुणा, अंतरदीवग अकम्मभूमग मणुस्स णपुंसका

अर्थ

पने, भवनपति की स्त्रियों वाणव्यन्तर की स्त्रियों ज्योतिषी की स्त्रियों तथा वैमानिक की स्त्रियों तथा देवता पुरुषों भवनपति से वैमानिक तक तथा सौधर्म देवलोक से लगाकर सर्वार्थसिद्ध तक, तथा नारकी नपुंसकों रत्नप्रभा से सातवी नरक तक इन सब में कौन २ कम ज्यादा बराबर विशेषाधिक है ? उत्तर अहो गौतम ! १ सब से थोडे अनुत्तर विमान वासी देव पुरुषों, २ उन से ऊपर की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ३ उस से मध्य की ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ४ उस से नीचे के ग्रैवेयक के देवता संख्यातगुने, ५ उस से बारवे अच्युत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ६ उस से इग्यारवे आरन देवलोक के देवता संख्यातगुने, ७ उस से दशवे प्राणत देवलोक के देवता संख्यातगुने, ८ उस से नवबे आणत देवलोक के देवता संख्यातगुना, ९ उस से सातवी नारकी के नेरीये नपुंसक असंख्यातगुना, १० उस से छठी

असंखेज्जगुणा, बम्भलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, तच्चाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा महिंदे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा दोच्चा पुढविनेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा ईसाणे, कप्पे देवित्थियाओ संखेगुणीओ सोधम्मे कप्पे देवपुरिसा, संखेज्जगणा, सोधम्मे कप्पे देवित्थियाओ संखेज्जगुणाओ भवनवासि देवपुरिसा असंखेज्जगुणा, भवणवासि देवित्थियाओ संखेज्जगुणीओ, इमीसे रयणप्पभा पुढवि नेरइया असंखेज्जगुणा, वाणमंतर देवपुरिसा अस-

अर्थ

मनुष्य की स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों, कर्मभूमी अकर्मभूमी अंतर्द्वीप के पुरुषों, देवता की स्त्रीयों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा प्रथम दूसरे देवलोक की स्त्रीयों, तथा देव पुरुषों भवनपति वाणव्यंतर ज्योतिषी सौधर्म देवलोक यावत् सर्वार्थ सिद्ध तक के देवता नरक के नपुंसको तथा रत्नप्रभा से यावत् तमस्तमः प्रभा नरक के नेरीये, इन में कौन २ किस से अल्पबहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? उत्तर—अहो गौतम ! १ सब से थोडे अंतरद्वीप के मनुष्य और स्त्रीयों परस्पर तुल्य है, २ देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य स्त्रीयों तथा मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और अंतरद्वीप से संख्यातगुने अधिक हैं, ३ हरिवास रम्यक्वास के मनुष्य स्त्रीयों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और कुरु क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ४ हेमवय

सूत्र

णपुंसकाण जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइय णपुसगाण कयरे २ हिंतो जाव विसेसाहिया ? गोयमा! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातिया देवपुरिसा, उवरिमगेवेज्जा देवपुरिसा संखेज्जगुणा, तहेव जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा, अहे सत्तमाए पुढविए नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, छट्ठीए पुढवीए नेरइय नपुसका असंखेज्जगुणा, सहस्सारेकप्पे देव पुरिसा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पेदेवा असंखेज्जगुणा, पंचमाए पुढवीए नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा, लंतएकप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पुढवीए नेरइय णपुसका

अर्थ

गुने, २७ उस से भवनपति की देवीयों संख्यातगुनी, २८ उस से पहिली नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २९ उस से वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुने, ३० उस से वाणव्यन्तर की देवीयों संख्यातगुनी, ३१ उस से ज्योतिषी देवता संख्यातगुने, ३२ उस से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी (८) प्रश्न—अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिकी स्त्रीयों जलचर स्थलचर और खेचर की स्त्रीयों, तिर्यंच योनिक पुरुष, जलचर स्थलचर और खेचर पुरुष, तिर्यंच योनिक नपुंसक पृथ्वीकाय—अपकाय—तेउकाय—वायुकाय वनस्पतिकाया तिर्यंच योनिक नपुंसक, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय नपुंसक, पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक जलचर स्थलचर और खेचर नपुंसक, कर्मभूमी मनुष्य की अकर्मभूमी मनुष्य की यावत् अन्तर्द्वीप

संहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाण कम्मभूमकाण अकम्मभूमकाणं अतरदीवकाण मणुस्स णपुसकाण, कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाण अतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाणमंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीण, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमतराण जोतिसियाण वेमाणियाणं, सोधम्मकाणं जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइय णपुसकाणं रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसय एतेण दोवितुल्ला

संख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १४ उन से इग्यारहवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छट्ठी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २२ उन से छठा देवलोक के देवता असंख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

सूत्र

खेज्जगुणा। वाणमंतरदेवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ, जोतिसिय देवपुरिसा सखेज्जगुणा, जोति-
सिय देवित्थीओ सखेज्जगुणाओ॥ एतेसिणं भंते! तिरिक्खजोणित्थिणं जलयरीण थलयरीण
खहयरीण तिरिक्खजोणिय पुरिसाण जलयराण थलयराण खहयराण तिरिक्खजोणिय
णपुंसकाण एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण जाव वणस्सइकाइया एगिंदिय तिरिक्ख
जोणियणपुंसकाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाण तेइंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाण
चउरिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसकाण, पचेंदिय णपुंसकाण, जलयराण थलयराण

अर्थ

एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्त्रियों और मनुष्य पुरुषों परस्पर तुल्य है और वास क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ५ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य के पुरुषों परस्पर तुल्य है और वप क्षेत्र से संख्यातगुने अधिक हैं, ६ भरत एरवत क्षेत्र के मनुष्य की स्त्रियों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक हैं, ७ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह के पुरुषों परस्पर तुल्य है और भरत एरवत से संख्यातगुने अधिक है, ८ पूर्व विदेह पश्चिम विदेह की मनुष्य स्त्रियों परस्पर तुल्य है और पुरुषों से संख्यातगुनी अधिक है, ९ उन से अनुत्तर विमान के देवता संख्यातगुने, १० उन से ऊपर की त्रिक के देवता संख्यातगुने, ११ उन से मध्य की त्रिक के देवता संख्यातगुने, १२ उन से नीचे की त्रिक के देवता

खेहयराण मणुस्सित्थीण कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाण अतरदीवयाण मणुस्स पुरिसाणं कम्मभूमकाणं अकम्मभूमकाण अतरदीवकाण मणुस्स णपुसकाण, कम्मभूमिकाण अकम्मभूमिकाणे अतरदीवकाण, देवित्थीण भवणवासिणीण वाण-मंतरीणं जोतिसीण वेमाणिणीणं, देवपुरिसाण भवणवासीण वाणमतराण जोतिसि-याण वेमाणियाण, सोधम्मकाण जाव गेविज्जकाणं, अणुत्तरोववाइयाण, नरइय णपुसकाण रयणप्पभा पुढवि नेरइय णपुसकाण जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइय णपुसकाण कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा ? गोयमा ! अतरदीवक अकम्मभूमिक मणुस्सित्थीओ मणुसपुरिसय एतेण दोवितुल्ला

अर्थ

संख्यातगुने, १३ उन से बारवे देवलोक के देवता सख्यातगुने, १४ उन से इग्यारहवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १५ उन से दशवे देवलोक के देवता संख्यातगुने, १६ उन से नववे देवलोक के देवता असख्यातगुने, १७ उन से सातवी नरक के नेरीये असंख्यातगुने, १८ उन से छठी नरक क नेरीये असं-ख्यातगुने, १९ उन से आठवे देवलोक के देवता असख्यातगुने, २० उन से सातवे देवलोक के देवता असख्यातगुने, २१ उन से पांचवी नरक के नेरीये असख्यातगुने, २२ उन से छठी देवलोक के देवता असख्यातगुने, २३ उन से चौथी नरक के नेरीये असख्यातगुने, २४ उन से पांचवे देवलोक के देवता

सूत्र

भवनवासि देविस्थियाओ संखेज्जगुणाओ, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइय णपुसका असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा असंखेज्जगुणा, खहयर तिरिक्खजोणित्थियाओ सखेज्जगुणाओ, थलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा सखेज्जगुणा, थलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ संखेज्जगुणाओ जलयर तिरिक्खजोणिय पुरिसा संखेज्जगुणा, जलयर तिरिक्खजोणित्थियाओ सखेज्जगुणाओ, वाणमंतर देवपुरिसा सखेज्जगुणा, वाणमंतर देवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ, जोइसिय देवपुरिसा संखेज्जगुणा जोइसिय देवित्थियाओ सखेज्जगुणाओ खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिय णपुसका सखेज्जगुणा

अर्थ

४४ उन से खचर पुरुष संख्यातगुने, ४५ उन से खचरनी संख्यातगुनी, ४६ उन से जलचर पुरुष असंख्यातगुना, ४७ उस से जलचरनी संख्यातगुनी, ४८ उन से वाणव्यतरदेव संख्यातगुना, ४९ उन से वाणव्यतर की देवी संख्यातगुनी, ५० उन से ज्योतिषी देव संख्यातगुने, ५१ उन से ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी, ५२ उन से खेचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुना, ५३ उन से स्थलचर तिर्यंच नपुंसक संख्यातगुना, ५४ उन से जलचर नपुंसक संख्यातगुना, ५५ उन से चौरिन्द्रिय विशेषाधिक, ५६ उन से तेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५७ उन से बेइन्द्रिय विशेषाधिक, ५८ उन से तेउकाया असंख्यातगुना,

थलयर णपुंसका संखेज्जगुणा जलयर णपुंसका संखेज्जगुणा, चउरिंदिय णपुंसका विसेसाहिया, तेइंदिय णपुंसका विसेसाहिया, बेइंदिया णपुंसगा विसेसाहिया, तेउकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिय णपुंसका असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया णपुंसगा विसेसाहिय, आउकाइया णपुंसगा विसेसाहिया, वाउकाइया णपुंसका विसेसाहिया, वणस्सइकाइया एगिंदिए तिरिक्खजोणिय णपुंसका अनंतगुणा ॥ ४० ॥ इत्थीणं भंते ! केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भणिय, एवं पुरिसस्सवि णपुंसकस्सवि संचिट्ठणा पुणरवि तिण्हवि जहा पुव्विं भणिया अंतर तिण्हवि जहा पुव्विं भणियं, तिरिक्खजोणित्थियाओ तिरिक्खजोणिय पुरिसेहिंतो तिगुणाओ तिरुवाहियाओ, मणुस्सित्थियाओ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीसइगुणाओ

५१ उस से पृथ्वीकाया विशेषाधिक, ५० उस से अप्काया विशेषाधिक, ५१ उस से वाउकाया विशेषाधिक, ५२ उस से वनस्पतिकाया एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नपुंसक अनंतगुने ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! स्त्री वेद की कितने काल की स्थिति है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार पहिले एक आदेश कही वैसे ही यहां भी स्त्री पुरुष नपुंसक वेद की अलग २ स्थिति कह देना वैसे ही अंतर भी कह देना ॥४१॥

सूत्र

स वातीसइरूत्ताहियाओ देविस्थियाओ देवपुरिसेहिंतो, सत्तावीसगुणाओ बत्तीसइरूत्ताधियाओ तिविहस्स होइ भेदो ठिई संचिट्ठणंतरप्पबहु वेयाण सघट्ठिई वेदेतहकिंपगारय ॥ सेत्त तिविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता॥इति जीवाभिगम बितिओ पडिवत्तीओ सम्मत्ता॥२॥ *

अर्थ

तिर्यंचणी तिर्यंच से तिगुनी, मनुष्यणी मनुष्य से सत्ताइसगुनी, और देवांगना देवता से बत्तीसगुनी जानना यह १ वेद के भेद, २ स्थिति, ३ संचिट्ठन, ४ अंतर, ५ अल्पाबहुत, ६ बन्ध स्थिति, ७ और विषय यह सात द्वार कर वेद नामक जीवाभिगम शास्त्र की दूसरी प्रतिपत्ति संपूर्ण हुई ॥ २ ॥ ० ०

॥ तृतिया पडिवृत्ति ॥

तत्थ जे ते एव माहसु चउविधा ससार समावण्णगा जीवा पण्णत्ता, ते एव माहसु तजहा—नेरतिया, तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा, देवा ॥ १ ॥ से किंत नेरइया ? नरइया सत्तविधा पण्णत्ता तजहा—पढम पुढवि नेरइया, दोच्चा पुढवि नेरइया, तच्चा पुढवि नेरइया, चउत्था पुढवि नेरइया, पचमा पुढवि नेरइया, छट्ठा पुढवि नेरइया, सत्तमा पुढवि नेरइया ॥ २ ॥ पढमेण भते ! पुढवी किं नामा किं गोत्ता

अर्थ

अब तीसरी प्रतिपत्ति कहते हैं जो ऐसा कहते हैं कि चार प्रकार के ससारी जीवों हैं वे ऐसा कहते हैं कि नारकी, तिर्यच, मनुष्य व देवता ये चार प्रकार के जीवों हैं ॥ १ ॥ प्रश्न—नारकी किसे कहते हैं ? उत्तर—नारकी के सात भेद कहे हैं जिन के नाम प्रथम पृथ्वी के नारकी, दूसरी पृथ्वी के नारकी, तीसरी पृथ्वी के नारकी, चौथी पृथ्वी के नारकी, पांचवी पृथ्वी के नारकी, छठी, पृथ्वीके नारकी व सातवी पृथ्वी के नारकी ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! प्रथम पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! प्रथम पृथ्वी का नाम घम्मा और गोत्र रत्नप्रभा है + प्रश्न—अहो भगवन् !

+ जो अनादि काल से अर्थ रहित प्रसिद्धिमें आये हैं उसे नाम कहना और अर्थ सहित होवे सो गोत्र है

पण्णत्ता ? गोयमा ! घंमा नामेण रत्नप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एव एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता॥ २॥इमाण रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व वालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिष्टा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तमः प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभाचार आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, वालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाडपना है, पंकप्रभा का एक लाख बीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीत बत्तीस अट्ठावीसं-सहेव वीसच अट्ठारस सोलसग अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकंडे,पंकबहुले कंडे, आव बहुलेकंडे ॥५॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे,वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है, तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वीपिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड जहां भवनपति रहते हैं सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

सूत्र

पण्णत्ता ? गोयमा ! धंमा नामेण रयणप्पभा गोत्तेणं॥दोच्चाण भंते ! पुढवी किं नाम किं गोत्ता ? गोयमा ! वंसा नामेण सक्करप्पभा गोत्तेण ॥ एवं एतेण अभिलावेण सव्वासिं पुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा, अंजणा चउत्था, रिट्ठा पंचमा, मघा छट्ठा, माघवती सत्तमा, तमतमा गोत्तेण पण्णत्ता॥ २॥इमाणं रयणप्पभा पुढवी केवतिया बाहल्लेण पण्णत्ता ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा पुढवी असीउत्तरं जोयण सयसहस्स

अर्थ

दूसरी पृथ्वी का क्या नाम व क्या गोत्र है ? उत्तर—अहो गौतम ! दूसरी पृथ्वी का वंशा नाम व शर्कर प्रभा गोत्र है यों इस अभिलाप से सब का कहना तीसरी पृथ्वी का सेला नाम व वालु प्रभा गोत्र है चौथी का अंजना नाम व पंकप्रभा गोत्र, पांचवी पृथ्वी का रिट्ठा नाम व धूमप्रभा गोत्र है छठी पृथ्वी का मघा नाम व तम प्रभा गोत्र है और सातवी पृथ्वी का माघवती नाम व तमस्तम प्रभा गोत्र है ॥ २ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड कितनी जाडाइ में है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख अस्सी हजार योजन का जाडा है ऐसे प्रभाकर आगे भी जानना अर्थात् शर्कर प्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का जाडपना है, वालुक प्रभा का एक लाख अठाइस हजार योजन का जाडपना है, पंकप्रभा का एक लाख बीस हजार योजन का जाडपना है, धूमप्रभा का एक लाख अठारह हजार

बाहल्लेणं पण्णत्ता ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा—अणुगतव्वा आसीत बत्तीस अट्ठावीस-तहेव वीसच अट्ठारस सोलसग अट्ठुत्तरमेव हेट्ठिमया ॥४॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविधा पण्णत्ता तंजहा—खरकडे, पंकबहुले कडे, आव बहुलेकडे ॥५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए खरकडे कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविधे पण्णत्ते तंजहा—रयण, वइरे, वेरुलिए लोहितक्खे, मसारगल्ले हंसगब्भे पुलाए, सोइंधिए, जोतिरसे, अंजणे, अंजणपुलये, रयते, जात

योजन का जाडपना है, तमःप्रभा का एक लाख सोलह हजार योजन का जाडपना है और सातवी तमस्तमःप्रभा का एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वी पिंड है ॥ ४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तीन भेद कहे हैं खरकाण्ड, अर्थात् कठिन काण्ड यह जो अपन रहते है सो अच्छा सुंदर पृथ्वी का भूमि भाग है यही खरकाण्ड है, तत्पश्चात् दूसरा पंक बहुल काण्ड अर्थात् इस में कीचड व कचरा बहुत होता है और तीसरा अप्बहुल काण्ड अर्थात् इस में पानी की बहुलता विशेष है ॥ ५ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के खरकाण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के सोलह भेद कहे हैं तद्यथा—१ रत्न काण्ड, वज्र

रूने, अके फलिहे, रिट्ठेकण्डे ॥ ६ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकण्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते, एवं जाव रिट्ठे ॥ ७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुले कण्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥ आव बहुले कण्डे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एकागारे पण्णत्ते ॥ ८ ॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवी कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ता, एवं

काण्ड, ३ वैडूर्य काण्ड, ४ लोहिताक्ष काण्ड, ५ मसारगल्ल काण्ड, ६ हंसगर्भ काण्ड, ७ पुलाक काण्ड, ८ सौगंधिक काण्ड, ९ ज्योतिरत्न काण्ड, १० अंजन काण्ड, ११ अंजन पुलाक काण्ड, १२ रजत काण्ड, १३ जातरूप काण्ड, १४ अंक काण्ड और १६ रिष्ट काण्ड यह सोलह भेद खर काण्ड के हुए ॥ ६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में पहिला रत्न काण्ड कितने प्रकार का है ? उत्तर—अहो गौतम ! रत्न काण्ड का एकही आकार कहा है, यों रिष्ट काण्ड पर्यंत सब का जानना ॥ ७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पंकबहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वह एकही प्रकार का है प्रश्न—अहो भगवन् ! अप्बहुल काण्ड के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! उस का भी एकही भेद कहा है ॥ ८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के कितने

जाव अहेसत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! तीसं निरयावास सतसहस्सा पण्णत्ता, एवं एतेण अभिलावेणं सव्वासिं पुच्छा ? ॥ इमा गाहा अणुगन्तव्वा—तीसाय पण्णवीसा पण्णरस दसेव तिण्णिय हवंति पचूण सतसहस्सं पचेव अणुत्तरा णरगा जाव अहेसत्तमाए पच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तंजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिट्ठाणे ॥ १० ॥ अत्थिणं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अह

अर्थ

भेद कहे हैं ? उत्तर-अहो गौतम ! शर्कर प्रभा पृथ्वी एक प्रकार की है यों नीचे की सातवी पृथ्वी तक मानना ॥ ९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नरकावास कहे हैं यों शर्कर प्रभा में पचीस लाख, वालुकप्रभा में पन्नरह लाख, पंक प्रभा में दश लाख, धूम्रप्रभा में तीन लाख, तमःप्रभा में एक लाख, नरकावास में पांच कम और तमस्तमःप्रभा में पांच नरकावास हैं ये अनुत्तर, महालय व महा नरकावास हैं इन के नाम—काल, महा काल, रौरव, महा रौरव और अप्रतिष्ठान ॥ १० ॥ प्रत्येक पृथ्वी नीचे घनोदधि आदि का सद्भाव है या नहीं इस का प्रश्न करते हैं प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी नीचे पिण्डभूत पानी का समूह रूप घनोदधि, पिण्डभूत वायु का समूह रूप घनवात, विरल परिणाम को

सूत्र

घनोदधितित्रा घणवातेतित्रा तणुवातेतित्रा, उवासतरेतित्रा ? हता अत्थि, एव जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेणं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरकडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेणं भते ! रयप्पमाए पुढवीए रयणकडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! एकजोयण सहस्स बाहल्लेण पण्णत्ते ? एव जाव रिट्ठे ॥ इमीसेण भते ! रयप्पमाए पुढवीए पकबहुले कडे केवतिय बाहल्लेण पण्णत्त ? गोयमा ! चउरासीति जोयण सहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भत ! रयण-

अर्थ

घन वायु के समूह रूप तनुवात और शुद्ध आकाश रूप अवकाशांतर है क्या ? उत्तर—हाँ गौतम ! ऐसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी संबंधी जो खरकाण्ड है उस का जाडपना कितना है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का जाडपना सोलह हजार योजन का है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकांड कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का जाडपना है यों रिष्ट पर्यंत कहना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी का पंक बहुल काण्ड की कितनी जाडाइ है ? उत्तर—अहो गौतम ! इस का चौरासी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! अपबहुल काण्ड की जाडाइ कितनी है ? उत्तर—

सूत्र

प्पभाए पुढवीए आयबहुले कंडे केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! असीति जोयण सहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि कवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयण सहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ते ? इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात केवइय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ बाहल्लेणं पण्णत्ताइ, एव तणुवातेति उवासन्तरेवि ॥१२॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए घणोदधि केवतिय बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! वीस जोयणसहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ ॥ सक्करप्पभाए पुढवीए, घणवाते केवइए पण्णत्ते?

अर्थ

अहो गौतम ! अस्सी हजार योजन का जाडपना है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! बीस हजार योजन का घनोदधि जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! असख्यात हजार योजन का जाडा है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करा प्रभा पृथ्वी का घनोदधि कितना जाडा है ? उत्तर—अहो गौतम ! बीस हजार योजन का जाडा है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी का घनवात कितना जाडा कहा ? उत्तर—अहो गौतम !

सूत्र

गोयमा ! असखेज्जइ जोयणसहस्साइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ, एव तणुवाएवि उवास-
तरेवि जहा सक्करप्पमाए पुढवीए, एव जाव अहेसत्तमा ॥ १२ ॥ इमीसेण भते !
रयणप्पमाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए खेतछिचेण छिज्जमाणाए
अत्थि दव्वाइ वण्णओ काल नील लोहित हालिद्द सुक्किलाइ, गधतो—सुब्भिगधाइ
दुब्भिगधाइ, रसतो—तित्त कडुय कसाय अबिल महुराइ, फासओ—कक्खड मउय
गरुय लहुय सीत उसिण णिद्ध लुक्खाइ, सठाणतो परिमडल वट्ट तस चउरस
आययसठाण परिणयाइ, अण्णमण्णबद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ अण्णमण्णउगाढाइ

अर्थ

असख्यात हजार योजन का है, ऐसे ही तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमःपृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस के विभाग करते हुवे उन के द्रव्य क्या वर्ण से काले, नीले, लाल, पीले व शुक्ल हैं, गंध से सुरभिगंधवाले व दुरभिगंधवाले हैं, रस से तिक्त, कटुक, कषाय, आम्ल व मधुर हैं, स्पर्श से कर्कश, मृदु, गुरु, लघु शीत, ऊष्ण, स्निग्ध व रूक्ष स्पर्शवाले हैं, संस्थान से और परिमंडल, वर्तुल, त्र्यस्र, चौरस व लम्बगोल है ! और क्या वे परस्पर बंधे हुवे, परस्पर स्पर्शे हुवे, परस्पर अवगाहे हुवे, परस्पर स्नेह से बंधे

अण्णमण्णासिणेह पडिबद्धाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? हंता अत्थि ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए खरस्स कंडस्स सोलस जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त छिएण छिज्ज तचेव जाव ? हंता अत्थि एव जाव रिट्ठस्स ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पंकबहुलस्स कंडस्स चउरासिति जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ एव आउबहुलस्सवि असीति जोयणसहस्स बाहल्लस्स ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिस्स वीस जोयणस्ससहस्स बाहल्लस्स खेत्तछेदे त व एव घणवातस्स असंखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्त तचेव ॥ सक्करप्पभाए ण भंते ! पुढवीए बत्तीसुत्तर जोयणसतसहस्स बाहल्लए खेत्तछेदेण छिज्जमाणाए

अर्थ — हुवे व परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही हैं ऐसे ही खर काण्ड सोलह हजार योजन का है उस का प्रश्न करना और उस के द्रव्य भी वैसे ही यावत् परस्पर बंधे हुए हैं ऐसेही रिष्ट काण्ड पर्यंत कहना इसी तरह रत्नप्रभा पृथ्वीका चौरासी हजार योजनका पंक बहुल काण्ड का मानना और अस्सी हजार योजन का अप्बहुल काण्ड का भी जानना रत्नप्रभा पृथ्वी का वीस हजार योजन का घनोदधि असंख्यात हजार योजन का घनवात तनुवात व आकाशांतर जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है उस क

अत्थि दव्वाइं वण्णतो जाव घडत्ताए चिट्ठति ? हंता अत्थि एवं वणोदहिस्स, वीसजोयणसहस्स बाहल्लस्स, घणवातस्स असंखेज्ज जोयणसहस्स बाहल्लस्स, एवं उवासंतरस्स जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभापुढवी किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरि संठिया पण्णत्ता॥इमीसेण भंते!रयणप्पभा पुढवि खरकंड किं संठिते पण्णत्ता?गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते। इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए रयणकंडे किं संठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिते पण्णत्ते, एवं जाव रिट्ठं, एवं पंकबहुले

अर्थ

विभाग करते हुवे उन के द्रव्य वर्ण से काले, नीले, पीले, लाल व सुफेद यावत् परस्पर संबंध करके क्या रहे हुवे हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही रहे हुवे हैं ऐसे ही शर्कर प्रभा पृथ्वी के वीस हजार योजन का घनोदधि, असंख्यात हजार योजन का घनवात, तनुवात व आकाशांतर का जानना और ऐसे ही सातवी तमस्तमः पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है? उत्तर—अहो गौतम! इसका संस्थान झालर के आकार है अर्थात् विस्तीर्ण वलयाकार है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का खर काण्ड का संस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का संस्थान कैसा है ?

आउबहुलेवि घणोदधिवि घणवाएवि उवासतरेवि, सव्वे झल्लरिसंठिया पण्णत्ता, सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवी किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! झल्लरिसंठिया पण्णत्ता ॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवी घणोदधि किं संठिये पण्णत्ते ? गोयमा ! झल्लरिसंठिये पण्णत्ते एवं जाव उवासतरे जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वता, एवं जाव अहे सत्तमाएवि ॥ १५ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! दुवालसहिं जोयणेहिं

अर्थ

उत्तर—अहो गौतम ! झालर का है, ऐसे ही रिष्ट पर्यंत सोलह प्रकार के रत्नों का, पंक बहुल, अप्-बहुल काण्ड का, घनोदधि घनवात, तनुवात व आकाशांतर सब का झालर का संस्थान जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी का क्या संस्थान कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! झालर का संस्थान कहा ऐसे ही शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि यावत् आकाशांतर पर्यंत कहना जैसे शर्करप्रभा की वक्तव्यता कही वैसे ही सातवी तमस्तमः प्रभा पर्यंत सब का कहना ॥ १५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के अन्त से कितना दूर लोक का अन्त (चरम) कहा है ? उत्तर अहो गौतम ! बारह योजन लोक का अन्त कहा हुआ है ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा में अबाध दूर

अभावाए लोयते पण्णत्ते एवं दाहिणिल्लातो पुरत्थिमिल्लातो, उत्तरिल्लाओ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो चरिमतातो केवतिय अबाधाए लोयते पण्णत्ते ? गोयमा ! तिभागूणेहिं तेरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, एवं चतुद्दिसिं॥ वालुयप्पभाएण भते ! पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ पुच्छा ? गोयमा ! सति भागेहिं तेरसेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्त, एवं चउदिसिंपि एव सव्वासिं चउसुविदिसासु पुच्छियव्वं, पंकप्पभाए चोद्दसहिं जोयणहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, धूमप्पभाए तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते, छट्ठी सतिभागेहिं पण्णरसहिं

जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के पूर्व दिशा के चरिमांत से कितने दूर लोकांत कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक योजन के तीन भाग करे वैसा एक भाग कम तेरह योजन लोकांत कहा है ऐसे ही चारों दिशा का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! वालु प्रभा की पूर्व दिशा से लोकांत कितना दूर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! तेरह योजन व एक योजन का तीसरा भाग इतना दूर लोकांत रहा हुआ है ऐसे ही वालुप्रभा नारकी की शेष तीनों दिशा का जानना पंकप्रभा की चारों दिशाओं से चौदह योजन पर लोकांत रहा हुआ है, धूम्रप्रभा की चारों दिशाओं से पन्नरह योजन में एक योजन का तीसरा भाग कम का लोकांत रहा हुआ है, तमःप्रभा की चारों दिशाओं से

जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते सत्तमाए सोलसएहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते एवं जाव उत्तरिल्लातो॥१६॥ इमीसेण भते! रयणप्पमाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तजहा—घणोदधिवलये, घणवायवलये, तणुवाय वलये, ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरिमते कतिविधे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तजहा—एवं चेव जाव उत्तरिल्ले एवं सव्वासिं जाव अहेसत्तमाए उत्तरिल्ले ॥ १७ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए घणोदधिवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छज्जोयणाणि बाहल्लेण पण्णत्ते ॥

ग्यारह योजन व एक योजन का तीसरा भाग लोकांत रहा हुवा है और सातवी तमस्तमःप्रभा से सोलह योजन पर लोकांत रहा हुवा है ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की पूर्व दिशा के चरमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! इस के तीन भेद कहे हैं घनोदधि वलय, घनवात वलय, व तनुवात वलय प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी की दक्षिण दिशा के चरिमांत के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं घनोदधि, घनवात व तनुवात ऐसे ही सब पृथ्वी की चारों दिशाओं में तीन २ वलय रहे हुवे हैं यों सातवी पृथ्वी का जानना ॥ १७ ॥ प्रश्न— अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की जाडाइ कितनी कही है ? उत्तर—

सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधिवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सतिभागाइं छज्जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ वालुयप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! तिभागूणाइं सत्तजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं एतेणं अभिलावेणं पंकप्पभाए सत्तजोयणाइं बाहल्लेण, धूमप्पभाए सतिभागाइं, सत्तजोयणाइं पण्णत्ते, तमप्पभाए तिभागूणाइं अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, अहेसत्तमाए अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते, ॥ १८ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलए केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! अद्धपंचमाइं जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ताइं ॥ सक्कर-

अहो गौतम ! छ योजन की जाडाइ कही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्करप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ योजन व एक योजन का तीसरा भाग की जाडाइ कही है वालुक प्रभा की पृच्छा ? सात योजन में तीसरा भाग कम की जाडाइ है पंक प्रभाकी सात योजनकी है धूम्रप्रभा की सात योजन व तीसरा भाग अधिक की, तमःप्रभा की तीसरा भाग कम आठ योजन की व तमस्तम प्रभा की घनोदधि की आठ योजन की जाडाइ है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनवात वलय की कितनी जाडाइ कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार

मूल

प्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! कोसूणाइ पंचजोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ताइं, एवं एएण अभिलावेण वालुयप्पभाए पंच जोयणाइ बाहल्लेण प० पंकप्पभाए सक्कोसाइ पंचजोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ धूमप्पभाए अद्धछट्ठाइ जोयणाइ, बाहल्लेण, पण्णत्ताइ, तमप्पभाए कोसूणाइ छजोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ अहेसत्तमाए छ जोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ ॥ १९ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तणुवायवलये केवतियं बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छक्कोसेण बाहल्लेण पण्णत्ते एवं एतेण अभिलावेण सक्करप्पभाए सतिभाग छक्कोसे बाहल्लेण पण्णत्ते वालुप्पभाए तिभागूणे सत्तक्कोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, पंकप्पभाए पुढवीए सत्तक्कोसे बाहल्लेण

अर्थ

योजन की जाडाइ है, शर्कर प्रभा की पृच्छा, पांच योजन में एक कोश कम की जाडाइ है, ऐसे ही वालुकप्रभा की पांच योजन की, पंक प्रभा की पांच योजन व एक कोश, धूम्रप्रभा की पांच योजन दो कोश (साढे पांच योजन,) तमःप्रभा की एक कोश कम छ योजन और तमस्तम प्रभा की छ योजन की जाडाइ कही है ॥ १९ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के तनुवात वलयाकार की कितनी जाडाइ कही ? उत्तर-अहो गौतम ! रत्न प्रभा के तनुवात की छ कोश की जाडाइ है, ऐसे ही शर्कर प्रभा के तनुवात की छ कोश तीसरा भाग, वालुकप्रभा में तीसरा भाग कम सात कोश, पंक प्रभा के

सूत्र

पण्णत्ते, धूमप्पभाए सतिभागे सत्तकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, तमाए तिभागूणे अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते, अहे सत्तमाए पुढवीए अट्ठकोसे बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ २० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि वलयस्स छजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेएण छिज्जमाणस्स अत्थिदव्वाइ वणउ काल जाव ? हंता अत्थि॥ सक्करप्पभाएण भंते ! पुढवीए घणोदधि वलयस्स सतिभाग छजोयण बाहल्लस्स खेत्तछेएण छिज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि॥एव जाव अहे सत्तमाए ज जस्स बाहल्ल॥

अर्थ

तनुवात की सात कोश की जाडाइ, धूम्रप्रभा में सात कोश व तीसरा भाग, तमःप्रभा में तीसरा भाग कम आठ कोश और तमस्तम प्रभा में आठ कोश की जाडाइ जानना ॥ २० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि वलय छ योजन का जाडा है उस को क्षेत्र छेद से छेद देने से उन के द्रव्यों से वर्ण काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या हैं ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही है प्रश्न—अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी का वलय की जाडाइ छ योजन व एक योजन के तीसरा भाग अधिक की है इस का छेद देने से इस के द्रव्य वर्ण से काले यावत् परस्पर संबंधवाले क्या है ? उत्तर-हां गौतम! वैसेही है यों सातवी नरक तक सब का कहना, इस में जहां २ जितना जाडपना है उतना जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात साडेचार योजन का जाडा है

इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवायवलयस्स अद्ध पचजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेएणं छिन्न जाव हंता अत्थि, एव जाव अहे सत्तमाए जजस्स बाहल्लेण, एव तणुवात वलयस्सवि जाव अहे सत्तमा जजस्स बाहल्लं ॥ २१ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलये किं सठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार संठाण सठित पण्णत्ते, जेण इम रयणप्पभ पुढविं सव्वतो समं तास परिक्खिवत्ताणं चिट्ठति एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए घणोदधि घणोदधि वलये णवर अप्पाण पुढविं सपरिक्खिवि-त्ताण चिट्ठति ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणवात वलए किं सठिते पण्णत्ते गोयमा ! वट्टवलयागारे तहेव जाव जेण इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि-वात

उस का छेद करने से उस के द्रव्य वर्ण से काले वर्णवाले यावत् परस्पर संबंधवाले हैं क्या ? उत्तर—हां गौतम ! वैसे ही हैं यों सातवी नरकी के घनवात का कहना, परंतु जितना जितना जाडपना है उन का उतना जाडपना कहना ऐसे ही तनुवात वलय का सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के घनोदधि का संस्थान कैसा है ? उत्तर अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार (चूडी जैसा) संस्थान है यह घनोदधि रत्नप्रभा पृथ्वी के चारों तरफ घेर कर रहा हुआ है ऐसे ही सातों पृथ्वी के घनोदधि का जानना प्रश्न—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का

सूत्र

क्षिवलय सव्वतो सम तास परिक्खिविताण चिट्ठइ, एव जाव अहे सत्तमाए घणवातवलय ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए तणुवातवलये किं सठिते पण्णत्ते ? गोयमा ! वट्टवलयागार सठाण सठिए जाव जेण इमीसेण भते ! रयण-प्पमाए पुढवीए घणवातवलय सव्वतो सम तास परिखिवित्ताण चिट्ठति, एव जाव अहेसत्तमाए तणुवात वलय ॥ २२ ॥ इमाण भते ! रयणप्पमा पुढवी केवतिय आयामविक्खभेण पण्णत्ता ? गोयमा ! असखेज्जाइ जोयण सहस्साइ आयामविक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता एव जाव

अर्थ

घनवात का सस्थान कौनसा है ? उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनोदधि चारों तरफ घेराया हुवा रहा है यों सातों पृथ्वी के घनवात का जानना प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का तनुवात वलय का क्या सस्थान कहा है ! उत्तर—अहो गौतम ! वर्तुल वलयाकार सस्थान कहा है इस से रत्नप्रभा पृथ्वी का घनवात चारों तरफ से घेराया हुवा है यों सातों पृथ्वी के तनुवात का जानना ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी की लम्बाइ चौडाइ कितनी कही है ? अहो गौतम ! असख्यात योजन की लम्बाइ चौडाइ कही प्रश्न—अहो भगवन् ! इसकी परिधि कितनी कही ? उत्तर अहो गौतम ! असख्यात योजन की परिधि कही

अहे सत्तमा ॥ २३ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवी अंतेय मज्झेय सव्वत्थ समा बाहल्लेण पण्णत्ता ? हंता गोयमा ! इमाणं रयणप्पभा पुढवी अंतेय मज्झेय सव्वत्थसमा बाहल्लेण, एव जाव अधो सत्तमा ॥ २४ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा सव्वजीवा उववण्णा ? गोयमा ! इमीसेण रयण-प्पभाए पुढवीए सव्वजीवा उववण्णपुव्वा, नो चेवण सव्वजीवा उववण्णा, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए॥इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढ पुव्वा सव्व

अर्थ

सातवीं पृथ्वीतक सब का जानना ॥ २३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में क्या समान है ? उत्तर—हां गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अंत में, मध्य में वगैरह सब स्थान जाडाइ में समान है ऐसे ही सातों पृथ्वी का जानना ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में सब जीवों सामान्यपना से काल के अनुक्रम से पहिले उत्पन्न हुवे अथवा अथवा सब जीवों समकाल में उत्पन्न हुवे ? उत्तर—अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वीमें काल के अनुक्रम से सब जीवों उत्पन्न हुए परंतु समकाल में सब जीवों नहीं उत्पन्न हुवे हैं क्यों कि सब जीव एक ही काल में रत्नप्रभा नारकी में उत्पन्न होजावे तो अन्य देव नारकी के भेद का अभाव होवे यों सातवी नारकी तक जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का सब जीवने काल के अनुक्रम

सूत्र

जीवेहिं विजढा? गोयमा! इमाण भंते! रयणप्पभा पुढवीए सव्वजीवेहिं विजढपुव्वा नो चेवण सव्वजीवेहिं विजढा, एवं जाव अहेसत्तमा॥२५॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठ पुव्वा सव्व पोग्गला पविट्ठा? गोयमा! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गला पविट्ठपुव्वा, नो चेवण सव्वपोग्गला पविट्ठा, एवं जाव अहेसत्तमाए॥ इमाणं भंते! रयणप्पभाए पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो चेवण सव्व पोग्गला विजढा? गोयमा! इमाण रयणप्पभाए पुढवीए सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नो

अर्थ

स पहिले परित्याग किया अथवा समकाल में क्या परित्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालक्रम से सब जीवोंने परित्याग किया परंतु एक समय में सब जीवोंने परित्याग नहीं किया, ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना॥२५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कालानुक्रम से क्या सब पुद्गलोंने प्रवेश किया अथवा समकाल में सब पुद्गलोंने प्रवेश किया? उत्तर—अहो गौतम! कालानुक्रम से रत्नप्रभा पृथ्वी में पुद्गलोंने प्रवेश किया परतु एक काल में सब पुद्गलोंने प्रवेश नहीं किया यों सातवी पृथ्वी तक कहना प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का कालानुक्रम से सब पुद्गलोंने क्या त्याग किया अथवा एककाल में सब पुद्गलोंने त्याग किया? उत्तर—अहो गौतम! इस रत्नप्रभा का कालानुक्रम से पहिले सब पुद्गलोंने त्याग किया परतु एक

चेव णं सव्वपोग्गलेहिं विजढा एवं जाव अहेसत्तमा ॥ २६ ॥ इमाणं भंते ! रयण-प्पभा पुढवी किं सासता असासता ? गोयमा ! सिय सासता सिय असासता ॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता? गोयमा! दव्वट्ठयाए सासता वण्ण पज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ तंचेव जाव सिय सासया सिय असासया, एवं जाव अहेसत्तमा ॥ २७ ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभा पुढवी कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! ण कदायि ण आसि, ण कदायि

अर्थ

समय में सब पुद्गलों का त्याग किया नहीं, यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन्! यह रत्नप्रभा पृथ्वी क्या शाश्वत है या अशाश्वत है ? उत्तर—अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत है स्यात् अशाश्वत है प्रश्न—अहो भगवन् ! ऐसा कैसे होवे ? उत्तर—अहो गौतम ! द्रव्य आश्री शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव आश्री अशाश्वत है इस से अहो गौतम ! ऐसा कहा कि रत्न प्रभा पृथ्वी स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी काल से कितनी है ? उत्तर-अहो गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी अतीत काल में नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान काल में नहीं है वैसा नहीं और भविष्य काल में नहीं होगी वैसा

सूत्र

णत्थि, णकदाइ णभविस्सइ, भुविंच भवतिय भविस्सइय, धुवा णितया सासता अक्खया अव्वया अवट्टिता णिच्चा, एवं जाव अहे सत्तमाए॥२८॥इमीसेण भंते!रयण-प्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमताओ हेट्ठिल्ले चरिमते एसण कवतिय अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! असिउत्तर जोयण सतसहस्स अबाधाए अतरं पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाताओ चरिमताओ खरकंडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण कवतिय अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइ अबाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ

अर्थ

भी नहीं परंतु यह अतीत काल में थी, वर्तमान काल में है और भविष्य काल में होगी यह ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित है, यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से नीचे के चरिमांत तक अबाधा से कितना अंतर कहा? उत्तर-अहो गौतम! एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से खर कांड के नीचे के चरिमांत तक कितना अंतर कहा? अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अंतर कहा प्रश्न-अहो भगवन ! रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से

चरिमताओ रयणस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अवाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्क जोयणसहस्स अवाधाए अतरे पण्णत्ते ॥ इमीसेण भत ! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाउ चरिमताओ वइरस्स कडस्स उवरिल्ल चरिमते, एसण केवइय अवाधाए अतर पण्णत्ते ?गोयमा! एक्क जोयण सहस्स अवाधाए अतरे पण्णते। इमीसेण भत ! रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमताओ वइरस्स कडस्स हेट्ठिल्ले चरिमते एसण केवइय अवाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दो जोयणसहस्साइ अवाधाए अतरे पण्णत्ते एव जाव रिट्ठस्स ॥ उवरिल्ले पण्णरस जोयणसहस्साइ हेट्ठिल्ल चरिमते सोलस जोयणसहस्साइ ॥ इमीसेण भते !

अर्थ

रत्नकाण्ड के नीचे के चरिमांत तक में कितना अतर कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा है प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरिमांत से वज्र रत्न काण्ड के ऊपर के चरिमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से वज्र रत्न काण्ड के नीचे के चरमांत तक में कितना अतर कहा ? उत्तर अहो गौतम ! दो हजार योजन का अतर कहा यों रिष्ट पर्यंत सब कहना रिष्ट के ऊपर के चरिमांत तक में पन्नरह हजार योजन, नीचे के चरमांत में सोलह हजार योजन।

रयणप्पमाए पुढवीए उवरिल्लाओ चरिमंताओ पकबहुलस्स कंडस्स उवरिल्ले चरिमंते एसणं अबाधाए केवतियं अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलस जोयणसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते हेट्ठिल्ले चरिमंते एक्कं जोयणसयसहस्सं आवबहुलस्स उवरिं एक्कं जोयणसयसहस्सं हेट्ठिल्ले चरिमंते असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं घणोदधिस्स उवरिल्ले असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं हेट्ठिल्ले चरिमंते दो जोयणसयसहस्साइं ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए घणवातस्स उवरिल्ले चरिमंते दो जोयण सयसहस्साइं हेट्ठिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयण सयसहस्साइं ॥ इमीसेणं भंते ! रयण-

का अंतर कहा प्रश्न इस रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से पंकबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत पर्यंत में अबाधा से कितना अंतर कहा है ? उत्तर अहो गौतम ! सोलह हजार योजन का अंतर कहा है इसके नीचे के चरमांत तक में एक लाख योजन का अबाधा से अंतर कहा है अपूबहुल काण्ड के ऊपर के चरमांत तक में एक लाख योजन का अंतर कहा है और इस के नीचे के चरमांत तक में एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर कहा है घनोदधि के ऊपर के चरमांत तक एक लाख अस्सी हजार योजन का अंतर और घनोदधि के नीचेका चरमांत तक दो लाख योजनका अंतर कहा है रत्नप्रभा पृथ्वी के

प्पभाए पुढवीए तणुवायरस उवरिल्ले चारिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ अबा-
धाए अतर पण्णत्ते ॥ हेट्ठिल्ले चारिमते असखेज्जाइ जोयण सयसहस्साइ, एव, उवास-
तरेवि ॥ सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए उवरिल्लाओ चारिमताओ हेट्ठिल्ले, चारिमते
एसण केवतिए अबाधाए अतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बत्तीसुत्तर जोयण सयसहस्स
अबाहाए अतरे पण्णत्त सक्करप्पभाएण भते ! पुढवीए उवरि घणोदधिस्स हेट्ठिल्ले
चारिमते बावण्णुत्तर जोयण सयसहस्स अबाधाए घणवायस्स असखेज्जाइ जोयणसय
सहस्साइ पण्णत्ताइ, एव जाव उवासतरस्सेवि जाव अहे सत्तमाए, णवर जीसे ज

अर्थ

ऊपर के चरमांत से घनवात के ऊपर के चरमांत तक लाख योजन का अतर होता है और इस के नीचे के चरमांत तक असंख्यात लाख योजन का अतर जानना रत्नप्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से तनुवात के ऊपर के चरमांत तक असंख्यात लाख योजन का अतर है और नीच के चरमांत तक भी असंख्यात लाख योजन का अंतर है ऐसे ही आकाशांतर का जानना प्रश्न-अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से नीचे के चरमांत तक कितना अतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख बत्तीस हजार योजन का अतर कहा प्रश्न अहो भगवन् ! शर्कर प्रभा पृथ्वी के ऊपर के चरमांत से घनोदधि के नीचे के चरमांत तक कितना अंतर कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! एक लाख

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्वियों कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्वियों कही है यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तमः प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठ्ठत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, ये नरकावास अन्दर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकुन यावत् नरक में अशुभ वदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात

उगाहित्ता, हेट्ठावि एग जोयण सहस्स वज्जेत्ता मज्झे अट्ठुत्तरे जोयण सय सहस्से एत्थण रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण तीस णिरयावास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खाया तेण नरगा अतो वट्टा बाहिं चउरसा जाव असुभा णरयेसु वेयणा, एव एएण अभिलावेण उववाजिऊण भाणियव्व ठाणप्पयाणुसारेण जत्थ ज बाहल्ल जत्थिया वा नेरइयावास सयसहस्सा जाव अहे सत्तमाए पुढवीए अहे सत्तमाए मज्झे

अर्थ — विविध प्रकार के सस्थानवाले हैं नीचे का पृथ्वी तल क्षुर जैसा कठोर है, वहां सदैव अंधकार है, मात्र तीर्थंकर के जन्म व दीक्षा काल में प्रकाश होता है, तीर्थंकर के कल्याण समय में प्रकाश होता है वहां चद्र सूर्यादि ज्योतिषी का प्रकाश नहीं है, रुधिर, मांस, राध वगैरह के कीचड से नरक का भूमितल लींपा हुवा है, नरकावास बहुत बीभत्स है, अत्यत दुर्गंधमय है, मृत पशु के कलेवर से भी अधिक दुर्गंधमय है काली अग्नि की ज्वालायों नीकलती है, धगधगती कपोत वर्ण जैसे अग्नि की कांति है, वहां का गंध रस व स्पर्श अति दुःसह व अशुभ है यह असाता वेदना सब नरक में रही हुई है सब पृथ्वी में एक हजार ऊपर व एक हजार नीचे उन के जाडपने में से नीकालकर शेष रहे सो पोलार समजना और पहिले कहे सो नरकावास जानना यों नीचे की सातवीं पृथ्वी में पद्म स्थानवाले नरकावास

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! सत्तपुढवीओ पण्णत्ताओ तजहा-रयणप्पभा जाव अहे सत्तमा ॥ १ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए असी उत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए उवरिकेवइय ओगाहित्ता हेट्ठा केवइय वज्जेत्ता, मज्झे केवइय केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एग जोयण सहस्स

अर्थ

प्रश्न—अहो भगवन् ! पृथ्विओं कितनी कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! सात पृथ्विओं कही है तद्यथा—रत्नप्रभा यावत् सातवी तमस्तम. प्रभा ॥ १ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से ऊपर कितना अवगाहा हुवा है, नीचे कितना वर्जा हुवा है बीच में कितना रहा हुवा है और कितने नरकावास कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का पिण्ड एक लाख अस्सी हजार योजन का है उस में से एक हजार योजन ऊपर छोड कर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष एक लाख अठ्यत्तर हजार योजन की बीच में पोलार है इस में तीस लाख नरकावास कहे है, वे नरकावास अंदर से वर्तुलाकार बाहिर से चौकून यावत् नरक में अशुभ वेदना रही हुई है सब पीठकी अपेक्षा से आवलिकागत गोल, त्रिकोन, चौरस व पुष्पावकीर्ण अर्थात्

पिहडगसंठिया किण्णपुडएसंठिया, मुखसंठिया, मुइंगसंठिया, णंदिमुइंगसंठिया, आलिंगसंठिया, सुग्घोससंठिया, ददरसंठिया, पणवसंठिया, पडहसंठिया, भेरीसंठिया, झल्लरिसंठिया, कतुंबकसंठिया, नालिसंठिया, एवं जाव तमाए अहे सत्तमाएणं भंते ! पुढवीए नरगा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-वट्टेय तंसाय ॥ २ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नरया केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसहस्साइं

अर्थ

काला कुटज (तापस लोगों को रहने का स्थान) मुरज [मृदंग विशेष] मृदंग, नंदीमुख मृदंग, सुघोष (देवलोक की घंटा विशेष) दर्दर वादिंत्र, पणव-चमड़ का वादिंत्र, पडह, भेरी, झल्लरी, कुतंबरू व घटिका इत्यादि अनेक प्रकार के संस्थानवाले हैं यों छठी तमःप्रभा पृथ्वी पर्यंत कहना प्रश्न—तमस्तमःप्रभा पृथ्वी में नरकावास के संस्थान कौनसे कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! दो प्रकार के कहे हैं वर्तुलाकार व त्रिकूनाकार है सातवी पृथ्वी में पांच नरकावास आवलिकागत है जिस में अप्रतिष्ठान नरकावास गोल है और शेष चार नरकावास त्रिकून आकारवाले हैं ॥ २ ॥ अब नरकावास का जाडपना कहते हैं

१ मृदंग दो प्रकार की है १ मुकुंद व २ मर्दल जो उपर से संकुचित व नीचे से विस्तार वाली है उसे मुकुंद कहना और उपर नीचे जो समान है वह मर्दल है. इस स्थान मुकुंद मृदंग गृहण करना

सूत्र

केवइए कइ अणुत्तरा महति महालया महाणिरया पण्णत्ता, एव पुच्छियव्व वागरियव्वापि तहेव छट्ठी सत्तमासुकाऊ अगणिवण्णा भाणियव्वा॥ २॥ इमीसेण भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरका किं सठिया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा-आवलियप्पविट्ठाय आवलिय बाहिराय॥तत्थण जे ते आवलियपविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तजहा-वट्टा तसा चउरसा तत्थण जे ते आवलियबाहिरा ते णाणा सठाण सठिया पण्णत्ता तजहा अयकाट्ठ सठिया पिट्ठ पयणग सठिया, कडूसठिया लोहीसठिया, कडाहसठिया, थालीसठिया

अर्थ

है सब में प्रश्नोत्तर रत्नप्रभा जैसे ही कहना यावत् छठी सातवी पृथ्वी में कापोत वर्ण जैसा अग्नि जानना ॥ २ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे तीस लाख नरकावास का कौनसा संस्थान कहा है ! उत्तर-अहो गौतम ! नरकावास दो प्रकार के कहे हैं-१ आवलिकागत अर्थात् श्रेणी में रहे हुवे और २ आवलिका से बाहिर उन में आठों दिशि में श्रेणि से रहे हुवे नरकावास के तीन भेद कहे हैं १ वर्तुलाकार २ त्रिकून व ३ चौकून और जो आवलिका से बाहिर आठों दिशासे पृथक् रहे उन के संस्थान विविध प्रकारके कहे हैं जिनके नाम-कहते हैं, अयकोष्ट-लोहेका गोला जैसे, पिष्टपचनक (मदिरा पकाने के लिये जिस भाजन में आटा पकाया जावे वैसा) जैसा, पाक स्थान, रसोइ गृह के आकार से, कडाइ, कडाह बडा कडाइया, स्थाली, पकाने की हडी, पिहडग जिस में बहुत मनुष्यों के लिये धान्य पकाया जावे,

अहे सत्तमाएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—संखेज्जवित्थडेय, असंखेज्जवित्थडाय ॥ तत्थण जे से संखेज्जवित्थडे, सेण एक्कं जोयणसहस्सं आयाम विक्खंभेण, तिन्नि जोयण सयसहस्साइं, सोलस सहस्साइं दोण्णिय सत्तावीस जोयणसये तिण्णिकोसे अट्ठावीस धणुसयाइं तेरसय अंगुलाइं अद्धंगुलय च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥ तत्थणं जं ते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं आयाम विक्खंभेण असंखेज्जाइं जाव परिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥ ४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए

अर्थ

के लम्बे चौडे हैं उनकी परिधि असंख्यात योजनकी है यों तम पृथ्वी पर्यंत कहना सातवी पृथ्वीकी पृच्छा, अहो गौतम ! इसके दो भेद कहे हैं कितनेक संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं और कितनेक असंख्यात योजन के विस्तारवाले हैं उस में संख्यात योजन का विस्तार व संख्यात योजन की परिधिवाला एक अप्रतिष्ठान नरकावास है उसकी लम्बाई चौडाई एकलाख योजनकी है और तीन लाख सोलह हजार दो सो सत्तावीस योजन, तीनगाउ, एकसो अट्ठाइस धनुष्य, साढ तेरह अंगुल से कुच्छ अधिक की परिधि है और जो असंख्यात योजन के विस्तारवाले चार नरकावास हैं वे असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और असंख्यात योजन की परिधि है ॥४॥ प्रश्न अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास कैसे वर्णवाले

सूत्र

बाहल्लेण पण्णत्ता तंजहा हेट्ठिल्ले चरिमंते घणसहस्स मज्झे झुसिरासहस्स उर्दिं संकुइया सहस्स॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केवइयं आयाम विक्खंभेण केवइयं परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संखेज्जवित्थडाय, असंखेज्जवित्थडाय । तत्थणं जे ते संखेज्जवित्थडा तेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, तत्थणं जे ते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता, एवं जाव तमाए ॥

अर्थ

प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नरकावास का जाडपना कितना कहा ? उत्तर अहो गौतम ! तीन हजार योजन का जाडपना है उस में एक हजार योजन की नीचे की पीठिका है, एक हजार योजन की पोलार है और एक हजार योजन का ऊपर का मुख संकुचित होता हुआ रहा है यों सब मिलकर तीन हजार योजन का जानना यों सातवी पृथ्वी तक के नरकावास का जानना प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास लम्बे, चौडाई व परिधि में कितने कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! कितनेक संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं और कितनेक असंख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं जो संख्यात योजन के लम्बे चौडे हैं उन की परिधि संख्यात योजन की है और जो असंख्यात योजन

सूत्र

एयारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, ? गोयमा ! इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतरा चव अकततराचेव जाव अमणामतराचेव ॥ गधेण पण्णत्ता ॥ एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ६ ॥ इमीसण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए असिपत्तेइवा, खुरपत्तेइवा, कलबचीरियापत्तेइवा, कुतग्गेवा, तोमरग्गेइवा, नारायग्गेइवा, सूलग्गेइवा, लउडग्गेइवा, भिंडिमालग्गेतिवा सूचिकलाएतिवा, कवियच्छूइवा, विच्छुयकटइवा, इगालेइवा जालाइवा, मुम्मुरेतिवा, अच्चेइवा, आलाएतिवा, सुद्धाग-

अर्थ

वीभत्स देखाववाला होवे उस की दुर्गंध जैसी क्या नारकी की दुर्गंध है ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो गौतम ! नरकावास में इस से भी अधिक अनिष्ट, अकत यावत् अमनामकारी दुर्गंध है यों सातवी पृथ्वी तक कह देना ॥ ६ ॥ अब स्पर्श का प्रश्न करते हैं प्रश्न—अहो भगवन् ! नरकावास का स्पर्श कैसा है ? अहो गौतम ! जैसे असिपत्र, क्षुरपत्र, कद व चीरिका (तृण विशेष) भाल की अणी तीर का अग्रभाग, सूल का अग्रभाग, व सोटे का अग्रभाग, सूई का अग्रभाग, भिंडमाल का अग्रभाग, सूई के समूह का अग्रभाग, कवच की

सूत्र

नरया केरिसया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालावभासा, गंभीरा लोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा, वण्णेणं पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ५ ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णरका केरिसया गंधेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए अहिमडेतिवा, गोमडेतिवा, सुणगमडेतिवा, मज्जारमडेतिवा, मणुस्स-मडेतिवा, महिसमडेतिवा, मूसगमडेतिवा, आसमडेइवा, हत्थिमडेइवा, सीहमडेइवा वग्घमडेइवा, विगडमडेइवा दीवयमडेइवा, मयकुहिय चिरविणट्ठे, कुणिमवावण्ण दुब्भिगंध किमिजालाउलससत्ते, असुयविलीणविगय बीभत्स दरिसणिज्जे, भवे

अर्थ

कहे हैं ! उत्तर—अहो गौतम ! काले, कालाभासवाले, गंभीर लोमहर्षवाले, भयंकर, त्रास उत्पन्न करनेवाले व परम कृष्णवर्ण वाले कहे हैं यों सातवी नरक तक सब का कहना ॥५॥ प्रश्न—अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कैसे गंधवाले कहे हैं ? उत्तर—जैसे सर्प का मृत कलेवर, गाय का, कुत्ते का, मार्जार का, मनुष्य, का भैंस का, चूहे का, घोडे का, हाथी का, सिंह का व्याघ्र का, विगड का, व चित्त का मृत कलेवर कि जो बहुत काल से पडा हुवा होवे, विनष्ट होवे, जिस का मांस सडकर विगड गया होवे, जिस में बहुत कीडे पड गये होवे, अशुचि वस्तु के लेश पारिणाम का कारनवाला

देवे ण महिड्डीए जाव महाणुभावे जाव इणामेव इणामेवत्तिकट्टु इमं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छराणिवातेहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छेज्जा, सेणं देवे ताए उक्किट्ठाये तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए ताए जइणाए दिव्वाए देवगईये वीईवयमाणे २ जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासं वीतिवएज्जा, अत्थेगइए णरगे वीइवएज्जा, अत्थेगइये णरगं नो वीइवएज्जा ए महालयाणं गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए नरगा पण्णत्ता, एवं जाव अहे सत्तमाए अत्थेगतिय नरगं विइवएज्जा अत्थेगइए नरगं

कुच्छ अधिक परिधिवाला यह जम्बूद्वीप है ऐसा जम्बूद्वीप को कोई महर्धिक यावत् महानुभाव देवता तीन चुटकि बजावे उतने समय में इक्कीसवार परिभ्रमण करके आजावे ऐसी त्वरित, चपल, प्रचण्ड, शीघ्र, तथा उद्धत जयवंत दीव्य देवगति से जाते हुए जघन्य एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक नरकावास का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अहो गौतम ! नरकावास इतने बडे कहे हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना उस में कितनेक नरकावास का उल्लंघन करते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं करते हैं अप्रतिष्ठान नरकावास एक लक्ष योजन का है इस से उस का उल्लंघन होवे, परंतु अन्य चार असंख्यात योजन के हैं जिस का उल्लंघन

फोएश्रा, भंते एतारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! इमीसेण रयणप्प-
भाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिट्ठतराचेव जाव अमणामतराचेव फासेण पण्णत्ता,
एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ ७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए
नरका क महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण जबूदीव दीव सव्वदीव समुद्दाण
सव्वब्भतरए सव्वखुड्डाए वट्टे, तल्लपूत सठाण सठिय वट्ट पुक्खरकण्णिया
सठाण सठिये वट्ट, पडिपुण्ण चद सठाण सठिए, वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिए
एक्क जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण जाव किंचि विसेसाहिय परिक्खेवण

फलों का अग्रभाग वृश्चिक का बांग धूम्ररहित अग्नि, अग्नि की ज्वाला, अग्नि के कन, अग्नि से भिन्न वनी हुई ज्वाला, जला हुआ कोयला और शुद्धाग्नि इस प्रकार का क्या नरक का स्पर्श है ? अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर यावत् अमनापतर स्पर्श नरकावास का कहा है ॥ ७ ॥ पहिले नरकावास का विस्तार बतलाया था, इस का विशेष विवरण के लिये पुनः उपमा से जानने के लिये प्रश्न करते हैं प्रश्न-अहो भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास कितने बडे कहे हैं ? उत्तर अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र के मध्य में रहा हुआ सब से छोटा, तैल से तला हुआ पुडा समान रथ चक्र जैसा गोल अथवा कमल की कर्णिका अथवा प्रतिपूर्ण चंद्र के आकार जैसा गोल, एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा यावत् तीन लक्ष योजन से

सूत्र

उरगेहिंतो उववज्जति, इत्थियाहिंतो उववज्जति, मच्छमणुएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! असण्णिहिंतो उववज्जति जाव मच्छमणुएहिंतो उववज्जति एव एतेण अभिलावेण इमा गाहा घोसेयव्वा असण्णी खलु पढम दोच्च च सिरीसिवा, तनियपक्खी सीहा जंति चउत्थी उरगा पुण पचमीजति, छट्ठी च इत्थियाओ, मच्छा मणुयाय सत्त मिजति जाव अह सत्तमा पुढवी णेरइया णो असण्णिहिंतो उववज्जाते जाव णो इत्थियाहिंतो उववज्जाति मच्छमणुएहिंतो उववज्जाति ॥ १० ॥ इमीसण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया एक समएण केवइया उववज्जाति ? गोयमा !

अर्थ

आकर उत्पन्न होते हैं, मत्स्य में से उत्पन्न होते हैं अथवा मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं ? उत्तर असंज्ञी से यावत् मत्स्य व मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं इस का खुलासा निम्नोक्त गाथा कर करते हैं असंज्ञी पचेन्द्रिय पहिली नरक में आवे, सरिसर्प से गोधा, नकुल प्रमुख दूसरी नरक तक जावे, पक्षी तीसरी तक जाते हैं सिंह व्याघ्रादि चतुष्पद चौथी नरक तक जाते हैं, उरपरिसर्प पांचवी तक जाते हैं, स्त्री छठी में है, और मत्स्य व मनुष्य सातवी में जाते हैं यावत् सातवी पृथ्वी में असंज्ञी तिर्यच पचेन्द्रिय यावत् स्त्री उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु मत्स्य व मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥ १० ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! एक समय में रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य एक दो

सूत्र

मो बीइवएज्जा ॥ ८ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किंमया पण्णत्ता ? गोयमा ! सव्ववइरामया पण्णत्ता, तत्थण नरएसु बहवे जीवाय पोग्गलाय अवक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासताण ते नरगा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं असासया, एवं जाव अहे सत्तमा ॥ ९ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया कतो हिंतो उववज्जंति? उववातो सव्वो भाणिऊण, ततो पुच्छा किं असण्णीहिंतो उवव-ज्जंति, सिरिसवेहिंतो उववज्जंति, पक्खीहिंतो उववज्जंति, चउप्पएहिंतो उववज्जंति,

अर्थ

नहीं कर सकते हैं ॥ ८ ॥ प्रश्न-अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नरकावास किस वस्तु मय हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! सब वज्र रत्नमय है उस में बहुत खर बादर पृथ्वी काया के जीव व पुद्गल आते हैं और जाते हैं परंतु उनका संस्थान एकही रूप सदैव रहता है, इससे द्रव्य से शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है यों सातवी पृथ्वी तक मानना ॥ ९ ॥ प्रश्न अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कहां से उत्पन्न होते हैं ? क्या असंज्ञी में से उत्पन्न होते हैं परिसर्प अर्थात् गोधा, नकुलादि में से उत्पन्न होते हैं, पक्षी में से आकार उत्पन्न होते हैं चतुष्पद में से आकर उत्पन्न होवे स्त्री में से

पुढवीए नेरइयाणं के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तंजहा-भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थेणं जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग उक्कोसेणं सत्तधणूइ, तिण्णिरयणीओ छच्च अंगुलाइं, तत्थणं जसे उत्तरवेउव्विए से जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाउरयणीओ दोच्चाए भवधारणिज्जे जहण्णए

की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य अढाइ हाथ की है और उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकत्तीस धनुष्य एक हाथ तीसरी वालुकप्रभा की भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ की उत्तर वैक्रय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग उत्कृष्ट बांसठ धनुष्य दो हाथ ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत सब की भव धारनीय जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग व उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग और उत्कृष्ट पंकप्रभा की भवधारनीय ६२ धनुष्य २ हाथ उत्तर वैक्रेय १२५ धनुष्य, धूम्र प्रभा की भव धारनीय १२५ धनुष्य उत्तर वैक्रेय २५० धनुष्य तमःप्रभा की भव धारणीय २५० धनुष्य व उत्तर वैक्रेय ५०० धनुष्य तमस्तमःप्रभा की भव धारनीय ५०० धनुष्य व उत्तर वैक्रय १००० धनुष्य की भव प्रायर की संख्या कहते हैं पहिली नरक के १३, दूसरी में ११, तीसरी में ९, चौथी में ७, पांचवी

जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जति, एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ ११ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया समय समय अवहीर माणा २ केवइय कालेण अवहितासिया ? गोयमा ! तेण असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणि ओसप्पिणीहिं अवहीरति, नो चेवण अवहिता सिया जाव अहे सत्तमा ॥ ११ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए

तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी असंख्यात कहे हैं उस में से समय २ में एक २ नीकालते कितने समय में सब नारकी पूर्ण हो जावे ? उत्तर—अहो गौतम ! नारकी असंख्यात कहे हैं उन में से प्रति समय एक २ नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी पर्यंत नीकाले तथापि नारकी के जीव कमी होवे नहीं, होते नहीं व होवेंगे भी नहीं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ ११ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी की शरीर अवगाहना कितनी बडी कही ? उत्तर—अहो गौतम ! उस के शरीर की अवगाहना दो प्रकार की कही, भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय उस में जो भवधारनीय अवगाहना है, वह जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात धनुष्य तीन हाथ व छ अंगुल की है, और उत्तर वैक्रय जघन्य अंगुलका संख्यातवा भाग उत्कृष्ट पन्नरह धनुष्य व अढाइ हाथकी है शर्करप्रभा पृथ्वी

धणुसये, उत्तरवेउव्विया अड्ढाइज्जाइ धणुसयाइ, छट्ठीए भवधारणिज्जे अड्ढाइज्जाइ धणुसयाइ उत्तरविउव्विया पंचधणुसयाइ, सत्तमाए भवधारणिज्जे, पंचधणुसयाइ उत्तरवेउव्विया धणुसहस्स ॥१२॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए नेरइयाण सरीरया किं

अंगुल और तेरवे पाथडेमें ७ धनुष्य, तीन हाथ ६ अंगुलकी यह उत्कृष्ट भवधारनीय अवगाहना हुइ उत्तर वैक्रेय स्थान से दुगुनी जानना इसी तरह आगे नरक में पाथडे के नारकी की अवगाहना जानना जिस नरक मे जितनी अवगाहना का अधिकपना होवे उसका उस नरक के पाथडे से भाग देना जो भाग आवे वह प्रत्येक पात्थडे में बढाना ॥१२॥प्रश्न-अहो भगवन् ! नारकी के शरीरका संघयन क्या

१ रत्नप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
धनुष्य	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	७
हाथ	३	१	३	२	०	२	१	३	१	०	२	०	३
अंगुल	०	८॥	१७	१॥	१०	१८॥	३	११॥	२०	४॥	१३	२१॥	६

अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जातो रयणीओ, उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्ससंखेयभाग उक्कोसेण एक्कतीसधणूइं एक्कारयणी ॥ तच्चाए भवधारणिज्जे, एक्कतीस धणूइं एक्का रयणी, उत्तर वेउव्विया बासट्ठिधणूइं दोण्णियरयणीओ ॥ चउत्थीए भवधारणिज्जे बावट्ठि धणूइं दोण्णिरयणीओ, उत्तरवेउव्विया पण्णवीस धणुसय, पंचमीए भवधारणिज्जे पणवीस

में ९ छठी में तीन व सातवी में एक पाथडा है यों सब मीलाकर ४९ पाथडे हुवे इन में सब की भवधारणीय अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्तर वैक्रेय जघन्य अंगुल का संख्यातवा भाग इस में पहिली नरक के प्रथम पाथडे की उत्कृष्ट अवगाहना तीन हाथ की इस के आगे प्रत्येक पाथडे में ५६॥ बढते जाना जिस से दूसरे पाथडे में एक धनुष्य एक हाथ व साडे आठ अंगुल की हुई, तीसरे में एक धनुष्य तीन हाथ व १७ अंगुल की चौथे पाथडे में दो धनुष्य दो हाथ २॥ अंगुल की, पांचवे पाथडे में तीन धनुष्य दश अंगुल की, छठे पाथडे में तीन धनुष्य दो हाथ १८॥ अंगुल की, सातवे में चार धनुष्य एक हाथ व तीन अंगुल की, आठवे पाथडे में चार धनुष्य तीन हाथ व ११॥ अंगुल की नववे पाथडे में पांच धनुष्य एक हाथ २० अंगुल की, दशवे पाथडे में ६ धनुष्य ४॥ अंगुल का, इग्यारवे पाथडे १ धनुष्य २ हाथ १३ अंगुल की बारहवे पाथडे में ७ धनुष्य २१॥

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेर्सि सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा— भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेते उत्तरवेउव्विया तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसेण भते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयंकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम ! सस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

२ शर्करप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
मनुष्य	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१४	१४	१५
हाथ	३	२	१	०	३	२	२	१	०	३	२
अंगुल	६	९	१२	१५	१८	२१	०	३	६	९	१२

३ वालुकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
मनुष्य	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१
हाथ	२	२	२	१	१	१	१	१	१
अंगुल	१२	७॥	३	२२॥	१८	१३॥	९	४॥	०

४ पंकप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५	६	७
मनुष्य	३१	३६	४१	४६	५२	५७	६२
हाथ	१	१	२	३	०	१	२
अंगुल	०	२०	१६	१२	८	४	०

७ तमस्तम प्रभा

पाथडा	१
मनुष्य	५००
हाथ	०
अंगुल	०

५ धूम्रप्रभा

पाथडा	१	२	३	४	५
मनुष्य	६२	७८	९३	१०९	१२५
हाथ	२	०	३	१	०
अंगुल	०	१२	०	१२	०

६ तम प्रभा

पाथडा	१	२	३
मनुष्य	१२५	१८७	२५०
हाथ	०	२	०
अंगुल	०	०	०

सघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी, णेवट्ठी णेवच्छिरा, णेवण्हारु, णेव सघयण मत्थि, जे पोग्गला अणिट्ठा जाव अमणामा ते तेसिं सरीर सघायत्ताए परिणमति, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १३ ॥ इमीसेण भते ! रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरा किं सठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा— भवधारणिज्जा, उत्तर वेउव्वियाय ॥ तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता ॥ तत्थण जेत उत्तरवेउव्वियाा तेवि हुड सठिया पण्णत्ता, एव जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसण भते रयणप्पमाए पुढवीए णेरइयाण सरीरगा केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! काला कालोभासा जाव परम कण्हावण्णेण पण्णत्ता ॥

कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! छ सघयण में से एक भी सघयण नहीं है, क्यों की उन के शरीर में हड्डियों, शिरा व स्नायु नहीं है परतु जो पुद्गल अनिष्ट, अकांतकारी यावत् अमनोज्ञ होते हैं वे रूप से भयकर शरीरपने परिणमते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १३ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी को कौनसा सस्थान कहा है ? उत्तर-अहो गौतम! सस्थान के दो भेद कहे हैं तद्यथा—भवधारनीय व उत्तर वैक्रेय दोनों शरीर का हुड सस्थान कहा है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ १४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में रहे हुवे नारकी का कैसा वर्ण कहा ? उत्तर—अहो गौतम ! काला, कालाभास

सूत्र

एव जाव अहेसत्तमा ॥ १५ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण सरीरया केरिसया गधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहानामए अहिमडेतिवा तंचेव जाव अहे सत्तमा ॥ १६ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं सरीरया केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! फुडितच्छविविच्छविया, खरफरुसा झ्झाम झुसिरा फासेण पण्णत्ता एव जाव अहे सत्तमा॥ १७ ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाण केरिसया पोग्गला ऊसासत्ताए परिणमंति ? गोयमा !

अर्थ

वाला, यावत् परम कृष्ण वर्ण कहा है यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥१५॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी के शरीर की कैसी गंध कही ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे मृत सर्प का कलेवर वगैरह जैसा पहिले नरक स्थान की गंध कही वैसे ही जानना यों सातों पृथ्वी के नारकी का जानना ॥ १६ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी का कैसा स्पर्श कहा है ? उत्तर—अहो गौतम ! फटी हुई कांति रहित, अति कठिन दग्ध छाया व बहुत छिद्रवाली चमडी उन नेरियों की कही है ॥ १७ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसे पुद्गलों उश्वासपने ग्रहण करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जो अनिष्ट, यावत् अमनाप पुद्गलों हैं उन को उश्वासपने ग्रहण करते हैं

सूत्र

गाउयाइं उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइं, सक्करप्पभाए पुढवीए जहण्णेण तिण्णिगाउयाइं उक्कोसेण अद्धुट्ठाइं गाउयाइं एवं अद्धगाउयाइं २ परिहायति जाव अहे सत्तमाए, जहण्णेण अद्धगाउयं उक्कोसेण गाउयं ॥ २४ ॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं कति समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा-वेदणा समुग्घाए कसाय समुग्घाए, मरणातिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाए ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥२५॥ इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया केरिसय खुह-पिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा! एकमेकस्सणं रयणप्पभा पुढवी निरइयस्स

अर्थ

साढे तीन गाउ, वालुक प्रभा के नारकी जघन्य अढाई गाउ उत्कृष्ट तीन गाउ पंक प्रभा के नारकी जघन्य दो गाउ उत्कृष्ट अढाई गाउ, धूम्रप्रभा के नारकी जघन्य देढ गाउ उत्कृष्ट दो गाउ, तम प्रभा के नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट देढ गाउ और तमस्तमःप्रभा के नारकी जघन्य आधा गाउ उत्कृष्ट एक गाउ ॥ २४ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी को कितनी समुद्घात कही है ? उत्तर—अहो गौतम ! चार समुद्घात कही हैं जिन का नाम वेदना कषाय, मारणांतिक व वैक्रय यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ २५ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसी क्षुधा पिपासा

असब्भाव पट्ठवणाए सव्वोदधीवा सव्व पोग्गलेवा आसयसि पक्खिवज्जा णो चेवण से रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए त्तितिचे वासित्ताधि तण्हे वासिचा, एरिसियेण गोयमा! रयण-प्पभाए जे णेरइया खुहप्पिवास पच्चणुब्भवमाणा विहरति एव जाव अहे सत्तमाए ॥२६॥ इमीसेण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया किं एकत्त पभू विउव्वित्तए पुहुत्तपि पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एकत्तपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तपि पभू विउव्वित्तए, एगत्त विउव्वेमाणा एगमह मोग्गररूवेवा, मुसुढरूववा, एव मोग्गर मुसुढि करकत्त असि

अर्थ

अनुभवते हुवे विचरते हैं। उत्तर—अहो गौतम! असत्य कल्पना से सब समुद्र का पानी अथवा सब पुद्गल उन के मुख में डाल देने से वे तृप्त नहीं होते है, तृषा रहित नहीं होते हैं अहो गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी ऐसी क्षुधा पिपासा का अनुभव करते हुवे विचरते हैं यों सातों पृथ्वी तक जानना ॥ २६ ॥ अब वैक्रेय शरीर की वक्तव्यता कहते हैं प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या एक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है या अनेक रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ है ? उत्तर—अहो गौतम ! एक रूप की विकुर्वणा करने में भी समर्थ हैं और अनेक रूपकी विकुर्वणा करने भी में समर्थ हैं जब एक रूप की विकुर्वणा करते हैं तब एक बडा मुद्गर, मुसंढी, करवत, खड्ग, शक्ति, हल, गदा, मुशल

सूत्र

सची हल गया मुसल चक्क णाराय कुंत तोमर सूल लउड भिंडिमालाय जाव भिंडमाल रूवा जाव पुहुत्तपि विउव्वेमाणा मोग्गर रूवाणिवा जाव भिंडमालरूवाणिवा ताइं सखेज्जाइं नो असखज्जाइं सबद्धाइं नो असबद्धाइं,सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स काय अभिहणमाणा वेदण उदीरति उज्जल विउल पगाढ कक्कस कडूय, फरुस णिठुर चड तिव्व दुक्ख दुग्ग दुरहियास एव जाव धूमप्पभाए पुढवीए छट्ठ सत्तमासुण पुढवीसु नेरइया पभू महंताइं लोहिय कुंथुरूवाइं वयरामयतुडाइं गोमय

अर्थ

चक्र, बाण, भाला, तोमर, त्रिशूल, लकुट, भिंडिमाल के रूप बनाने में समर्थ हैं और बहुत रूप वैक्रेय करते हुवे बहुत मुद्गर यावत् बहुत भिंडिमाल के रूप की विकुर्वणा करने में समर्थ हैं वे सख्यात रूप बना सकते हैं,परतु असख्यात नहीं बना सकते हैं, अपने शरीर की साथ सबंधवाले बना सकते हैं परतु सबध विना के नहीं बना सकते हैं, अपने रूप जैसे रूप बनावे परतु असदृश रूप बनावे नहीं, एसे रूप की विकुर्वणा करके परस्पर काया की घात करते हुए वेदना की उदीरणा करे उज्वल, विपुल, प्रगाढ, कर्कश, कटुक, कठोर, निष्ठुर, चंड, तीव्र, दुःखकारी, विषम व अतुल्य सहन नहीं होसके वैसी वेदना अनुभवते हुवे विचरते हैं एसे ही पांचवी धूम्रप्रभा पृथ्वी तक जानना छठी व सातवी पृथ्वी में नारकी काल कुंथुरूप वज्रमय,

कीडसमाणाइं विउव्वति कीड समाणाइं विउव्विचा अन्नमन्नस्सकाय समतुरंगेमाणा २ खायमाणा २ सयपोरगाकिमियाइ चालेमाणे २ अतो २ अणुप्पाविगमाणा २ वेयण उदीरयति उज्जल जाव दुरहियास ॥२७॥ इमीसेण भंते! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया किं सीय वेयण वयति, उसिण वेयण वेयाति, सिउसिण वेयण वेयति? गोयमा! णोसीय वेयण वेयति उसिणवेयण वेयति, नो सीउसिण वेयण वेयति अप्पयरा उण्ह-जोणिया एवं जाव वालुप्पभाए, ॥ पकप्पभाए पुच्छा ? गोयमा ! सीयवेयण वेयति उसिणवेयण वेयति नो सीउसिण वेयण वेयति, ते बहुयरगा, जे

अर्थ

पांचवाले गोमय के कीडे समान रूप की विकुर्वणा करके परस्पर एक दूसरे के शरीर में प्रवेश करे, नीकले, आरोहण करे, समान घोडे जैसे आक्रमण करे, एक २ के शरीर का भक्षण करते हुए पूर्वोक्त उज्वल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना प्रगट भोगवते हुवे विचरते हैं ॥२७॥ प्रश्न—अहो भगवन्! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी क्या शीत वेदना वेदते हैं, ऊष्ण वेदना वेदते हैं या शीतोष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! शीत व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं परन्तु उष्ण वेदना वेदते हैं ऐसे ही शर्करप्रभा तथा वालुक प्रभा का जानना पंकप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत वेदना व ऊष्ण वेदना यों दो प्रकारकी वेदते हैं परन्तु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इसमें ऊष्ण वेदना वेदनेवाले बहुत हैं और शीत वेदना वेदनेवाले थोडे हैं

सूत्र

उसिणवेयण वेयति ते थोवयरगा, जे सीयवेयण वेयति ॥ धूमप्पभाए पुच्छा? गोयमा ! सीयपि वेयण वेयति उसणपि वेयण वेयति, नो सीउसिण वेयण वेयति ॥ ते बहुयरगा जे सिय वेयण वेयति ते थोवयरका जे उसिण वेयण वेयति ॥ तमाए पुच्छा ? गोयमा ! सीय वेयणा वेयति, नो उसिण वेयण वेयति, नो सीउसिण वेयणा वेयति एव अह सत्तमाए, णवर परमसीय ॥२८॥ इमीसेण भंते! रयणप्पभाए पुढवीए णेरइए केरिसय निरयभव पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! तेण तत्थ निच्च भीया निच्चवहिया निच्चतासिया निच्च तत्था निच्चउव्विग्गा निच्चउद्दुया निच्चपरमसुभमतुल-

अर्थ

धूम्रप्रभा की पृच्छा, अहो गौतम ! शीत व उष्ण वेदना वेदते हैं परंतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इस में शीत वेदना वेदनवाले बहुत जीव हैं और उष्ण वेदना वेदनेवाले थोडे जीव हैं तम प्रभा की पृच्छा? अहो गौतम ! शीत वेदना वेदते हैं परंतु उष्ण व शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं, ऐसे ही सातवी पृथ्वी में कहना परंतु इस में परम शीत वेदना का कहना ॥ २८ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकी कैसा नरक भव का अनुभव करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! वे वहां सदैव भय भीत बने हुवे, निरंतर भयाक्रांत, स्वतः ही त्रास पाते हुए परमाधामी से निरंतर त्रास पाये हुवे निरंतर उद्वेगवाले, निरंतर उपद्रववाले, किंचिन्मात्र सुख को नहीं प्राप्त करते हुवे अशुभ, अतुल व अनुबद्ध

मणुयरू निरयभवं पच्चणुब्भवमाणा विहरति एव जाव अहे सत्तमाए पुढवीए॥२९॥ अहे सत्तमाएण पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पण्णत्ता तंजहा-काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे ॥ तत्थ इमे पच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दड समादाणेहिं कालमासे कालकिच्चा अप्पइट्ठाणे निरए नेरइयत्ताए उववन्नाए तंजहा—रामे जमदग्गिपुत्ते, दढाऊले छइपुत्ते, वसू उवरिचरे, सुभूमे कोरव्वे, बभदत्ते चुलणिसुए, तेण तत्थ णेरइया जाया, काला काले आव परमकिण्हा वण्णेण पण्णत्ता, तेण तत्थ वेयण वेयति

भव का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ऐसे ही सातवी नरक पर्यंत जानना ॥ २९ ॥ सातवी पृथ्वी में अनुत्तर महान महा आलयवाले पांच नरकावास कहे हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, रोरुय, महारोरुय व अप्रतिष्ठान इन पांच नरकावास में पांच महान पुरुषों, अनुत्तर, प्राणीहिंसा करने वाले, क्रूर अध्यवसाय स काल के अवसर में काल कर के उत्पन्न हुए जिन के नाम—१ जमदग्नि का पुत्र राम जिस को परशुराम कहते हैं, २ छाया पुत्र दाढाल ३ वसुराजा उपरिचर ४ कौरव्य सुभूम चक्रवर्ती और ५ बारहवा ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती चूलणी का पुत्र ये पांचों वहां कृष्ण वर्णवाले यावत् परम कृष्ण वर्णवाले नारकीपने उत्पन्न हुए वे वहां

सूत्र

उज्जल विउल जाव दुरहियास ॥ २० ॥ उसिण वेयणिज्जेसुण भंते ! नेरइया केरिसय उसिणवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरति? गोयमा! से जहा नामए कम्मारदारए सिया तरुणे बलव जुगव अप्पायके थिरग्ग हत्थे दढपाणिपायपासपिट्ठतरो परिणए लंघणपवणजइण (वायामण) पमद्दण समत्थे तल जमल जुयल बाहु (फलिह-निभवाहु) घणणिचित वलिय वट्ट खंधे चम्मेट्ठग दुघण मुट्ठिय समाहय निचिय गायगत्ते (कायगुत्ते) उरस्स बलसमण्णागए छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावि णिउण, सिप्पोवगए एग मह अयपिंड उदगवारसमाण गहाय त ताविय कोट्टिय२ उब्भिदिय२

अर्थ

उज्जल यावत् नहीं सहन हो सके वैसी वेदना का अनुभव करते हैं ॥ २० ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! नारकी कैसी उष्ण वेदना वेदते हैं ? उत्तर अहो गौतम ! जैसे कोई तरुण बलवंत, युवान, अल्प रोगवाला, हाथ का अग्रभाग जिस का स्थिर है, हाथ, पांव, पीठ, पार्श्व व जंघा जिस की दृढ है, अतिशय गोल स्वरूपवाला, चमडे के गोटिके पत्र मुष्ट्यादिक से घडे हुवे गात्रोंवाला, अंतरिक उत्साह वीर्य से युक्त, दृढ हृदयवाला, वेतालवृक्ष का युगल होवे वैसा समान सरल, लम्बे पुष्ट दो हाथवाला, अति शीघ्र गति व परिश्रम में समर्थ, किसी वस्तु के मर्दन करने में समर्थ, बहत्तर कला में निपुण, विलम्ब रहित कार्य का करनेवाला, अच्छी तरह क्रिया का करनेवाला, अनुसंधान करने में निपुण ऐसा लोहकार का पुत्र, एक

सुणिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण अद्धमास साहणेज्जा, सेण त सीयभूय आउमयेण सडासएण गहाय असब्भाव पट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेसुय नरएसु पक्खिवेज्जा, सेण त उम्मिसिय णिमिसिएण णिमिसियतरेण पुणरवि पच्चु-द्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव फासेज्जा पविलीणामेव फासेज्जा पविद्धत्थमेव फासेज्जा (पासेज्जा) नो चेवण सचाएइ अविरायवा अविलीणवा अविद्धत्थवा पुणरवि पच्चुद्ध-रित्तए से जहा वा मत्तमातगे दुपाए कुजरे सट्ठिहायणे पढम सरय काल समयसिवा चरिम

अर्थ

छोटे घडे जैसा लोहे का गोला अग्नि में तपाकर उसे घन से कूटकर वारवार बनावे यों एक दिन, दो दिन यावत् पन्नरह दिन तक उस लोहे के गोले को अग्नि में तपाकर घन से घडे पीछे अच्छी तरह उसे ठंडा किये बाद उसे सडासी से पकड कर उष्ण वेदनावाले नारकी के शरीर में रखे रखते समय ऐसा विचार करे कि मैं मात्र भेषोन्मेष (पलक) में उस गोलेको शरीरमें से नीकालूंगा परंतु इतने में उस गोलेको उस शरीरकी अग्निसे मक्खन जैसे गलता पिगलता हुवा भस्म होता हुवा देखे परंतु उसे ऐसाही नीकाल सके नहीं नरकमें ऐसी उष्ण वेदना कही है यह दृष्टान्त असद्भाव (कल्पित) है इसके विशेष खुलासाके लिये दूसरा दृष्टान्त कहते हैं जैसे साठ वर्ष की वयवाला तरुण प्रथम शरत्कालमें अथवा चरिम ग्रीष्म-ऋतु(ज्येष्ठ मास)में

सूत्र

निदाहकाल समपसिवा, उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउरे जुसिए (झुसिए) पिवासिए दुब्बले किलंते एक महं पुक्खरिणिं पासिज्जा चाउक्कोण समतीर अणुपुव्वसुजाय वप्पगंभीर सीतल जल सछन्न (पउम) पत्ताभिसमुणाल बहुउप्पलकुमुय णलिण सुभग सोगंधिय पुंडरीय (महापुंडरीय) सयपत्त सहस्स-पत्त केसर फुल्लोवचिय छप्पयपरिभुज्जमाण कमल अच्छ विमल सलिल पुण्ण परिहत्थ भमंत मच्छकच्छभ अणेग सउणगण मिहुण विचरिय (विरइय) सद्दुन्नइय महुर सरनाइय (त पासइ) पासित्ता त उगाहइ उग्गाहित्ता, सेणं तत्थ उण्हंपि पविणेज्जा तिण्हंपि

अर्थ

ऊष्णता से तप्त बना हुवा, तृषा से पीडित बना हुवा, दावाग्नि की ज्वाला से हणाया हुवा, आतूर अवस्था दुर्बल, व थका हुवा, मदोन्मत्त, सूंडादंड से पानी पीने का इच्छित ऐसा हस्ती एक चार कोनावाली, विषमपना रहित, अनुक्रम से नीचा गई अच्छा, गंभीर व शीतल जलवाला पानी से ढकाये हुवे कमलपत्रों व कमलनालवाली (किसी मत में पद्मलता) बहुत सूर्य विकासी, चंद्र विकासी, वैसे ही अन्य कमल, सुगंधित कमल, श्वेत कमल लाल कमल, श्याम कमल, सो पांखडी का कमल, केसर प्रधान कमल, भ्रमर गाजिने वाले होवे वैसे कमलवाली, स्वच्छ स्फटिक समान निर्मल पानी से परिपूर्ण, अविरल मत्स्य कच्छ से भरी हुई, अनेक पक्षियों के समूह व उन के युगल से गुंजायमान बनी हुई बावडी को देखकर

पविणज्जा, खुहंपि पविणेज्जा जरंपि पविणेज्जा दाहंपि पविणेज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सुतिंवा रतिंवा धितिंवा उवलभेज्जा, सीए सीयभूए सकममाण२ सायासुक्ख बहुले-यावि विहरिज्जा एवामेव गोयमा ! असब्भावपट्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेहिंतो नरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणे जाइं इमाइं मणुस्सलोयंसि भवंति तजहा-अयागराणिवा, तंबागराणिवा, तउगराणिवा, सीसागराणिवा, रुप्पागराणिवा, हिरण्णागराणिवा, सुवण्णागराणिवा, कुंभागराणिवा, [कुंभारागरागणीवा कुंभारागिणीवा] तमागिणीवा, इट्टयागिणीवा, कवेलुयागिणीवा, लोहारंबरीसवा, जंतवाडचुल्लीवा, हंडयालिच्छाणिवा, सोंडियलिच्छाणिवा, णलागणीतिवा, तिलागणीतिवा, कुसागणीतिवा

उन में बैठे उस में अपनी भाव तृपा शांत करे, वहां रहे हुवे सहुक प्रमुख तृण विशेष उस मे अपनी क्षुधा शांत करे, जलपान से परिताप भी शांत करे, क्षुधा तृपा शांत होने से सुखपूर्वक निद्रा लेवे, प्रचला करे और उस से शरीर स्वस्थ करे, उद्योत करन रूप मति प्राप्त करे, बाह्य व अंतर से शीतल होवे, निवृत्ति में सारा [illegible] की प्राप्ति कर, आश्रि स उत्पन्न हुवा जो दाह उस रहित बन सुख भोगवता हुवा विचरे अहो गौतम ! ऐसे ही असद्भाव कल्पना से उष्ण वेदना भोगते हुए नरक के नेरियों को नरक से निकालकर इस मनुष्य लोक में लोह को गालने का महा भुवा नामक पात्र, ताम्बा गालने का पात्र, सामा [illegible] का पात्र, चांदी गालने का पात्र, सुवर्ण गालने का पात्र, कुंभकार का निभाड़ा,

सूत्र

तत्थाइ समजोइभूयाई फुल्लकिंसुयसमाणाइ उक्का सहस्साई विणिमुयमाणाइ जाला सहस्साइ, मुच्चमाणाइ, इंगाल सहस्साइ पविक्खरमाणाइ अतो२ हुहूयमाणाइ चिट्ठति ताइ पासति ताइ पासित्ता ताइ उगाहइ ताइ उगाहित्ता सेण तत्थ उण्हंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा, खुहंपि पविणिज्जा, जरंपि पविणिज्जा दाहंपि पविणिज्जा, णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सइंवा रइंवा धिइंवा मतिंवा उवलभेज्जा सीए सीयभूए संकममाणे२ सायसुक्ख बहुलेयावि विहरेज्जा, भवे एयारूवे सिया? णोइणट्ठे समट्ठे गोयमा! उसिणवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतरियचेव उसिण वेयण पच्चणुब्भव

अर्थ

इंटों पकाने का स्थान, कुंभकार की अग्नि, तुषा की अग्नि, इंटपकाने की अग्नि, कवेलु पकाने की अग्नि, लोहा तपाने की अग्नि, इक्षुरस का गुड बनाने की अग्नि, हंडो की अग्नि, सोंढक अग्नि, नदाग्नि, तिल की अग्नि तीलसारों की आग्न, इत्यादि सब ज्योतिभूत बनी हुई किंशुक पुष्प समान रक्त बनी हुई, हजारों मुळे जिस में से नीकलती होवे वैसी हजारों ज्वालायों नीकालती हुई, हजारों अंगार फेलाती हुई एसी धगधगायमान अग्नि देखकर वन में नरक के जीव प्रवेश करे तो वे जीवों वहां उष्णता, तृषा, क्षुधा, ज्वर, दाह शांत करे और इस से वहां निद्रा लेवे, साता प्राप्त करे, रति, धृति, मति प्राप्त करे वन का शीत, शीतभूत मानते हुवे सुख पूर्वक रहे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर उष्ण वेदना

माणा विहरति ॥३१॥ सीय वेयणिज्जेसुण भंते! नरएसु नेरइया केरिसय सीयवेयण पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! से जहा नामए कम्मारदारएसिया तरुणे जुगवं बलवं जाव सिप्पोवगए एक मह अयपिंड दगवारसमाण गहाय ताविय २ कुट्टिय २ जाव एगाहवा दुयाहवा तियाहवा उक्कोसेण मास हणिज्जा सेण त उसिण उसिणब्भूय आयामएण सडासएण गहाय असब्भावपट्ठवणाए सीयवेयणिज्जेसु नरएसु पक्खिविज्जा सेय ओम्मिसियनिम्मिसिएण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामि तिकट्टु पविरायमेव पासिज्जा त चेवण जाव णो सचाएज्जा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए॥से जहा नामए मत मायगेवा तहेव जाव सुक्खबहुलयावि विहरेज्जा एवामेव गोयमा! असब्भाव पट्ठवणाए सीयवेयणेहिंतो णेरइए उवट्टिएसमाणे जाइ इमाइ इहमणुस्स लोए हवति तजहा

अर्थ

नारकी के जीव वेदते हैं ॥ ३१ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! शीत वेदना वेदते हुवे नारकी कैसी शीत वेदना वेदते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे कोई युवावस्थावाला, बलवत यावत् सब कला में निपुण लोहकार एक लोहे का गोला को अग्नि में डालकर कुटे. यों एक दिन, दो दिन, तीन दिन यावत् एक मास पर्यंत कूटे, फीर उसे लोह की सडासी से पकडकर शीत वेदना वाले नारकी के शरीर पर इस विचार से रख कि मेषोन्मेष (पल) मात्र में पीछा ले लेऊगा, परतु वह तत्काल विखर जाने से उसे पीछा लेने को समर्थ नहीं हो

सूत्र

हिमाणिवा हिमपुंजाणिवा हिमपडलाणिवा हिमपडलपुंजाणिवा तुसाराणिवा, तुसार पुंजाणिवा हिमकूडाणिवा हिमकूडपुंजाणिवा सीयाणिवा ताइं पासाइ पासित्ता ताइं उग्गाहइ उग्गाहित्ता से तत्थ सीयंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जाव उसिणे उसिणब्भूए संकममाणे २ साय सुक्ख बहुले तावि विहरज्जा गोयमा ! सीयवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइयातो अणिट्ठतरियं चव सियवेयण पच्चणुभवमाणा विहरति ॥ २२ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा ! जहन्नणवि उक्कोसेणवि ठिई भाणि-

अर्थ

पकता है अथवा जैसे साठ वर्षवाला हस्ती यावत् बावडी की पास आकर सुख पूर्वक रहे वैसे ही शीत वेदनावाले नारकी को वहां से उठा कर इस मनुष्य लोक में हिम, हिम का समुह, हिम के पटल, तुषार, तुषारपुंज, हिम के कूट व हिमकूट के समुह में प्रवेश करावे तो वहां उस की शीत, तृषा, क्षुधा व ज्वर शांत होवे इस से वह वहां निद्रा व प्रचला करे यावत् उष्ण उष्णभूत बनकर सुख भोगता हुवा विचरे अहो गौतम ! इस से भी अनिष्टतर शीत वेदना नारकी के जीव वेदते हुवे विचरते हैं ॥ २२ ॥ प्रश्न—अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा में नारकी की कितनी स्थिति कही ? उत्तर—अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपम की, शर्करप्रभा में जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट तीन सागरोपम,

यान्ना जाव अहे सत्तमाए ॥ ३२ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पहाए नेरइया अणंतर

वालुक प्रभा में जघन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट सात सागरोपम, पंकप्रभा में जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपम, धूम्रप्रभा में जघन्य दश सागरोपम उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपम, तमःप्रभा में जघन्य सत्तरह सागरोपम उत्कृष्ट बावीस सागरोपम और तमस्तमःप्रभा में जघन्य बावीस सागरोपम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम अब सातों नरक के ४९ पाथडे की पृथक् २ स्थिति कहते हैं रत्नप्रभा पृथ्वी के पहिले पाथडे की जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट ९० हजार वर्ष की दूसरे में जघन्य दश लाख वर्ष उत्कृष्ट ९० लाख वर्ष, तीसरे में जघन्य ९० लाख वर्षकी उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्षकी, चौथे में जघन्य पूर्व क्रोड वर्ष उत्कृष्ट एक सागर के दश भाग कर वैसा एक भाग की, पांचवे में जघन्य सागरोपम का दशवा भाग उत्कृष्ट दो दशवा भाग, छठे में जघन्य सागरोपम का दो दशवा भाग उत्कृष्ट तीन दशवा भाग, सातवे में जघन्य तीन दशवा भाग उत्कृष्ट चार दशवा भाग, आठवे में जघन्य चार दशवा भाग उत्कृष्ट पांच दशवा भाग, नववे में जघन्य पांच दशवाभाग उत्कृष्ट छ दशवा भाग, दशवे में जघन्य छ दशवाभाग उत्कृष्ट सात दशवा भाग, अग्यारहवे में जघन्य सातदश भाग उत्कृष्ट आठदश भाग बारहवे में जघन्य आठदश भाग उत्कृष्ट नवदश भाग और तेरहवे पाथडेमें जघन्य एक सागरोपम के९दशवे भाग, उत्कृष्ट एक सागरोपमकी स्थिति है ऐसेही अन्यनरक में जितनी स्थिति होवे उसे जितने पाथडे होवे उतने से भागकर फिर प्रत्येक पाथडे में एक २भाग बढाते हुवे सब पाथड स्थिति कहना यों सब पृथ्वी में जानना जिस का पन ॥ ३२ ॥ मरे

१

रत्नप्रभा १३ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार	१० लाख	९० लाख	क्रोड									
	विभाग	वर्ष	वर्ष	वर्ष	पूर्व	१/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	३/७	१/८	१/९
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार	९० लाख	क्रोड पूर्व	०									
	विभाग	वर्ष	वर्ष		०	१/१	१/२	१/३	१/४	१/५	१/६	१/७	१/८ १/९	१

२

शर्करप्रभा ११ पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सागर	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	विभाग	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
उत्कृष्ट	सागर	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	विभाग	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०

३

वालुक प्रभा ९ पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७	८	९
	सागर	३	३	३	४	४	५	५	६	६
जघन्य	विभाग	०	४/९	[illegible]/९	३/९	७/९	२/९	६/९	१/९	५/९
	सागर	३	३	४	४	५	५	६	६	७
उत्कृष्ट	विभाग	४/९	[illegible]/९	३/९	७/९	२/९	६/९	१/९	५/९	

४

पंक प्रभा ७ पाथड़े		१	२	३	४	५	६	७
	सागर	७	७	७	८	८	९	९
जघन्य	विभाग	–	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७
	सागर	७	७	८	८	९	९	१०
उत्कृष्ट	विभाग	३/७	६/७	२/७	५/७	१/७	४/७	

५

धूम्रप्रभा ५ पाथड़े		१	२	३	४	५
जघन्य	सागर	१०	११	१२	१४	१५
	विभाग	०	२/५	४/५	१/५	३/५
उत्कृष्ट	सागर	११	१२	१४	१५	१७
	विभाग	[illegible]	४/५	१/५	३/५	०

६

तमःप्रभा ३ पाथड़े		१	२	३
जघन्य	सागर	१७	१८	२०
	विभाग	०	२/३	१/३
उत्कृष्ट	सागर	१८	२०	२२
	विभाग	२/३	१/३	०

७

तमस्तमःप्रभा १ पा[थड़ा]
जघन्य सागर २२
उत्कृष्ट सागर ३३

सूत्र

उव्वट्टिय कहिं गच्छति कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति किं तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिय तहा इहवि जाव अहे सत्तमाए ॥ १४ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय पुढवी फास पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणाम एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ १५ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसय आउफास पच्चणुब्भवमाणा विहरति ? गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणाम एवं जाव अहे सत्तमाए एवं जाव वणस्सई फास अहे सत्तमाए पुढवीए ॥ १६ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभा

अर्थ

भगवन् ! रत्नप्रभा नरक में से नारकी नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! जैसे उद्वर्तना व्युत्क्रांति (पन्नवणा) में कही, वैसे ही उद्वर्तना यहां कहना यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं ? अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनाम स्पर्श का अनुभव करते हुए विचरते हैं यों सातवी पृथ्वी तक जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसा अप्काया के स्पर्श का अनुभव करते हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमनाम अप्काया का स्पर्श करते हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना ऐसे ही वनस्पतिकाया के स्पर्श पर्यंत सातवी नरकी तक सब पृथ्वीयों में कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् !

पुढवीए दोच्च पुढविं पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेणं सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ? हंता गोयमा! इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए दोच्चपुढविं पणिहाए जाव सव्व खुड्डिय सव्वतेसु? हंता गोयमा ! दोच्चाण भंते ! पुढवी तच्च पुढवी पणिहाय सव्व महतिया बाहल्लेण पुच्छा? हंता गोयमा ! दोच्चाण पुढवी जाव खुड्डिया सव्वतेसु ॥ एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी ॥ अहे सत्तमिं पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ॥ ३७ ॥ इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु जे पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया तेणं भंते ! जीवा महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा चेव महावेयण तरा चेव ? हंता गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए णिरयपरिसामतेसु तहेव

अर्थ

यह रत्नप्रभा पृथ्वी दूसरी शर्कर प्रभा से जाडाइ में क्या बडी है व चौडाइ में क्या छोटी है ? हां गौतम! वैसे ही है, क्यों कि रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड है, और शर्कर-प्रभा का एक लाख बत्तीस हजार योजन का पृथ्वी पिंड है और रत्नप्रभा पृथ्वी एक रज्जु की लम्बी चौडी है और शर्करप्रभा पृथ्वी दो रज्जु की लम्बी चौडी है यों इस अभिलाप से छठी पृथ्वी तक कहना यावत् सातवी पृथ्वी की अपेक्षा छठी पृथ्वी लम्बाइ चौडाइ में सब से छोटी है ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में जो पृथ्वीकायिक यावत् वनस्पति कायिक जीवों हैं वे क्या महा कर्म महा आश्रव

सूत्र

जाव महाकम्मतरा चेव महा आसवतरा-चेव एव जाव अहेसत्तमाए ॥ २८ ॥- इमीसेण भंते ! रयणप्पमाए पुढवीए तीसाए निरयावास सयसहस्सेसु एक्कमेक्कसि निरयावासंसि सव्वेपाणा सव्वेभूया सव्वेजीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइ काइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा ? हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणत खुत्तो, एव जाव अहे सत्तमाए पुढवी णवर जत्थ जत्तिया णरक ॥ गाहा ॥ पुढवीं उगाहित्ता नरगा संठाणमेव बाहल्ले विक्खम्भ परिक्खेवो वण्णो गधोय फासोय ॥ १ ॥ तेसिं महालयाए

अर्थ

व महा वेदनावाले क्या है ? हां गौतम ! वे जीवों वैसे ही है यों सातवी पृथ्वी तक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के तीस लाख नरकावास में के एक २ नरकावास में सब प्राण, भूत, जीव व सत्त्व पृथ्वीकायापने यावत् वनस्पतिकायापने क्या पहिले उत्पन्न हुए ? हां गौतम ! अनेक वार अथवा अनंतवार वे जीवों उत्पन्न हुए यों सातवी पृथ्वी तक के पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया का जानना विशेष में जहां जितने नरकावास हैं वहां उतने कहना. अब गाथा का अर्थ कहते हैं पृथ्वियों कितनी, पृथ्वी में अवगाह कर जो नरक स्थान हैं सो बतलाया, नरक का संस्थान, उस का जाडपना, लम्बाई, परिधि, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, नरक कितनी बडी है सो उपमा से बतलाई, जीव व पुद्गल

उवमा, देवेण होइ कायव्वा जीवाय पोग्गलावक्कमाति, तहसासया निरया ॥ २ ॥ उववाय परिमाण, अवहारुच्चत्तमेव संघयण ॥ संठाण वण्ण गंधे फासे उसास आहारे ॥३॥ लेस्सा दिट्ठी णाणे जोगुवओगे तहा समुग्घाए ॥ तत्तोय खुप्पिवासा विउव्वणा वेयणायभए ॥ ४ ॥ उववाओ पुरिसाण उवम्मं वेयणाय दुविहाय ॥ ठिई उवट्टणा पुढवी उववाओ सव्व जीवाण ॥ ५ ॥ एयाओ संगहणिगाहाओ ॥ बीउद्देसो सम्मत्तो ॥ ४ ॥ २ ॥ * * * * *

इमीसेण भंते ! रयणप्पहाए पुढवीए नेरइया केरिसय पुग्गल परिणाम पच्चणुभव

अर्थ

नरक में उत्पन्न होते हैं, शाश्वत नरकावास, उपपात—एक समय में कितने नारकी उत्पन्न होते हैं और व यहां से उद्वर्तते हैं, नरकावास की ऊंचाई, नारकी का संघयन, संस्थान, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, श्वासोश्वास, आहार, लेश्या, दृष्टि, ज्ञान, योग, उपयोग, समुद्घात, क्षुधा, तृषा, विकुर्वणा, वेदना, भय, पांच पुरुषों नीचे सातवी नरक में उत्पन्न हुए उन के दृष्टान्त, दो प्रकार की वेदना, स्थिति, उद्वर्तना, पृथ्व्यादिक के स्पर्श और सब जीवों का उत्पन्न होना इतना कथन इस उद्देशे में कहा है॥ इस तरह नरक के अधिकार का दूसरा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ ४ ॥ २ ॥

अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी कैसे पुद्गल परिणाम का अनुभव करते हुए विचरते हैं ?

सूत्र

माणा विहरति ? गोयमा अणिट्ठ जाव अमणामं ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए, एवं नेयव्वं पुग्गल परिणाम ॥गाहा॥ वेयणाय लेसाय णाम गोएय अरई॥भएय सोगे खुहा पिवासाय वाहीय ॥ १ ॥ उस्सासे अणुभावे कोहे माणेय माया लोभेय ॥ चत्तारिय सण्णाओ णेरइयाण तु परिणामा ॥ २ ॥ एत्थ किर अतिवतती नर वसभा केसवा जलचराय । रायाणो मडलिया जेय महारम कोडुंबी ॥ ३ ॥ भिन्नमुहुत्तो नरएसु तिरिय मणुएसु होइ चत्तारि ॥ देवेसु अद्धमासो उक्कोस विउव्वणा भणिया ॥ ४ ॥ असुभा विउव्वणा, खलु नेरइयाणतु होइ सव्वेसिं ॥ सठाणं पिय तेसिं नियमा

अर्थ

अहो गौतम ! अनिष्ट यावत् अमणाम पुद्गल का अनुभव करते हुए विचर रहे हैं यों सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना इस तरह वेदना, लेश्या, नामकर्म, गोत्र कर्म, अरति, भय, शोक, क्षुधा, तृषा, व्याधि, उश्वास, अनुताप, क्रोध, मान, माया, लोभ, आहार, मैथुन, परिग्रह, ये सब इस में जानना अब सातवी नरक में जो जीव उत्पन्न होते हैं उनका कथन करते हैं इस नरक में नरवृषभ केशव (वासुदेव) जलचर मत्स्य मडलिक राजा कि जो महाआरम करनेवाले हैं, सौकरिक, (कसाई) कौटुम्बिक, ऐसे पुरुषों नरक में जाते हैं ॥३॥ अब उत्तर वैक्रेय का काममान करते हैं नेरीये का वैक्रेय किया अंतर्मुहूर्त तक रहे तिर्यंच मनुष्य का वैक्रेय किया चार अंतर्मुहूर्त तक रहे, और देवका उत्तर दिनका उत्तर वैक्रेय रहने का काल है॥४॥

हंडं तु णायव्वं ॥ ५ ॥ जे पोग्गला अणिट्ठा, णियमा सो तेसिं होइ अहारो ॥ वेउव्विय सरीर असंघयण हुंडसंठाण ॥ ६ ॥ असाओ (उप्पाओ) उववन्नो असाओ चेव जहइ निरयभव ॥ सव्वपुढवीसु जीवा, सव्वेसु ठिईविसेसेसु ॥ ७ ॥ उववाएण व सातो, नरइओ देवकम्मुणावावि ॥ अज्झवसाणा निमित्त, अहवाकम्माणु भावेण ॥ ८ ॥ तेया कम्मसरीरा, सुहुमसरीराय जे अपज्जत्ता ॥ जीवेण विप्पमुक्का, वच्चंति सहस्ससोभेद ॥ ९ ॥ नरइयाणुप्पाओ, उक्कोस पचजोयण सयाइं ॥ दुक्खेण

अर्थ

सब नारकी को अशुभ विकुर्वणा कही है और उन का संस्थान भी हुंडक जानना ॥ ५ ॥ जो अनिष्ट पुद्गलों हैं उन का आहार नारकी का होता है वैक्रय शरीर होने से संघयन नहीं है और संस्थान हुंडक जानना ॥ ६ ॥ सब नारकी स्थिती में जीव असाता से उत्पन्न होवे और असाता से नरक भव का त्याग करे ॥ ७ ॥ कोइक नारकी का जीव अपने पूर्व भव के परिचित देव के प्रसंग से सुख पावे अथवा समदृष्टि होवे तो अध्यवसाय से भी सुख की प्राप्ति करे, अथवा कर्म के अनुभव से अर्थात् तीर्थंकर के जन्म दीक्षा, केवल ज्ञान इत्यादि कल्याण में प्रकाश होने से नारकी सुख का अनुभव करते हैं ॥ ८ ॥ नरीये के मृत्युकालमें तेजस औरकार्माण शरीर बिना जो वैक्रय शरीर है वह सूक्ष्म नामकर्म के उदय से बिखर कर हजारों भेद (टुकडे) रूपवन बिखर जाता है ॥ ९ ॥ नारकी जघन्य एक गाउ उत्कृष्ट पांच सो गाउ पर्यंत ऊंचे उछलते हैं नारकी दुःख से भयभीत बने हुए हैं व उदरागम

मिरुयाण, वेयण सततरगाढाण ॥ १० ॥ अच्छिनिमीलियमेत्त, नत्थिसुहं दुक्खमेव अणुबद्ध ॥ नरए नेरइयाण, अहोनिस पच्चमाणाण ॥ ११ ॥ अतिसीय अतिउण्ह, अइतण्हा अइखुहा अइभयच ॥ नरए नेरइयाण, दुक्खसताइं अविस्साम ॥ १२ ॥ एत्थय भिन्नमुहुत्तो, पुग्गल असुभायहोइ असाओ॥ उववाओउप्पाओ, अत्थि सरीराय नायव्वा (बोधव्वा) ॥१३॥ सेत नेरइया॥तइओ नारय उद्देसओ सम्मत्तो ॥४॥३॥ से किंत तिरिक्खजोणिया ? तिरिक्खजोणिया पचविहा पण्णत्ता तजहा-एगिंदिय तिरिक्खजोणिया, बेइंदिय तिरिक्खजोणिया, तेइंदिय तिरिक्ख जोणिया, चउरिंदिय

अर्थ

वेदना सहित है ॥ १० ॥ नरक के जीवों को चक्षु टमकावे जितना भी दुःख नहीं है वे दुःख में ही रहे हुवे अहर्निश पचते रहते हैं ॥ ११ ॥ अति शीत, अति उष्णता, अति तृषा, अति क्षुधा, अति भय, ये सब प्रकार के दुःख नारकी को सदैव रहते हैं ॥ १२ ॥ उक्त सब पाया का संक्षेप में अर्थ बताने के लिये संग्रहणी गाथा कहते हैं भिन्न मुहूर्त पुद्गल, अशुभ, वैक्रय, असाता, उपपात और आंखका टमकाना,यों इस उद्देशे के द्वारों जानना॥१३॥यह नारकीका तीसरा उद्देशा सपूर्ण हुवा॥४॥३॥
प्रश्न—तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—तिर्यंच के पांच भेद कहे हैं तद्यथा—एकेन्द्रिय तिर्यंच

तिरिक्ख जोणिया पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ १ ॥ से किंत एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया? एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया पचविहा पण्णत्ता तंजहा-पुढविकाइएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया जाव वणस्सइ काइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सुहुम पुढविकाइया एगिंदिया तिरिक्ख जोणिया, बादर पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया। से किं त सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया? सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय

बेइन्द्रिय तिर्यंच, तेइन्द्रिय तिर्यंच चतुरेन्द्रिय तिर्यंच व पचेन्द्रिय तिर्यंच ॥ १ ॥ प्रश्न एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—एकेन्द्रिय तिर्यंच के पांच भेद कहे पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच यावत् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच प्रश्न—पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के दो भेद कहे हैं सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच, प्रश्न—सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच व अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकायिक

सूत्र

तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्ता सुहुम पुढविकाइय एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त सुहुम पुढविकाइया ॥ सेकिंत बादरपुढविकाइया ? बादरपुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ता बादरपुढविकाइया अपज्जत्ता बादरपुढविकाइया॥ से त्त बादरपुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत पुढविकाइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ २ ॥ सेकिंत आउकाइया एगिंदिय तिरिक्ख जोणिया ? आउकाइयाएगिंदिय तिरिक्ख जोणिया दुविहा पण्णत्ता एव जहेव पुढविकाइयाण तहेव चउभेदो ॥ एव जाव वणस्सइकाइया, सेत्त वणस्सइ काइया एगिंदिय तिरिक्खजोणिया॥२॥ सेकिंत बेइंदिय तिरिक्खजोणिया?

अर्थ

एकेन्द्रिय तिर्यंच यह सूक्ष्म पृथ्वीकाया के भेद हुए प्रश्न—बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उन के दो भेद कहे हैं—पर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय व अपर्याप्त बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय यह बादर पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय का कथन हुआ यह पृथ्वी काया एकेन्द्रिय का वर्णन हुआ ॥ २ ॥ प्रश्न—अप्‌काया एकेन्द्रिय तिर्यंच के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं जैसे पृथ्वीकाया के चार भेद कहे वैसे ही अप्‌काया के चार भेद कहना ऐसे ही तेउकाया, वायुकाया व वनस्पतिकाया के भेद जानना ॥ ३ ॥ प्रश्न—द्वीन्द्रिय तिर्यंच के कितने

बेइंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त बेइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ ४ ॥ सेकिंत पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता तजहा जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, थलयर पचेंदिय तिरिक्ख जोणिया, खहयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय, गब्भवक्कंतिय जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणियाय ॥ से किंत समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम जलचर पचेंदिय

अर्थ

भेद कहे हैं ? उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच और अपर्याप्त बेइन्द्रिय तिर्यंच ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यंत दो २ भेद कहना ॥ ४ ॥ प्रश्न—तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—अहो गौतम ! तिर्यंच पचेन्द्रिय के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—जलचर, स्थलचर व खेचर प्रश्न—जलचर के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—जलचर के दो भेद कहे हैं समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, उत्तर—दो भेद कहे हैं पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय व अपर्याप्त समूर्च्छिम-जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न–गर्भज जलचर

तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—पज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्तग समुच्छिम जलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्त समुच्छिम पचइंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत गब्भवक्कतिया जलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? गब्भवक्कतिय जलयर पचेंइदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा पज्जत्तग गब्भवक्कतिय जलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिया अपज्जत्त गब्भवक्कतिय जलयर तिरिक्खजोणिया ॥ सेकिंत थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया ? थलचर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा—चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिया, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ॥ सेकिंत चउप्पय थलयर पचें-

अर्थ

तिर्यंच पचेन्द्रिय के, कितने भेद कहे हैं ? उत्तर दो भेद—पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व अपर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय यह जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियका कथन हुवा प्रश्न—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं यथा—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय व परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं, संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और गर्भज स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्छिम स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद—पर्याप्त

दिय तिरिक्खजोणिया ? चउप्पय थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, जहेव जलयराण तहेव चउक्कओ भेदो, सेत्तं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं तं परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किं तं उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता जहेव जलयराण तहेव चउक्कओ भेओ, एवं भुयपरिसप्पाणवि भाणियव्वा ॥ सेत्तं भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, सेत्तं

व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज के दो भेद मीलाकर चार भेद जानना यह चतुष्पद स्थलचर का कथन हुवा प्रश्न—परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—इस के दो भेद कहे हैं—उरपरिसर्प स्थलचर और भुज परिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय प्रश्न—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं—समु-

थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेकित खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा—समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, गब्भवक्कतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ से किंत समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ? समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-पज्जत्तग समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, अपज्जत्त समुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ एवं गब्भवक्कतियावि जाव पज्जत्तग गब्भवक्कतिया अपज्जत्तग गब्भवक्कतियावि ॥ ४ ॥ खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते !

च्छिम व गर्भज इन दोनों के पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे चार भेद मानना ऐसे ही भुजपरिसर्प का कहना यों स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कथन हुवा॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं? उत्तर—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं-समूर्च्छिम व गर्भज प्रश्न—संमूर्च्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के कितने भेद कहे हैं ? उत्तर—उस के दो भेद कहे हैं पर्याप्त व अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना॥ ४ ॥ प्रश्न—खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कितने प्रकार का योनि संग्रह कहा है ?

कइविहे जोणिसगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसगहे पण्णत्ते तजहा अडया पोयया समुच्छिमा ॥ अडया तिविहा पण्णत्ता तजहा-इत्थी पुरिसा नपुसका। पोयया तिविहा प० त० इत्थी पुरिसा णपुसया ॥ तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुसगा ॥ तेसिण भते ! जीवाण कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ तेण भते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठि मिच्छद्दिट्ठि सम्ममिच्छादिट्ठि ? गोयमा ! सम्मादिट्ठीवि मिच्छादिट्ठिवि सम्मामिच्छदिट्ठीवि॥तेण भते!जीवा किं नाणि अन्नाणि?गोयमा!नाणीवि अन्नाणीवि, तिन्नि

अर्थ

उत्तर—तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ अडज अंड में से उत्पन्न होवे २ पोतज थैली से उत्पन्न होवे और ३ समूर्च्छिम उन में से अडज के तीन भेद, स्त्री, पुरुष व नपुसक पोतज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुसक और जो समूर्च्छिम होते हैं वे नपुसक ही होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्याओं कही हैं कृष्ण, नील यावत् शुक्ल लेश्या अहो भगवन् ! वे जीवों क्या समदृष्टि हैं मिथ्यादृष्टि है या समामिथ्यादृष्टि है ? उत्तर-अहो गौतम ! समदृष्टि व समामिथ्या दृष्टि हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं ? अहो गौतम ! वे जीवों ज्ञानी व अज्ञानी

नाणाइ तिन्नि अन्नाणाइ भयणाए जहा दुविहेसु गब्भवक्कतियाण ॥ तेण भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? गोयमा ! तिविहावि ॥ तेण भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ तेण भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति पुच्छा ? गोयमा ! असखेज्जवासाउय अकम्मभूमग अतरदीवग वज्जेहिं उववज्जति ॥ तेसिणं भंते ! जीवाण केवइय कालठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइ भाग ॥ तेसिण भंते ! जीवाण

दोनों हैं ज्ञान में तीन ज्ञान व अज्ञान में तीन अज्ञान की भजना है अहो भगवन् ! वे जीवों क्या मन योगी, वचन योगी व कायायोगी हैं ! अहो गौतम ! तीनों प्रकार के योग कहे हैं अहो भगवन् ! वे जीवों क्या साकारोपयुक्त है या अनाकारोपयुक्त है ! अहो गौतम ! साकार व अनाकार दोनों उपयोगयुक्त हैं अहो भगवन् ! वे जीवों कहां से उत्पन्न होते हैं ! क्या नरक में से, तिर्यंच में से वगैरह पृच्छा, अहो गौतम ! असंख्यात वर्ष के आयुष्य वाले युगलिये व अंतरद्वीप के युगलिये वर्जकर अन्य सब गति के जीव उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! उनकी जघन्य

कइ समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए जाव तेया समुग्घाए ॥ तेण भंते ! जीवा मारणंतिय समुग्घाएणं किं समोहता मरंति असमोहता मरंति ? गोयमा ! समोहयावि मरंति असमोहयावि मरंति ॥ तेणं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति किं नेरइएसु उववज्जंति पुच्छा ? गोयमा ! एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहेव ॥ तेसिणं भंते ! जीवाणं कइ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! बारसजाइ कुलकोडि जोणिपमुह सयसहस्साइं ॥ ५ ॥ भुयगपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि-

अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग की स्थिति कही अहो भगवन् ! उन जीवों को कितनी समुद्घात कही ? अहो गौतम ! पांच समुद्घात कही तथथा-वेदना, कषाय, मारणांति, वैक्रेय व तेजस अहो भगवन् ! वे क्या समोहता मरण मरते हैं या असमोहता मरण मरते हैं ? अहो गौतम ! वे समोहता व असमोहता ऐसे दोनों प्रकार के मरण मरते हैं अहो भगवन् ! वे वहां से नीकलकर कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! उत्पत्ति जैसे उद्वर्तना कहना अहो भगवन् ! उन जीवों की कितनी कुलकोडी कही है ? अहो गौतम ! उन की बारह लाख योनि प्रमुख कुल कोडी कही हैं ॥ ८ ॥

सूत्र

क्खजोणियाण भंते ! कइविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते तंजहा- अंडया पोयया सम्मुच्छिमा ॥ एवं जहा खहयराणं तहेव णाणत्तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढविं गच्छइ, णवजाइ कुलकोडी जोणिप्पमुह सयसहस्सा भवंतितिमक्खाया, सेसं तहेव ॥ ६ ॥ उरग परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते ! पुच्छा ? जहेव भुयग परिसप्पाणं तहेव णवरं ठिई जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी उव्वट्टित्ता जाव पंचमिं पुढविं गच्छइ, दसजाई कुलकोडी ॥ ७ ॥ चउप्पय थलयर पंचिंदिय

अर्थ

अहो भगवन् ! भुजपरिसर्प चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच की कितने प्रकार का योनिसंग्रह कहा है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार का योनि संग्रह कहा है, अंडज, पोतज व संमूर्च्छिम इस का सब कथन खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जैसे कहना विशेष में स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष वहां से नीकलकर दूसरी नरक तक जाते हैं इस की नव लाख कुल कोडी कही है ॥ ६ ॥ उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय जैसे कहना परंतु स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड वर्ष, वहां से नीकलकर पांचवी नरक तक जाते हैं इस की दश लाख कुल क्रोडी कही है ॥ ७ ॥

तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा जराओया समुच्छिमया ॥ जराओया तिविहा पण्णत्ता तंजहा-इत्थी पुरिसा नपुंसका ॥ तत्थण जे ते समुच्छिमा ते सव्वे णपुंसका ॥ तेसिण भंते ! जीवाण कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ? सेस जहा पक्खीण, णाणत्त ठिई जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ उव्वट्टिता, चउत्थ पुढविं गच्छति, दस जाई कुलकोडी ॥८॥ जलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणियाण भंते ! पुच्छा ? जहा भुयगपरिसप्पाण,णवर उव्वट्टित्ता जाव अहेसत्तमिं, पुढविं अद्ध तेरसजाइ कुलकोडी जोणिय पमुह जाव पण्णत्ता

चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! दो प्रकार का योनि संग्रह कहा है १ जरायुज गर्भ से उत्पन्न होवे और २ संमूर्छिम इन में से जरायुज के तीन भेद स्त्री, पुरुष व नपुंसक और समूर्छिम सब नपुंसक हैं अहो भगवन् ! उन को कितनी लेश्याओं कही है ? अहो गौतम ! जैसे खेचर का कहा वैसे ही जानना विशेष में स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन पल्योपम, वहां से नीकलकर चौथी नारकी तक उत्पन्न होवे हैं इस की कुल कोडी दश लाख है ॥ ८ ॥ जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भुजपरिसर्प जैसे जानना विशेष में इन में से नीकला हुआ नीचे सातवी पृथ्वी तक जाता है साडे बारह लाख कुल कोडी है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! चतुरेन्द्रिय की कितनी कुल कोडी कही

सूत्र

॥ ९ ॥ चउरिंदियाण भंते ! केइजाइ कुलकोडी जोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! नवजाई कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा जाव समक्खाया ॥ तेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अट्ठजाइकुल जाव समक्खाया ॥ बेइंदियाण भंते ! केइ जाइ पुच्छा ? गोयमा ! सत्तजाइ कुलकोडी जोणिपमुह सयसहस्सा ॥ १० ॥ कइण भंते ! गधगा पण्णत्ता, कइण भंते ! गधसया ? गोयमा ! सत्तगधगा सत्तगधसया

अर्थ

है ? अहो गौतम ! नव लाख कुल क्रोडो कही है तेइन्द्रिय की पृच्छा, ? अहो गौतम ! आठ लाख कुल क्रोड, बेइन्द्रिय की कितनी कुल कोड कही है ! अहो गौतम ! सात लाख कुल क्रोड कही है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! गधांग [गध के अंग] कितने कहे हैं व गधांग शत कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! सात गधांग व सात गधांगशत कहे हैं अब गधांग जाति के भेद कहते हैं १ मूल, २ त्वचा, ३ काष्ट, निर्यास, ४ रस, ५ पत्र, ६ पुष्प, ७ फल क्रम में मूल, अर्थात् मोथवाला, २ त्वचा अर्थात् सुवर्णछाल ३ काष्ट अर्थात् चंदन अगुरु ४ निर्यास अर्थात् कपुर प्रमुख जनना ५ पत्र अर्थात् जाति का तमल पत्र, ६ पुष्प सो प्रियंगु वगैरह, और ७ फल सो जाति फल ककोलादि इन सब को काला प्रमुख पांच वर्ण से गुणा करने से ३५ होवे, इसे एक गंध से गुणने से ३५ ही रहे इसे पांच रस से गुणने से १७५ होवे फीर इसे मृदु, लघु, शीत व कृष्ण ऐसे चार

पण्णत्ता ॥ ११ ॥ कइण भंते ! पुप्फ जाई कुलकोडी जोणिपमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ? गोयमा ! सोलस पुप्फ जाइ कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा पण्णत्ता तजहा चत्तारिजलयराण, चत्तारिथलयराण, चत्तारि महारुक्खाण, चत्तारि महा गुम्मियाण ॥ १२ ॥ कइण भंते ! वल्लीउ कइवल्लीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिवल्लीउ चत्तारिवल्लिसया पण्णत्ता ॥ १३ ॥ कइण भंते ! लयाउ कइलयसय. पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठलयाउ अट्ठलयसया पण्णत्ता ॥ १४ ॥ कइण भंते !

अर्थ

स्पर्श से गुणने से ७०० होवे हैं यों सात सो गंधांग हुवे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पुष्प जाति की कुल क्रोड कितनी कही ? अहो गौतम ! सोलह लाख कुल क्रोड कही जिस में चार लाख जल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख स्थल में उत्पन्न होवे सो, चार लाख मचुंद प्रमुख महा वृक्ष के और चार लाख जाइ प्रमुख महा गुल्म के ॥१२॥ अहो भगवन् ! वल्लियों की कितनी जाति कही और वल्लीशत कितने कहे है ? अहो गौतम! चार जाति की वल्ली चार वल्लीशत ॥१३॥ अहो भगवन् ! कितनी लताओं व कितनी लताशत कही हैं ? अहो गौतम ! आठ लता व आठ लताशत कही ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी हरिकाय व कितनी हरिकाय शत कही है ? अहो गौतम ! तीन हरितकाय व तीन हरितकायशत जानना एक २ के अवांतर सो २ भेद से तीन के तीन सो भेद होते हैं वृत से बंधे हुए के हजारों फल वृंताक प्रमुख और नाल स

सूत्र

वीईवइज्जा अत्थेगइय विमाण नो वीईवइज्जा ए महालयाण ? गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता ॥ १६ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ अच्चीणि अच्चिरावत्ताइ तहेव जाव अच्चुत्तर वडिंसकाइ ? हता अत्थि ॥ तेविमाणा के महालया पण्णत्ता ? गोयमा ! एव जहा सोत्थिणी णवर एव इयाइ पचउवासतराइ अत्थेगइयस्स दवस्स एके विक्कमे सिया सेस तचेव ॥ १७ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ कामाइ कामवत्ताइ जाव कामुत्तर विडसगाइ ? हता अत्थि ॥ तेण भंते ! विमाणा के महालया पण्णत्ता?

अर्थ

एक दिन, दो दिन तीन दिन उत्कृष्ट छ मास में कितनेक विमान को वे उल्लंघ सकते हैं और कितनेक विमान को नहीं उल्लंघ सकते हैं अहो गौतम ! इतने बडे विमान कहे हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! अर्चि, अर्चिआवर्त यावत् अर्चिरावतंस विमान हैं ? अहो गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! य विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! वे विमान स्वस्तिक विमान जैसे जानना परंतु इस में पांच आकाशांतर जितना क्षेत्र बनाना ऐसा एक देवता का विक्रम होवे ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! काम, कामावर्त यावत् कामोत्तरावतंसक नामक विमान क्या हैं ? अहो गौतम ! वैसे ही विमानों हैं अहो भगवन् ! वे विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्वस्तिक विमान का कहा वैसे ही जानना परंतु इस में सात

सूत्र

गोयमा ! जहा सोत्थीणि नवर सत्तउवासतराइ विक्कमे सेस तहेव ॥ १८ ॥ अत्थिण भंते ! विमाणाइ विजयाइ वेजयताइ जयताइ अपराइयाइ ? हता अत्थि ॥ तण भंते ! विमाणा के महालया ? गोयमा ! जावतिय सूरिए उदेइ, एवइयाइ नव उवासतराइ सेस तचेव, नो चेवण ते विमाणा वीईवइज्जा एमहालयाण विमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! तिरिक्खजोणिय पढमो उद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ १ ॥ कइविहाण भंते ! ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! छविहा ससार समावन्नगा जीवा पण्णत्ता तजहा—पुढवी काइया, जाव तसकाइया ॥१॥ सेकिं

अर्थ

अवकाशांतर करना इतना देवता का विक्रम यहां जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! विजय, वैजयंत जयंत, अपराजित क्या विमानों हैं ? अहो गौतम ! वे विमानों हैं अहो भगवन् ! वे कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! स्वास्तिक विमान जैसे जानना परंतु इस में नव अवकाशांतर जितना क्षेत्र बनाना इतना देवता का विक्रम जानना परंतु किसी भी विमान को उल्लंघ नहीं कर सकते हैं + यह तिर्यंच योनीक जीवों का पहिला उद्देशा हुवा ॥ ४ ॥ १ ॥

अहो भगवन् ! संसार समापन्नक जीव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार के संसार,

+ विमानों पृथ्वीकाया के बने हुए हैं इस से इन का कथन भी इस उद्देशे में किया है

पुढवी, खरपुढवी ॥ ४ ॥ सण्हपुढवीण भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एगं वाससहस्सं ॥ सुद्धपुढवी पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारसवाससहस्साइं! वालुयापुढवी पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउदसवास सहस्सा ॥ मणोसिलापुढवीए-पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सोलसवास सहस्साइं ॥ सक्करा-पुढवी पुच्छा? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अट्ठारस वास सहस्साइं ॥ खर पुढवि पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वास सहस्साइं

२ शुद्ध पृथ्वी, ३ वालुक पृथ्वी, ४ मनःशिला पृथ्वी, ५ शर्करा पृथ्वी और ६ खर पृथ्वी ॥ ४ ॥ अहो भगवन्! सूक्ष्म पृथ्वी की कितनी स्थिति कही? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार वर्ष की, शुद्ध पृथ्वी की पृच्छा? जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बारह हजार वर्ष वालुक पृथ्वी की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट चउदह हजार वर्ष, मन शिला पृथ्वी की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सोलह हजार वर्ष शर्कर पृथ्वी की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अठारह हजार वर्ष की, खर पृथ्वी की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष की

॥ ५ ॥ नेरइयाण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई, एव सव्व भाणियव्व जाव सव्वट्ठसिद्ध देवत्ति ॥ ६ ॥ जीवेण भते ! जीवेति कालओ केवच्चिर होति? गोयमा ! सव्वद्धा ॥ ७ ॥ पुढविकाइएण भते ! पुढविकाइएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा! सव्वद्ध एव जाव तसकाइए॥८॥पडुपन्न पुढविकाइयाण भते! केवति कालस्स निल्लेवा सिया? गोयमा! जहण्णपदे असखेज्जाहिं उस्सप्पिणि ओसप्पिणीहिं उक्कोसपए असखेज्जाहिं ओसप्पिणि उस्सप्पिणीहिं,जहण्णपदातो उक्कोसपद असखेज्जगुणा,एव जाव पडुप्पन्न वाउक्का-

है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तत्तीस सागरोपम की स्थिति कही है यों सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत सब की स्थिति कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जीव जीवपने कितना काल तक रहता है ? अहो गौतम ! जीव जीवपने सदैव रहता है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया पृथ्वीकायापने कितने काल तक रहती है ? अहो गौतम ! सदैव रहता है यों त्रस काया पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! तत्काल का उत्पन्न हुवा पृथ्वीकायिक जीव कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! समय २ में एक २ नीकाले तो जघन्य तथा उत्कृष्ट पद से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे तो भी उन जीवों का अंत नहीं होता है ऐसे ही अप्

सूत्र

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता?गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोवम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोवमस्स पुहुत्तस्स जहण्णपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लस्सेणं भंते ! अणगारे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्से णं भंते ! अणगारे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ

अर्थ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ यह भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सण भंते ! अणगारे समोहएण अप्पाणण अविसुद्धलेस्स देवदेविं अणगार जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सण भंते ! अणगार समोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवदेविं अणगार जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सण भंते ! अणगार समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देवदेविं अणगार जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहया समोहएण विसुद्धलेस्स देवदेविं अणगार जाणइ पासइ ? गोयमा !

अर्थ रहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाला देव तथा देवी को अपने ज्ञान से क्या जाने देखे? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ३ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अविशुद्ध लेश्यावाला देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, ४ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार अपने ज्ञान से विशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ५ अहो भगवन् ! अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदनादि समुद्घात से सहित अथवा रहित अविशुद्ध लेश्या वाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ६ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात रहित

इया॥पडुप्पन्न वणस्सति काइयाण भंते! केवति कालस्स निल्लेवा सिता? गोयमा! पडुप्पण्ण वणप्फइकाइया जहण्णपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा, पडुप्पण्ण वणस्सति काइयाण नत्थि निल्लेवणा ॥ पडुप्पन्न तसकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णपए सागरोपम सहस्स पुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोपमस्स पुहुत्तस्स जहण्णपया उक्कोसपए विसेसाहिया ॥ १ ॥ अविसुद्ध लस्सेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस्स देव देविं अणगारे जाणइ पासइ ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥ अविसुद्धलेसेण भंते ! अणगारे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देव देविं अणगारे जाणइ

काया तेउकाया व वायुकाया का जानना अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए वनस्पतिकाया कितने काल में निर्लेप होवे ? अहो गौतम ! वे कदापि निर्लेप नहीं होते हैं क्योंकि वे अनंत हैं अहो भगवन् ! तत्काल के उत्पन्न हुए त्रस काया के जीवों कितने काल में निर्लेप होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य पद से प्रत्येक हजार सागरोपम उत्कृष्ट पद से दश सो सागरोपम पृथक्त्व में निर्लेप होवे ॥ १ ॥ पर भाव के ज्ञान अनगार होने से अनगार का प्रश्न करते हैं १ अहो भगवन् ! अशुद्ध लेश्या (कृष्ण, नील व कापोत) वाला अनगार वेदनादि समुद्घात से रहित अपने ज्ञान से अशुद्ध लेश्यावाले देव व देवी को क्या जाने देखे ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं २ अहो भगवन् ! वेदनादि समुद्घात

सूत्र

किरिय पकरेइ, सम्मत्तकिरिया पकरेणयाए मिच्छत्त किरिय पकरेइ, मिच्छत्त किरिया पकरेणयाए समत्त किरिय पकरेइ एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तजहा-सम्मत्त किरिय मिच्छत्त किरियं, से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्ण ते अन्नउत्थिया एवं माइक्खति एवं भासति एवं पन्नवेंति एवं परूवेंति एवं खलु एगेण समएण दोकिरियाओ पकरेइ तहेव जाव सम्मत्त किरियच मिच्छत्त किरियच जेतेएवं माहसु तण्णमिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एवं माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एगं किरिय पकरेइ तजहा-सम्मत्ताकिरियंवा मिच्छत्त-

अर्थ

क्रिया करता है उस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है, और जिस समय में मिथ्यात्व की क्रिया करता है उस समय में सम्यक्त्व की क्रिया करता है सम्यक्त्व की क्रिया करते हुवे, मिथ्यात्व की क्रिया करता है और मिथ्यात्व की क्रिया करते हुए सम्यक्त्व की क्रिया करता है इस तरह एक समय में एक जीव दो क्रिया करता है सो अहो भगवन् ! यह किस तरह है ? अहो गौतम ! जो अन्य तीर्थिक ऐसा कहते हैं यावत् प्ररूपते हैं कि एक समय में एक जीव सम्यक् व मिथ्या ऐसी दो क्रिया करता है उन का कथन मिथ्या है अहो गौतम ! उस कथन को मैं इस प्रकार कहता हूं यावत् प्ररूपता हूं कि एक समय में एक जीव एक ही क्रिया करता है यथा-सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया जिस समय

नो इणट्ठे समट्ठे ॥ विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे असमोहतेणं अप्पाणेण अविसुद्ध लेस्स देव देविं अणगारे जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ, जहा अविसुद्धलेस्सेण छ आलावगा एव विसुद्धलेस्सेणवि छ आलावगा भाणियव्वा जाव विसुद्धलेस्सेण भंते ! अणगारे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस्स देवदेविं अणगारे जाणइ पासइ ? हंता जाणइ पासइ ॥ १० ॥ अन्नउत्थियाण भंते ! एवमाइक्खइ एव भासेइ, एव पन्नवेइ, एव परूवेइ, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दोकिरियातो पकरेइ तजहा सम्मत्त किरियच मिच्छत्त किरियच, ज समय समत्त किरिय पकरेइ त समय मिच्छत्त किरिय पकरेइ, ज समय मिच्छत्त किरिय पकरेइ त समय समत्त

अथवा सहित अविशुद्ध लेश्यावाला अनगार विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने अथवा देखे? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अब विशुद्ध लेश्या (तेजो पद्म शुक्ल) का कहते हैं अहो भगवन्! विशुद्ध लेश्यावाला अनगार वेदना आदि समुद्घात रहित अपने आत्मा से विशुद्ध लेश्यावाले देव अथवा देवी को क्या जाने देखे? हां गौतम! वैसे जाने व देखे यों जैसे अविशुद्ध लेश्या के छ आलापक कहे वैसे विशुद्ध लेश्या के छ आलापक जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कितनेक अन्यतीर्थी ऐसा कहते हैं, यावत् प्ररूपते हैं कि एक जीव एक समय में दो क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया व मिथ्या क्रिया, जिस समय में सम्यक्त्व की

मूत्र

॥ १ ॥ काहिण भंते ! समुच्छिम मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा ! अंतो मणुयखेत्ते जहा पण्णवणाए जाव सेत्त समुच्छिम मणुस्सा॥२॥ से किंत गब्भवक्कंतिय मणुस्सा ? गब्भवक्कंतिय मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तंजहा—कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा ॥ ३ ॥ सेकिंत अंतरदीवगा ? अंतरदीवगा अट्ठावीसविहा पण्णत्ता तंजहा एगरुआ, आभासिया, वेसाणिया, णांगोली, हयकन्नगा, आयंसमुहा, आसमुहा, आसकन्नगा, उक्कामुहा, घणदंता, जाव सुद्धदंता ॥ ४ ॥ कहिण्णं भंते !

अर्थ

कहे हैं ! संमूर्च्छिम मनुष्य एक रूप ही है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! संमूर्च्छिम मनुष्य कहां उत्पन्न होवे हैं ? अहो गौतम ! जैसे पन्नवणा में संमूर्च्छिम मनुष्य का अधिकार कहा वैसा ही यहां जानना यावत् यह संमूर्च्छिम मनुष्य का कथन हुआ ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गर्भज मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गर्भज मनुष्य के तीन भेद कहे हैं कर्मभूमि के, अकर्मभूमि के व अंतरद्वीप के ॥ ३ ॥ उस में अंतरद्वीप के कितने भेद कहे हैं ? अंतरद्वीप के अठ्ठाइस भेद कहे हैं १ एक रूक, २ आभासिक, ३ वैसाणिक, ४ नांगोलिक, ५ हयकर्ण, ६ आयंसमुख, ७ आसकर्ण, ८ उल्कामुख, ९ घनदंत यावत् शुद्धदंत ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के एक रूक मनुष्य का एक रूक द्वीप कहां कहा है ?

किरियत्रा, ज समय सम्मत्तकिरिय पकरेइ णो त समयमिच्छत्तकिरिय पकरेइ, ज समय मिच्छत्तकिरिय पकरेइ नो त समय सम्मत्ताकिरिय पकरेइ, सम्मत्ताकिरिया पकरणत्ताए नो मिच्छत्त किरिय पकरेति, मिच्छत्तकिरिया पकरणत्ताए नो सम्मत्त किरिय पकरेति, एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ तजहा-सम्मत्तकिरिय वा मिच्छत्तकिरियवा ॥ सेत्त तिरिक्खजोणी तउदेसउद्देसओ ॥ ४ ॥ २ ॥ सेकित मणुस्सा? मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा—समुच्छिम मणुस्साय गब्भवक्कतिय मणुस्साय ॥ सेकित समुच्छिम मणुस्सा ? समुच्छिम मणुस्सा एगागारा पण्णत्ता

अर्थ

सम्यक् क्रिया करता है उस समय मिथ्या क्रिया नहीं करता है और जिस समय मिथ्या क्रिया करता है उस समय सम्यक् क्रिया नहीं करता है सम्यक् क्रिया करने में मिथ्या क्रिया का अभाव है और मिथ्या क्रिया करने में सम्यक् क्रिया का अभाव है इस तरह एक जीव एक समय में एक ही क्रिया करता है यथा—सम्यक् क्रिया अथवा मिथ्या क्रिया यह तिर्यंच का दूसरा उद्देशा पूर्ण हुआ॥४॥२॥ अब मनुष्य का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य के दो भेद कहे हैं समूर्छिम मनुष्य व गर्भज मनुष्य इन में समूर्छिम मनुष्य के कितने भेद

वणसडण सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ सेणं वणसडे देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खभेण वेइया समए परिक्खेवेण पन्नत्ते ॥ सेण वणसडे किण्हे किण्हो भासे एव जहा रायपसेणइज्जे, वणसडवन्नउ तहेव निरविसेस भाणियव्वं ॥ तणाणय वन्नगधफासो सद्दो, तणाण वावीओप्पाय पव्वयगा, पुढविसिला पट्टगाय भाणियव्वा जाव तत्थण बहवे वाणमतरा देवाय देवीओय आसयति जाव विहरति ॥ ४ ॥ एगुरुय दीवस्सण दीवस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते—से जहा नामए अलिंगपुक्खरेइवा, एव सयणीए भाणियव्वे जाव पुढवि सिलापट्टगाति तत्थण

वर्णन रायप्रसेणी सूत्र से जानना इस प्रकार वेदिका को चारों तरफ जो वनखण्ड रहा हुवा है वह दो योजन में कुच्छ कम गोलाकार चौडाइ में है यह वनखण्ड कृष्ण वर्णवाला कृष्णाभासवाला यों इस का सर्व कथन रायप्रसेणी सूत्र से जानना तृण व मणिका वर्ण, गंध, रस व स्पर्श वैसे ही वावडियों, पर्वत, व पृथ्वी शिलापट्ट सब कहना वहां अनेक वाणव्यंतर देव व देवियों बैठते हैं यावत् विचरते हैं॥४॥ उन एक रूप द्वीप की अंदर बहुत सम रमणीय भूमि भाग रहा हुवा है जैसे मृदंग का तल, यों वेदिका का कहना यावत् पृथ्वीशिलापट्ट का कहना उस में अनेक एकरूक द्वीप के मनुष्य व मनु-

दाहिणिल्लाण एगरूयमणुस्साण एगुरुयदीवेणाम दीवे पन्नत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं तिण्णि जोयण सयाइं उगाहित्ता, एत्थण दाहिणिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुय दीवे नामदीवे पण्णत्ते, तिण्णिजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं णवएकूणपण्णे जोयणसए किंचि विसेसूण परिक्खेवेण ॥ सेणं एगाए पउमवरं वेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता ॥ सेणं पउमवर वेइया अद्धजोयण उड्ढउच्चत्तेण पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं, एगुरूय दीवं समंता परिक्खेवेण पन्नत्ता तीसेणं पउमवर वेइयाए अयमेयारूवे वण्णावासे पन्नत्ते तंजहा-वइरामयानिम्मा, एवं वेतिया, वण्णओ जहा रायपसेणइए जहा भाणियव्वा, सेणं पउमवर वेइया एगेण

अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण में चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे वहां एकरूक नाम द्वीप रहा है यह तीन सो योजन का लम्बा चौड़ा है ९४९ योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की चारों तरफ एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची है, पांच सो धनुष्य की चौड़ी है और एकरूक द्वीप को चारों तरफ घेर कर रही हुई है यह पद्मवर वेदिका का वज्र रत्नमय है इत्यादि सब

खज्जूरीवणा णालिएरवणा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ ७ ॥ एगरुय दीवेण तत्थ २ बहवे तिलयालयआ नग्गोहा जाव रायरुक्खा णदिरुक्खा कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ एगरुय दीवेण दीवे तत्थ बहुओ पउमलयाओ, नागलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ एवं लयावण्णओ जहा उववाईए जाव पडिरूवाओ ॥ एगुरुय दीवेण दीवे तत्थ बहवे सिरियगुम्मा जाव महा जाइगुम्मा तणगुम्मा दसद्धवन्न कुसुम कुसुमेंति जेण वायविहुलग्ग साला एगुरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्ज भूमिभाग मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिय करेंति, एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहुओ वणराईओ पन्नत्ताओ

व नालीयेरी के वन, पुष्प फल वाले यावत् रहे हुवे हैं ॥ ७ ॥ उस एकरूक द्वीप में बहुत तिलक वृक्ष के वन यावत् रायण नंदीवृक्ष प्रमुख दर्भादिक से रहित पुष्प फल वाले, यावत् रहे हुवे हैं और भी वहां पद्मलता यावत् श्यामलता पुष्प फल वाली रही हुई है इस का वर्णन उववाई सूत्र में कहा वैसे जानना यावत् प्रतिरूप है, और भी वहां बहुत सिरिक वृक्ष के गुल्म यावत् महाजाति के गुल्म पांचों वर्ण के पुष्पों व फलों से फलित हुए हैं, वहां मंद वायु चलता है जिस से उस निर्मल वृक्ष की शाखा कंपाय मान होती है उस से एकरूक द्वीप के बहुत मनोहर समभूमि भाग में पुष्प के पुंज (ढग) होते हैं, और भी

बहवे एगुरूय दीवया मणुस्साय मणुस्सीओय आसयति जाव विहरति ॥ ५ ॥ एगरूय दीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उद्दालका मोद्दालका कोद्दालका कतमाला नतमाला नट्टमाला सिंगमाला सखमाला दतमाला सेलमाला णाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ कुसविकुस विसुद्धरुक्खमूला मूलमतो कदमतो जाव बीयमतो, पत्तेहिय पुप्फेहिय अच्छन्न पडिछन्ना सिरिए अईव २ सोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥६॥ एगुरूय दीवेण दीवे तत्थ बहवे हेरुयालवणा, भेरुयालवणा मेरुयालवणा, सेरुयालवणा, सालवणा, सरलवणा, सत्तवण्णवणा पूयफलिवणा,

अनुवादक

ध्यणी बैठते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ५ ॥ उस एकरूक द्वीप में बहुत उद्दालक मोद्दालक, कोद्दालक, कतमाल, नतमाल, नट्टमाल, सिंगमाल, शखमाल, दतमाल व सेलमाल नामक वृक्षों कहे हुवे हैं वे वृक्षों फल फुल से सहित हैं, उन के मूल शुद्ध हैं, दर्भादिक से रहित हैं, मूल, कद यावत् बीज सहित हैं, पत्र पुष्प से आच्छादित बने हुए हैं, विशेष वृक्ष की शोभासे अती २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ६ ॥ उस एकरूप द्वीप में हेरुताल वनस्पति के वन, भेरुताल वनस्पति के वन, मेरुताल वनस्पति के वन, सेरुताल वनस्पति के वन, शाली के सरल के वन, सरसवा के वन, सोपारी के वन, आम्र के वन, खजुरी के वन

सूत्र

विसायण सुपक्क खोयरसवरसुरा वण्णरसगंधफासजुत्त ... बहुविविह वीससा परि-
णयाए मज्जविहीए उववेया फलेहि पुन्नाविव विसट्टुति, कुसविकुसविसुद्ध रुक्खमूला जाव
चिट्ठति ॥ १ ॥ एगुरुय दीवे तत्थ बहवे भिंगगाणामदुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से
धारगघडकरग कलस कक्करि पायकंचणि उदंकवद्धणि सुपइट्ठकविट्ठ पारीचसगा
भिंगारकरोडि सरग परंगपत्ती थालपिल्लग चवलिय अवपलगवाल विचित्तवट्टकमणि

अर्थ

प्रकार से यहां रहते हैं. ऐसा मत्तंग वृक्ष का समुह है, ये अनेक प्रकार के क्षेत्र स्वभाव से ही होते हैं, परिपाकपने
परिणमते हैं, फल से परिपूर्ण रहते हैं अथवा फल पक्व होकर फूले हो जाते हैं वह रस में धमद झरता है बहुत
विस्तारवाले श्रेष्ठ व शुद्ध उस के मूल रहे हैं ऐसे वृक्षों यहां रहे हुए हैं यह पहिला मातंग कल्पवृक्ष का वर्णन हुआ
॥२॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणो! यहां बहुत प्रकार के भृंगारक नाम कल्प वृक्षों (भाजन के वृक्षों) हैं जैसे घट, घट,
कलश, करकरी, कायचनीका, उदकवर्धनी, सुप्रतिष्ठक, विष्टर, पारिवचक, भृंगार लोटा, करोडिक, सरक, भरक
थाली, थाल, पलक, चपलक, अपर, दकवारक, मणिपट्टक, शुक्तिक, योरपिचका, कंचनमणि भाजन
रत्नादिक मनोहर भाजनों होते हैं वे भाजनों सुवर्ण मणि रत्नों से विचित्र हैं वैसे इस क्षेत्र में पूर्वोक्त

सूयाओ आव महात गवधमि मुपताओ पासाइयाओ ॥ ८ ॥ एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे मत्तंगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से चदप्पभमणि सिलागवर सीधु पवरवारुणि मुजायफल पुप्फचोयणिज्जा ससारबहुदव्वजुत्ति ससार काल सावय आसवमहुमे रगरिट्ठाभदुद्धजाइपसन्नेलगासताओ, सज्जुरमूदिया सारका

एकक द्वीप में बहुत वनश्रेणी है वे वनश्रेणि कृष्ण यावत् मनोहर है उस की महागंध समान शोभा है यावत् महागंध ध्वनि करने वाला, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ ८ ॥ अहो आयुष्मंत श्रमणो ! वहां एकरुक नामक द्वीप में बहुत मातंग वृक्षों कहे हैं वे चंद्र प्रभादिक विविध प्रकार के मद्य, चंद्र जैसी कांति मनःशिला जैसी कांति, प्रधान सिधु मद्य विशेष व प्रधान मदिरा वारुणी विशेष जैसे ही हैं अच्छे परिपक्व फल, पत्र व पुष्प निर्याम (रससार) उस में रहा हुवा है जिस में बहुत द्रव्यों का मिश्रण किया हुवा हो वैसे हैं, अपने २ समय में जहां जिस का अनुसंधान होवे वैसे आसव, (मदिरा विशेष) मधु मेरक (मद्य विशेष) सिरिपायक व अरिष्ट रत्न जैसी कांति है, दुग्ध जैसी व जाति मसन्न मदिरा, खजुरी सार, द्राक्षसार, कपिशायन, अच्छी तरह परिपक्व हुवा इक्षुरस वैसे जो मदिरा प्रधान वर्ण गंध रस व स्पर्श हैं बल से युक्त है. रस व वीर्य रूप उस का परिणाम है, मद्य विधि युक्त है, बहुत

सूत्र

फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत घधण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टति। कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से सञ्झाविराग समए नवनिहिपतिणो वेदीविया चक्कवालचद पभूय वट्टिपलितञ्जणहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगानिकर कुसुमिय पारिजाय घणप्पगासे कचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलाविचित्त दडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

अर्थ

वादित्र की भांति को प्राप्त करते हैं वैसे ही तृटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, ताल व शुषिर यों चारों प्रकार के वादित्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा तृटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के वहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत जाड़ी व तेल से परिपूर्ण होती है शिखा का वर्ण कनक जैसा होता है, उस दीवी को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से जडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीवी उत्तम होती है सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेजवंत मनोहर

सूत्र

फदिया तिट्ठाणकरणसुद्धा, तहेव ते तुडियगावि दुमगणा अणेग बहुविह वीससा परिणताए ततवितत घण झूसिराए चउव्विहाए आतोज्जविहाए उववेया फलेहिं पुण्णाविव विसट्टांति, कुसविकुस विसुद्ध रुक्खमूलाओ जाव चिट्ठंति ॥ ११ ॥ एगरुय दीवे तत्थ बहवे दीवसिहाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से मज्झविराग समए नवनिहिपतिणो वेदीविया चक्कवालवंद पभूय वट्टिपलितज्झणहिं विउज्जालिय तिमिर मद्दए कणगनिकर कुसुमिय पारिजाय वणप्पगासे कंचण मणिरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्त दंडाहिं दीवियाहिं सहसा पज्जा-

अर्थ

वादित्र की जाति को प्राप्त करते हैं वैसे ही तूटितांग नामक कल्प वृक्षों तत, वितत, ताल व सुषिर यों चारों प्रकार के वादित्र के गुणों से सहित हैं वे पूर्वोक्त वृक्ष पत्र पुष्प सहित परिपूर्ण हैं, उन के मूल शुद्ध हैं यह तीसरा तूटितांग नामक कल्प वृक्ष कहा ॥ ११ ॥ अहो आयुष्मन्त श्रमणो ! एकरूक द्वीप में अनेक प्रकार के दीपशिखा नामक वृक्षों कहे हुए हैं जैसे संध्या समय में नव निधान के स्वामी चक्रवर्ती राजा के वहां एक दीपक का चक्रवाल प्रकट करे कि जिस से अंधकार नष्ट हो जावे, उस की बत्ती बहुत जाडी व तेल से परिपूर्ण होती हैं शिखा का वर्ण कनक जैसा होता है, उन दीपों को बहु मूल्यवाले मणिरत्नों से जडित सुवर्ण का दंड होता है, ऐसी दीपों उत्तम होती हैं सदैव प्रकाश करती रहती है, रात्रि में तेमरांत मनोहर

सोगंधासुमण कुसुमविमउलियपुंज मणिरयणकिरण जयहिंगुलय तिरयकवाहरगरुधा, तहेव तजातिसिद्दाविदुमगणा अणगबहु विविह वीससा परिणयाए उज्जोयविहाए उववेया, सुहलेसा मदलेसा मंदातवलेसा कूडागारट्ठिया, अण्णोण्णसमोगाढाहिं लेसाहिं सए२भाए तेएणे सव्वओसमताओ भासति उज्जोवति पभासति कुसविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १२ ॥एगुरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तगानामए दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहा से पेच्छाघरेत्र चितरामेव कुसुमदाममाला कुज्जललेसा भासत मुक्कपुप्फ पुंजोवयार किलिए त्रिरह्लिय विचित्तमल्लसिरि समुदयपगाब्भे गथिम वेढिम पूरिम

अर्थ पुष्प, विकसित पुष्पों का समूह, मणिरत्न के कीरण, जातवंत हिंगुल का समुह इन सब के रूप से अधिक रूप वाले ज्योतिष वृक्ष के समुह अनेक विविधाके उद्योत सहित शुभ व मंद लेश्या वाले कहे हैं इन का संस्थान कूटाकार है परस्पर लेश्या के मेद रहे हुवे हैं. लेश्या के प्रदेश से सब दिशि में शोभते हैं उद्योत करते हैं कांति बढाते हैं, यावत् पुष्प फल से शोभनिक व मनोहर हैं यह ज्योतिष कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों! एक रूक द्वीप में बहुत प्रकार के चित्रांगक नामक कल्पवृक्षों के समुह हैं जैसे प्रेक्षागृह विचित्र मनोहर उत्तम पुष्प की मालाओं से संयुक्त, देदीप्यमान, व उज्ज्वल है, विकसित पांच वर्ण के पुष्पों के पुंज सहित हैं, विचित्र पुष्प व माला से सहित है, ग्रंथिम, वेढिम,

सूत्र

सपधमेण मल्लण छेयसिप्पिय विभागरइएण सव्वओसमता चेव समणुबद्धे ९विरल लम्बत विप्पइट्ठहिं पसत्थेहिं कुसुमदामेहिं सोभमाणा वनमालकतग्गए चेव दिप्पमाणे, तहेव ते चित्तगयाविदुमगणा, अणेगबहुविविहवीससा परिणयाए मल्लविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ॥१४॥ एगरुयदीवे तत्थ २ बहवे चित्तरसानाम दुमगणा पण्णत्तासमणाउसो जहा से सुगधवरकलमसालितदुलविसिट्ठणिरुवयदुद्धरद्धे सारयव महस्सहमुहुमेलिए अइरसे परमन्नेरेज्जउ तमेगवन्नगधमतेरण्णो जहा वा त्रि

अर्थ

पुरीम, व सघातीम यों चार प्रकार से निष्पन्न सब दिशाओं में विभाग करके अविरलपने लंबमान अतर रहित पांच वर्ण के पुष्पों की माला से भी शोभायमान है व वनमालाओं से उस के द्वार शोभनीक बन हुवे हैं, वैसे ही यह चित्रांग वृक्ष का समुह अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमा हुवा है पुष्प व पुष्पमाला के गुणों से सहित है, वे वृक्ष यावत् फल फूल वाले रहते हैं यह चित्रांग नाम वृक्ष का कथन हुवा ॥१४॥ अहो आयुष्यवत श्रमणो! इस एकरुक द्वीप में चित्ररस नाम वृक्ष कहे हुवे हैं जैसे इस जगत में उत्तम शालि धान्य के चांवल को गाय के दुध में पकाकर उस में घृत, व शक्कर डालने से वह खीर बने, गध व रस से रसवत बनती है, वैसे ही ० खण्ड का स्वामी चक्रवर्ती के लिये रसोइ बनाने में निपुण-पुरुषों रस

चक्कअट्टिसहोज्जा निउणेहिं सूरयपुरिसेहिं सज्जिए चाउरकप्प सेयासितेव उदणे कलमसालि णिव्वत्तिए विसक्के सेवप्फमिउ विसय सगलसित्थे अणेगसालणग सजुत्ते अहवा पडिपुण्ण दव्वुवरक्खड सुसक्कए वण्णगंधरसफारसजुत्त बलविरिय परिणामे इंदियबलवद्धणे खुप्पिवासा महणे पहाणगुलकढिय खंडमच्छंडिउवणीयव्वमोयगे, सण्हसमितिगब्भ हवेज्जा, परमइट्ठगसजुत्ते, तहव तेचित्तरसावि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए भायणविहीए उववया कुसविकुस जाव चिट्ठति ॥ १५ ॥ एगुरुयदीवेण तत्थ २ बहवे मणियगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो! जहा से हारद्धहार वट्टणग

अर्थ

युक्त चार कल्पिक अनेक मसाले सहित बनाये जैसे मोदक अथवा परिपूर्ण सब द्रव्य सहित, यथायोग्य अग्नि मे पका हुआ, उत्तम वर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त बल वीर्य को बढाने वाले शरीर की पुष्टि करने वाले, क्षुधा तृषा मिटाने वाले मोदक बनाने उस में उत्तमगुड अथवा सक्कर डाले वैसा सिंह केसरी नामक मोदक स्पर्श में सुकुमाल व सूक्ष्म दल वाले व अच्छे स्वाद वाले होते हैं वैसे ही चित्र रस वृक्ष अनेक प्रकार के स्वभाव से परिणमित भोजन देता है वे भोजन विधिवाले कल्प वृक्ष पुष्प फल सहित रहते हैं यह चित्र रस नामक कल्प वृक्ष हुवा ॥ १२ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! एकरुक द्वीप में मणिवांग नाम कल्प वृक्ष समुह कहे हैं- जैसे, हार, अर्धहार, उत्तरा, मुकुट, कुण्डल, वामोत्तक, हेमजाल

मउड कुंडलवासुमूम हेमजाल मणिजाल कणग जालग सुत्तग उच्चितियकडग खुड्डयएगा वली कंठसुत्त मगर उरत्थगेवेज सोणिसुत्त मचूलामणि कणग तिलग फुल्लग सिद्धत्थिय कण्णवालि ससिसूरउसभ चक्कगतल भगेय तुडिय हत्थमालगवलक्ख दीनारमालिया चंदसूरमालिया हरिसय केयूर वलिय पालंब अंगुलिज्जग कंचीमेहला कलाव पयर कपाय जाल घंटिय खिंखिणि रयणोरुजालछुद्दियरनेउर चलणमालिया कणगणिगल-मालिया कणगमणिरयण भत्तिचित्तरूव भूसण विही बहुप्पगारा तहेव ते मणियगा विदुमगणा अणेग बहुविविहा वीससा परिणयाए भूसणविहीए उववेया कुसविकुसवि

अर्थ मुकुटमाल, कनकमाल, सूत्रक, ऊर्मी, कटक, त्रुटि, एकावली, कंठसूत्रक, मकरीका, उरथ, ग्रैवेयक, श्रोणीसूत्रक, चूडामणि आभरण, कनकतिलक, पुष्प, सरसव कनकावली, चंद्र चक्र, सूर्य चक्र, वृषभ चक्र, तलभक्त, तुटित, हस्तमालक, विक्षप, दीनारमालिका, चंद्र मालिका, सूर्य मालिका, हर्षक, केयूर, वीरवलय, कम्बे सूपने अंगुठी कटिमेखला, कलाप, प्रतरक, पादोजाल, घंटिका, घुघुरमाल रत्नमाल, पांव के झांझर चरणमालिका, सुवर्ण समुद्र की माला, ये सर्व सुवर्ण मणिरत्नके विविध प्रकारके हार हैं जैसे ये यहां मनुष्य क्षेत्र में हैं वैसे ही वहां मणिकांत वृक्ष बहुत अनेक प्रकार के भूषण आभूषणों से परिपूर्ण होते हैं. स्वभाव से आभूषण की विधि कही है वे वृक्षों परिणत हुए यावत् हुए हैं

मूल

भाव चिट्ठंति ॥ १६ ॥ एगुरुयदीवे २ तत्थ बहवे गेहागारा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! जहा से पागारट्टालग चरिया गोपुर पासायागास तलगमडव एगसालग बिसालग गब्भघर मोहणघर वलभिघर चित्तसालग मालिय भत्तिघर वट्टतंस चउरंस नंदियावत्तसंठियायत्तपंडुरतल मुंडमाल हम्मिय अहवणं धवलहर अद्धमागह विब्भमसेलद्धसेलसंठिय कूडागार सुविहि कोट्ठग अणेगघरसरणलेण आवण विडंग जालचंद निज्जूह अपवरक करोतालि चंदसालियं भत्तिकलिया

अर्थ

रहते हैं यों मणिकांग कल्प वृक्ष का कथन हुवा ॥ १६ ॥ अहो आयुष्यवंत श्रमणों वहां एकरुकद्वीप में बहुत गृहाकार वृक्षों रहे हुए हैं. जैसे प्राकार अट्टालक, परिकाद्वार, प्रासाद, आकाशतल (चांदनी) मंडप, एकशालिया, दो शालिया, तीन शालिया, चार शालिया, गर्भगृह, मोहनीगृह, चित्रशालि, मालिक, भूमिगृह वर्तुलाकार गृह, तीन कूनेवाले, चारकूने वाले नंदावर्त, चउरंस वाले, मुंडमाल, धवल गृह, अर्ध मागध गृह, विभ्रम गृह, शैल आकार गृह, शिखर के आकारवाले गृह, अच्छा कोठे के आकारवाले, अनेक गृह, शरण, लयन, दूकान, विडंग क, चंद्र निर्युह गृह, ओरडा, चंद्रशालीगृह, ऐसे अनेक प्रकार के विविध मनोहर गृह हैं जैसे गृह यहां भरत क्षेत्र में अनेक प्रकारे होते हैं वैसे ही गृहाकार वृक्ष के समूह भी अनेक प्रकार के हैं अनेक प्रकार के गृह के गुणों से विशेष स्वभाव से यावत् परिणमित हैं उस वृक्ष पर सुख पूर्वक चढ सकते हैं व उतर सकते हैं, उस वृक्ष में सुख से प्रवेश कर सकते हैं

सुत्रणविही बहुविणियाँ। तहव ते गहागारा विदुमगणा अणेग बहुविह विरसमा परिणयाए सुहारुहणे सुहोत्ताराए सुहनिक्खमणपवेसाए दद्दरसोपाणपति कलियाए पइरिक्काए सुहाविहाराए मणाणुकूलाए भवणविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठंति ॥१७॥एगुरुयदीवे तत्थ२ बहवे अणिगणाणाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो। जहा से अणग आइग खोम तणुय कंबल दुगुल्लकोसेज्ज कालमिय पट्टचीण असुतवण्णावरणात वारवाणग पच्छुत्तामरणचित्त सहिणग कल्लाणग भिंग मेहलकज्जल बहुवण्णरत्तपीय सुक्कलमरक्कय मिगलोम हेमप्फरुण्णग अवरुत्तगसिंधु उसभदामिलविंग कलिंग

व उस में। मुखसे नीकल सकते हैं उसको पंक्तियों लगी हुई हैं ऐसा। मुखका स्थान है शैय्यासन रूप से युक्त मनोहर गृह विधि से युक्त वैसे वृक्षों फल फूलवाले यावत् रहे हुए हैं यह गृहाकार कल्प वृक्ष का कथन हुआ ॥१७॥ एकरुक द्वीप में अनेक प्रकार के नग्नक वृक्षों कहे हुए हैं. जैसे आजा-वर्ण रूप वस्त्र, कपास वस्त्र, तृण वस्त्र, कंबल, दुकूल, कोसेयक, मृग चर्म, काल मृग का चर्म एव च, कुछ विशेष आभरणों विचित्र, सुकुमाल, कल्याणकारी, मृगनील वृक्ष समान हरे, काजल समान काले, शोभनीक, बहु वर्णवाले, रक्त, पीत व श्वेत मृग रोम के वस्त्र, जरी के वस्त्र, व ऊन के वस्त्र अनेक प्रकारकी भांति से विविध प्रकार व मनोहर हैं और भी यहां इन वस्त्र में पवन के बनाये हुवे वर्णवाले हैं

नलिण ततुमय भत्तिचित्ता तत्थ त्रिहि बहुप्पगारा हवेज्जवर पट्टणुग्गता वण्णराग कलिया तहेव ते अणियाणात्रि दुमगणा अणेग बहुविविह वीससा परिणयाए तत्थ विहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिट्ठति ॥ १८ ॥ एगरुयदीवेण भंते दीवे मणुयाण केरिसए आगारभावए पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! तेण मणुया अणतिवर सोमचारुरूवा भोगुत्तमा भोगलक्खणधरा, भोगसस्सिरिया सुजाय सव्वंगसुंदरंगा सुपइठिय कुम्मचारुचलणा, रत्तुप्पलपत्तमउय सुकुमाल कोमलतला नग णगर मगर

अर्थ

ऐसे ही अवग्रक नामक वृक्षों के समुह भी अनेक प्रकार के परिणमे हुवे बस विधि सहित फल फुलवाले यावत् रहे हुवे हैं यह दशवा अणियगण नामक कल्प वृक्ष का कथन हुवा यह दश जाति के कल्प वृक्ष का कथन किया ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में मनुष्य का आकार कैसा है ? अहो गौतम ! उन मनुष्यों को अत्यंत सौम्यकारी मनोहर रूप है, भोग में उत्तम, भोग के लक्षण धारण करनेवाले, व भोग में मनोहर हैं, उन के अंग सब अवयव से सुंदर मनोहर हैं, मनोहर सुस्थित काचवे जैसे पांव हैं रक्त कमल जैसे सुकोमल पांव के तले हैं, उन के पगतल में पर्वत, नगर, समुद्र, मगरमच्छ, चक्र मृग इत्यादि लक्षणों हैं, अनुक्रम से अंतर रहित पांव की अंगुलियां हैं, पांव की पानी ऊंची है, ताम्रवर्ण अम

सागर चक्कंकहरंक लक्खणकियचलणा, अणुपुव्वसु साहयंगुलिया उण्णय,तणुय तंबणिद्धणक्खा, संठिय सुसलिट्ठ गुढगुप्फएणी कुरुविंदावत्त वट्टाणुपुव्वजंघा, सामुग्ग निमुग्ग गुढजाणू,गतससण सुजात सण्णिभोरु वरवारणमत्त तुल्लविक्कम विलासितगती सुजात वरतुरग गुज्झदेसा आइण्णहतोव्व णिरुवलेवा पमुइय वर तुरग सीह अइरेग वट्टियकडी, साहयसोणिंद मुसलदप्पणणिगरित वरकणगच्छरुसरिस वर वइरवलितमज्झा उज्जुअसम सहित सुजाय जच्चतणुकसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुकुमाल मउय

अर्थ

नख हैं अच्छे आकारवाली पुष्ट नहीं दीख सके वैसी पांव की घुंटी है, हरिणी के शरीर जैसे वर्तुलाकार जंघाओं हैं, डब्बे के ढक्कन जैसे गाढ घुटने हैं, हस्ती समान विलास विलासवंत गति है, आतिरत अश्व समान गुप्त देश गुप्त रहा हुआ है, जैसे जातिवंत अश्वों के गुप्त भाग लींड करते हुए खराब होते नहीं वैसे ही युगलिये का गुप्त प्रदेश मल करते हुए खराब होता नहीं प्रमुदित अश्व अथवा सिंह उस का कटिसे अधिक वर्तुलाकार कटिवाले हैं, वज्र मुशल, आरिसा, निर्मल सुवर्ण तथा खड्ग की मूठ समान उन के कटि विभाग है, उदर में त्रिवली पडती है, ऋतु परिणाम सहित, उत्तम जातिवंत, सूक्ष्म, कृष्ण, स्निग्ध, सौभाग्यवन्त मनोहर, सुकुमाल, कोमल व रमणिक उनके शरीरकी रोमराजी है, गंगावर्त, दक्षिणावर्त व सूर्य के उदय होने से

सूत्र

रमणिज्ज रोमराइ, गंगावत्तय पयाहिणावत्त तरंग भंगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसा तय पउम गंभीर वियडणाभी झस विहगसुजाय पीणकुच्छी ज्झसोदरा सुइकरणी पम्ह वियडणाभी, सुन्नतपासा, संगतपासा, सुंदरपासा सुजातपासा, मितमाइत पीणरइत पासा, अकरंडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय निरुवहय, देहधारी, पसत्थछत्तीस लक्खणधारा, कणगसिलातलुज्जल पसत्थ समतल उवचिय विच्छिन्न पिहुलवच्छा, सिरिवच्छांकित वच्छा, पुरवरफलिह वट्टिमुया, भुयगी सरविपुलभोग, आयाण फलिह

अर्थ

जैसे कमल विकसित होता है वैसी नाभी है, मच्छ व पक्षी जैसी सुजात कुक्षि है, झख मत्स्य समान उदर है, शुचि पवित्र शरीर है, पद्म समान विकट नाभी है, किंचित् नीचे नमते हुए, मनोहर, गुण सहित, प्रमाण सहित, यथोक्त प्रमाण मांस से पुष्ट रचित पास हैं, पसली नहीं दीख सके वैसा कनक समान निर्मल शरीर है, उत्तम छत्तीस लक्षण धारण करनेवाले हैं, सुवर्णशीलतल समान उज्वल, प्रशस्त, समतल विस्तीर्ण उन के हृदय हैं, नगर द्वार की भोगल समान गोल प्रलम्ब दो भुजाओं हैं, कपाट के भोगल समान लम्बी दो बाहाओं हैं, वे भुजंग समान रमणीक अच्छे संस्थानवाली हैं उन के हस्ततल की सभी शुभी हाथ मनोहर विशिष्ट निकट हैं मांस सहित पुष्ट, स्थूल व सब उत्तम लक्षणों सहित छिद्र रहित उन के

सूत्र

उच्छुद्धं इव हु, जुगसन्निभ पीणरइय पीवरपउट्ठ संठिय उवचिय घणथिर सुबद्ध सुसं-लिट्ठ पब्बसंधी, रत्ततलोवइत मउय मंसल पसत्थ लक्खण सुजाय अच्छिद्द जालपाणी, पीवर वट्टिय सुजाय कोमल वरंगुलीआ, तंबतलिण सुतिरतिल (रुचिर) निद्धलूक्खा नखा, चंदपाणिलेहा, सूरपाणिलेहा, संखपाणिलेहा, चक्कपाणिलेहा, दिसासोवत्थिय-पाणिलेहा, चंद सूर संख चक्क दिसा सोवत्थिय पाणिलेहा, अणेगवर लक्खणुत्तम पसत्थ सुविरइयपाणीलेहा, वर महिस वराहसीह सदूल उसभ णागवर विउल उत्तम इंदखंधा, चउरंगुलसुप्पमाण कंबुवरसरिस गीवा, अवट्ठित सुविभत्त सुजातचित्तमसु

अर्थ

वसतस हैं, पुष्ट वर्तुलाकार अत्यंत ममान अंगुलियों हैं, ताम्बे के वर्ण समान अच्छे पवित्र देदीप्यमान हाथ के नख हैं, हथेली में चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्रवर्ती का चक्र, शुभ सीधा स्वस्तिक, इन का आकार रहा हुआ है और अन्य लक्षणों से संपूर्ण रचित इन की हथेलियों रही हुई है, अच्छा पाडा, वराह, सूअर, सिंह, शार्दूल, अष्टापद, वृषभ, हस्ती समान इन के बड़े स्कंध हैं, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी गरदन है, यथावस्थित विभाग समान मूच्छों हैं, मांस सहित सिंह समान हडवची (दाढी) है, परवाला अथवा बिंबफल समान इन के रक्त ओष्ठ हैं, पांडुर चंद्र समान निर्मल व दक्षिणावर्त शंख, गोक्षीर, मचकुंद फूल, मचकुंद का पुष्प, पानी के कण अथवा कमल समान सफेद दांत की श्रेणी है

सूत्र

मसल सट्ठिय पसत्थ सद्दल विउल हणुयाओ उवचितसिलप्पवाल बिंबफल सन्निभाधरोट्ठा, पंडूर ससि सगल विमल निम्मल संख दधिघण गोक्खीर फेण दगरय मुणालिया धवलदंतसेढी अखंडदंता, अफुडियदंता, अविरलदंता, सुसिणिदंता, सुजायदंता, एग दंतसेढीव्व अणेगदंता, हुतवहनिद्धंत धोत तत्त तवणिज्जरत्त तलतालुजीहा, गरुलायत उज्जुतुंगणासा, अवदालिय पोंडरीयणयणा, कोकासित धवलपत्तलच्छा, आणामिय चावरुइल किण्हभराइय संठिय संगत आयत सुजात तणुकसिण निद्धभुमया, अल्लीणपमाणजुत्त सवणा, सुसवणा, पीणमसल कवोलदेसभागा, अइरुग्गय बालचंद

अर्थ

...न के दांत अखंड, फटे व अंतर रहित चीकने, व अच्छी तरह रहे हुवे हैं दी खने में जैसा एक दांत है वैसे अनेक दांत रहे हुवे हैं, अग्नि से तपाया हुवा निर्मल सुवर्ण जैसा लाल तालु व जीभा है, गरुड पक्षी जैसी नासिका है, विकसित पुंडरीक कमल समान चक्षुओं हैं, विकसित कमल की कर्णिका समान भ्रूपर हैं, किंचित् नमाये हुए धनुष्य के आकार में काले वर्णवाली वादल समान अच्छे संस्थानवाली मनोहर लम्बी उपर पक्ष्म वाली भ्रमर वाले हैं, प्रमाण युक्त कर्ण हैं, मांस से पुष्ट ऐसे कपोल हैं, उस काल का उदित हुवा बाल सूर्य जैसा ललाट है परिपूर्ण पूर्णिमा के चंद्र समान मुख है, छत्र के आकार में मस्तक है, निबिड नाडियों से बंधा हुवा अच्छे लक्षणों युक्त ऊंचे शिखर समान नम पीडाग्र शिखर होवे, वैसा

सूत्र

मद्दिय पसत्थ विच्छिन्न समणिद्धाला, उसुत्तइ पडिपन्न सोमवयणा, छत्तागारुत्तिमगंदेसा, घण निचिय सुबद्ध लक्खणुन्नय कुडागारणिभ पिंडिय सिरा, हुतवह निद्धतधोय तत्त-तवणिज्जरत्तकसतकेससूमि, सामलि- पोंडघणणिचिय छोडिय मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण सुगंध सुंदर भयमोयग भिंग णीलकज्जल पहट्ठभरगणणिद्ध णिकुरुंब णिचिय कुंचिय पयाहिणावत्त मुद्धसिरिया, लक्खण वंजण गुणोववेया, सुजायसुविभत्त सुरूवा पासाइया दरिसणिज्जा, अभिरुवा पडिरुवा॥ तेण मणुया उहस्सरा हंसस्सरा कोंचसरा णंदिघोसा सीहस्सरा सीहघोसा मंजुस्सरा मंजुघोसा, सुस्सरा निग्घोसा

अर्थ

मस्तक है, शाल्मि के पुष्प अथवा रुवण जैसी लाल दृष्ट है, सामली वृक्ष के पुष्प समान बहुत मांस से उपचित सुकोमल विशद प्रशस्त सूक्ष्म, लक्षणवंत, सुगंध से मनोहर कृष्ण वर्ण जैसा, काजल का समुह भ्रमर श्रमर के समुह समान श्याम चीकने दक्षिणावर्तवाले बहुत घने नहीं ऐसे मस्तक के बाल हैं, उनका सब शरीर व्यंजन लक्षण से सपन्न है, उन के अंग उपांग अच्छे हैं स्वरूपवन्त देखने योग्य है, अभिरूप व प्रतिरूप है और भी उन का स्वर हंस क्रौंच पक्षी, वीणा व सिंह के स्वर समान है सिंह समान घोष (गर्जना) है, मधुर स्वर मधुर घोष है, सुस्वर सुघोष है, कांति से देदीप्यमान उन का शरीर है वज्रऋषभ नाराच संघयण-वाले हैं, समचतुरस्र संस्थानवाले हैं, उन की चमडी निर्मली व रोम रहित है, उत्तम प्रशंसनीय है, जिस को

छाया उज्जोइयगमंगा, वज्जरिसह नारायसंघयणा समचउरस - संठाण संठिया, सिणिद्धछवी, निरायंका उत्तमपसत्थ अइसेसनिरुवम तणूजल्ल मल कलंक सेयरय दोसविवज्जिय सरीरा, निरुवमलेवा, अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणी कपोतपरिणामा, सउणिपोस पिट्ठतंरोरुपरिणया विग्गहिय उन्नयकुच्छी पउमप्पल सरिसगंध निस्सास सुरहिवयणा, अट्ठधणुसय ऊसिया तेसिं मणुयाणं चउसट्ठिपिट्ठि करंडगा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ तेणं मणुया पगइभद्दया पगइविणीया, पगइउवसंता पगइपयणु कोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अल्लीण भद्दगा विणीया अपिच्छा असंणिहि

अन्य उपमा नहीं देसके वैसा शरीर है, लघु नीत बड़ी नीतसे लेपाये नहीं व प्रस्वेद रहित शरीर है, मल प्रमुख उन के शरीर पर नहीं है, अनुकूल वायु वेग उनके शरीर का है, कंक पक्षी समान आहार ग्रहण करते हैं पारावत समान पाचन होता है, शकुन पक्षी समान विहार करते हैं, रोग रहित उन्नत उदर भाग है पद्म अथवा कमल की गंध समान श्वासोश्वास है उन का वदन मनोहर है आठसो धनुष्य की ऊंची काया है, उन को ६४ पांसलियों होती हैं, अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! वे मनुष्यों स्वभाव से भद्रिक, विनीत उपशांत हैं क्रोध मान माया व लोभ को पतले किये हैं, कोमलता व विनीत भाव सहित हैं, माया रहित भद्रिक स्वभावी विनीत मेम बंधन रहित, धनादिक संचय रहित वृक्षरूप घरोंमें रहने वाले, वांच्छित वस्तुकी

सचया अचडा त्रिडिमतरपत्रिसमा जहित्थिय कामगामिणोय तेमणुयग्गा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ १९ ॥ तेसिण भंते ! मणुयाण केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २० ॥ एगुरुयमणुईण भंते ! केरिसए आगारभावपडोयार पण्णत्ते ? गोयमा ! ताओण मणुइआ सुजायसव्वंग सुदरिआ, पहाणमहिलागुणेहिजुत्ता, अच्चंत विसप्पमाण पउमसूमाल कुम्मसंठिय विसिठचलणा, उज्जुमउयपीवरनिरंतर सुसातचलणगुलीओ, अब्भुण्णय रतियसालिण तवणिज्जसुइणिद्धणक्खा, • रोमरहिय वट्टलठसंठिय

प्राप्त करने वाले युगलनी से मनो वांछित काम भोग भोगते हुवे विचरते हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों! वैसे मनुष्य के समुह कहे हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! उन मनुष्यों को आहार की इच्छा कितने काल में होती है? अहो गौतम! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२०॥ अहो भगवन्! एकरुक द्वीपमें स्त्रियों का आकार भाव कैसा कहा ? अहो गौतम ! उन स्त्रियों का आकार अच्छा व मनोहर है उन के सब अंग मनोहर है, प्रधान उत्तम स्त्री गुणों सहित है, अत्यंत मनोहर कमल नाल व काचबे जैसे पांव हैं सरल, कोमल पुष्ट अंतर रहित व मांस सहित पांव की अंगुलियों हैं, ऊंचे सुखदायी कमल के आकार से लाल वर्ण के पवित्र चिकने नख हैं, रोम रहित वृत्ताकार से उत्तम प्रशंसनीय लक्षण सहित जंघाका युगल

अजहस पसत्थ लक्खण अकोप्पजंघजुयला, सुणिमियसुगूढजाणु, मसलसुबद्ध सघा कयलिखंभातिरेग संठिया णिव्वणसुमाल मउय कोमल अविरल समसहत सुजातवट्ट पीवर निरतर रोरुआमट्ठावयवीविपट्टसंठिया, पसत्थ विच्छिण्ण पिहुल सोणि वदणायामप्पमाण दगुणिय विसाल मसल सुबद्ध जहणवरधारिणिउवज्ज विराइय पसत्थ लक्खण पिरोदरा, तिवलिय तणुणमियज्झियाउ उज्जुय समसहिय जच्चतणु कसिणणिद्ध आदेज्जलडह सुविभत्त कन्त सुजाय सोभत रुइल रमणिज्ज रोमराई, गंगावत्तकपयाहिणावत्तर। भंगुर रविकिरण तरुण बोधिय अकोसायत

अर्थ—है, अच्छी तरह नमते हुए दो घूंटण है, मांस से अच्छी तरह बंधाइ हुइ घन की रूपी है केलस्तम से अधिक आकारवाली व्रण सहित सुकुमाल मृदु, परस्पर मीलती हुई, पुष्ट वर्तुलाकार सघा है, मष्टापद नामक पत्थरोंका समान प्रशस्त लम्बी चौडी श्रोणि (कटी का पूर्वभाग—स्त्रीचिन्ह) है मुख का जो प्रमाण बारह अंगुलका होता है उस से दुगुनी करते जो होवे उतनी मांसल सहित व शिथिलता रहित घन की जघन है, रज विकार रहित उदर है, जिसकी वलय कुच्छ नमे हुए है सरल मांसवत, पतली काली, चिकनी मनोहर अंतराय रहित रमणिक, सुविभक्त रोमराजी है, गंगावर्त, दक्षिणावर्त वाला कल्लोल जैसे गंभीर, उदित-होते सूर्य समान तेज में विकसित कमल समान गंभीर विकट नाभी है उत्तम मांस वाली कुक्षि है,

पउम गंभीर विगडणाभा, अणुब्भड पसत्थ पीण कुच्छी, सन्नयपासा संगयपासा सुजायपासा मियमाइय पीणरइयपासा, अकरडुय कणगरुयग निम्मल सुजाय णिरुवहय गायलट्ठी, कंचण कलस पमाण समसंहिय सुजायलट्ठ चुचुय आमेल जमल जुगल वट्टिय अब्भुण्णय रतिय संठिय पयोधराओ भुजंग अणुपुव्वतणुय गोपुच्छवट्ट समसंहिय णमिय आएज्ज ललिय बाहाओ, तंबणहा, मंसलग्ग हत्था, पीवर कोमल वरंगुलीओ, णिद्ध पाणिलेहा, रविससि संख चक्क सोत्थिय विभत्त सुविरतिय पाणिलेहा, पीणुण्णय कक्खवत्थिय पदेसा पडिपुण्णगलकवोला, चउरंगुल सुप्पमाण कंबुवर सरिसगीवा,

नम हुए धनुष्य समान मर्यादा सहित मनोहर दो पास हैं, उनकी हड्डियों नहीं दीखती है, सुवर्ण की कांति समान निर्मल रोग रहित काया है सुवर्ण कलश समान प्रमाण सहित दोनों सह कठिन स्तन है, उन्नत सम श्रेणि में साथ दोनों गोलाकार में स्तन है, सर्प समान अनुक्रम से पतली होती गोपुच्छ के आकार से पतली नमती हुई गोलाकार बाहु है ताम्र समान नख है, मांस सहित पुष्ट सुकोमल शोभनीक पतली हाथ की रेखा है, चंद्र, सूर्य, दक्षिणावर्त शंख, चक्र, स्वस्तिक, प्रमुख की हाथ में रेखाओं हैं, कांख, कंधी, कुक्षि हृदय व बस्ति रूप प्रदेश मांस पूर्ण है मांस से पुष्ट मर्दन के कपोल है, चार अंगुल प्रमाण शंख जैसी ग्रीवा है, मांस सहित अच्छे आकारवाली ठुड्डी(दाढी) है,

जयपासा सगयपासा पडिपुन्नसोमवयणा, छत्तण्णयउत्तिमंगा, कुडिलसुसिणिद्धदीहसिरया, छत्त झय जुग थूभ दामिणि कमंडलुकलस वावि सोत्थिय पडाग जवमच्छ कुम्म रह वर मगर जमल जुगंल सुकुपाल अंकुस अट्ठावय वीइसुपइट्ठ कम्मऊर सिरियाभिसेय तोरण मेइणि उदधिवर भवणगिरिवर आयंस सलिलयगय उसभ सीह चामर उत्तम पसत्थ बत्तीसलक्खणधारीओ, हंससरिसगईओ, कोइलमहुरगिरसुसराओ कंताओ सव्वस्स अणुमयाओ ववगय वलिपलियवंग दुव्वण्णवाही, दोभग्ग सोगमुक्का, आंउच्चत्तणयनराण थोवूणमूसियाओ सब्भावसिंगारचारुवेसा, सगतगतहसिय भणिय चिट्ठिय

है छत्र जैसे मस्तक है, लम्बे चीकने श्याम वर्ण के मस्तक के केश हैं, १ छत्र २ ध्वजा ३ युग ४ स्थूभ ५ दामनी ६ कमंडल ७ कलश ८ बावडी ९ स्वस्तिक १० मोटी ध्वजा ११ यव १२ मत्स्य १३ काचबा १४ रथ १५ मगर १६ थाल १७ अंकुश १८ अष्टापद १९ श्रीदाम २० सुप्रतिष्ठक, २१ मयूर २२ लक्ष्मी का अभिषेक २३ तोरण २४ पृथ्वी २५ समुद्र २६ देव भवन २७ पर्वत २८ दर्पण २९ क्रीडावंत हस्ती ३० वृषभ ३१ सिंह और ३२ चामर इन बत्तीस लक्षणों से युक्त है. हंस समान चाल है, कोकिल समान मधुर स्वर है, मनोहर सब को समान वल्लभ हैं वलय रेखा, दुष्ट वर्ण, कुरोग, व्याधि, दौर्भाग्य, शोक इन सब से रहित है ऊंचाई में पुरुष के चार अंगुल नीची है, स्वभाव से ही

विलाससल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला, सुन्दरथण जहणवयणकरचरणणयण लावण्ण-
वण्णरूवजोवणविलासकलिया, नंदणवणविवर चारिणीउव्व अच्छराओ
अच्छेरग पिच्छणज्जा, पासाइयाता दरिसणिजातो अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २१ ॥
तासिण भंते! मणुईणं केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ? गोयमा ! चउत्थ
भत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ २२ ॥ तेणं भंते मणुया किं आहारति ? गोयमा !
पुढवी पुप्फफलाहारा ते मणुयगण पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २४ ॥ तीसेणं भंते !

मोहक श्रृंगार व आचार से मनोहर है, बोलना, बैठना, हसना व विलासवार्ता करना यह सब क्रिया मुदित है, मनोहर निषद पृष्ठ है, सुंदर स्तन, जघन, वदन, हाथ, पांव चक्षु, लावण्य, रूप व योवन विलास सहित है, नंद वन में रहनेवाली अप्सरा समान रूप से देखने योग्य, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! युगल की स्त्री को कितने काल में आहार की इच्छा होती है ? अहो गौतम ! एकांतर दिनमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥२२॥ अहो भगवन्! वे किस वस्तु का आहार करती हैं ? अहो गौतम ! वे पृथ्वी पर के फल पुष्प का आहार करती हैं अहो आयुष्यवत श्रमणों ! यह मनुष्य गण का कथन हुवा ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! वहां पृथ्वी का कैसा आस्वाद कहा ? अहो गौतम !

पुढवीए केरिसए अस्साए पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा नामए गुलेइवा खंडेइवा सक्कराइवा मच्छंडियाइवा, भिसकंदेइवा, पप्पडमोततेतिवा, पुप्फतराइवा, पउमतराइवा अकामियातिवा, विजयातिवा महाविजयाइवा पायसोवमाइवा उवमाइवा अणोवमाइवा चउरक्केगोक्खीरे चउट्ठाणपरिणए गुडखंडमच्छंडिउवणीए मदग्गिकढिए वण्णेण उववेए जाव फासेण मवेए एतारूवे सिता? नो इणट्ठे समट्ठे, तीसेण पुढवीए एतो इट्ठयराए चेव जाव मणामतरा चेव ॥ २५ ॥ आसाएणं भंते ! पुप्फफलाण केरिसए अस्साए पण्णत्ते ?

जैसे गुड, शक्कर, मदिरा, मुसकंद, मोदक, पुष्पोत्तर अथवा पद्मोत्तर, आकोशिका, विजयापाक, महाविजयापाक, दिव्य व विशेष अनुपम गोक्षीर चार गाय को पीलाना, फीर उन चारों गायों का दुध तीन गायों को पीलावे, फीर तीन गायों का दुध दो गायों को पीलावे और दो गायों का दुध एक गाय को पीलावे और इस एक गाय का जो दुध होवे उस में गुड शक्कर वगैरह डालकर मंद अग्नि से पकावे वह जैसा वर्ण से यावत् स्पर्श से वर्णन योग्य होवे वैसा एकरुक द्वीप के पृथ्वी का स्वाद क्या होता है? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस इस से भी इष्ट व मनोज्ञतर उस का स्वाद है ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! वहांके पुष्प फल का स्वाद कैसा कहा ? अहो गौतम ! जैसे चारों दिशा का

गोयमा ! से जहा नामए रन्नोचाउरंत चक्कवट्टिस्स कल्लाणपवरभोयणे सयसहस्स निप्फन्ने वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए अस्सायाणिज्जे वीसायाणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे बींहणिज्जे मयणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे भवे तारूवेसिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, तेसिणं पुप्फफलाणं इतो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएणं पन्नत्ते ॥ २६ ॥ तेणं भंते! मणुया तमाहारेत्ता कहिंवसहिं उवेंति ? गोयमा! रुक्खगेहालया णं ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ तेणं भंते ! रुक्खा किं संठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! कूडागार संठिया, पेच्छाघरसंठिया छत्तागार

भत करनेवाले चक्रवर्ती राजा का परम कल्याणकारी लाखों वस्तुओं के संयोग से बनाया हुवा, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श से वर्णन योग्य, खाने योग्य, दीप्यमान, दर्प योग्य, मद इन्द्रियों व गात्रोंको सुख कर्ता व आनंद कर्ता, ऐसा भोजन जैसा क्या होता है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी इष्टतर यावत् आस्वादनीय उन पुष्प व फल का आस्वाद कहा है ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्य आहार करके कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! वे मनुष्य वृक्ष रूप गृह में रहते हैं अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! वहां के वृक्षों कैसे आकारवाले कहे हैं ? अहो गौतम ! कूटाकार, प्रेक्षागृह, छत्राकार, ध्वजाकार,

सठिया, झयसठिया, थूभसठिया, तोरणसठिया, गोपुरसठिया, १ लगसठिया, अट्टालग सठिया, पासायसठिया, हम्मितलसठिया, गवक्खसठिया, वालग्गपोतियसठिया, वलभी सठिया, अण्णे तत्थ बहवे वरभवणसयणासण विसिट्ठ सठाण सठिया, सुभसीतल छायाणं ते दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २७ ॥ अत्थिणं भंते ! ते एगुरुय दीवे दीवे गेहाणिवा गेहावणाणिवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, रुक्खगेहालयाणं मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २८ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीव २ गामाइवा नगराइवा जाव सन्निवेसाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, जहत्थिय कामगामिणोणं ते मणुयगणा पण्णत्ता

स्तूप के आकार, तोरण का आकार गोपुर का आकार, मकर का आकार, अट्टालक का आकार, प्रासाद के आकार, हर्म्यतल के आकार, गवाक्ष के आकार, बालाग्रपोत के आकार, वलभि घर के आकार, रसोई बनाने के गृह के आकारवाले हैं, और अन्य अनेक वृक्ष भवन, शैय्या, आसन के संस्थानवाले हैं उन की छाया अति शीतल है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में गृह वृक्ष अथवा गृह हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्मन्त श्रमणों ! वहां के मनुष्यों का वृक्ष ही गृहरूप बतलाया है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में ग्राम नगर, यावत् सन्निवेश हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे

सूत्र

समणाउसो! ॥ २९ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे असीइवा मसीइवा किसीइवा विवणीइवा पणीइवा वाणिज्जाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय असि मसि कसि विवाणिपणियवज्जाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ॥ ३० ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ हिरण्णेइवा सुवण्णेइवा कंसेइवा दूसइवा मणीइवा मुत्तिएइवा विपुल-धण कणग रयण मणि मोत्तिय-संख सिलप्पवाल संतसार सावएज्जवा ? हंता अत्थि, णो चेवणं तेसिं मणुयाणं तिव्वममत्तिभावे समुप्पज्जइ ॥ ३१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ रायाइवा जुवरायाइवा, ईसरेइवा तलवरेइवा माडंबिएइवा कोडुंबिएइवा

अर्थ

मनुष्यों स्वेच्छा पूर्वक विचरनेवाले हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूप द्वीप में असी (शस्त्र का व्यापार) मसि (स्याही कलम का व्यापार) और कृषि (खेती का व्यापार) अथवा लेन देन का व्यापार है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवंत श्रमणों ! वे मनुष्यों असि, मसि, कृषि व लेन देन के व्यापार से रहित हैं ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, दूष्य, मणि मौक्तिक, व विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिलप, व प्रधान स्वापतेय है क्या ? हां गौतम ! वे सब हैं, परंतु उन मनुष्यों को उस पर तीव्र ममत्वभाव नहीं होता है ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठि, सेनापति,

इब्भेइवा, सेट्ठीइवा, सेणावइइवा, सत्थवाहिइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय इड्ढि सक्काराएण ते मणुयगणा पण्णत्ता ? समणाउसो ! ॥ ३२ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे दासाइवा, पेसाइवा, सिस्साइवा भयगतिवा भाइल्लगाइवा कम्मगाराइवा भोगपुरिसाइवा ? णो इणट्ठसमट्ठे, ववगय आभोगियाण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ मातातिवा पियाइवा भाया इवा भयणीइवा भज्जाइवा पुत्ताइवा धूयाइवा सुण्हाइवा ? हंता अत्थि, णोचेवणं तासिणं मणुयाण तिव्वपेज्जबंधणे समुप्पज्जइ, पयणुपज्जबंधणाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीवे २ अरीइवा वेरियइवा घायगा-

व सार्थवाह है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे मनुष्य ऋद्धि सत्कार समुदाय से रहित हैं ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में दास सेवक, शिष्य, मासिक, (मास वेतनवाला) भागीदार [हिस्सेदार], कर्मकर, (नोकर) व भोग पुरुष है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है क्योंकर अभियोग रहित वे मनुष्यों हैं ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में माता, पिता, भ्राता, भगिनी, भार्या, पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू है क्या ? हां गौतम ! है परंतु उन में उनका प्रेम बंधन नहीं होता है स्वभाव से ही उन का प्रेम बंधन पतला होता है ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अरि, वैरी, घातक, वधक, प्रत्यनीक

इवा वहगाइवा पडणीइवा पच्चामित्ताइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय वेराणुबंधाण ते मणुयागणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीव २ मित्ताइवा वयसाइवा घाडियातिवा सुहीतिवा, सुहीयाइवा, महाभागातिवा, सगतियातिवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय पेमाणुरागाणं तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ २६ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ आवाहाइवा विवाहाइवा जन्नाइवा सड्ढाइवा थालिपागाइवा चोलोवणतणाइवा सीमतोवणतणाइवा, पितिपिंडनिवेयनाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे ववगय आवाहविवाह

व शत्रु है क्या ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वैर के अनुबंध रहित वे मनुष्य कहे हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में वयस्य, मित्र, समान वने हुए, सदैव साथ रहनेवाले सखा, महा भागवाले व संगतिक है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! व मनुष्य प्रेमानुराग में रक्त नहीं हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! एकरूकद्वीप में आवाय (स्वजनों को आमंत्रण) विवाह (लग्न क्रिया) यज्ञ विधि, श्राद्ध क्रिया, स्थालीपाक, (पकाने की क्रिया) बालक को वस्त्र पहिना, चूडामदन संस्कार, उपनयन, मस्तक मुंडन का उत्सव, ओमत, पितृपिंड व नैवेद्यादिक क्रियाओं

जन्नरुद्दयालपगि चोलावण सीमंतोवणतणपितिपिंडनिवेदणाण ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३७ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ इंदमहाइवा रुद्दमहाइवा खंदमहाइवा सिवमहाइवा वेसमणमहाइवा मुगुंदमहातिवा नागमहातिवा जक्खमहाइवा भूतमहाइवा कूवमहाइवा तलागमहाइवा नदिमहाइवा दहमहाइवा, पव्वयमहाइवा रुक्खमहाइवा, चेतियमहाइवा, थूभमहाइवा ? णो इणट्ठेसमट्ठे, ववगयमहामहिमाण समणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥३८॥ अत्थिणं भंते! एगुरुयदीवे २ नडपिच्छाइवा णट्टपेच्छातिवा मल्लपेच्छातिवा मुट्ठियपेच्छाइवा विडंबगपेच्छातिवा कहकपेच्छातिवा

है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य पूर्वक सब क्रियाओं से रहित हैं ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में इन्द्र महोत्सव, रुद्र महोत्सव, स्कंद महोत्सव, शिव महोत्सव वैश्रमण महोत्सव, मुकुंद महोत्सव, नाग महोत्सव, यक्ष महोत्सव, भूत महोत्सव, कूप महोत्सव, तलाव महोत्सव, नदि महोत्सव, द्रह महोत्सव पर्वत महोत्सव, वृक्ष महोत्सव, चैत्य महोत्सव व स्तूप महोत्सव है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है पूर्वोक्त सब प्रकार के महोत्सव रहित वे पुरुषों हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में नट के खेल, नटक्रीडा, मल्ल क्रीडा, मुष्टि युद्ध, विदूषक कथा करनेवाले, वार्ता करनेवाले, आख्यान कर

पवगपेच्छातिवा अक्खवाइगपेच्छातिवा लासगपेच्छातिवा लखपेच्छातिवा मखपेच्छातिवा तणइल्लपेच्छातिवा,तुबवीणपच्छातिवा, कीवपेच्छातिवा मागहपच्छातिवा,जल्लापेच्छातिवा, कहयापेच्छाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय कोऊहल्लाण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ३९ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सगडाइवा रहाइवा जाणाइवा जुगाइवा गिल्लीतिवा पल्लीतिवा थिल्लीतिवा पवहणाइवा सायाइवा सदमाणियाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे पादचार विहारणोण तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ४० ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे आसाइवा हत्थिइवा उट्टातिवा

नेवाले, कुवा बावडी में कूदनेवाले, हास्य वचन कहनेवाले, अच्छा बुरा गानेवाले, बांस पर चढकर खेलने वाले, विचित्र मत से भिक्षा मांगनेवाले, वीणा बजानेवाले, भेरी बजानेवाले, क्रीडा की क्रीडा, मागधा सो मंगलीक वीणा बजानेवाले, कावड उठानेवाले, और स्तोत्र कहनेवाले ये पूर्वोक्त सब नाटक वहां हैं क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों कि उन को कौतुक भाव नहीं होता है ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में गाडे, रथ यान, पालखी, गिल्ली, पल्ली, थिल्ली जहाज, शीबिका व सदमाण है क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है अहो आयुष्मन् श्रमणों ! वे मनुष्यों पांव से ही चलते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४१ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीतिवा अयाइवा एलगाइवा ? हता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४२ ॥ अत्थिण भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अच्छाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा चित्तचिल्लाइवा चिल्लगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवण अण्णमण्णस्स तेसिंवा मणुयाण किंचि आबाहंवा विबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाणं ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोडे, ऊंट, बेल, महिष, खर, अजा व गाडर प्रमुख है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परन्तु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में गाय, महिषी, ऊन्टी, अजा (बकरी) व गाडरी प्रमुख है क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, अच्छ (रींछ) परस्सर, शृगाल, बिडाल, श्वान, कोलश्वान, कोकंतिय, शशक, चित्ता व चिल्लक आदि के पशु है क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे परस्पर एक दूसरे को अथवा मनुष्य को किसी प्रकार की बाधा, विबाध

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा घाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विजलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे एगुरुयदीवेणं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कंटएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयवराइवा पत्तकयवराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पर्वछेद नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में शाली, व्रीहि, गोधुम, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, जल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है क्यों कि एकरूक द्वीप में बहुतसम रमणीय भूमभाग है ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! एकरूक द्वीप में खीला कंटक, रजमुस, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राख मुस, दुर्गंध व अन्य अशुचिवासी

गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गावीइवा महिसीइवा, उट्टीतिवा अयाइवा एलगाइवा ? हंता अत्थि, नो चेवण तेसिं मणुयाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥ ४२ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अत्थाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विडालाइवा सुणगाइवा कोलसुणगातिवा कोकतियइवा ससगाइवा चित्तचित्तलाइवा चिल्ललगाइवा? हंता अत्थि, णो चेवण अन्नमन्नस्स तेसिंवा मणुयाण किंचि आबाहंवा विबाहंवा उप्पायंति छविच्छेयंवा करेंतिवा, पगइभद्दगाण ते सावयगणा पण्णत्ता समणाउसो !

हाथी, घोड़े, ऊंट, बैल, महिष, खर, अजा व गाडर प्रमुख हैं क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे वहां रहने वाले मनुष्यों के उपभाग में नहीं आते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में गाय, महिषी, ऊंटनी, अजा (बकरी) व [illegible] प्रमुख हैं क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु वे वहां के मनुष्यों को उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में सिंह, व्याघ्र, दीपिका, [illegible] (रीछ) [illegible], शृगाल, बिलार, श्वान, [illegible], कोकतिय, खरगोश, चित्ता चिल्लक आदि के क्या हैं क्या ? हां वैसे ही हैं परंतु के [illegible] परस्पर एक दूसरे का अथवा मनुष्य का किसी प्रकार की बाधा, विबाध

॥ ४३ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं तेसिं मणुयाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥ ४४ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ गत्ताइवा दरिइवा पाइवा घसीइवा भिगूइवा उवाएइवा विसमेइवा विजलइवा धूलाइवा रेणुतिवा पंकेइवा चलणीइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, एगुरुयदीवेणं दीवे बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४५ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ खाणुइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा पत्तकयराइवा असुइइवा पूईयाइवा दुब्भिगंधाइवा

उत्पात व पर्यछेद नहीं करते हैं क्यों कि वहां जीवों भद्रिक स्वभाववाले हैं ॥ ४३ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में शाली, व्रीहि, गेहुंव, इक्षु व तिल हैं क्या ? हां वे हैं परंतु उन जीवों के उपभोग में नहीं आते हैं ॥ ४४ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में खड्डा, गुफा, भयंकर स्थान, उपपात का स्थान, विषम स्थान, जल रहित स्थान, धूल, रेणु, कचरा व रज विशेष हैं क्या ? यह अर्थ योग्य नहीं है. क्यों कि एकरुक द्वीप में बहुत सम रमणीय भूमिभाग है ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में कंटक, रजमुख, कंकर, तृण, कचरा, पान का कचरा, अपवित्र राध प्रमु

अशोक्खाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय खाणुकण्टक हीरसक्करतण कयवर असुइपूइय दुब्भिगन्ध मचोक्खवज्जिएणं एगुरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४६ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ दंसाइवा मसगाइवा पिसुगाइवा जूयाइवा लिक्खाइवा ढिंकुणाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय दंसमसग पिसुते जुवा लिक्ख ढिंकुण परिवज्जिएणं एगुरुयदीवे पण्णत्ते समणाउसो ! ॥ ४७ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ अहीइवा अयगराइवा महोरगाइवा ? हंता अत्थि नो चेवणं ते अन्नमन्नस्स तेसिं वा मणुयाणं किंचि आवाहंवा विवाहंवा छविच्छेयंवा पकरेंति पगइ भद्दगाणं ते वालगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥४८॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २

वस्तु है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्यों कि वहां की भूमि खीला कटक वगैरह सब अशुचिमय वस्तु से रहित है ॥ ४६ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में दंश मशक, पिस्सुर, यूका, लिख, अथवा ढंकुण (खटमल) प्रमुख है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वह द्वीप पूर्वोक्त दंश मशकादि रहित है ॥ ४७ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में अहि, अजगर व महोरग है क्या ? हां गौतम ! वे हैं परंतु वे परस्पर एक दूसरे को अथवा वहां के मनुष्यों को किसी प्रकार से बाधा पीड़ा अथवा छविच्छेद नहीं करते हैं वे व्याल जीवों प्रकृति के भद्रिक होते हैं ॥ ४८ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक

गहदडातिवा गहमुसलाइवा गहगज्जियाइवा, गहजुद्धाइवा गहसंघाडाइवा गहअवसव्वाइवा अब्भाइवा अब्भरुक्खाइवा सञ्झाइवा, गंधव्वणगराइवा, गज्जियाइवा विज्जुयाइवा उक्कापयाइवा दिसादाहाइवा णिग्घाइवा पंसुविट्ठीइवा जूवाइवा जक्खालित्ताइवा धूमियाइवा महियातिवा रउग्घायायाइवा चंदोवरागाइवा सूरोवरागाइवा चंदपरिवेसाइवा सूरपरिवेसाइवा पडिचंदाइवा पडिसूराइवा, इंदधणूआइवा उदगमच्छाइवा अमोहाइवा कविहसीयाइवा पाईणवायाइवा, पडीणवायाइवा जाव सुद्धवायाइवा

अर्थ

द्वीप में ग्रह दंड (शिखावाला ग्रह का उदय होना) ग्रह मुशल [पूछवाला ग्रह] ग्रह सबधी गर्जारव, ग्रह युद्ध, ग्रह संघाटक, ग्रह अपसव्य [ग्रह का वक्रमार्ग में उदय होना] बद्दल समुह, वृक्षाकार से बद्दल होना, पांचवर्णी संध्या, गंधर्व नगर सो आकाश में नगरों का होना, देवों के प्रासाद, गर्जारव, विद्युत, उल्कापात, दिशादाह, (किसी दिशी में बिना मूल से अग्नि की ज्वालाओं दीखे) निर्घात, रजावृष्टि भूमिकंप यक्ष समुख का कोप, धूम, धुम्र रजोघात, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण चंद्र परिवेष [चंद्र पीछे मंडलाकार होवे सो] सूर्य परिवेश (सूर्य पीछे मंडलाकार होवे सो) प्रतिचन्द्र दो चंद्र दीखे, प्रतिसूर्य दो सूर्य दीखे, इन्द्र धनुष्य, उदक मत्स्य [वर्षा में मत्स्य का गिरना] पूर्व दिशी का प्रतिकूल वायु, पश्चिम दिशी का प्रतिकूल वायु य सत् शुद्ध वायु, ग्राम दाह, नगर दाह यावत् सन्निवेश दाह, प्राणियों का क्षय,

गामदाहाइवा नगरदाहइवा जाव सन्निवेसदाहाइवा पाणक्खय जणक्खय कुलक्खय धणक्खय वसणभूतमणारयाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४९ ॥ अत्थिणं भंते ! एगरुयदीवे डिंबइवा डमराइवा कलहाइवा बोलाइवा खाराइवा वेराइवा विरुद्धरज्जाइवा ? णो इणट्ठे समट्ठे ववगय डिंबडमर कलह बोलखार वेरविरुद्धरज्जविवज्जियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५० ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा महासत्थपडणाइवा महापुरिसपडणाइवा महारुधिरपडणाइवा, नागबाणातिवा, खलबाणातिवा, तामस बाणातिवा, दुब्भूइयाइवा कुलरोगाइवा गामरोगाइवा, नगररोगाइवा मंडलरोगाइवा

मनुष्य का क्षय, कुल का क्षय, धन क्षय, व्यसन कष्टभूत ऐसे दुष्ट उत्पात हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उक्त कुछ भी नहीं है ॥ ४९ ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में डिम्ब-स्वदेश का नाश डमर-अन्यदेशों की तरफ से हुवा उपद्रव, क्लेश, दु खियों का कलकलाट पारस्पर ईर्षा परस्पर हिंसक भाव व राज्य विरुद्ध कर्तव्य है क्या ? यह समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य उक्त सब बातों से रहित हैं ॥ ५० ॥ अहो भगवन् ! एकरुकद्वीप में बड़ा युद्ध बड़ा संग्राम बड़ा शस्त्र पतन, बड़ा पुरुष का मरण बहुत रुधिर का पड़ना नागबाण बाण [illegible] (आकाश में चक्करदार)

सीसवेयणाइवा, अत्थिवेयणाइवा कन्नवेयणाइवा नक्कवेयणाइवा, दंतवेयणाइवा, कासाइवा, सासाइवा, जराइवा दाह इवा कत्थूइवा, खसराइवा, कोट्टाइवा, कुडातिवा, दगोवराइवा, अरिसाइवा, अजिरगाइवा, भगंदलाइवा इंदग्गहाइवा, खदग्गहाइवा कुमारग्गाहाइवा, नागग्गहाइवा अक्खग्गहाइवा भूयग्गहाइवा, उव्वेवगाहाइवा धणुग्गहाइवा एगाहियाइवा, वेयाहियाइवा, तेयाहिय इवा, चउत्थगाहियाइवा हियय सूलाइवा, मत्थगसूलाइवा, पाससूलाइवा कुच्छिसूलाइवा, जोणिसूलाइवा, गाममारीवा जाव सन्निवसमारीवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणायरि यवा ? णो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायकाण तेमणुयगणा पण्णत्ता

म तामस प्राण है क्या ? यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! वहां दुर्भूत, कुल रोग, ग्राम रोग, नगर रोग, मडल रोग, मस्तक वेदना, आंखों की वेदना, कान की वेदना, नासिका की वेदना, दांत की वेदना खांसी, श्वास, ज्वर, दाह, खुजली, खसर, कोढ दकरूवाय, मसा, अजीर्ण, भगंदर, इंद्रग्रह, स्कंध ग्रह, कुमार ग्रह, नाग ग्रह, यक्ष ग्रह, भूत ग्रह, उद्वेग ग्रह, धनुर्वायु एकांतर ज्वर, दो दिन के अंतर से ज्वर, तीन दिन के अंतर से ज्वर, चार दिन के अंतर से ज्वर, हृदय शूल, मस्तक शूल, पार्श्व शूल, कुक्षिशूल, योनि शूल, ग्राम में मरकी यावत् सन्निवेश में मरकी कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसन भूत

समणाउसो ! ॥ ५१ ॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुयदीवे २ अइवासाइवा मंदवासाइवा सुवुट्ठीइवा, मंदवुट्ठीइवा उदवाहाइवा पवाहाइवा, दगुब्भेयाइवा, दगुप्पीलाइवा, गामवहाइवा जाव सन्निवेसवहाइवा, पाणक्खय जाव वसणभूतमणारियाइवा ? नो इणट्ठे समट्ठे, ववगय रोगायंका णं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥५२॥ अत्थिणं भंते ! एगुरुय दीव २ अयागराइवा तंबागराइवा सीसागराइवा सुवण्णागराइवा, रयणागराइवा वइरागराइवा, वसुहारराइवा हिरण्णवासाइवा, सुवण्णवासाइवा, रयणवासाइवा, वइरवासाइवा, आभरणवासाइवा, पत्तवास पुप्फवास फलवास बीयवास गंधवास

अर्थ

कष्टरूप अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां के मनुष्य रोग रहित हैं ॥५१॥ अहो भगवन् ! एकरुद्वीप में अतिवृष्टि मंद वृष्टि, उत्तम वृष्टि, अल्प वृष्टि, पानी का प्रवाह, (ग्रामदूत वैसा) यावत् सन्निवेश प्रवाह कि जिस से प्राणियों का क्षय यावत् व्यसनभूत दुष्ट अनार्य दोष है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है वहां मनुष्यों पानीके उपद्रव रहित है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुद्वीप में लोहे के आगर, ताम्बे के आगर, सीसे के आगर, सुवर्ण के आगर, रत्न के आगर, हीरे के आगर, वसुधारा धन की वर्षा, चांदी की वर्षा, सुवर्ण की वर्षा, रत्न की वर्षा वज्र हीरे की वर्षा, आभरण की वर्षा, पत्र की वर्षा, बीज की वर्षा, पुष्प, फल, माल्य, गंध, चूर्ण, सोवा, की वर्षा, रत्नकी

मक्खवास वत्थवास चुन्नवास खीरवुट्ठीइ रयणवुट्ठीइवा हिरण्णवुट्ठीइवा, सुवण्ण तहेव जाव चुन्नवुट्ठइवा सुकालाइवा उकालाइवा सुभिक्खाइवा दुभिक्खाइवा अप्पग्घाइवा महग्घाइवा कयाइवा विक्कयाइवा, सणिहीइवा, सच्चयाइवा, निधिइवा, निहाणाइवा, चिरपोराणाइवा, पहीणसामियाइवा, पहीणसेउयाइवा, पहीणगोत्तागाइ जाइ इमइ गामागर नगर खेड कब्बड मडंब दोणमुह पट्टणासम सबाह सन्निवेसेसु सिंघाडग तिग चउक्क चच्चर चउम्मुह महापह महेसु नगरनिद्धमणेसु सुसाण गिरिकंदर संति सेलो-वट्ठाण भवणगिहेसु सन्निखित्ता चिट्ठति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥ ५२ ॥ एगुरुय दीवेण

वृष्टि, चांदी की वृष्टि, सुवर्ण की वृष्टि यावत् चूर्ण की वृष्टि, सुकाल, दुष्काल, सुभिक्ष, दुर्भिक्ष, अल्प मूल्य वाली व बहु मूल्य वाली वस्तु, लेना व देना संग्रह करना अथवा संग्रह कर बेचना, धन प्रमुख निधान प्रमुख जैसे धन के भोगने वाले का नाश हुवा होवे उन के गोत्र का भी विच्छेद होवे वैसे धन ग्राम नगर, खेट, कर्बट, मडंप द्रोण मुख, पाटण संवाह व सन्निवेश के शृंगाटक के स्थान, तीन रास्ते मीले वैसे स्थान, चार रास्ते मीले वैसे स्थान, चच्चर, चतुर्मुख, राज्य मार्ग नगर की खाल, स्मशान पर्वत की शीला, गुफा व भवन में गड़े हुवे धन इत्यादि सब हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है उक्त सब वस्तुओं वहां नहीं हैं ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! एकरुक द्वीप में मनुष्य की कितनी स्थिति कही

भंते ! दीवे मणुयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ॥ ५४ ॥ तेणं भंते ! मणुया कालमासे कालंकिच्चा कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा! तए मणुया छम्मासा सेसाउआ मिहुणाइं पसवंति अउणासीइं राइंदियाइं मिहुणाइं सारक्खति संगोवंति सारक्खित्ता उस्ससित्ता णिस्ससित्ता कासित्ता छिंतित्ता अक्किट्ठा अव्वहिया अपरियाविया सुहसुहेणं कालमासे कालंकिच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, देवलोग परिग्गहियाणं ते मणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो!

है ? अहो गौतम ! जघन्य पल्योपम के असंख्यातवे भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवा भाग ॥ ५४ ॥ अहो भगवन् ! वे मनुष्यों काल के अवसर में काल करके कहां जाते हैं कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जब उनका छ मास आयुष्य शेष रहता है तब उनका मिथुनक (पुत्र व पुत्री) का जोडा प्रसव होता है ७९ दिन पर्यंत उनकी प्रतिपालना करते हैं, अच्छी तरह रखते हैं यों अच्छी तरह रखते हुए व युगल युगलनी श्वासोश्वास लेते हुए खांस व छींक खाते हुए किंचिन्मात्र भी बाधा पीडा बिना सुख पूर्वक काल के अवसर में काल करके भुवनपति वाणव्यंतर देव में उत्पन्न होते हैं अहो आयुष्यवंत श्रमणों !

सूत्र

॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण आभासिय मणुयाण आभासिय दीवे नाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुदीवे २ तहेव चेव चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लातो चरिमंताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयण सेस जहा एगुरुयाण निरवसेस सव्वं ॥ ५६ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण वेसाणिय मणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स दाहिणपच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दंति तिन्निजोयणा सेसे जहा एगुरुयाण

अर्थ

दवों में उत्पन्न होने का यह मनुष्य समुदाय कहा ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के आभासिक मनुष्यका आभासिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में चुल्लहिमवन्त पर्वत रहा हुवा है, उस के दक्षिणपूर्व ईशानकून के चरमांत से लवण समुद्र में तीन सो योजन जावे वहां आभासिक द्वीप कहा है शेष अधिकार सब एकरुक द्वीप जैसे जानना ॥ ५६ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के वेषाणिक मनुष्यों का वेषाणिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरु पर्वत से दक्षिणदिशा में चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत से दक्षिणपश्चिम नैऋत्यकून के चरिमांत से तीनसो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां वेषाणिक द्वीप रहा हुवा है इस का शेष सब अधिकार एकरुक द्वीप

सूत्र

॥ ५७ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण नंगोलियमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स उत्तर पच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द तिन्निजोयण सयाइं सेसं जहा एगुरुय मणुस्साण ॥ ५८ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण हयकण्णमणुस्साण हयकन्नदीवे नाम दीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगुरुयदीवस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइं उगाहित्ता एत्थण दाहिणिल्लाण हयकन्नमणुस्साण हयकन्न दीवे नाम दीवे पण्णत्ते, चत्तारि जोयणसयाइं आयामविक्खंभेण बारससया पन्नट्ठा किंचि

अर्थ

जैसे जानना ॥ ५७ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के नांगोलिक मनुष्यका नांगोलिक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम! मेरुपर्वतका दक्षिणमें चुल्लहिमवंत पर्वतकी उत्तर पश्चिम चावरकूट के चरिमांतसे तीनसो जोजन समुद्र में जावे तो यहां नांगोलीक द्वीप कहा हुवा है इस का कथन एकरुकद्वीप जैसे जानना ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के हय कर्ण मनुष्य का हय कर्ण द्वीप कहां है ? अहो गौतम ! एकरुकद्वीप के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे तब वहां हयकर्ण द्वीप चार सो योजन का लम्बा चौडा है बारह सो पेंसठ योजन में कुच्छ कम की परिधि कही है, एक पद्मवर वेदिका व

सूत्र

विसेसूणाइ परिक्खेवेण एगाए पउमवर वेइयाए अवसेस जहा एगुरुयाण ॥ ५९ ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाण गयकन्नमणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! आभासियदीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ, सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६० ॥ एवं गोकन्नमणुस्साण पुच्छा ? वेसालिय दीवस्स दाहिण पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६१ ॥ सुकुलिकन्नाण पुच्छा ? गोयमा ! नंगोलियदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ

अर्थ

वनखण्ड सहित है शेष अधिकार एकरूकद्वीप जैसे जानना ॥ ५९ ॥ अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के गजकर्ण मनुष्य का गजकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! आभासिकद्वीप के अग्निकून के चरिमांत से लवण समुद्र में चार सो योजन जावे तो वहां गजकर्ण नामकद्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ! गोकर्ण द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! वैशालिक द्वीप के नैऋत्यकूने के चरिमांत से चार सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां गोकर्ण द्वीप रहा हुवा है इस का कथन हयकर्ण जैसे जानना ॥ ६१ ॥ सकुलिकर्ण द्वीप की पृच्छा, अहो गौतम ! नांगोलिक द्वीप के वायव्यकून के चरिमांत से चार सो योजन लवण

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा· हयकन्नाण ॥ ६२ ॥ आयसमुहाण पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पचजोयण सयाइ उगाहित्ता इत्थण दाहिणिल्लाण आयसमुह मणुस्साण आयसमुह दीवेनाम दीवे पण्णत्त, पचजोयणसयाइ आयामविक्खमेण आसमुहाईण छसया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामुहाईण अट्ठ घणदताईण जाव नवजोयणसयाइ, ॥ एगुरुय परिक्खवो नवचेव सयाइ, अउणपन्नाइ बारसवनट्ठ इ हयकन्ना० आसकन्नाईण परिक्खेवो आयसमुहाईण

समुद्र में जावे तो वहां सकुलीकर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरि-मांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेघमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युद्दंत ये चार द्वीप

पन्नरसेकासिए जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण,एवं एतेण कमेण उवउज्जिय२ णेयव्वा,चत्तारि२एगप्पमाणा णाणत्त, उग्गाह विक्खभे परिक्खेवे पढमबितिततिय चउक्काण उग्गाहो विक्खंभो परिक्खेवोय भाणिओ, चउत्थे चउक्के छ जोयण सयाइ, आयाम विक्खभेण, अट्ठारसत्ताणउए जोयणसए परिक्खेवेण ॥ पचम चउक्के सत जोयण सयाइ आयामविक्खभेण, बावीसतेरसुत्तरे जोयणसए परिक्खेवेण ॥ छट्ठ चउक्क अट्ठ जोयण आयाम विक्खंभेण पणवीस अगुणत्तीसे

अर्थ

आठ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, घणदंत, लष्टदंत, गूढदंत व शुद्धदंत, ये चार द्वीप नव सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं अब इन की परिधि कहते हैं एकरुकादि चारों द्वीप की नव सो गुनपचास योजन की परिधि कही, दूसरा हयकर्णादि चारों द्वीप की बारहसो पेंसठ योजन की परिधि है तीसरा आदर्श मुखादिक चारों द्वीप की पन्दरह सो इक्यासी योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, चौथा चौक अश्व मुखादिक चारों द्वीप में अठारहसो सत्ताणव योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, पांचवा चौक अश्वकर्णादिक द्वीप की बावीस सो तेरह योजन की परिधि है, छट्ठा चौक उल्कामुखादिक अन्तर्द्वीप की पचीस सो उनतीस योजन की परिधि है सातवा चौक घनदंतादिक चार अंतरद्वीप की नव सो योजनका लम्बा चौडा व दो हजार आठसो पेंतालीस योजन की परिधि है, और भी द्वीप की जितनी चौडाइ है उतने योजन की

चरिमताओ लवण समुद्द चत्तारि जोयणसयाइ सेस जहा हयकन्नाण ॥ ६२ ॥ आयसमुहाण पुच्छा ? हयकन्नदीवस्स उत्तरपुरस्थिमिल्लाओ चरिमताओ पचजोयण सयाइ उगाहित्ता इत्थण दाहिणाण आयसमुह मणुस्साण आयसमुह दीवेनाम दीवे पण्णत्त, पचजोयणसयाइ आयामविक्खमण आसमुहाईण छसया, आसकन्नाईण सत्त, उक्कामुहाईण अट्ठ घणदताईण जाव नवजोयणसयाइ, ॥ एगुरुय परिक्खवो नवचेव सयाइ, अउणपन्नाइ बारसवनट्ठ इ हयकन्नाण आसकन्नाईण परिक्खेवो आयसमुहाईण

समुद्र में जावे तो वहां सकुष्कर्ण द्वीप कहा है इस का कथन हय कर्ण द्वीप जैसे जानना ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! आदर्श मुख द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! हय कर्ण द्वीप की ईशानकून के चरिमांत से लवण समुद्र में पांच सो योजन जावे वहां दक्षिण दिशा के आदर्श मुख मनुष्य का आदर्श मुख द्वीप कहा हुवा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है आदर्शमुख, मेघमुख, अजो मुख व गोमुख ये चार द्वीप पांचसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वमुख, हस्तीमुख, सिंहमुख व व्याघ्र मुख ये चारों छ सो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, अश्वकर्ण, सिंहकर्ण, हयकर्ण, व कर्णप्रावरण, ये चार द्वीप सातसो २ योजन के लम्बे चौडे हैं, उल्का मुख, मेघ मुख, विद्युन्मुख व विद्युत्दंत ये चार द्वीप

पव्वयस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्द तिन्नि जोयणसयाइ उगाहित्ता एत्थ जहा दाहिणिल्लाण तहा उत्तरिल्लाण भाणियव्व, णवर सिहरिस्स वासहरपव्वयस्स विदिसासु, एव जाव सुद्धदंत दीवेति जाव सेत अतरदीवका ॥ ६४ ॥ सेकित अकम्मभूमगा ? अकम्मभूमगा तिसतिविहा पण्णत्ता तजहा-पचहिं हेमवएहिं एव जहा पन्नवणापदे जाव पचहिं उत्तरकुराहिं ॥ सेत्त अकम्मभूमगा ॥ ६५ ॥ से किं त कम्मभूमगा ? कम्मभूमगा पण्णरसविहा पण्णत्ता तजहा पचहिं भरहेहिं पचहिं एरवएहिं पचहिं महाविदेहेहिं । ते समासओ दुविहा पण्णत्ता तजहा आयरिया मिलच्छा, एव

अर्थ

पर्वत की ईशानकून के चरिमांत से तीन सो योजन लवण समुद्र में जावे तो वहां एकरुकद्वीप कहा हुवा है यों जैसे दक्षिण दिशा के एकरूकद्वीप का अधिकार कहा वैसे ही उत्तर दिशा के एकरूकद्वीप का जानना परंतु यहां शिखरी पर्वत का कथन करना यावत् शुद्धदंत पर्वत कहना यह अंतरद्वीप का कथन हुवा ॥ ६४ ॥ अहो भगवन् ! अकर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अकर्मभूमि के तीस भेद कहे हैं तद्यथा पांच हेमवय, पांच एरणवय, पांच हरिवास, पांच रम्यकवास, पांच देवकुरु व पांच उत्तरकुरु यह अकर्म भूमि का कथन हुवा ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! कर्मभूमि के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कर्म-भूमि के पन्नरह भेद कहे हैं तद्यथा पांच भरत, पांच एरवत व पांच महाविदेह इन के संक्षेप से दो भेद कहे

जोयणसते परिक्खेवेण ॥ सत्तमचउक्के णव जोयण सयइ आयामविक्खंभेण दो जोयण सहस्साइ अट्ठपणताले जोयणसए परिक्खेवेणं, जस्सय जो विक्खंभो उग्गाहो तस्स तत्तिओचेव पढम बीताण परिरतो ऊणो, सेसाण अहियउ, सेसाजहा एगुरुय दीवस्स जाव सुद्धदत दीव, देवलोग परिग्गहाण ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो । ॥ ६३ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण एगुरुय मणुस्साण एगुरुयदीवे नामदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण सिहरिस्स वासहर

अर्थ

लवण समुद्र में अवगाहे हुवे हैं जैसे जगती से तीनसो योजन लवण समुद्र में प्रथम चौक के अन्तर्द्वीप तीनसो योजन के लम्बे चौडे हैं, उस से चारसो योजन लवण समुद्र में जावे तो दूसरा चौक के अन्तर्द्वीप चारसो योजन के लम्बे चौडे है यों यावत् छठे चौक से नवसो योजन लवण समुद्र में जावे तब सातवा चौक के अन्तर्द्वीप नवसो योजन के लम्बे चौडे हैं प्रथम चौक की लंबाई चौडाई से दूसरे चौक की लम्बाइ चौडाइ सो योजन की अधिक, इस से तीसरे चौक की सो योजन की अधिक यों अधिक २ सब चौक की जानना यह सब अधिकार एकरुक द्वीप जैसे जानना ये मनुष्य देवलोकगामी कहे हुवे हैं अर्थात् मरकर देवता में उत्पन्न होते हैं ॥ ६३ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरदिशा के एकरुक मनुष्य का एकरुक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! इस जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत की उत्तर में शिखरी

कहिण भंते ! भवणवासी देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सतसहस्स बाहल्लाए एवं जहा पन्नवणाए जाव भवणा पासाइया॥ तत्थण भवणवासीणं देवाणं सत्तभवण कोडीओ बावत्तरिं भवणवाससयसहस्सा भवंति तिमक्खया ॥ तत्थणं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति, असुरा नाग सुवन्नाय जहापन्नवणाए जाव विहरंति ॥ कहिण भंते! असुरकुमाराणं देवाणं भवणा पण्णत्ता पुच्छा ? गोयमा ! एवं जहा पन्नवणा ठाणपदे जाव विहरंति ॥ कहिण भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं भवणा पुच्छा ? एवं जहा ठाणपदे जाव चमरे तत्थ

अर्थ

अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी का एक लाख अस्सी हजार योजन का पृथ्वी पिंड कहा है वहां से लगाकर यावत् भवनपति के भवन उन को रहने योग्य कहे हैं वहां तक सब पन्नवणा सूत्र अनुसार जानना वहां सात क्रोड बहत्तर लाख भवन कहे हैं इन सब भवनों में असुरकुमार नागकुमार वगैरह दश जाति के भवनवासी देव रहते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देव के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा के स्थान पद में जैसा कथन किया वह सब यहां जानना अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के असुरकुमार के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इसका कथन पन्नवणा सूत्र के स्थानपद जैसा जानना

जहा पण्णवणापद जाव सेत्त गब्भवक्कतिया ॥ सेत्त मणुस्सा ॥ ४ ॥ १ ॥
सेकिंत देवा? देवा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा भवणवासी, वाणमंतर, जोइसिया वेमाणिया
॥ १ ॥ सेकिंत भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता तंजहा-असुरकुमारा
जहा पन्नवणापदे देवाणं भेओ तहा भाणियव्वो जाव अणुत्तरो-
ववातिया पंचविहा प० तंजहा—विजया वेजयंता जाव सव्वट्ठसिद्धगा ॥ सेत्त
अणुत्तरोववाइया ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! भवनवासि देवाणं भवणा पण्णत्ता ?

अर्थ

है आर्य व म्लेच्छ यों जैसे पन्नवणा पद में कथन किया वैसे ही यहां जानना यह गर्भज मनुष्य का
कथन हुआ यह मनुष्य का कथन हुआ ॥ ४ ॥ १ ॥
अहो भगवन् ! देव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! देव के चार भेद कहे हैं भवनवासी,
वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देव किस को कहते हैं ? अहो
गौतम ! भवनवासी देव के दश भेद कहे हैं तद्यथा—असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार वगैरह सब
पन्नवणा पद में जैसे देवता का भेद कहा वैसे ही सब अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक के
पांच भेद कहे हैं विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित व सर्वार्थ सिद्ध यह अनुत्तरोपपातिक का भेद हुआ
॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भवनवासी देवों के भवन कहां कहे हैं ? और भवनवासी देव कहां रहते हैं ?

बत्तीस देवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ ॥ ५ ॥ चमरस्सण भते ! असुरिंदस्स असुररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भितरियाए परिसाए अद्धुट्ठादेवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए तिण्णि देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अड्ढाइज्जा देवीसया पण्णत्ता ॥ ६ ॥ चमरस्सण भते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भितरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? अब्भितरियाए

अर्थ

हजारदेव व बाह्य परिषदा में बत्तीस हजारदेव कहे हैं॥५॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यतर परिषदामें कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हुई है? अहो गौतम !, उनको आभ्यतर परिषदा में ३५० देवी, मध्य परिषदा में ३०० देवी और बाह्य परिषदा में २५० देवियों कही है ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यतर परिषदा के देवताओं की कितनी स्थिति कही है? मध्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही और बाह्य परिषदा के देवों कितने काल की स्थिति कही ? आभ्यतर परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की देवी

असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥३॥ असुरिंदस्स असुररन्नो कति-परिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा समिया चंडा, जाया अब्भितरिया समिया, मज्झचंडा, बाहिं जाया ॥ ४ ॥ चमरस्सण भंते ! असुरिंदस्स असुररन्नो अब्भतर परिसाए कतिदेवसाहस्सीतो पण्णत्ताओ, मज्झिम परिसा० कतिदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिर परिसाए कतिदेव साहस्सीतो पण्णत्ताओ ? गोयमा! चमरस्सण असुरिंदस्स अब्भिंतर परिसाए चउवीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ माज्झमियाए परिसाए अट्ठावीस देव साहस्सीतो पण्णत्ताओ, बाहिरयाए परिसाए

यावत् यहां असुरकुमार का चमर नामक इन्द्र रहता है यावत् विचरता है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुर का इन्द्र व असुर का राजा को कितनी परिषदा कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही है तद्यथा—समिता, चण्डा व जाया आभ्यंतर परिषदा समिता, मध्य परिषदा चंडा व बाह्य परिषदा जाया ॥४॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा की आभ्यंतर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं मध्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं व बाह्य परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं ? अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में चउवीस हजार देव, मध्य परिषदा में अठारस

सूत्र

तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा-समिया चंडा जाया, अब्भितरिया समिया मज्झिमिया चंडा, बाहिरिया जाया ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स असुर रन्नो अब्भितर परिसा देवाण वाहिता हव्वमागच्छति णो अव्वाहिता, मज्झिम परिसाए देवा बाहिता हव्वमागच्छति अव्वाहितावि, बाहिर परिसादेवा अव्वाहिता हव्वमागच्छति॥ अब्भतरचण गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया अण्णयरेसु उच्चावएसु कज्जे कोडुबेसु समुप्पन्नेसु अब्भितरियाए सद्धिं समइ सपुच्छणा बहुले विहरइ, मज्झिमियाए परिसाए सद्धिंमपय एवमाण विहरति, बाहिरयाए परिसाए सार्द्धं पय पचंडेमाणे २ विहरइ,

अर्थ

परिषदा किस लिये कही जिस में आभ्यतर समिता, मध्य की चंडा व बाह्य की जाया ? अहो गौतम! चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा के आभ्यतर परिषदा के देव बोलाये हुवे आते हैं परतु विना बोलाये हुवे नहीं आते हैं, मध्य परिषदावाले बोलाये हुवे व विना बोलाये हुवे दोनों तरह आते हैं और बाह्य परिषदावाले विना बोलाये हुए आते हैं, दूसरा कारन यह है कि चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा को उत्तम, मध्यम कार्य, अपनी राजधानी का कार्य, कुटुम्ब सबंधी कार्य इत्यादि कार्य होने पर वे आभ्यतर परिषदा के देवों साथ सम्मति मीलाते हुवे और उनको पूछते हुवे रहते हैं, मध्य परिषदावाले देवों को सक्षेप में कह देते हैं और बाह्य परिषदा वाले देवों को बात कह कर कार्य करने का आदेश

परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाण परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चमरस्सण असुरिंदस्स अब्भितरियाए परिसाए देवाण अड्डाइज्जाइ पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ चमरस्स असुरिंदस्स

की कितनी स्थिति कही, व बाह्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! चमर नामक असुरेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की स्थिति कही, मध्य परिषदा के देवों की दो पल्योपम की स्थिति कही व बाह्य परिषदा के देवों की देढ पल्योपम की स्थिति कही आभ्यंतर परिषदा की देवी की देढ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की एक पल्योपम व बाह्य परिषदा की देवी की आधे पल्योपम की स्थिति कही है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! चमर नामक असुरेन्द्र की तीन

ताओ चेव जहा चमरस्स ॥ १३ ॥ धरणस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो अब्भितरियाए परिसाए सट्ठिं देवसहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए सत्तरिदेवसहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए असिति देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भितर परिसाए पण्णतर देवीसय पण्णत्त मज्झिमियाए परिसाए पन्नास देवीसय पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए पणवीस देवीसय पण्णत्त ॥ १४ ॥ धरणस्सण रन्नो अब्भित रियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता? अब्भितरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए

अहो गौतम ! तीन परिषदा कही है इस का सब कथन चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १३ ॥ धरणेन्द्र को आभ्यतर परिषदा में ६० हजार देव, मध्य परिषदा में ७० हजार देव व बाह्य परिषदा में ८० हजारदेव आभ्यतर परिषदा में १७५ मध्य परिषदा में १५० व बाह्य परिषदा में १२५ देवियों कही है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! धरणेन्द्र की आभ्यतर परिषदा के देवों की कितनी स्थिति कही, मध्य परिषदा की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की कितनी स्थिति कही ? आभ्यतर परिषदा के देवी की कितनी स्थिति कही मध्य परिषदा की देवी की कितनी स्थिति कही व बाह्य परिषदा की देवीकी कितनी

मज्झिमाए परिसाए तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण दोपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, बाहिरयाए परिसाए देवीण दिवड्ढ पलिओवम ठिई पण्णत्ता॥ सेस जहा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमार रन्नो ॥ ११॥ कहिण भंते! नागकुमाराण देवाण भवणा पण्णत्ता ? जहा ठाणपदे जाव दाहिल्लावि पुच्छिया वा जाव धरण नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ जाव विहरइ ॥ १२ ॥ धरणस्सण भंते ! णागकुमारिंदस्स णागकुमार रन्नो कइपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! तिन्निपरिसाओ

बाहिर की परिषदा के देवों की अढाइ पल्योपम की आभ्यंतर परिषदा की देवी की अढाइ पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी की दो पल्योपम व बाहिर की परिषदा की देवी की देढ पल्योपम की स्थिति कही शेष चमर नामक असुरेन्द्र असुर राजा जैसे जानना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! नागकुमार देवता के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा में स्थान पद में जैसा कहा वैसा यहां सब जानना यावत् दक्षिण दिशा की भी पृच्छा करना यहां धरण नामक नागकुमार का इन्द्र व नागकुमार का राजा रहता है यावत् विचरता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! धरण नामक नागकुमारेन्द्र को कितनी परिषदा कही हैं ?

कइदेव साहस्सियाओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए कइदेव सहस्सियाओ पण्णत्ताओ, अब्भितरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए कइदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए कइ देवीसया पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणिंदस्सण नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए पन्नास देव सहस्सा पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए सट्ठिदेव सहस्सा पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्तरि देवसहस्सा पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए दो पणवीस देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए दो देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पण्णत्तरि देविसय पण्णत्त ॥ १६ ॥ भुयाणंदस्सण भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमार

अर्थ

कहा वैसे ही यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! भूतान नामक नाग कुमार का इन्द्र व नाग कुमार का राजा को आभ्यंतर परिषदा में कितने देव, मध्य परिषदा में कितने देव व बाह्य परिषदा में कितने देव कहे हैं आभ्यंतर परिषदा में कितनी देवियों, मध्य परिषदा में कितनी देवियों व बाह्य परिषदा में कितनी देवियों कही हैं ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा में ५० हजार मध्य में ६० हजार व बाह्य परिषदा में ७० हजार देव कहे हैं आभ्यंतर परिषदा में २२५, मध्य परिषदा में २०० व बाह्य परिषदा में १७५ देवियों कही हैं ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! भूतानेन्द्र के

देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! धरणस्सरन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण साइरेग अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता। अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमाए परिसाए देवीण साइरेग चउब्भागपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण चउभागपलिओवम ठिई अट्ठो जहा चमरस्स, ॥ १५ ॥ कहिण भंते ! उत्तरिल्लाण नागकुमाराण जहा ठाणपदे, जाव विहरइ॥भूयाणंदस्सण भंते!नागकुमारस्स णागकुमाररन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए

स्थिति कही ? अहो गौतम ! धरणेन्द्र के आभ्यन्तर परिषदा के देवों की साधिक आधा पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों की आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा के देवों की कुच्छ कम आधा पल्योपम आभ्यन्तर परिषदा की देवी की कुच्छ कम आधा पल्योपम मध्य परिषदा की देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग व बाहिर की परिषदा की चौथा भाग की स्थिति कही शेष सब चमरेन्द्र जैसे जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर दिशा के नाग कुमार देव कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में

चउब्भाग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, अट्ठो जहा चमरस्स, ॥ १७ ॥ अवसेसाण वेणुदेवादीण महाघोस पज्जवसाणाण ठाणपय वत्तव्वयाणिरवसेस भाणियव्वा, परिसाओ जहा धरणभूयाणदाण दाहिणिल्लाण जहा धरणस्स उत्तरिल्लाण जहा भूयाणदस्स परिमाणवि ठितीवि ॥ १८ ॥ कहिण भते ! वाणमतराण देवाण भवण पण्णत्ता जहा ठाणपदे जाव विहरति ॥ कहिण भते ! पिसायकुमाराण भवणा पण्णत्ता? जहा ठाणपद जाव विहरति ॥ काल माहाकालाय तत्थ दुवे पिसाय कुमार रायाणो परिवसति जाव विहरति ॥ कहिण भते ! दाहिणिल्लाण पिसाय कुमाराण जाव विहरति ॥ काले यत्थ पिसाय कुमारिंदे पिसाय कुमार राया परिवसति महिड्डिए जाव

देवी की साधिक पल्योपम का चौथा भाग कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ॥ १७ ॥ शेष वेणुदेवेन्द्र से महाघोषेन्द्र पर्यंत सब वक्तव्यता स्थानपद जैसे जानना परिषदा का अधिकार दक्षिण दिशा का धरणेन्द्र व उत्तर दिशा का भूतानेन्द्र जैसे जानना यह भवनपति का अधिकार हुवा ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यतर देवों के भवन कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्नवणा सूत्र के स्थानपद में जैसा अधिकार है वह सब यहां जानना यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! पिशाच कुमार के भवनों कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! इस का कथन भी पन्नवणा सूत्र के स्थानपद से जानना यावत् काल व महा काल ऐसे

रन्नो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! भूयाणदस्सण्ण अब्भिंतरियाए परिसाए देवाण देसूण पलिओवम ठिई पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवाण सातिरेग अद्ध पलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवीण देसूण अद्धपलिओवम ठिई पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण सातिरेग

आभ्यतर परिपदा के देवों की, मध्य परिपदा के देवों की, बाह्य परिपदा के देवों की, आभ्यतर परिपदा की देवियों की, मध्य परिपदा की देवियों की व बाह्य परिपदा की देवियों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! भूतानेन्द्र के आभ्यतर परिपदा के देवों की कुछ कम एक पल्योपम की, मध्य परिपदा वाले की सातिक आधा पल्योपम व बाह्य परिपदावाले की आधा पल्योपम की स्थिति कही है आभ्यतर परिषदा की देवी की आधा पल्योपम, मध्य परिपदा की कुछ कम आधा पल्योपम व बाह्य परिषदा की

सूत्र

अब्भिंतरियाए परिसाए एक देवीसय पण्णत्त, मज्झिमियाए परिसाए एक्कदेवीसय पण्णत्त बाहिरियाए परिसाए एक्क देवीसय पन्नत्त ॥ कालस्सण भंते ! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररन्नो अब्भिंतर परिसाए देवाण केवतिय कालठिई पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता बाहिरियाए परिसाए देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, अब्भितरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवीण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! कालस्सण पिसाय कुमारिंदस्स पिसाय कुमाररण्णो अब्भिंतर परिसाए देवाण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता, मज्झिमाए देवाण देसूण अद्ध पलिओवम ठिती पण्णत्ता,

अर्थ

कही है ? अहो गौतम ! कालेन्द्र को आभ्यतर परिषदा के आठ हजार देव, मध्य परिषदा के दश हजार देव व बाह्य परिषदा के बारह हजार देव कहे हैं और तीनों परिषदा में माम एकसो २ देवियों कही हैं अहो भगवन् ! काल नामक पिशाच राजा को आभ्यतर परिषदा के देवों की, मध्य परिषदा के देवों की व बाह्य परिषदा के देवों की, आभ्यतर परिषदा की देवीयों की, मध्य परिषदा की देवीयों की व बाह्य परिषदा की देवीयों की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! आभ्यतर परिषदा के देवों की आध

विहरति। कालस्सण भंते! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा ईसा तुडिआ दढरहा अब्भितरिया ईसा, मज्झिमिया तुडिया बाहिरिया दढरहा कालस्सण भंते ! पिसाय कुमारिंदस्स पिसायकुमाररण्णो अब्भितरियाए परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ जाव बाहिरिया परिसाए कतिदेवीसया पण्णत्ता? गोयमा ! कालस्सण पिसायकुमारिंदस्स पिसायकुमार रायस्स अब्भितर परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमाए परिसाए दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ,

अर्थ

दो पिशाच कुमार के राजा कहे हुवे हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! दक्षिण दिशा के पिशाच कुमार के वास कहां कहे हैं? स्थानपद जैसे कहना यावत् विचरते हैं, वहां काल नामक पिशाचकुमारेन्द्र व पिशाचकुमार राजा है, वह महर्द्धिक यावत् विचरता है अहो भगवन् ! काल नामक पिशाच कुमारेन्द्र पिशाच राजा को कितनी परिषदा कही है ! अहो गौतम ! तीन परिषदा कही हैं ईषा, त्रुटिता व दृढरथा जिन में आभ्यंतर ईषा, मध्य त्रुटिता व बाह्य दृढरथा अहो भगवन् ! काल नामक पिशाचेन्द्र को आभ्यंतर परिषदा के कितने हजार देव कहे हैं यावत् बाह्य परिषदा की कितनी देवियों

मूल

सउद उप्पित्ता दसुत्तरे जोयणसए बाहल्लेण एत्थण जोतिसियाण देवाण तिरियमसखिज्जा जातिसिय विमाणावास सयसहस्सा भवतीति, मक्खाय, तेण विमाणा अद्ध कविट्ठ सठाण सठिया एव जाव जहाठाणपदे जाव चदिम सूरिया तत्थ जोतिसिंदा जोइसरायाणो परिवसति महिड्डिया जाव विहराति ॥ सूरस्सण भते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ता ? गोयमा ! तिण्णि परिसाओ पण्णत्ताओ तजहा- तुबा तुडिया पव्वा, अब्भतरिया तुबा, मज्झिमिया तुडिया, बाहिरिया, पव्वा, सेस जहा कालस्स परिमाण, ठितीवि अठो जहा चमरस्स चदस्सवि एवचेव ॥२०॥ कहिण भते! दीव समुद्दा के महालयाण भते! दीवसमुद्दा कि सठियाण भते ! दीवसमुद्दा किमाकार भाव

अर्थ

कविठ के सस्थानवाले हैं यावत् इस का सब कथन स्थानपद जैसे कहना यावत् वहां के चद्र व सूर्य दो इन्द्र हैं वे यहां रहते हैं यावत् विचरते हैं अहो भगवन् ! ज्योतिषी के इन्द्र ज्योतिषी के राजा सूर्य को कितनी परिषदाओं कही है ? अहो गौतम ! तीन परिषदाओं कही है तुम्बा, तुडिया व पर्वा आभ्यन्तर तुम्बा, मध्य तुडिया व बाह्य पर्वा, शेष सब काल इन्द्र जैसे जानना कार्य सब चमरेन्द्र जैसे जानना जैसे सूर्य का कहा वैसे ही चद्र का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र कहां है, द्वीप समुद्र

बाहिरियाए परिसाए देवाण सातिरेग चउब्भाग पलिउवम ठिती पण्णत्ता, अब्भित-रियाए परिसाए देवीण सातिरेग चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता मज्झिम परि-साए देवीण चउब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता बाहिर परिसाए देवीण देसूण चउ-ब्भाग पलिओवम ठिती पण्णत्ता, अट्ठो जाव चमरस्स एव उत्तरिल्लस्सवि एव निरतर जाव गीयजसस्स ॥ १९ ॥ कहिण भते ! जोतिसियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता, कहिण जोतिसिया देवा परिवसति ? गोयमा ! उर्दिवदिव समुद्दाण, इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमि भागातो सत्तणउतेजोयण

अर्थ

पल्योपम, मध्य परिषदा के देवों को कुच्छ कम आधा पल्योपम, व बाह्य परिषदा के देवों की साधिक पल्योपम का चौथा भाग आभ्यतर परिषदा की देवीयों की साधिक पल्योपम का व चौथा भाग, मध्य परिषदा की देवीयों की चौथा भाग व बाह्य परिषदा की देवीयोंकी पल्योपम के चौथे भागमें कुच्छ कमकी स्थिति है कार्य सब चमरेन्द्र जैसे कहना ऐसे ही उत्तर दिशा के इन्द्रका कहना यों गीतयश पर्यंत सब इन्द्रों का कहना॥१९॥ अहो भगवन्! ज्योतिषी देव के विमान कहां कहे हैं व ज्योतिषी देव कहां रहते हैं? अहो गौतम ! द्वीप समुद्र की ऊपर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ७९० योजन ऊंचे जावे तब वहां ११० योजन के जाडपन में तीर्च्छे असंख्यात खास ज्योतिषी के विमान कहे हुए हैं वे विमानों

॥ २१ ॥ तत्थण अय जबुद्दीवेणाम दीवे सव्वदीव समुद्दाण अभितरए सव्व खुड्डाए वट्टे तेल्लापूय सठाण सठिये वट्टे रहचक्कवाल सठाण सठिये, वट्टे, पुक्खर कण्णिया सठाण सठिये वट्टे पडिपुन्नचद सठाण सठिये, एक्क जोयणसयसहस्स आयाम विक्खभेण, तिण्णिजोयण सयसहस्साइ सोलसहस्साइ दोण्णियसया सत्तावीसे जोयणसते तिण्णियकोसे अट्ठावीसच धणुसय तेरस अगुलाइ अद्ध अगुलच किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता॥ सेण एकाए जगतीए सव्वतो समता सपरिक्खित्ते, साण जगती अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण मूले बारस जोयणाइ विक्खभेण, मज्झे अट्ठजोयणाइ विक्खभेण, उप्पि चत्तारि जायणाइ विक्खभेण, मूलविच्छिण्णा, मज्झे

अर्थ — एकवर वेदिका और एक२ वनखण्ड वेष्टित है लोक में स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप व समुद्र है ॥२१॥ इन सबकी बीच में सब से छोटा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है, यह तेल पूडे के संस्थानवाला है, रथ चक्र जैसा गोलाकार, पुष्कर की कर्णिका जैसा, प्रति पूर्ण चंद्र जैसा संस्थानवाला है एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है तीन लक्ष सोलह हजार दो सत्तावीस योजन तीन कोश, एकसो अट्ठाइस धनुष्य व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक उस की परिधि है इस की चारों तरफ एक जगती है यह जगति आधा योजन की ऊंची है, मूल में बारह योजन की चौडी, मध्य में आठ योजन की चौडी व ऊपर चार

सूत्र

पहोयाराण भंते ! दीव समुद्दा पण्णत्ता? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवा लवणादियासमुद्दा सठाणया ता एकविहिविहाणा वित्थारतो अणेगाविहिविहाणा दुगुणादुगुण पडुप्पाए माणा २ पवित्थरमाणा २ ओभासमाणा वीयीया, बहुउप्पल पउम कुमुद णलिण सुभगा सोगंधिया पोंडरीया महापोंडरीय सतपत्त सहस्सपत्तय फुल्लकेसरोवचिता, पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता, अब्भिंतरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा सयंभुरमण पज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो

अर्थ

कितने कहे हैं ? द्वीप समुद्र कैसे संस्थानवाले हैं, ? और उन का कैसा आकार भाव (स्वरूप) कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप व लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं वे सब एक संस्थानवाले हैं और विस्तार में अनेक प्रकार के हैं विस्तार में प्रथम द्वीप से प्रथम समुद्र दुगुना, प्रथम समुद्र से दूसरा द्वीप दुगुना, उस से दूसरा समुद्र दुगुना यों एक द्वीप से दूसरा समुद्र दुगुना और समुद्र से द्वीप दुगुना विस्तार में रहे हुवे हैं उन में जो समुद्र हैं वे कल्लोल से सुशोभित हैं और द्वीप में अनेक द्रह प्रमुख रहे हुवे हैं उन में उत्पल पद्म, चंद्र विकासी, सूर्य विकासी, कमल, नलिन, सुभग, सोगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र, वगैरह कमल, पुष्प केसरा सहित हैं प्रत्येक द्वीप को एक २

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण,पचधणुसायाइ विक्खभेण,सव्वरयणामई जगती समिया परिक्खेवेण तीसेणं पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी सधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलवरा, कलेवरसघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसघाडा अकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतिरसामयावसा वमकवेल्लुयाओ, रययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

अर्थ

जगती के चारों तरफ घोरित हैं,अथात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, आरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्तंभ है, सोने चांदी के पटिये हैं, उस की संधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के मांचे हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप संघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुंटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबड ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २५ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

सूत्र

सक्खित्ता उप्पिं तणुया गोपुच्छ संठाण संठिया, सव्ववइरामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका णिक्ककडछाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ २२ ॥ साण जगती एक्केण जालकडएण सव्वतो समता संपरिक्खित्ता, सेण जालकडएण अद्धजोयण उड्ढं उच्चत्तेण पंचधणुसयाइं विक्खंभेण, सव्वरयणामए, अच्छे सण्हे घट्ठे मट्ठे नीरये निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे ससिरीए सउज्जोए पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥ २३ ॥ तीसेण जगतीए उप्पिं बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगा महं पउमवर वेदिया पण्णत्ता, साण

अर्थ

योजन की चौडी है मूल में विस्तारवाली, मध्य में संक्षिप्त बनी हुई व ऊपर संकुचित बनी हुई है, सब वज्र रत्नमय, सुकुमाल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, रज रहित, कांति की व्याघात रहित, प्रभा सहित, शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २२ ॥ उस जगती की चारों तरफ एक जाल कटक (गवाक्ष) है यह अर्ध योजन का ऊंचा पांच सो धनुष्य का चौडा व सब रत्नमय, स्वच्छ, मृदु, घटारा, मठारा, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाला, प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २३ ॥ उस जगती की मध्य बीच में एक पद्मवर वेदिका है यह पद्मवर वेदिका आधा योजन की ऊंची व पांच सो धनुष्य की चौडी है, सब रत्नमय है

पउमवर वेदिया अद्ध जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण पचधणुसायाइ विक्खभेण,सव्वरयणामई जगती सामिया परिक्खेवेण तीसेण पउमवरवेदियाए इमेवारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा—वयरामया नम्मा रिट्ठामयापतिाणट्ठा वरुलिया मया खभा, सुवण्ण रूप्पमया फलगा, वइरामयी सधी, लोहितक्खमइओ सूईओ नाणामया कलेवरा, कलेवरसघाडा, णाणा मणिमया रूवा, रूवसघाडा अकामया पक्खा पक्खवाहाओ, जोतरसामयावसा वसकवेल्लुयाओ, एययामयी पट्टिया, जातरूवमयी ओहाडणी, वईरामयी उवरिं पुच्छणी, सव्वसेयरययामतेछादणे ॥ २४ ॥ साण पउमवरवेदिया

अर्थ—जगती के चारों तरफ वेष्टित हैं,अथात् जगती जितनी ही घेरावमें है इस पद्मवर वेदिका का वर्णन करते हैं इस की वज्र रत्नमय नीव है, अरिष्ट रत्नमय नीव का ऊपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, सोने चांदी के पाटिये हैं, उस की सधी वज्ररत्न से पूरी हुई है लोहिताक्ष रत्न की उन पटियों की बीच में सूइयों है, विविध प्रकार के कलेवर व कलेवर के सांचे हैं, विविध प्रकार के मणिमय रूप व रूप सघात है, अंक रत्नमय पक्ष (देश) व पक्ष बाहा है, ज्योतिषी रत्नमय वंश व वंशवालिका (खुटियों) हैं, उस पर चांदी की पटडी है, उस पर सुवर्ण का ढक्कन है, उस पर वज्र रत्न का निबद्ध ढक्कन है, उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है ऐसी पद्मवर वेदिका है ॥ २४ ॥ यह पद्मवर वेदिका एक

एगमेगेण हेमजालेण एगमेगेण खिंखिणिजालेण, एव घंटाजालेण जाव मणिजालेण, एगमेगेण पउमवर जालेण सव्वरयणामएण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण जाल तवणिज्जलंबूसगा सुवण्ण पयरगमंडिया णाणा मणिरयण विविधहार सोहित समुदया, ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता पुव्वावर दाहिण उत्तरा गतेहिं वाएहिं मंदाय मंदाय एतिया चतिया कंपिता खोभिता चालिया फंदिया घट्टिया उदीरिया एतेसिं उरालेणं मणुन्नेण कण्णमन निव्वुत्ति करेण सद्देण सव्वतो समता आपूरेमाणा २ सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठति ॥ २५ ॥ तीसेण पउमवर

सुवर्ण की माला, घुघरे की माला, यावत् मोतियों की माला, व कमल की माला से परिवेष्टित है वे मालाओं सब रत्नमय हैं उन मालाओं का रक्त सुवर्ण के झूमखे है, सुवर्ण का मकरक [सूत्र] हैं, विविध प्रकार के मणि, रत्नों के विविध प्रकार के हार व अर्ध हार से शोभित है किंचित् परस्पर अलग २ है, पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण के मंद वायु से कंपायमान होती हुई, क्षुब्ध होती हुई, चलित होती हुई, किंचित् चलती हुई, व उदीरणा करती हुई वे मालाओं उदार मनोज्ञ कर्ण व मन को प्रियकारी शब्द से चारों तरफ पूरती हुई अतीव २ शोभती है ॥ २५ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत

वेइयाए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे हयसंघाडा गयसंघाडा, नरसंघाडा किण्णरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा ॥ २६ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे १ तहिं २ बहवे हयपंतीउ तहेव जाव पडिरूवाओ ॥ एवं हयवीहीओ जाव पडिरूवाओ ॥ एवं हयमिहुणाइं जाव पडिरूवाइं ॥ २७ ॥ तीसेण पउमवर वेइयाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे पउमलयाओ नागलयाओ एवं असोग चंपग चूय वाण वसंतिय अतिमुत्तग-कुंद-सामलयाओ णिच्चकुसुमियाओ जाव सुविभत्त

घोडे के युगल, गज के युगल, नर के युगल, किन्नर के युगल, किंपुरुष के युगल, महोरग के युगल, गन्धर्व के युगल, व वृषभ के युगल रहे हुवे हैं व सब रत्नमय स्वच्छ, मृदु, घट्टारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत छायावाले प्रभा शोभा व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २६ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत हय की पंक्तियों यावत् प्रतिरूप हैं ऐसे ही हय वीथि यावत् प्रतिरूप है सो कहना ऐसे ही हय मिथुन यावत् प्रतिरूप है सो कहना ॥ २७ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर बहुत पद्मलता, नागलता, ऐसे ही अशोक, चंपक, आम्र, लता, छण नामक वृक्ष,

पिंडमजरीवडेमक धरीओ सव्वरयणामतीओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णीरयाओ णिम्मलाओ निप्पकाओ निक्ककम छायाओ सप्पभाओ ससिरियाउ सउज्जायाओ पासादिआओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ ॥ २८ ॥ तीसेण पउमवर वेदियाए तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे अक्खया सोत्थिया पण्णत्ता, सव्वरयणामया अच्छा ॥ २९ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ पउमवर वेइया ? गोयमा ! पउमवर वेदयाए तत्थ २ देसे २ तहिं वेदियासु वतियवाहासु वेतियासीसफलएसु वेतिया पुडतरेसु खभेसु खमवाहासु खमसीसेसु खमपुड-

वासति, भति मुक्त कुदलता व श्यामलता है व सब कुसुमित (पुष्पवाली) यावत् सुविभक्त पपिंड मंजरीरूप शिखर धारन करनेवाली हैं सब रत्नमय, स्वच्छ कोमल, घटारी, मठारी, रज रहित, निर्मल, कर्दम रहित निरुपहत छायावाली, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ २८ ॥ उस पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर अक्खय (चावल के) स्वस्तिक कहे हुए हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्यों कहा ? अहो गौतम ! पद्मवर वेदिका में स्थान २ पर वेदिका के पार्श्व में, वेदिका के पटिए के शीर्ष में वेदिका के पुरांतर में, स्तम में, स्तम पार्श्व में स्तम शीर्ष में, स्तम पुटांतर में, सीलों में, सीलों के मुख में, सीलों के पटिए में, सीलों के पुटांतर में,

तरेसु, सूईसु सूयीमुहेसु सूयिफलएसु सूयिपुडतरेसु, पक्खेसु पक्खवाहासु पक्खपरतरेसु बहुय उप्पलाइ पउमाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ नीरयाइ निप्पंकाइ निक्कंकडछायाइ सप्पभाइ सस्सिरियाइ सउज्जोयाइ, पासादीयाइ दरिसणिज्जाइ, अभिरूवाइ पडिरूवाइ, महया २ वासिक्कच्छत्त समासाइ पण्णत्ताइ समणाउसो ! से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ पउमवरवेदिया २ ॥ अदुत्तरं च णं गोयमा ! पउमवरवेदिया २, सासते नामधेज्जं पण्णत्ते, जं ण कयाविणासि जाव णिच्चे ॥ ३० ॥ पउमवर वेदियाणं भंते ! किं सासता असासता ? गोयमा !

अर्थ

पक्ष में, पक्षबाहा में, व पक्ष के परतर में बहुत उत्पल पद्म यावत् लक्ष पांखडी वाले पुष्प रहे हुवे हैं वे सब रत्नमय, अच्छे, श्लक्ष्ण, घृष्टे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांतिवाले, प्रभा, शोभा व उद्योत सहित प्रासादिक, दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे वर्षाकाल में पानी रखने का महा पात्र अथवा छत्र समान हैं अहो गौतम ! इस लिये पद्मवर वेदिका शब्द की प्राप्ति हुई है अथवा सो पद्मवर वेदिका का नाम शाश्वत है यह अतीत काल में नहीं था ऐसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका क्या शाश्वत है

सिय सासता सिय असासता ॥ केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ? गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता ॥ ३१ ॥ पउमवर वेइयाणं भंते ! कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! णकयाति णासि नकयातिणत्थि नकयाति नभविस्सति । भूविंच भवतिय भविस्सतिय धूवा णितिया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवर वेदिया ॥३२॥ तीसेण जगतीए उप्पिं बाहिं पउमवर वेइयाए एत्थणं एगे महंवणसंडे पण्णत्ते

या अशाश्वत है ? अहो गौतम ! स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है अहो भगवन् ! किस लिये ऐसा कहा कि स्यात् शाश्वत स्यात् अशाश्वत है? अहो गौतम ! द्रव्य आश्रिय शाश्वत है और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वत है अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि पद्मवर वेदिका स्यात् शाश्वत व स्यात् अशाश्वत है ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! पद्मवर वेदिका का कितना काल तक रहने का कहा ? अहो गौतम ! पहिले नहीं थी वैसा नहीं, वर्तमान नहीं है वैसा नहीं व भविष्य काल में नहीं होगा वैसा नहीं परंतु अतीत काल में थी, वर्तमान में है व भविष्य काल में होगी वैसी ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय अव्यय अवस्थित, व नित्य पद्मवर वेदिका है ॥ ३२ ॥ उस जगती की ऊपर व पद्मवर वेदिका से बाहिर

देसूणाइ दो जोयणाइ चक्कवाल विक्खंभेणं जगतिसमये परिक्खेवेण किण्हे किण्हो भास जाव अणेग रुगड रहजाण उग्ग परिमोयण सूरम्मे पासादिये सण्हे लण्णे, घट्ठे मट्ठे णीरए निम्मले निक्कंकडच्छाए सप्पभाए ससिरिए सउज्जोवे पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥२३॥ तस्सण वणसडस्स अतो वहु समरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए अलिंगपुक्खरेतिवा मुइग पुक्खरेइवा सरतलेतिवा करयलेतिवा आयसमडलेतिवा चदमडलेतिवा सूरमडलेतिवा उरब्भचम्मेतिवा उसभचम्मेतिवा, वराह चम्मेतिवा, सीहचम्मेतिवा वग्घचम्मेतिवा, विचम्मेतिवा, दीवियचम्मेतिवा, अणेगसकुकीलग सहस्सवितते आवड पच्चावड सेढी सोत्थिय सोवत्थिय

एक बडा वनखण्ड कहा हुवा यह वनखण्ड कुच्छ कम दो योजन का चक्रवाल में चौडा है जगती जितना ही गोलाकार में है यह कृष्ण वर्ण वाला यावत् कृष्णाभास है यावत् अनेक शकट रथ पालखी प्रमुख रहने का स्थान है रमणिक, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप है ॥२३॥ उस वनखण्ड में एक बडा रमणीय भूमिभाग है जैसे मुरजका तल (वाद्य विशेष) मृदंगकातल, तलावकातल, करतल, काच का तल, चद्र मडल सूर्य मडल, मेंढे का चर्म, वृषभ का चर्म, वराहका चर्म, सिंहका चर्म, व्याघ्र का चर्म, छागका चर्म व चितेका चर्म समान तल है एक आकार वाले सहस्र खीलाओं को तपाकर टीपने से जैसे समतल वाला होता है वैसे ही आवर्त, प्रत्यावर्त, श्रेणि प्रश्रेणि स्वस्तिक, पुष्पमान वर्धमान, मत्स्य,

पुस्समाण वद्धमाण मच्छक मकरंडक जरामरा पुप्फवेलि पउमपत्ता सागरतरग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पिभेहिं समिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तीसेण अयमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबंधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण किण्हाणं तणाण मणीणय

कच्छ, जरामर, पुष्पवेली, पद्म, पत्र, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों से सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन कहा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन काजल मसी, मसी की गोली, नील, नील की गुटिका, कृष्ण सर्प, कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव जैसा क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक इष्ट, इष्ट मनोहर, कंत

एतो इट्ठयराएचेव कततराएचेव मणामतराएचेव वण्णेणं पण्णत्ते ॥ ३९ ॥
तत्थण जे ते णीलगा तणाय मणीय तेसिण इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से
जहानामए भिंगेतिवा भिंगपत्तेतिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा
णीलीतिवा, णीलीभेदेतिवा णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चनएतिवा,
वणराईतिवा हलधरवसणेतिवा, मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी
कुसमेतिवा, वाणकुसुमेतिवा, अजणकेसिया कुसमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो
तेतिवा णीलकणवीरेतिवा, णीलबंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण
निलगाण तणाणय मणीणय एतो इट्ठयराचेव कततराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते

व मणाम है ॥३९॥ नील वर्ण वाले तृण व मणि का ऐसा स्वरूप कहा? जैसे भृंग, भृंग की पांख नील चाम, नील चाष की पांख, तोता, तोता की पांख, नील, नील वस्तु का भेद, नील वस्तु का समूह, सामा (धान्य विशेष) दांत का काला वर्ण, वनकी घटा समूह, बलदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारापत ग्रीवा, अलसी के पुष्प, सणवृक्ष के पुष्प, अजनकेसिका (वृक्ष विशेष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कणेर नीला बंधु जीव, इत्यादि वस्तु समान क्या उसका नीलावर्ण है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

पुस्समाण वद्धमाण मच्छक मकरंडक जरामर। पुप्फावलि पउमपत्ता सागरतरग वासंति पउमलय भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सस्सिरिएहिं सउज्जोएहिं नाणाविह पंचवण्णेहिं तणेहिय मणिहिय उवसोभिये तंजहा किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ जे ते किण्हा तणाय मणीय तेसिण अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए जीमूतेतिवा अंजणेतिवा खंजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलियातिवा गवलेतिवा गवलगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा आगासथिग्गलेइवा कण्हा सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबधुजीवयेतिवा भवेतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

कच्छ, जरामर, पुष्पवल्ली, पद्म, पत्र, समुद्र तरंग, वासंतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों ये सब प्रकार की श्री व उद्योत सहित, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व मणि से शोभनिक है ॥ ३३ ॥ इन में कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करा है जैसे मेघ, घटा, अंजन, खंजन, काजल, मसी, मसी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण बाल कृष्ण आकाश तल, कृष्ण अशोक वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बंधु जीव ऐसा क्या इसका कृष्ण वर्ण होता है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

तत्थण जे ते हालिद्दगा तणाय मणीय तेसिण इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से जहा नामए चंपाति वा चंपाछल्लीतिवा हालिद्दाभेएतिवा हालिद्दागुलियातिवा, चिहुरेतिवा, चिहुरगरागेतिवा, सुवण्णसिप्पिएतिवा, वरपुरिसवसणेतिवा, अल्लकीकुसुमेतिवा, चंपाकुसुमेतिवा, कुहुंडियाकुसुमेतिवा, तडउडाकुसुमेतिवा, घोसेडियाकुसुमेतिवा, सुवण्णजूहियाकुसुमेतिवा सुहिरण्णकुसुमेतिवा, कोरिंटवरमल्लदामेतिवा, बीयगकुसुमेतिवा, पीयासोएतिवा, पीयकणवीरेतिवा, पीयबंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तेसिण हालिद्दा मणीय तणाय एत्तो इट्ठयराचेव कंततराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥ ३४ ॥

तत्थण जे ते हालिद्दगा तराएचेव मणामतराएचेव वण्णेग पण्णत्ते ॥ ३४ ॥
पण्णत्त से जहा नामए चपाति य मणीय तेसिण इमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते से
हाभेएतिवा हालिद्दागुलियातिवा, तिवा चासेतिवा चासपिच्छेतिवा सुयेतिवा सुयपिच्छेतिवा
विहुरेतिवा, विहुरगरागेतिव णीलीगुलियातिवा, सामाएतिवा उच्चनएतिवा,
सुवन्नसिप्पिएतिवा, वरपुरिसव. मोरग्गीवातिवा, पारेवयग्गीवातिवा, अयसी
कुहुंठिवाकुसुमेतिवा, तडउडाकु अजणकेसिया कुसमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा णीलासो
कुसुमेतिवा सुहिरण्णकुसुमे बंधुजीवेतिवा, भवेयारूवेसिया? णो तिणट्ठे समट्ठे, तसिण
रतो इट्ठयराचेव कततराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते

जो पीले मणि व तृण हैं उस का वर्णन
जैसे पीला वर्ण नीकले वैसा, हल्दी, हल्दे व मणि का ऐसा स्वरूप कहा? जैसे मृग, भृग की पाख नील चाम,
चिकुर रग (द्रव्य विशष), चिकुर सयोग,पांख, नील, नील वस्तुका भेद, नील वस्तुका समुह, सामा (धान्य
म.सन, वर पुरुष सा वासुदेव के वस्त्र, प्रमुख, बळदेव के वस्त्र, मयूर ग्रीवा, पारापत ग्रीवा, अलसी के पुष्प,
के पुष्प, तोर्‍ के पुष्प, सुवर्ण यूथिका वन विशष) उस के पुष्प, नीला कमल, नीला अशोक वृक्ष, नीली कणेर
कोरटक के पुष्प, कोरटक के पुष्प की मा' उसका नीलावर्ण है? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिकतर

॥ ३५ ॥ तत्थण जे ते लोभिकरडक जरामरा पुक्खेरलि पउमपत्ता सागरतरग वासति पण्णत्त से जहा नामए एहिं सरिसरिएहिं सउब्भोसेहिं नाणाविह पचवण्णेहिं णररुहिरातिवा, वराहरुहिरेतिवाभेये तजहा-किण्हेहिं जाव सुक्किलेहिं ॥ ३३ ॥ तत्थ तिवा जातीहिंगुलएतिवा हितीसेण अपमयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते से जहानामए मणितिवा, लक्खारसएतिवा खजणेतिवा कज्जलेतिवा मसीइवा मसीगुलि-तिवा, जासुयणकुसुमेइवा, लगुलियातिवा, कण्हसप्पेतिवा, कण्हकेसरे इवा रत्तासोगेतिवा, रत्तकणीयारो सोतेतिवा कण्ह कणियारेतिवा कण्हबधुजीवयेतिवा समट्ठ,तेसिण लोहियगाण तणाणट्ठे समट्ठ, तेसिण किण्हाण तणाण मणीणय

नीला यावत् मनोहर है॥३५॥ अब यह मुद्र तरग, वासतिकलता व पद्मलता के अनेक प्रकार के चित्रों शशक का रुधिर, मेंढे का रुधिर, मा, विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल ऐसे पांच वर्ण वाले तृण व इन्द्रगोप जीव, बाल (उदय होता) , कृष्ण वर्ण वाले तृण व मणि हैं उन का इस तरह वर्णन करते हैं अकुर, भोहिताक्ष मणि, लाख का रस मषी, मषी की गोली, नील, नील, की गुटका, कृष्ण सर्प, कृष्ण पुष्प, किंशुक पुष्प, प टस के पुष्प, वृक्ष, कृष्ण कर्णिका, व कृष्ण बधु जीव एसा क्या इसका कृष्ण वर्ण क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं कृष्ण तृण व मणिका वर्ण इस से भी अधिक श्याम, इष्ट मनोहर, कंत

..ीयदलेतिया, सिंदुवार वरमल्लदामेतिवा, सेतासोएतिवा सेयकणवीरेतिवा, सेय बधुजीवातिवा, भवे एयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, तेसिण सुक्किलाण तणाण मणीणय एतो इट्ठतराएचेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥३८॥ तेसिण भते! तणाणय मणीणय केरिसये गधे पण्णत्ते से जहा नामए—कोट्ठापुडाणवा पत्तपुडाणवा, चोयपुडाणवा, तगरपुडाणवा, एलापुडाणवा, हिरमेवपुडाणवा, चदणपुडाणवा, कुकुमपुडाणवा, उसीर पुडाणवा, चवयपुडाणवा, मरुयगपुडाणवा, दमणगपुडाणवा, जातिपुडाणवा जुहिय पुडाणवा, मल्लियपुडाणवा णो मल्लियपुडाणवा, वासतियपुडाणवा, केतियपुडाणवा

अर्थ

पद्म, वर्षा का जल, जात पुष्प की माल्य, श्वेत अशोक वृक्ष, श्वेत कर्णिका व श्वेत बधु जीव ऐसा क्या उन का वर्ण है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से अधिक इष्ट यावत् मनामतर उन मणि तृण का श्वेत वर्ण जानना अहो भगवन् ! उन तृण व मणि की गध कैसी कही है ? अहो गौतम ! जैसे कोष्ट पुडा, सुगंधि पान का पुडा, चोयक (गध द्रव्य विशेष) का पुडा, एलायची का पुडा, तगर का पुडा, वाल खसखस का पुडा, चदन का पुडा कुंकुम का पुडा, उशीर का पुडा, चपक का पुडा मरुपका का पुडा, दमण.. का पुडा, जाई का पुडा, जूई का पुडा, मल्लिका का पुडा, नव मल्लिका का पुडा, व.सतोछवा का पुडा, केतकी का पुडा, कर्पूर का पुडा, व पाडल का पुडा इत्यादि में से मद वायु चावे

तिवा, पीयासोएइवा पीयकणवीरेतिवा पीयबधुजीएतिवा, भवेएयारूवे सिया?णो इणट्ठे समट्ठे, तेण हालिद्दा तणायमणीय एतो इट्ठयरा चेव जाव वण्णेण पण्णत्ते ॥ २७ ॥ तत्थण ज ते सुक्किलगा तणायमणीय तेसिण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते-से जहा नामए अकेतिवा सखेतिवा चदेतिवा कुदेतिवा दगरयेतिवा हसावलीतिवा कोंचावलीतिवा हारावलीतिवा बलयावलीतिवा चदावलीतिवा सारतियबलाहयेतिवा धतधोय रूप्पपट्टेतिवा, सालि पिठरासीतिवा कदपुप्फ रासीतिवा, कुमुदरासीतिवा, सुक्कछिवाडीतिवा, पेहुणमिजाइवा, भिसितिवा, मुणालियातिवा, गयदंतेतिवा, लवगदलेतिवा,

बधु जीव समान क्या है ? यह अर्थ समर्थ नहीं है इन का वर्ण उक्त सब वस्तुओं से भी इष्टतर यावत् मनापतर पीले वर्ण में कहा है ॥ २७ ॥ शुक्ल तृण व मणि का कैसा वर्ण वास कहा है जैसे अकरत्न, दक्षिणावर्त शख, चद्र, मुचकुद के पुष्प, पानी के कन, हसपक्षी की श्रेणी, क्रौंच की श्रेणि, मोती के हारकी श्रेणी, बगले की श्रेणी, चद्रावलि [पानि में चंद्र प्रतिबिंब की श्रेणी] शरद काल में होते हुवे श्वेत बद्दल, अग्नि से धमा हुवा चांदी का पट्ट, तुष रहित चांवल, मचकुद पुष्प का पुज, मोरपींछ का गर्भ, श्वेत कमल का पुज, शुष्क छिवाडी वृक्ष के पुष्प, पद्मनीकद, हस्ती के दांत, लवग पत्र पौंडरीक

अकेसुपइट्ठियाए चदणासार कोणानक्खपरिघट्टियाए कुसलणरनारि सपग्ग हिताए, पक्षोसपच्चूसकालसमयसि मदाय २ एईयाए वेईयाए खोमियाए फदियाए घट्टियाए उदीरियाए उरालामणुन्ना कण्ण मणनिव्वुत्तिकरा सव्वतो समता सद्दा अभिणिस्सवति भवेतारूवेसिया ? नोतिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहानामए किण्णराणवा किंपुरिसाणवा महोरगाणवा गधव्वाणवा भद्दसालवणगयाणवा नदणवणगयाणवा सोमणसवणगयाणवा पडगवणगयाणवा हिमवत मलय मदरगिरिगुहा समण्णागयाणवा एगोसहिताण समुहागयाण सन्निसन्नाण सन्निविट्ठाण पमुदिय पक्कीलियाण

नहीं है तीसरा दृष्टांत कहते हैं—किन्नर, किंपुरुष, महोरग व गधर्व भद्रशालवन, नदन वन, सोमनस वन व पडग वन में अथवा हिमवत पर्वत पर, मलयाचल पर्वतपर, मेरुपर्वतकी गुफा में एकत्रित मीलकर वहां सम्यक् प्रकारसे प्रमुदित व क्रीडावत बनकर गीतरति नामक गधर्व हर्ष सहित गद्य, पद्य, कथ्य, पदबंद्ध, व प्रवर्तक को भद २ स्वर से सप्तस्वर व आठ रस सहित, छ दोप रहित, अग्यारह अलकार गुण सहित व

१ प्रथम से ही दीर्घ स्वर से गाना, २ मध्य भाग में मद स्वर से गाना, ३ १ षड्ज, २ रिषभ ३ गाधार ४ मध्यम ५ पचम ६ धैवत और निषध यह सप्तस्वर ४ शृगार प्रमुख आठ रस है ५ १ भीति-अधिक त्रासित मन से भयभीत बनते हुए गाना २ द्रुत दोप-त्वरा से गाना, ३ उप्पिच्छ दोप आकुल व्याकुल बनकर गाना ४ उताल दोप-तालस्थानको अतिक्रम करके गाना, ५ काक स्वर दोप-सानुनासिक गाना ६ अनुनासिक दोप-नाक म स स्वर नीकालकर गाना यह सप्तदोप

अत्तकम्मस्स आइण्ण वरतुरग सुसपयुत्तस्स कुसल नरत्थेय सारहि सुसपगहितस्स सरसय वत्तीसतोण परिमंडियस्स सककडवडेंसगस्स सव्वावसर पहरणावरण भरिय जोहवुद्द सज्जस्स रायगणसिवा अंतेउरसिवा रम्मंसिवा मणिकोट्टिमतलंसिवा अभिक्खण अइट्टिज्जमाणस्सवा णियट्टिज्जमाणस्सवा परूढवरतुरगस्स चडवेगाइ दढस्स उरालामणुन्ना कण्णमणाणिवुतिकरा सव्वतोसमता अभिणिस्सवति भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ से जहा नामए वेयालियाए वीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए

प्रकार के आयुध, ढाल प्रमुख प्रहरण और योधा को वध करने योग्य ऐसा युद्धरथ है उसे राजा के अंगन में अंतःपुर में, महेल में, मनोहर मणिबद्ध भूमितल में, वारंवार अति वेग से फीरावे इसप्रकार उत्तम लक्षणवाले अश्वों से फिराते हुवे उस रथ में से मनोज्ञ व सुखकारी सब दिशी में स्पर्शता हुवा शब्द नीकलता है वो अहो भगवन् ! ऐसा शब्द उस तृण में से नीकलता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अब दूसरा दृष्टांत कहते हैं जैसे प्रभात में वैताल की वीणा, गंधार स्वर की मूर्च्छा सहित अपने अंक में अच्छे तरह रखी हुई चंदन की वीणा, कोई कुशल पुरुष या स्त्री प्रभात काल में मंदस्वर से बजावे इस तरह मूर्च्छा प्राप्त करते हुए, व उदीरते हुए उदार मनोज्ञ सुख उत्पन्न करनेवाला शब्द सब दिशाओं में स्पर्शता हुवा नीकलता है अहो भगवन् ! उस तृण का क्या ऐसा शब्द होता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ

सूत्र

खडखडियाओ वावीओ पुक्खरिणीओ गुंजालियाओ दीहियाओ सरपतीओ सरसरपंतीओ बिलपंतीओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकुलाओ वइरामय पासाणाओ वेरुलिमणिफालिय पडलपच्चोयडाउ नवणीयतलाओ सुवण्णसुज्झरयमणि वालुयाओ सुहोयार सुउत्ताराओ णाणामणि तित्थसुबद्धाओ चाउक्कोणाओ समतीराओ अणुपुव्व सुजायवप्प गंभीर सीयलजलाओ, सच्छण्णपत्तभिसमुणालाओ बहुउपल कुमुय णलिण सुभग सोगंधित पोंडरिया महापोंडरिय सतपत्त सहस्सपत्तफुल्ल केसरोवइयाओ छप्पयपरिभुज्ज-

अर्थ

स्थान २ पर बहुत छोटी बावडियों, पुष्करणियों, गुंजालिकाओं, दीर्घिकाओं, सरपंक्तिओं, बिलपंक्तिओं रही हुई है व निर्मल स्फटिक रत्न जैसी सुकुमाल है उन के किनारे रत्नमय है, वज्ररत्नमय पाषाण है जिस से उन के दोनों भाग बने हुवे हैं, सुवर्णमय तल हैं, वैडूर्य व स्फटिक रत्नमय तट है, सुवर्ण व चांदी मय वालु है, उन में सुख पूर्वक प्रवेश कर सकते हैं व बाहिर नीकल सकते हैं, विविध प्रकार की मणियों से चारों कूने बांध हुए हैं, समान तीर हैं, जल स्थान गंभीर है, उन का जल शीतल है, वहां जल में आच्छादित कमल पत्र, कमलकंद व कमल नाल हैं, उत्पल कमल, चंद्र विकासी कमल, नलिन कमल, सुभग, सौगंधिक, पुंडरीक, महा पुंडरीक, शतपत्र, सहस्र पत्र, पुष्प व केसरा सहित है वे कमल भ्रमर से भोगवे हुवे हैं स्वच्छ निर्मल जल से परिपूर्ण है, अनेक प्रकार के मत्स्य कच्छ उन में परिभ्र

सूत्र

गीयरातिगधब्ब हारिसियमणाण गज्ज पज्ज कत्थ गेय पेय दंय पायवद्ध उक्खित्तय पवत्तय मदाय रोविय त्रेसाण सत्तसरसमण्णागाय अट्ठरससुसपउत्त छद्दोसविप्पमुक्क एक्कारस गुणालंकार अट्ठगुणोववेय गुजत वंस कुहरोवगुढ रत्ततित्थाण करणसुद्ध मधुर सम सललिय सकुहरवंसतंती तलताल लयगह ससपउत्त मणोहर रमउयरिभिय पयसंचार हरभिसमइ अणतिरिय चारुरूव दिव्व नट्ट सज्जगेय गीयाण भवेया रूवेसिया ? हंतासिया ॥ ४१ ॥ तस्सण वणखडस्स तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ बहुवे

अर्थ

आठ गुण सहित गुणावमान, बांसली समान पूर्वोक्त स्वरूपवाला उर'शुद्ध, कंठ शुद्ध व शिर शुद्ध ये तीन प्रकार से शुद्ध मधुर स्वर से ललित, मनोहर मृदु स्वर सहित, मनोहर पद के गीत सहित, मनोहर सुनने को आनन्द होवे वैसा उत्तम मनोहर रूप, वाला देवता संबंधी नाटक व सुनने योग्य गायन करे ऐसा उस तृण का स्वर है क्या ? हां गौतम ! ऐसा उस तृण का शब्द है ॥ ४१ ॥ उस वनखण्ड में

१ १ पूर्ण गुन-स्वर कला से पूर्ण गाना, २ रक्तगुन-गायन करने योग्य राग से अनुरक्तपने गाना, ३ अलंकृत गुन अन्योन्य स्वर विशेष से अलंकार जैसे शोभता हुवा गाना, ४ व्यक्त गुन-अक्षर स्वर स्फुट करके प्रगटपने गाना, ५ अविघुष्ट गुन-विपरीत स्वर से बकवाद रहित गाना, ६ मधुर गुन-जैसे वसंतमास में कोकिला का मधुर स्वर होवे वैसा गाना, ७ समगुन-ताल वंश लयादिक को अनुकूल गाना, ८ सललित गुन-स्वरघोलणा से ललित कला सहित गाना

सूत्र

निम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खभा, सुवन्नरुप्पमया फलगा, वइरामयासधी लोहितक्खमइउ सूईआ नाणामणिमया अवलबणा अवलवणबाहाओ, तेसिण तिसो वाण पडिरूवगाण पुरतो पत्तेय २ तोरणा पण्णत्ता, तेण तोरणा णाणामणिमया णाणा मणिमएसु खभेसु उवणिविट्ठ सन्निविट्ठ विविहमुत्तंतरोवइत्ता, विविहतारारूवोवइत्ता, ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किण्णर रुरुसभ चमर कुजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खभुग्गय वइरवेदियाइ, परिगताभिरामा, विज्जाहर जमल जुयलजत जुत्ताविव, अच्चिसहस्स मालणीया रुवसहस्सकलिया भिसमीणा भिब्भिसमीणा चक्खुल्लोयणलेसा

अर्थ

विविध प्रकार के अवलम्बनबाहा है, उन त्रिसोपान के आगे प्रत्येक पंक्तियों पर तोरण है वे विविध प्रकार के मणि रत्नों के हैं, मणिमय स्तंभ पर रहे हुवे हैं, विविध प्रकार के मुक्त फल से वष्टित हैं, विविध प्रकार के ताराओं सहित हैं, ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, पक्षी, मगर, मत्स्य, सर्प, किन्नर रूरू, शरभ, चमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक मनोहर चित्रों से चित्रे हुवे हैं स्तंभ पर वज्रमय वेदिका है, जिस से मनोहर तोरण दिखाता है स्तभ में सूर्य के तेज से अधिक तेजस्वी विद्याधर के युगल हैं सहस्र कीरणवाला सूर्य समान है उस से देदीप्यमान है, विशेष तेज से देदीप्यमान

माण कमलाओ अच्छ विमल सलिल पुण्णाओ, पडिहत्थ भमत मच्छ कच्छभ अणेग सउणगण मिहुण परिवारिताओ पत्तेय२ पउमवर वेदिया परिक्खित्ताओ पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ताओ, अप्पेगतियाओ आसवोदाओ अप्पेगतियाओ वरुणोदाओ, अप्पगतियाओ खीरोदाओ, अप्पगतीआ घओदाओ अप्पगइयाओ इक्खुदाओ, अत्थेगतियाओ पगयातीआ दगरसेण पण्णत्ताओ, पासादियाओ ॥४२॥ तासिण खुड्डग खुड्डियाण वावीण जाव बिलपंतीयाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ जाव तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिणं तिसोपाण पडिरूवगाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते, तंजहा-वयरामया

मण करते हैं, अनेक पक्षीयों के समुह वहां रहते हैं प्रत्येक वावडी को एक २ पद्मवर वेदिका है, और प्रत्येक को एक २ वनखण्ड है किसनीक वावडियों का पानी चद्रहासादिक मदिरा जैसा है, कितनीक का वारुणी समुद्र जैसा है कितनीक का क्षीर समुद्र जैसा है, कितनीक का घृत जैसा है, कितनीक का पानी इक्षु रस जैसा है, कितनीक का पानी अमृत जैसा है, वे प्रासादिक दर्शनीय अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ ४२ ॥ उन छोटी वावडीयों यावत् बिलपंक्तियों में स्थान २ पर त्रिसोपान [छोटे २ पंक्ति] है इन का इस तरह वर्णन कहा है उन पंक्ति की भूमि वज्ररत्नमय है, अरिष्ट रत्न का मूल है, वैडूर्य रत्न के स्थम है, सोने व चांदी के पाटिये हैं, वज्ररत्न की संधी है, लोहिताक्ष रत्न के सीढे हैं,

णिप्पंका णिक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४६ ॥ तेसिण खुड्डियाण वावीण जाव बिलपंतियाण तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे उप्पाय पव्वयगा, णियाति पव्वयगा, जगति पव्वयगा, दारुपव्वयगा, दगमंडवगा, दगमंचगा, दगमालगा, दगपासगा, उसमरदगा, खडहरदगा आंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरिया सज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४७ ॥ तेसुण उप्पायपव्वतेसु जाव पक्खंदोलगेसु बहवे

अर्थ

स्वच्छ सुकुमाल, घटारे, मठारे, रज रहित, निर्मल, पंक रहित, निरावरण कांतिवाले, प्रभा, व उद्योत सहित, प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ ४६ ॥ उन बावडी यावत् बिलपंक्तिओं में उस देश विभाग में उत्पात पर्वत हैं वहांपर व्यंतर देव व देवियों वैक्रय रूप बनाकर क्रीडा करते हैं वैसे ही नियति पर्वत, जगति पर्वत, दारुक पर्वत स्फटिक रत्न के मंडप, स्फटिक के मांचे दग माल, दग प्रासाद हैं वे ऊंचे हैं परंतु लम्बाइ व चौडाइ में छोटे हैं, वहां मनुष्यों का मन आंदोलन होजावे वैसे होने से आंदोलक है पक्षियों वहां झूलते है इस से वह पक्षी का आंदोलक है वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥४७॥ वहां उत्पात पर्वतपर यावत् पक्षांदोलक पर बहुत हंस के आकार वाले आसन, गरुडासन,

सुहफासा समिरियरूवा पासादिया॥४३॥तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मगलगा पन्नत्ता सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाण भद्दासण कलस मच्छ दप्पण सव्वरतना मया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ ४४ ॥ तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे कण्हचामर-ज्झया नीलचामरज्झया जाव सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जालयामलगंधिया सुरूवा पासादिया ॥ ४५ ॥ तेसिण तोरणाण उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला, उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला

है, चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्शवाला सश्रीक व चित्त का प्रसन्नकारी है ॥४३॥ उन तोरणों पर आठ २ मंगलक कहे हैं, तद्यथा १ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश ७ मत्स्य युग्म व ८ दर्पण ये सब रत्नमय स्वच्छ, सुकुमाल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४४ ॥ उन तोरण पर बहुत प्रकार की कृष्ण चमर की ध्वजा, नील चमर की ध्वजा, लाल चमर की ध्वजा, पीत चमर की ध्वजा, श्वेत चमर की ध्वजा हैं वे स्वच्छ, सुकुमाल, चांदी का पट्टा वज्र रत्न का दंड वाली हैं कमल समान गंध वाली सुरूप व प्रासादिक हैं ॥ ४५ ॥ उन तोरणोंपर छत्रपर छत्र ध्वजापर ध्वजा, घंटा युगल, चमर, युगल, अनेक, उत्पल कमल, यावत् लक्ष पत्र कमल रहे हैं वे सब रत्नमय

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अप्फोया मंडवगा, अमेत्ता मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइके मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइके मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइ गरुलासणाइ कोंचासणाइ उण्णयासणाइ पणयासणाइ दीहासणाइ भद्दासणाइ पक्खासणाइ मयूरासणाइ, उसभासणाइ सीहासणाइ पउमासणाइ दिसासोवत्थियासणाइ, सव्वरयणामयाइ, अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ णीरयाइ निम्मलाइ निप्पंकयाइ, जाव ससिरीयाइ, सउज्जोयाइ, पासादियाइ दरिसणिज्जाइ अभिरूवाइ, पडिरूवाइ ॥ ४८ ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे तहिं २ बहव आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गधव्वघरगा आयसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घसारे, मठारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्री व उद्योत सहित प्रसन्नकारि, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदली गृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह मोहनगृह, पटशालगृह, जाल गृह, चालीगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेसुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासातिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफोया मंडवगा, अमेच्छा मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसुमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेसुण जातिमंडवएसु जाव सामलया

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइ के मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अमित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

हंसासणाइ गरुलासणाइ कौंचासणाइ उण्णयासणाइ पणयासणाइ दीहासणाइ भद्दासणाइ पक्खासणाइ मयूरासणाइ, उसभासणाइ सीहासणाइ पउमासणाइ दिसासोवत्थियासणाइ, सव्वरयणामयाइ, अच्छाइ सण्हाइ लण्हाइ घट्ठाइ मट्ठाइ णीरयाइ निम्मलाइ निप्पंकयाइ, जाव ससिरीयाइ, सउज्जोयाइ पासादियाइ दरिसणिज्जाइ अभिरूवाइ, पडिरूवाइ ॥ ४८ ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे तहिं २ बहव आलिघरा मालियाघरा कयलिघरगा, लयघरगा, अच्छणघरगा, पेच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा सालयघरगा जालय घरगा कुसुमघरगा चित्तघरगा गधव्वघरगा आयसघरगा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला, णिप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा-

क्रौंचासन, उन्नतासन, नम्रासन, दीर्घासन, भद्रासन, पक्षासन, मयूरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन, दिशास्व स्वस्तिकासन बिछे हुवे हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ, कोमल, घटारे, मटारे, रज रहित निर्मल, पंक रहित, निरुपहत कांति वाले, प्रभा, श्रीय उद्योत सहित प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥४८॥ उस वनखण्ड में स्थान २ पर बहुत आलिनामक वनस्पतिगृह, मालिगृह, कदली गृह, लतागृह, आस्थानगृह, प्रेक्षणगृह, मज्जनगृह, प्रसाधनगृह, गर्भगृह, मोहनगृह, पट्टशालगृह, जाल गृह, चित्रगृह, कुसुमगृह, चित्रगृह,

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पाडिरूवा ॥ ४९ ॥ तेमुण आलिघरएसु जाव आयघरएसु बहूइ हंसासणाइ जाव दिसासोवत्थियासणाइ सव्वरयणामयाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ५० ॥ तस्सण वणसंडस्स तत्थ २ दसे २ तहिं २ बहवे जाइमंडवगा जूहिया-मंडवगा मल्लिया मंडवगा णोमालियामंडवगा वासंतिमंडवगा दहिवासुया मंडवगा सूरिल्लि मंडवगा, तंबोली मंडवगा, मुद्दिया मंडवगा, णागलया मंडवगा, अतिमुत्त मंडवगा, अफोया मंडवगा, अमेचा मंडवगा, मालुया मंडवगा, सामलया मंडवगा, निच्च कुसमिया निच्च जाव पडिरूवा ॥५१॥ तेमुण जातिमंडवएम जाव सामलया

अर्थ

गर्भगृह, व आरिसागृह हैं वे सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ४९ ॥ उन आलिगृह में बहुत हंसासन यावत् दिशास्वस्तिकासन हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ५० ॥ उस वनखण्ड में बहुत जाइ मंडप, जूइ के मंडप, मल्लिका के मंडप, नवमालिका के मंडप, वासंति के मंडप, दधिवासुकी के मंडप, सूरिल्ली मंडप, नागरवल्लि के मंडप, द्राक्ष के मंडप, नागलता मंडप, अतिमुक्त के मंडप, आस्फोट मंडप, अभित्ता वनस्पति के मंडप, मालुका मंडप व श्यामलता मंडप हैं वे सदैव पुष्प फल वाले यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५१ ॥ उन जाइ के मंडप यावत् श्यामलता मंडप में बहुत पृथ्वी शिला पट कहे हैं वे हंस के

मच्छएसु बहवे पुढवी सिलापट्टगा पण्णत्ता तंजहा-हंसासणा संठिता कोंचासणसंठिता गरुलासणा संठिता उण्णयासण संठिता पणयासण संठिता, परितासण संठिया, दीहासण संठिया, भद्दासण संठिता, पक्खासण संठिया, चमरासणसंठिया, सीहासणसंठिया, पउमासणसंठिया दिसासोवत्थियासणसंठिया पण्णत्ता ॥ तत्थ बहवे वरसयणासणविसिट्ठ संठाण संठिया पण्णत्ता समणाउसो ? आईणगरुय बूर णवणीत तूलफास मउया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ५२ ॥ तत्थण बहवे

संस्थान वाले, गरुडासन के संस्थान वाले, उन्नतासन के संस्थान वाले, नम्रासन के संस्थानवाले परिघासन संस्थान वाले दीर्घासन के संस्थान वाले, भद्रासन के संस्थान वाले, पक्षासन के संस्थान वाले, चमरासन वाले, वृषभासन के संस्थान वाले, सिंहासन के संस्थान वाले, पद्मासन के संस्थानवाले व दिशा स्वस्तिकासन के संस्थानवाले हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे बहुत शयनासन विशिष्ट संस्थान वाले कहे हुवे हैं उस का स्पर्श मृगचर्म, बूर वनस्पति, मक्खन, व अर्कतूल जैसा सुकोमल है वे सब रत्नमय स्वच्छ, कोमल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ५२ ॥ वहां बहुत वाणव्यन्तर

वाणमंतरा देवा देवीओय आसयति सयतिय चिट्ठति निसीदति तुयट्टति रमति ललति कीलयति मोहयति पुरापोराण सुचिन्नाण सुपरक्कताण सुभाण कताण कल्लाण कम्माण फलविचिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहराति ॥ ५३ ॥ तीसेण जगतीये उप्पि अतो पउमवरवेदियाए एत्थण एगे महं वणसंडे पण्णत्ते, देसूणाइं दो जोयणाइं विक्खंभेण वेइयासमएण परिक्खेवेण किण्हे किण्होभास वणसंडवन्नओ तणसद्दविहुणो णेयव्वो तत्थण बहवे वाणमंतरा देवा देवीओय आसयति सयति चिट्ठति निसीयति तुयट्टति रमति ललति कीडति पुरापोराणाण सुचिन्नाण सुपरिक्कताण सुभाण कताण कम्माण कल्लाण फलविचिविसेस पच्चणुब्भवमाणा विहराति ॥ ५४ ॥ जम्बुद्वी-

देव व देवियों आते हैं बैठते हैं, सोते हैं खेलते हैं, क्रीडा करते हैं, मोहित होते हैं और पूर्व भव में अच्छी तरह आचरण किये हुए कल्याणकारी कर्मोंका फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५३ ॥ उस जगती के उपर व पद्मवर वेदिका की अंदर एक बडा वनखण्ड है यह कुच्छ कम दो योजन का चौडा है और वेदिका समान परिधिवाला है वह कृष्ण वर्णवाला व कृष्णाभास वगैरह वनखण्डका वर्णन तृण शब्द रहित सब कहना यहां बहुत वाणव्यतर देव व देवियों बैठते हैं सोते हैं, खेलते हैं व क्रीडा करते हैं पूर्व भव में आचरण किये हुए कल्याणकारी शुभ कर्मोंका फल भोगते हुवे विचरते हैं ॥ ५४ ॥ अथ

बस्सण भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा– विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीस जोयणसहस्साइं आबाहाए जंबूदीवे २ पुरत्थिमापरते लवणसमुद्द पुरिच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीताए महानदीया उप्पिं एत्थण जंबुदीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, तावतियं चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर आवे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौडा है चार योजन का प्रवेश है श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां इहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यंतरदेव,

सेता वरकणगथूमियाए ईहामिय उसभ तुरग नर मगर विहग वालग किंनर रुरु सरभ चमर कुजर वणलयपउमलयभत्तिचित्ते खंभुग्गतवइरवेदियाए परिगताभिरामे विज्जाहरजमलजुयलजंत्तजुतइव अच्चिसहस्स मालिणीए रूवगसहस्स कलिते भिसमीणे भिब्भिसमीणे चक्खुलोयणलेसे सहफासे सस्सिरियरूवे वण्णओ दारस्स तंजहा—वयरामयाणिम्मा, रिट्ठामया पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा जायरूवोवचिता पाईर पंचवण्ण मणिरयण कोट्टिमतले हंसगब्भमये एलुए, गोमेज्जमते इदखीले, लोहित

रुरु, सरभ, चवरी गाय, अष्टापद वनलता व पद्मलता, इत्यादिक चित्रों से चित्रित हैं स्थंभपर उत्तम वेदिका है यह मनोहर है वे स्थंभ विद्याधर के युगल के आकार सहित हैं सूर्य के हजारों कीरणों के तेज से उस का तेज अधिक है हजारों प्रकार के रूप सहित हैं, विशेष तेजसे देदीप्यमान चक्षु को देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है सश्रीक रूप है वज्ररत्न की उस की नीव है अरिष्टरत्नमय प्रतिस्थान है वैडूर्य रत्नमय स्थंभ है सुवर्ण वृद्धि उत्तम प्रकार के पांच वर्ण वाले मणिरत्नों से भूमितल बना है हंसगर्भ रत्नमय देहली है गोमेद रत्नमय मनोहर इन्द्र कील-भागका भाग है लोहिताक्ष रत्नमय चारसाख है ज्योतिष रत्नमय द्वार के उपर का भाग है, वैडूर्य रत्नमय कमाड है वज्ररत्नमय सधी है लोहिताक्ष

वस्सण भंते ! दीवस्स कति दारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा– विजये वेजयंते जयंते अपराजिए ॥ ५५ ॥ कहिण भंते ! जंबुद्दीवस्स दीवस्स विजयेणाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेण पणयालीस जोयणसहस्साइं आबाहाए जंबूद्दीवे २ पुरत्थिमपेरंते लवणसमुद्द पुरच्छिमद्धस्स पञ्चत्थिमेण सीताए महाणदीया उप्पिं एत्थण जंबुदीवस्स २ विजयेनाम दारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, तावतियं चेव पवेसेण

जम्बूद्वीप के द्वार का अधिकार कहते हैं अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप को कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप को विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ऐसे चार द्वार कहे हैं ॥ ५५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के पूर्व के अंत में लवण समुद्र से पूर्व दिशा के पश्चिम विभाग में सीता महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का विजय द्वार कहा है वह आठ योजन का ऊंचा व चार योजन का चौड़ा है चार योजन का प्रवेश है, श्वेत वर्ण का है प्रधान कनकमय शिखर है वहां श्वापद, वृषभ, अश्व, मनुष्य मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यन्तरदेव,

ल्लुयाओ, रययामयी पट्टिका, जातरूवमयी उढाहणी, वइरामयी उवरि पुछणी सव्वसेत रययामयेच्छायणे, अकामए कणगकूड तवणिज्जथूभियाए, से ते सखतल विमल णिम्मल दधिघण गोखीर फणरययणिकरप्पगासे तिलगरयणद्धचदचित्ते णाणामणिमयदामालकिए, अतो बहिंचसण्हे, तवणिज्ज रुइल वालुया पत्थडे, सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासादीये ॥५६॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहतो णिसिहियाए दादो चदणकलस परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तण चदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा, चदण

आच्छादन है उस पर श्वेत चांदी का आच्छादन है, अंकरत्नमय पक्षबाहा है, सुवर्ण का शिखर है, उस पर सुवर्णमय भूमिका है, श्वेत दक्षिणावर्त शंख का ऊपर भाग, निर्मल दधि का पिंड, गाय का दुध, समुद्र फेन, चांदी का पुंज समान उस का श्वेत प्रकाश है, तिलक रत्न व अर्ध चंद्र सहित अनेक प्रकार के चित्र हैं, विविध प्रकार के रत्न की माला से द्वार का मुख शोभित है, आभ्यंतर व बाह्य सुकोमल है, उस द्वार में सुवर्णमय वालु है शुभ स्पर्श है सश्रीक रूपवाला है प्रसन्नकारी, देखने योग्य यावत् प्रति रूप है ॥ ५६ ॥ उस विजय द्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे हैं उस पर चंदन से लेपन कराये हुवे दो २ कलश हैं वे कलश उत्तम कमल पर स्थापन किये हुवे हैं, सुगंधी उत्तम पानी से परिपूर्ण भरे

वखमईठ दारविंडाओ जोतिरसामता उंबा। वेरु लियामया कवाडा,वइरामया लाधीसधी रोहितक्खमय साआ सूयीओ मानामाणिमया समुग्गया वइरामइअग्गला अग्गलपासाया वइ-रमती आवतणपेढिया अकुतर पासके निरतरित घणकवाडे भित्तीसुचव भित्तीगुलिया छप्प-नगी तिण्णि होंति गोमाणसीततिया णाणामणिरयण वालरूवग लीलट्ठिय सालभंजियाए, वइमयारा कूडा रययामए उस्सेह सव्वतवणिज्जमये उल्लोये णाणामणि रयणजाल पंजरमणि वसग लोहितक्ख पडिवसरयत भोम्मे अकामया पक्खवाहाउ,जोतिरसामयावंसा वंसकवे

रत्नमय खीले हैं विविध प्रकार के मणिमय समुद्गक हैं वज्ररत्नमय अर्गल है अर्गल का स्थानभी वज्र रत्नमय है वज्ररत्नमय आवर्तन है अंकरूपमय रंग के दो पासे हैं अतर रहित निबिड अखंड कमाड है, १६८ साने के चबुतर हैं, उन पर १६८ सिके हैं विविध प्रकार के मणिमय पालरूप लीला सहित पुतलियों हैं, वज्ररत्नमय शिखर है, चांदीमय उपर की पीठिका है सब सुवर्णमय है विविध प्रकार के मणिमय रत्न की जाल का गवाक्ष है, मणिमय उपर का वंश है, लोहिताक्षरत्नमय प्रतिवंश हैं, चांदीमय भूमिका है अंकरत्नमय पक्ष बाह है और अन्य भी स्तंभ है, ज्योतिष रत्नमय वंश है, ज्योतिष रत्नमय कवलु है, चांदी की पट्टी है, सुवर्णमय पतली लकडियों हैं, वज्ररत्नमय तृण समान

सूत्र

वघारितमल्लदामकलावा जाव सुक्किलसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा तेण दामा तव णिजलबूसगा सुवण्णपतरगमंडिता णाणामणिरयण विविहहार जाव सिरीये अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठति, तेसिण नागदंतकाण उवर अण्णाओ दो दोनागदत परिवाडीओ पण्णत्ताओ एतोमेण नागदंतगाण मुत्ताजालंत भूसिगा तहेव जाव समणाउसो तेसुण नागदंतएसु बहवे रयआमया सिक्कया पण्णत्ता तेसुण रयणामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलिया मइओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ ताओण धूवघडीओ कालागुरु पवरकुदुरुक्क तुरुक्कधूव मघमघतगंधद्धताभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ

अर्थ

उन नागदंत में बहुत कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से बंधी हुई लम्बी पुष्पकी मालाओं के समुह लगाये हुवे हैं, उन मालाओं को सुवर्ण के लुम्बक हैं, वे सुवर्णकी पत्री से मंडित है, वे विविध प्रकार के मणि रत्नमय व विविध प्रकार के हार से यावत् शोभा में अतीव २ शोभते हुवे रहते हैं ॥ ५९ ॥ उन नागदंत पर दूसरे दो २ नागदंत की परिपाटी कही है वे मोतियों की माला से सुशोभित है वगैरह पूर्ववत् इस का वर्णन जानना उन नागदंत को बहुत रत्नमय सिके है, उन सिके में अति शोभनिक वैडूर्य रत्नमय धूप के कुरच्छे हैं वे कृष्णागुर कुरुरुक वगैरह उत्तम धूप से मघमघायमान व उत्कृष्ट

कयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा वउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, महया महिंद कुंमसमाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५७ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो णिसीहियाते दोदो णागदंत परिवाडीओ, तेण णागदंतगा मुत्ताजालंतरूसिया हेमजालगवक्ख जालखिंखि णिजाल घंटाजाल परिक्खि-इत्ता, अब्भुग्गता अभिणिसिट्ठा तिरियमु सपरिग्गहिता अहेपण्णगद्धरूवा पण्णगसंठाण संठिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ गजदंत समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ५८ ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टव

हुवे हैं, कलश पर बावने चंदन के छींटे डाले हुवे हैं, उस के कंठ में सूत्र के धागे बंधे हुवे हैं, उन को कमल के ढकन है, वे सब रत्नमय स्वच्छ सुकोमल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वे बडे महेन्द्र कुंभ समान है ॥ ५७ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उन पर दो २ गजदंत समान खीले हैं. उन्हे बहुत मोतियों की माला, लम्बायमान सुवर्ण की माला, गवाक्ष के आकार से रत्न की माला व घुघरमाल प्रमुख लगाइ हैं, ये गजदंत किंचिन्मात्र ऊंचे हैं सन्मुख नीकले हुवे हैं, तीर्च्छे भित्ति प्रदेश में अच्छी तरह रहे हुवे हैं, नीचे अर्ध सर्प के आकारवाले हैं, वे सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों ! वैसे नागदंत हाथी के दांत समान कहे हैं ॥ ५८ ॥

हत्यग्गाहितग्गसालाओ, वेल्लितग्गासिरयाओ पसत्थलक्खणसंवेल्लितग्गासिरया, ईसं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठितहिं, लूसेमाणीतोइव चक्खूलोयणलेस्साहिं अण्णमण खिज्ज-माणीआइव पुढवि परिणामाआ सासय भावमुवगताओ चंदाणाओ चंदविला-सिणीओ चंदद्ध समनिडालाओ चंदाहियसोमदंसणीओ उक्काइवउज्जोएमाणीआ विज्जुघणमरीचि सूरदिप्पनते अहियरसनिकासाओ सिंगारागार चारुवेसाओ पासाइया तेयसा अतीव २ उवसोभेमाणीओ २ चिट्ठति ॥ ६१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहतो निसीहिताए दो दो जालकडगा पण्णत्ता, तेण

लक्षण युक्त वेणि वाले केश हैं, अशोक वृक्ष को किंचित् मीलता हुवा शरीर है वाये हाथ से अशोक वृक्ष की शाखा ग्रहण की है, किंचित् कटाक्ष से देव मनुष्य के मन हरण करती हुई व देखने मे हास्य करती होवे वैसी पुतलियों पृथ्वीमय शाश्वत भाव में प्राप्त है अर्थात् शाश्वती हैं उन का मुख चंद्र समान है चंद्र समान विलास है, चंद्र समान ललाट है, चंद्र से भी अधिक सौम्य दर्शन वाली है, उल्कापात जैसे उद्योत करने वाली है, मेघविद्युत से देदीप्यमान है, सूर्य से भी देदीप्यमान प्रकाश वाली है सोलह शृंगार व आकार से मनोहर वेष वाली है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है व तेज से

उरालेण मणुण्णाण घाण मण णिव्वुइकरेण गंधेण, तेएपएसु सव्वओ समता आपूरेमाणीओ २ अतीव २ सिरीए जाव चिट्ठति ॥ ६० ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहतो णिसीहियाए, दो दो सालभंजिया परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ सुपतिट्ठियाओ सुअलंकियाओ णाणाराग वसणाओ णाणामल्लपिणिद्धाओ मुट्ठीगेज्झसु मज्झियाओ आमेलग जमल जुयल वट्टिय, अब्भुणयपीणरतितसंठियपओहराओ रत्तावंकाओ असियकेसीओ मिदुविसय पसत्थलक्खण संवेल्लितग्गसिरयाओ ईसिं असोगवर पायव समुट्ठिताओ वाम-

अर्थ

गंध से मनोहर हैं, श्रेष्ठ सुगंध वाले हैं गंधवर्ती भूत हैं उदार मनोज्ञ घाण व मन को आनंद करने वाली गंध से सब दिशी में चारों तरफ पूर्ण हुई यावत् अत्यंत शोभती है ॥ ६० ॥ विजय द्वार की दोनों तरफ दो चबुतरे हैं उनपर दो पूतलियों की पंक्ति है वे पूतलियों अपनी लीला में रही हुई है अच्छी तरह स्थापन की हुई है अच्छी तरह अलंकृत बनाई हैं विविध प्रकार के वस्त्र पहिनाये हुए है, विविध प्रकार की मालाओं कण्ठ में पहिनाई है, मुष्टिमें ग्रहण करे ऐसा कटि प्रदेश पकडा हुवा है, शिखर समान गोल तथा दृढ पीन युक्त पयोधर हैं, नख का अर्ध भाग रक्त है, श्याम वर्ण के काले केश है, कोमल निर्मल अच्छे

साओ सुस्सराओ सुस्सरणिघोसाओ ते पदेसे उरालेण मणुण्णेण कण्णमणनिव्वुइकरेण सद्देण जाव चिट्ठति ॥६३॥ विजयस्सण दारस्स उभओपासिं दुहओ निसीहियाए दो दो वणमाला परिवाडीओ पण्णत्ताओ, ताओण वणमालाओ नाणादुमलय किसलय पल्लव समाउलाओ छप्पय परिभुज्जमाण कमलसोभत सस्सिरीयाओ पासाइयाओ ४ ॥ तिपदेसे उराले जाव गधेण आपूरेमाणीओ २ जाव चिट्ठति ॥ ६४ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहता निसीहिताए दो दो पगठगा पण्णत्ता, तेण पगठगा चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण दो जोयणाइ बाहल्लेण सव्ववइरामता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६५ ॥ तेसिण एय ओगाण उवरिं पत्तेय २

अर्थ विभाग उदार मनोज्ञ व कर्ण को सुख उत्पन्न करे वैसा शब्द से यावत् रहा हुवा है ॥ ६३ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ वनमाला की परिपाटी कही है वे वन लता विविध प्रकार के वृक्षलता व अकूरों सहित हैं उनको भ्रमर भोगवे है जिस से मनोहर व देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है वहां का प्रदेश भी उदार यावत् गध से पूरता हुवा यावत् रहता है ॥ ६४ ॥ विजयद्वार के दोनों बाजु दो चबुतरे पर दो २ बारकने बाले चबुतरे हैं वे चार योजन के लम्बे चौडे व दो योजन के जाडे हैं सब वज्ररत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ६५ ॥ उन प्रत्येक बारकूने

जाल कडगा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा नीरया निम्मल णिक्कपा निक्ककडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासदीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६२ ॥ विजयस्सण दारस्स उभतोपासिं दुहओ निसीहियाए दोदो घटा परिवाडीओ पण्णत्ताओ, तासिण घटाण अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा— जबूणतामती घटाओ वइरामतीउलालाओ, णाणामणिमया घटा पासगा तवाणि ज्जमताओ सकलाओ रययामइउरज्जूओ ताउण घटाओ ओहस्सराआ मेहस्सराओ हसस्सराओ, कोंचस्सरओ, णदिस्सराओ, णदिघोसाओ, सीहस्सराओ सीहघोसाओ मजुस्सराओ मजुघो

अत्यत २ सुशोभित बनी हुई रहती हैं ॥ ६१ ॥ विजय द्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं जिनपर दो पाकि कटक-करा के समुह हैं वे सब रत्नमय, स्वच्छ निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६२ ॥ विजयद्वार की दोनों बाजु दो चबुतरे हैं उनपर दो घंटा हैं इन का इस तरह वर्णन है जम्बूनद रत्न की घंटा है वज्र रत्नमय लोलक है, विविध प्रकार के मणियों के पासे करे हैं सुवर्ण की सकल है, चांदी की रस्सी है, उस घंटा का ओघस्वर है, मेघ समान स्वर है हंस समान स्वर है, क्रौंच समान स्वर है, नंदी जैसा घोष है, सिंह जैसा घोष है, सिंहस्वर है, सिंह घोष है, सुस्वर है. सुघोष है. यहां का

पासतीया ॥ ६६ ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण पत्तेय २ अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणीहिं उवसोभिए मणीण गधोवण्णो फासोय णेयव्वो ॥ तेसिण पासायवडेंसगाण उल्लोया पउमलया जाव सामलया भत्तिचित्ता सव्वतवणिज्जमता अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ६७ ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्व रयणामईओ जाव पडिरूवाओ॥ ६८ ॥ तासिण मणिपेढियाण उवरि पत्तेय २

अर्थ

मनोहर रूप वाले, दर्शनीय यावत् प्रतिरूप हैं॥ ६६ ॥ उन प्रत्येक प्रासादावतसकमें बहुत सम रमणीय भूमि भाग है यथा दृष्टांत आलिंग पुष्करनामक वादित्र के तल समान यावत् मणि से सुशोभित भूमि भाग है इन का वर्ण गंध स्पर्श पूर्ववत् जानना वहां प्रासादावतसक में पद्मलता यावत् श्यामलता नामक वनस्पति के चित्रों है वे सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ६७ ॥ उस रमणीय भूमि भाग के मध्य बीच में मणिपीठिका रही हुई है वे एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है, ॥ ६८ ॥ प्रत्येक मणि पीठिका उपर एक २ सिंहासन हैं इस का वर्णन

सूत्र

पासाय वडिंसगा पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसगा चत्तारि जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण, दो जोयणाइ आयामविक्खभेण अब्भुग्गयमूसित पहसिताविव विविहमणिरयण भत्तिचित्ता, वाउद्धयविजयवेजयती पडाग छत्तातिछत्तकलिता तुगा गगणतल मभिलघमाणसिहरा, जालतर रयणपजर मिलियव्व मणि कणय थूभियग्गा वियसिय सयवत्तपोंडरीय तिलकरयणद्ध चदचित्ता णाणामणिमयदामालकिया अतोय बाहिंच सण्हा तवणिज्जरुइल वालुया पच्छडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा

अर्थ

पाळ वधुनरे पर एक २ प्रासादावतसक है, वे चार योजन के ऊंचे हैं, दो योजन के लम्बे चौडे हैं सब दिशा में प्रसरी हुइ कांति युक्त है, विविध प्रकार के चन्द्रकांतादि मणि व कर्केतनादि रत्न की रचना से आश्चर्यकारी हैं, वायु से कंपित विजय वैजयंत नामक ध्वजा है, व छत्र उसपर छत्र इस से सहित हैं, आकाश उल्लघन करते होवे इतने ऊंचे उस के शिखर हैं, मीतो की जालियों में शोभा निमित्त रत्न स्थापन किये हैं पंजर में से बाहिर निकाले जैसा अर्थात् जैसे किसी ढकी हुई वस्तु को खोलने से प्रकाश वाली दीखती है वैसे प्रकाशमय है मणि कनकमय शिखर है विकसित शतपत्र व पुंडरीक तिलक रत्न व अर्धचंद्र वगैरह से वे आश्चर्यकारी हैं विविध प्रकार के मणिमय माला से अलंकृत है, अंदर बाहिर का प्रासाद का द्वार सुकोमल है, इस में खास सुवर्ण की वालु बिछाइ हुइ है, सुखकारी स्पर्श सश्रीक

पासाईया ॥ ६८ ॥ तेसिण सीहासणाण उप्पिं पत्तेय २ विजयदूसे पण्णत्ते, तेण विजयदूसा सेया सख कुंद दगरय अमत महियफेण पुंजसण्णिकासा, सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ ६९ ॥ तेसिण विजयदूसाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ वइरामया अकुसा पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु अकुसेसु पत्तेय पत्तेय कुंभिक्का मुत्तादामा पण्णत्ता, तेण कुंभिक्का मुत्तादामा अण्णेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमित्तेहिं अद्ध कुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, तेण दामा तवणिज्ज लबूसका सुवण्ण पयरमंडिता जाव

अर्थ

र्स का स्पर्श देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥ ६८ ॥ उस सिंहासन पर अलग २ विजय दूष्य (छत्र में बांधने का) है यह विजय दूष्य श्वेत शंख, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत, समुद्र फेन इत्यादिक समान श्वेत वर्ण का है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ ६९ ॥ उस विजय दूष्य वस्त्र के मध्य भाग में अलग २ वज्ररत्नमय अकुश कहे हुए हैं उन अकुशों में कुंभ प्रमाण मोति की मालाओं कही है, कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं की पास अन्य अर्ध कुंभ प्रमाण मोती की मालाओं हैं, चारों तरफ वींटी हुई हैं ये मालाओं सुवर्ण के लुमके वाली, सुवर्ण के प्रतर से मंडित यावत् रही

सूत्र

सीहासणा पण्णत्ते, तेसिणं सीहासणाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तंजहा-तवणिज्जमया चक्कला, रययामया, सीहा सोवण्णियापादा णाणामणिमयाइं पायपीढगाइं, जंबूणयामयाइं गत्ताइं वइरामयासंधी, णाणामणिमये वच्चे ॥ तेणं सीहासणा ईहामिय उसभ जाव पउमलय भत्तिचित्ता सुसारसारोवइतविविहमणिरयणपादपीठा अच्छरगमउयमसुरग नवतयकुसंत लिम्बसीहकेसरपच्चुत्थाभिरामा उयवियक्खोमदुगुल्लपट्टपडिच्छणया सुविरति तरयत्ताणा रत्त सुयसवुता सुरम्मा आतीणगरुयबूरणवणीततूलमउफासा,

अर्थ

करते हैं सिंहासन के चक्कवाल (पाये) के नीचे का प्रदेश सुवर्णमय है, चांदी का सिंहासन है, मणिमय पाये हैं, विविध प्रकार के रत्नमय पाये का बंधन है, जम्बूनद रत्नमय गात्र हैं, वज्र रत्नमय संधी पूरी हुई है, विविध रत्नमय सिंहासन का तला है यह सिंहासन हस्ती मृग यावत् पद्मलता के चित्रों से चित्रित हैं प्रधान प्रकार के श्रेष्ठ विविध मणिरत्नों की पाद पीठिका है, कोमल मसुरमय, मखमल दर्भ तथा सिंह की केसरी समान सुकोमल वस्त्र के आच्छादन से मनोहर दीखता है सुंदर अलसी का वस्त्र, कपास का सूत्र व रेशम के वस्त्र का रजस्राण (आच्छादन) है और भी रत्न का अलसीमय पर्यंच्य वस्त्र से सिंहासन अच्छी तरह ढका हुवा है, वे पुष्प मखमल, अर्क, तूल, रुइ समान कोमल है

तोरणाण पुरतो दो दो हयसघाडगा जाव उसभसघाडगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा,॥एव पतीउ वीहीओ मिहुणा दो दो पउमलयाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो अक्खय सोवत्थिया पण्णत्ता तेण अक्खय सोवत्थिया सव्व रयणामया जाव पडिरूवा तेसिण तोरणाण दो दो दो चदणकलसा पण्णत्ता तेण चदणकलसा वरकमल पतिट्ठाणा जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा समणाउसो! तेसिण तोरणाण दो दो भिंगारगा प० वरकमल पइट्ठाणा जाव सव्वरयणामया, पण्णत्ता अच्छा जाव पडिरूवा महया २ मत्तगय महामुहागिई ते समाणा पण्णत्ता समणाउसो!॥७२॥तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो आदसगा पण्णत्ता,तेसिण आदसगाण

अर्थ

आगे दो दो घोड के समुह यावत् वृषभ के समुह कहे हैं ये सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है यों सब पूर्ववत् पंक्तियों, दो २ वीथियों, दो मिथुन (स्त्री पुरुष के) यावत् दो पद्म लताओं हैं यहां पर्यंत कहना वे सब सर्वरत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं, उन तोरणों के आगे अक्षत स्वास्तिक कहे हैं वे रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं उन तोरणों के आगे दो कलश कहे हुवे हैं वे चदन कलश श्रेष्ठ प्रधान कमल में रहे हुवे यावत् सब सर्वरत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों! वे कलश मदोन्मत्त हस्ती की मुखाकृति समान हैं॥ ७२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ काच के आरीसे हैं

सूत्र

चिट्ठति ॥ ७० ॥ तेसिण पासायवडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता—सोत्थियसीहे तहेव जाव छत्ता ॥ ७१ ॥ विजयस्सण दारस्स उभओ पासिं दुहओ निसीहियाए दो दो तोरणा पण्णत्ता, तेण तोरणा णाणामणिमया तहेव जाव अट्ठट्ठ मंगलगाधया छत्ताति छत्ता ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो सालिभंजियाओ पण्णत्ताओ जहेव हेट्ठा तहेव ॥ तेसिण तोरणाणं पुरतो दो दो णागदंतगा पण्णत्ता, तेण णागदंतगा मुत्ता जालंत भूसिया, तहेव ॥ तेसुण णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्त वट्टवग्घारित मल्ल दामकलावा जाव चिट्ठति ॥ तेसिण

अर्थ

हुई है ॥ ७० ॥ उन प्रासादावतंसक पर बहुत प्रकार के आठ २ मंगल कहे हैं स्वस्तिक, सिंहासन यावत् छत्र ॥ ७१ ॥ उन, विजयद्वार की दोनों बाजु दो २ चबुतरे कहे हैं उनपर दो २ तोरण हैं वगैरह यावत् आठ २ मंगल में छत्र पर छत्र पर्यंत कहना उन तोरणों की आगे दो २ पुतलियों कहा है इन का वर्णन जैसे पूर्वोक्त पुतलियों का कहा वैसे ही जानना उन तोरणों के आगे दो २ नागदंत कहे हैं वे मोतियों की मालाओं से अलंकृत बने हुए हैं वगैरह पूर्वोक्त जैसे सब जानना उन नागदंत को बहुत कृष्ण वर्ण के सूत्र से बंधी हुई पुष्प की मालाओं के समुह यावत् रहे हुवे है उन तोरणों के

अच्छोदयपडिहत्थाओ णाणाविह पचवण्णस्स फलहरितगरस बहु पडिपुण्णाओ विवि-
चिट्ठति सव्वरयणामईओ जाव पडिरूवाओ महया २ गोलिंगचक्क समाणाओ पण्णत्ता
समणाउसो ! ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो सुपइट्ठगा पण्णत्ता, तेण
सुपतिट्ठगा णाणाविह पसाहणगभडविरतियाए सव्वोसहिषा पडिपुण्णा सव्वरयणामया
अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७६ ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो मणगुलियाउ
पण्णत्ताओ, तासुण मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुण
सुवण्णरुप्पमयेसु फलयेसु बहवे वइरामया णागदतगा पण्णत्ता, तेण नागदतगाणं

पानी से भरी हुई हैं अनेक प्रकार के पांच वर्ण के फल से प्रतिपूर्ण है वे पात्री सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं अहो आयुष्यवन्त श्रमणों वे पात्रियों गाय भमख को चांदा देने के टोपले जितनी बडी है ॥ ७५ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ सुप्रतिष्ठक भाजन विशेष है वे अनेक प्रकार के आभरण से भरे हुवे हैं सब औषधि से प्रतिपूर्ण है सब रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे दो मनोगुलिका है उन में बहुत सुवर्णमय रजतमय पटियें है उन पटियों में बहुत बडा रत्नमय नागदंत हैं. उन का कथन पूर्ववत् मानना उन नागदंतों में बहुत चांदी के सिके हैं उन चांदी

अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा-तवणिज्जमता पयथगा वेरुलियमयाच्छदहा, वइरामयावारगा, णाणामणिमया वलक्खा अकामता मंडला अणोग्घसिय निम्मलाए छायाए सततोचेव समणुबद्धा चंदमंडल पडिणिगासा महता २ अद्धकाय समाणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ७३ ॥ तेसिणं तोरणाणं पुरतो दो दो वइरणाभथाला पण्णत्ता, तेणं थाला अच्छतिच्छडिय सालि तंदुलणह संदट्ठबहु पडिपुण्णा, चिवचिट्ठंति सव्वजंबूणयामया अच्छा जाव पडिरूवा, महता २ रहचक्क समणा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ ७४ ॥ तेसिणं तोरणाणं पुरतो दोदो पातीओ पण्णत्ताओ, ताओणं पातीओ

इस का वर्णन करते हैं सुवर्ण रत्नमय प्रकंठक पीठ विशेष है, वैडूर्य रत्नमय मतिबधन है, वज्ररत्नमय दाबा, विविध मणि रत्नमय शृंखला आदि रूप अवलंबन, अंक रत्नमय काच है जिस को बिना मांजे ही स्वच्छ कांति है, इस से सब दिशी में अनुबंध सहित है चंद्रमंडल समान व अर्धकाया समान वे आरीसे कहे हैं ॥ ७३ ॥ उन तोरणों को आगे वज्र की नाभी समान दो थाल कहे हैं उन में शुद्ध स्फटिक समान तीनवार शुद्ध किये हुवे चावल भरे हुवे हैं वे चावल व थाल सब जम्बूनद रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं. वे बडे २ रथ के चक्र समान हैं ॥ ७४ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ पात्रि हैं वे निर्मल

तोरणाण पुरतो दो दो हय कठगा जाव दो दो उसभ कठगा पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ७८ ॥ तेसुण हयकठएसु दो दो पुप्फचगेरीओ एव मल्लच गेरीओ गध—वण्ण—चुण्ण—वत्थ—आभरण—चगेरीओ सिद्धत्थचगेरीओ लोमहत्थ चगेरीओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो पुप्फ पडलाइ जाव लोमहत्थ पडलाइ सव्वरयणामयाइ अच्छाइ जाव पडिरूवाइ ॥ ७८ ॥ तेसिण तोरणाण पुरता दो दो सीहासणाइ पण्णत्ता तेसिण सीहासणाण अयमेतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते तहेव जाव पासादिया ॥ ८० ॥ तेसिण तोरणाण पुरतो दो दो रूपछत्ताइछत्ता पण्णत्ता ॥ तेणछत्ता वेरुलियाभिसत

अर्थ

आगे दो घोडे के आकार वाले यावत् वृषभ के आकार वाले घोडले हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ हयकठ यावत् वृषभ कठ में दो २ पुष्प की चंगेरी ऐसे ही माला, गंध, वर्ण, चूर्ण, वस्त्र, आभरण, सरसु की चगेरी, पुञ्जनी की चंगेरी हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७८ ॥ उन तोरणों के आगे दो पुष्प के पुञ्ज यावत् पुञ्जनी के पुञ्ज रहे हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७९ ॥ उन तोरणों के आगे दो सिंहासन हैं जिन का कथन पूर्ववत् जानना यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८० ॥ उन तोरणों के आगे दो चांदी के छत्र हैं उन को वैडूर्य रत्न निर्मल दण्ड है, जम्बूनद

सूत्र

मुत्ता जालतरुसिता हेम जाव गयदंत समाणा पण्णत्ता ॥ तेसुणं वइरामएसु णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता, तेसुणं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वायकरगा पण्णत्ता, तेणं वायकरगा किण्हसुत्त सिक्कागवच्छिया जाव सुक्किल सुत्तसिक्काग वच्छिता बहवे वायकरगा पण्णत्ता सव्ववेरुलियामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥७६॥ तेसिणं तोरणाणं पुरतो दो दो चित्तारयण करंडा पण्णत्ता से जहा नामए चाउरंत चक्कवट्टिस्स चित्तेरयणकरंडे वरुलिय मणिफालिय पडलत्थाय डेताए पभाए तं पदेसे सव्वतो समताओ भासइ उज्जोवेइ पभासेइ एवामेव तिविचित्त रयणकरंडगा वेरुलियपडल पच्छायडा साए पभाए ते पदेसे सव्वतो समताओ भासेति जाव पभासेति॥७७॥ तेसिणं

अर्थ

के सिके में पवन डालने के पखे हैं, वे पखे कृष्ण यावत् श्वेत वर्ण के सूत्र से ढके हुवे हैं वे सब वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ७६ ॥ उन तोरणों के आगे २ दो २ आश्चर्यकारी रत्न के करंडिये हैं जैसे चारों दिशा को विजय करने वाले चक्रवर्ती राजाको आश्चर्यकारी रत्नका करंडिया होता है और उस को वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन होता है, वह अपनी आसपास चारों दिशी में प्रकाश करता है, वैसे ही यहां आश्चर्यकारी रत्नों के करंडिये हैं उनको भी वैडूर्य व स्फटिक रत्न का ढक्कन है और वे यहां चारों तरफ उद्योत करते हैं, प्रकाश करते हैं यावत् तपते हैं ॥ ७७ ॥ उन तोरणों के

समुग्गा हिंगुलसमुग्गा मणोसिलासमुग्गा अंजणसमुग्गा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८३ ॥ विजयेण दारेण अट्ठसय चक्कज्झयाण अट्ठसय मगरज्झयाण अट्ठसयगरुलज्झयाण, अट्ठसयजुगज्झयाण, अट्ठसयछत्तज्झयाण अट्ठसयपिच्छ ज्झयाण, अट्ठसयसउणीज्झयाण, अट्ठसयसीहज्झयाण, अट्ठसयउसभज्झयाण अट्ठसयसेयाण, चउविसाणाण नागवरकेऊण एवमेव सपुव्वावरेण विजयदारे आसीयकेउसहस्स भवतित्तिं मक्खाय ॥ ८४ ॥ विजयदारे नव भोम्मा पण्णत्ता

(तेल के सीसे) कोष्ट के सीसे, पत्र के सीसे, तगर के सीसे, पलास के सीसे, हरताल के सीसे, हिंगुलक के सीसे, मनःशिला के सीसे व अंजन के सीसे हैं ये सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८३ ॥ विजय द्वार पर एक सो आठ ध्वजा चक्र के चिन्हवाली हैं, मगर के चिन्हवाली १०८ ध्वजा हैं, गरुड के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, धूसरे के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, छत्र के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं, पीछ के आकार की १०८ ध्वजाओं हैं, शकुनी पक्षी के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, सिंह के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, वृषभ के आकारवाली १०८ ध्वजाओं हैं, और श्वेत चार दंतवाले हस्ती के चिन्हवाली १०८ ध्वजाओं हैं यों सब मिलकर विजय द्वार पर एक हजार अस्सी ध्वजाओं हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा है ॥ ८४ ॥ विजय द्वार में नव भूमि कही हैं उन की

विमलदण्डा जबूणय कन्निका वइरसधी मुत्ता जालपरिगता अट्ठसहस्स वर कचणस-
लागा दद्दरमलयसुगधी सव्वउय सुरभीसीयल छाया मगल भत्तिचित्ता चदागारोवमा
छत्ता ॥ ८१ ॥ तेसिं तोरणाण पुरतो दो दो चामराओ पण्णत्ताओ ताओण
चामराओ णाणामणि कणगरयण विमलमहरिह तवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाओ
चिल्लियाओ सखककुद,गरय अमयमहियफ्फेण पुजसण्णिगासाओ सुहुमरयतदीहवालाओ
सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥८२॥ तेसिण तोरणाण पुरओ दो दो
तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयसमुग्गा तगरसमुग्गा पलाससमुग्गा हरियाल-

रत्न की कर्णिका है, वज्र रत्नमय संधी है, मोतियों की माला से चारों तरफ व्याप्त है, एक हजार आठ सुवर्ण शलाका से बने हुवे हैं, दर्दर चंदन अथवा मलय चदन जैसा सुगंधित है, सब ऋतु के सुगंध वाली शीतल छाया है, आठ मंगलिक के चिन्ह चित्रित किये हैं, और चद्र जैसे वर्तुलाकार हैं ॥ ८१ ॥ उन तोरण की आगे दो चमर कहे हैं उन चमरों को विविध मणि रत्न वाला निर्मल व बहु मूल्य सुवर्ण का आश्चर्य कारी दंड व भेत है, शंख, अंकरत्न, मुचुकुंद के पुष्प, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन जैसी कान्तीवाले सूक्ष्म बालों के बने हुवे हैं, वे सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ८२ ॥ उन तोरणों के आगे दो २ तेल समुद्र

पुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण चचारि भद्दासणा पन्नत्ता॥ तस्सण सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स अभितरियाए परिसाए अट्ठण्ह देवस्स साहस्सीएण अट्ठभद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ तस्सण सीहासणस्स दाहिणाण एत्थण विजयस्स देवस्स मज्झिमियाए परिसाए दसण्ह देवसाहस्सीण दसभद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स दाहिणपच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स बाहिरियाए परिसाए बारसण्ह देवसाहस्सीण बारस भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तस्सण सीहासणस्स पच्चच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स सत्तण्ह अणियाहिवईण सत्त भद्दासणा पण्णत्ता, तस्सण सीहासणस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण एत्थण विजयस्स देवस्स सोलस आयरक्खदेव साहस्सीण सोलसभद्दासणसाहस्सीओ, पण्णत्ताओ तजहा पुरच्छिमेण

अर्थ आभ्यन्तर परिषदा के देवों के आठ हजार भद्रासन कहे हैं, दक्षिणदिशा में मध्य परिषदा के दश हजार देवों के दश हजार भद्रासन कहे हैं, नैऋत्यकोन में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव के बारह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं उस बडे सिंहासन की पश्चिमदिशामें विजयदेव के सात अनिकाधिपतिके सात भद्रासन कहे हुवे हैं, उसका पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर यों चार दिशाओंमें विजयदेव के सोलह हजार आत्मरक्षक देव के सोलह हजार भद्रासन कहे हुवे हैं पूर्व में ~~ हजार, दक्षिण में चार हजार, पश्चिम में चार

तेसिण भोम्माण अतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता जाव मणीण फासो ॥ तेसिं भोम्माण उप्पि उल्लोया पउमलया भत्तिचित्ता जाव सव्वतवणिज्जमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ८५ ॥ तेसिण भोम्माण बहुमज्झदेसमाए जे से पचमे भोम्मे तस्सण भोम्मस्स बहुमज्झ देसमाए तत्थण एगे मह सीहासणे पण्णत्ते, सीहासण वण्णउ विजयदूसे जाव अकुसे जाव दामाचिट्ठति ॥ ८६ ॥ तस्सण सीहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चउण्ह सामाणिक साहस्सीण, चत्तारि भद्दासण साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ तस्सण सीहासणस्स

बीच में सम रमणीय भूमिभाग है यावत् मणि स्पर्श है यह चपकलता, पद्मलता यावत् श्यामलता के विविध प्रकार के चित्र युक्त यावत् सुवर्णमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥ ८५ ॥ उन नव भूमि के मध्य भाग में जो पांचवी भूमि है उस के मध्य भाग में एक सिंहासन है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् विजय दूष्य से ढका हुआ यावत् अकुश यावत् पुष्प की माला वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ ८६ ॥ उस सिंहासन से वायव्यकून, उत्तरदिशा व ईशानकून में विजय नामकदेव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस सिंहासनसे पूर्वमें चार अग्रमहिषियों के परिवार सहित चार भद्रासन कहे हुवे हैं, उस की अग्निकून में विजय देवता के

...एण दारे ? विजेएणदारे गोयमा ! विजएणामं देवेमहिड्डीए जाव महज्जुइए जाव महाणुभावे पलिओमठितीये परिवसति ॥ सेण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्सीणं चउण्ह अग्गमहिसीणं, सपरिवाराण तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह आनियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सीण॥विजयस्सण दारस्स विजयाएरायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति विजएदारे, अदुत्तर चण गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अर्थ

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवंत यावत् महा प्रभाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

सूत्र

चत्तारि साहस्सीओ पण्णत्ताओ एव चउसुवि जाव उत्तरेण चत्तारि साहस्सीओ अवसेसेसु भामेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ ८७ ॥ विजयस्स उवरिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया तजहा-रयणेहिं वइरेहिं, वेरुलिएहिं, जाव रिट्ठेहिं॥ विजयस्सण दारस्स उप्पि बहवे अट्ठट्ठमगलगा पण्णत्ता तजहा-सोत्थिय सिरिवच्छ जाव दप्पणा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सण दारस्स उप्पि बहवे कण्हचामरज्झया जाव सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ विजयस्सण दारस्स उप्पि बहवे छत्ताइछत्ता तहेव ॥ ८८ ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चति

अर्थ

हजार व उत्तर में चार हजार, शेष आठ भूमि में एक २ भद्रासन कहा है ॥ ८७ ॥ विजय द्वार के ऊपर का भाग सोल प्रकार के रत्नों से सुशोभित है तद्यथा—कर्केतरत्न २ वज्र, ३ वैडूर्य, ४ लोहिताक्ष, ५ मसाल गर्भ, ६ हंसगर्भ, ७ पुलक, ८ सोगंधिक, ९ ज्योतिष रत्न, १० अंक, ११ अंजन, १२ रजत, १३ जातरूप, १४ अंजन पुलक, १५ स्फटिक और १६ रिष्ट विजय द्वार पर आठ २ मंगल हैं स्वस्तिक, श्रीवत्स यावत् आदर्श ये सब रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है विजय द्वार पर कृष्ण चामर की ध्वजा यावत् रत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है विजय द्वार पर बहुत छत्र पर छत्र प्रमुख रहे हुवे हैं, यह सब पूर्ववत् जानना॥८८॥अहो भगवन् ! विजयद्वार ऐसा नाम क्यों कहा?

विजएण दारे ? विजेएणदार गोयमा ! विजएणामं देवेमहिड्डीए जाव महज्जुयाए जाव महाणुभावे पलिओमाठितीये परिवसति ॥ सेण तत्थ चउण्ह सामाणियसाहस्सणीण चउण्ह अग्गमहिसीण, सपरिवाराण तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह आनियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव साहस्सणि॥विजयस्सण दारस्स विजयाएरायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयाए रायहाणि वत्थव्वगाण देवाण देवीणय आहेवच्च जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरति, से तेणेट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चाति विजएदारे, अदुत्तर चण गोयमा ! विजयस्स दारस्स सासए नामाधिज्जे पण्णत्ते जण्ण

अर्थ

अहो गौतम ! विजय द्वार का विजय नामक देव अधिपति है वह महर्द्धिक महा द्युतिवंत यावत् महा प्रभाववाला व पल्योपम की स्थितिवाला है वह चार हजार सामानिक, परिवार सहित, चार अग्रमहिषी, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिक के अधिपति व सोलह हजार आत्म रक्षक देव, विजय द्वार, विजय राज्यधानी और विजय राज्यधानी में रहनेवाले अन्य बहुत देवों व देवियों का अधिपतिपना करता यावत् दीव्य भोग उपभोग भोगता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये विजय द्वार कहा है और दूसरा कारन यह भी है कि विजय द्वार का शाश्वत नाम है यह कदापि नहीं था वैसा नहीं

सूत्र

कयाइ णासि णकयाइ णत्थि, णकयाइण भविस्सइ जाव अवट्ठिये णिच्चे विजयद्दारो ॥ ११ ॥ कहिण भंते ! विजयस्सण देवस्स विजया नाम रायहाणी पण्णत्ता? गोयमा ! विजयस्स दारस्स पुरच्छिमेण तिरियमसंखिज्जे दीवसमुद्दे वीईवइत्ता, अण्णंमि जंबूद्दीवे २ बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता, एत्थण विजयस्स देवस्स विजयाणाम रायहाणी पण्णत्ता बारस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेण सत्तत्तीस जोयण सहस्साइं णवय अडयाले जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता ॥ साण एगेणं पगारेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, सेण पगारे सत्ततीस जोयणाइं अट्ठ

अर्थ

कदापि नहीं है वैसा नहीं कदापि व नहीं होगा वैसा नहीं यावत् अवस्थित नित्य शाश्वत विजय द्वार है॥ ११ ॥ अब विजय देवता का विजया राज्यधानी का कथन करते हैं अहो भगवन् ! विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है? अहो गौतम ! विजय द्वार से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरा जम्बूद्वीप नामक द्वीप कहा है उस में बारह हजार योजन जावे तब विजय देवता की विजया राज्यधानी है यह बारह योजन की लम्बी चौडी है, और सेंतीस हजार नव सो अडतीस योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है उस के चारों तरफ एक प्राकार (कोट) रहा हुवा है. यह ३७॥योजन का ऊंचा है,मूल में १२॥योजन का

जोयण चउद उच्चतेण, मूले अद्धतरस जोयणाइ विक्खमेण, मज्झे छजे यणाइ सक्कोसाइ विक्खभेण, मूलविच्छिण्णे,मज्झेसखित्त,उप्पिं तणुए, बाहिं वट्टे, अतो चउरसे गोपुच्छ सठाण सठिते, सव्वकणगमये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १००॥ सेण पागारेण णाणाविह पचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते तजहा—किण्हेहिं जाव सुक्किलहिं, तेण कविसीसगा अद्धकोस आयामेण, पचधणुसयाइ विक्खभेण, देसूण अद्धकोस उड्ढ उच्चत्तण,सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा ॥१०१॥ विजयाएण रायहाणीए एकामेक्काए बाहाए पणुवीस२दारसत भवति तिमक्खाय॥ तेण दारा वीवट्ठी जोयणाइ

अर्थ

चौडा है, मध्य में ६। योजन का चौडा है, और ऊपर तीन योजन आधा गाउ का चौडा है मूल में विस्तारवाला, मध्य में संकुचित व ऊपर पतला है बाहिर गोल व अंदर चौकूना है गाय पुच्छ के आकारवाला है, सब सुवर्णमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है ॥ १०० ॥ यह प्राकार विविध प्रकार के कृष्ण यावत् शुक्ल यों पांच वर्णवाले कपिशीर्ष (कंगूरे) से सुशोभित है ये कंगूरे आधा कोश के लम्बे पांच सो धनुष्य के चौडे, आधा कोश में कुच्छ कम के ऊंचे, सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १०१ ॥ विजया राजधानी की एक २ बाजु में १२५ द्वार हैं वे द्वार ६२॥ योजन के ऊंचे, ३१। योजन के

भोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओजाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिण दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहेहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएण रायहाणीए चउद्दिसिं पच जोयण सताइ अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसडा पण्णत्ता तजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवण, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

अर्थ

मानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं उस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसो द्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे हैं जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है वे वनखण्ड बारह हजार योजन से कुच्छ

वणसडा साइरेगाइ दुवालस जोयण सहस्साइ आयामेण, पच २ जोयण सताइ विक्खभणं पण्णत्ता, पत्तेय २ पागार परिक्खित्ता, किण्हा किण्होभासा, वणसडवण्णओ भाणियव्वो जाव बहवे वाणमतरा देवा देवीओय आसयति सयति चिट्ठति णिसीदति तुयट्टति रमति ललति कीलति कोडति मोहंति पुरपोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कताण सुभाण कडाण कम्माण फलवित्ति विसेस पच्चणुब्भवमाण विहरति ॥१०७॥ तेसिण वणसडाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ पासायवडिसया पण्णत्ता, तेण पासायवडिसगा बावट्ठि २ जोयणाइ अद्ध जोयण च उड्ढ उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइ कोसच आयामविक्खभेण, अब्भुग्गयमूसिया तहेव जाव अतो बहु समरमणिज्जा

अर्थ—अधिक लम्बे हैं, पांचसो योजन के चौडे हैं प्रसक को पृथक् २ प्राकार (कोट) है, वे कृष्ण वर्ण वाले कृष्ण भास वगैरह वनखण्ड का वर्णन जानना यहांपर बहुत देव देवियों बैठते हैं, सोते हैं, खडे रहते हैं, खेलते हैं क्रीडा करते हैं, मुग्ध होते हैं व अपने पूर्वभव के संचित किये हुए शुभ कर्म के फल का अनुभव करते हुवे विचरते हैं ॥ १०७ ॥ उन वनखण्डों के बीच में प्रासादावतसक कहे हुए हैं व ६२॥ योजन के ऊंचे ३१। योजन के लम्बे चौडे, किंचित् नमे हुए वैसे ही यावत् अदर बहुत रमणीय

भोम्मा तेसिणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेयं २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओजाव दामा जहा हेट्ठा ॥ एत्थण अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं २ भद्दासणा पण्णत्ता, तेसिण दाराण उत्तिमगागारा सोलस विहेहिं रयणेहिं उवसोभिता तचेव जाव छत्ताइछत्ता, एवामेव सपुव्वावरेण विजयाए रायहाणीए पचदारसता भवति तिमक्खाया ॥१०६॥ विजयाएण रायहाणीए चउद्दिसिं पंच जोयण सताइं अबाहाए एत्थण चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता तजहा—असोयवणे, सत्तवण्णवणे, चंपगवणे, चूतवणे ॥ पुरच्छिमेण असोगवणे, दाहिणेण सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेण चंपगवणे, उत्तरेण चूयवणे ॥ तेण

अर्थ

जानना यहां शेष सब भवनों में पृथक् २ भद्रासन कहे हैं इस द्वार पर का भाग सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनीक हैं यह सब कथन पूर्ववत् जानना यावत् छत्रपर छत्र हैं यों सब मीलकर विजया राज्यधानी के पांचसोद्वार कहे हैं ऐसा अनंत तीर्थंकरोंने कहा हैं ॥ १०६ ॥ विजया राज्यधानी के चारों दिशी में पांचसो२ योजन दूर चार वनखण्ड कहे हैं जिन के नाम १ अशोकवन २ सप्तपर्ण वन, ३ चंपकवन, और ४ आम्रवन है, पूर्वदिशा में अशोकवन, दक्षिण दिशा में सप्तपर्णवन, पश्चिमदिशा में चंपकवन और उत्तरदिशा में आम्रवन है ये वनखण्ड बारह हजार योजन से कुच्छ

बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव पंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए ॥ तणसद्दवि-हूणे जाव देवाय देविओय आसयंति जाव विहरति ॥ ११० ॥ तस्सण बहुसमर-मणिज्ज भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगमहं उवारियलणे पण्णत्ते बारस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेण, तिण्णिजोयणसहस्साइं सत्तयपंचाणउतेजोयणसते किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण, अद्धकोस बाहल्लेण सव्वजंबूणयामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ १११ ॥ सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वतोसमंता संपरिक्खित्तो पउमवरवेतियाए वण्णओ, लणसंमियापरिक्खेवेण वणसंड वण्णओ जाव विहरति ॥ सेण वणसंड देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवाल विक्खंभेण उवरितलेण

पांच प्रकार के मणिरत्नों से सुशोभित है, यहां तृण शब्द छोडकर सब वर्णन करना वहां देवता देवियों विश्राम करते हैं यावत् विचरते हैं ॥ ११० ॥ उस बहुत सम रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक बडा उपकारिक लयन (राज्यसभा) कहा है यह बारह सो योजन का लम्बा चौडा है तीन हजार सात सो पचाणवे योजन से कुच्छ अधिक की परिधि कही है, आधा कोस की जाडाइ है वे सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है वह उस पद्मवर वेदिका व उस राजसभा को परिवेष्टित रहा हुवा वनखण्ड का वर्णन पूर्ववत् जानना यह वनखण्ड कुच्छ

भूमिभागा पण्णत्ता उल्लोया पउमभत्तिचित्ता भाणियव्वा ॥ १०८ ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण बहुमज्झदेसभाए पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता वण्णावासा सपरिवारा ॥ तेसिण पासाय वडिंसगाण उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्ताइछत्ता ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति तजहा असोए सत्तिवणे चपए चूए, तेण साण २ वणसडाण साण २ पासाय वडिंसगाण साण सामाणियाण, साण २ अग्गमहिसीण, २ साण २ परिसाण, साण २ आयरक्खदेवाण आहेवच्च जाव विहरति ॥ १०९ ॥ विजयाएण रायहाणीए अतो

भागवाले कहे हुए हैं उस में चद्रमा पद्मलता वगैरह चिन्हों कहे हुए हैं ॥ १०८ ॥ उन प्रासादावतसक के मध्य भाग में पृथक् २ सिंहासन कहे हुवे हैं, उन का परिवार सहित सब वर्णन कहना उन प्रासादाव तसक पर आठ २ मंगलध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हुवे हैं वहां चार महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं जिन के नाम-अशोक, सप्तपर्ण, चंपक व भूत वे अपने २ वनखण्डमे अपने २ प्रासादावतसक में, अपने २ सामानिक, अग्रमहिषी, परिषदा व आत्मरक्षक देवों का आधिपतिपना करते हुए विचरते हैं ॥ १०९ ॥ विजया राज्यधानी की अंदर बहुत सम रमणीय भूमिभाग कहा हुवा है यावत्

॥ ११३ ॥ तस्सणं पासायवडेंसगस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणि फासा, उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्जे भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए एक्का मह मणिपेढिया पण्णत्ता, दो जोयणाइं आयाम विक्खंभेण जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते एव सीहासण वण्णओ सपरिवारो ॥ तस्सण पासाय वडेंसगस्स उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता, सेण पासाय वडेंसए अन्नेहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समतासपरिक्खित्ते, तेण पासाय

अर्थ ॥ ११३ ॥ उस प्रासादावतंसक के मध्य में बहुत समरमणीय भूमिभाग कहा है यावत् मणिस्पर्शवाला है उस के मध्य भाग में एक मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणि पीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का परिवार सहित वर्णन करना उस प्रासादावतंसक पर आठ २ मंगलिक ध्वजा, छत्रपरछत्र हैं उस प्रासादावतंसक की आसपास अन्य उससे आधी उंचाइ के प्रमाण वाले चार प्रासादावतंसक कहे हैं वे ३१ ॥ योजन के ऊंचे व पन्नरह योजन अढाइ कोश के लम्बे चौडे व गगन तल को अवलम्बन

समे परिक्खेवेण ॥ १११ ॥ तस्सण उवरियालेणस्स चउदिसिं चत्तारि तिसोवाण पडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ ॥ तेसिण तिसोवाण पडिरूवगाण पुरत्थ पत्तेय २ तोरणा पण्णत्ता छत्ताइछत्ता ॥ ११२ ॥ तस्सण उवरियलेणस्स उप्पिं बहुसमरमणिज्जभूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीहिं उवसोभिते मणिवण्णओ गधोभासो ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए तत्थण एगेमहं मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते सेण पासायवडेंसए बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणच उड्ढ उच्चत्तेण, एक्कतीस जोयणाइं कोसच आयामविक्खभेण अब्भुग्गय मूसिय पहसिते तहेव

कम दो योजन के चक्रवाल में चतुतरा समान है ॥ १११ ॥ उस उपकारिका लयन को चारों तरफ चार पांवथे हैं, वे वर्णन करने योग्य है, उन प्रत्येक पांवथे के आगे पृथक् २ तोरण यावत् छत्रातिछत्र है ॥ ११२ ॥ उस उपकारिका लयन के ऊपर बहुत समरमणीय भूमि भाग है यावत् मणि से शोभित हैं वहां मणि का वर्णन पूर्ववत् जानना गंधवास पर्यंत कहना उस रमणीय भूमिभाग के मध्य बीच में एक बडा मूल प्रासादावतंसक कहा है वह साढी बासठ योजन का ऊंचा, सवा एकतीस योजन का लम्बा चौडा और गगनतल के अवलम्बन करता होवे वैसा सब अधिकार पूर्ववत् जानना

तेसिण पासायवडिंसगाण अतो बहु समरमणिजाणं भूमिभाग उल्लोया ॥ तेसिण बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तय २ पउमासणा पण्णत्ता ॥ तेसिण पासायाण अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासायवडेंसका अण्णेहिं चउहिं २ तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासायवडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता ॥ तेण पासायवडिंसका देसूणाइ अट्ठजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण देसूणाइ चत्तारि जोयणाइ आयामविक्खभेण अब्भुगत भूमिभागा उल्लोया भद्दासणाउवरि मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥११४॥ तस्सण मूलपासायवडिंसगस्स उत्तरपुरच्छिमेण एत्थेण

अर्थ ध्वजा व छत्रपर छत्र हैं इन प्रासादावतसक के आगे पृथक् २ इस से आधी ऊचाइ के प्रमान वाले अन्य चार २ प्रासादावतसक कहे हैं ये कुच्छकम आठ योजन के ऊंचे व कुच्छ कम चार योजन के लम्बे चौडे हैं, गगन तल को अवलम्बन करके रहे हुवे होवे वैसे दीखते हैं उन मे पृथक्२ भद्रासन कहे हैं उन पर आठ २ मगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं यों सब मीलकर ८५ प्रासादावतसक की पक्ति होती है मूल अंदर का एक, उस की आस पास चार, इन चार की आसपास १६ सो लह की आसपास ६४ यों सब मीलकर ८५ हुए ॥११५॥ उस मूल प्रासादावतसक से ईशान कून में विजय देव

वडेंसका एकतीस जोयणाइ कोसच उड्ढ उच्चत्तेण अद्ध सोलस जोयणाइ अद्ध कोसच आयाम विक्खंभेण अब्भुग्गय तहेव ॥ तेसिण पासाय वडेंसगाण अतो बहु समरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोता ॥ तेसिण बहु समरमणिज्ज भूमिभागाण बहुमज्झ देसभागे पत्तेय २ भद्दासणा पण्णत्ता ॥ तासिण अट्ठट्ठ मगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेण पासाय वडेंसका अन्नाहिं चउहिं तदद्धुच्चत्त पमाणमत्तेहिं पासाय वडेंसएहिं सव्वतो समता सपरिक्खित्ता, तेण पासायवडेंसगा अद्ध सोलस जोयणाइ अद्ध कोसच उड्ढ उच्चत्तेण, देसूणाइ अट्ठजोयणाइ आयामविक्खंभेण अब्भूगय तहेव

करत होवे वैसे हैं [illegible] प्रासादावतसक के अदर बहुत समरमणीय भूमिभाग है उस के मध्य भाग में पृथक् २ [illegible] मैं प्रत्येक भद्रासन कहे हैं उन को आठ २ मगल, ध्वजा छत्रातिछत्र कहे हैं इन चार प्रासादावतसक के आगे इन से अर्ध ऊंचाइवाले चार २ प्रासादावतसक कहे हैं यह पन्नरह योजन व कोश के ऊंचे हैं और कुच्छकम आठ योजन अर्थात् सात योजन सवा तीन कोश के लम्बे चौडे गगन को अवलम्बन कर के रहे होवे वैसे दीखाइरते हैं उन प्रासादावतसक में बहुत समरमणीय भूमि भाग कहा है इन के मध्य बीच में पृथक् २ पद्मासन कहे हुए हैं, इन प्रासादोंपर आठ २ मगल,

रूवग सहस्स कलियाभिसमाणी भिब्भिसमाणि चक्खुलोयण लेसा सुहफासा सस्सिरिय रुवा कंचणमणिरयणथूभियागा (थूभियागा) नाणाविह पंचवण्ण घंटा पडाग पडिमंडितग्ग सिहरा धवलामिरीइकवय विणिमुयंती लाउल्लोइय महिया गोसीस-सरसरत्तचंदण दद्दरदिन्न पंचगुलियतला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरण पडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउल वट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पंचवरण सरससुरभिमुक्क पुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कधूव मघमघंत गंधुद्धुआभिरामा सुगंध वरगंध गंधवट्टिभूता अच्छरगणसंघसंविकिन्ना दिव्वतुडिय मधुरसद्द संपइआ,

अर्थ — सुशोभित है, हजारों रूप के भेद से सहित है, तेजसे देदीप्यमान है, विशेष देदीप्यमान है, चक्षु से देखने योग्य है, सुखकारी स्पर्श है, शोभनिक रूप है, सुवर्ण, मणि व रत्न के उस के शिखर हैं, विविध प्रकारके पांच वर्ण की घंटा पताका व शोभनीक इस का शिखर है, प्रकाश करनेवाले श्वेत कीरणों उस में से नीकलते हैं, गोमय (गोबर) से उस का भाग लींपा हुवा है, गोशीर्ष चंदन, रक्त चंदन व दर्दर चंदन से पांचों अंगुलियों के छापे लगाये हैं, वहां चंदन कलश स्थापन किये हैं, प्रतिद्वार के आगे चंदन के घट का तोरण अच्छी तरह स्थापन किया है, नीचे भूमि पर विस्तीर्ण वर्तुलाकार लम्बी लटकती हुई पुष्पमालाओं का समूह है, पांच वर्णवाले सुगंधित पुष्प का पुंज है, कृष्ण चंदन, श्रेष्ठ कुंदरुक धूप से

विजयस्स देवस्स सभा सुधम्मा पण्णत्ता, अद्धतेरस जोयणाइं आयामेणं सक्का साइं छ जोयणाइं विक्खंभेणं णव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेग खंभसतसंनिविट्ठा अब्भुग्गय सुकय वइरवेदिया, तोरणवर रतिय सालिभंजिया, सुसिलिट्ठ विसिट्ठ लट्ठ सठियपसत्थवेरुलियविमलखंभा णाणामणिकणगरयणखइयउज्जल बहुसम सुविभत्तचित्त रमणिज्ज कुट्टिमतला, ईहामिय उसभ तुरगणर विहग वालग किण्णर रुरु सरभ चमर कुंजर वणलय पउमलय भत्तिचित्ता खंभुग्गय-वइरवेइया परिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्ताविव अच्चिसहस्समालणीया

की सुधर्मा सभा है वह १२॥ योजन की लम्बी है और ६। योजन की चौडी है, नव योजन की ऊंची है अनेक स्तंभ उस में रहे हुवे हैं अति रमणीय देखनेवाले को सन्मुख दीखसके वैसी वज्रमय वेदिका है, बहुत अच्छी तरह बनाए हुए तोरण व पुतलियों हैं, सुबद्ध मनोहर संस्थानवाली हैं, प्रशस्त वैडूर्य रत्नमय स्तंभ हैं, उस सभा का विविध प्रकार के मणि, कनक, रत्न व वज्ररत्नसे उज्ज्वल, सम, निबड आश्चर्यकारी व मनोहर कुट्टिम भूमि तल है ईहामृग, वृषभ, अश्व, मनुष्य, मगरमच्छ, पक्षी, सर्प, किन्नर नामक व्यंतर देव, रुरु, सरभ, चमर, हाथी, वनलता व पद्मलता के विविध प्रकार के चित्रों हैं स्तंभ पर रही हुई वज्रमय वेदिका से चारों दिशि में मनोहर है, विद्याधरों के युगल जैसे हजारों कांति की मालाओं से

मूमिभाग वण्णओ ॥ तेसिण मुहमडवाण उवरिं पत्तेय २ अट्ठट्ठ मगलगा पण्णत्ता तजहा सात्थिय जाव मच्छा ॥ तेसिण मुहमडवाण पुरओ पत्तेय २ पेच्छाघर मडवगा पण्णत्ता, तेण पेच्छाघर मडवगा अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण जाव दोजोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण जाव मणिफासा ॥ ११७ ॥ तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ वइरामया अक्खाडगा पण्णत्ता, तेसिण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ मणिपेढिया पण्णत्ता, ताओण मणिपेढियाओ जोयणमेग आयाम विक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमइओ जाव पडिरूवा ॥ ११८ ॥

अर्थ

साधिक दो योजन के ऊंचे हैं इन मुख मडप में अनेक स्थम रहे हुवे हैं यावत सब भूमिभाग का वर्णन करना इन मुख मडप पर स्वस्तिक यावत् मत्स्य के आठ २ मगल कहे हैं इन प्रत्येक मुख मडप के आगे पृथक् प्रेक्षाघर मडप कहे हैं ये प्रेक्षाघर मडप १२॥ योजन के लम्बे दो योजन के ऊंचे यावत् मणिस्पर्श वाले कहे हैं ॥ ११७ ॥ इन के मध्य में पृथक् वज्ररत्न के अखाडे कहे हैं इन की बीच में पृथक् मणिपीठिका कही हैं ये मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजन की जाडी है, सब मणिमय यावत् प्रतिरूप हैं ॥ ११८ ॥ इन मणिपीठिका पर पृथक्

सूत्र

सव्वरयणामती अच्छा जाव पडिरूवा ॥ ११५ ॥ तीसेणं सुहम्माए सभाए तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं तेणं दारा पत्तेयं २ दो दो जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं एगं जोयणं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेयावर कणग थूभियागा जाव वणमालादारवण्णओ, तेसिणं दाराणं उप्पिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलज्झया छत्ताइ छत्ता ॥११६॥ तेसिणं दाराणं पुरओ तिदिसिं ततो मुहमंडवा पण्णत्ता, तेणं मुहमंडवा अद्ध तेरस जोयणाइं आयामेणं छजोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्डं उच्चत्तेणं तेणं मुहमंडवा अणेग खंभसय संनिविट्ठा जाव उल्लोया

अर्थ

प्रधमघायमान गंध वाली है, सुगंधमय श्रेष्ठ गंध वाली है, गंधवर्तीभूत है, अप्सराओं के समुदाय सहित है, दीव्य त्रुटितादि वादित्र के मधुर शब्द सहित है, यह सभा सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है ॥ ११५ ॥ इस सुधर्मा सभा की तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं पूर्व दक्षिण व उत्तर में ये द्वार दो योजन के ऊंचे एक योजन के चौडे व एक योजन के प्रवेश वाले हैं श्वेत श्रेष्ठ कनक के स्तंभ हैं यावत् वनमाला युक्त हैं इन द्वार पर बहुत आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥ ११६ ॥ इन द्वार के आगे तीन दिशा में तीन मुख मंडप कहे हैं ये मुख मंडप १२॥ योजन के लम्बे हैं छ योजन व एक कोस के चौडे हैं

सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तेसिण चेइय थूमाण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा बहुकिण्हा चामरज्झया पण्णत्ता छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण चेतियथूमाण चउद्दिसिं पत्तेय २ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ ताओण मणिपेढियाओ जोयण आयाम-विक्खमेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमया जाव तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय२ चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेह पमाणमित्ताओ पलियक णिसण्णाओ थूमाभिमुहीओ सन्निविखत्ताओ चिट्ठति तजहा उसभ वद्धमाण चदाणण वारिसेण॥ १ २ ०॥ तेसिण चेतिय थूमाण पुरतो तिदिसिं पत्तेय २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ, ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइ आयामविक्खभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमईओ अच्छाओ

अर्थ

कहे हुवे हैं उन चैत्यस्तूप की चार दिशा में चार मणिपीठिकाओं हैं यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी आधा योजनकी जाड, सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप है उन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक्२ जिन प्रतिमा हैं ये जिन के शरीर प्रमान ऊंची, स्तूप के सन्मुख मुख रख रही हुई हैं इन जिन प्रतिमा के नाम वृषभ, वर्धमान, चद्रानन, व वारिसेन ॥ १२० ॥ चैत्यस्तुप के आगे तीन दिशाओं में पृथक् २ मणिपीठिकाओं कही है ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है

सूत्र

तासिण मणिपढियाण उप्पिं पत्तेय २ सीहासणा पण्णत्ता, सीहासण वण्णओ जाव दामा ओपरिवारा ॥ ११९ ॥ तेसिण पेच्छाघर मडवाण उप्पिं अट्ठट्ठमगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ तेसिण पच्छाघर मडवाण पुरतो तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ॥ताओण मणिपेढियाओ दो जोयणाइ आयामविक्खभेण, जोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमइओ अच्छाओ जाव पडिरुवाओ ॥ तासिण मणिपेढियाण उप्पिं पत्तेय २ चेइय थूभा पण्णत्ता तेण चेइयथूभा दो जोयणाइ आयामविक्खभेण साइरेगाइ दो जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण सेया सख ककुदगरयअमतमहित फेणपुज सन्निकासा

अर्थ

सिंहासन कहे हैं यहां पूर्ववत् सिंहासन का वर्णन कहदेना यावत् पुष्प की मालाओं कही हुई है ॥११९॥ उन प्रेक्षाघर मंडप पर आठ २ मंगल, ध्वजा व छत्रातिछत्र कहे हैं इन की आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिका हैं ये दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी है सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, इन पर पृथक् २ चैत्यस्तूप कहे हैं, ये दो योजन के लम्बे चौडे और साधिक दो योजन के ऊंचे हैं श्वेत शंख, कुंदरक, पानी के कन, अमृत व समुद्र के फेन समान स्वच्छ निर्मल उज्ज्वल यावत् प्रतिरूप हैं उन चैत्यस्तूप पर आठ २ मंगल हैं बहुत कृष्ण वर्ण वाले चामर, ध्वजा व छत्रातिछत्र

विडिमसाहप्पसाहवरुलिय पत्त, तवणिज्ज पत्तवेंटा, जंबुणयरयमउय पल्लव सुकुमाल पवाल सोभंत वरकुहरग्ग सिहारा, विचित्त मणिरयणसुरभि कुसमफल भरियणमियसाला सच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया अमयरससमरसफला अहियणयण मणणिवुत्तिकरा पासादिया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥१२३॥ तासिणंचेइयरुक्खा अन्नेहिं बहूहिं तिलयलवय छत्तोवग सिरीस सत्तवण्ण दहिवण्ण लोद्धव चंदण निंब कुडय कयंब पणस तालतमाल पियाल पियंगु पारावयरायरुक्ख नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तेणं तिलय जाव नंदिरुक्खा मूलवंतो कंदवंतो जाव सुरम्मा, तेणं तिलया जाव

अर्थ

पत्र हैं, सुवर्णमय पत्र के वींट हैं, जम्बूनद रत्नमय लालवर्णवाले मृदु मनोज्ञ पल्लव हैं, सुकोमल प्रवाल से सुशोभित प्रधान अंकुर के अग्रशिखर हैं, विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधित पुष्प फल से उन की शाखा नम्र बनी हुई हैं, छाया युक्त, कांति सहित, सश्रीक, उद्योत सहित, अमृत रस समान फलवाले मन व नयन को आनंद करनेवाले, प्रसन्नकारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥१२३॥ इन वृक्षों की चारों तरफ अन्य अनेक तिलक वृक्ष, छत्रोपगय, सिरीष वृक्ष, सप्तपर्ण के वृक्ष दधिपर्ण के वृक्ष, लोध्र वृक्ष, धव वृक्ष, चंदन वृक्ष, कुटज वृक्ष, कदंब वृक्ष, फणस वृक्ष, ताड वृक्ष, तमाल वृक्ष, पियाल वृक्ष, पियंगु वृक्ष, पारापत वृक्ष, नदीवृक्ष व इत्यादि वृक्ष रहे हुवे हैं वे तिलक वृक्ष यावत्

सूत्र

लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ निप्पंकाओ णीरइयाओ जाव पडिरूवाओ॥ १ २ १॥तासिण मणि पेढियाण उप्पि पत्तेय २ चेतियरुक्खा पण्णत्ता,तेसिण चेतियरुक्खा अट्ठ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण,अद्ध जोयणाइ उव्वेहेण,दो जोयणाइ खधो अद्ध जोयणाइ विक्खभेण छज्जोयणाइ विडमा,बहुमज्झदेसभाए अद्ध जोयणाइ आयाम विक्खभेण, सातिरेगाइ अट्ठ जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्ताइ ॥ १२२ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा -वइरामयमूल रययसुपइठिया सुविडिमा, रिट्ठामय विपुलकदा, वेरुलयरुचिलक्खधासु जाय वरजाय रूव पढमगविसालसाला, णाणामणिरयण

अर्थ

सब मणिमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण, घठारी, मठारी, पंक रहित रज रहित यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२१ ॥ प्रत्येक मणि पीठिकापर चैत्य वृक्ष हैं ये चैत्य वृक्ष आठ योजन के ऊंचे हैं आधा योजन जमीन अंदर हैं दो योजन का स्कंध है, आधा योजन का स्कंध जाडपनेमें है, छ योजन की शाखा है, वह शाखा बीच में आधा योजन की चौडी है और ये वृक्ष सब मीलकर आठ योजन से कुच्छ अधिक कहे हैं ॥ १२० ॥ इन चैत्य वृक्षों का ऐसी वर्णन कहा है इन का वज्ररत्नमय मूल है, चांदी की शाखा है रिष्ट रत्न के स्कंध है, वैडूर्य रत्नमय कंद है, अच्छी तरह निष्पन्न हुई मूल से विस्तार युक्त सुवर्णमय शाखा है, विविध प्रकार के मणि व रत्नमय विविध प्रकार की शाखा व प्रति शाखा है, वैडूर्य रत्नमय

मट्ठ सुपतिट्ठिया विसिट्ठा अणेगवर पचवण्ण कुडभिसहस्स परिमंडियाभिरामा वाउद्धुय विजय वेजयती पडाग छत्ताितिछत्त कलिया, तुगागगणतल ममिलघमाण-सिहरा पासादीया जाव पडिरूवा ॥ १२६॥ तेसिं महिंदज्झयाण उप्पिं अट्ठट्ठ मगल ज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १२७ ॥ तेसिण महिंदज्झयाण पुरतो तिदिसिं तओ णदा-पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, ताओण पुक्खरिणीओ अद्धतेरस जोयणाइ आयामेण, सक्कोसाइ छ जायणाइ विक्खभेण दस जोयणाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ पुक्खरिणी वण्णओ पत्तेय २ पउमवरवेतियाओ परिक्खित्ताओ, पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ताओ वण्णओ जाव पडिरूवाओ ॥ १२८ ॥ तेसिण णदाण पुक्खरिणीण

अर्थ

सुशोभित हैं मनोहर हैं, वायु से उडती हुई, विजय, वैजयंती नामक पताका और छत्र पर छत्र से युक्त हैं गगन तल को उल्लंघन करती होवे इतन उन के शिखर ऊचे हैं मसन्नकारी यावत् मतिरूप हैं ॥ १२६ ॥ इस महेन्द्र ध्वजा पर आठ २ मगल ध्वजा व छत्र पर छत्र है ॥ १२७ ॥ महेन्द्र ध्वजा के आगे तीन दिशा में तीन नदा पुष्करणी हैं ये साडी बारह योजन की लम्बी सवा छे योजन की चौडी व दश योजन की ऊंडी है यह स्वच्छ, सुकोमल वगैरह सब पुष्करणीका वर्णन पूर्ववत् जानना मत्येक वावडिको एक २ पद्मवर वेदिका वेष्टित है और मत्येक वेदिका को एक २ वनखण्ड है यावत् यह मतिरूप है

नदिरुक्खा अण्णेहिं बहुहिं पउमलयाहिं जाव सामलयाहिं सव्वओ समता सपरि-क्खित्ता, ताओण पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्च कुसुमियाओ जाव पडि रूवाओ तेसिण चेइयरुक्खाण उप्पि बहवे अट्ठट्ठ मगलकाझया छत्तातिछत्ता ॥ १२४ ॥ तेसिण चेतियरुक्खाण पुरओ तिदिसिं तओ मणिपेढियाओ जोयण आयाम विक्खभेण अद्धजोयण बाहल्लेण सव्वमणिमयीओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥१२५॥ तसिण मणिपेढियाण उप्पि पत्तेय २ महिंदज्झया अट्ठमाइ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकास विक्खभेण वइरामय वट्टलट्ठ सट्ठिय सुसिलट्ठ पारघट्ठ

नदी वृक्ष मूल वाले यावत् सुरम्य हैं इन तिलक वृक्ष यावत् नादि वृक्ष की आसपास बहुत पद्मलता यावत् श्यामलता चिटी हुई रही हैं, वे पद्म लता यावत् श्यामलता सदैव पुष्प वाली यावत् प्रतिरूप हैं चैत्य वृक्ष पर आठ मंगल, ध्वजा व छत्रपरछत्र है ॥ १२४ ॥ इन चैत्यवृक्षों के आगे तीन दिशाओं में तीन मणिपीठिकाओं हैं वे एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी सब मणिमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं ॥ १२५ ॥ इन प्रत्येक मणिपीठिका पर पृथक् महेन्द्र ध्वजा है, वह साडे सात योजन ऊंची आधा कोस ऊंडी व आधा कोस की चौडी हैं वज्र रत्नमय वर्तुलाकार हैं, अच्छी तरह से सी हुई, मथाकित की हुई, समतिह व चिकिन है, और भी वह अनेक ध्वजा अन्य लघु ध्वजाओं से

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गंधेण सव्वओ समता आपूरेमाणीओ चिट्ठति ॥ १३१ ॥ सभाएण सुधम्माए अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

प्रतिरूप हैं ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छ गोमानसीका—शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सो चांदी के पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदंत पर चांदी के [illegible] हैं उस चांदी के सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुंदरुक प्रमुख रख हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसी गंध से सब स्थान पुरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चद्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

सूत्र

पत्तेय २ तिदिसिं तओ तिसोमाण पडिरूवगा पण्णत्ता ॥ तेसिणं तिसोमाण पडिरूवगाण वण्णतो तोरण वन्नओ भाणियव्वो जाव छत्तातिछत्ता ॥ १२९ ॥ सभाएणं सुधम्माए छमणगुलिया साहस्सीओ पण्णत्ताओ तंजहा—पुरत्थिमेणं दो साहस्सीओ पच्चत्थिमेण दो साहस्सीओ दाहिणेणं एग साहस्सीओ उत्तरेण एग साहस्सीओ, तासुणं मणगुलियासु बहवे सुवण्ण रुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसुणं सुवण्ण-रुप्पामएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता, तेसुणं वइरामएसु नागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव सुक्किलवट्टवग्घारित मल्लदाम कलावा जाव तेणदामा तवणिज्ज लवूसगा जाव चिट्ठंति ॥ १३० ॥ सभाएणं

अर्थ

॥ १२८ ॥ उन प्रत्येक नंदा पुष्करणी से तीन दिशा में तीन २ त्रिसोपान हैं वे यावत् प्रतिरूप हैं त्रिसोपान व तोरण का वर्णन पूर्ववत् करना यावत् छत्रातिछत्र है ॥ १२९ ॥ सुधर्मा सभा में छ मनो गुलिका नामक पीठिका (बैठने के चबूतरे) कही हैं जिस में पूर्व दिशा में दो हजार, पश्चिम दिशा में दो हजार, दक्षिण दिशा में एक हजार व उत्तर दिशा में एक हजार है उन पीठिका पर सोने चांदी के बहुत पाटिये हैं, उन पाटियों पर वज्रमय नागदंत कहे हैं इन वज्रमय नाग दांत में कृष्ण वर्णवाले यावत् शुक्ल वर्णवाले सूत्र से गुंथी हुई पुष्पों की माला के समुदाय हैं इन को काम सुवर्ण के लुम्बक हैं यावत्

सुधम्माए छगोमाणसीय साहस्सीओ पण्णत्ताओ तजहा पुरत्थिमेण दो साहस्सीओ एव पच्चत्थिमेणवि दो साहस्सीओ, दाहिणेण एग सहस्स एव उत्तरेणवि॥तासुण गोमाणसीसु बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता जाव तेसुण वइरामएसु नागदतएसु बहवे रययामया सिक्कया पण्णत्ता तेसूण रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धुवघडीयाओ पण्णत्ताओ,ताओण धूवघडीयाओ कालागुरुपवरकुदरुक्कतुरुक्क जाव घाणमण णिव्वुइ करेण गधेण सव्वओ समता आपूरेमाणीओ चिट्ठति ॥ १३१ ॥ सभाएण सुधम्माए अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासा उल्लोया पउम-

प्रतिरूप हैं ॥ १३० ॥ सुधर्मा सभा में छ गोमानसीका-शैय्या रूप स्थानक हैं जिन में पूर्व में दो हजार, पश्चिम में दो हजार, दक्षिण में एक हजार व उत्तर में एक हजार इन गोमानसीका में सा चांदी के पटिये हैं यावत् उन वज्ररत्न के नागदांत पर चांदी के सिके हैं उस चांदी के सिके पर वैडूर्य रत्न की धूपघटी कही है उस में प्रधान कृष्णागर, कुदरुक प्रमुख रस हुवे हैं यावत् नासिका व मन को सुख उत्पन्न करे वैसी गध से सब स्थान पूरा हुवा है ॥ १३१ ॥ सुधर्मा सभा में बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यावत् मणिका स्पर्श है, चन्द्रमा व पद्मलता के चित्रों हैं यावत् सब सुवर्णमय स्वच्छ

लय भत्तिचित्ता जाव सव्व तवणिज्जमए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता, साण मणिपेढिया दो जोयणाइ आयामविक्खभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई ॥१३२॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण माणवए णाम चेतिय खभे पण्णत्ते अट्ठट्ठमाइ दो जोयणाइ उड्ढ उच्चतेण अद्धकोस जाव उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभेण छकाडिएछलसे छसुविग्गहिए वइरामयवट्टलट्ठि सठिते, एव जहा महिंदज्झयस्स वण्णओ जाव पासादीए ॥ १३३ ॥ तस्सण माणवकस्स चेतियखभस्स उवरिं छक्कोसे उगाहित्ता हेट्ठावि छक्कोस वज्जित्ता मज्झे अद्धपचमेसु जोयणे सुवण्ण

अर्थ

यावत् प्रतिरूप है उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है यह दो योजन की लम्बी चौडी, एक योजन की जाडी यावत् मणिमय है ॥ १३२ ॥ उस मणिपीठिका पर एक माणवक नामक चैत्य स्तम है यह साडेसात योजन का ऊंचा, आधा कोश का ऊडा, आधा कोश का चौडा है इस को छ कोटि-कूने हैं, छ हांस व छ संधि, हैं व छ स्थानक से सुशोभित है वज्ररत्नमय वर्तुलाकार वाला वगैरा महेन्द्र ध्वजा जैसा वर्णन जानना यावत् प्रमकारी है ॥ १३३ ॥ इस माणवक चैत्य स्थम को छ कोश ऊपर व छ कोश नीचे छोडकर बीच के साडे चार योजन में सोने चांदी के पटिये में

रुप्पमयफलगेसु बहवे वइरामयाणाग दंता पण्णत्ता, तेसुण वइरामएसु नागदंतएसु रययामयासिक्कगा पण्णत्ता, तेसुण रययामयसिक्कएसु बहवे वयरामयगोलवट्ट समुग्गका पण्णत्ता, तेसुण वइरामए गोलवट्ट समुग्गए बहवे जिणस्स कहाओ सनिक्खित्ताओ चिट्ठति, जेण विजयस्स देवस्स अण्णेसिंच बहूण वाणमंतराण देवाण देवीणय अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ थूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ ॥ माणवकस्सण चेतियस्सखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १३४ ॥ तस्सण माणवकस्स

अर्थ

पहुत वज्ररत्न के नागदांत (खूटे) कहे हैं इन नागदांत में चांदी के सिके कहे हैं उन रुपामय सिके में समुद्रक (डब्बे) रखे हैं उस में अच्छी तरह से जिनदाढों रखी हुई हैं विजय देवता, अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों को ये दाढा अर्चना, वंदना व पूजा करने योग्य हैं, सत्कार करने योग्य हैं, सन्मान देने योग्य है, उन को यह कल्याणकारी, मंगलकारी, देव समान, चैत्य समान व पर्युपासना करने योग्य है × उस माणवक चैत्य स्तंभ पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपरछत्र कहे हैं ॥१३४॥ उस माणवक

× यह दाढारूप शाश्वत पुद्गल वस्तु मानना परंतु तीर्थंकर की दाढा नहीं है

जैसे इस मनुष्य लोक में ऐहिक सुख के लिये देवतादिक की सेवा करते हैं वैसे ही देवताओं को इन दाढा की

चेतियखभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता। साणं मणिपेढिया दो जोय-णाइं आयामविक्खभेणं, जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई जाव पडिरूवा ॥ तीसेणं मणिपे-ढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सणं माणवगस्स चेतियखभस्स पुरत्थिमेणं एत्थणं एगामहं मणिपेढिया पन्नत्ता, साणं मणिपेढि एग जोयणं आयामविक्खभेणं अद्ध जोयणं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १३५ ॥ तीसेणं मणिपढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सणं

चैत्य स्तंभ से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की मोटी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना उस माणवक चैत्य स्थंभ से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की मोटी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशैय्या) कहा है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सवा केवल संसार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

देवसयणिज्जस्स अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—नाणामणिमया पेढीपादा, सोवण्णियापादा, नाणामणिमया पायसीया, जंबूणदमया गिगत्ताइं, वइरामया संधी, नाणामणिमयेवेज्जे, रययामयातूली, लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमयी गंडोवहाणीया ॥ सेणं देवसयणिज्जे सालिंगणवट्टिए दुहओविब्बोयणे दुहओउण्णये मज्झणये गंभीरे गंगापुलिणवालुउद्दालसालिसये, उवचियखोमदुगुल्लपट्ट पडिच्छयणे, सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे सुरम्मे आइणगरुत बूर णवणीय तूलफास मउए पासादीए ॥ १३६ ॥

सुवर्णमय पाद, विविध मणिमय पांव के ऊपर के भाग, जम्बूनद रत्नमय चस के अंग [ईस ऊपले] वज्र रत्नमय संधी, अनेक प्रकार के मणिमय निवार, रत्नमय तलाइ, लोहिताक्ष रत्नमय तकिये, और सुवर्णमय गालमसूर है यह देव शैय्या शरीर प्रमाण है, मस्तक व पांव की पास दो तकिये रखे हैं, मस्तक व पांव की पास कुच्छ ऊंची है, और बीच में गंभीर है, गंगा नदी की वालु में पांव रखने से जैसे अधोगमन होवे वैसे ही है विचित्र क्षौमदुगुल वस्त्र, कपासका वस्त्र दुकल, पटकुल से बनाया हुवा वस्त्र देव दुष्य से वह आच्छादित हुई है, अच्छी तरह बनाये हुवे रजस्राण व वस्त्र सहित है, लाल वस्त्र से वह पलंग ढका हुवा है, मनोहर है, मृगचर्म, बूर, मक्खन, अर्कतूल जैसा स्पर्श है देखने योग्य यावत् प्रतिरूप है ॥१३६॥

चेतियखंभस्स पुरत्थिमेण एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता साण मणिपेढिया दो जोयणाइ आयामविक्खभेण, जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ॥तस्सण माणवगस्स चेतियखभस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगामह मणिपेढिया पन्नत्ता, साण मणिपेढि एग जोयण आयामविक्खभेण अद्ध जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ १३५ ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्सण

चैत्य स्तंभ से पूर्व में एक बडी मणिपीठिका कही है वह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी मणिमय यावत् प्रतिरूप है उस मणिपीठिका पर एक बडा सिंहासन कहा है उस का वर्णन पूर्ववत् जानना उस माणवक चैत्य स्थंभ से पश्चिम में एक बडी मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी व सब मणिमय यावत् प्रतिरूप है ॥ १ ॥ उस मणिपीठिका पर एक बडा देव शयन (देवशय्या) कही है इस का इस तरह वर्णन करते हैं, विविध मणिमय प्रतिपाद हैं

सवा केवल ससार निमित्त है देवताओं का यह जीत व्यवहार है भव्य, अभव्य, समदृष्टि मिथ्यात्वी सब इन का पूजन करते हैं यहां पर दाढा मात्र देवता को ही पूजने योग्य ग्रहण की है

पासादिया ॥ समाएण सुधम्माए उप्पिं बहवे अट्ठट्ठमंगलज्झया छत्तातिछत्ता ॥ १३८ ॥ समाए सुधम्माए उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण एगेमहं सिद्धायतणे पण्णत्ते अद्धतेरस जोयणाइं आयामेण छ जोयणाइं सकोसाइं विक्खंभेण नवजोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेण जाव गोमाणसिया वत्तव्वया जावेव सभाए सुहम्माए वत्तव्वया साचेव निरव सेसा भाणियव्वा तहेव दारा,मुहमंडवा, पेच्छा घरमंडवा, थूभा,चेइयरुक्खा, महिंदज्झया, णंदाउयपुक्खरिणीओ सुधम्मा सरिसप्पमाण, मणगुलिया सुदामा गोमाणसी धूवघडियाओ तहेव भूमिभागे उल्लोयण जाव मणिफास ॥ १३९ ॥ तस्सण सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता दो जोयणाइं

अर्थ

सभा पर आठ मंगल २ ध्वजा व छत्रपरछत्र हैं ॥ १३८ ॥ सुधर्मा सभा की ईशान कून में एक बडा सिद्धायतन कहा हुवा है वह साढे बारह योजन का लम्बा सवाछे योजन का चौडा, नव योजन का ऊंचा यावत् गोमानसीक की वक्तव्यता कहना जैसी सुधर्मा सभा की वक्तव्यता कही वह सब निरवशेष यहां कहना द्वार, मुखमंडप प्रेक्षाघर मंडप, स्तूप, चैत्य वृक्ष, महेन्द्र ध्वजा, नंदा पुष्करणी, सुवर्ण समान पीठिका, पुष्पदाम, शैय्या, धूपादि सब वैसे ही जानना वैसे ही भूमिभाग में यावत् ऊपर के भाग में यावत् मणिस्पर्श पर्यंत कहना ॥ १३९ ॥ उस सिद्धायतन के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका कही

सूत्र

तस्सण देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरत्थिमेण मणिपेढिया पण्णत्ता, तेण मणिपेढिया जोयण-मेग आयामविक्खंभेण, अद्धजोयण बाहल्लेण, सव्वमणिमयी जाव अच्छा ॥ तेसिण मणिपाढियाए उप्पि एगे मह खुड्डमहिंदज्झये पण्णत्ते अट्ठट्ठमाइ जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तण अद्धकोस उव्वेहेण अद्धकोस विक्खभण वइरामयवट्ट लट्ठसंठिते तहेव जाव मगलरुया छत्तातिछत्ता ॥ १३७ ॥ तस्सण खुड्डमहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेण एत्थण विजयस्स देवस्स चुप्पालये नाम पहरणकोसे पण्णत्ते, तत्थण विजयस्स देवस्स फलिहरयणप-मोक्खा बहवे पहरणरयणा सण्णिक्खित्ता चिट्ठति, उज्जलसुणीसिय सुतिक्खधारा

अर्थ

उस देव शैय्या की ईशानकून में एक मणिपीठिका है यह मणिपीठिका एक योजन की लम्बी चौडी है आधा योजन की जाडी है सब मणिमय यावत् स्वच्छ है उस मणिपीठिका पर एक बडी क्षुल्लक नाम महा ध्वजा है, यह साडेसात योजन ऊंची, आधा कोश ऊंडी व आधा कोश चौडी है वज्ररत्नमय, वर्तुलाकार अच्छा तरह घोसी हुइ वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् मगल रूप व छत्रातिछत्र है ॥ १३७ ॥ उस क्षुल्लक माहेन्द्र ध्वजा से पश्चिम दिशा में विजयदेव का चोपाल नामक प्रहरण कोष [शस्त्रभंडार] है वहां विजयदेवता के स्फटिक प्रमुख बहुत शस्त्ररत्न रखे हैं, वे उज्वल, तेजवत व तीक्ष्णधार वाले हैं मनमकारी हैं सुवर्ण

अयमेयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा—तवणिज्जमती हत्थतला, पायतला, अकामयाइ णहाइ अतोलोहियक्खपरिसयाइ, कणगामयापादा, कणगामयागोफा, कणगमईओ जघाओ, कणगामयाजाणु, कणगामयाउरू, कणगमईओ, गायलट्ठीओ तवणिज्जमईउ णाभीओ, रिट्ठमईओ रामराजीओ, तवणिज्जमया चुचुया, तवणिज्जमया सिरिवच्छा, कणगमईओ गीवाओ, रिट्ठामयमसू सिलप्पवालमयाओट्ठा, फलिहमयादता, तवणिज्जमईओ जिहाओ, तवणिज्जमया, तालुया, कणगमईओ नासाओ, अतो लोहितक्ख परिसेयाओ, अकामयाइ अत्थीणि, अतो लोहितक्ख परिसेताति, पुला,

अर्थ

उस में लोहिताक्ष रत्नमय रेखा है, सुवर्णमय पांव, घूटण, जघा, जानु, उरु, गात्र हैं तपनीय की नाभि हैं, रिष्ट रत्नमय रोमराजी है तपनीयमय स्तनके (चुचु) अग्रभाग हैं रक्त सुवर्णमय हृदय है, कनकमय ग्रीवा रिष्ट रत्नमय दाढी, प्रवालमय ओष्ट, स्फटिक रत्नमय दांत, रक्त सुवर्णमय तालूआ, कनकमय नासिका उस में लोहिताक्ष रत्न की रेखा है अंक रत्नमय चक्षु जिन में लोहिताक्ष रत्नमय रेखा हैं पुलाक रत्नमय दृष्टी, रिष्ट रत्नमय ताराओं, भांपण व भ्रमर है कनकमय कपाल, कर्ण व ललाट है, वज्र रत्नमय मस्तक है, रक्त सुवर्णमय केश की भूमि (मस्तक की टाट) है, रिष्ट रत्नमय मस्तक के केश हैं प्रत्येक जिन प्रतिमा पीछे छत्र धारण करने वाली प्रतिमा कही हैं, वे प्रतिमा हिम, चांदी, मुचकुंद के पुष्प समान

सूत्र

आयामविक्खंभेणं, जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणियाए अच्छा ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उप्पिं एत्थणं एगेमहं देव छंदए पण्णत्ते, दो जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं साइरेगाइं दो जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणामए अच्छे ॥ तत्थणं देवछंदए अट्ठसतं जिण पडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमेत्ताणं संनिक्खित्तं चिट्ठइ ॥१४०॥ तेसिणं जिणपडिमाणं

अर्थ

है यह दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी सब मणिमय व स्वच्छ है, उस मणिपीठिका पर एक बडा देव छंदक कहा है यह दो योजन का लम्बा चौडा है साधिक दो योजन ऊंचा है, सब रत्नमय स्वच्छ है उस में एकसो आठ जिन प्रतिमा जिन शरीर प्रमाण ऊंची रही हुई हैं +॥१४०॥ उन जिन प्रतिमा का ऐसा वर्णन कहा है रक्त सुवर्णमय हाथ व पाव के तल हैं, अंक रत्नमय नख हैं,

---

+ श्लोक—अरिहंतापि जिनो चेव, जिनो सामान्य केवली ॥ कंदर्पोपि जिनाचेव, जिनो नारायणो हरि ॥ १ ॥

अर्थ—हेमचन्द्राचार्यकृत हेम नाममाला में—१ अर्हन्त २ केवली ३ कामदेव व ४ नारायण इन चार को जिन कहे हैं इस से यह प्रतिमा कामदेव की मानी जाती है, तथा स्थानांगजी सूत्र में-१ अवधि ज्ञानी, २ मन पर्यव ज्ञानी व ३ केवल ज्ञानी, तीन प्रकार के जिन कहे हैं जिस से यह प्रतिमा अवधि ज्ञानी जिन की मानी जाती है उववाइजी सूत्र में श्रीमहावीर भगवान के शरीर के वर्णन में चूचू का कथन नहीं आया है और यहां चुचु का कथन आया जिस से यह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

पुज सण्णिकासाओ मुहमरयतदीहवालाओ धवलाओ चामराओ सलील उहारमाणीओ २ चिट्ठति॥तासिण जिणपडिमाण पुरतो दो दो नागपडिमाओ जक्खपडिमाओ भूतपडिमाओ कुडधारपडिमाओ विणउणयाओ, जलिउढाओ, साणिक्खित्ताओ चिट्ठति, सव्वरययामईआ अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ णिरयाओ णिप्पकाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण जिणपडिमाण पुरतो अट्ठसत घटाण, अट्ठसत चदणकलसाण, एव भिंगारगाण आयसाण थालाण, पातीण, सुपतिट्ठकाण, मणगुलियाण, वायकरगाण, चितारयण करडगाण, हयकठाण जाव उसभकठाण, पुप्फचगरीण, जाव लोमहत्थचगेरीण, पुप्फपडलगाण, अट्ठसय तेलसमुग्गाण, जाव धूवकडुच्छुयाण सण्णिखित्त चिट्ठति ॥ सिद्धायतणस्सण उप्पि बहवे अट्ठ मगलगा ज्झया छत्तातिछत्ता, उत्तिमागारा, सालसविहेहिंरयणेहिं उवसो-

अर्थ—मठारी, रज व पक रहित यावत् प्रतिरूप हैं उन जिन प्रतिमा आगे १०८ घंटे १०८ चदनकलश, १०८ भृंगार, १०८ अरिसा, १०८ स्थाल, १०८ पात्री, १०८ सुप्रतिष्ठक व १०८ मनोगुलिका १०८ पंखे १०८ मनोहर रत्न करडे १०८ हयकंठ यावत् १०८ वृषभकंठ १०८ पुष्पकी चगेरी, १०८ पुष्प के पटल, १०८ तेल समुद्र, यावत् १०८ धूप के कुडछे रहे हुवे हैं सिद्धायतन के उपर बहुत आठ २ मंगल ध्वज व छत्रपर छत्र हैं उत्तम आकार वाले व सोलह प्रकार के रत्नों से शोभनिक हैं तद्यथा-रत्न

कामइओ दिट्ठीओ रिट्ठामईओ तारगाओ, रिट्ठामयाइ अच्छिपताइ, रिठामइओ भमूहाओ, कणगामयाकवोला, कणगामयासवणा, कणगामयानिडाला, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसत केसभूमिओ रिट्ठामया उवरिमुद्धया ॥ तासिणं जिणपडिमाणं पाच्छितो पत्तेय२ छत्ताधारपडिमाओ पण्णत्ताओ तओणं छत्ताधार पडिमाओ हिमरयत कुंदइंदुप्पगासाइं कोरिंटमल्लदामाइं धवलाइं आयवत्ताइं सलील उहारेमाणीओ २ चिट्ठति ॥ तासिणं जिणपडिमाणं उभओपासिं पत्तेय २ चामर धारपडिमाओ पण्णत्ताओ ताओणं चामरधारपडिमाओ चदप्पहवेरुलियणाणामणिकणगरयण विमल महरिहतवणिज्जुज्जल विचित्तदंडाओ, चिल्लीयाओ ससंककुंददगरय महितफेण

कोरंट वृक्ष के श्वेत पुष्पों वाला छत्र धारण कर लीला सहित खडी रही है उन प्रत्येक जिन प्रतिमाओं के दोनों बाजु पृथक् चामर धारन करने वाली प्रतिमा हैं वे प्रतिमा चंद्रप्रभा वैडूर्य रत्न, विविध प्रकार के मणि व कनक रत्न वाले निर्मल महा मूल्य वाले सुवर्णमय उत्तम दंड वाले शंख, अंकरत्न, मुचकुंद, पानी के कन, अमृत व समुद्र फेन समान उज्ज्वल सुखकारी चांदी के बाल वाले श्वेत चामरों लेकर लीला करती हुइ रही है, इन प्रत्येक प्रतिमा के आगे दो२ नाग प्रतिमा दो२ भूत प्रतिमा, और दो२ कुण्डधार प्रतिमा विनय से नमती हुई हाथ जोडती हुई रही है वे सब रत्नमय, स्वच्छ, श्लक्ष्ण मृदु, घटारी,

सेण हरए अद्ध तेरस जोयणाइ आयामेण सक्कोसाइ छ जोयणाइ विक्खंभेण, दस जोयणाइ उव्वहेण, अच्छे सण्हे वण्णओ जहेव णदापुक्खरिणीण जाव तोरण वण्णओ ॥ १४३ ॥ तस्सण हरतस्स उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण एगामह अभिसेय समा पण्णत्ता जहा सभासुधम्मा तचेव निरवसेस जाव गोमाणसीओ भूमिभाए उल्लोए, तत्थेव तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता, जोयण आयामविक्खंभेण सव्वमणिमया अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण मह सीहासणे पण्णत्ते सीहासण वण्णओ, अपरिवारो, तत्थण विजयस्स देवस्स सुबहुअभिसेक्क भंडेसण्णिक्खित्ते चिट्ठति ॥

अर्थ—द्रह कहा है वह साढे बारह योजन का लम्बा, सवा छे योजन का चौडा, दश योजन का ऊंचा स्वच्छ वगैरह वर्णन योग्य है इस का वर्णन नदा पुष्करणी जैसे जानना यावत तोरण का वर्णन कहना ॥१४३॥ उस द्रह से ईशानकून में एक बडी अभिषेक सभा है, इस का वर्णन सुधर्मासभा जैसे गोमानसी भूमि भाग पर्यंत कहना उस भूमि भाग के मध्य में एक मणिपीठिका कही है वह एक योजन की लम्बी चौडी यावत् सब मणिमय स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडा सिंहासन कहा है वह परिवार रहित है ऐसा वर्णन जानना वहां विजय देव के अभिषेक कराने के सब उपकरण कलशादि रखे हुवे हैं

मिया तंजहा—रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं ॥ १४१ ॥ तस्सण सिद्धायस्सण उत्तरपुरच्छिमेण एत्थण एगामह उववायसभा पण्णत्ता जहा सुहम्मासा, तत्थेव जाव गोमाणसीओ उववातसभाएवि दारा मुहमंडवा समभूमिभाग तथेव जाव मणिफासा॥तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामह मणिपेढिया पण्णत्ता जायण आयमविक्खमेण अद्धजोयण वाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा ॥ तीसेण मणिपेढियाए उप्पिं एत्थण एगेमह देवसयणिज्जे पण्णत्ते तस्सण देवसयणिज्जस्स वण्णओ, उववाए सभाएण उप्पिं अट्ठट्ठमंगलज्झया छत्तातिछत्ता जाव उत्तिमागारा ॥ १४२ ॥ तीसेण उववाय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगेमह हरए पण्णत्ते

यावत् रिष्ट ॥ १४१ ॥ उस सिद्धायतन से ईशान कून में एक बडी उपपात सभा है, इस का कथन सुधर्मासभा जैसे यावत् गोमाणसीका पर्यंत कहना उपपातसभा, द्वार, मुखमंडप, समभूमिभाग यावत् मणि स्पर्श पर्यंत कहना उस रमणीय भूमि भाग के मध्य भाग में एक बडी मणिपीठिका है यह एक योजन की लम्बी चौडी व आधा योजन की जाडी है सब मणिमय व स्वच्छ है उस मणिपीठिका ऊपर एक बडी देव शैय्या है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना उपपात सभा पर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं, यावत् उत्तम आकार वाले हैं, ॥ १४२ ॥ उस उपपात सभा से ईशानकून में एक बडा

तत्थ विजयस्स देवस्स एगेमहं पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठति ॥ तत्थण पोत्थर यणस्स अयमयारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—रिट्ठामईओ कंठियाओ, रययामयाइ पत्ताकाइ, रिट्ठामयाइ अक्खराइ, तवणिज्जमये दोरे, णाणामणिमयेगठी, वेरुलियमय लिव्वासणे, तवणीज्जमई सकला, रिट्ठामये छदणे, रिट्ठामई-मसी, वइरामई लेहिणीधम्मिये सत्थे ॥ ववसियसभाएण उर्द्धि अट्ठट्ठमंगलगा-ज्झया छत्तातिछत्ता, उतिमागाराति ॥ १४६ ॥ तीसेण ववसाय सभाएण उत्तर पुरत्थिमेण, एत्थण एगामहं नदा पुक्खरिणी पण्णत्ता, जं चेव पमाण हरयस्स तचेव सव्वं ॥ १४७ ॥ तीसेण नदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुत्थिमेण, एत्थण एगे

अर्थ देव का एक पुस्तक रत्न रहा हुवा है उस पुस्तक रत्न का इस तरह वर्णन है—रिष्ट रत्नमय पुठे हैं, चांदी के लिखने के पत्र हैं, रिष्ट रत्नमय अक्षर हैं, सुवर्णमय धागा है, विविध प्रकार के मणि की ग्रन्थी है, वैडूर्य रत्नमय दवात है, रक्त सुवर्णमय सकल है, रिष्ट रत्नमय दवात का ढकन है, रिष्ट रत्नमय मसी (स्याही) है, वज्र रत्नमय लेखिनी है, यह शास्त्र धार्मिक है अर्थात् कुलधर्म के आचार उसमें लिख हुवे हैं व्यवसाय सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्र पर छत्र हैं उत्तम आकारवाली है ॥ १४६ ॥ उस व्यवसाय सभा से ईशानकून में नंदा पुष्करणी है इस का कथन जैसे द्रहका कहा वैसे जानना ॥१४७॥

सूत्र

अभिसेय सभाए उप्पिं अट्ठट्ठ मगलए जाव उत्तमागारा सोलसविधेहिं रयणेहिं ॥ १४४ ॥ तीसेण अभिसेय सभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं अलकारिय सभा पण्णत्ता अभिसेयसभा वत्तव्वया भाणियव्वा जाव गोमाणसीओ मणिपेढियाओ जहा अभिसेयसभाए उप्पिं सीहासण अपरिवार, तस्सण विजयस्स देवस्स सबहु अलकारिए भंडसनिक्खित्ते चिट्ठति, अलकारिय उप्पिं मंगलगाज्झया जाव उत्तिमागारा ॥ १४५ ॥ तीसेण अलकारिएसभाए उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण एगामहं ववसायसभा पण्णत्ता अभिसेय सभा वत्तव्वा जाव सीहासण अपरिवार

अर्थ

अभिषेक सभा पर आठ २ मंगल कहे हैं यावत् उत्तम आकार वाली है सोलह प्रकार के रत्नों युक्त है ॥ १४४ ॥ उस अभिषेक सभा से ईशानकूनमें एक बडी अलंकार सभा है इसका सब कथन गोमाणसी का मणिपीठिका पर्यंत अभिषक सभा जैसे कहना उपर परिवार रहित सिंहासन है उसपर विजय देव के अलंकार के लिये वस्त्रादि भंड रखे हुवे हैं अलंकारिक सभा उपर आठ २ मंगल ध्वजा व छत्रपर छत्र कहे हैं यावत् उत्तम आकारवाली है ॥ १४५ ॥ उस अलंकार सभा से ईशानकून में एक बडी व्य-वसाय सभा है इस का वर्णन परिवार रहित सिंहासन पर्यंत अभिषेक सभा जैसे कहना वहां विजय

चिंतिने पत्थिये मणोगएसकप्पे समुप्पज्जित्था किं मे पुव्विसेय किं मे पच्छासेय किं मे पुव्वकरणिज्ज किं मे पच्छाकरणिज्ज, किं मे पुव्विंवा पच्छावा हियाए सुहाए खमाए णीससाए अणुगामियत्ताए भविस्सइ तिकट्टु एवं सपेहेति ॥ ततेणं तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा विजयस्स देवस्स इमं एतारूवं अब्भत्थियं चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं समुप्पण्णं जाणित्ता जेणामेव से विजएदेवे तेणामेव उवागच्छित्ता विजयं देवं करतलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति जएणं विजयेणं वद्धावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पियाणं

पर्याप्ति से प्राप्त होने पर ऐसा अध्यवसाय उत्पन्न हुआ कि पहिले मुझे क्या मंगलकारी है, पीछे क्या मंगलकारी है, पहिले क्या करने योग्य है, पीछे क्या करने योग्य है, पहिले व पीछे क्या हित, सुख, क्षमा, निश्रय के लिये व अनुगामी होगा ऐसा वह विजय देवता विचार करने लगा, विजय देवको ऐसा संकल्प अध्यवसाय, चिंता, प्रार्थना व मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ जानकर उनके सामानिकदेव व आभ्यतर परिषदा के देव उन की पास आये और उनोंने विजय देव को हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन करके दोनों हाथ की अंजलि एकत्रकर जय विजय शब्द से वधाये, जय विजय शब्द से वधाकर ऐसा बोले आप के

महा मणिपेढे पण्णत्ते, दो जोयणाइ आयामविक्खमेण, जोयण बाहल्लेण सव्वरयता मये अच्छे जाव पडिरूव ॥ १४८ ॥ तेण कालेण तेण समएण विजयदेवे विजयाए रायहाणीए उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिते अगुलस्स असखेज्ज भागमित्तीये बोंदीये विजय देवत्ताये उववण्णे ॥ तएण से विजयदेवे अहुणोववण्ण मेत्ताय चेव समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति भाव गच्छति तजहा आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए, आणोपाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावगयस्स समाणस्स इमे एतारूवे अब्भत्थिये

अर्थ

उस नंदा पुष्करणीसे ईशानकूनमें एक बडी मणिपीठिका है यह दो योजन की लम्बी चौडी व एक योजन की जाडी सब रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है ॥१४८॥ अब विजय देवका वर्णन करते हैं उसकाल उससमयमें विजय नामक देव विजया राज्यधानीकी उपपातसभामें देव शयन के देव दूष्य वस्त्रके नीचे अंगुलके असख्यातवे भाग की अवगाहना के शरीर वाला विजय राज्यधानी के इन्द्रपने उत्पन्न हुवा वह विजय देव तत्काल का उत्पन्न हुवा पांच प्रकार की पर्याप्ति से पर्याप्ति भाव को प्राप्त हुवा इन पांच पर्याप्ति के नाम—आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोश्वास पर्याप्ति, व भाषा मन पर्याप्ति विजय देव को पांच

जाव अणुगामियत्ता ते भविस्सति तिकट्टु महता २ जयजय सद्द पउजाति॥ ततेण से विजये देवे तेसिं सामाणिय परिसोववण्णगाण देवाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जाव हियते, देवसयणिज्जाओ अब्भुट्ठित्त दिव्व देवदूसजुयल परिहेइ देवसणिज्जाओ पच्चोरुहति देवसयणिज्जाओ पच्चोरुहित्ता उववायसभाओ पुरत्थिमण दारेण निग्गछति २ त्ता जणेव हरये तेणेव उवागच्छति २ त्ता हरय अणुपदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमेण तारणाण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेण तिसोमाण पडिरूवएण पच्चोरुहति २ हरय उगाहति उगाहित्ता जलावगाहण कराति जलावगाहण करित्ता जलमज्जण करेति जलमज्जण करित्त जलकिड्डकरेति जलकिड्ड

अर्थ

प्रयोग किया यह विजय देव सामानिक परिषदावाले देवों की पास से एमा सुनकर हृष्ट तुष्ट हुवा, देव शयन में से उठकर दीव्य देव दूष्य युग्म [वस्त्र] परिधान किया देव शैय्या में से नीचे उतर कर उपपात सभा के पूर्व के द्वार से बाहिर नीकलकर जहां द्रह है वहां आया उस को प्रदक्षिणा करता हुवा पूर्व दिशा के तोरण से प्रवेश किया पूर्व दिशा के पावाधिये से नीचे उतरकर द्रह के पानी में पड़ा वहां जल मजन किया, जलक्रीडा की, जलक्रीडा करके स्वच्छ बना उस द्रह में से नीकल कर जहां अभिषेक

सूत्र

विजयाए रायहाणीए सिद्धायतणंसि अट्ठसत जिणपडिमाण जिणुस्सेह पमाणमेत्ताण सण्णिक्खित्त चिट्ठति, सभाए सुधम्माए माणवए चेतियखंभे वयरामयेसु गोलवट्ट समुग्गएसु बहुओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओण देवाणुप्पियाण अण्णेसिं च बहुण विजय रायहाणि वत्थव्वाण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेतिय पज्जुवासणिज्जाओ एतण्ण देवाणुप्पियाण पुव्विंपिसेय एयण्ण देवाणुप्पियाण पच्छाविसेय एयण्ण देवाणुप्पियाण पुव्विं करणिज्ज पच्छाकरणिज्ज एयण्ण देवाणुप्पिया पुव्विंवा

विजया राज्यधानी में सिद्धायतन में जिनशरीर के अवगाहना जितनी १०८ जिन प्रतिमा रही हुई हैं, और सुधर्मासभा के अंदर माणवक चैत्य में वज्ररत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा हैं वे आप को और अन्य बहुत विजय राज्यधानी के देव देवियों को अर्चनीय, पूज्यनीय, सत्कार सन्मान योग्य, कल्याणकारी, मंगलकारी, देव संबंधी, चैत्य समान पूजने योग्य हैं आपको यह पहिले भी कल्याणकारी है पीछे भी कल्याणकारी है, पहिले करने योग्य है, पीछे भी करने योग्य है आप को यह पहिले पीछे हित के लिये यावत् अनुगामी होगा यों कहकर बड़े २ जय २ शब्द का

आणाए विणएण वयण पडिसुणेति २ त्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमति २ त्ता वेउव्विय समुग्घाएण समोहणाति २ त्ता असंखेज्जाइ जोयणाइ दंड णिसराति तजहा- रयणाए जाव रिट्ठाण अहाबायरे पोग्गले परिसाडेंति २ अहासुहुमे पोग्गले परितायंति २ त्ता दोच्चपि विउव्विय समुग्घाएण समोहणाति दोच्चपि वेउव्विय समुग्घाए समोहणित्ता अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमयाण कलसाण अट्ठसहस्स मणिमयाण कलसाण, अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमयाण कलसाण, अट्ठ सहस्स सुवण्णमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स रुप्पमणिमयाण कलसाण,

अर्थ

किया फीर ईशानकून में जाकर वैक्रय समुद्घात से असख्यात योजन का दंड किया और रत्न यावत् रिष्ट रत्नमय शुभ पुद्गल ग्रहण किये यथा बादर पुद्गल दूर किये और सूक्ष्म ग्रहण किये, पुन दूसरी बार भी वैक्रेय समुद्घात की, दूसरीवार वैक्रेय समुद्घात करके १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश १००८ मणि के कलश, १००८ सुवर्ण व चांदि के कलश, १००८ सुवर्ण व मणि के कलश, १००८ चांदी व मणि के कलश, १००८ सुवर्ण चांदी व मणि के कलश १००८ मौक्तिक के कलश, १००८ भृंगारक (झारा) ऐसे ही १००८ आरीसे, १००८ थाल, १००८ पात्री, १००८ पुष्प चंगेरी यावत् पूजनी की चंगेरी,

करित्ता आयत चोक्खे परमसूइभूए हरताओ पच्चुत्तरित्ता जेणामेव अभिसेयसभा तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता अभिसेयसभ पयाहिण करेमाणे पुरत्थिमिल्लेण दारेण अणुपविसइ २ त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगा देवा अभिओगिए देवे सद्दावेति २ त्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तुब्भे विजय देवस्स महत्थ महग्घ महारिह विपुल इदाभिसेय उवट्ठवेह ॥ १४९ ॥ ततेण ते अभिओगादेवा सामाणियपरिसोववण्णएहिं एव वुच्चममाणा हट्ठ जाव हियया करयल परिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी देवाणुप्पिय ? तहत्ति

सभा की वहां आया उस की प्रदक्षिणा करके उस में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और सिंहासन की पास आकर उस पर पूर्वाभिमुखकर बैठा ॥ उस समय विजय देवता के सामानिक परिषदा वाले देवोंने आभियोगिक देवो को बुलवाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! तुम विजय देव के लिये महा अर्थ वाला महद्य, महामूल्य वाला विस्तीर्ण इन्द्राभिषेक की तैयारी करो ॥ १४९ ॥ सामानिक परिषदा वाले देवों की पास से ऐसा सुनकर वे आभियोगिक देव हृष्ट तुष्ट हुए यावत् हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया मस्तक पर अंजली कर के ऐसा बोले ' यथातथ्य ' यों विनय पूर्वक उन की आज्ञा का स्वीकार

"दिव्वाए देवगईए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाणमज्झमज्झेण वीइवयमाणा२ जेणेव खीरोदेसमुद्द, तेणेव उवागच्छाति तेणेव उवागच्छित्ता खीरोदगगेण्हाति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सयसहस्सपत्ताइ गेण्हति गेण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदे समुद्दे तेणेव उवागच्छाति उवागच्छित्ता, पुक्खरोदग गेण्हाति पुक्खरोदग गेण्हित्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सतसहस्सपत्ताति गेण्हाति गेण्हित्ता जेणेव समयखत्ते जेणेव भरहेरवयाति वासाइ जेणेव मागध वरदाम पभासाइ तित्थाइ तेणेव उवागच्छति२त्ता तित्थोदग गेण्हाति, तित्थोदग गिण्हित्ता, तित्थमट्टिय गेण्हति तित्थमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव गगा सिंधु रत्ता रत्तवतीओ सालिलाओ तेणेव उवागच्छाति २ त्ता, सलिलोदग

अर्थ

ग्रहण किये वहां से मनुष्य क्षेत्र में भरत एरवत क्षेत्र के मागध, वरदाम व प्रभास जो तीर्थ हैं वहां आये, वहा से तीर्थोदक व तीर्थकी मृत्तिका ग्रहण की फीर वहा से गगा, सिंधु रक्ता व रक्तावती नदी थी वहां आये वहां उन सरिताओं का पानी लिया, और उन के दोनों किनारों की मृत्तिका भी ली वहां से चुल्लहिमवन्त पर्वत व शिखरी पर्वत की पास आये वहां सब ऋतु के पुष्प, सब कषाय रस, सब पुष्प, सब गध, सब माला, सब गुच्छा यावत सब औषधि व सरसव ग्रहण किये वहां से पद्मद्रह व पुडरीक द्रहथे वहां आये उस में से पानी लिया और उत्पल यावत् लक्षपत्र कमल भी ग्रहण किये वहां से हेमवय

अट्ठसहस्स सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण अट्ठसहस्स भोमेज्ज कलसाण अट्ठसहस्स भिंगाराण एवं आयसगाण, थालाण, पातीण सुपतिट्ठकाण, चित्ताण, रयणकरंडगाण, पुप्फ चंगेरीण जाव लोमहत्थ चंगेरीण, पुप्फ पडलगाण जाव लोमहत्थ पडलगाण, अट्ठसहस्स सीहासणाण, छत्ताण चामराण, अवपडगाण वट्टकाण, सिप्पीण, पोरकाण, पीणगाण, तेलसमुग्गाण, अट्ठसहस्स धूवकडुच्छाण विउव्वति, तेसा माविए विउव्विएय कलसेय जाव धूवकडुच्छएय गेण्हति गेण्हइत्ता विजयाओ रायहाणीओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव उद्धृताए

१००८ पुष्प यावत् पूर्णाके पटल, १००८ सिंहासन, १००८ छत्र, १००८ चामर १००८ तेल के गोल १००८ पुष्प यावत् पूर्णाके पटल, १००८ सिंहासन, १००८ छत्र, १००८ चामर १००८ तेल के गोल डब्बे और १००८ धूप के कुडछ का वैक्रेय करे अब उन स्वाभाविक (शाश्वत) कलश व विकुर्वणा वाले कलश यावत् धूप के कुडछे ग्रहण कर विजया राज्यधानी में से नीकलकर उत्कृष्ट यावत् अद्भुत दीव्य देवगति से तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करते हुए जहां क्षीर समुद्र है वहां आये वहां आकर उस में से क्षीरोदक ग्रहण किया और वहां और उत्पल यावत् सहस्रपत्र थे उन्हे ग्रहण किये वहां से पुष्करोदधि समुद्र की पास आये और उस में से क्षीरोदक व उत्पल यावत् सहस्रपत्र

महाहिमवतरुप्पिवासहर पव्वया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सव्वपुप्फे तचेत्र जेणेव महापउमद्दहा महापुडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छाति २ त्ता जाइ तत्थ उप्पलाइ तचेव, जेणेव हरिवास रम्मगवासीति जेणेव हरिकाता हरिससलिला नरकाता नारिकाताओ तेणेव उवागच्छाति २ त्ता सलिलोदग गण्हति २ त्ता तचेत्र, जेणेव वियडावती गधावती वट्टवेयड्ढ पव्वया तेणव उवागच्छाति २ त्ता सव्व पुप्फेय तचेत्र जेणव णिसढ णीलवत वासहर पव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय तचेत्र, जेणेव तेगिछिद्दहकेसरीदहा तेणव उवागच्छाति २ त्ता दहोदग गेण्हाति २ त्ता तचेत्र जेणेव पुव्वविदह अवरविदेह वासाणि जेणेव सीयासीओयाओ महानईओ जहानईसु

अर्थ—पानी व उन की मृत्तिका ग्रहण की वहां से विकटपाति व गधापाति नामक वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प वगैरह लिये फीर वहां से निषध नीलवत वर्षधर पर्वत थे वहां आये वहां से सब पुष्प यावत् सरस्व लिये वहां से तिगिच्छ द्रह व केसरी द्रह थे वहां आये उस में से पानी और उत्पल यावत् लक्षपत्रादि ग्रहण किये वहां से जहां पूर्व महाविदेह व पश्चिम महाविदेह क्षेत्र में सीता सीतोदा महानदियों थी वहां आये वहां का अधिकार अन्य नदियों जैसे कहना वहां से सब चक्रवर्ती विजय में जहां मागध, वरदाम व प्रभास ये तीन तीर्थों और जहां सब अतर नादियों है

गेण्हति २ त्ता उभयो तटमट्टिय गेण्हति तटमट्टिय गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवत सिहरिवास धरपव्वता तणेव उवागच्छति २ त्ता, सव्वतुवरेय सव्वपुप्फेय सव्व गंधय सव्वमल्लय सव्वोसहिं सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव पउमदह पुंडरीयद्दह, तेणेव उवागच्छति २ त्ता दहोदग गेण्हति २ त्ता जाति तत्थ उप्पलाइ जाव सतसहस्सपत्ताइ गेण्हति ताइ गेण्हत्ता जेणेव हेमवय एरण्णवयाति वासाति जेणेव रोहिया रोहितसा सुवण्णकूला रुप्पकूलाओ तेणेव उवागच्छति २ त्ता सलिलोदग गेण्हति २ त्ता उभयो तडमट्टिय गिण्हति २ त्ता जेणेव सद्दावति मालवंत परियागावट्टवेयड्ढ पव्वता तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गेण्हति २ त्ता जेणेव

एरणवय क्षेत्र में, वहां रोहिता रोहितांसा सुवर्णकूला व रूप्यकूला नदी भी वहां आये उन में से पानी व उनके दोनों तट की मिट्टि ग्रहण की वहां से शब्दापाति व माल्यवन्त वर्तुलाकार वैताढ्य पर्वत वहां है वहां आये वहां सब वृक्ष के पुष्प यावत् सब औषधि व सरसव ग्रहण कर महा हिमवंत व रूपि पर्वत पर आये वहां सब पुष्प वगैरह पूर्ववत् जानना वहां से महा पद्म द्रह व महा पुंडरिक द्रह पे वहां आये वहां से द्रह का पानी व पुष्पादि वगैरह लिये वहां से हरिवर्ष, रम्यक् वर्ष में हरीकांता, हरिसलिला, नरकांता व नारीकांता इन चार नदियों की पास आये, वहां से

गोसीसचदण दिव्वच सुमणदाम ददरमलय सुगंधिगधिएयगधे गेण्हति २त्ता, एगतो मिलति २त्ता जवुद्दीवस्स पुरच्छिमिल्लेण दारण णिगच्छति २त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए देवगतीए तिरिय मसखेज्जाण दीवसमुद्दाण मज्झ मज्झण वीतीवयमाणा जेणेव विजया रायहाणी तणेव उवागच्छति २त्ता विजय रायहाणिं अणुप्पयाहिण करेमाणा २ जेणेव अभिसेयसभा जेणेव विजएदेवे तेणेव उवागच्छति २ त्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्त मत्थए अजुलिकट्टु जएण विजएण बद्धावेंति २ त्ता विजयस्स देवस्स त महत्थ महग्घ महरिह विपुल अभिसेय उवट्ठवेंति ॥ १५० ॥ ततेण विजय देव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिण्णिपरिसाओ, सत्तअणिया

अर्थ पूर्वद्वारसे नीकलकर उस उत्कृष्ट यावत् दीव्य देवगतिसे तीरछे असख्यातद्वीप समुद्र उल्लघकर विजया राज्यधानी के पास आये विजया राज्यधानीको प्रदक्षणा करके जहां अभिषेक सभा व जहां विजयदेव था वहां आये दो हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन दिया और अजलि करके विजय देवता को बधाये इस तरह विजय देवता का महाअर्थ वाला महर्ध्य, व महा मूल्य वाला अभिषेक तैयार किया, ॥ १५० ॥ अब चार हजार सामानिक देव, परिवार सहित चार अग्रमहिषियों, तीन परिषदा, सात अनिक, सात अनिकाधिपति, सोलह

जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव ०० मागह वरदाम पभासाइ तित्थाइ जेणेव सव्व-
तरणदीओ सलिलोदग गेण्हति २ त्ता तमेव जेणव सव्ववक्खारपव्वता सव्वतुवरेय
तथव जेणेव मदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय
जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय गण्हति २त्ता जेणेव णदणवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता
सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरसच गोसीसचदण गेण्हति २ ता जेणेव
सोमणसवणे तेणव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरेय जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय
सरस च गोसीस चदण दिव्व च सुमणदाम गेण्हति २ त्ता जेणेव
पंडगवणे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सव्वतुवरे जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएय सरस च

वहां आये उन में से पानी व मृत्तिका ग्रहण की वहां से सब वक्षस्कार पर्वत की पास आये उन में से सब ऋतु के पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये वहां से मेरू पर्वतपर जहां भद्रासालवन है वहां आये, इसमें सब ऋतु के पुष्प यावत् मंगलिक वस्तु ग्रहण किये, वहां से नंदनवन में आये उस में से भी सब ऋतु के पुष्प यावत् सरसव ग्रहण किये और श्रेष्ट गोशीर्ष चंदन, व दीव्य पुष्पों की मालाओं ग्रहण की वहां से पंडकवन में आये, उसमें से सब रस यावत् सब औषधि, सरस श्रेष्ट गोशीर्ष चंदन, दीव्य पुष्प की मालाओं, दर्दर व मलय से सुगंधित बनी हुई सब ग्रहण की फीर सब देवता एकत्रित मीलकर जम्बूद्वीप के

महयाबलेण महयासमुदएण, महतातुडिय जमगसमगपडुप्पवाइदित रवेण सख पणव पडह भेरि झल्लरि खरमुही दुदुहि हुडुक्क निग्घोसणादिएण महतामहता इदाभिसेगेण अभिसिंचति ॥१५१॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स महता इदाभिसेकंसि वट्टमाणसि अत्थेगतियादेवा णच्चोदग णातिमट्टिय पविरल फुसित दिव्व सुरभिरयरेणुविणासण गधोदगवास वासति, अत्थगतियादेवा णिहतरय णट्ठरय भट्ठरय उवासतरय पसतरय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणि सब्भितरबाहिरय आसितसम्मज्जितोव-

ढाल, भेरी, झल्लर मृदग, दुदुभि व गोमुख इत्यादि वादिंत्र से उद्घोषणा करते हुवे महान इन्द्राभिषेक विजय नामक देवका किया ॥१५१॥ जिस समय विजय देवता का महा अभिषेक होता था उस समय कितनेक देवता विजया राज्यधानी में बहुत पानी नहीं व बहुत मृत्तिका नहीं ऐसा पानीके कनवाले मेघ वर्षाते थ, कितनेक दीव्य सुगधित व रजरेणु का विनाश करने वाला मद गधादिक की वर्षा करते थ, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को रज रहित, नष्ट रज, भ्रष्ट रज, उपशांत रज वाली करते थे, अर्थात् राज्यधानी में से रज स्वच्छ करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी के अदर व बाहिर पानी का छिटकाव करते थे पूजते थे, लिपते थ इसतरह करके उनका मार्ग पवित्र पुष्प पुजयुक्त करते थ कितनेक देवता वहां माचापर मांचा इस तरह बांधते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानी को अनेक प्रकारके रगवाली विजय, वैजयंती

सत्तअणियाहिवती सोलसआयरक्खदेवसाहस्सीओ अन्नय बहवे विजयरायहाणिवत्थव्वगा वाणमंतरदेवाय देवीओय तहिं साभाविते उत्तरवेउव्विएहिंयवर कमलपतिट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपडिपुण्णेहिं चंदणकयचच्चातेहिं आविद्धकंठ गुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं करतलसुकुमाल परिग्गहिएहिं अट्ठसहस्स सोवण्णियाण कलसाण रुप्पमयाण मणिमयाण जाव अट्ठसहस्स भोमज्जाण कलसाण सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फे- हिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेण सव्वसमुदएण सव्व- परिवारेणं सव्वायरेण सव्वविभूतीये सव्वविभूसाए सव्वसंभमेण सव्वतोरोहेण सव्वणाड- एहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेण सव्वदिव्वतुडियणिणाएण महया इड्ढीए महयाजुत्तीए

हजार आत्म रक्षकदेव और अन्य बहुत वाणव्यन्तर देव व देवियोंने स्वाभाविक व उत्तर वैक्रेय वाले, श्रेष्ठ कमल में स्थापन किये हुए, सुगंधित श्रेष्ठ पानी से परिपूर्ण, चंदन से चर्चित, कण्ठ में सूत्र बंधा हुवा पद्म उत्पल के ढक्कन वाले, सुकोमल हस्ततल में ग्रहण किये हुए १००८ सुवर्ण कलश, १००८ चांदी के कलश यावत् १००८ मृत्तिका के कलश सब ऋतुके तुवर पुष्प यावत सब औषधिसे सिद्धार्थक (सरसव) से सब ऋद्धि द्युति, बल, समुदय, आदर, विभूति; विभूषा, संभ्रम आरोह, नाटक, सब पुष्प, गंध, माला व अलंकार, सब त्रुटितका निनाद, महाऋद्धि महाद्युति महाबल, महा समुदय युक्त, मुख देवोंने बजाये हुए वादित्र शंख, पणव

सूत्र

सरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालाग-रुपवर कुंदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गधद्धुताभिराम सुगंधवरगंध गंधियगंध वट्टिभूय करेंति, अप्पेगतियादेवा हिरण्णवास वासंति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासंति, अप्पेगतिया देवा रयणवास वासंति वइरवास वासंति, पुप्फवास, मल्लवास, गंधवास, चुण्णवास-वत्थवास आभरणवास वासंति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएंति एव सुवण्ण विधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गधविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं भाएंति अप्पेगतियादेवा चउविह वातित वादेंति तजहा—तत वितत घण झुसिर, अप्पेगतिया

अर्थ

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे, कितनेक पुष्प की माला, गंध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मंगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गंध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व झुसिर यह चार प्रकार के वादित्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरंभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्तावित गीत में प्रवर्तना, ३ मंदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बतलाते हैं तद्यथा—१ दृष्टांतिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामंतविनोपातिक और ४ लोक मध्याव

सूत्र

लिच्च सितसुइसमट्ठरत्थतरावणवीहीय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं मचातिमचकलिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं णाणाविहरागरजित ठसित जय विजय वेजयति पडागातिपडागमडित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं लाउल्लोइयमहिय करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं गोसीससरस-रत्तचदण ददरदिण्ण पचगुलितल करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं उवचिय चदणघडसुकउतोरण पडिदुवारदसभाग करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं आसत्तो सत्त विपुलवट्टवग्धारितमल्लदाम कलाव करेंति अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं पचवण्ण

अर्थ

नामक पताकापर पताका से मंडित करते थे, कितनेक देवता विजया राज्यधानीको गोमय प्रमुखसे लींपते थे व चंदुवा सहित करते थे, कितनेक देवता गोशीर्ष चदन मंडित रक्त चदन ददर्दर चदन से पांच अंगुलीयुक्त छापे देते थे कितनेक देवता विजया राज्यधानी के प्रतिद्वार के देश भाग में चदन चर्चित घडे का तोरण करते थे, कितनेक देवता ऊपर ऊंचे से नीचे तक लटके वैसी लम्बी विस्तीर्ण पुष्प की माला से विजया राज्यधानीको कलित करते थे कितनेक देवता पांचवर्ण के श्रेष्ठ सुगंधित पुष्पों की पुजवाली राज्यधानी करते थे कितनेक देवता कृष्णागर चंदन कुंदरुक, तुरुक जलाकर सुगंधसे मघमघायमान करते थे और श्रेष्ठ सुगंध से गंधित गंध गुटिकाभूत करते थे, कितनेक देवता चांदी की वर्षा करते थे, कितनेक सुवर्णकी वर्षा

सूत्र

सरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलित करेंति, अप्पेगतियादेवा विजय रायहाणिं कालाग-रुपवर कुदुरुक्कतुरुक्कधूव डज्झत धूवमघमघत गधद्धुताभिराम सुगधवरगध गधियगध वट्टिभूय करेंति, अप्पगातेयादेवा हिरण्णवास वासति, अप्पेगतियादेवा सुवण्ण वासंवासति, अप्पेगतिया देवा रयणवास वासति वइरवास वासति, पुप्फवास, मल्लवास, गधवास, चुण्णवास वत्थवास आभरणवास वासति अप्पेगतियादेवा हिरण्णविधिं भाएंति एव सुवण्ण विधिं रयणविधिं वयरविधिं, मल्लविधिं, चुण्णविधिं गधविधिं वत्थविधिं आभरणविधिं भाएंति अप्पगातियादेवा चउविह वातित वादेति तजहा—तत वितत घण झूसिर, अप्पेगतिया

अर्थ

करते थे, कितनेक रत्न की वर्षा करते थे कितनेक पुष्प की माला, गंध, चूर्ण, वस्त्र व आभरण की वर्षा करते थे, कितनेक देवता हिरण्य विधि-हिरण्य रूप मंगलिक प्रकार करते थे, कितनेक सुवर्ण विधि, रत्न विधि, वज्र विधि, माल्य विधि, चूर्ण विधि, गंध विधि, वस्त्र विधि व आभरण विधि करते थे कितनेक देवता तत, वितत घण व झूसिर यह चार प्रकार के वादित्र बजाते थे, कितनेक देवता चार प्रकार के गीत गाते थे, तद्यथा १ उत्क्षिप्त सो प्रथम से आरंभ करना, २ प्रवर्तक प्रस्ताविक गीत में प्रवर्तना, ३ मंदायित मूर्च्छना सहित गाना और ४ रोचितावसान यथोचित लक्षण से गाना कितनेक देवता चार प्रकार के अभिनय बताते हैं तद्यथा—१ दृष्टान्तिक २ प्रातिश्रुतिक ३ सामंतविनीपातिक और ४ लोक मध्यावसानिक

देवा चउव्विहंगेय गायति तंजहा—उक्खित्तय, पवत्तय, मदय, रोइ, वसाग ॥ अप्पेगतियादेवा चउव्विहं अभिणय अभिणयति तंजहा—दिट्ठतिय, पाडंतिय, सामंतोवणिवातिय, लोगमज्झावसाणिय ॥ अप्पेगतिया देवा दुत नट्टविधिं उवदसेति अप्पेगतिया देवा विलंबित, णट्टविधिं, उवदसेति, अप्पेगतियादेवा दुतविलंबितणाम णट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतिया देवा अंचिय णट्टविधिं उवदसेति, रिभिय णट्टविधिं उवदसति, अप्पेगतिया देवा अंचितरिभित णामदिव्वं णट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा आरभड नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा भसोल नट्टविहिं उवदसेति, अप्पेगतियादेवा

मानिक. कितनेक देवता दुत नामक नाटक बताते थे कितनेक देवता विलंबित नामक नाटक बताते थे, कितनेक देवता दुत विलंबित नाटक बताते थे, कितनेक देव अंचित नाटक बतलाते थे, कितनेक देव रिभित नाटक बतलाते थे कितनेक अंचित रिभित नाटक बतलाते थे, कितनेक आरभट नाटक बतलाते थे कितनेक भसोल नाटक बतलाते थे कितनेक आरभट भसोल नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता उत्पात निपात, वर्वे, संकुचित, प्रसारित, गमनागमन, भ्रांत सभ्रांत नामक दीप्य नाटक बतलाते थे, कितनेक देवता शरीर पुष्ट बनाते थे, कितनेक देवता फूत्कार रूप बताते थे, कितनेक देवता तांडव नृत्य करते थे, कितनेक देवता लास्य रूप नृत्य करते थे, कितनेक देवता पुष्ट होते थे, फूत्कार रूप बनाते थे, तांडव नृत्य

आरभड भसोल णामदिव्व नट्टविधिं उवदसेति, अप्पेगतिया देवा उप्पायणिवाय पवत्त सकुचिय पसारिय रयगरइय भत समत णाम दिव्व नट्टविधि उवदसेति, अप्पेगतिया देवा पीणेंति, अप्पेगतिया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा अप्पेगतिया देवा तडवेंति, अप्पेगतिया देवा लासति अप्पेगतिया देवा आफोडेंति, अप्पे गतिया देवा वग्गेंति, अप्पेगतिया तिवति छिदति अप्पगतियादेवा अप्फोडेंति, वग्गति तिवति छिदति, अप्पेगतियादेवा हयहेसिय करेंति, अप्पेगतिया

करते थे व लास्य रूप करते थे, कितनेक देवता आस्फोट करते थे, कितनेक देवता परस्पर सलभ होते थे, कितनेक देवता त्रिपदी छेदते थे, और कितनेक देवता आस्फोट करना सलभ होना व त्रिपदी छेदना ये तीनों करते हैं, कितनेक देवता अश्व जैसे हेषारव करते थे, कितनेक देवता हाथी जैसे गुलगुलाट करते थे, कितनेक देवता रथ जैसे घणघणाट शब्द करते थे, कितनेक देवता अश्व जैसे हेषारव, हाथी जैसे गुलगुलाट व रथ जैसे घणघणाट ये तीनों शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलते थे, कितनेक देवता नीचे गीरते थे, कितनेक देवता कठोर शब्द करते थे, कितनेक देवता ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व कठोर शब्द करना ये तीनों करते थे, कितनेक

सूत्र

हत्थिगुलगुलाइय करेंति, अप्पेगतियादेवा रहघणघणाइय करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छोलेंति, अप्पेगतियादेवा पच्छोलेंति, अप्पेगतियादेवा उक्कट्टीओ करेंति, अप्पेगतिया देवा उच्छालेंति पच्छालेंति उक्कट्टीओ करेंति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद णदंति अप्पेगतिया देवा पाददद्दर करेंति, अप्पगतियादेवा भूमिचवेडदलयंति, अप्पेगतियादेवा सीहणाद पाददद्दरयभूमिचवेड दलयंति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा बुक्कारेंति अप्पेगतिया थक्कारेंति अप्पेगतियादेवा पुक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा वक्कारेंति, अप्पेगतियादेवा नामाइ

अर्थ

सिंहनाद करते थे, कितनेक पांव से दर दर शब्द करते थे कितनेक भूमि चपेटा करते थे कितनेक सिंहनाद, दादर शब्द व भूमि चपेटा ये तीनों साथ करते थे कितनेक देवता हकार शब्द करते थे कितनेक बुक्कार शब्द करते थे, कितनेक थपकार शब्द करते थे कितनेक पूत्कार शब्द करते थे, कितनेक वकार शब्द करते थे, कितने नाम से बोलाते थे, कितनेक हकार, बुत्कार थपकार, पूत्कार, वकार शब्द व नाम से बोलाना यों सब साथ करते थे, कितनेक ऊंचे उछलते थे, कितनेक नीचे गीरते थे, कितनेक तीर्छे गीरते थे, कितनेक ऊंचे उछलना, नीचे गीरना व तीर्छे गीरना यों तीनों करते थे, कितनेक तपते थे, कितनेक झलते थे व कितनेक प्रतपते थे, कितनेक तपना, झलना व प्रतपना ये तीनों करते थे, कितनेक

साहेंति, अप्पेगतियादेवा हक्कारेंति थक्कारेंति वुक्कारेंति नामाति साहेंति, अप्पेगतिया देवा उप्पतति, अप्पेगतियादेवा णिवयति अप्पेगतियादेवा परिवयति, अप्पेगतियादेवा उप्पयति परिवयति, अप्पेगइया देवा जलति, अप्पेगतियादेवा तवति, अप्पगतियादेवा पवति अप्पेगइया देवाजलतितवतिपवति अप्पेगतिया देवा गज्जति, अप्पेगइया देवाविज्जयायाति, अप्पेगइया देवा वास वासति, अप्पेगइया देवा गज्जति विज्जयायति वासवासति, अप्पेगइया देवा सन्निवाय करेंति अप्पेगइया देवा वुक्कालिय करेंति, अप्पेगइया देवा कहकहेंति अप्पेगतिया देवा, दुहुदुह करेंति, अप्पेगतिया देवा देवसण्णिवाय देवउक्कलित देवकह देवदुहदुहक करेंति अप्पेगतियादेवा वुज्जोय करेंति, अप्पेगतिया देवा विज्जुचार करेंति, अप्पेग-

अर्थ

गर्जना करते थे, कितनेक विद्युत करते थे, कितनेक वर्षा करते थे कितनेक गर्जना, विद्युत व वर्षा तीनों करते थे, कितनेक सन्निपात करते थे, कितनेक उत्कालिक करते थे, कितनेक कुह कहाट करते थे कितनेक दुह दुहाट करते थे कितनेक सन्निपात उत्कालिक कुह कहाट व दुहदहाट करते थे कितनेक उद्योत करते थे कितनेक विद्युत् की तरह चमका करते थे कितनेक वस्त्र की वर्षा करते थे कितनेक देव उद्योत, विद्युत तरह चमका व वस्त्र की वर्षा यों तीनों करके नाटक करते थे नाटक के

पचीस भेद कहे हैं इस का वर्णन रायप्पसेणी सूत्र में विस्तार पूर्वक है परन्तु यहां इसका किंचित कथन करते हैं १ आठ प्रकार के मंगलिकाकार नाटक—१ स्वस्तिक २ श्रीवत्स ३ नंदावर्त ४ वर्धमान ५ भद्रासन ६ कलश, ७ मत्स्य ८ दर्पन, २ आवर्त, मत्स्यावर्त, श्रेणि, प्रश्रेणि, स्वस्तिक, पुष्पमान, वर्धमान, मत्स्यांडक, जारगार, पुष्पावलि, पद्मपत्र, सागर तरंग, वासंति लता, पद्मलता, इन चित्रों के आलेखना अभिनय प्रकाररूपाकार है ऐसा दूसरा नाटक विधि, ३ ईहामृग, ऋषभ, तुरग, नर, मकर, विहग, व्याल, किन्नर, सरभ सरभ, भ्रमर, कुंजर, वनलता, पद्मलता के विचित्र चित्र प्रासा तीसरा नाटक विधि, ४ एक चक्र दो चक्र, एक चक्रवाल, दो चक्रवाल, चक्रार्ध चक्रवाल ऐसा चौथा नाटक विधि ५ चंद्रावलि प्रविभक्ति सूर्यावलि प्रविभक्ति, वलयावलि प्रविभक्ति, तारावलि प्रविभक्ति, मुक्तावलि प्रविभक्ति, रत्नावलि प्रविभक्ति, कनकावलि प्रविभक्ति, हंसावलि प्रविभक्ति, एकावलि प्रविभक्ति, यह पांचवा नाटक विधि ६ चंद्रोद्गम प्रविभक्ति, सूर्योद्गम प्रविभक्ति यों उद्गमन प्रविभक्ति नामक छठा नाटक विधि ७ चंद्रागमन प्रविभक्ति, सूर्यागमन प्रविभक्ति यों आगमन प्रविभक्ति नामक सातवा नाटक विधि, ८ चंद्रावरण प्रविभक्ति, सूर्यावरण प्रविभक्ति, यों आवरण नामक आठवा नाटक विधि ९ चंद्रास्तमन प्रविभक्ति, सूर्यास्तमन प्रविभक्ति यों अस्तमन प्रविभक्ति नामक नवा नाटक विधि १० चंद्र मंडल प्रविभक्ति, सूर्य मंडल प्रविभक्ति, नाग मंडल प्रविभक्ति, यक्ष मंडल प्रविभक्ति, भूत मंडल प्रविभक्ति, राक्षस मंडल प्रविभक्ति, महोरग मंडल प्रविभक्ति, गंधर्व मंडल प्रविभक्ति, यह मंडल प्रविभक्ति नामक दशवा

नाटक विधि ११ वृषभ मडल प्रविभक्ति, सिंह मडल प्रविभक्ति, हय विलंबित, गज विलंबित, हय विलसित, गज विलसित, मत्त हय विलसित, मत्त गज विलसित, मत्त हय विलंबित, मत्त गज विलंबित और द्रुत विलम्बित नामक इग्यारहवा नाटक विधि १२ शकट प्रविभक्ति, सागर प्रविभक्ति, नाग प्रविभक्ति, सागर नाग प्रविभक्ति नामक बारहवा नाटक विधि १३ नदा प्रविभक्ति, चंपा प्रविभक्ति, नदा चंदा प्रविभक्ति नामक तेरहवा नाटक विधि १४ मत्स्यांडक प्रविभक्ति, मकरांडक प्रविभक्ति, जार प्रविभक्ति, मार प्रविभक्ति, मत्स्यांडक, मकरांडक, जार मार प्रविभक्ति नामक चौदहवा नाटक विधि, १५ ककार, खकार, गकार, घकार व ङकार प्रविभक्ति नामक पन्नरहवा नाटक विधि १६ चकार, छकार, जकार, झकार व ञकार प्रविभक्ति नामक सोलहवा नाटक विधि १७ टकार, ठकार, डकार, ढकार व णकार नामक सतरहवा नाटक विधि १८ तकार, थकार, दकार, धकार, नकार प्रविभक्ति नामक अठारहवा नाटक विधि, १९ पकार, फकार, बकार, भकार व मकार प्रविभक्ति नामक उन्नीसवा नाटक विधि २० अशोक पल्लव प्रविभक्ति, आम्र पल्लव प्रविभक्ति, जम्बू पल्लव प्रविभक्ति और कोशांब पल्लव प्रविभक्ति नामक बीसवा नाटक विधि २१ पद्मलता प्रविभक्ति, नागलता प्रविभक्ति, अशोक लता प्रविभक्ति, चंपकलता प्रविभक्ति, चूतलता प्रविभक्ति वनलता प्रविभक्ति, वासंतिलता प्रविभक्ति, अतिमुक्तलता प्रविभक्ति, श्यामलता प्रविभक्ति यों लता प्रविभक्ति नामक इक्कीसवा नाटक विधि है २२ द्रुत नामक बावीसवा नाटक विधि २३ विलम्बित नामक तेवीसवा नाटक विधि २४ द्रुत विलम्बित नामक चौवीसवा नाटक विधि २५ अंचित नामक

गतियादेवा चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा पुच्छांय विज्जुचार चेलुक्खेव करेंति, अप्पेगतियादेवा उप्पलहत्थगता जाव सहस्सपत्तहत्थगता घन्टहत्थगता कलसहत्थगता जाव धूवकडुच्छुय हत्थगया हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाण हियया विजयाए रायहाणीए सव्वतो समता आधावंति परिधावंति ॥ १५२ ॥ ततेण

पचीसवा नाटक विधि २६ रिमित नामक छब्बीसवा नाटक विधि २७ अचिल रिमित नामक सत्तावीसवा नाटक विधि २८ आरमंट नामक अट्ठावीसवा नाटक विधि २९ मशोल नामक गुनतीसवा नाटक विधि ३० अरमट मशोल नामक तीसवा नाटक विधि ३१ उत्पात, निपात प्रसक्त, संकुचित, प्रसारित, रचित, संभ्रांत नामक इकतीसवा नाटक विधि और ३२ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पूर्व भवका कथन करते हुए पहिले के मनुष्य भव, देव भव, चरम देव भव, चरम च्यवण, भरत क्षेत्र, अवसर्पिणी, तीर्थंकर जन्माभिषेक, चरम बालभाव, चरम यौवन, चरम काम भोग, चरम दीक्षा, चरम तप का आचरण चरम ज्ञान का उत्पन्न होना, चरम तीर्थ प्रवर्तना व चरम निर्वाण, इन सब के रूप प्रकाश करे यह बत्तीसवा नाटक विधि इस तरह बत्तीस प्रकार के नाटक कितनेक देव करते हैं कितनेक देव उत्पल कमल हाथ में लेकर यावत् सहस्र पत्र कमल हाथ में लेकर, कलश हाथ में लेकर, यावत् धुपारा हाथ में लेकर हृष्ट तुष्ट बने हुवे यावत् हर्ष से विकसित हृदयवाले बनकर विजया राज्यधानी में चारों तरफ फीरते थे॥१५२॥

विजयदेव चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ जाव सोलस आयरक्खदेव साहस्सीओ, अण्णेवि बहवे विजयरायहाणिवत्थव्वा वाणमतरादेवाय देवीओय तहिं वरकमल पतिट्ठाणेहिं जाव अट्ठ सहस्सेण सोवणियाण कलसाण तचव जाव अट्ठसहस्सेण भोमज्जाण कलसाण सव्वोदगेहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतुवरेहिं सव्वपुप्फेहिं जाव सव्वोसहि सिद्धत्थएहिं सव्विड्ढिए जाव निग्घोसणायेण महता२इंदाभिसयेण अभिसिंचति,महया२इंदाभिसेयेण अभिसिंचित्ता पत्तेग२सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु एव वयासी—जय २ नंदा जय २ भद्दा जय २ नंदा भद्द ते

चार हजार सामानिक देवता,चार परिवार सहित चार अग्रमहिषी यावत् सोलह हजार आत्म रक्षक देव और विजया राज्यधानी के अन्य बहुत देव व देवियोंने श्रेष्ठ कमल में रहे हुवे यावत् १००८ सुवर्ण कलश यावत् १००८ मृत्तिकाके कलश के सब पानी, मृत्तिका, सब ऋतु के पुष्प यावत् सब वादित्र के शब्द से विजय देवता को इन्द्राभिषेक किया यहा इन्द्राभिषेक किये पीछे मस्तक पर आवर्तरूप अंजली करके प्रत्येक एसा आशिर्वचन बोलने लगे जयजय नंदा,जयजय भद्र,जयजय नंदा भद्र, तुम नहीं जिते हुवेका विजय करो, जिन पर जय किया है उन की प्रतिपालन करो, शत्रु पक्ष कि जिस का जय नहीं किया है

आणिय जिणाहि जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियसत्तुपक्ख जित च पालहि मित्तपक्ख, जियमज्झ साहित देवाणिकत्रसग्ग इदोइव, देवाण, चदोइव ताराण, चमरो इवअसराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, वहूणिपलिओवमाणे वहूणिमागरोवमाइ बहूणिपालिओवमसागरोवमाणे, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच वहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजति ॥ १५३ ॥ ततेण स विजयदेवे महया इदाभिसेण अभिसित्ते समाण

वस पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में उपसर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चद्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सामानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी, और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों कहकर जयाविजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५३ ॥ विजय देव को प्रधान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

सीहासणाओ अब्भुट्ठइ २त्ता अभिसेयसभाओ पुरत्थिमेण दारेण पडिणिक्खमेति २त्ता जेणामेव अलकारियसभा तेणेव उवागच्छति २ त्ता अलकारियसभ अणुप्पयाहिणी करेमाणे २ पुरत्थिमेण दारेण अणुपविसति २त्ता जेणेव सीहासण तेणेव उवागच्छति २त्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसणे॥ ततेण तस्स विजय देवस्स सामाणिय परिसोववण्णगादेवा अभियोगेदेवे सद्दावेंत २ त्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! विजयस्स देवस्स अलकारिय भड उवणह ॥ ततेण अलकारिय भड जाव उवट्ठावेंति ततेण से विजएदेवे तप्पढमयाए पम्हलसुमालाए दिव्वाए सुरभीए

अर्थ सिंहासन से उठा और अभिषेक सभा के पूर्व द्वार से नीकलकर अलकारिक सभा तरफ गया उस की प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां सिंहासन की पास जाकर उस पर पूर्वाभिमुख से बैठा उस समय सामानिक व आभ्यतर परिषदा वाले देवोंने आभियोगी देवों को बुलवाये और कहा कि अहो देवानुप्रिय ! विजय देव के अलकार के भड (करंडिये) शीघ्रमेव ले आवो उनोंने अलकारिक भड लाकर रखदिये तब सब से पहिले विजय देवने रोम सहित सुकोमल दीव्य सुगंधी कापायित वस्त्र से अपने गात्रको पूछा पश्चात् गोशीर्ष चदन से गात्रों का अनुलेपन किया, फीर नासिका के वायु से उडे

आणिय जिणाहि, जियपालयाहि, अजिय जिणाहि जियसत्तुपक्ख जित च पालहि मित्तपक्ख, जियमज्झ साहित देवणिरुवसग्ग इंदोइव, देवाण, चंदोइव ताराण, चमरो इवअसराण, धरणोइव नागाण भरहो इव मणुयाण, बहूणिपलिओवमाणि बहूणिसा- गरोवमाइं बहूणिपलिओवमसागरोवमाणि, चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव आयरक्खदेवसाहस्सीण विजयस्सदारस्स विजयाए रायहाणीए अण्णेसिंच बहूण विजयरायहाणिवत्थव्वाण वाणमंतराण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव आणाईसर सेणावच्च कारमाण पालेमाणे विहराहि तिकट्टु महता २ सद्देण जयेण जयसद्द पउजंति ॥ १५३ ॥ ततेण से विजयदेवे महया इंदाभिसेण अभिसित्ते समाण

सत्रु पर विजय करो, विजय किये हुवे मित्र पक्ष की प्रतिपालना करो, विजय किये हुवे देव सभा में सामर्ग रहित रहो देव में इन्द्र समान, तारों में चंद्र समान, असुर में चमर समान, नाग में धरणेन्द्र समान, मनुष्य में भरत समान, बहुत पल्योपम बहुत सागरोपम, बहुत पल्योपम सागरोपम तक चार हजार सा- मानिक यावत् आत्म रक्षक देव विजयद्वार विजया राज्यधानी, और विजया राज्यधानीमें रहनेवाले अन्य बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों पर आज्ञा ईश्वरपना व सेनापतिपना करते हुए पालते हुवे यावत् विचरते रहो यों करके जयाविजयकारी शब्दों बोलने लगे ॥ १५३ ॥ विजय देव को महान अभिषेक हुवे पीछे वह अपने

कप्परुक्खयपि, अप्पाण अलकिय विभूसिय करित्ता ददरमलय सुगधगधितेहिं गधेहि गायाइ भुकूडेति २ त्ता दिव्वच सुमणदाम पिणिधाति, ततेण से विजये देवे केसालकारेण वत्थालकारण मल्लालकारेण आभरणालकारेण चउव्विहेण अलकारेण अलकित विभूसिए समाणे पडिपुण्णलकारेण सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ त्ता अलकार समाउ पुरत्थिमिल्लेण, दारेण पडिनिक्खमति २ त्ता जेणेव ववसाय सभा तेणव उवागच्छति २ त्ता ववसायसभ अणुप्पदाहिण करेमाणे २ पुरत्थिमिल्लण दारेण अणुप्पविसति २ त्ता जेणव सीहासण तेणेव उवागच्छति २ त्ता सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुह सणिसण्ण ॥ १ ५ ४ ॥ तएण तस्स विजयस्स देवस्स अभियोगियदेवा पोत्थयरयण उवणेति॥ततेण से विजए

अथ

कल्प वृक्ष समान स्वतः को अलकृत विभूषित किया तत्पश्चात् दर्दर, व मलय नामक चदन की सुगंध से अपने शरीर का सत्कार किया, सत्कार करके दीव्य मनोहर पुष्प माला पहिने, तत्पश्चात वह विजयदेव केशालकार, वस्त्रालकार, माल्यालकार, आभरणालकार यों चार प्रकार के अलकार से विभूषित बनकर प्रतिपूर्ण अलकार सहित सिंहासन से नीचे उतरा और अलकारिक सभा के पूर्वद्वार से नीकलकर व्यवसाय सभा के निकट गया वहां उस की प्रदक्षिणा करके पूर्वदिशा के द्वार से प्रवेश किया और जहां सिंहासन था वहां आया वहां सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५४ ॥ वहां विजय देवता के आभि

गंधकासाईए गाताइ लूहेति २ त्ता सरसेण गोसीसचंदणेण गायाइ अणुलिंपइ२त्ता तआणतरं च णं णासाणीसासवायवोज्झ चक्खुहरं वण्णफरिसजुत्त हयलालापेलवाति रेगधवल कणगखचितकम्म आकासफालिह सारसप्पह अहत दिव्व देवदूसजुयल णियसेइ२त्ता,हार पीणद्धेइ २ त्ता अद्धहार पिणद्धइ२ त्ता एवं एकावलि पाणाधित्ता, एव एतेण अभिलावेण मुत्तावलि कणगावलि रयणावलि कडगाइ तुडियाइ अगयाइ केयूराइ, दससुद्दिताणतकपि कडिसुत्तगंधे कढिसुत्तक्खं मुरवि कठमुरविं पालबाति कुडलाइ चूडामणिचित्तरयकड मउड पिणिधेइ मउड पिणिधित्ता,गाठम वेढिम पूरिम संघाइमेण चउव्विहेण मल्लेण कप्परुक्खयपि अप्पाण अलंकिय विभूसित करेति

अर्थ

वैसा वस्त्र को मनोहर सब वर्ण व स्पर्श युक्त घोडे की लाल से भी अत्यंत सकमाल, श्वेत, सुवर्णमय तार वाले, आकाश अथवा स्फटिक रत्न जैसी प्रभावाले अखंडित दीव्य दूष्य वस्त्र का युगल पहने पहिना वे वस्त्र पहिन कर हार, अर्ध हार, एकावलि, मुक्तावलि, कनकावलि, रत्नावलि, हार, कडे, त्रुटित, अंगद व केयूर पहिने, दश अंगुलियों में दश मुद्रिका, कटि मेखला, कंठ में मंगलिक सूत्र, कुंडल, और अनेक रत्न जडित चूडामणि नामक मुकुट पहना, ग्रथीम माला प्रमुख, वेष्टिम विंटे हुवे गेंद प्रमुख, पुरिम वांसकी सलाका डालकर बनाइ हुइ और संघातिम-जोडकर बनाइ हुइ ऐसी चार प्रकार की पुष्प माला से

जाइ तत्थउप्पलाइ पउमाइ जाव सतसहस्स पत्ताइ ताइ गिण्हति २ त्ता णदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ २ त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थगमणाए, तएणतस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ जाव अण्णे बहवे वाणमतराय देवादेवीओ अप्पगतिया उप्पलहत्थगता जाव सत्तपत्त सहस्सपत्तहत्थगया विजय देव पिट्ठितो अणुगच्छति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स बहवे आभिआगेयादेवा देवीओय कलस हत्थगता जाव धूवकुडुछय हत्थगता विजय देव पिठतो अणुगच्छति ॥ ततेण से विजएदेवे चउहिं सामाणिय

में से नीकल कर सिद्धायतन की पास जाने लगा विजय देवताकी पीछे चार हजार सामानिक यावत् अन्य बहुत वाणव्यतरदेव व देवियों हाथ में उत्पल कमल यावत् सहस्रपत्र कमल लेकर चले तत्पश्चात विजयदेव के बहुत आभियोगिकदेव व देवियों हाथ में कलश यावत् धूपादि लेकर उस पीछे के जाने लगे अब विजय देव चार हजार सामानिक यावत् विजया राज्यधानीके अन्य बहुत वाणव्यतर देव व देवियोंकी साथ परिवरा हुआ सब वादित्र के शब्द से सिद्धायतन के पास गया वहां सिद्धायतन को प्रदक्षिणा देकर पूर्वद्वार से प्रवेश किया और जहां देवछंद रहा हुआ है वहां जिन प्रतिमा को देखते ही प्रणाम किया जिन प्रतिमा को मोर

सूत्र

देवे पोत्थयरयण गिण्हइ २त्ता पोत्थरयण मुयति २त्ता पोत्थयरयण विहाडेति २त्ता पोत्थयरयण वाएइ २ त्ता धम्मिय ववसायपि गेण्हति २त्ता पोत्थरयण पडिनिक्खमति २ त्ता सीहासणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता ववसायसभातो पुरात्थिमिल्लेण दारेण पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव णदा पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २त्ता णदापुक्खरिण अणुप्पयाहिण करेमाणा पुरात्थिमिल्लेण तोरणेण अणुपविसति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेणति सेमाणपडिरूवेण पच्चोरुहति २ त्ता हत्थपाद पक्खालेति २ त्ता एगमह सेत रजतामय विमलसलिल पुण्णमत्तगय महामुहाकिति, समाण भिंगार पगिण्हति २त्ता

अर्थ

योगिक देव पुस्तक रत्न लाये विजय देवताने पुस्तक रत्न हाथ में लिया, उसे छोडा, फीर उस खोलकर पुस्तक रत्न बांचा, अपने कुलधर्म के व्यवसाय योग्य पदार्थ ग्रहण किये फीर उसे नीचे रखकर सिंहासन से नीचे उतरा और व्यवसाय सभाके पूर्वद्वार से बाहिर नीकलकर नंदापुष्करणीके निकट गया वहां उसे प्रदक्षणा कर के पूर्व के तोरण से प्रवेश किया और पूर्व के त्रिसोपान (पक्तिये) से उस में उतरा वहां हस्त पाद का प्रक्षालन किया, एक बडा श्वेत चांदीमय, निर्मल पानी से परिपूर्ण हाथी के मुखाकार समान एक भृंगार (झारी) ग्रहण किया, और वहां जो उत्पल, पद्म यावत् लक्षपत्र थे उन को भी ग्रहण किये, फीर नंदा पुष्करणी

दिव्वाइ देवदूसजुयलाइ णियसेइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिय मल्लेहिय अच्चेहिय अच्चेहि त्ता पुप्फारुहण गधारुहण चुण्णारुहण आभरणारुहण करेति २ त्ता आसत्तो सत्त-विउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेति, असत्ते सत्तविउल वट्टवग्घारित मल्लदाम कलाव करेत्ता अच्छाहिं सण्हेहिं सएहिं रएतामएहिं अच्छरसतडुलेहिं जिणपडिमाण पुरतो अट्ठट्ठमगलए आलिहति तजहा—सोत्थिय सिरिवच्छे जाव दप्पण, अट्ठट्ठमगलगे आलेहित्ता कयग्गाहगहित करयलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुजोवयार कलित करेति २ चदप्पभ वइर वेरुलिय विमल दड कचणमणिर

करने जैसे हाथ से ग्रहण करते हुवे नीचे गिरे हुवे पुष्पों को छोडकर पांच वर्ण के पुष्पों का पुज किया, चंद्रप्रभा, वज्र व वैडूर्य रत्नमय विमल दण्डवाला, कचन मणि रत्न जैसा विविध प्रकारसे जडा हुवा और मनोहर कृष्णागर, कुन्दरूक तुरुष्क के धूप से सुगध वृष्टि करता हुवा वैडूर्य रत्नमय धूपका कडछा लेकर धूप दिया, धूप देकर विशुद्ध छन्दादिक दोष रहित ग्रंथ युक्त महा अर्थवाले १०८ महा वृत्तवाले श्लोक से स्तुति की फीर सात आठ पांव पीछा जाकर बांया जानु खडा रखकर दहिणा जानु नीचे रखा तीन वार मस्तक धरणितल पर लगाया फीर किंचित् ऊचा बनकर खडे, तुटित से स्तभित भुजा ऊची

साहस्सीहिं जाव अण्णेहिय बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहिय देवीहिय सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जाव निग्घोसणाइए रवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सिद्धायतणं अणुपयाहिणी करेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ २ त्ता देवच्छंदए तेणेव उवागच्छंति २ त्ता आलोए जिणपडिमाणं पणामं करेति २ त्ता जिणपडिमाओ लोमहत्थएणं पमज्जति लोमहत्थएणं पमज्जित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणित्ता दिव्वाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहिते लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गाताइं अणुलिंपइ २ त्ता जिणपडिमाणं अहयाइं सेताइं

पीछ की पूंजनी से पूंजी, सुगंधित गंधोदक से प्रक्षालन किया, दिव्य सुगंधित गंध काषायिक वस्त्र से उन के गात्रों पुछे, गोशीर्ष चन्दन से गात्रों पर लेपन किया, जिन प्रतिमा को अखंडित श्वेत उज्वल देव दूष्य वस्त्र* पहिनाये, अग्र उत्तम प्रधान सुगंधित द्रव्य व पुष्प की माला से अर्चनाकर, पुष्प चढाये, उत्तम सुगंधी पर्व चढाये, चूर्णवास चढाये, वस्त्र चढाये, आभरण चढाये, ऊंचे से पृथ्वी तल पर्यंत लम्बी होती हुई पुष्प मालाओं का कलाप किया किंचित् श्वेत सुकुमाल चांदीमय अत्यन्त निर्मल अक्षत (चांवल) से आठ २ मांगलिक का आलेखन किया, तथया १ स्वास्तिक श्रीवत्स यावत् दर्पण कच्छप ग्रहण

* जिन प्रतिमा को वस्त्र पहिनाये हैं इसलिये वह तीर्थंकर की प्रतिमा नहीं है

तणस्स बहुमज्झदेसभाये तेणेव उवागच्छति २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चंदणेण पंचगुलितलेण मंडल आलिहेत्ता चच्च दलइत्ता कयग्गाहग्गहित करतलपब्भट्ठ विप्पमुक्केण दसद्धवण्णेण कुसुमेण मुक्कपुप्फ पुंजोवयार कलित २ धूव दलयति २ त्ता जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्लेणदारे तेणेव उवागच्छइ लोमहत्थयं गण्हति दारचिगयउ सालिभंजिआओय वालरूवयेय लोमहत्थयेण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइ सरसेण गोसीसचंदणेण पंचगुलितलेण अणुलिंपति चच्चये दलयति २ पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करेति २ आसत्तोसत्तविपुल जाव मल्लदाम कलाप करेति २ कयग्गाहग्गहिय जाव पुंजोवयार कलित करेति २ त्ता

लेकर द्वारशाख, सालभिका और व्याल प्रमुख रूप को पूंजे, दीव्य पानी की धारा से उन का प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से पांचों अंगुलियों के छापे से लेपन किया, अर्चना की, वहां पुष्प चढाये यावत् आभरण चढाये नीचे लम्बी लटकती हुई मालाओं का कलाप किया केशकलाप ग्रहण करने जैसे हाथ में से गीर गये हुवे पुष्पों का छोडकर पांच वर्णवाले पुष्पों का समुह किया और वहां धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के मध्य भाग में आया उस को मोरपींछ की पूंजनी से स्वच्छ किया, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से पांच अंगुलीतल से मंडल का आलेखन किया, चंदन से चर्चा की, यावत् धूप दिया फीर वहां से मुख मंडप के पश्चिम दिशा के द्वार के पास

यण भत्तिचित्त कालागरु पवर कुदरुक्क तुरुक्कधूवगत्तधुमाणुविद्ध च धूमवट्टिं विणि-
मुयत वेरुलियमत कडुच्छुय पग्गहिय पयत्तेण धूव दाऊण जिणपडिमाण अट्ठसय
विसुद्धगध जुत्तेहिं महावित्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं सथुणइ २ त्ता सत्तट्ठ
पयाइ उसरति २ त्ता वाम जाणु अचति २ त्ता दाहिण जाणु धरणितलसिनिहट्टु
धरणितलसि णिवाडति २ त्ता तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलसि णामइ २ इसि
पच्चुण्णमति २ कडयतुडिय थभियाओ भूयाओ पडिसाहराति करतलपरिग्गहिय
सिरसावत्त मत्थये अजलिकट्टु एव वयासी—णमोत्थुण अरहताण भगवताण
जाव सिद्धिगइ णामधेय ठाण सपत्ताण, तिकट्टु वदित्ता णमसित्ता जेणेव सिद्धाय-

उठाइ दोनों हाथ जोडकर मस्तक से आवर्तन किया, मस्तक से अजली करके ऐसा बोला अरिहत
भगवंत यावत् सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार होवे यों नमस्कार करके सिद्धायतन
के मध्य भाग में आया वहां दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, वहां रस सहित गार्शीर्ष चावना
चदन से पांच अंगुली के छापे देकर मंडल की आलेखना की वहां पूजा की केशपाश ग्रहण करने
जैसे हाथ में से पडे हुवे पुष्पों का त्याग कर शेष पांच वर्णवाले पुष्पों का पुंज किया और धूप दिया
वहां से सिद्धायतन का दक्षिण दिशा का द्वार था वहां आया वहां मोर पीछ की पूंजनी हाथ में

लोमहत्थएण पमज्जइ २त्ता दिव्वाये उदगधाराये सरसगोसीस चदणेण पुप्फ रुहण जाव आसत्तो कयग्गाह धूव दलयति जेणेव मुहमडवस्स पुरच्छिमिल्ल दारे तचेव सव्व भाणियव्व जाव दारसव्व, भाणियव्व, जणेव दाहिणिल्ले दारे तचेव पेच्छाघरमडवस्स बहुमज्झदेसभाए जेणेव वइरामये अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता अक्खाडग च मणिपाढिय च सीहासणच लोमहत्थगेण पमज्जइ २ त्ता दिव्वाये उदगधाराए अब्भु क्खे २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २, जणेव पेच्छाघरमडवपच्चत्थिमिल्लदारे दारच्चणिया, उत्तरिल्लाखभपति तहेव, पुरत्थिमिल्ले दारे दाहिणिल्लेदारे तहेव, जेणेव चेइय थूभे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता चेइयथूभ लोम-

मध्य भाग में वज्र रत्नमय अखाडे पर रही हुई मणिपीठिका का सिंहासन के पास आया उसकी मोरपींछ से पूजना से प्रमार्जन की, दिव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया, पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां से प्रेक्षाघर मण्डप के पश्चिम द्वार के पास आया यहां द्वार पूजा का सब कथन करना वहां से उत्तर दिशा का स्तम्भ पंक्ति की पास आया वहां भी वैसा ही किया वहां से पूर्व दिशा के द्वार के पास आया वहां भी वैसे ही किया, वहां से दक्षिण दिशा के द्वार के पास आया वहां भी वैसे ही किया वहां से चैत्य स्तूप की पास आया वहां मोर पींछ की पूजनी ग्रहण की मोर पींछ की पूजनी से

धूवं दलयति २ जेणेव मुहमडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ बहुमज्झदेसभाये लोमहत्थेण पमज्जति २ त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुक्खेइति २ सरसेण गोसीस चंदणेणं पंचगुलितलेण मंडलग आलिहति चच्चये दलयति २ कयग्गाहि जाव धूव दलयति २ जेणेव मुहमडवगस्स पच्चत्थिमिल्लेण दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ दारचिग्गडमयमालभ जियाओ बालरूवएय लोमहत्थेयेण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधाराये अब्भुक्खेति २ सरसेण गोसीस चंदणेण जाव चच्चेय दलयति जाव पुप्फारोहण असत्तोसत्तकयग्गाह धूवदलयति २ जेणेव मुहमडवगस्स उत्तरिल्लाण खभपाति तणेव उवागच्छइ लोमहत्थग गिण्हति २ त्ता खभेय सालिभजियाउय

माया, वहां पूजनी की और द्वार, बारसाख व पूतलियों को पूजनी से पूजी दीव्य पानी की धारा से उस की प्रक्षालना की, और गोशीर्ष चदन से चर्चना की यावत् पुष्प चढाये व धूप किया वहां से मुख मंडप के उत्तर दिशी के द्वार की स्तंभ पंक्ति की पास आया वहां हाथ में मोर पूजनी लेकर स्तंभ व शालभंजिका की प्रमार्जना की, दीव्य उदक धारा से प्रक्षालन किया गोशीर्ष चन्दन से पांच अंगुलितल से मंडल का आलेखन किया वहां पुष्प चढाये यावत् धूप किया फीर वहां से मुखमंडप के पूर्व द्वार की स्तंभ पंक्ति की पास आया वहां पूर्ववत् सब कथन करना, यावत् दक्षिण द्वार पर्यंत सब द्वार कहना फीर वहां से प्रेक्षाघर मंडप के बहुत

तोरणेय, सालिभंजियाओय वालरूवएय लोमहत्थएण पमजाति २ दिव्वाए उदगधाराए सरसेण गोसीसचंदणेण अणुलिंपति २ पुप्फारुहण जाव धूव दलयति २ सिद्धायतण अणुप्पयाहिण करेमाणे जेणेव उत्तरिल्लाणंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ २त्ता तचेव महिंदज्झया चेतियरुक्खे चेतियथूमे पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जिणपडिमा उत्तरिल्ला पुरत्थिमिल्ला दक्खिणिल्ला पेच्छाघरमंडवस्सवि तहेव जहा दक्खिणिल्लस्स पच्च-त्थिमिल्लदारे जाव दक्खिणिल्लाण खमपती मुहमंडवस्सवि तिण्हदारेण अच्चाणिया भाणिऊण दक्खिणिल्लाण खमपती उत्तरेदारे पुरच्छिमेदारे सेस तेणेव कमेण जाव

अर्थ

चंदन से विलेपन किया, पुष्पारोपण किया यावत् धूप किया यह सिद्धायतन के दक्षिण द्वार की पूजा हुई अब सिद्धायतन को प्रदक्षिणा करता हुआ उस के पीछे के भाग से उत्तर दिशा के द्वारवाली नंदा पुष्करणी की पास आया वहां अनुक्रम से महेन्द्र ध्वजा, चैत्य वृक्ष, चैत्य स्तूप, पश्चिम दिशा की मणि पीठिका, जिन प्रतिमा, उत्तर, पूर्व व दक्षिण दिशा की मणिपीठिका व प्रतिमा की पूजा की वहां से प्रेक्षाघर मंडप के पास गया उस का कथन दक्षिण दिशा के प्रेक्षाघर जैसे कहना वहां से पश्चिम दिशा के द्वार के पास गया यावत् दक्षिण दिशा की स्तंभपंक्ति, मुखमंडप के तीनों द्वार की अर्चना कहना यावत् दक्षिण दिशा के प्रेक्षा स्तंभपंक्ति की अर्चना की यों क्रमशः सब करते हुवे यावत्

सूत्र

हत्थएण पमज्जति २ दिव्वाए उदगधारेण पुप्फारुहण आमत्तोसत्त जाव धूव दलयति २ जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ जिण-पडिमाए आलोए पणाम करेति २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता तचेव सव्व ज च जिणपडिमाए जाव सिद्धिगइनामधेज्ज ठाण सपत्ताण वदति नमसति, एव उत्तरिल्लएवि एव पुरत्थिमिल्लाएवि दाहिणिल्लाएवि, जेणेव चेइयरुक्खे दारविही, जेणेव मणिपेढियाविही जेणेव महिंदज्झए, दारविही, जेणेव दाहिणिल्लाए नदापुक्खरिणि तेणेव उवागच्छइ २ लोमहत्थग गेण्हति २ चेइयाउयति सोमाण पडिरूवयेय,

अर्थ

चैत्य स्तूप की प्रमार्जना की दीव्य उदकरस से प्रक्षालन किया पुष्प चढाये यावत् धूप किया वहां से पश्चिम दिशा की मणिपीठिका के पास जहां जिन प्रतिमा थी वहां आया जिन प्रतिमा को देखते प्रणाम किया यावत् जिन प्रतिमा का जो अधिकार है वह सब यहां कहना यावत् सिद्ध गति में प्राप्त हुए अरिहंत को नमस्कार होवो यों वदना नमस्कार किया ऐसे ही उत्तर, पूर्व व दक्षिण की मणिपीठिका व जिन प्रतिमा का जानना फीर वहां से चैत्य वृक्ष का पास आया, वहां द्वार विधि जैसे पूजा की वहां से महेन्द्र ध्वजा की पास आया उस की भी वैसे ही पूजा की वहां से दक्षिण दिशा की नंदा पुष्करणी के पास आया वहां मोर पींछ का पूंजनी ग्रहण की, वहां वेदिका, पांवाथिय, तोरण पुतली व व्याल रूपक इन सब की पूंजनी से प्रमार्जना की, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष

विहाडेइ २ त्ता जिणसकहा लोमहत्थयेणं पमज्जति २ त्ता सुरभिणा गंधोदएण तिसत्तखुत्तो जिणसकहाओ पक्खालेति सरसेण गोसीस चंदणेण अणुलिंपइ २ त्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिय अच्चणित्ता धूवं दलयाति २ त्ता वइरामयेसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिनिक्खमेति, वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गयेसु पडिणिक्खमित्ता पुप्फारुहण जाव आभरणारुहण करइ माणवक चेतियखंभे लोमहत्थएण पमज्जति २ दिव्वाये उदगधाराए अब्भुक्खेति २ त्ता सरसेण गोसीस चंदणेण दलयाति २ पुप्फारुहण जाव आसत्तो सत्तकयग्गा धूवं दलयाति २ जेणव सभाएसुधम्माए बहुमज्झदसभाए तचेव जेणव सीहासणे

अर्थ

की, श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से लेपन किया श्रेष्ठ प्रधान गंध माला से अर्चना की और धूप किया, फीर वज्र रत्नमय गोल डब्बे में जिन दाढा रखदी और उस पर पुष्पारोपण यावत् आभरण का आरोपण किया माणवक चैत्य स्थंभ की प्रमार्जना की, दीव्य पानी की धारा से प्रक्षालन किया, श्रेष्ठ गोशीर्ष चंदन से लेपन किया, पुष्प का आरोपण यावत् धूप किया वहां से सुधर्मा सभा के मध्य भाग में आया वहां उस ही प्रकार अर्चना की यावत् जहां सिंहासन है वहां आया, वहां आकर अर्चना कर वैसे ही द्वार की अर्चन कर वहां से देव शैय्या के पास आया वहां से छोटी महेन्द्र ध्वजा के पास आया, वहां से

सूत्र

पुरत्थिमिल्ला णदापुक्खरिणि जेणेव सभासुधम्मा तेणेव पहारेत्थ गमणाये॥ १५५ ॥ ततेण तस्स विजय देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ एयप्पभिर्ति जाव सव्वट्ठ-मिद्धेय जाव णाइयरवेण २ जणेव सभासुहम्मा तणव उवागच्छति २ त्ता सभ सुहम्म अणुप्पयाहिणी करेमाण २ पुरच्छिमिल्लेण दारेण अणुप्पविसति २ आलोए जिणसकहाण पणाम करेति जेणेव मणिपेढिया जेणेव मणिवय चेतियखभे जेणेव वइरामया घोलवट्टसमुग्गका तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थग गेण्हति २ त्ता वइरामये गोलवट्ट समुग्गये लोमहत्थण पमज्जइ २ वइरामए गोलवट्ट समुग्गये

अर्थ

पूर्व में नदा पुष्करणी के पास सुधर्मा सभा में आने के लिये उद्यत हुआ ॥ १५५ ॥ विजय देवता के चार हजार सामानिक यावत् सब ऋद्धि सहित यावत् वादिंत्र के शब्द से वह विजय देव सुधर्मा सभा की पास आया इस को प्रदक्षिणा करके पूर्व के द्वार से उस में प्रवेश किया वहां जिन दाढा को देखते ही प्रणाम किया वहां से जहां मणिपीठिका, जहां माणवक चैत्य स्तम व जहां वज्ररत्नमय गोल डब्बे थे वहां आया वहां पूजनी ग्रहण की वज्ररत्नमय गोल डब्बे की पूजनी से प्रमार्जना की, गोल डब्बे खोल दिये और जिन दाढा की पुजनी से प्रमार्जना की, सुगंधी पानी से जिनदाढा की इक्कीस वार प्रक्षालना

अणुलिंपति २ चा अग्गेहिंवरहिं गंधेहिंय मल्लेहिय अच्चणेति मल्लेहिय अच्चणिचा सीहासण लोमहत्थएण पमज्जति जाव धूवं दलयति सेस तहेव नंदा जहा हरयस्स तहा जेणेव मणिपेढिया तेणेव उवागच्छइ २ चा आभिओगिएदवे सद्दावेति २ चा एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसुय तिसुय चउक्केसुय चउम्मुहेसुय महापहे पासाएसुय पागारसुय अट्टालयसुय चारियासुय गोपुरेसुय तोरणेसुय वावीसुय पुक्खरिणीसुय जाव बिलवंति, गोमुय आरामेसुय उज्जाणसुय काणणसुय वणेसुय वणसंडसुय वणराईसुय अच्चणिय करेह करेचा, ममयेमाणत्तिय

अर्थ

तीन सभा में सिंहासन की अर्चना कहना और द्रह की पूजा नंदापुष्करणी जैसे कहना वहां से व्यवसाय सभा में आया वहां पुस्तक रत्न मोरपींछ की पुंजनी से पुंजा दीव्य उदकधारा से प्रक्षालन किया श्रेष्ट गोशीर्ष चन्दन से लेपन किया, श्रेष्ठ प्रधान गंध व माला से अर्चन किया फीर सिंहासन की पूंजनी से प्रमार्जना की यावत् धूप क्रिया शेष सब पूर्ववत् जानना नंदा पुष्करणी जैसे द्रह का कहना वहां से मणि पीठिका के पास जाकर आभियोगिक देव को बुलवाये और ऐसा कहा अहो देवानुप्रिय ! तुम विजया राजधानी में शृंगाटक, त्रिक, चौक, चतुर्मुख, महापथ, प्रासाद, प्राकार (कोट) अट्टालक, चरिका, (द्वार) गोपुर, तोरण, वावडी, पुष्करणी, यावत् बिल, गोमुख, बगीचा, उद्यान, कानन, वन, वनखण्ड

तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव दारच्चणिता जेणेव देवसयणिज्जे तचेव जेणेव खुड्ड महिंदज्झये तचेव जेणेव पहरण कोसे चोप्पाल तणेव उवागच्छाति २ त्ता पत्तेय पहरणाइं लोमहत्थएण पमज्जति२त्ता सरसेण गोसीसचदणेण तहेव सव्व सेसवि दक्खिण दारवि आदिं करेतु तहेव णेयव्वजाव पुरत्थिमिल्लाणदापुक्खरणी सव्वाण सभाण जहा सुधम्माए सभाए महा अच्चणिया उववाय सभाए णवरिं देवसयणिज्जस्स अच्चणिया,सेसासु सीहासणेण अच्चणिया हरयस्स,जहा णदाए पुक्खरिणीए अच्चणिया ववसायसभाए पोत्थरयण लोमहत्थ॰ दिव्वाए उदग धाराए सरसेण गोसीस चदणेण

वस कोश चोड फलानामक कोष है वहां आया वहां मत्येक वस्तु को मारपीछे की पुजनी से पूजा, श्रेष्ट गोशीर्ष चदन से विलेपन किया, यों सब पूर्ववत् जानना सुधर्मासभा से नदापुष्करणी पर्यंत ऐसे ही कहना सिद्धायतन जैसे दक्षिणद्वार मुख मडप, चैत्य स्तूप, चार जिन प्रतिमा, चैत्यवृक्ष, माहेन्द्र ध्वजा, और नदापुष्करणी की अर्चना की ऐसे ही सुधर्मासभा के उत्तरदिशा के द्वार से पूर्वोक्त कहीं इतनी वस्तु का पूजन किया ऐसे ही पूर्वदिशी का जानना सब सभा का सुधर्मा सभा जैसे कहना उपपात सभा का वैसे ही कहना परतु इस में देव शैय्या भी कहना और शेष

ततेण से विजये देवे चउहिं सामाणिय देवसाहस्सीहिं जाव सोलसेहिं आयरक्ख देवसाहस्सीहिं सव्विड्ढीए जाव णादितेण जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति २ त्ता सभ सुहम्म पुरत्थिमेण दारेण पविसति अणुपविसित्ता जेणेव मणिपढिया तेणेव उवागच्छाति २ सीहासणवरगते पुरच्छाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ १५७ ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि सामाणिय साहस्सीओ अवरुत्तरेण उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्वणच्छेसु भद्दासणेसु णिसियति ॥ ततण तस्स विजयस्स देवस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पुरत्थिमेण पत्तेय २ पुव्ववण्णत्थे भद्दासणेसु णिसीयति॥ ततेण तस्स

अर्थ

चार हजार सामानिक यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देव की साथ सब ऋद्धि यावत् वादित्र के शब्द से जहां सुधर्मा सभा है वहां जाने लगा सुधर्मा सभा में पूर्व दिशा के द्वार से प्रवेश किया और मणिपी-ठिका के पास आकर सिंहासन पर पूर्वाभिमुख से बैठा ॥ १५८ ॥ तत्पश्चात् विजय देवता के चार हजार सामानिक देव अनुक्रम से आये, और ईशानकून में पूर्वोक्त भद्रासन पर बैठे तत्पश्चात् उस की चार अग्रमहिषी पूर्व दिशा में पहिले वर्णन किये हुवे भद्रासन पर बैठी, उस के पीछे आभ्यन्तर परिषदा के आठ हजार देव पृथक् २ अग्नि कौन में भद्रासन पर बैठे, दक्षिण दिशा में भद्रासन पर मध्य परिषदा के

खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥ ततेण ते अभिउगियादेवा विजयेण देवेण एव वुत्ता समाणा जाव हट्ठतुट्ठा विणएण पडिसुणेंति विणएण पडिसुणेत्ता विजयाए रायहाणीए सिंघाडगेसु जाव अच्चणिय करेत्ता जेणेव विजये देवे तेणव उवागच्छाति २ एयमाणिय पच्चप्पिणति ॥ १५६ ॥ ततेण विजयेदेवे तेसिण अभिउगियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिये जाव हियये जेणेव णदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २ त्ता पुरच्छिमिल्लेण तोरणाण जाव हत्थपाय पक्खालेत्ता आयते चोक्खेपरमसुइभूय णदा पुक्खरिणीओ पच्चुतरति २ त्ता जेणेव सभासुहम्मा तणेव पहारेत्थगमणाए ॥१५७॥

वनराजी में आकर उस की अर्चना करो, इतना करके मुझे मेरी आज्ञा पीछी दो विजय देवता से ऐसी बात सुनकर आभियोगिक देवता हृष्ट तुष्ट हुए उन के वचन विनय पूर्वक श्रवण किये, और विजया राज्यधानी में शृंगाटक यावत् वनराजी में अर्चना करके उनको उनकी आज्ञा पीछी दी ॥ १५६ ॥ आभियोगिक देवकी पास से ऐसा सुनकर वह विजय देवता हृष्ट तुष्ट व आनंदित हुआ, वहां से नंदा पुष्करणी के पास आकर पूर्व के तोरण से यावत् हाथ पांव का प्रक्षालन किया, वहां शुचिमय बनकर नंदा पुष्करणी में से नीकलकर सुधर्मा सभा की ओर जाने लगा, ॥ १५७ ॥ वह विजय देव

उप्पीलिय सरासण पट्टिया पीणद्धगेवेज्जबद्ध आविद्धविमलवर चिण्हपट्टा गाहिया उद्दढप्पहरणि तिणयाइ तिसंधीणि वइरामय कोडिणि घणूइ अभिगिज्झपडियाइत कडकलावा तंजहा-णीलपाणिणो, पीयपाणिणो, रत्तपाणिणो, चावपाणिणो, चारुपाणिणो चम्मपाणिणो, खग्गपाणिणो, दंडपाणिणो, पासपाणिणो, णील-पित रत्त चाव-चारु-चम्म खग्ग-दंड पास वरधरा आयरक्खगा, गुत्ता गुत्तपालिया, जुत्ता जुत्तपालिया, पत्तेय २ समयाविउणट किंकर भूताविं चिट्ठति ॥ १५९ ॥ विजयस्सण भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! एगं पलिओवम ठिती पण्णत्ता ।

ऐसा मनुष्य हाथ में लेकर संपूर्ण धार कलाप (भाथे) भरे हुवे हैं, कितनेक के हाथ में हरे वर्ण की छडी-वाले मनुष्य हैं, कितनेक के हाथ में पीले वर्णवाले मनुष्य हैं, कितनेक के पास लाल वर्णवाले मनुष्य हैं कितनेक के हाथ में मनोहर आयुध है, कितनेक के हाथ में चर्म के कोडे हैं, कितनेक के हाथ में खड्ग हैं, कितनेक के हाथ में दंड हैं, कितनेक के हाथ में पाश है, ऐसे ही नीले, पीले, लाल धनुष्यवाले, मनोहर आयुधवाले, चर्म, खड्ग, दंड, पाश धारन करनेवाले, अंग रक्षक, गुप्त रक्षा करनेवाले, सेवक के गुणों से युक्त, परिवार सहित पृथक २ समान मात्रा से नमते हुए किंकरभूत बनकर रहते हैं ॥ १५९ ॥ अहो भगवन् ! विजय देव की कितनी स्थिति कही ? अहो गौतम ! विजयदेव की एक पल्योपम की स्थिति

विजयस्स देवस्सदाहिणपुरत्थिमेण अब्भिंतरियाए परिसाए अट्ठदेवसाहस्सीओ पत्तेय २ जाव णिसीयति एव दक्खिणेण मज्झिमियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ जाव णिसीयति दाहिण पच्चत्थिमेण बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीओ पत्तेय २ जाव णिसीयति ॥ ततेण तस्स विजयस्स देवस्स पच्चत्थिमेण सत्तअणियाहिवई पत्तेय २ जाव णिसीयति ॥ ततण तस्स विजयस्स देवस्स पुरत्थिमेण दाहिणेण पच्चत्थिमेण उत्तरेण सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ पत्तेय २ पुव्वणत्थेसु आसणेसु णिसीयति तंजहा-पुरत्थिमेण चत्तारिसाहस्सीउ जाव उत्तरेण ॥ ततेण आयरक्खा सण्णद्धबम्मिय कतिया

दश हजार देव, नैऋत्यकून में बाह्य परिषदा के बारह हजार देव पृथक् २ सिंहासन पर बैठे, पश्चिम दिशा में उस के सात अनिकाधिपति पृथक् २ भद्रासन पर बैठे, सोलह हजार आत्मरक्षक पूर्व, दक्षिण, पश्चिम व उत्तर में पूर्व वर्णित भद्रासन पर बैठे तद्यथा—पूर्व दिशा में चार हजार, दक्षिण दिशा में चार हजार, पश्चिम दिशा में चार हजार व उत्तर दिशा में चार हजार इन का वर्णन करते हैं. वे आत्म रक्षक देव सन्नद्धबद्ध आयुध से सज्ज बने हुवे हैं, कवच धारन किये हुवे हैं, शरासन धनुष्य की पट्टी ऊंची की है, कंठ में आभरण धारण किये, विमल उत्तम सुभट के चिन्हपट उन के हाथ में हैं, उत्तम आयुध व प्रहरण ग्रहण किये हैं, तीन स्थान नीचे नमे हुवे हैं, तीन संधी हैं, उन की वज्रमय संधी हैं

दाहिणेण जाव वेजयंते देवे ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! जंबूद्दीवस्स जयंतेणाम दारे पण्णत्ते, ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं पणयालीसं जोयण सहस्साइं जंबुद्दीवे पच्चत्थिमापरते लवणसमुद्द पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेणं सीतोदाये महानदीय उप्पिं एत्थणं जंबूद्दीवस्स जयंते नामदारे पण्णत्ते ॥ तचेव सोपमाणं, जयंते देवे पच्चत्थिमेणं से रायहाणीए जाव महिड्ढीए ॥ ३ ॥ कहिणं भंते ! जंबूद्दीवस्स अपराजिए णामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! मंदरस्स उत्तरेणं पणयालीस

अर्थ भगवन् ! वैजयंत देव की वैजयंता राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप से असंख्यातवा जम्बूद्वीप नामक द्वीप में विजयंता राज्यधानी है इस का वर्णन विजया राज्यधानी जैसे जानना विजयंत नामक द्वार व विजयंता राज्यधानी का, विजयंत नामक देव का कथन विजय देव जैसे जानना ॥२॥ अहो भगवन् ! जयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में ४५ हजार योजन जावे तब जम्बूद्वीप के पश्चिम के अंत में पश्चिम के लवण समुद्र से पूर्व में सीतोदा महा नदी के ऊपर जम्बूद्वीप का जयंत नामक द्वार कहा है इस का सब वर्णन विजय जैसे जानना इस का जयंत नामक देव अधिपति है पश्चिम दिशा में राज्यधानी है यावत् महर्द्धिक है ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ४५

विजयस्सणं भंते! देवस्स सामाणियाणं देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? गोयमा! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता ॥ एवं महिड्डीए एवंमहाजुत्तीये एवं महब्बले एवं महायसे एवं महासुक्खे एवं महाणुभागे विजयदेवे॥ १६०॥ कहिणं भंते! जंबू द्दीवस्स दीवस्स वेजयं णामदारे पण्णत्ते? गोयमा! जंबूद्दीवदीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं पणयालीसं जोयणा सहस्साइं अबाहाये जंबूद्दीवदीवे दाहिणपेरंते लवणसमुद्दस्स दाहिणद्धस्स उत्तरेण एत्थणं जंबूद्दीवस्स २ वेजयं नामदारे पण्णत्ते अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सच्चेवसव्वा वत्तव्वया जावणिच्चे ॥ १ ॥ कहिणं भंते! णयंताणीये

कहो अहो भगवन्! विजय देवता के सामानिक देव की कितनी स्थिति कही है? अहो गौतम! एक पल्योपम की स्थिति कही विजय देवकी ऐसी महाऋद्धि, ऐसी महाद्युति, ऐसा बल, ऐसा महायश ऐसा महासुख व ऐसा महानुभाग कहा है यह विजय देवता का अधिकार सपूर्ण हुवा ॥१६०॥ अहो भगवन्! जम्बूद्वीप का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है? अहो गौतम! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में मेरु पर्वत से ४५ हजार योजन अबाधा से जावे वहां दक्षिण दिशा के अंत में दक्षिण दिशा के लवण समुद्र से उत्तर में जम्बूद्वीप नामक द्वीप का वैजयंत नामक द्वार है वह आठ योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा है इस की वक्तव्यता सब विजय द्वार जैसे जानना यावत् नित्य है ॥ २ ॥ अहो

॥ ५ ॥ जंबूद्दीवस्सणं भंते ! दीवस्स पदेसा लवण समुद्द पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते ! किं जंबुद्दीवे २ लवणसमुद्दे ? गोयमा ! जंबूद्दीवेणं दीवे णो खलु ते लवणसमुद्दे ॥ लवण समुद्दस्स पदेसा जंबूद्दीव दीवं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा, तेणं भंते किं लवणसमुद्दे जंबूद्दीवे दीवे ? गोयमा ! लवणाण समुद्दे, णो खलु ते जंबूद्दीवे दीवे ॥ ६ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे जीवा उद्दातित्ता २ लवणसमुद्दे पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थगातिया पच्चायंति अत्थगातिया णो पच्चायंति ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे

वर्णन हुवा ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के प्रदेश लवण समुद्र को क्या स्पर्शकर रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! स्पर्श कर रहे हुवे हैं अहो भगवन् ! वे प्रदेश क्या जम्बूद्वीप के हैं या लवण समुद्र के हैं ? अहो गौतम ! वे जम्बूद्वीप के हैं परंतु लवण समुद्र के नहीं हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के प्रदेश क्या जम्बूद्वीप को स्पर्श कर रहे हैं ? हां गौतम ! स्पर्शकर रहे हैं अहो भगवन् ! वे क्या लवण समुद्र के हैं या जम्बूद्वीप के हैं ? अहो गौतम ! वे लवण समुद्र के हैं परंतु जम्बूद्वीप के नहीं हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एकेन्द्रियादिक जीव मरकर लवण समुद्र में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होवे हैं और कितनेक नहीं भी उत्पन्न होवे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव यहां से

जोयणसहस्स अबाहाए जम्बूद्दीवे उत्तरापरते लवणसमुद्दस्स उत्तरद्धस्स दाहिणेण एत्थणं जम्बूद्दीवे २ अपराइए णामदारे पण्णत्ते तचेव पमाणं रायहाणी उत्तरेणं जाव अपराइए देवे चउण्ह अण्णमि जम्बूद्दीवे ॥ ४ ॥ जम्बूद्दीवस्सणं भंते ! दीवस्स दारस्सय दारस्सय एसणं केवतिय अबाहाए अंतरं पण्णत्ते ? गोयमा ! अउणासीतिं जोयण सहस्साइं बावणंच जोयणाइं देसूणंच अद्धं जोयणं दारस्स अबाहाए अंतरे पण्णत्ते

हजार योजन अबाधा से जावे वहां इस से उत्तर दिशा के अंत में उत्तरार्ध लवण समुद्र से दक्षिण में जम्बूद्वीप का अपराजित नामक द्वार कहा है इस का सब प्रमाण विजय द्वार जैसे कहना इस की राज्यधानी उत्तर में है इस का अपराजित देव है चारों राज्यधानी अन्य असंख्यातवे जम्बूद्वीप में है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! गुन्यासी हजार साढे बावन योजन ७९०५२॥ योजन में कुच्छकम का एक द्वार से दूसरे द्वार पर्यंत अंतर कहा है जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२७ योजन ३ कोस, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल से कुच्छ अधिक है उस में से चारों द्वार की चौडाइ १६ योजन की व चारों द्वार के बारसाख दो योजन के यों सब मीलाकर १८ योजन पूर्वोक्त परिधि में से नीकालना, इस से ३१६२०९ योजन ३ कोस, १२८ धनुष्य, व १३॥ अंगुल रहे इस के चार भाग करना जिस से ७९०५२ योजन, १ कोस १५३२ धनुष्य ३ अंगुल, ३ यव, वरयूका, इतना एक द्वार से दूसरे द्वार का अंतर जानना यह जम्बूद्वीप के द्वार का

विक्खंभेण, तीसे जीवा उत्तरेण पातीण पडिणायये दुहओ वक्खार पव्वय पुट्ठा पुरत्थिमिल्लाए कोडीए पुरत्थिमिल्ले वक्खारपव्वए पुट्ठा, पच्चत्थिमिल्लाए कोडीए पच्चत्थिमिल्ल वक्खार पव्वय पुट्ठा, तेवण्ण जोयणसहस्साति आयामेण, तीसे धणुपट्ठ दाहिणेण, सट्ठिजोयणसहस्साइं चत्तारियट्ठार मुत्तरे जोयणसते दुवालसयएक्कूणवीस तिभाए जोयणस्स परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥ ८ ॥ उत्तरकुराएणं भंते ! कुराए केरिसए

अर्थ

नीलवंत पर्वत की पास चौडी है और पूर्व पश्चिम लम्बी है, दोनों वक्षस्कार पर्वत को स्पर्श कर रही है, पूर्व दिशा के अन्त से पूर्व दिशा के माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुई है और पश्चिम दिशा के अन्तसे पश्चिम दिशा का गंधमादन वक्षस्कार पर्वत को स्पर्शी हुइ है यह जिव्हा ५३००० योजन पूर्व पश्चिम लम्बी है, (मेरु पर्वत से पूर्व पश्चिम भद्रशाल वन २२००० योजन का लम्बा है इस से ४४००० योजन का भद्रशाल वन कहा उस में मेरु पर्वत के दश हजार योजन मीलाने से ५४००० योजन होवे उस में से ५००-५०० योजन के वक्षस्कार पर्वत के १००० योजन नीकालते शेष ५३००० योजन की जिव्हा कही) इस की धनुष्य पीठि का ६०४१८ $\frac{१२}{१९}$ योजन की है अर्थात् अर्ध परिधि है गंध मादन व माल्यवंत दोनों ३०२०९ $\frac{६}{१९}$ योजन के लम्बे हैं, इस से दोनों के मीलकर ६०४१८ $\frac{१२}{१९}$ योजन हुए ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र का कैसा भाव कहा है ? अहो गौतम ! वहां बहुत सम

सूत्र

जीवा उद्दाइत्तार जंबूद्दीवेदीवे पच्चायति ? गोयमा! अत्थेगतिया पच्चायति अत्थेगतिया-नो पच्चायति ॥ ७ ॥ से केणट्ठण भते ! एवं वुच्चइ जंबूदीवेदीवे ? गोयमा ! जंबूदीवेदीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण नीलवतस्स दाहिणेण मालवतस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेण गंधमायणस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण उत्तरकुराणामकुरा पण्णत्ता पाईण पडीणायता उदीण दाहिण विच्छिण्णा अद्धचंद सठाण संठिया, एक्कारस जोयण सहस्साति अट्ठबयाले जोयणसए दोण्णिय एकोणवीसति भागे जोयणस्स

अर्थ

मरकर जम्बूद्वीप में क्या उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न हैं कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप नामक द्वीप ऐसा नाम क्यों किया ? अहो गौतम! जम्बुद्वीप नामकद्वीप में मेरु पर्वत से उत्तर में, नीलवंत पर्वत से दक्षिण में, माल्यवत वक्षस्कार पर्वत से पश्चिम में और गंधमादन वक्षस्कार पर्वत से पूर्व दिशा में उत्तरकुरु नामक कुरु क्षेत्र कहा हुवा है यह पूर्व पश्चिम लम्बा, उत्तर दक्षिण चौड़ा विस्तार वाला व अर्ध चंद्र के संस्थान वाला है ११८४२ $\frac{2}{19}$ योजन का उत्तर दक्षिण में चौड़ा है (महाविदेह क्षेत्र की चौड़ाई ३३६८४ $\frac{4}{19}$ है इस में से मेरु पर्वत की १०००० योजन की चौड़ाई बाद २३६८४ $\frac{4}{19}$ योजन की चौड़ाई रहे उस के दो भाग करने से ११८४२ $\frac{2}{19}$ योजन की चौड़ाई रहे उस की जीवा उत्तर में

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणण अट्ठचोत्तीसे जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अबाधाए, सीताये-महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुव्वे पव्वता पण्णत्ता, एगमेगेण जोयणसहस्स उड्ढउच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उव्वेहेण मूले एक्कमेक्क जोयणसहस्स आयामविक्खंभेण मज्झअद्धट्ठमाइ जोयण सताइ आयाम विक्खंभेण, उवरिपंचजोयण सयाइ आयामविक्खंभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइ एक बावट्ठ जायणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ

के नाम १ पद्म गधा, २ मृग गधा ३ अमपा ४ सखा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{4}{7}$ योजन अबाधा से जावे तो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार भाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो! णवर इम णाणत्त छधणु महस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स सखेज्जइ भागेण रूणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रतिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरुयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराण कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जाति तजहा - पम्हगधा मियगधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादिंत्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले वहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात् तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम यहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एक-रुक नामक अन्तरद्वीप जैसे जानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

तेयली सणिच्चारी ॥ १० ॥ कहिण भंते ! उत्तरकुराए जमगा नाम दुवे पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! नीलवतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणण अट्ठचोत्तीस जोयणसते चत्तारिय सत्तभाग जोयणसहस्स अबाधाए, सीताये महाणईए उभयोकूले एत्थण उत्तरकुराए कुराए जमगाणामदुव्वे पव्वता पण्णत्ता, एगमगेण जोयणसहस्स उड्ढउच्चत्तेण अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उव्वेहेण मूले एकमेक जोयणसहस्स आयामविक्खंभण मज्झअद्धट्ठमाइ जोयण सताइ आयाम विक्खंभेण, उवरिपंचजोयण सयाइ आयामविक्खंभेण मूलेतिण्णि जोयण सहस्साइ एक बावट्ठ जोयणसय किंचिविसेसाहिय परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ

अर्थ

के नाम १ पद्म गधा, २ पुरु गधा ३ अमणा ४ सखा ५ तेयलीय और ६ शनीचारी ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र में जमक नामक दो पर्वत कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! नीलवंत वर्षधर से दक्षिण दिशा में ८३४$\frac{4}{7}$ योजन अबाधा से जावे तो वहां सीता महानदी के दोनों किनारे उत्तरकुरु क्षेत्र में दो जमक पर्वत कहे हैं उन में से एक पूर्व किनारे पर व दूसरा पश्चिम किनारे पर है ये पर्वत एक हजार योजन के ऊंचे, अढाइसो योजन के जमीन में ऊंडे हैं, मूल में एक हजार योजन के लम्बे चौडे, मध्य में साढे सातसो योजन के लम्बे चौडे और उपर पांचसो योजन के लम्बे चौडे हैं मूल

आगार भाव पडोयारे पण्णत्ते ? गोयमा ! बहुसमरमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते, से जहा णामये आलिंग पुक्खरेतिवा जाव एव सरुअगदीवे वत्तव्वया जाव देवलोग परिग्गहाण, तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो ! णवर इमणाणत्त छधणु सहस्समूसिया, दो छप्पन्ना पिट्ठकरडयासय, अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति, तिण्णि पलिओवमाइ देसूणाइ पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागेण ऊणगाइ जहन्नेण तिन्निपलिओवमाइ उक्कोसेण एक्कूणपण्णा रतिंदियाइ अणुपालणा, सेस जहाएगरुयाण ॥ १ ॥ उत्तर कुराए कुराए छविधा मणुस्सा अणुसज्जाति तजहा - पम्हगंधा मियगंधा अममा सहा

रमणीय भूमि भाग कहा है, जैसे आलिंग पुष्कर वादित्र का तला वगैरह सब एकरुक द्वीप जैसी वक्तव्यता यहां जानना यावत् देव गति में जाने वाले यहां के मनुष्यों हैं विशेषता यह है कि यहां छ हजार धनुष्य अर्थात् तीन कोश की शरीर की अवगाहना है २५६ पसली है तीन दिन के अतर से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, उनका आयुष्य जघन्य तीन पल्योपममें से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पूरा तीन पल्योपम वहांपर युगल मनुष्य अपने अपत्य की प्रतिपालना ४९ दिन करते हैं शेष सब अधिकार एकरुक नामक अन्तर्द्वीप जैसे जानना ॥ १ ॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में छ प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन

यण च उड्ढ उच्चत्तेण एकतीस जोयणाइ कोस च विक्खभेण अब्भूगतमूसित वण्णओ भूमिभागओ उल्लोता, दो जोयणाइ मणिपेढियाओ उवरिसीहासणा सपरिवारा जाव जमगा चिट्ठति ॥ ११ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चति जमगा पव्वया ? जमगा पव्वया गोयमा ! जमगेसुण पव्वतेसु तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुखुड्डियाओ वावीओ जाव विलपतियाओ, तासुण खुड्डा खुड्डिया जाव विलपंतियासु बहुइ उप्पलाइ जाव सतसहस्स पत्ताइ जमग प्पभाइ जमग वण्णाइ जमगा एत्थण दो देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसति, तेण तत्थ पत्तेय २ चउण्ह सामाणिय

अर्थ जानना दो योजन की मणिपीठिका है ऊपर परिवार सहित सिंहासन है यावत् जमक पर्वत रहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जमक ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! जमक पर्वत में स्थान २ पर बहुत वापि यावत् बिलपंक्ति हैं उस में बहुत उत्पल यावत् लक्षपत्र जमक जैसी प्रभावाले सब जमक जैसे वर्णवाले रहते हैं और भी वहां जमक नामक दो महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं वे वहां चार हजार सामानिक यावत् जमक पर्वत व जमका राजधानी में रहनेवाले बहुत वाणव्यंतर देव व देवियों का आधिपतिपना करते हुवे यावत् मन को पालते हुवे विचरते हैं अहो गौतम ! इसलिये

तिण्णिय बावत्तरे जोयणसते किंचित विसेसूण परिक्खेवेण पण्णत्ता, उप्पिं पण्णरस एक्कासीति जोयण सते किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण पण्णत्ता, मूलेविच्छिण्णा मज्झे संखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुच्छ संठाण संठिता सव्व कणगामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवेतिया परिक्खित्ता पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता वण्णओ दोण्णवि तेसिण जमग पव्वयाण उप्पिं बहुसम रमणिज्ज भूमिभागे पण्णत्त वण्णओ जाव आसयंति बहुसमरमणिज्जाण भूमिभागाण बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ पासाय वडेंसका पण्णत्ता, तेण पासायवडेंसका बावट्ठि जोयणाइं अद्धजो-

में तीन हजार एकसो बासठ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है, मध्य में दो हजार बहत्तर योजन से कुछ अधिक की परिधि है, और ऊपर पन्नरहसो इकाशी योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्यमें संकुचित व ऊपर पतले हैं गोपुच्छ संस्थान वाले हैं सब सुवर्णमय, स्वच्छ सुकुमाल यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक पर्वतको पद्मवर वेदिका और वनखण्ड कहे हैं ये वर्णन योग्य हैं इन दोनों जमक पर्वत पर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है यह भी वर्णन योग्य है यावत् वहां देवों बैठते हैं उस भूविभाग के मध्य में पृथक २ प्रासादावतंसक कहे है वे दशा योजन के ऊंचे, ३१। योजन के लम्बे चौडे हैं आकाश तल को अवलम्बन कर रहे होवे वैसे दीखाई देते हैं भूमिभाग पर छत बनी हुई है वगैरह सब पूर्ववत्

सूत्र

पव्वयाण दाहिणेणं अट्ठचोत्तीसे जोयण सये चत्तारिसत्तभाग जोयणस्स अबाधाए सीताए महाणईये बहुमज्झ देसभाए एत्थणं उत्तरकुराए नीलवंतद्दहे नाम दहे पण्णत्ते, उत्तरदाहिणायये पाइणपडीणविच्छिण्णे एगं जोयणसहस्सं आयामेणं पंचजोयण सयाति विक्खंभेणं दस जोयणाइ उव्वेहेणं अच्छे सण्हे रययामए कूले चउक्कोणे समतीरे जाव पडिरूवे उभयोपासिं दोहियपउमवरवेइयाहिं दोहिंवणसंडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ नीलवंत दहस्सणं तत्थ २ जाव बहवेति सोमाण पडिरूवका पण्णत्ता वण्णओ भाणियव्वो तोरणेति ॥ १४ ॥ नीलवंत

अर्थ

पर्वत से दक्षिण में ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन के दूरी पर सीता महानदी के बीच में उत्तर कुरु का नीलवंत नामक द्रह कहा है यह उत्तर दक्षिण लम्बा व पूर्व पश्चिम चौडा है एक हजार योजन लम्बा पांच सो योजन चौडा व दश योजन ऊंडा है यह स्वच्छ श्लक्ष्ण है रजतमय किनारे हैं, चार कोणवाला, समान तीरवाला यावत् प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका हैं, दो वनखण्ड हैं ये चारों तरफ घेराये हुवे हैं दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस नीलवंत द्रह को त्रिसोपान प्रतिरूप है उसका भी वर्णन पूर्ववत् जानना और तोरण भी है उस का वर्णन भी पूर्ववत् जानना ॥ १४ ॥ नीलवंत

साहस्सीण जाव जमगाण पव्वयाण जमगाणय रायहाणीण अण्णेसिंच बहूण वाण-मतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव पालेमाणे विहरति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जमग पव्वया २ अदुत्तरचण गोयमा ! जाव णिच्चा ॥ १२ ॥ कहिंण भते ! जमगाण देवाण जमगाओ नाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! जमगाण पव्वयाणं उत्तराणतिं तिरिय मसखेज्ज दीव समुद्द वीतीवतित्ता अण्णमि जम्बूद्दीवे दीवे बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण जमगाण देवाण जमिगाओणाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ, बारसजोयण सहस्साइ जहा विजयस्स जाव महिड्डिया जमगादेवा ॥ १३ ॥ कहिण भते! उत्तरकुराए उत्तरकुराए नीलवतद्दहे नामदहे पण्णत्ता ? गोयमा! जमगाण

इन पर्वतों का नाम जमक रखा है अथवा अहो गौतम ! इन का शाश्वत नाम है वे भूतकाल में नहीं थे वैसा नहीं यावत् नित्य हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जमक देव की जमका राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! जमक पर्वत से उत्तर में असख्यात द्वीप समुद्र गये पीछे अन्य जम्बूद्वीप नामक द्वीप आता है उस में बारह हजार योजन गये पीछे जमक देव की जमक नामक राज्यधानी कही है वह बारह हजार योजन की लम्बी चौडी वगैरह विजया राज्यधानी जैसे कहना उस में महर्द्धिक जमक देव रहते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! उत्तरकुरु क्षेत्र का नीलवंत द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! जमक

याहलण सव्व कणगामई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ १६ ॥ तीसेण कण्णियाए उवरि बहुसमरमणिज्जं देसभाए पण्णत्ते जाव मणीहिं तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमि भागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते कोसच आयामेणं, अद्धकोसच विक्खंभेणं, देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसतसंनिविट्ठे, सभा वण्णओ ॥ १७ ॥ तस्सणं भवणस्स तिदिसिं तओदारा पण्णत्ता तंजहा पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, तेणं दारा पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं विक्खंभेणं तावतियं चेव पवेसेणं सेतावरकणग थूभियागा जाव वणमालाओ ॥ १८ ॥ तस्सणं भवणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंग पुक्खरेतिवा, जाव मणीणं वण्णओ ॥ १९ ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स

की जाती है सब स्वच्छ, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है ॥ १६ ॥ उस कर्णिका ऊपर बहुत रमणीय भूमि भाग कहा है वह यावत् मणि से सुशोभित है उस भूमि भाग के मध्य में एक बड़ा भवन कहा है वह एक कोश का लम्बा आधा कोश का चौड़ा कुच्छकम एक कोश का ऊंचा अनेक स्थंभ वाला है इस का वर्णन सभा जैसे कहना ॥ १७ ॥ इस भवन के तीन दिशा में तीन द्वार हैं तद्यथा-पूर्व दक्षिण व उत्तर वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे, अढाइसो धनुष्य के चौडे और उतने ही प्रवेश वाले है सुवर्णमय शिखर है यावत् वनमाला पर्यंत वर्णन करना ॥ १८ ॥ उस भवन में बहुत रमणीय भूमिभाग है जैसे

दहस्सण दहस्स बहु मज्झदेसभाए एत्थण एगेमह पउमे पण्णत्ते, जोयण आयाम विक्खभेण त तिगुणं सविसेस परिक्खेवेण अद्धजोयण वाहल्लेण, दस जोयणाइं उव्वेहेण दो कोसे ऊसिते जलतीतो सातिरेगाइ दस जोयणाइ सव्वग्गेण पण्णत्त ॥ १५ ॥ तस्सण पउमस्स अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तजहा वइरामयामूला रिट्ठामये कंदे, वेरुलिया मये णाले, वरुलियामया बाहिरपत्ता, जम्बूणयमया अब्भितर-पत्ता, तवणिज्जमया केसरा, कणगामई कण्णिया, नाणामणिमया पुक्खरत्थिभुया, साण कण्णिया अद्धजोयण आयाम विक्खभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, कोस

द्र के मध्य भाग में एक पद्म कमल है यह एक योजन का लम्बा चौडा और उस से तीनगुनी से अधिक परिधि है, आधा योजन का जाडा है दश योजन ऊंडा है, जल उपर दो कोश का ऊंचा है और सब मीलकर साधिक दश योजन का है ॥ १५ ॥ इस पद्म का इस तरह वर्णन करते हैं वज्र रत्नमय मूल है आरिष्ट रत्नमय कंद है, वैडूर्य रत्नमय नाल है, वैडूर्य रत्नमय बाहिर के पत्र हैं जम्बूनद रत्नमय आभ्यंतर के पत्र हैं, तपनीय सुवर्णमय केशरा है कनकमय कर्णिका है, विविध मणिमय स्थूभिका है उस की कर्णिका आधा योजन की लम्बी चौडी है, इस से तीनगुनी से अधिक की परिधि है, एक कोश

परिक्खेवेण, अद्धकोसं बाहल्लेण सव्व कणगामईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ ॥ तासिण कण्णिया उप्पिं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा जाव मणीण वण्णो गंधो फासो ॥ २० ॥ तस्सण पउमस्स अवरुत्तरेण उत्तर पुरत्थिमेण एत्थण मिलवत दह कुमारस्स देवस्स चउण्ह सामाणिय साहस्सीणं, चत्तारि पउम साहस्सीओ पण्णत्ताओ एव सव्व परिवारो नवरि पउमाण भाणियव्वो, सेण पउमे अण्णेहिं तेहिं पउम-परिक्खेवेण सव्वतो समता सपरिक्खित्ते तजहा—अब्भितरएण मज्झिमएण बाहिरएण अब्भितरएण पउमपरिक्खेवे बत्तीस पउम सयसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमएण पउम परिक्खेवो चत्तालीस पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरएण पउमपरिक्खेवे अडयालीस पउमसय साहस्सीओ पण्णत्ताओ,एवामेव सपुव्वावरेण एगापउम कोडी

अर्थ

परिधि है, आधा कोस की जाडी है सब कनकमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है उन की कर्णिका पर रमणीक भूमिभाग है यावत् मणि का वर्ण, गंध रस व स्पर्श है ॥ २० ॥ उस पद्म कमल के वायव्य कोण उत्तर व ईशान कोण में नीलवंत द्रह कुमार देव के चार हजार सामानिक देव के चार हजार पद्म कहे हैं यों सब परिवार के कमल कहना अब यह पद्म अन्य तीन कमलकी परिधि से वींटा हुवा है आभ्यतर परिधि मध्य परिधि व बाहिर परिधि अभ्यतर परिधि में बत्तीस लाख कमल, मध्य परिधि में चालीस लाख कमल और बाहिर की परिधि में अडतालीस लाख

बहुमज्झदेसभाए एत्थण मणिपेढिया पण्णत्ता, पंच धणुसताइं आयामविक्खभेण अड्ढाइज्जाइ धणुसयाइ बाहल्लेण सव्व मणिमती॥तीसेण मणिपाढयाए उवरिं एत्थण एगेमहं देवसयणिज्ज पण्णत्ते, देव सयणिज्जस्स वण्णओ ॥ सेण पउमे अण्णेण अट्ठ सतेण तदद्धुच्च पमाणमेत्तेण पउमाण सव्वओ समता सपरिक्खित्ता तेण पउमा अद्ध जोयण आयाम विक्खभेण ततिगुण स विसस परिक्खेवेण कोस बाहल्लेण दसजोयणाइ उव्वेहेण कोस ऊसिया जलताओ सातिरेगाइ दसजोयणाइ सव्वेग्गेण पण्णत्ताइ तेसिण पउमाण अयमेतारूवे वण्णवासे पण्णत्ते तंजहा—वइरामयामूला जाव णाणाम-णिमया पुक्खलत्थिभया ॥ ताओण कण्णियाओ कोस आयामविक्खभेण ततिगुणस

कर्णिका पर्यंत यावत् मणिका वर्णन जानना ॥ १९ ॥ उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में एक मणि पीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौडी अढाइ सो धनुष्य की जाडी व सब मणिमयी है उस मणिपीठिका पर एक बडा देवभवन है वह देवभवन का वर्णन पूर्ववत जानना उस पद्मकमल की चारतरफ १०८ कमल उस से आधी ऊंचाइ वाले कहे हुवे हैं, वे सब आधा योजन के लम्बे चौडे हैं तीनगुनी स अधिक परिधि है, एक कोस के जाडे हैं, दस योजन ऊंडे हैं, एक कोस पानी से उपर है, साधिक दस योजन के सब मीलाकर हैं इन का इस तरह वर्णन किया है वज्ररत्नमय मूल है यावत् विविध मणिरत्न मय पुष्कर स्थभिका है उन की कर्णिका एक कोस की लम्बी चौडी है उस से तीन गुनी से अधिक

विक्खभेण उवरिं पण्णास जोयणाइ विक्खभेण, मूले तिण्णि सोले जोयणसए किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेण, मज्झ दो'एगसचतीसे जोयण सते किंचि विसेसाहिता परिक्खेवेण, उवरिंएग अट्ठावन्न जोयणसत किंचिविसेसाहिया परिक्खेवेण, मूलेवि.च्छिण्णा मज्झसाखित्ता उप्पिं तणुया, गोपुच्छ सठण सठिया सव्वकचणमया अच्छा, पत्तेय २ पउमवरवेतियाइ पत्तेय २ वणसड परिक्खित्ता ॥ तेसिण कचणग पव्वयाण उप्पिं बहु समरमणिज्जे भूमिभागे जाव आसयति, पत्तय २ पासायवडेंसगा सहा बावट्ठि जोयाणिया उड्ढ, एकतीस

अर्थ ऊचे हैं, मूल में एक सो योजन के चौडे हैं मध्य में पचत्तर योजन के चौडे हैं और ऊपर पचास योजन के चौडे हैं मूल में तीन सो सोलह योजन से अधिक परिधि है, मध्य में दो सो सैतीस योजन से अधिक की परिधि है और ऊपर एक सो अट्ठावन योजन की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में सकचित व ऊपर पतले हैं गोपुछ सस्थानवाले हैं ये सब कंचनमय स्वच्छ हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड हैं उन कचनगिरि पर्वत पर बहुत रमणिय भूमिभाग है यावत् वहां देव बैठते हैं उन कांचनगिरि पर्वत में पृथक २ प्रासादावतसक हैं वे ६२॥ योजन के ऊंचे हैं ३१।

ओ वीसच पउमसत सहस्सा भवति तिमक्खाया ॥ २१ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चति निलवतद्दहे ? निलवतद्दहे गोयमा ! निलवत दहेग तत्थ २ जाव उप्पलाति जाव सयसहस्स पत्ताइ निलवतप्पभाति निलवत वण्णा भाति निलवत दह कुमारेय, एत्थसोचव गमो जाव णिलवत दह २ ॥ २२ ॥ निलवतण पुरात्थिम पचत्थिमण दस २ जोयणाति अवाहाएँ एत्थण दस दस कचणग पव्वता पण्णत्ता, तेण कचणग पव्वता एगमेग जोयणसत उड्ढ उच्चत्तेण पणुवीस २ जोयणाति उव्वेहेण, मूले एगमेग जोयणसत विक्खमेण मज्झे पण्णत्तरिं जोयणाइ आयाम

कमल इन तीनों परिधि के एक क्रोड बीस लाख कमल होते हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नीलवत द्रह ऐसा नाम क्यों रखा ? अहो गौतम ! वहाँ पद्मकमल यावत् लक्षपत्रकमल हैं, वे सब नीले वर्णवाले, नीली प्रभावाले व नीली कांतिवाले हैं यहां नीलवत द्रह कुमार नामक नाग कुमार देव रहता है इस का कथन प्रथम देव जैसा जानना यावत् इस लिये नीलवत द्रह नाम दिया गया है ॥ २२ ॥ नीलवत पर्वतसे पूर्व पश्चिम में दश २ योजन के अंतर से अबाधापने दश २ कांचनागिरि पर्वत कहे हुवे हैं वे कांचनागिरि सब मीलकर २ पर्वत होते हैं ये कांचनागिरि पर्वत १०० योजन के ऊंचे हैं, पच्चीस योजन के

नामाए देवा सव्वेसिं पुरच्छिम पञ्चत्थिमेण कयणपव्वता दस २ एकप्पमाणा उत्तरेण रायहाणी अण्णंमि जंबूद्दीवे चददहे एरावणदहे मालवंतदहे एव एकेको णेयव्वा ॥ २५ ॥ कहिण भंते ! उत्तर कुराए जंबू सुदंसणाये जंबूपीढे नाम पीढे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर पुरच्छिमेण नीलवंतस्स वासहर पव्वयस्स दाहिणेण, मालवंतस्स वक्खार पव्वयस्स पञ्चत्थिमेण गंधमादणस्स वक्खार पव्वयस्स पुरत्थिमेण सीयाए महा नदीए पुरत्थिमिल्लेकूले एत्थण उत्तरकुराए जंबूपेढे नामपेढे पंचजोयण सयाइं आयाम विक्खंभेण पण्णरस एक्कासीते जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण, बहुमज्झ-

अर्थ

य दो द्रह हुवे ऐसे ही चंद्र द्रह, एरावत द्रह व माल्यवन्त द्रह का वर्णन जानना इन के अधिपति देव व उन की राज्यधानी सब का कथन पूर्ववत् जानना ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में जम्बू सुदर्शन वृक्ष का जम्बू पीठ नामक पीठ कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशानकून में नीलवंत वक्षस्कार पर्वत से दक्षिणदिशा में माल्यवंत, गजदंताकार नामक वक्षस्कार पर्वत से पश्चिमदिशा में गंधमादन] गजदंता वक्षस्कार पर्वत से पूर्वदिशा में, सीता महानदी के पूर्व किनारे पर उत्तरकुरु क्षेत्र में जम्बूपीठ नामक पीठ कहा है यह पांचसो योजन का लम्बा चौडा है पन्नरसो इक्यासी योजन से अधिक परिधि

जोयणाइं कोस च विक्खभेण, मणिपेढिया दो जोयणिया सिंहासणा सपरिवारा ॥ २३ ॥ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ कंचणग पव्वया ? गोयमा ! कंचणग पव्वया तेसुण पव्वतेसु तत्थ २ वावीओ उप्पलाइं जाव कंचण वण्णाभाति, कंचणग जाव देवा महिड्डिया जाव विहरति, उत्तरेण कंचणगाण कंचणिताओ रायहाणीओ अण्णमि जंबू तहेव सव्व भाणियव्व ॥ २४ ॥ कहिणं भंते ! उत्तरकुराए उत्तरकुरुदहे नामदहे पण्णत्ते ? गोयमा ! नीलवतस्सदहस्स २ दाहिणेण अट्ठचोती से जोयणसए एवं चेव गमो णेयव्वो, जो नीलवतदहस्स सव्वेसिं सरिसके दहसरिस

योजन के चौडे हैं उन में मणिपीठिका है वह दो योजन की लम्बी चौडी है वहां परिवार सहित सिंहासन है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! कांचनागिरि पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! कांच-नागिरि पर्वत पर सब वावी-उत्पल वगैरह यावत् कांचन वर्ण भांति यावत् वहां कांचनग कुमार देव रहता है उत्तर दिशा में कांचनक कुमार देव की कंचनका राज्यधानी कही है वगैरह सब पूर्ववत् जानना ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! उत्तर कुरु क्षेत्र में उत्तरकुरु द्रह कहां कहा है ? अहो गौतम ! नीलवंत द्रह से ८३४ $\frac{4}{7}$ योजन दूर पर उत्तरकुरुद्रह कहा है इस का सब कथन नीलवंत द्रह जैसे कहना द्रह के नाम द्रह जैसे कहना कंचनक पर्वत पूर्व पश्चिम किनारे पर कहना उत्तर दिशा में राज्यधानी है

णि आयामविक्खंभेण साइरेगाइं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा ॥ २७ ॥ तीसेणं मणिपेढियाए उवरिं एत्थणं एगामहं जम्बूसुदंसणा पण्णत्ता अट्ठजोयणाइं बाहल्लेण उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधे अट्ठ जोयणं विक्खंभेण, छजोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणाइं विक्खंभेणं, सातिरेगाइं अट्ठजोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता, वइरामयामूला रययसुपतिट्ठिया विडिमा, एवं चेतियरुक्खस्स वण्णओ जाव सव्वाइं रिट्ठामय विउलकंधा वेरुलियरुइलखंधा, सुजायवरजाय रूवपढमगविसालसाला, णाणामणिरयणविविह साहप्पसाहा वेरुलिय

अर्थ यावत् प्रतिरूप है ॥ २७ ॥ उस मणि पीठिका पर एक बडा जम्बू सुदर्शन वृक्ष है वह आठ योजन का ऊंचा, आधा योजन का भूमि में ऊंडा, दो योजन का स्कंध, आठ योजन का चौडा छ योजन की शाखा है मध्य भाग में आठ योजन चौडा है और सब मीलकर वह साधिक आठ योजन का है इन के वज्र रत्नमय मूल है, चांदीमय सुप्रतिष्ठित अंकुर है अरिष्ट रत्नमय कंद, वैडूर्य रत्नमय मनोहर स्कंध वगैरह चैत्यवृक्ष के वर्णन जैसा जानना यावत् सुजात उत्तम चांदी की शाखा है, मणि रत्नमय विविध प्रकार की शाखा प्रशाखा है, वैडूर्य रत्नमय पत्र है, रक्त सुवर्णमय पत्र के बींट हैं, जम्बूनद रत्नमय

देसभाए बारसजोयणाइं बाहल्लेण, तदाण तरचण मात्ताए -२ पदेस परिहाणीए सव्वेसु चरमंतेसु दोकोसेण बाहल्लेण पण्णत्ते, सव्वकंचणयामये अच्छे जाव पडिरूवे, सेण एगाए पउमवरवेइयाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ते वण्णओ दोण्हवि ॥ तस्सण जम्बुपीढस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोमाणपडिरूवगा पण्णत्ता तहेव जाव तोरणा जाव छत्तातिछत्ता ॥ २६ ॥ तस्सण जंबूपेढस्स उप्पि बहुसमरम णिज्ज भूमिभागे पण्णत्ते से जहा नामए आलिंगपुक्खरेतिवा जाव मणि॥तस्सण बहुसमर-मणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगामहं मणिपेढिया पण्णत्ता अट्ठजोयणा

है मध्य में बारह योजन का जाडा है, तत्पश्चात थोडा २ कम होता हुवा चरमांत में दो कोश का जाडा है सब कंचनमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस को एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ रहे हुवे हैं इन दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना उस जम्बूपीठ के चारों तरफ चार त्रीसोपान है वैसे ही है यावत् तोरण व छत्रपर छत्र कहना ॥ २६ ॥ उस जम्बूपीठ पर एक बडी समरमणीक भूमि है जैसे मृदङ्ग का तला यावत् मणिका स्पर्श उस रमणीय भूमि भाग के मध्य में एक मणि पीठिका कही है वह आठ योजन की लम्बी चौडी अधिक चार योजन की जाडी कही है सब मणिमय स्वच्छ यावत्

माला‌ओ भूमिभागा उल्लोया मणिपेढिया पचधणुसइया देवसयणिज्जे भाणियव्व ॥ २९ ॥ तत्थ जेसे दाहिणिल्ले साले से एगे मह पासायवडेंसये पण्णत्त कोस उड्ढ उच्चत्तेण अद्धकोस आयामविक्खंभेण अब्भुग्गय मूसिया अतो बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा उल्लोया ॥ तस्सण बहु समरमणिज्ज भूमिभागस्स बहु मज्झदेसभाए सीहासण सपरिवार भाणियव्व ॥ ३० ॥ तत्थण जे पच्चत्थिमिल्ले साल एत्थण एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते तचत्र पमाण तहिंपि सीहासण सपरिवार ॥ ३१ ॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले साले तत्थण एगेमह पासायवडेंसए पण्णत्ते तचत्र पमाण तेहिंपिसीहासण सपरिवार तत्थण जसे उत्तरिम विडिमग्ग साले एत्थण एगेमह सिद्धायतण पण्णत्ते कोस आयामेण अद्धकोस

अर्थ

यावत् माला पर्यंत वर्णन पूर्ववत् जानना भूमि भाग है, उपर छत है पांचसो धनुष्य की मणिपीठिका है और देव शयन है ॥ २९ ॥ जो दक्षिणदिशा में शाखा है उन पर एक प्रासादावतंसक है वह एक कोश का ऊंचा, आधा कोश का लम्बा चौडा व गगनतल का अवलम्बन करता होवे वैसा है अंदर बहुत रमणीय भूमिभाग है उस भूमिभाग के मध्य भाग में परिवार सहित सिंहासन है ॥ ३० ॥ पश्चिम दिशा के सिंहासन पर एक प्रासादावतंसक है उस का प्रमाण उपरोक्त प्रासादावतंसक जैसे कहना परंतु परिवार रहित सिंहासन कहना ॥ ३१ ॥ जो उत्तर दिशा में शाखा है उस पर एक सिद्धायतन है वह एक कोश का लम्बा, आधा कोश का चौडा, कुच्छ कम देढ कोश का ऊंचा है उस में अनेक स्तंभ

मत्त, सवाणिज्ज पत्तविंटा, जम्बूणय रत्तमउयसुकुमालपवाल पल्लवंकुरधरा विचित्त, मणिरयण सुरहिकुसुम फलभारनमियसाला, सच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया अहिय मणाणिव्वुइकरा, पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा॥ २८ ॥ जम्बुएण सुदसणा ते चउदिसिं चत्तारि साला पण्णत्ता तंजहा-पुरत्थिमेण दक्खिणेण - पच्चत्थिमेण उत्तरेण, तत्थ जे स पुरत्थिमिल्ले साले एत्थण एगेमहं भवणे पण्णत्ते—कोस आयामेण, अद्धकोसं विक्खंभेण, देसूण कोस उड्ढं उच्चत्तेण, अणेगखंभ सयसंनिविट्ठ दाराण तचेव पमाण पंचधणुसताति उड्ढंउच्चत्तेण अढाइज्जाइं विक्खंभेण जाव वण्ण-

लाल मृदु सुकोमल प्रवाल अंकुर हैं विचित्र प्रकार के मणि रत्नमय सुगंधि पुष्प हैं, फल के भार से उन की शाखा नम्र बनी हुई है व छायावंत कांतिवंत, श्रीक, उद्योतवंत, अत्यंत मन को सुखकारी, प्रसन्नकारी अभिरूप व प्रतिरूप है ॥ २८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के पूर्वादि चारोदिशि में चार शाखा हैं उन में से पूर्वदिशा की शाखापर एक भवन कहा है वह एक कोस का लम्बा, आधा कोस का चौडा, कुछकम एक कोस का उंचा व एक स्तंभ वाला है इस का वर्णन करना यावत् भवन के द्वार, वर्णन करना इस के द्वार पांचसो धनुष्य के ऊंचे हैं अढाइसो धनुष्य के चौडे हैं और सबसे ही भवन वाले हैं

अट्ठसएण जबुण तदद्धुच्चत्तप्पमाण मेत्ताणं सव्वओ समता सपरिक्खित्ता ॥ ताओणं जघुओ चत्तारि जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण कोस उव्वेहेण जोयणखधे, कोसविक्खभेण तिन्निजोयणाइ विडिमा बहुमज्झदेसभाए चत्तारि जोयणाइ विक्खभेण सातिरेगाइ चत्तारि जोयणाइ सव्वग्गेण वइरामयमूला सोचेव चेतियरुक्ख वण्णओ ॥ ३४ ॥ जबुएण सुदसणाए अवरुत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेण एत्थण अणाढियस्स देवस्स चउण्ण सामाणिय साहस्सीण चत्तारि जबू साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ जबूएण सुदसणाइ पुरत्थिमेण एत्थण अणाढियस्स देवस्स चउण्ह अग्गमहिसीण चत्तारि जबूओ पण्णत्ताओ एव सपरिवारो सव्वो णेयव्वो ॥ जबूण जाव आयरक्खाण सुदसणातिहिं जोयणसइएहिं

अर्थ

इवाळे १०८ जम्बू वृक्ष मूळ से व्याप्त हैं ये चार योजन के ऊंचे हैं एक कोश के ऊंडे हैं, एक कोश का स्कंध है, वे एक कोस के चौडे हैं तीन योजन की शाखा है, मध्य में चार योजन चौडे हैं सर्वांग साधिक चार योजन के हैं उन का वज्ररत्नमय मूल है वगैरह चैत्य वृक्ष वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ ३४ ॥ जम्बू सुदर्शन से वायव्यकून, उत्तर दिशा व ईशान कून में अनाधृत देवता के चार हजार सामानिक देवता के चार हजार सामानिक जम्बू हैं, जम्बू सुदर्शन से पूर्व दिशी में परिवार सहित चार अग्रमहिषियों के यावत् सोळह हजार आत्म रक्षक देव के जम्बूवृक्षों हैं, यों सब परिवार कहना. जम्बूवृक्ष के वन क

विक्खंभेण देसूणं कोसं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेग खंभसयसंनिविट्ठे वण्णओ, तिदिसिं तओदारा पंचधणुसया अड्ढाइज्जधणुसयं विक्खंभेण, मणिपेढिया पंचधणुसइया देवछंदओ पंचधणुसय विक्खंभो सातिरेगं पंचधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, तत्थणं देवछंदए अट्ठसयं जिणपडिमा जिणुस्सेहप्पमाणाणं, एवं सव्वासिद्धायतणवत्तव्वया भाणियव्वा जाव धूवकडुच्छुया, उवरिमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवेए तहेव ॥ १२ ॥ जम्बूसुदंसणामूले बारसहिं पउमवरवेइयाहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओणं पउमवरवेदियाओ अद्धजो- यणं उड्ढंउच्चत्तेणं, पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं वण्णओ ॥ १३ ॥ जम्बूसुदंसणा अण्णेणं

रहे हुए हैं यह वर्णन योग्य है तीन दिशा में तीन द्वार कहे हैं वे द्वार पांच सो धनुष्य के ऊंचे अढाइ सो धनुष्य के चौडे हैं उस में एक मणिपीठिका है वह पांच सो धनुष्य की लम्बी चौडी है, उस पर देव छंदक कहा है वह पांच सो धनुष्य का चौडा है, साधिक पांचसो धनुष्य का ऊंचा है, उस देव छंदक में १०८ जिन प्रतिमा हैं वे जिन प्रमाण ऊंची हैं इस तरह सिद्धायतन की सब वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यावत् धूप कूडछे रहे हुवे हैं उसका ऊपरका भाग सोलह प्रकार के रत्नों से सुशोभित है ॥ १२ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष के मूल में बारह पद्मवर वेदिका चारों और रही हुई हैं वह आधा योजन की ऊंची पांचसो धनुष्य की चौडी वगैरह वर्णन युक्त है ॥१३॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष को चारों तरफ आधी ऊंचा-

निप्रकाओ णीग्याओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासापवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दाक्खिण पुरत्थि मण वि पण्णास जोयणा चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचव पमाण तहेव पसायवडेसको तप्पमाणो, एव दाक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयणा णवरिं भिगा भिगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चव, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

अर्थ ...कही, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र है उन नदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतसक कहे हैं, ...क कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ...। दक्षिणपूर्व ईशानकोन में पचास योजन जाव वहां चार नदा पुष्करणी कही है जिन के नाम—...ल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल ज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना। ऐसे ही दक्षिण पश्चिम ...नैऋत्य कौन में पचास योजन जावें वहां चार नदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—भृगा, भृंगणिभा, अजना व कजल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

घणसडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चेण तच्चेण ॥३५॥ जंबूसुदंसणाए पुरत्थिमेण पढम वणसंड,पन्नास जोयणाइ,उग्गाहित्ता एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्वे जाव सयणिज्जं, एवं दाहिणेणं पच्चत्थिमेणं उत्तरेणं ॥३६॥ जंबूएणं सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेण पढम वणसंड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता एत्थणं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओणं णंदापुक्खरिणीओ कोस आयामेण अद्धकोस विक्खंभेण पंचधणुसयाइं उव्वेहेणं अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बड़ा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या पर्यंत कहना ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोस की लम्बी, आधा कोस की चौड़ी, पांच सो धनुष्य की

निप्पकाओ णीरयाओ जाव पडिरूवाओ वण्णओ भाणियव्वो जाव तोरण छत्ता ॥ तासिण णदापुक्खरिणीण बहुमज्झदेसभाए एत्थण पासापवडेंसक पण्णत्ते कोसप्पमाणे अद्धकोस विक्खभेण सो चेव से वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार, एव दक्खिण पुरत्थिमण वि पण्णास जोयण। चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ चत्तारि उप्पलगुम्मा णलिणा उप्पला उप्पलुज्जला तचेव पमाण तहेव पसायवडेंसको तप्पमाणो, एव दाक्खिण, पच्चत्थिमेणवि पण्णास जोयण। णवरिं भिंगा भिंगणिभा चेव अजणा कज्जलप्पभा चेव, सेस तहेव॥ जबूण सुदसणा उत्तरपुरत्थिमे पढम वणसड पण्णास जोयणाइ उग्गाहित्ता

अर्थ ऊंडी, स्वच्छ, कोमल श्लक्ष्ण घठारी, मठारी, पंक व रज रहित, यावत् प्रतिरूप है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् तोरण व छत्रपर छत्र है उन नंदा पुष्करणी के बीच में प्रासादावतंसक कहे हैं, वे एक कोश के लम्बे, आधा कोश के चौडे, वगैरह वर्णन जानना यावत् परिवार सहित सिंहासन कहना ऐसे ही दक्षिणपूर्व ईशानकौन में पचास योजन जाव यहां चार नंदा पुष्करणी कही है जिन के नाम— उत्पल गुल्मा, नलिना, उत्पला व उत्पल उज्वाला इन का प्रमाण पूर्ववत् जानना ऐसे ही दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कौण में पचास योजन जावें वहां चार नंदा पुष्करणी हैं जिन के नाम—भृंगा, भृंगाणिभा, अंजना व कज्जल प्रभा, शेष सब पूर्ववत् जानना जम्बू सुदर्शन से पश्चिमउत्तर वायव्य कौन में पचास

वणसडेहिं सव्वतो समता संपरिक्खित्ता तंजहा पढमेणं दोच्चेण तच्चेण ॥ ३५ ॥ जंबू सुद सणाए पुरत्थिमेण पढम वणसंड, पन्नास जोयणाइ उग्गाहित्ता एत्थणं एगेमहं भवणे पण्णत्ते पुरत्थिमिल्ले भवणे सरिसे भाणियव्व जाव सयणिज्ज, एवं दाहिणेण पच्चत्थिमेणं उत्तरेण ॥ ३६ ॥ जंबूएण सुदंसणाए उत्तरपुरत्थिमेण पढम वणसंड पण्णास जोयणाइ उग्गहित्ता एत्थण चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा पउमा पउमप्पभा चेव कुमुदा कुमुयप्पभा ॥ ताओण णंदापुक्खरिणीओ कोस आयामेण अद्धकोस विक्खभेण पचधणुसयाइ उव्वेहेण अच्छाओ सण्हाओ लण्हाओ घट्ठाओ मट्ठाओ

योजन के तीन वनखण्ड चारों तरफ वेष्टित हैं प्रथम, द्वितीय व तृतीय ॥ ३५ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष से पूर्व के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे तब वहां एक बडा भवन कहा है, इस का वर्णन जैसे पूर्व दिशा में की जम्बू सुदर्शन वृक्ष की शाखा पर भवन का कहा वैसे ही जानना यावत् देव शैय्या पर्यंत कहना एसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर का जानना ॥ ३६ ॥ जम्बू सुदर्शन से ईशानकून के प्रथम वनखण्ड में पचास योजन जावे वहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं जिन के नाम—पद्मा, पद्मप्रभा, कुमुदा, व कुमुदप्रभा, ये नंदा पुष्करणियों एक कोश की लम्बी, आधा कोश की चौडी, पांच सो धनुष्य की

वक्खेवेण,मूलेविछिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए,गोपुच्छ संठाणसंठिते सव्व जंबुणयामए अच्छे जाव पडिरूवे, सेणं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते,दोण्हवि वण्णओ,तस्सणं कूडस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयति॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे एग सिद्धाय तणं कोसप्पमाण सव्वा सिद्धायतणवत्तव्वया, जंबूएणं सुदंसणाए पुरत्थिमस्स भवणस्स दाहिणेणं दाहिणपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेणं एत्थणं एगेमहं कूडे पण्णत्ते तंचेव पमाणं सिद्धायतणंच ॥ जंबूएणं सुदंसणाये दाहिणिल्लस्स भवणस्स पुरत्थिमेणं

अर्थ

ऊपर पतले है, गोपुंछ संस्थानवाले हैं, सब जम्बूनन्दमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं, उन को एक २ पद्मवर वेदिका व एक २ वनखण्ड चारों ओर हैं दोनों वर्णन योग्य हैं उन कूट पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है, यावत् वहां देव बैठते हैं उस भूमिभाग के मध्य में एक सिद्धायतन कोश प्रमाण का है इस सिद्धायतन की वक्तव्यता कहना जम्बू सुदर्शन के पूर्व के भवन से दक्षिण में व दक्षिणपूर्व--अग्निकोण के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बडा कूट है इस का प्रमाण व वक्तव्यता पूर्ववत् जानना यों सिद्धा-यतन पर्यंत कहना जम्बू सुदर्शन के दक्षिण के भवन से पूर्व में और अग्निकोण के प्रासादावतंसक

सूत्र

एत्थण चत्तारि णदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा-सिरिकंता सिरिमहिया सिरिचंदा चेव तहय सिरिणिलया, तचेव प्पमाणं तहेव पासाय वडेंसओ ॥ २७ ॥ जंबूएणं सुदंसणातो पुरत्थिमिल्लस्स भवणस्स उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमिल्लु पासाद वडेंसगस्स दाहिणेणं एत्थणं एगेमहं कूडे पण्णत्ते, अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले बारस जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं, मज्झे अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, उवरिं चत्तारि जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, मूले साइरेगं सत्ततीस जोयणाइं परिक्खेवेणं मज्झे सातिरेगाइं पण्णुवीस जोयणाइं परिक्खेवेणं, उवरिं सातिरेगाइं बारस जोयणाइं परि-

अर्थ

योजन आगे यहां चार नंदा पुष्करणी रही हैं, उन के नाम, श्रीकांता, श्रीमहिता, श्री चंद्रा व श्रीनिलया, उन का प्रमाण भी वैसे ही जानना, और बीच में एक २ प्रासादावतंसक जानना ॥ ३१ ॥ जम्बू सुदर्शन के भवन से उत्तर में और ईशानकून के भवन से दक्षिण में एक बडा कूट कहा है, वह आठ योजन का ऊंचा है, मूल में बारह योजन का लम्बा चौडा है, मध्य में आठ योजन का लम्बा चौडा है ऊपर चार योजन का लम्बा चौडा है, मूल में साधिक सैंतीस योजन की परिधि है, मध्य में साधिक पचीस योजन की परिधि है, और ऊपर साधिक बारह योजन की परिधि है मूल में विस्तारवाला, मध्य मे संकुचित व

पुरत्थिमेण उत्तरपुरत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे महं कूडे पण्णत्ते तच्चेव पमाण तहेव सिद्धायतणं च॥ ३८ ॥ जंबू सुदंसणा अण्णेहिं बहूहिं, तिलएहिं लवएहिं जाव रायरुक्खेहिं नदीरुक्खेहि जाव सव्वतो समता सपरिक्खित्ता॥ जंबूएणं सुदंसणाए उवरिं बहवे अट्ठट्ठ मंगलगा पण्णत्ता तंजहा सोत्थिय सिरिवच्छ, किण्हा चामर ज्झया जाव छत्ताच्छत्ता ॥ ३९ ॥ जंबूएणं सुदंसणाए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता तंजहा-सुदंसणा, अमोहाय, सुप्पबुद्धा जसोहरा ॥ विदेहा जंबू सोमणसा, णीतिया णिच्च मंडिया ॥ १ ॥ भद्दाय विसालाय सुजाया, सुमणाविय सुदंसणाए, जंबूते नामधेज्जा दुवालसा ॥ २ ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति जंबू सुदंसणा ? गोयमा !

अर्थ

कूट का वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सिद्धायतन कहना ॥ ३८ ॥ जम्बू सुदर्शन वृक्ष की आसपास अन्य बहुत तिलक लवग यावत् नदी वृक्षों रहे हुवे हैं जम्बू सुदर्शन पर बहुत आठ २ मंगलिक हैं तद्यथा-स्वस्तिक श्रीवत्स, कृष्ण, चमर यावत् छत्रातिछत्र ॥ ३९ ॥ जम्बू-सुदर्शन के बारह नाम कहे हैं १ सुदर्शन, २ अमोघ, ३ सुप्रबुद्ध, ४ यशोधर ५ विदेह, ६ जम्बू ७ सोमनस ८ नियता ९ सुभद्रा, १० विशाला, ११ सुजाया, १२ सुदर्शन ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! सुदर्शन नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! जम्बू सुदर्शन पर जम्बूद्वीप का अधिपति अनादृत नामक महर्द्धिक यावत्

दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स पच्चत्थिमेण एत्थण एगे कूडे ॥ जम्बुए दाहिणल्ल भवणस्स पच्चत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमिल्लपासा, पुरत्थिमेण एत्थेण एगे कुडे पण्णत्ते ॥ जबुतो पच्चत्थिमिल्लस्स भवणस्स दाहिणेण दाहिणपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स उत्तरेण एगे मह कुडे पण्णत्ते, एत्थ य पमाण सिद्धायतणच जम्बुए पच्चत्थि भवणस्स उत्तरेण उत्तरपच्चत्थिमिल्लस्स पासायवडेंसगस्स दाहिणेण एत्थण एग कुडे पण्णत्ते तचेव ॥ जम्बुए उत्तरिल्लस्स भवणस्स पच्चत्थिमेण उत्तर पच्चत्थि पासायवडिंसगस्स पुरत्थिमेण एग मह कुडे पण्णत्ते तचेव जबु उत्तर भवणस्स

अर्थ

पश्चिम में एक बड़ा कूट है जम्बू सुदर्शन के दक्षिण दिशा के भवन से पश्चिम में व नैऋत्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व दिशा में एक बड़ा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से दक्षिण में व नैऋत्यकौन के प्रासादावतंसक से उत्तर में एक बड़ा कूट है जम्बू सुदर्शन के पश्चिम के भवन से उत्तर में व वायव्यकौन के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बड़ा कूट कहा है जम्बू के उत्तर दिशा के भवन से पश्चिम में व वायव्यकौण के प्रासादावतंसक से पूर्व में एक बड़ा कूट कहा है जम्बू सुदर्शन वृक्ष से उत्तर दिशा के भवन से पूर्व में व ईशानकौन के प्रासादावतंसक से पश्चिम में एक बड़ा कूट कहा है सब

सूत्र

द्दीवस्स सासते णामधेज्जे पण्णत्ते जण्णकायायिणासी जाव णिच्चे॥४१॥जम्बूद्दीवेण भंते! दीवे कति चंदा पभासिंसुवा पभासतिवा पभासिस्सतिवा, कतिसूरिया तविंसुवा तवतिवा तविस्सतिवा, कतिणक्खता जोय जोएंसुवा जोयातिवा जोइस्सतिवा कतिमहग्गहा चारं चरिंसुवा चरतिवा चारिस्सतिवा, केवातिताओ तारागण कोडाकोडीओ सोभेंसुवा सोभतिवा सोभिस्सतिवा ? गोयमा ! जम्बूद्दीवेणद्दीवे दो चंदा पभासिंसुवा ३, दो सूरिया तविंसुवा ३, छप्पण्ण णक्खत्ता जोगं जोएंसुवा ३, छावत्तर गहसतं चारं चारिंसुवा ३, एगंच सतसहस्सं तेत्तीसं खलुभव सहस्साइं णवसया

अर्थ

नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है ॥ ४१ ॥ जम्बूद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया कितने चंद्र प्रकाश करते हैं व कितने चद्र प्रकाश करेंगे, कितने सूर्य तपे, कितने तपते हैं व कितने तपेंगे, कितने नक्षत्रों ने योग किया, कितने योग करते हैं व कितने योग करेंगे कितने गृह चले, कितने चलते व कितने चलेंगे, कितने ताराओंने शोभा की, कितने तारा शोभा करते हैं व कितने तारा शोभा करेंगे ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में दो चद्रने प्रकाश किया दो चद्र प्रकाश करते हैं, दो चन्द्र प्रकाश करेंगे, दो सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ५६ नक्षत्रने योग किया, करते हैं व योग करेंगे, १७६ ग्रह चार चरे, चार चरते हैं व चार चरेंगे, एक लाख तेतीस हजार पचास क्रोडाक्रोड तारागण शोभित हुवे, शोभते व शोभेंगे यह

जम्बू सुदसणाते जम्बूदीवाहिवती अणाढिते नाम देवे महिड्डिए जाव पलिओवम ठितीए परिवसति, सेण तत्थ चउण्हं सामाणिय साहस्सीण जाव जम्बुदीवस्स जंबूसुदसणाए अणाढियाते रायहाणीए जाव विहरति ॥ ४० ॥ कहिण भंते ! अणाढियस्स देवस्स अणाढिया नाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! जम्बूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण तिरि एव जहा विजयस्स देवस्स जाव समत्त रायहाणीए महिड्डिए अदुत्तरंचेण गोयमा ! जम्बूदीवे दीवे तत्थ २ देसे २ बहवे जंबू रुक्खा जम्बूवणा जम्बू वणसंडा णिच्च कुसुमिया जाव सिरिए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति जम्बू दीवे दीवे ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! जम्बूदीवस्स

पल्योपम की स्थिति वाला देव रहता है, वह चार हजार सामानिक यावत् जम्बूद्वीप का जम्बू सुदर्शन का अनादृत राजधानी का अधिपति पना करता हुआ यावत् विचरता है ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! अनादृत देवकी अनादृत राजधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा वों सब अधिकार विजय देवकी विजया राजधानी जैसे कहना यावत् महर्धिक है अथवा अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में स्थान २ पर जम्बू वृक्ष जम्बू वन वाले जम्बू वनखण्ड सदैव फल फूल वाले यावत् सुशोभित हैं अहो गौतम ! इसलिये जम्बूद्वीप नाम कहा है अथवा जम्बूद्वीप का नाम शाश्वत है वह कदापि

सपरिक्खिविचाण चिट्ठइ,वण्णओ दोण्हवि,साण पउमवर वेइया अट्ठ जोयण उड्ढ उच्चत्तेण, पंचधणुसय विक्खभेण लवण समुद्द सामिया परिक्खेवेण सेस तहेव॥३॥तेणवणसडे देसूणाइ जाव विहरति ॥४॥ लवणस्सणं भते ! समुद्दस्स कइदारा पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा विजये, विजयते, जयते, अपराजिते ॥ जबूदीवे विजयाइ सरिसा ॥ कहिण भते ! लवण समुद्दस्स विजए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमापरते धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धस्स पच्चत्थिमेण सीओदाए महानदीए उप्पि एत्थण लवण समुद्दस्स विजय नाम दारे पण्णत्ते अट्ठ

अर्थ

जानना पद्मवर वेदिका आधा योजनकी ऊंची, पांचसो धनुष्यकी चौडी और लवणसमुद्रके जितनी परिधि वाली रही हुई है, शेष वैसे ही कहना ॥ ३ ॥ वनखण्ड भी कुच्छ कम दो योजन का है यावत् विचरता है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयत, जयत व अपराजित ये जम्बुद्वीप के विजय सदृश हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के पूर्व दिशा के अत में धातकी खण्ड द्वीप से पश्चिम में सीतोदा महा नदी ऊपर लवण समुद्र का विजय द्वार कहा है यह आठ

पण्णासा तारागण कोडीकोडीण सोभेंसु वा सोभेंतिवा सोभिस्संतिवा ॥ ४२ ॥ जंबूद्दीवं णाम दीवं लवणे नाम समुद्दे वलयागार संठाण संठिते सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठइ ॥ १ ॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे किं समचक्कवाल संठिये विसम चक्कवाल संठिये ? गोयमा ! समचक्कवाल संठित नो विसम चक्कवाल संठिए॥२॥ लवणेणं भंते !समुद्दे केवतियं चक्कवाल विक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते?गोयमा ! लवणेणं समुद्दे दो जोयण सहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं पण्णरस जोयणं सयसहस्साइं एक्कासीइं सहस्साइं सयमेगोणचत्तालं किंचि विसेसूणं परिक्खेवेणं पण्णत्ते सेणं एगाए पउमवर वेइयाए एगेणय वणसंडेणं सव्वतो समंता

जम्बूद्वीप का अधिकार संपूर्ण हुवा ॥ ४२ ॥ अब लवण समुद्र का अधिकार कहते हैं जम्बूद्वीप के चारों तरफ लवण समुद्र वलय के आकार से रहा हुवा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल वाला नहीं है, ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र चक्रवाल में कितना चौडा है और उस की परिधि कितनी है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र दो लाख योजन का चक्रवाल में चौडा है और पनरह लाख इकाशी हजार एक सो गुनपचास योजन में कुच्छ कम की परिधि है उस की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड चारों तरफ घेरा हुवा है इन दोनों का वर्णन पूर्ववत्

लवणा जहा विजयरायहाणीगमो, उद्दु उसंतहा ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सरय एसण केवइय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिण्णि जोयणसय सहस्साइ पचणउइ सहस्साइ दुण्णिय असीए जोयणसये कोसच दारंतरे लवणे जाव अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ ७ ॥ लवणस्सण भंते समुद्दस्स पएसा धाईय संडं दीवं पुट्ठा तहेव जहा जंबूदीवे, धायइसंडेवि सोचेव गमो ॥ ८ ॥ लवणेण भंते ! समुद्द जीवा उद्दाइत्ता २ सोचेव विही एवं धायइ संडेवि ॥ ९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ लवणे समुद्दे ? गोयमा ! लवणेण समुद्द

अर्थ

दिशा में जयंत का कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अपराजित द्वार कहां कहा है ? वैसे ही राज्यधानी उत्तर में जानना और सब कथन पूर्ववत् कहना अहो भगवन् ! लवण समुद्र के द्वार २ का कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! तीन लाख पचानवे हजार दोसो अस्सी योजन व एक कोश का एक द्वार से दूसरे द्वार तक अंतर कहा है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र को धातकी खण्ड द्वीप स्पर्शा हुवा है ? यों जैसे जम्बूद्वीप लवण समुद्र का कहा वैसे ही कहना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के जीव वहां से मरकर धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं ? यों जम्बूद्वीप जैसा इस का भी कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का

सूत्र

जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण, एवं तंचेव सव्वं जंबू दीवस्स विजयसारस जाव अट्ठट्ठ मंगलगा ॥ ४५ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ विजय दार ? विजयदारं जो अट्ठो जंबू दीवस्स॥४६॥ कहिणं भंते! लवणगस्स विजयस्स विजयानाम रायहाणी ? गोयमा ! विजयस्स पुरत्थि तिरिमसंखेज्ज अण्णंमि लवणे धारस्स जंबूदीवग सरिसा वत्तव्वया जाव सम वेजयंतवि अप्पणिज्जेण गमेण लवणस्स दाहिणेण रायहाणी, एवं जयंतेवि, तरनवि रायहाणि पच्चत्थिमेण ॥ कहिणं भंते! लवण समुद्दस्स अवराईए तहेव रायहाणी उत्तरेण अपरायस्स देवस्स अण्णंमि

अर्थ

योजन का ऊंचा, चार योजन का चौडा यों सब जम्बूद्वीप क विजय सदृश यावत् आठ २ मंगल कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! विजय द्वार ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! जैसे जम्बूद्वीप के विजय द्वार का कथन किया वैसे ही यहां जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र के विजय देव की विजया राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! विजयद्वार से पूर्व तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र का उल्लंघन करे वहां अन्य लवण समुद्र आता है उस में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां विजया राज्यधानी कही है इस का सब कथन जम्बूद्वीप की विजया राज्यधानी जैसे कहना ऐसे ही वैजयंत का कहना, ऐसे ही इस समान वैजयंती नामक लवण समुद्र की राज्यधानी का कथन दक्षिण दिशा में कहना ऐसे ही पश्चिम

तविसुआ ३ ॥ बारसुत्तरं णक्खत्तसय जोएसुवा ३ तिण्णि बावण्णा महग्गहसया चारिं चरिसुवा दुण्णिय सयसहस्सा सत्तट्ठिं च सहस्सा नवयसया तारागण कोडिकोडीण सोभिंसुवा ३ ॥ ११ ॥ कम्हाण भंते! लवणसमुद्दे चाउद्दट्ठमुद्दिट्ठा पुण्णमासिणीसु अतिरेगं २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! जंबुद्दीवस्सणं दीवस्स चउदिसिं बाहिरिल्लातो वेइयातो लवणसमुद्द पचाणउतिं जोयणसहस्साति उग्गाहित्ताएत्थणचत्तारिं महाअलिंजर संठाण संठिया महति महालया महापायाला पण्णत्ता तंजहा-वलयामुहे केतुवे जुवे, ईसरे ॥ तेण पाताला एगमेग जोयण सतसहस्स उव्वेहेण, मूले दसजोयण

अर्थ

करते हैं व प्रकाश करेंगे वैसे ही चार सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, ११२ नक्षत्रोंने चंद्रमादिक के साथ योग किया, करते हैं व करेंगे, तीन सो बावन ग्रह क्षेत्र में चार चले, चलते हैं व चलेंगे, दो लाख सडसठ हजार नवसो क्रोडा क्रोडी तारे शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का पानी चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या व पूर्णिमा को अत्यंत अधिक २ क्यों वृद्धिपाता है और क्यों कमी होता है ? अर्थात् भरती ओट क्यों होता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के चारोंदिशी में बाहिर की वेदिका के अंतसे लवण समुद्र में ९५ हजार २ योजन जावे वहां महा अलिंजर (कुंभ) के संस्थान वाले चार

उदये अविले रइले लवणे लिंदसारए कडुए अप्पेज्जे बहुण दुप्पय चउप्पय मियपसु पक्खिसरीसवाण णण्णत्थत जोणियाण सत्ताण उठिय, एत्थ लवणा हिवई देव महिड्डीये॥ पलीओवमठीए सेण तत्थ सामाणिय जाव विहरइ, से तेणठेण गोयमा ! एव वुचति लवण समुद्दे २ अदुत्तरचण गोयमा ! लवण समुद्दे सासये जाव णिच्चे ॥१०॥ लवणेण भते ! समुद्दे कइचंदा पभासिंवा पभासिंवा पभासिस्सतिवा, एव पचवण्हवि पुच्छा ? गोयमा ! लवणसमुद्दे चत्तारि चदा पभासिंसुवा २ चत्तारि सुरिया

पानी लवण जैसा है, निर्मल नहीं है, पंक कर्दम बहुत है, गोबर का रस जैसा है, खारा पानी है, तीक्ष्ण पानी है, कटुक रस है, पीने योग्य नहीं है, मृग, पशु, पक्षी, सरिसर्प इन को पीने योग्य नहीं है उस में उत्पन्न हुवा जीवों को उस पानी का आहार है, परंतु दूसरे के लिये यह आहार नहीं है इस लिये इसका लवण समुद्र नाम कहा है और भी यहां लवणाधिपति महर्द्धिक यावत् पल्योपमकी स्थितिवाला देव स्वामी है वह सामानिक देव यावत् बहुत वाणव्यंतर देव व देवियोंका अधिपतिपना करता हुवा विचरता है अहो गौतम! इस लिये इस का नाम लवण समुद्र है अथवा लवण समुद्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥१०॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में कितने चन्द्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? यों सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व ताराओं की भी पृच्छा करना अहो गौतम ! लवण समुद्र में चार चन्द्रने प्रकाश किया, प्रकाश

मज्झिल्लेतिभागे उवरिल्लेतिभागे तेण तिभागे तेत्तीसं २ जोयण सहस्साति तिण्णिय तेत्तीसे जोयणसये जोयणति भागच बाहल्लेण, तत्थण जे से हेट्ठिल्लेभागे एत्थण वायकायते संचिट्ठति, तत्थण जे से मज्झिल्लेतिभागे एत्थण वाउयाएय आउयाएय संचिट्ठति तत्थण जे से उवरिल्लेभागे एत्थण आउयाते संचिट्ठति ॥ १२ ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! लवणसमुद्दे तत्थ २ देसे २ बहवे खुड्डालिंजर संठाण संठिया खुड्डपायाला पण्णत्ता, तेण खुड्डा पायाला एगमेग जोयणसहस्स उव्वेहेण मूले एगमग जोयणसत विक्खंभेण, मज्झेएगपदेसिया सेढीए एगमेग जोयणसहस्स विक्खंभेणं, उप्पिं मुहमूले एगमेग जोयणसत विक्खंभेण ॥ तेसिण खुड्डा

अर्थ

प्रभजन इन पाताल कलशों के तीन भाग किये हैं नीचे का भाग, मध्य का भाग व ऊपर का भाग एक २ भाग तेत्तीस हजार तीन सो तेत्तीस योजन व एक योजन के तीन भाग में का एक भाग का जाडा है उन में से नीचे के भाग में वायुकाय, बीच के भाग में वायुकाय व अप्काय साथ और ऊपर के भाग में मात्र अप्काय है ॥ १२ ॥ और भी अहो गौतम ! लवण समुद्र में बहुत छोटे आलिंजर के आकार वाले छोटे पाताल कलश हैं व एक हजार योजन के ऊंडे हैं मूल में एक एकसो योजन के चौडे हैं वहां से एक २ प्रदेश बढते २ मध्य में एक हजार योजन के चौडे है वहां से एक प्रदेश कम

सहस्सातिं विक्खंभेण, मज्झे एगपदेसियाए सेढिए एगमेग जोयणसहस्स विक्खंभेण, उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेण, तेसिणं महापायालाणं कुड्डा सव्वत्थ समा दसदस जोयणसय बाहाल्ला पण्णत्ता, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तत्थणं बहवे जीवा पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासयाणं ते कुड्डा दव्वट्ठयाए वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया ॥ तत्थणं चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवमठितीया परिवसति तंजहा काले महाकाले वेलंब पभंजणे ॥ तेसिणं महापायालाणं ततोतिभागा पण्णत्ते तंजहा-हेट्ठिल्लेतिभागे

अर्थ

पाताल कलश कहे हैं, जिन के नाम १ वलयमुख, २ केतुमुख ३ यूप और ४ ईश्वर ये पाताल कलश एक लाख योजन के मूल में ऊंडे हैं मूल में दश हजार योजन के चौडे हैं, वहां से एकेक प्रदेश की श्रेणि से बढते २ मध्य बीच में एक लाख योजन के चौडे हैं वहां से प्रदेश कम होते २ ऊपर दश हजार योजन के चौडे हैं उन की ठीकरी सर्वत्र समान जाडपने में हैं, एक हजार योजन की जाडी है वह वज्ररत्नमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है वहां बहुत जीव पुद्गल आते हैं उत्पन्न होते हैं व चवते हैं वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती है, और वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है वहां महर्द्धिक महा बलवंत यावत् पल्योपम की स्थितिवाले चार देव रहते हैं जिन के नाम—काल, महाकाल, वेलंब व

अट्ठय भुलासिया पातालसता भवति तिमक्खाया ॥ १२ ॥ तेसिं महापातालाण खुड्डाग पातालाणय हिट्ठिम मज्झिलेघतिभागेसु बहवे उराला वाया ससेयति समुच्छनि पताति वेयति कपति खुब्भति घट्टति फदाति तत भाव परिणमति, जेण उदयउच्चाहिज्जति ॥ जच्चाणं तेसिं खुड्डा पायालाण महापायालाण हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु बहवे उरालिय वाया संसेयति समुच्छाति एयाति वेयति कपति खुब्भति घट्टति फदति ततभाव परिणमाति, तयाण से उदये उण्णाहिज्जति २, जयाण ते खुड्डा पायालाण महापायालाणय

अर्थ

सब मीलकर जम्बूद्वीप में सात हजार आठसो चौराशी पाताल कलश कहे हैं + ॥ १२ ॥ अब पाताल कलश के छोटे पाताल कलश में बीच का व नीचे का विभाग में ऊर्ध्वगमन स्वभाव वाले वायु काय उत्पन्न होते हैं मूर्च्छित होवे हैं, हिलते हैं, चलते हैं, कंपित होवे हैं, क्षुब्ध होवें हैं व सघट होवे हैं, परस्पर सर्षपण होवे हैं, और उस भाव में परिणमते हैं तब पानी ऊंचा उछलता है, और जब वह कलश के

+ चारों बडे कलश के मध्य में अन्य २ छोटे कलशों की नव लड हैं प्रथम लड में २१५, दूसरी में २१६ यों २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, और २२३ कलश की नवमी लड है इसी तरह चारों कलश की आसपास लड कहना यह सब बडके कलश सामिल करनें से पूर्वोक्त संख्या होती हैं

पायालाण कुडा सव्वत्थसमा दसजोयणाइ बाहल्लेण पण्णत्ताइ, सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय जाव असासयावि पत्तेय २ अद्धपलिओवमठितियाहिं देवेताहिं परिग्गहिया ॥ तेसिण खुड्डग पायालाण ततोतिभागा पण्णत्ता तजहा हेट्ठिल्लभागे मज्झिल्लेभागे उवरिल्ले-भागे, तेणतिभागा तिण्णि २ तेतिस जोयणसत ते जोयणतिभाग च बाहल्लेण पण्णत्ता, तत्थण जे से हेट्ठिल्ले भागे एत्थण वाउयाए सचिट्ठति, मज्झिल्लेतिभागे वाउयाते आउयातेय उवरिल्ले आउयाए, एवामेव सव्वावरेण लवण समुद्दे सत्त पायाल सहस्सा

अर्थ

होते २ ऊपर के मुख स्थान एकसो योजन के चौडे हैं इन छोटे पाताल कलशकी ठिकरी सबत्र समान दश योजन की जाडी है सब वज्र रत्नमय स्वच्छ, यावत् प्रतिरूप हैं वहां बहुत जीव व पुद्गल आते हैं, उत्पन्न होते हैं चवते हैं वह ठीकरी द्रव्य से शाश्वती वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव से अशाश्वती है, वहां आधे पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन छोटे पाताल कलश के तीन विभाग किये हैं ऊपर का, मध्य का व नीचे का प्रत्येक भाग तीनसो तीतेसी योजन व एक योजन के तीन भाग मेंसे एकभाग का है इस में से सब से नीचे के भाग में वायु है, मध्य भाग में वायु व पानी है और ऊपर के भागमें पानी है

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुक्खुत्तो अतिरेग २ वड्डुतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उदमतेसु पातालेसु वड्डुति आपूरतेसु पातालसु हायति स तेणट्ठण गोयमा ! लवण सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरग वड्डुतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण कवइय अतिरग वड्डुतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरग वड्डुतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भते ! समुद्दस्स कतिनागसाहस्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अर्थ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके ऊंचा उछलता है. वह वायु से पूराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाइ में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाइ में है और आधा योजन में कुच्छ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते है और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

सूत्र

हेट्ठिल्ले मज्झिल्लेसु तिभागेसु वहवे उराले जाव तंतभाव परिणमति, तयाण से उदये नो उन्नामिज्जइ २ अतरा वियण ते वाया उदीराति अंतरावियाण से उदये उण्णामिज्जति ४ अतरावियण ते याया नो उदीरेति अतरावियण से उदगेण उण्णामिज्जति अतरावियण से उदगे णो उण्णामिज्जति एव खलु गोयमा ! लवणेणं समुद्दे चउद्दस ट्ठमुद्दिट्ठ पुण्णमासिणीसु अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १४ ॥ लवणेण भते! समुद्दे तीसाए मुहुत्ताण कतिखुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणेणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ से केणट्ठेण भते ! जाव

अर्थ

छोटे कलश के नीचे व बीच के विभाग वायु ऊर्ध्व गमन स्वभाववत नहीं होते हैं यावत् उस भाव में नहीं परिणमते हैं तब पानी ऊंचे उछलता नहीं है इस तरह अहोरात्रि में दो वक्त वायु उत्पन्न होता है तब पानी दो वक्त ऊंचा उछलता है इसी से अहोरात्रि में दो वक्त भरती ओट होता है जब पाताल कलश में वायु नहीं उत्पन्न होता है तब वहां का पानी नहीं उछलता है इससे अहो गौतम! लवण समुद्र में चतुर्दशी, अष्टमी अमावास्या व पूर्णिमा को पानी अधिक २ बढता है और घटता है ॥ १४ ॥ अहो भगवन्! लवण समुद्र में तीसमुहूर्त में कितनी वक्त पानी बढता है व कमी होता है ? अहो गौतम! दोवार पानी बढता है व कमी होता है अहो भगवन्! ऐसा किस लिये कहा कि लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में दो वार पानी बढता है व हीन होता है ?

लवणसमुद्दे तीसाए मुहुत्ताण दुखुत्तो अतिरेग २ वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! उद्धमतेसु पातालेसु वड्ढति आपूरतेसु पातालेसु हायति स तेणट्ठेण गोयमा ! लवण सतीमाएसु दुक्खुत्तो अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १५ ॥ लवणसिहाण भते ! केवइय चक्कवाल विक्खंभेण केवइय अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ? गोयमा ! लवणसिहाण दसजोयणसहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण देसूण अद्धजोयण अतिरेग वड्ढतिवा हायतिवा ॥ १६ ॥ लवणस्सण भते ! समुद्दस्स कतिनागसाह स्सीओ अब्भतरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ बाहिरिय वेलधारेति, कइ नागसहस्सीओ अग्गोदयधारेंति ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स बायालीस नागसाहस्सीओ

अर्थ

अहो गौतम ! पाताल कलश से पानी वृद्धि पाके उर्ध्व उछलता है वह वायु से पुराता है, छोटे बडे पाताल कलश में हानि पाता है, इस से अहो गौतम ! लवण समुद्र में तीस मुहूर्त में पानी दो वक्त बढता है व हीन होता है ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की शिखा कितनी चक्रवाल चौडाई में है व कितनी बढती व कम होती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की शिखा दश हजार योजन चक्रवाल चौडाई में है और आधा योजन में कुछ कम की शिखा पर वेल बढती व कम होती है ॥१६॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की आभ्यंतर वेलको कितने हजार नागदेव धारते हैं और कितने नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं और कितने नागदेव शिखापर का पानी धारकर रखते हैं ? अहो

सूत्र

अब्भिंतरियवेलं धारेंति बावत्तरि णागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारेंति, सट्ठि नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारेंति, एवामेव सपुव्वावरेण एगाणाम सयसाहस्सी बावत्तरिंच णागसहस्सा भवतीति मक्खाया ॥ १७ ॥ कतिणं भंते ! वेलंधरणागराया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि वेलंधरा णागराया पण्णत्ता तंजहा गोथूभे सिवए संखे मणोसिलए,॥एतेसिणं भंते ! चउण्हं वेलंधरा नागरायाणं कति आवास पव्वता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वता पण्णत्ता तंजहा गोथूभे दओभासे संखे दग-सीमये ॥१८॥कहिणं भंते!गोथुभस्स वेलंधर णागरायिस्स गोथूणाम आवासपव्वते

अर्थ

गौतम ! ४२ हजार नागदेव लवण समुद्र की आभ्यंतर वेल धारकर रखते हैं, ७२ हजार नागदेव बाहिर की वेल धारकर रखते हैं, और ६० हजार नागदेव अग्रोदक धारकर रखते हैं सब मीलकर एक लाख चम्मतरहजार नाग देव होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ; वेलधर नागराज कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! वेलधर नागराज चार कहे हैं तद्यथा-गोस्तूभ शिव, शंख और मनोशिला अहो भगवन् ! इन वेलधर नागराजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ! अहो गौतम ! चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा-गोस्तुभ दगभास, शंख और दगसीमक ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तुभ नागराजा का गोस्तुभ आवास पर्वत

पण्णत्ते? गोयमा! जम्बूद्दीवे २ मदरस्स पुरत्थिमेणं लवण समुद्दं बायालीसं जोयण सहस्साति उगाहित्ता एत्थणं गोथूभस्स वेलधर णागरायिस्स गोथूभे णाम आवासपव्वते पण्णत्ते, सत्तरस इक्कवीसाइ जोयण सताइ उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि तीसे जोयण सते कोसंच उव्वेहेणं मूलेदस बावीसे जोयणसते आयाम विक्खंभेण मज्झेसत्त तेवीसे जोयण सते आयामविक्खंभेण, उवरिं चत्तारि चउवीसे जोयण सए आयामविक्खंभेण, मूले तिण्णि जोयण सहस्साइ दोण्णिय बत्तीसुत्तरे जोयण सए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण मज्झ दो जोयण सहस्साइ दोण्णिय चुलसयति जोयण सते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण,

अर्थ

कहां कहा है ? अहो गौतम ! मेरुपर्वत से पूर्व में लवणसमुद्र से ४२ हजार योजन अवगाहकर जावे वहां गोस्तुभ वेलधर नागराजा का गोस्तुभ नामक आवास पर्वत कहा है यह सत्तरह सो इक्कीस योजन का ऊंचा चारसो सवातीस योजन गहरा (पानी में) है मूल मे एक हजार बावीस योजन का लम्बा चौडा (गोल) है बीच में सात सो तेवीस योजन का लम्बा चौडा [गोल] है और उपर चारसो चौवीस योजनका लम्बा चौडा [गोल] है मूलमें तीनहजार दोसो बत्तीस योजन में कुछ कम की परिधि है, बीच में दो हजार दोसो चौरासी योजन से कुछ कम की परिधि है और ऊपर एक

उवरिं एग जोयणसहस्स तिण्णिएइयाले जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मूले विच्छिण्णे, मझेसंखित्ते, उप्पिं तणुए, गोपुच्छ सठाण सठिते, सव्व कणगामये अच्छे जाव पडिरूवे ॥ सेण एगाए पउमवर वेदियाए एगेणय वणसंडेण सव्वतो समता संपरिक्खित्ते दोण्हवि वण्णओ ॥ गाथूभस्सण आवास पव्वयस्स उवरिं बहुसम रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव आसयति ॥ तस्सण बहुसमरमणिज्जातो एत्थण एगे मह पासायवडेंसडे पण्णत्ते, बावट्ठि जोयणद्धच उड्ढं उच्चत्तेण तदद्ध पमाण अद्ध आयामविक्खंभेण वण्णओ जाव सीहासण सपरिवार ॥ १९ ॥ से केणट्ठेण भते !

हजार तीनसो इकतालीस योजन के कुच्छ कम की परिधि है मूल में विस्तीर्ण, बीच में संकुचित व ऊपर संकीर्ण है गोपुंछ संस्थान वाला है सब कनकमय निर्मल यावत् प्रतिरूप है उन की आसपास एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है दोनों का वर्णन पूर्ववत् जानना गोस्तूभ आवास पर्वत पर बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् वहां देवता बैठते हैं उस रमणिय भूमिभाग के बीच में एक बडा प्रासादावतंसक कहा है ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा कहा है यावत् परिवार सहित सिंहासन कहा है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूभ आवास पर्वत क्यों कहा ? अहो गौतम ! गोस्तूभ

एव वुच्चइ गोथूभे आवास पव्वते ? गोयमा ! गोथूम आवास पव्वते तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुओ खुड्डा खुड्डियाओ जाव गोथूम वण्णाइ तहेव जाव गोथूभे, तत्थ देवे महिड्डिए जाव पलिओवमठितीये परिवसति, सेण तत्थ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव गोथुभस्स आवास पव्वतस्स गोथूभाये रायहाणीए जाव विहरति ॥ से तेणट्ठेण जाव णिच्चे ॥ २० ॥ रायहाणि पुच्छा ? गोथूमस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमेण तिरिय मसखेज्जे दीव समुद्दे वीतीवातिता अण्णमि लवण समुद्द तचेव

अर्थ आवास पर्वत पर स्थान २ पर बहुत छोटी बडी बावडियों हैं यावत् गोस्तूम के वर्ण जैसे बहुत कमल हैं यों सब पूर्ववत् कहना यावत् वहां गोस्तूम नामक देवता रहता है वह महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाला है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् गोस्तूप आवास पर्वत व गोस्तूमा राज्यधानी का अधिपतिपना करता हुवा विचरता है इसलिये इस का नाम गोस्तूम आवास पर्वत कहा है यावत् वह नित्य है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! गोस्तूम देव की गोस्तूमा राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! गोस्तूम आवास पर्वत से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में गोस्तूम देव की गोस्तूमा राज्यधानी कही है इन का प्रमाण

पमाण तहेव सव्व ॥ २१ ॥ कहिण भंते ! सिवगस्स वेलंधर णागरायिस्स दगभासेणाम आवासे पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवेण दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दक्खिणेणं लवणसमुद्दं बायालीसं जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं सिवगस्स वेलंधर णागरायिस्स दगभासे नाम आवास पव्वते पण्णत्ते, तचेव पमाण जं गोथूभस्स णवरि सव्व अंकामय अच्छे जाव पडिरूवे जाव अच्छो भाणियव्वो ॥ गोयमा ! दगभासेण आवास पव्वये लवण समुद्दे अट्ठ जोयणिये खत्त उदय सव्वतो समंताओ भासति उज्जोवेति तवेति पभासेति सिवय एत्थ देवे महिड्ढिये जाव रायहाणी से

वगैरह सब वक्तव्यता विजया राज्यधानी जैसे जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! शिव नामक वेलंधर नाग राजा का दगभास पर्वत कहां है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में लवण समुद्र में बयालीस हजार योजन जावे वहां शिव नामक वेलंधर नाग राजा का दगभास आवास पर्वत कहा है इस का सब कथन गोस्तूभ आवास पर्वत जैसे कहना विशेष में यह पर्वत सब अंकरत्नमय स्वच्छ यावत् सब अर्थ कहना अहो भगवन् ! दगभास आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम ! दगभास आवास पर्वत लवण समुद्र के पानी में चारों ओर दीप्ति करता है, उद्योत करता है, तपता है, कांति बढाता है और वहां शिव नामक महर्द्धिक देव रहता है, इस लिये इस का दगभास

दक्खिणेण, सिविगादगभासस्स सेण तचेव ॥ २२ ॥ कहिण भंते ! सखस्स वेलधर णागरायिस्स सखणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण बायालीस जोयण एत्थण सखस्स वेलधर सखेणाम आवास पव्वते तचेव पमाण नवर सव्वरययामये अच्छे ॥ सेण एगाए पउमवर वेदियाए एगेण वणसंडे जाव अट्ठो बहूउ खुड्डा खुड्डियाओ जाव बहुइ उप्पलाइ सखवण्णाइ सखप्पभाइ सखवण्णप्पभाइ सख तत्थ देवे महड्ढिए जाव रायहाणी

अर्थ

पर्वत नाम कहा इन की राजधानी दगभास पर्वत से दक्षिण दिशा में है शेष वैसे ही जानना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! शंख नामक वेलधर नागराजा का शंख नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन जावे वहां शंख नामक वेलधर नाग राजा का शंख नामक आवास पर्वत कहा है इस का प्रमाण गोस्तूभ जैसे जानना परन्तु यह सब रूपामय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है इस की आसपास एक २ पद्मवर वेदिका व वन खण्ड है अहो भगवन् ! शंख आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! वहां बहुत बाव-बावडियों प्रमुख में यावत् शंख जैसे वर्ण वाले बहुत कमल प्रमुख उत्पन्न होते हैं शंख जैसे लावण्य,

सूत्र

पच्चत्थिमेणं सखस्स आवास पव्वयस्स सखा रायहाणी तचेव पमाणं ॥ २३ ॥ कहिण भंते ! मणोसिलकस्स वेलंधर णागराइस्स उदगसीमयेणाम आवास पव्वते पण्णत्ते ? गोयमा ! जम्बूदीवे २ मंदरस्स उत्तरे लवणसमुद्द बायालीस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं मणोसिलगस्स वेलंधर णागरायिस्स उदगसीमय णाम आवासपव्वते पण्णत्ते तचेव पमाणं णवर सव्वफालहामये अच्छ जाव अट्ठो, गोयमा ! दागसीमतेणं आवास पव्वते सीतासीतायाणं महाणदीणं तत्थणं तासोए पडिहम्मति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे ॥ मणोसिलये तत्थ देवे महिड्डिए जाव सेणं

अर्थ

कीलित है वहां शंखदेव महर्द्धिक यावत् रहता है इस की राज्यधानी पश्चिमदिशा में है इस का प्रमाण पूर्ववत् जानना ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलंधर नागराजा का दगसीमक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में लवण समुद्र में बीयालीस हजार योजन अवगाहकर जावे वहां मनोसीलक नाग राजा का उदकसील आवास पर्वत कहा है; इस का प्रमाण वैसे ही जानना विशेष में सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है इस का सब अर्थ पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! दगसीमक आवास पर्वत ऐसा क्यों नाम कहा ? अहो गौतम! सीता सीतोदा महा नदियों का प्रवाह इस आवास पर्वत पर्यंत आता है और इस से लगकर पीछा समुद्र में मील जाता है इस से ऐसा

तत्थ चउण्ह सामाणिये जाव विहरति ॥ कहिण भंते ! मणोसिलगस्स वेलधर णागराइस्स मणोसिलाणाम रायहाणी ? गोयमा ! दगसीमस्स आवास पव्वयस्स उत्तरेण तिरिये असखेज्ज जाव अण्णमि लवणे एत्थण मणोसिलाणाम रायहाणी पण्णत्ता, तच्चेव पमाण जाव मणोसिलए देवे कणगकेरयय फलिहमया वेलधरा णामावासा अणुवलधर राइण पव्वया होति रयणमया ॥ १४ ॥ कतिण भंते ! अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि अणुवेलधर णागरायाणो पण्णत्ता तजहा कक्कोडए कद्दमए कतिलासे अरुणप्पभे ॥ तेसिण भंते ! चउण्ह

अर्थ

कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! मनोसीलक वेलधर नाग राजा की मनोसीला राज्यधानी कहां है ? अहो गौतम ! दगसीमक आवास पर्वत से उत्तर में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य लवण समुद्र में मनोसीला नामक राजधानी कही है यावत् वहां मनोसीलग देव रहता है पहिला आवास पर्वत कनकमय है, दूसरा आवास पर्वत अंक रत्नमय, तीसरा आवास पर्वत चांदीमय और चौथा आवास पर्वत स्फटिक रत्नमय है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! अनुवेलधर नाग राजा कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! अनुवेलधर नाग राजा चार कहे हैं तद्यथा—१ कर्कोटक, २ कर्दमक, ३ कैलाश

अणुवेलधर णागराईण कइआवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तजहा कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिण भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता एत्थण कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाण ज गोथूभस्स, णवर सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सीहासण सपरिवार

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ? अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अनुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना, इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बडी वावडियों में

अट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पभाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमआ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चत्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरु त्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भत ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

अर्थ

उत्पल वगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परंतु यहां अग्नि कौण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कौण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कौण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां लवण समुद्र का अधिपति

अणुवेलधर णागराईण कइआवासपव्वया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि आवास पव्वया पण्णत्ता तंजहा-कक्कोडए कद्दमए कइलासे अरुणप्पभे ॥ २६ ॥ कहिणं भंते ! कक्कोडगस्स अणुवेलधर णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते ? गोयमा ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं लवणसमुद्द बायालीस जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं कक्कोडगस्स णागरायस्स कक्कोडए णाम आवास पव्वए पण्णत्ते सत्तरस एकवीसाति जोयणसयाति तचेव पमाण जं गोथूभस्स, णवर सव्वरयणामए अच्छे जाव निरवसेस जाव सीहासण सपरिवार

और ४ अरुणप्रभ अहो भगवन् ! इन चार अनुवेलधर नाग राजा के कितने आवास पर्वत कहे हैं ! अहो गौतम ! इन के चार आवास पर्वत कहे हैं तद्यथा १ कर्कोटक २ कर्दमक ३ कैलास और ४ अरुणप्रभ ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! कर्कोटक नामक अणुवेलधर नाग राजा का कर्कोटक नामक आवास पर्वत कहां कहा है ! अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से ईशान कौन में लवण समुद्र में ४२ हजार योजन अवगाह कर जावे वहां कर्कोटक नाग राजा का कर्कोटक आवास पर्वत कहा है यह १७२१ योजन का ऊंचा है वगैरह जो गोस्तूभ पर्वत का परिमाण कहा वह सब इस का जानना विशेष में यह रत्नमय है निर्मल यावत् प्रतिरूप है यावत् परिवार सहित सिंहासन जानना. इस का अर्थ—यहां बहुत छोटी बडी वावडियों में

अट्ठो से बहूइ उप्पलाइ, कक्कोडग पभाइ सेस तचेव णवर कक्कोडग पव्वयस्स उत्तरपुरत्थिमेण एवतचेव सव्व कद्दमसवि सो चेव गमओ अपरिसेसओ णवर दाहिण पुरत्थिमेण आवासो विज्जुप्पभा रायहाणी, दाहिणपुरत्थिमेण कइलासेवि एवचव णवर दाहिण पच्चत्थिमेण कइलासवि रायहाणि, ताएचेव विदिसाए अरुणप्पभेवि अवरुत्तरेण रायहाणीवि, ताएचेव विदिसाए चत्तारिवि एगपमाणा सव्वरयणामयाय ॥२६॥ कहिण भत ! सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमदीवे पण्णत्ते ? गोयमा ! जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमण लवण समुद बारस जोयण सहस्साइ ओगाहित्ता

बसक बगैरह होवे हैं कर्कोटक जैसा प्रकाश है, शेष सब वैसेही कहना इसकी राज्यधानी ईशान कोनमें है कर्दमकका भी विशेषता रहित यह अभिलाप कहना परतु यहां अग्नि कौण कहना इस की राज्यधानी विद्युत्प्रभा जानना कैलासका भी वैसेही जानना परतु यहां नैऋत्य कौण में कहना और इसी दिशामें इस की राज्यधानी कहना अरुणप्रभ का वैसे ही कहना परतु वायव्य कौण में कहना और इसही दिशा में राज्यधानी भी कहना चारों का प्रमाण समान जानना सब रत्नमय हैं ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का अधिपति सुस्थित देवका गौतम ! नामक द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन जावे यहां लवण समुद्र का अधिपति

सूत्र

एत्थण सुट्ठिय लवणाहिवइस्स गोयमा दीवे णाम दीवे पण्णत्ते, बारस जोयण सहस्साइं आयामविक्खंभेणं सत्ततीस जोयण सहस्साइं नवय अडयाले जोयणसये किंचिविसेसाहिये परिक्खेवेणं, जंबूदीव दीवंतेणं अद्धकूणणउति जोयणाइं चत्तालीसच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिए जलंताओ लवणसमुद्दतेणं दो कोसे ऊसिए जलंताओ सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेण वणसंडेण सव्वतो समंता तहेव वण्णओ दोण्हवि ॥ गोयमदीवस्सणं दीवस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते सेजहा णामए आलिंग जाव आसयंति ॥ तस्सणं बहुसमरमणिज्ज

अर्थ

सुस्थित देवका गौतम द्वीप कहा है वह बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है ३७९४८ योजन से कुच्छ अधिक की परिधि है जम्बूद्वीप तरफ ८८५ योजन व एक योजन के ९५ भाग में के ४० भाग पानी से ऊंचा है और लवण समुद्र की दिशी में पानी से दो कोस ऊंचा है इस के एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड है इस का वर्णन सब पूर्ववत कहना गौतमद्वीप के अंदर बहुत रमणीय भूमि भाग है जैसे मादलका तल वगैरह पूर्ववत् कहना, यावत् वहां बहुत देव बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में लवणाधिपति सुस्थित नामक देव का एक बडा आक्रीडावास नामक भूमि विहार कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का चौडा है अनेक स्तंभवाला वगैरह सब वर्णन कहना

भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थणं सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स एगे महं आकीलावासे णाम भोमेज्ज विहारे पण्णत्ते बावट्ठिं जोयणाति अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेण, एकतीसं जोयणाइ कोसंच विक्खंभेण अणेगखंभसते सण्णिविट्ठे सव्वओभवण वण्णओ भाणियव्वो ॥ आकीलावासस्सणं भोमज्जविहारस्स अतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीण फासो तस्सण बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थण एगे मणिपेढिया पण्णत्ता, सा मणिपेढिया दो जोयणातिं आयाम विक्खंभेण जोयण बाहल्लेण सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा ॥ तीसेण मणिपेढियाते उवरिं एत्थण देवसयणिज्जे पण्णत्ते वण्णओ॥सेकेणट्ठेण भंते! एवं

अर्थ

आक्रीडावास भूमि विहारमें बहुत रमणीय भूमिभाग है यावत् मणि का स्पर्श है उस बहुत रमणीय भूमि भाग के मध्यमें एक मणिपीठिका कही है यह मणिपीठिका दो योजन की लम्बी चौडी एक योजन की जाडी शेष पूर्ववत् इस मणिपीठिका पर एक देवशयन कहा है इस का वर्णन पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! गौतमद्वीप ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम! गौतमद्वीप में बहुत उत्पल कमल यावत् गौतम जैसी प्रभा वाले हैं इस लिये ऐसा कहा है यावत् नित्य है अहो भगवन् ! लवणाधिपति सुस्थित नामक देवकी राज्यधानी कहां

वुच्चइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहूइं, उप्पलइं जाव गोयमप्पभाइं से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिंण भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्व जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिंण भंते ! जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं

//अर्थ

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीप से पश्चिम में तीच्छीं असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाहकर जावे वहां सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्वरत जानना यावत् सुस्थित देव रहता है ॥२७॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चन्द्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के चन्द्र का चन्द्र नामक द्वीप कहा है, यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊंचा है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

जम्बुद्दीवगाण चंदाण चंददीवानाम दीवा पण्णत्ता, जम्बुद्दीवं तेण अद्धेकूणणउतिं जोयणाति चत्तालीसंच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेण दोकोसे ऊसिता जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खभेण सेस तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेय२ वणसंड परिक्खित्ता, दोण्णवि वण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयंति ॥ तेसिणं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागाण बहुमज्झ देसभाए पासादवडेंसका बावट्ठि जोयणाइ, बहुमज्झदेसभागे मणिपाढयाओ दो जोयणाओ जाव

अर्थ

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव यहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है यह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! वहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चंद्र समान वर्णवाले हैं, चंद्र समान कांतिवाले हैं, वहां चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चंद्र२ द्वीप व चंद्र राजधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

भुवइ गोयम दीवे दीवे ? गोयमा ! गोयमदीवेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहुइ, उप्पलाइं जाव गोयमप्पभाइं से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ कहिणं भंते ! सुट्ठियस्स लवणाहिवइस्स, सुट्ठियाणाम रायहाणी पण्णत्ता ? गोयमा ! गोयम दीवस्स पच्चत्थिमेणं तिरियमसंखेज्जे जाव अण्णमि लवणसमुद्दे बारस जोयण सहस्साति ओगाहित्ता एवं तहेव सव्वं जाव सुट्ठिएदेवे २ ॥ २७ ॥ कहिणं भंते ! जंबुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दं बारस जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं

अर्थ

कही है ? अहो गौतम ! गौतम द्वीपके पश्चिम में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघ कर जावे वहां दूसरे लवणसमुद्र में बारह योजन अवगाह कर जावे वहां सुस्थित देवकी राजधानी कही है वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना यावत् सुस्थित देव रहता है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चंद्रका चंद्रद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाह कर जावे वहां जम्बूद्वीप के चंद्र का चंद्र नामक द्वीप कहा है यह जम्बूद्वीप की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी से ऊंचा है लवण समुद्र की तरफ दो कोस का पानी से

जम्बुद्दीवगाणं चंदाणं चंददीवानामं दीवा पण्णत्ता, जंबुद्दीवं तेणं अद्धेकूणणउतिं जोयणाति चत्तालीसंच पंचाणउति भागे जोयणस्स ऊसिया जलंतातो लवणसमुद्दतेणं दोकोसे ऊसिता जलंतातो बारस जोयण सहस्साति आयाम विक्खंभेणं सेसं तचेव जहा गोतमदीवस्स परिक्खेवो पउमवरवेइया पत्तेयं २ वणसंड परिक्खित्ता, दोण्णवि वण्णओ जाव जोइसिया देवा आसयंति ॥ तेसिणं बहुसमरमणिज्ज भूमिभागाणं बहुमज्झ देसभाए पासायवडेंसका बावट्ठि जोयणाइं, बहुमज्झदेसभागे मणिपेढयाओ दो जोयणाओ जाव

अर्थ

ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है शेष सब गौतम द्वीप जैसे वर्णन जानना इन को वनखण्ड व पद्मवर वेदिका घेरीहुइ है दोनों वर्णन योग्य है उस पर बहुत सम रमणीय भूमिभाग है यावत् ज्योतिषी देव वहां बैठते हैं उस रमणीय भूमिभाग के मध्य में प्रासादावतंसक कहा है वह ६२॥ योजन का ऊंचा व ३१। योजन का लम्बा चौडा है उस के मध्य में एक मणिपीठिका है यावत परिवार सहित सिंहासन कहना इस का अर्थ की पृच्छा भी वैसे ही कहना अर्थात् इस का ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! वहां छोटी बडी बावडियों में बहुत कमल चंद्र समान वर्णवाले हैं, चंद्र समान कांतिवाले हैं, वहां चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाला रहता है वह वहां चार हजार सामानिक यावत् चंद्र द्वीप व चंद्र राज्यधानी में रहनेवाले अन्य ज्योतिषी देव देवियों का अधिपति

सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइं उप्प-लाइं चंद वण्णाभाइं चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तेण तत्थ पत्तेय २ चउण्हं सामाणिय साहस्सीणं जाव चंदद्दीवाण चंदाणय रायहाणीण अण्णासिं बहूइं जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा ! चंदद्दीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते ! जंबूदीवगाणं चंदगाणं चंदाणउ णाम रायहाणीउ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चंदद्दीवाण पुरत्थिमेणं तिरियं जाव अण्णंमि जंबूदीवे २ बारस जोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता तचेव पमाण जाव एव महिड्डिया चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते ! जंबूदीवगाणं सूराणं सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में नहीं था ऐसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चन्द्र की चन्द्रका नामक राज्यधानी कहां कही है ? अहो गौतम ! चंद्रद्वीप से पूर्व में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां अन्य जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रका नामक राज्यधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना यावत् महर्द्धिक चन्द्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है ?

पण्णत्ता ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेण लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता तचेव उच्चत्त आयाम विक्खंभेण परिक्खेवो वेदिया वणसंडा भूमिभागा जाव आसयति पासायवडेंसगाण तचेव पमाण मणिपेढिया सीहासण सपरिवारा अट्ठो उप्पलाइ सूरप्पभाति सूराइयइत्थ देवा जाव रायहाणीओ, सकाण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णम्मि जंबुदीवे २ सेस तचेव जाव सूरादीवा ॥२९॥ कहिण भंते ! अब्भितरे लवणगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता ? गोयमा !

अर्थ — अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में लवण समुद्र में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां सूर द्वीप कहा है इस की लम्बाइ चौडाइ ऊंचाइ यावत् सब वर्णन चंद्र द्वीप जैसे जानना इस को भी वेदिका वनखण्ड व भूमिभाग है यावत् वहां देव रहते हैं उस में प्रासादावतंसक है इस का प्रमाण भी पूर्वोक्त जैसे कहना इस में मणिपीठिका, सिंहासन वगैरह परिवार सहित कहना इस में सूर्य की कांति जैसे उत्पल वगैरह उत्पन्न होते हैं इस में सूर नामक ज्योतिषी का इन्द्र रहता है इस की राज्यधानी लवण समुद्र के सूर्य द्वीप से पश्चिम में अन्य जम्बूद्वीप में सूर्या नामक राज्यधानी है इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में रहकर जम्बूद्वीप की दिशा में फीरनेवाले

सीहासणा सपरिवारा भाणियव्वा तहेव अट्ठो गोयमा! बहुसु खुड्डा खुड्डियाउ बहूइ उप्प-
लाइ चंदप्पभाइ चंदा इत्थ देवा महिड्डिया जाव पलिओवमट्ठितीया परिवसंति तेण
तत्थ पत्तेय २ चउण्ह सामाणिय साहस्सीण जाव चंददीवाण चंदाणय रायहाणीण अण्णेसिं
बहूइ जोतिसियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरति से तेणट्ठेण गोयमा !
चंददीवा जाव णिच्चा ॥ कहिण भंते ! जंबूद्दीवगाण चंदगाण चंदाणउ णाम
रायहाणीउ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चंददीवाण पुरत्थिमेणं तिरियं जाव अण्णंमि
जंबूदीवे २ बारस जोयणसहस्साति उग्गाहित्ता तंचेव पमाण जाव एव महिड्डिया
चंदा देवा २ ॥ २८ ॥ कहिण भंते ! जंबूद्दीवगाण सूराण सूरदीवणाम दीवा

पना करता हुवा विचरता है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा नाम कहा है अथवा यह द्वीप अतीत काल में
नहीं था वैसा नहीं यावत् नित्य है अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के चंद्र की चंद्रा नामक राजधानी कहां
कही है ? अहो गौतम ! जंबूद्वीप से पूर्व में तीर्च्छा असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर आवे वहां अन्य
जम्बूद्वीप में बारह हजार योजन पर चंद्रा नामक राजधानी कही है इस का प्रमाण वैसे ही जानना
यावत् महर्द्धिक चंद्र देव है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के सूर्य का सूर द्वीप कहां कहा है ?

उगाहित्ता एत्थणं बाहिरि लवणगाण चदाण चददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसडदीव तेणं अद्धेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभाग जेयणस्स उसित्ता जलतातो लवण समुद्द तेण दो कोस उसित्ता बारसजोयणसहस्स इ आयामविक्खभेण पउमवरवेइया वणसडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसख अण्णमि लवणसमद्द तहेव सव्व ॥३१॥कहिण भते बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चात्थिमल्लातो वेतियताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइ

अर्थ

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चन्द्रका चन्द्र द्वीप कहा है यह धातकी खण्ड के तरफ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इसका अर्थ की पृच्छा ? उप द्वीप से पूर्व में तीच्छी असख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी हैं इनका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥३२॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्यका सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की, वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

मूल

जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं लवणसमुद्द बारस जोयणसहस्साइं उगाहित्ता एत्थणं अब्भिंतर लवणगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता जहा जंबुद्दीवगा चंदा तहा भाणियव्वा, णवरिं रायहाणीओ अण्णमि लवणे, सेस तचेव ॥ एवं अब्भिंतर लवणगाण सूराणवि लवणसमुद्द बारस जोयण सहस्साति तचेव सव्व रायहाणीओवि ॥ ३० ॥ कहिणं भंते ! बाहिरि लावणगाणं चंदाणं चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! लवणसमुद्दस्स पुरच्छिमिल्लातो वेदीयतातो लवणसमुद्द पच्चत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइं

अर्थ

अर्थात् लवण समुद्र के आभ्यन्तर चंद्र के चंद्र द्वीप कहां हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में बारह हजार योजन अवगाहकर जावे वहां अभ्यन्तर लवण समुद्र के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है जैसे जम्बूद्वीप के चंद्रद्वीप हैं वैसे ही कहना विशेष में अन्य लवण समुद्र में राजधानी कहना ऐसे ही लवण समुद्र में बारह हजार योजन पर आभ्यन्तर लवण समुद्र के सूर्य का सूर्य द्वीप कहा है इस का सब अधिकार पूर्ववत् जानना ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! बाहिर के लवण समुद्र के चंद्र का चंद्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पूर्व दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पश्चिम दिशा में बारह हजार

१ लवण समुद्र के शिखा बाहिर धातकी खण्ड की दिशा में फीरनेवाले

उगाहित्ता एत्थण बाहिरि लवणगाण चदाण चददीवा पण्णत्ता ॥ धायतिसडदीव तेणं अद्धेकूणणओ जोयणाति चत्तालीस पचाणउतभागे जे यणस्स उसित्ता जलतातो लवण समुद्द तेण दो कोस उसित्ता बारसजायणसहस्स इ आयामविक्खभेण पउमवरवेइया वणसडे, बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा मणिपढिया सीहासणा सपरिवारा सोचव अट्ठो रायहाणीओ ॥ साण दीवाण पुरत्थिमेण तिरियमसख अण्णमि लवणसमुद्द तहेव सव्व ॥३१॥कहिण भते! बाहिर लवणगाण सूराण सूरदीवा नामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! लवणसमुद्द पच्चाच्छामल्लातो वेतियताओ लवणसमुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयणसहस्साइ

अर्थ

योजन जावे वहां बाह्य लवण समुद्र के चद्रका चद्र द्वीप कहा है यह धातकी खण्ड के तरफ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग में से ४० भाग जितना पानी पर है, और लवण समुद्र की तरफ दो कोश ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौडा है वहां पद्मवर वेदिका व वनखण्ड है बहुत रमणीय भूमिभाग है, मणिपीठिका, परिवार सहित सिंहासन है इस का अर्थ की पृच्छा ? इस द्वीप से पूर्व में तीच्छी असंख्यात द्वीप समुद्र में राज्यधानी है इसका सब वर्णन पूर्ववत् जानना ॥३१॥ अहो भगवन्! बाहिर के लवण समुद्र सूर्यका सूर्यद्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से लवण समुद्र में पूर्व

धायतिसंडदीवं तेणं अद्धेकूणउतिं जोयणाति चत्तालीस च पचाणउतिं भागो जोयणस्स लवणसमुद्दं तेण दो कोसे ऊसिया सेस तहेव जाव रायहाणीओ सगाण दीवाणं पच्चत्थिमेण तिरियं मसंखेज्ज लवण चेव बारसजोयणा तहेव सव्वं भाणियव्वं ॥२२॥ कहिणं भंते ! धायतिसंडे दीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! धायतिसंडस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेदियंतातो कालोयणं समुद्दं बारसजोयण सहस्साइं ओगाहित्ता एत्थणं धायतिसंडदीवगाणं चंदाणं चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता सव्वतो समंता दोकोसा ऊसिता जलंतातो बारसजोयण सहस्साइं

अर्थ

दिशा में बारह हजार योजन जावे तब वहां सूर्यद्वीप कहा है यह धातकी खण्ड की तरफ ८८॥ योजन व एक योजन के ९५ भाग के ४० भाग जितना ऊंचा व लवण समुद्र से दो कोस का पानी से ऊंचा है शेष सब राज्यधानी पर्यंत वैसे ही कहना अपने द्वीप से पश्चिम में असंख्यात द्वीप समुद्र के अन्य लवण समुद्र में इन की राज्यधानी है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! धातकी खण्डद्वीप के चंद्र के चंद्रद्वीप कहां कहे हैं ? अहो गौतम ! धातकी खण्डद्वीप की पूर्व की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां धातकी खण्ड के चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है वह चारों और पानी से दो कोस ऊंचा है बारह हजार योजन का लम्बा चौड़ा है जैसे पहिले कहा वैसे ही विष्कंभ, परिधि, भूमिभाग, प्रासादा

तहेव विक्खंभो परिक्खेवो भूमिभागो पासादवडेंसया मणिपेढिया सीहासणा सपरिवारा अठा तहेव रायहाणीओ ॥ सकाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णंमि धायतिसंडेदीवे सेस तहेव एवं धायतिसंडगावि सूरादीवावि णवरिं धायतिसंडस्स दीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयाओ कालोयण समुद्द बारसजोयण तहेव सव्व जाव रायहाणीओ सूराण दीवाण पच्चत्थिमेण अण्णंमि धायतिसंड दीवे सव्व तहेव ॥ २२ ॥ कहिणं भंते ! कालोयणगाण चंदाण चंददीवा णामदीवा पण्णत्ता? गोयमा! कालोयणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमि-

अर्थ

वर्तंसक, मणिपीठिका व परिवार सहित सिंहासन है अर्थ इस का वैसे ही कहना यावत् राज्यधानी की पृच्छा करना अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात द्वीप समुद्र उल्लंघकर जावे वहां धातकी खण्ड में चंद्रका राज्यधानी कही है वर्णन पूर्ववत् जानना ऐसे ही धातकी खण्ड के सूर्यद्वीप का कहना परंतु पश्चिम दिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वगैरह सब वैसे ही कहना राज्यधानी सूर्यद्वीप से पश्चिम में जावे वहां अन्य धातकी खण्ड में है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के चंद्रका चंद्रद्वीप कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र की पूर्वदिशा की वेदिका से कालोद समुद्र में पश्चिम में बारह योजन जावे वहां कालोद चंद्र का चंद्रद्वीप कहा है यह चारों ओर पानी से दो कोश का ऊंचा है

छातो वेतियताओ कोलायण समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइं उगाहित्ता एत्थण कालोयण चंदाण चददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरित्थमेण बारसजोयण सहस्साइं उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाण पच्चात्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वें अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्वत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में है, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में है। उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता चददीवा अण्णामि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समद्द बारस जोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जम्बुद्दीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखोयणदी

अर्थ

में चन्द्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चन्द्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चन्द्र सूर्य द्वीप क्रम से आगे के समुद्र में है और समुद्र के चन्द्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है उन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चन्द्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नन्दीश्वरद्वीप, नन्दीश्वर

छातो वेतियताओ कोलायणं समुद्द पच्चात्थमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता एत्थण कालोयण चदाण चददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालायण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरित्थमेण बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाण पच्चात्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

थेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वे अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन आवे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पर्वत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में हैं, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं। उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतिगताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूराणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समुद्द बारस जोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्द चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्दे सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जम्बुदीव लवण धायइ कालोद पुक्खरे वरुणे खीर घयखोयणदी

अर्थ

में चन्द्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चन्द्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में है द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप उस से आगे के समुद्र में हैं और समुद्र के चन्द्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चन्द्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणि वरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नन्दीश्वरद्वीप, नन्दीश्वर

खातो वेतियताओ कालोयण समुद्द पच्चात्थिमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता एत्थण कालोयण चदाण चंददीवा सव्वतो समता दो कोसा ऊसिता जलंतातो सेस तहेव जाव रायहाणीओ ॥ सगाण दीवाण पुरत्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे बारस जोयण तहेव सव्व जाव चदा देवा, एव सूराणवि णवर कालोयण पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो कालोयण समुद्द पुरत्थिमेण बारसजोयण सहस्साइ उगाहित्ता तहेव रायहाणीओसगाए दीवाण पच्चात्थिमेण अण्णमि कालोयण समुद्दे

शेष सब वैसे ही कहना राज्यधानी की पृच्छा, अपने द्वीप से पूर्व में असंख्यात वें अन्य कालोद समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां राज्यधानी है इस का सब कथन पूर्ववत जानना ऐसे ही सूर्य का कहना परंतु कालोद समुद्र से पश्चिम की वेदिका से कालोद समुद्र से पूर्व में बारह हजार योजन के दूरीपर सूर्य का द्वीप है वैसे ही राज्यधानी पर्यंत कहना, परंतु अपने द्वीप से पश्चिम में जाना वहां अन्य कालोद समुद्र का कहना ऐसे ही पुष्करवरद्वीप के चंद्र का कहना पुष्करवरद्वीप की पश्चिम की वेदिका से पुष्करसमुद्र में बारह हजार योजन जाने पर चंद्रद्वीप है और अन्य पुष्कर द्वीप में उस की राज्यधानी है ऐसे ही सूर्यद्वीप पुष्करद्वीप की वेदिका से पश्चिम में पुष्करोदधि समुद्र में हैं, राज्यधानी अन्य पुष्करद्वीप में है अब सब द्वीप के जो चंद्र सूर्य है उन के द्वीप उस के आगे रहे हुवे समुद्र में हैं . उस

तहेव सव्व एव पुक्खरवरगाण चंदाणं पुक्खरवरदीवस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियताओ पुक्खरवरसमुद्द बारसजोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता चददीवा अण्णमि पुक्खरवरेदीवे रायहाणीओ तहेव एव सूरणवि दीवा पुक्खरवर दीवस्स पच्चत्थिमिल्लाउ वेइयताओ पुक्खरोद समद्द बारस जोयण सहस्साइ उग्गाहित्ता तहेव सव्व जाव रायहाणीउ दीविल्लगाण दीव समुद्दगाण समुद्दे चेव एगाण अब्भतर पासे एगाण बाहिरएपासे रायहाणीउ दीविल्लगाण दीवेसु समुद्दगाण समुद्देसु सरिस णामएसु इमे णामा अणुगतव्वा ॥ जंबुदीव लवण धायइ कालोद पुक्खर वरुणे खीर घयखोयणदी

में चंद्रद्वीप पूर्व दिशा में है और सूर्यद्वीप पश्चिम दिशा में है सब समुद्र के जो चंद्र सूर्य हैं उन के द्वीप उन ही समुद्र में हैं द्वीप के चंद्र सूर्य द्वीप क्रम से आगे के समुद्र में हैं और समुद्र के चंद्र सूर्य द्वीप उन ही समुद्र में है, इन की राज्यधानी अपने २ नाम जैसी है, इन में चंद्र की राज्यधानी पूर्व दिशा में व सूर्य की राज्यधानी पश्चिम दिशा में है इन के नाम अनुक्रम से कहते हैं—जम्बूद्वीप, लवण समुद्र धातकी खण्डद्वीप, कालोद समुद्र, पुष्कर वरद्वीप, पुष्करवर समुद्र, वारुणिवरद्वीप, वारुणिवरसमुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरवर समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतवरसमुद्र, इक्षुवरद्वीप, इक्षुवरसमुद्र, नंदीश्वरद्वीप, नंदीश्वर

पणत्ते चंदाण चंदाओ णाम रायहाणीओ पण्णत्ताओ त चेव सव्वं एवं सूराणवि णवर देवोदगस्स पच्चत्थिमिल्लातो वातिपताओ देवोदग समुद्द पुरत्थिमेणं वारस जोयण सहस्साति उगाहित्ता रायहाणीउ सयाण २ पुरत्थिमेण समुद्द असंखेज्जाइ जोयण सहस्साइ एवं णागे जक्खे भूतेवि चउण्ह दीव समुद्दाण ॥ २५ ॥ कहिण भंते ! सयंभूरमणदीवगाण चंदाण चंददीवा णाम दीवा पण्णत्ता ? गोयमा ! सयंभूरमणस्स दीवस्स पुरत्थिमिल्लातो वेइयतातो सयंभूरमणोदग समुद्द बारस जोयण सहस्साइ तहेव रायहाणीतो सगाण २ दीवाण पुरत्थिमेण सयंभूरमणोदग समुद्द असंखेज्जाइ

यहां सूर्य द्वीप कहा है और द्वीप से पूर्व के समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे वहां उनकी सूर्या नामक राज्यधानी कही है ऐसे ही नागद्वीप,नागसमुद्र, यक्षद्वीप, यक्षसमुद्र भूतद्वीप व भूतसमुद्र का जानना ये चारों द्वीप समुद्र समान जानना ॥२५॥ अहो भगवन्! स्वयंभूरमण द्वीप के चंद्र का चंद्र द्वीप कहां कहा है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण द्वीप की पूर्व की वेदिका से स्वयंभूरमणोदक समुद्र में बारह हजार योजन जावे वहां चंद्र द्वीप कहा है इसी क्रमसे राज्यधानी पर्यंत कहना अपने द्वीप से पूर्व में स्वयंभूरमणोदक समुद्र में असंख्यात हजार योजन जावे तब उसकी राज्यधानी कही है ऐसे ही सूर्य का जानना परंतु यहां स्वयंभूरमण समुद्र की पश्चिम की

जोयण तहेव एव सूराणवि, सयभूरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेतियतातो रायहाणीओ सकाण २ दीवाण पच्चत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखेज्जा सेस तहेव ॥ कहिण भते! सयभूरमणसमुद्दकाण चदाण चददीवा पण्णत्ता? गोयमा! सयभूरमणस्स समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ वेइयतातो सयभूरमण समुद्द पच्चत्थिमेण बारस जोयण सहस्साइ उगाहित्ता सेस तचेव, एव सूराणवि, सयभुरमणस्स पच्चत्थिमिल्लातो वेइयतातो राय- हाणीउ सकाण २ दीवाण पुरत्थिमेण सयभूरमणोदग समुद्द असखेज्जाइ सेस तहेव ॥३६॥ अत्थिण भते ! लवणसमुद्दे वेलधरातिवा णागरायाः अग्घातिवा सिहातिवा

अर्थ

वेदिका से जानना इन की भी राज्यधानी अपने द्वीप से पश्चिम में स्वयभूरमण समुद्र में असख्यात हजार योजन जावे वहां लग कहना अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र के चद्र का चद्रद्वीप कहा है ! अहो गौतम ! स्वयभूरमण समुद्र की पूर्व की वेदिका से बारह हजार योजन स्वयभू रमणसमुद्र में जावे वहां चद्रद्वीप कहा है वगरह शेष सब पूर्ववत् ऐसे ही सूर्य का कहना परतु यहां स्वयभूरमणसमुद्र की पश्चिम दिशा की वेदिका से जानना राज्यधानी अपने द्वीप से पूर्व में स्वयभूरमण समुद्र में अस- ख्यात योजन जावे वहां शेष सब वैसे ही कहना यावत् वहां सूर्य देव रहते हैं ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् !

विज्जातिवा हासवुड्ढीतिवा ? हंता अत्थि ॥ जहाणं भंते ! लवण समुद्दे अत्थि वेलंधरेतिवा णागरायातिवा अग्घासिहा विज्जातिवा हासवुड्ढीतिवा तहाण बाहिरएसुवि समुद्देसु अत्थि वेलंधराइवा णागरायातिवा अग्घातिवा सिहातिवा विज्जातिवा हासवुड्ढीतिवा ? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥२७॥ लवणेणं भंते ! समुद्दे किं ऊसितोदगे किं पत्थडोदगे खुभियजले किं अखुभियजले ? गोयमा ! लवणेणं समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे, खुभियजले नो अखुभियजले ॥ जहाणं भंते ! लवण समुद्दे ऊसितोदगे नो पत्थडोदगे

लवण समुद्र में वेलंधर, नाग राजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि वगैरह क्या है ? हां गौतम ! वैसे हैं अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र में वेलंधर, नागराजा, अग्र, शिखा, नमण, ग्राम, वृद्धि हैं वैसेही बाहिर के समुद्र में क्या वेलंधर, नागराजा, अग्र शिखा, नमण ग्राम व वृद्धि है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में क्या कुच्छ ऊंचा शिखर वाला पानी है अथवा विस्तारवंत हैं, क्या वायु से पानी क्षुब्ध होता है अथवा अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावाला है, परंतु विस्तारवंत नहीं है वायु से क्षुब्ध पानी है परंतु अक्षुब्ध नहीं है अहो भगवन् ! जैसे लवण समुद्र का पानी ऊंचा शिखावंत है परंतु विस्तारवंत नहीं है, वायु से क्षुब्ध है परंतु

खुभियजले ना अक्खुभियजले तहाण बाहिरगा समुद्दा किं ऊसितोदगा नो पत्थडोदगा खुभियजला नो अक्खुभियजला ? गोयमा ! बाहिरगाण समुद्दाण नो उसितोदगा पत्थडोदगा, नो खुभियजला अक्खुभियजला, पुण्णा पुण्णपमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताये चिट्ठति ॥ ३८ ॥ अत्थिण भंते ! लवण समुद्द बहवे उराला बलाहका संसेयंति संमुच्छंति वास वासंति ? हंता अत्थि ॥ जहाण भंते ! लवण समुद्दे बहवे उराला बलाहका संसेयंति समुच्छंति वास वासंति बाहिरएसु नो तिणट्ठे समट्ठे ॥ ३९ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं

अक्षुब्ध नहीं है वैसे ही क्या बाहिर के असंख्यात समुद्र का पानी ऊंचा शिखरवन्त, प्रस्तारवंत क्षुब्ध व अक्षुब्ध है ? अहो गौतम ! बाहिर के कालोद समुद्र प्रमुख का पानी ऊंचा शिखरवन्त नहीं है, परंतु प्रस्तारवन्त है वायु से क्षुब्ध नहीं है परंतु अक्षुब्ध शांत है क्यों कि इन में पाताल कलश नहीं हैं, ये पानी से परिपूर्ण भरे हुवे हैं पूर्ण प्रमाण भरे हैं, परिपूर्ण घट जैसे भर हुवे हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में बहुत अप्कायरूप मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षते हैं ? हां गौतम ! वैसे ही उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं जैसे लवण समुद्र में बहुत मेघ उत्पन्न होते हैं व वर्षा करते हैं वैसे ही क्या बाहिर के समुद्र में मेघ उत्पन्न होवे हैं व वर्षा करते हैं ? यह अर्थ समर्थ नहीं हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! किस

वुचइ बाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा बोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति? गोयमा! बाहिरएसुण समुद्द बहवे उदगजोणिया जीवाय पोग्गलाय उदगत्ताए वक्कमति विउक्कमति चयति उववज्जति से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चति बाहिरगाण समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा जाव समभरघडत्ताए चिट्ठति ॥ ४० ॥ लवणेण भते ! केवतिय उव्वेह परिवड्डिए पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स समुद्दस्स उभउ पासिं पचाणउतिं २ पदेसे गता पएस उव्वेह परिवड्डिए पण्णत्ते पचाणउतिं २ वालग्गाइ गता वालग्गा उव्वेह परिवड्डिते पण्णत्ते, एव पचाणउति २ लिक्खगता लिक्ख उव्वेह

लिये ऐसा कहा कि बाहिर के समुद्र परिपूर्ण घडे जैसे भरे हुवे हैं अहो गौतम ! बाहिर के समुद्र में बहुत अपुकाय के जीव मेघ-वृष्टि बिना उत्पन्न होते हैं व चवते हैं, इसलिये ऐसा कहा है कि बाहिर के समुद्र भरे हुवे हैं यावत् परिपूर्ण घट समान हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र की गहराइ में कितनी वृद्धि होती जाती है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजुओं (जम्बूद्वीप व धातकी खण्ड) अदर ९५ ९५ प्रदेश जावे तब एक प्रदेश ९५-९५ बालाग्र जावे तब एक बालाग्र गहराइ वृद्धि पाती है ऐसे ही ९५-९५ लिक्ख जावे तब एक लिक्ख, ऐसे ही यूका, यवमध्य, अंगुली, विहस्ति, हाथ, कुक्षि धनुष्य, गाउ, योजन, सब योजन की

परिवड्डिए जूया अवमज्झे अगुलि विहत्थिरयणी कुच्छि धणु उव्वेह परिवड्डीए गाउय जोयण जोयणसय जोयण सहस्साइ गता जोयण सहस्स उव्वेह परिवड्डिए पण्णत्ते ॥ ४१ ॥ लवणेण भते ! समुद्द केव तिय उस्सेह परिवड्डिये पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभउपासिं पचाणउति २ पदसे गता सोलस पदेसे उस्सेध परिवुड्डिते पण्णत्त ॥ लवणस्सण समुद्दस्स एतेणव कमेण जाव पचाणउति जोयण सहस्साइ गता सोलस जोयण सहस्साइति उस्सेह परिवुड्डिते पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भत ! समुद्दस्स के महालये गोतित्थे पण्णत्त ? गोयमा ! लवणस्सण समुद्दस्स उभयो पासिं पचाणउतिं २ जोयण सहस्साइ गोतित्थे पण्णत्ते ॥ लवणस्सण भते !

गहराइ जानना ९५ हजार योजन जावे तब एक हजार योजन की गहराइ जानना ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् लवण समुद्र की शिखा कितनी ऊंची है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के दोनों बाजु से ९५ ९५ प्रदेश अंदर जावे तब १६ प्रदेश शिखा ऊंची है, इसी क्रम से ९५-९५ हजार योजन अंदर जावे तब १६ हजार योजन शिखा ऊंची है अहो भगवन् ! लवण समुद्र का कितना गोतीर्थ कहा है ? (गोतीर्थ सो पानी का चढाव उतार) अहो गौतम ! लवण समुद्र के दो बाजु ९५-९५ हजार योजन में गोतीर्थ है अहो भगवन् ! लवण समुद्र में गोतीर्थ रहित समपानी कितन क्षेत्र में है ? अहो गौतम ! दश हजार योजन के चक्रवाल

सव्वगोण पण्णत्ते कम्हाण भंते ! लवणसमुद्दे जंबुद्दीवे २ नो उवीलेति नो उप्पीलेइ नोचेव एक्कोदग करेइ ? गोयमा ! जंबूदीवेण दीवे भरहएरवतेसुवासेसु अरहंत चक्कवट्टि बलदेवावासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणासमणीओ सावया सावियाओ मणुया पगतिभद्दया पगतिविणीया पगति उवसंता, पगतिपयणुकोह माण माया लाभ मिउमद्दव संपन्ना अल्लीणा भद्दगा विणीता तेसिणं पणिहाए लवणेसमुद्दे जंबूदीवे नो वीलेति नो उप्पलेति नोचेवणं एक्कोदकं करेति । गंगा सिंधुरत्ता रत्तवईसु सालिलासु देवयाउ महिड्डियाए जाव पलिओवमठितीयाओ

जलमय क्यों नहीं बनाता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के भरत एरवत क्षेत्रमें अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव वासुदेव, जंघाचारण, विद्याचारण, विद्याधर, साधु, साध्वी श्रावक व श्राविका है और दूसरे भद्रिक व विनित प्रकृतिवाले, स्वभाव से ही क्रोध, मान, माया व लोभ पतले करने वाले, मृदता संपन्न, वैराग्य संपन्न संसार में अलिप्त ऐसे मनुष्यों की नेश्राय से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र पानी नहीं डालता है, पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है और भी गंगा सिंधु, रक्ता व रक्तवती नदी के अधिष्ठायक देव महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं उन की नेश्राय से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है यावत् उसे जलमय नहीं बनाता है और भी चुल्लहिमवंत व शिखरी वर्षधर पर्वतमें महर्द्धिक देव रहते

सूत्र

परिवसति, तासिण पणिहाय लवण समुद्द जाव नो चेवण एक्कोदय करेति ॥ चुल्लहिमवंत सिहरिसु वासधरपव्वतेसु देवा महिड्डिया तेसिं पणिहाय हेमवयएरन्नवएसु वासेसु मणुया पगति भद्दगा रोहिता रोहितंससुवण्णकूलरुप्पकूलासु सलिलासु देवयाउ महिड्डियाओ तासिं पणिहाय सद्दावति वियडावातिवट्ट वेयड्ढ पव्वतेसु देवा महिड्डिया जाव पलितोवमठितीया पण्णत्ता महाहिमवंत रुप्पीएसु वासहर पव्वएसु देवा महिड्डिया जाव पलिउवम ठितीयाय हरिवास रम्मगवासेसु मणुया पगतिभद्दगा, गंधावातिमालवंत परितातेसु वट्टवेयड्ढ पव्वतेसु देवा महिड्डिया णिसढ णिलवंतेसु वासहर पव्वएसु

अर्थ

उनकी नेश्राय से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है, हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य स्वभाव से भद्रिक विनीत हैं इन के प्रभाव से समुद्र का पानी नहीं आता है और भी रोहिता, रोहितंसा, सुवर्णकुला व रूप्यकुला इन चार नदियों के महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी नहीं आता है शब्दापाति विकटापाति वृत वैताढ्य पर्वत में महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है महा हिमवंत व रूपी पर्वत पर महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं उन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है हरिवर्ष व रम्यक् वर्ष क्षेत्र में युगलिये भद्रिक प्रकृति वाले,

देवा महिड्डिया सव्वाओ दहदेवियाउ भाणियव्वाओ, पउमद्दहाओ तेगिच्छकेसरिद्दहा वसाणसु देवीयाउ महिड्डिया तासि पणिहाय पुव्वविदेह अवरविदेहेसु वासेसु अरहंता चक्कवट्टि बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा, साविगाओ मणुयापगइभद्दगा तसिं पणिहाय लवणे सीता सीतोदगासु सलिलासु देवता महिड्डिया देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया पगतिभद्दगा मंदरे पव्वते देवा महिड्डिया, जंबूएण सुदंसणाए जंबुदीवाहिवइअणाढिए णाम देवेमहिड्डिए जाव पलिओवमाठतीए परिवसति, तस्स पणिहाय लवणसमुद्द णो उवीलेति जाव नोचेवणं एकोदग करेंति

व विनीत प्रकृति वाले रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है नरकांता नारीकंता, हरिकांता व हरिसलिला इन चार नदियों पर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, गंधापाति व माल्यवंत नामक वृत्त वैताढ्य पर्वत में महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभाव से जम्बूद्वीप में लवण समुद्र का पानी नहीं आता है निषध व नीलवंत वर्षधर पर्वत पर महर्द्धिक देव रहते हैं उनके प्रभावसे लवणसमुद्रका पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है पद्मद्रह, महापद्मद्रह, पुंडरीकद्रह, महापुंडरीकद्रह, तीगिच्छद्रह केसरीद्रह, इन में श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी ये छ देवियों महर्द्धिक हैं इन के प्रभाव से लवण समुद्र का पानी

अदुत्तरचण गोयमा ! लोगठिति लोगाणुभावे जबं लवणेसमुद्दे जबूद्दीव २ नो उवीलेति नो उपीलइ नो चेवण एकोदग करेति ॥ ४५ ॥ इति मदरोद्देसो समत्तो ॥ लवणेण समुद्दे धायइसडे नामदीवे वट्टे वलयागार सठाण सठिए सव्वओ समता सपरिक्खित्ताण चिठति ॥ १ ॥ धायतिसडेण भते ! किं समचक्कवाल सट्ठिते विसमचक्कवाल सठिए ? गोयमा ! समचक्कवाल सठिए नो

अर्थ

नहीं आता है सीता सीतोदा महा नदियों में महर्द्धिक देवियों रहती हैं, इन के प्रभाव से पानी नहीं आता है देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के युगलिये मनुष्य भद्रिक प्रकृतिवाले यावत् विनीत प्रकृतिवाले हैं, इन के प्रभाव से पानी यहां नहीं आता है मेरु पर्वतपर महर्द्धिकदेव रहते हैं उनके प्रभाव से पानी नहीं आता है, जम्बू सुदर्शन वृक्षपर जम्बूद्वीप का अधिपति अनाधृत नामक देव रहता है इसके प्रभाव से लवण समुद्र का पानी जम्बूद्वीप में नहीं आता है, लवण समुद्र जम्बूद्वीप को पीडा नहीं करता है व जलमय नहीं बनाता है अथवा अहो गौतम ! एसी लोकस्थिति लोकानुभाव है कि जिस से लवण समुद्र जम्बूद्वीप में पानी की रेल नहीं लाता है, उस को पीडा नहीं करता है और जलमय नहीं बनाता है यह लवण समुद्र का अधिकार संपूर्ण हुआ ॥ ४५ ॥ यह तीसरी प्रतिपत्ति में मदर नामक उद्देशा संपूर्ण हुआ लवण समुद्र की चारों ओर धातकी खण्ड नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थानवाला रहा हुआ है ॥ १ ॥ अहो भगवन् !

ओघणसते तिण्णिय कोसे वारस्सय २ आवाहाये अंतरे पण्णत्ते ॥ ६ ॥ धायइ
सण्डस्सणं भंते! दीवस्स पदेसा कालोयणं समुद्दं पुट्ठा ? हंता पुट्ठा ॥ तेणं भंते !
किं धायइसंड दीवे कालोयणे समुद्दे ? गोयमा ! धायइसंडे णो खलु ते कालोयणे
समुद्दे, एवं कालोयणस्सवि ॥ धायइसंडेदीवे जीवा उद्दाइत्ता २ कालोयणे समुद्दे
पच्चायंति ? गोयमा ! अत्थेगइया पच्चायंति अत्थेगइया नो पच्चायंति, एवं कालो-
यणेवि, अत्थेगतिया पच्चायंति अत्थेगतिया नो पच्चायंति ॥ ७ ॥ से केणट्ठेणं भंते !

योजन और तीन कोश का अंतर कहा है ॥६॥ अहो भगवन् धातकी खण्ड द्वीप के प्रदेश कालोद समुद्र को क्या स्पर्श कर रहे हैं? हां गौतम! स्पर्श कर रहे हैं अहो भगवन्! वे धातकी खण्ड द्वीप के हैं या कालोद समुद्र के हैं? अहो गौतम! वे धातकीखंड द्वीप के हैं परन्तु कालोद समुद्र के नहीं हैं अर्थात् वह भाग धातकी खण्ड का है परंतु कालोद समुद्र का नहीं है ऐसे ही कालोद समुद्र की पृच्छा करना अहो भगवन्! धातकी खण्ड द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्र में क्या उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं ऐसे ही कालोदधि समुद्र के कितनेक जीव धातकी खण्ड में उत्पन्न होते हैं और कितनेक उत्पन्न नहीं होते हैं ॥७॥ अहो भगवन्! धातकी

एवं वुच्चइ धायइसंडदीवे २ ? गोयमा! धायइसंडेण दीवे तत्थ२ देसे२ तहिं२ बहवे धायइ रुक्खा धायइवणा धायइसंडा णिच्च कुसुमिया जाव उवसोभेमाणा २ चिट्ठति धायइ महाधायइ रुक्खेसु, सुदंसणे पियदंसणे दुवेदेवा महिड्डिया जाव पलिओवम-ट्ठितीया परिवसंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ, अदुत्तरं च णं गोयमा ! जाव णिच्चा ॥८॥ धायइसंडेणं भंते! दीवे केवति चंदा पभासिंसुवा? कति सूरिया तवइंसुवा२, कइ महग्गहा चार चरिंसुवा२, कइ णक्खत्ता जोगं जोयंसुवा२, कइ तारागण कोडाकोडीओ

खण्डद्वीप ऐसा क्यों नाम दिया गया ? अहो गौतम ! धातकी खण्डद्वीप में स्थान २ पर बहुत धातकी वृक्ष, धातकी वन, धातकी वनखण्ड सदैव कुसुमित यावत् रहते हैं धातकी खण्ड के पूर्वार्ध में उत्तर कुरुक्षेत्र में धातकी वृक्ष है और पश्चिमार्ध उत्तर कुरुक्षेत्र में महा धातकी वृक्ष है यह जम्बू वृक्ष जैसे हैं यावत् शाश्वत हैं वहां सुदर्शन व प्रियदर्शन नामक दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले देव रहते हैं अहो गौतम ! इस से इस का नाम धातकी खण्डद्वीप कहा है और भी अहो गौतम! इसका नाम शाश्वत है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! धातकी खण्ड द्वीप में कितने चन्द्रने प्रकाश किया, प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे ? कितने सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, कितने महाग्रह चार चरे, चरते हैं व चरेंगे, कितने नक्षत्रने

सोभसोभिंसुवा ३ ? गोयमा ! बारस चदा पभासिंसुवा, एव चउवीस, ससिरविणो णक्खत्त सताय तिण्णि छत्तीसा, एगच सहस्स छप्पण धायइ सड अट्ठेव सय-सहस्सा तिण्णि सहस्साइ सत्तयसयाइ धायइसंडदीवे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३ ॥ ९ ॥ धायइसंडेण दीव कालोदे नाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाण संठिते सव्वओ समता संपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ कालोदेण भते! समुद्दे किं समचक्कवाल सठाण संठिते विसमचक्कवाल सठाण संठिते? गोयमा! समचक्कवाल सठाण संठिते णो विसम चक्कवाल सठाण संठिते ॥ कालोदेण भते! समुद्दे केवतिय

योग किया, करते हैं व करेंगे, कितने कोडाकोड तारा शोभे, शोभते हैं व शोभेंगे? अहो गौतम ! बारह चंद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे बारह सूर्य तपे, तपते हैं व तपेंगे, यों सब मीलकर चंद्र सूर्य २४ हुए तीनसो छत्तीस नक्षत्र एक हजार छप्पन ग्रह, आठ लाख तीन हजार सातसो कोडा कोड तारा शोभित हुवे, शोभते हैं व शोभित होंगे ॥ ९ ॥ धातकी खण्डद्वीप की चारों ओर कालोद समुद्र वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला रहा हुवा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र क्या समचक्रवाल संस्थान वाला है या विषम चक्रवाल संस्थान वाला है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र समचक्रवाल संस्थान वाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है, अहो भगवन् ? कालोद

चक्कवाल विक्खंभेणं केवतिय परिक्खेवेण पन्नत्ते? गोयमा! अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं एक्कणउतिं जोयणसय सहस्साइं सत्तरिंसहस्साइं छच्चपंचुत्तरे जोयणसये किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते, सेणं एगाए पउमवरवेदियाए एगेणं वणसंडेणय दोण्हवि वण्णओ ॥ १० ॥ कालोयणस्सणं भंते ! समुद्दस्स कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि दारा पण्णत्ता तंजहा विजए विजयंते जयंते अपराजिए ॥ कहिणं भंते ! कालोदस्स समुद्दस्स विजय णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदसमुद्दस्स पुरच्छिमपेरंत पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्धस्स पच्चत्थिमेणं सीतोदाए महानदीए उप्पिं एत्थणं

अर्थ

समुद्र की कितनी चक्रवाल चौडाइ व चक्रवाल परिधि कही ? अहो गौतम ! उस की आठ लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ कही और एकानवे लाख, सत्तरह हजार, छसो पचत्तर योजन से कुछ अधिक परिधि कही है, [सब आभ्यंतरद्वीप समुद्रकी मीलकर परिधि जानना] इसकी चारों ओर वनखण्ड व एक पद्मवर वेदिका है दोनों वर्णन योग्य है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के चार द्वार हैं जिन के नाम विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का विजयद्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पूर्व पुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध से पश्चिम में सीतोदा महानदी ऊपर कालोद समुद्र का विजयद्वार कहा है यह आठ योजन का ऊंचा,

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव प्पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोयस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा पेरंते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंत नामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोदस्स समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है शेष सब पैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

दाहिणओ एत्थण कालोयस्स समुद्दस्स अपराजिए नामंदारे पण्णत्ते सेसं तंचेव ॥ कालो-दस्सण भंते ! समुद्दस्स दारस्सय२ एसण केवतिय अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! बावीस सय सहस्सा बाणउतिं खलुभवे सहस्साइं छंच्चसया छयाला दारतर तिण्णि कोसाये दारस्सय२ अबाहा अंतरे पण्णत्ते॥कालोदस्सण भंते ! समुद्दस्स पदेसा पुक्खर वरदीव तहेव,एव पुक्खरवरदीवस्सवि जीवा उद्दाइत्ता तहेव भाणियव्वा॥११॥सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ कालोयणसमुद्दे ? कालोयणसमुद्द गोयमा ! कालोयणस्सण समुद्दस्स उदके आसल मासले पेसले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते ॥ काल

अर्थ

द्वार का परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! बावीस लाख बानवे हजार छ सो छियालीस (२२९२६४६) योजन तीन कोस का प्रत्येक द्वार पर अंतर कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रदेश पुष्करवर द्वीप के प्रदेशको स्पर्शकर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्ववत् जानना यावत् पुष्करवर द्वीप के जीव मरकर कालोद समुद्रमें कितनेक उत्पन्न होते हैं यों सब कहना ॥११॥ अहो भगवन् ! कालोद ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र का पानी आस्वादनीय है, पुष्ट, वजनदार, मनोहर है इस का वर्ण काला है, शब्द के वर्ण जैसा है—स्वाभाविक पानी के रस समान है इस में काल व महा

कालोदस्स समुद्दस्स विजयएणामदारे पण्णत्ते, अट्ठ जोयण तचेव पमाण जावरायहाणीओ कहिण भंते ! कालोयस्स समुद्दस्स विजयंत णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोय समुद्दस्स दक्खिणा परंते पुक्खरवरदीव दक्खिणद्धस्स उत्तरे एत्थण कालोय समुद्दस्स विजयंत णामदारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! कालोय समुद्दस्स जयंते नमदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयसमुद्दस्स पच्चत्थिमा पेरंते पुक्खरवरदीव पच्चत्थिमद्धस्स पुरत्थिमेण सीताए महाणदीए उप्पिं जयंते नाम दारे पण्णत्ते ॥ कहिण भंते ! अपराजिए णाम दारे पण्णत्ते ? गोयमा ! कालोयस्स समुद्दस्स उत्तरद्धा पेरंते पुक्खरवरदीवोत्तरद्धस्स

वगैरह जम्बूद्वीप के विजयद्वार जैसे प्रमाण वगैरह जानना यावत् राजधानी पर्यंत कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का वैजयंत नामक द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से दक्षिण दिशा के अंत में पुष्करवर द्वीप के दक्षिणार्ध से उत्तर में कालोद समुद्र का वैजयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का जयंत द्वार कहां है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र के पश्चिम के अंत में पुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध से पूर्व सीता महा नदी पर जयंत द्वार कहा है अहो भगवन् ! अपराजित द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! कालोद समुद्र से उत्तर के अंत में पुष्करवर द्वीप के उत्तरार्ध से दक्षिण में अपराजित द्वार कहा है वगैरह सब पैसे ही कहना अहो भगवन् ! कालोद समुद्र के प्रत्येक

सूत्र

वाल सठाण सठिते॥ पुक्खरवरेण भते ! दीवे केवइय चक्कवाल विक्खभेण, केवइय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसजोयण सयसहस्साइ चक्कवाल विक्खभेण एगा जोयण कोडी वाणउतिं खलु सयसहस्सा अउणाणउतिं भवसहस्साइ अट्ठसया चउणउयाय परिरओ पुक्खरवरस्स,सण पउमवर वेदियाए एक्केणय वणसडेण दोण्हवि वण्णओ, ॥१५॥ पुक्खरवरस्सण भते ! कतिदारा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारिदारा पण्णत्ता तजहा—विजये वेजयते जयते अपराजिते ॥ कहिण भते ! पुक्खरवरस्स दीवस्स विजये णामदारे पण्णत्ते ? गोयमा ! पुक्खरवर दीव पुरच्छिमापेरते पुक्खरोद समुद्द पुरच्छिमद्धस्स पचच्छिमेण एत्थण पुक्खरवर दीवस्स विजयेणाम

अर्थ

सोलह लाख योजन चक्रवाल चौडाइवाला है एक क्रोड बाणवे लाख, नेवासी हजार, आठ सो चोराणवे योजन की परिधि है यह पुष्करवर द्वीप एक पद्मवर वेदिका व एक वनखण्ड से चारों ओर लपेटाया हुवा है इन का वर्णन पूर्ववत् जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप के कितने द्वार कहे हैं ? अहो गौतम ! चार द्वार कहे हैं तद्यथा—विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप का विजय द्वार कहां कहा है ? अहो गौतम ! पुष्करवर द्वीप से पूर्व के अंत में पुष्करोद समुद्र के पूर्वार्ध से पश्चिम में पुष्कर द्वीप का विजय द्वार कहा है यों चारों द्वार का

महाकालायएत्थे दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति, से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्चे ॥ १३ ॥ कालोयणेण भते ! समुद्दे कति चदा पभासिंसुवा ३, पुच्छा ? गोयमा ! कालोयणेण समुद्दे बायालीस चदा पभासिंसुवा ३, बायालीसच दिणयरादिता, कालोदधिम्मि एते चरति सबध लेसगा णक्खत्ता सहस्स एगमग छावत्तर चसयमुणेयव्व छच्चसता छण्णउया महग्गहा तिण्णिय सहस्सा अठावीस कालोदहिमि बाराइसतसहस्साइ नवसय पण्णास तारागण कोडीकोडी सोभेंसुवा ३, ॥ १४ ॥ कालोयण समुद्द पुक्खरवरेणाम दीवे वट्टेवलियागार सठाण सठिते सव्वतो समता सपारिक्खित्ता तचेव जाव समचक्कवाल सठाण सठ्ठिते णोविसम चक्क-

काल ऐसे दो महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थितिवाले देव रहते हैं इस लिये कालोद नाम कहा है यावत् नित्य है ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! कालोद समुद्र में कितने चद्रने प्रकाश किया प्रकाश करते हैं व प्रकाश करेंगे वगैरह सब पृच्छा करना अहो गौतम ! कालोद समुद्र में ४२ चंद्र, ४२ सूर्य, ११७६ नक्षत्र, ३६९६ ग्रह व २८१२९५० क्रोडाक्रोड तारागण हैं ॥१४॥ कालोद समुद्रकी चारों ओर पुष्करवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है यावत् वह समचक्रवाल है परतु विषम चक्रवाल नहीं है । अहो भगवन् ! पुष्करवर द्वीप कितना चक्रवाल चौडाइ में है, कितना चक्रवाल परिधि में है ? अहो गौतम !

परिवसति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चति पुक्खरवरदीवे २ जाव णिच्चे ॥१८॥ पुक्खरवरेण भते! दीवे केवइया चदा पभासिंसुवा, एव पुच्छा? गोयमा! चोयाल चदसय चउयालचेव सूरियाणसय पुक्खरवरमिदीवे चरति, एते पभासेत्ता, चत्तारि सहस्साइ बत्तीसचेवहोंति णक्खत्ता, छच्चसया बावत्तरमहग्गहा, बारस सहस्सा छण्णउइ सय सहस्सा चत्तालीस भवे सहस्साइ चत्तारिसया पुक्खरवरे तारागण कोडाकोडीण सोभसुवा ३, ॥ १९ ॥ पुक्खरवरदीवस्सण बहुमज्झदेसभाए, एत्थण माणुसुत्तारे नाम पव्वते पण्णत्ते, वट्टे वलयागार सठाण सठिते जेणेव पुक्खरवरदीव दुहा विभयमाणे २ चिट्ठति अब्भितर पुक्खरवरद्धच बाहिर पुक्खरवरद्धच,॥अब्भितर

अर्थ

लिये पुष्कर वरद्वीप कहा गया अथवा इस का नाम शाश्वत है ॥ १८ ॥ पुष्करवरद्वीप में कितने चद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा? अहो गौतम, १४४ चद्र, १४४ सूर्य ४०३२ नक्षत्र, १२६७२ महाग्रह और ९६४४४०० क्रोडा क्रोड तारा यहां सोभते हैं यह पुष्करवरद्वीपका कथन हुवा ॥१९॥ पुष्करवर द्वीप के मध्य भाग में मानुषोत्तर पर्वत वर्तुल वलयाकार सस्थान वाला पुष्कर वरद्वीप के दो भाग करके रहा हुवा है जिन के नाम आभ्यतर पुष्करवरार्ध और बाह्य पुष्करवरार्ध अहो भगवन्! आभ्यतर पुष्करार्ध कितने चक्रवाल चौडाइ में है और कितनी परिधि है? अहो गौतम! आठ हजार योजन चक्रव ल

दारे पण्णत्ते ? तचेव सव्वं, एव चत्तारिविदारा सीया सीयोदा णत्थि भाणियव्वाओ॥ पुक्खरवरस्सण भंते! दीवस्स दारस्सय २ एसण केवतिय अवाहाए अंतरे पण्णत्ते? गोयमा! अडयाल सय सहस्सा बावीस खलु भवे सहस्साइ अगुणुत्तराय चउरो दारंतर॥१६॥ पुक्खरवरस्स पदेसा दोण्हवि पुट्ठा जीवा दोसुवि भाणियव्वा ॥ २७ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ पुक्खरवरदीवे ? गोयमा ! पुक्खरवरेण दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे पउमरुक्खा पउमवणसंडा णिच्च कुसुमिता जाव चिट्ठति, पउम महा पउमरुक्खेसु तत्थ पउम पोंडरियाणामं दुवे देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितिया

वर्णन कहना यहां सीता सीतोदा नदी कहना नहीं पुष्करवर-द्वीप के प्रत्येक द्वार का कितना२ अंतर कहा है? अहो गौतम ! ४८२२४६९ योजन जितना प्रत्येक द्वार का अंतर कहा है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वरद्वीप व पुष्कर वर समुद्र दोनों स्पर्श कर रहे हैं क्या ? वगैरह सब पूर्वोक्त प्रकार कहना दोनों जीवों मरकर दोनों में परस्पर उत्पन्न होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! पुष्कर वर ऐसा नाम क्यों कहा गया ? अहो गौतम ! पुष्कर वरद्वीप में बहुत पद्म वृक्ष व पद्म वनखण्ड कुसुमित यावत् रहते हैं पद्म व पद्मपद्म वृक्षपर पद्म व पुंडरीक नाम के महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं इस

तिण्णिसया छत्तीसा, छच्च सहस्सा महग्गहाणंतु भवे, सोलाइ दुवेसहस्साइ, अडयाल सयसहस्सा ॥२॥ बावीस खलु भवे सहस्साइ दोविसया पुक्खरद्धे, तारागण कोडीकोडीण ॥ ३ ॥ सोभसुवा ३ ॥ २१ ॥ समयक्खेत्तेण भंते ! केवतिय आयाम विक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! पणयालीस जोयण सत सहस्साइ आयाम विक्खंभेण, एगा जोयण कोडी जाव अब्भितर पुक्खरद्ध परिरया से भाणियव्वा जाव अउप्पण्ण ॥ २२ ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चति मणुस्सखेत्ते ? गोयमा ! माणुसखेत्तेण तिविहा मणुस्सा परिवसंति तंजहा—कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतर दीवगा, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति माणुसखेत्ते २ ॥ अदुत्तरंचण

अर्थ पुष्करवर द्वीप में ७२ चन्द्र ७२ सूर्य, छ हजार तीन सो छत्तीस महा ग्रह, दो हजार सोलह नक्षत्र, अडतालीस लाख बावीस हजार दो सो क्रोडाक्रोड तारा हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! समय क्षेत्र कितना लम्बा चौडा व परिधि वाला है ? अहो गौतम ! समय क्षेत्र ४५ लाख योजन का लम्बा चौडा है और [illegible] पुष्करार्ध जितनी परिधिवाला है अर्थात् १४२३०२४९ योजन की परिधि है ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र क्यों कहा है ? अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र में तीन प्रकार के मनुष्य रहते हैं तद्यथा-कर्म भूमक, अकर्म भूमक व अंतर द्वीपक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा [illegible]

पुक्खरवरद्धेण भंते ! केवतियं चक्कवालेण विक्खंभेण केवतियं परिक्खेवेण पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठजोयण सय सहस्साति चक्कवाल-विक्खंभेण, कोडीसय छीला तीस दोण्हिंसिया ३ गुणपण्णा पुक्खरमद्ध गारा । मय से मणुस्सा खत्तस्स परिरयओ॥ स केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चति अब्भिंतर पुक्ख॰ पोढिमंतर पुक्खरद्धे गोयमा! अब्भिंतर पुक्खरद्धेण माणुसुत्तरेण पव्वएण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते से तेणट्ठेण गोयमा ! अब्भिंतर पुक्खरद्धे, अदुत्तर चण जाव णिच्चे ॥ २० ॥ अब्भिंतर पुक्खरद्धेण भंते! केवतिया चंदा पभासिंसु वा ३, एवं पुच्छा जाव तारागण कोडा कोडीओ? गोयमा ! बावत्तरिं चंदा बावत्तरिमेव दिणयरा दित्ता पुक्खरवरदीवड्ढे चरंति एए पभासेंता॥ १॥

योजन में है और एक क्रोड बयालीस लाख तीस हजार दो सो गुणपचास योजन की आभ्यंतर पुष्करार्ध की परिधि जानना इतनी ही मनुष्य क्षेत्र की परिधि जानना अहो भगवन् ! आभ्यंतर पुष्करार्ध ऐसा क्यों कहा ? अहो गौतम ! आभ्यंतर पुष्करवर द्वीप के चारों ओर मानुषोत्तर पर्वत रहा हुवा है इसलिये आभ्यंतर पुष्कर द्वीप कहा यावत् नित्य है ॥ २० ॥ अहो भग-वन् ! आभ्यंतर पुष्कर द्वीप में कितने चंद्र ने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ! अहो गौतम ! आभ्यंतर

सूत्र

तारगग ज भणिय मणुस्साम्मि लोगम्मि॥चार कलबुया पुप्फ, सठिय जोइस चरति॥५॥
रविससि गहनक्खत्ता, एवइया आहिया मणुयलोए ॥ जेसिं नामागोत्त नपागया
पणवेहिं॥६॥छावट्ठिं पिडयाइ, चदाइच्चाण मणुयलोगम्मि ॥ दो चदा दोसूरा हवति
एक्कक्एपिडए ॥७॥ छावट्ठिं २ पिडगाइ, नक्खत्ताण मणुयलोगमि छप्पन्न नक्खत्ताय,
हुति इक्किक्कए पिडए ॥ ८ ॥ छावट्ठिं पिडगाइ महग्गहाणतु मणुयलोयमि, छावत्तर
ग्गहसय होइउ एक्कक्कए पिडए ॥ ९ ॥ चत्तारिय पतीओ चदाइच्चाय मणुयलोगामि,
छावट्ठीय२ होइ एक्केक्कियापती ॥ १० ॥ छप्पण पतीतो, णक्खत्ताणतु मणुयलोगमि॥

अर्थ

इतना तारा समुह कहा ॥ ४ ॥ मनुष्य लोक में जो ज्योतिषी देव के विमान हैं वे सब कदम्ब पुष्प के सस्थ न वाले नीचे सकुचित व ऊपर विस्तारवत आधा कविठ जैसे आकारवाले हैं ॥ ५ ॥ सूर्य, चद्रमा ग्रह नक्षत्र व ताराओं जो मनुष्य लोकमें कहे इनका नाम व गोत्र प्रगटपने नहीं कह सकते हैं ॥६॥ इस मनुष्य लोक में चद्र व सूर्य के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में दो चद्र दो सूर्य हैं ॥ ७ ॥ इस मनुष्य लोक में नक्षत्र के ६६ पिटक कहे हैं एक २ पिटक में छप्पन २ नक्षत्र हैं ॥ ८ ॥ मनुष्य लोक में महा ग्रह के ६६ पिटक हैं और एक २ पिटक में १७६ महा ग्रह हैं ॥ ९ ॥ चद्र व सूर्य की मिलकर चार पक्ति हैं एक २ पक्ति में ६६-६६ चद्र व सूर्य हैं ॥ १० ॥ मनुष्य लोक में नक्षत्र की ५६ पक्ति

गोयमा ! समयक्खित्ते सासये जाव निच्चे ॥ २३ ॥ मणुस्स खेत्तेण भंते! कइचंदा पभासेंसुवा १, कइसूरा तवइंसुवा २, गोयमा ! बत्तीस चंदसय बत्तीस चेव सुरियाणसय सयल मणुस्सलोय चरंति एए पभासेंता ॥ १ ॥ एक्कारस सहस्सा, छप्पिय सोला महग्गहाणतु ॥ छच्चसया छण्णउया, णक्खत्ता तिण्णिय सहस्सा ॥२॥ अट्ठासीइ सत सहस्सा, चत्तालीस सहस्समणुयलोगम्मि, सत्तयसता अणुणा, तारागण कोडी कोडीण ॥ ३ ॥ सोमसवा २ एसो तारापिंडो सव्वे समासेण मणुयलोगम्मि, बहिया पुणताराओ जिणेहिं भणिया असंखेज्जा ॥ ४ ॥ एवइय

मनुष्य क्षेत्र है अथवा अहो गौतम ! मनुष्य क्षेत्र शाश्वत यावत् नित्य है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में कितने चद्रने प्रकाश किया वगैरह पृच्छा ? अहो गौतम ! सब मनुष्य लोक में १३२ चंद्र व १३२ सूर्य हैं [२ जम्बूद्वीप, ४ लवण, समुद्र, १२ धातकी खण्ड, ४२ कालोद समुद्र व ७२ पुष्करार्ध द्वीपके यों सब मीलकर १३२ होते हैं] इग्यारह हजार छसो सोल महाग्रह, तीन हजार छसो छन्नु नक्षत्र, अठयासी लाख चालीस हजार सातसो क्रोडा क्रोड तारागण हैं यह ज्योतिषी [illegible] मनुष्य लोक में संक्षेप से जानना और बाहिर असंख्यात तारागण श्री तीर्थंकर भगवानने कहे हैं

भणुस्साणं ॥१६॥ तेसिं पविसताण, तावक्खेत्त तु वड्ढतेणियमा ॥ तेणेव कम्मेण पुणो, परिहायति निक्खमताणं ॥ १७ ॥ तेसिं कलंबुया पुप्फसंठिता, होंति तावक्खेत्त- पहा, अतोसंकोडा बाहिं वित्थडा चद सूराण ॥ ८ ॥ केण वड्ढति चदो, परिहाणी केणहोति चदस्स॥कालोवा जाण्हावा, केणणुभावेण चदस्स ॥ १९ ॥ किण्ह राहुवि- माण, निच्च चदेण होइ अविरहिय ॥ चउरगुलमप्पत्त, हेट्ठा चदस्स त चरति ॥२०॥ बावट्ठिं२ दिवस,दिवसेतु सुक्कपक्खस्स॥जवड्ढइ चदो, खवति तचेव कालेण ॥२१॥

अर्थ

दुःख के फल की प्राप्त होती है ॥ १६ ॥ चद्र सूर्यादिक बाह्य मडल से ज्यों ज्यों आभ्यतर मडल में प्रवेश करते हैं त्यों त्यों तापक्षेत्र बढता है, और दिन मान भी बढता है, और वेही चद्र सूर्य आभ्यतर मडल से नीकलते हैं त्यों त्यों ताप क्षेत्र कम होता है और रात्रिमान बढता है ॥ १७ ॥ सूर्यादिकका तापक्षेत्र कदबवृक्ष के पुष्पके आकारका है अर्थात् गाडीक आकारवाला अन्दर मेरु पर्वत पास सकुचित और बाहिर लवण समुद्रकी पास विस्तारवाला है ॥१८॥ अहो भगवन्! किस कारनसे शुक्लपक्ष में चद्रमा वृद्धि होता है, व किस कारन से कृष्ण पक्ष में चद्रमा हीन होता है, और किस कारन से एक पक्ष कृष्ण व एक पक्ष शुक्ल कहा है? ॥१९॥ अहो गौतम! कृष्ण, अजन रत्नमय राहुका विमान चद्र विमान नीचे चार अगुल की दूरी पर चद्रमा साथ विरह रहित चलता है ॥ २० ॥ चद्र विमान के ६२ भाग करे वैसे

छावट्ठं छावट्ठीयं होइ एक्केकिया पंती ॥११॥ छावत्तर गहाण पंतिसयं होइ मणुयलोगंमि ॥ छावट्ठी छावट्ठी होइ एक्केकिया पंती ॥ १२॥ तेमेरु मणुपरियट्टांति, पयाहिणावत्त मंडलासव्वे, अणवट्ठिजेहिं तेहिं, जोगेहिं चंदसूरा गहगणाय ॥ १३ ॥ णक्खत्त तारागाण, अवट्ठिता मंडलमुणेयव्वा, तेवियपयाहिणावत्त मेवमेरु अणुचरांति ॥ १४॥ रयणियर दिणयराण उड्ढेय अहेय संकमोनात्थि॥मंडल संकमण पुण अब्भतर बाहिर तिरिय ॥१५॥ रयणियरदिणयराण णक्खत्ताण महग्गहाणय चार विसेसेण भवेसुह दुक्खचेव

है.प्रत्येक पंक्ति में ६६-६६ नक्षत्र हैं ॥११॥ मनुष्य लोक में ग्रह की १७६ पंक्ति है प्रत्येक पंक्ति में ६६-६६ ग्रह हैं ॥१२॥ उपरोक्त सब मंडल मेरु पर्वत के चारों ओर प्रदक्षिणा करते हैं अर्थात् क्रम से स्वभाव से ही गति करते हैं यहां चंद्र सूर्य ग्रह अनवस्थित हैं क्यों की यथायोग्य से अन्य मंडल में गमन करते हैं ॥१३॥ और नक्षत्र व तारामंडल अवस्थित हैं अर्थात उन मंडल में परिभ्रमण नहीं करते हैं पर भी मेरु की आसपास प्रदक्षिणा करते हैं ॥१४॥ चंद्र व सूर्य के ऊपर अथवा नीचे संक्रमण गति नहीं है परंतु अपने मंडल में ही गति है अर्थात् आभ्यतर व बाहिर के मंडल में तीरच्छा गमन है ॥१५॥ चंद्र, सूर्य ग्रह व नक्षत्र से चारों की राशि होती है तब यहां मनुष्य लोक में मुख

दीव, चत्तारिय सायरे लवणतोये ॥ धायइ सडे दीवे, बारस चदायँ सूराय ॥ २७ ॥ धायइसडप्पभिई, उद्दिठातिगुणिता भवे चदा॥ आदिल्ल चदसहिता, अणतराणतरे- खचे ॥ २८ ॥ रिक्खग्गह तारग्ग, दीवसमुद्दजदिच्छसेणाऊ ॥ तस्स ससीहिंतुगुणित रिक्खग्गह तारगागतु ॥२८॥ बहिरियाओ माणुसनगस्स,चदसूरावट्टिता ॥ जोगा चदा अभितीजुत्ता॥सुरापुण होंति पूसेहिं।२०। चदातो सूरस्सय,सूरा चदस्स अतर होंति॥पण्णास

अर्थ

चार चद्र,चार सूर्य होते हैं और इम से तीनगुने धातकी खण्डमें बारह चंद्र बारह सूर्य हैं॥२६॥ धातकी खण्ड के आग क द्वीप समुद्र के चद्र सूर्य को तीनगुना करके पहिले के द्वीप समुद्र के चद्र, सूर्य मीलाना जितना आवे उतनी आगेकी सख्या जानना दृष्टान्त—धातकी खण्ड द्वीप में बारह चद्र व बारह सूर्य हैं इन के तीनगुने करने से ३६ होते हैं उस में प्रथम जम्बूद्वीप क दो व लवण समुद्र के चार यों ६ चद्र सूर्य मीलानेसे सब ४२ चद्र व ४२ सूर्य होते हैं इसी तरह आगे भी जानना ॥ २७ ॥ जिस द्वीप समुद्र में नक्षत्र ग्रह व तारा जानन की इच्छा होवे उस द्वीप समुद्र के चद्र सूर्य की साथ उन के परिवार स गुना करना जैसे लवण समुद्र में चार चद्र हैं प्रत्येक चद्र के २८ नक्षत्र हैं इस से २८×४=११२ लवण समुद्र में नक्षत्र हुवे ॥२८॥ अब मनुष्य क्षेत्र बाहिर चद्र सूर्य का अतर कहते हैं, मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर चद्रमा व सूर्य अवस्थित हैं

पण्णरसतिभागेणय, चदपण्णरसमेव आवरति ॥ पण्णरसविभागेणय, तेणेव कमेण वक्कमाति ॥ २२ ॥ एव वड्ढति चदा,परिहाणि एव होति चदस्स॥ कालोवा जोण्होवा, तणुभावेण चदस्स ॥ २३ ॥ अतो मणुस्स खेत्ते, हवति चारोवगाय उववण्णा, पचविहा जोतिसिया चदासूरागह णक्खता॥ २४ ॥ तेणपर जे सेसा, चदाइच्चगहतार णक्खत्ता ॥ णत्थिगतीण विचारो, अवाट्ठिता तेमुणेयव्वा ॥ २५ ॥ एगे जवुद्दीवे, दुगुणा लवणे चउगुणा होति॥लवणग्गायतिगुणिया ससिसूरा धायई सडे॥२६॥दो चदा इह

चार २ भाग शुक्ल पक्ष में खुल्ला करता है और ऐसा ही चार भाग कृष्ण पक्ष में राहु अच्छादित करता है अमावास्या के दिन दो भाग खुल्ले रहते हैं ॥ २१ ॥ चद्र विमान के पनरह भाग करे उस में से एक २ भाग प्रतिदिन कृष्ण पक्ष में ढके यों अमावास्या तक सब भाग ढक जावे और शुक्ल पक्ष में एक २ भाग खुल्लाकर दत्र यों पूर्णिमा में सब मुक्त हो जावे ॥२२॥ इसे तरह शुक्ल पक्षमें चद्रमा बढता है व कृष्ण पक्ष में हीन होता है और कृष्ण पक्ष व शुक्ल पक्ष इसी तरह होते हैं ॥ २३ ॥ मनुष्य क्षेत्र में चद्र, सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा ये पांच प्रकार के ज्योतिषी चलनेवाले हैं ॥ २४ ॥ इस से आगे के द्वीप में चद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा अवस्थित हैं इन की गति नहीं है ॥ २५ ॥ अब द्वीप समुद्र गत चद्र सूर्यादिक की संकलना जानने का कारन कहते हैं जम्बूद्वीप में दो चद्र दो सूर्य, इस से दुगुने लवण समुद्र में होने से

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते गोयमा ! माणुसुत्तरस्सण पव्वयस्स अंतो मणुया उप्पिं सुवण्णा वाहिं देवा, अदुत्तरंचण गोयमा! माणुसुत्तर पव्वय मणुया ण कयाइ वितिवइंसुवा वीतिवयंतिवा वीतिवयस्संतिवा, णण्णत्थ चारणेहिंवा विज्जाहरेहिंवा देव कम्मुणावावि, से तेणट्ठेण गोयमा ! अदुत्तर जाव णिच्च ॥ २६ ॥ जावंचण माणुसुत्तरेपव्वए तावंचण अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावंचण वासेतिवा वासधरातिवा तावंचण अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावंचण गेहाइवा गेहावणातिवा तावंचण अस्सिं लोगेति पवुच्चइ, जावंचण गामाइवा जाव रायहाणीइवा तावंचण अस्सिं लोएति पवुच्चइ, जावंचण

अर्थ

है वे दोनों वर्णन योग्य हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! मानुषोत्तर पर्वत ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मानुषोत्तर पर्वत से अंदर मनुष्य हैं, ऊपर सुवर्ण कुमार देव व बाहिर देव हैं और मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर मनुष्य अपनी शक्ति से गये नहीं हैं, जा सकते नहीं हैं, और जायेंगे भी नहीं, मात्र जंघा चारण, विद्या चारण अथवा देव के हरनकरने से मनुष्य बाहिर जाते हैं अथवा यह नित्य है इसलिये मानुषोत्तर पर्वत नाम कहा है ॥ २६ ॥ जहांलग मानुषोत्तर पर्वत है वहांलग यह मनुष्य लोक है, जहांलग भरतादि क्षेत्र व महाहिमवंतादि वर्षधर पर्वत हैं वहांलग यह मनुष्य क्षेत्र है, जहांलग घर दुकान

बाहिर परिरयेण, एगा जोयण कोडी बयालीसच सतसहस्साइ छत्तीस सहस्साइ सत चोदसोलतर जोयण सते परिक्खेवेण, मज्झे गिरि परिरयेण, एगाजोयण कोडी बयालीस च सयसहस्साइ चोत्तीसच सहस्सा अट्ठय तेविसा जोयणसते परिक्खेवेण उवरिं गिरिपरिरयेण, एगा जोयण कोडी बयालीसच सयसहस्साइ बत्तीसच सहस्साइ णवय बत्तीसे जोयण सते परिक्खवेण, मूलविच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं तणुये, अतो सण्हे मज्झे उदग्गे बाहिं दरिसणिज्जे इसिंमण्णे सीहणिस्साइ अवध जाव रासिं सठाण साठए सव्व जम्बूणयामते अच्छे सण्हे जाव पडिरूवे ॥ उभयो पासिं दोहिं पउमवरवेदियाहिं दोहिं वणसंडेहिं, सव्वतो समता सपरिक्खित्ते, वण्णओ दोण्हवि॥२५॥

नीचे की परिधि १४२३६७१४ योजन की है बाहिर की बीच की परिधि १४२३४८२३ योजन की है और ऊपर की परिधि १४२३२९३२ योजन की है मूल में विस्तीर्ण, मध्य में संक्षिप्त व ऊपर संकुचित है अन्दर श्लक्ष्ण है मध्य में ऊंचा व बाहिर देखने योग्य है जैसे सिंह भाग के दो पांव लम्बाकर व पीछे के दो पांव संकुचितकर बैठता है वैसा है अर्थात् यव जैसा संस्थान वाला है, सब जम्बूनद रत्नमय स्वच्छ, श्लक्ष्ण यावत् प्रतिरूप है दोनों बाजु दो पद्मवर वेदिका व दो वनखण्ड चारों और वर्तुलाकार

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति माणुसुत्तरे पव्वते ? माणुसुत्तरे पव्वते गोयमा ! माणुसुत्तरस्सणं पव्वयस्स अंतो मणुया उप्पिं सुवण्णा बाहिं देवा, अदुत्तरंचणं गोयमा ! माणुसुत्तरं पव्वयं मणुया ण कयाइ वितिवइंसुवा वीतिवयंतिवा वीतिवयस्संतिवा, णण्णत्थ चारणेहिंवा विज्जाहरेहिंवा देव कम्मुणावावि, से तेणट्ठेणं गोयमा ! अदुत्तरं जाव णिच्चे ॥ २६ ॥ जावंचणं माणुसुत्तरेपव्वए तावंचणं अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावंचणं वासेतिवा वासधरातिवा तावंचणं अस्सिं लोएति पवुच्चति, जावंचणं गेहाइवा गेहावणातिवा तावंचणं अस्सिं लोगेति पवुच्चइ, जावंचणं गामाइवा जाव रायहाणीइवा तावंचणं अस्सिं लोएति पवुच्चइ, जावंचणं

अर्थ

है ये दोनों वर्णन योग्य हैं ॥ २५ ॥ अहो भगवन् ! मानुषोत्तर पर्वत ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मानुषोत्तर पर्वत से अंदर मनुष्य हैं, ऊपर सुवर्ण कुमार देव व बाहिर देव हैं और मानुषोत्तर पर्वत से बाहिर मनुष्य अपनी शक्ति से गये नहीं हैं, जा सकते नहीं हैं, और जायेंगे भी नहीं, मात्र जंघा चारण, विद्या चारण अथवा देव के हरनकरने से मनुष्य बाहिर जाते हैं अथवा यह नित्य है इसलिये मानुषोत्तर पर्वत नाम कहा है ॥ २६ ॥ जहांलग मानुषोत्तर पर्वत है वहांलग यह मनुष्य लोक है, जहांलग भरतादि क्षेत्र व महाहिमवतादि वर्षधर पर्वत हैं वहांलग यह मनुष्य क्षेत्र है, जहांलग घर दुकान

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पडिवासुदेवा चारणा विज्जाहरा समणा समणीओ सावगा साविगाओ मणुया पगाति भद्दगाविणीता ताव चाण अस्सिलोएति पवुच्चति जाव चेव समयातिवा आवलयातिवा आणापाणइवा थोवाइवा लवातिवा मुहुत्तातिवा,दिवसाति-वा, अहोरत्तानिवा पक्खातिवा मासातिवा उडूतिवा अयणातिवा संवच्छरातिवा जुगाइवा वासातिवा वाससयातिवा,वाससहस्सातिवा,वाससयसहस्सातिवा,पुव्वंगातिवा,पुव्वाइवा, तुडियगातिवा, एवं पुव्वे तुडिए अडडे अववे हुहुए उप्पले पउमे णलिए अत्थणिउरे अयुते नउए पउए चूलिया जाव सीसपहेलियगातिवा सीसपहेलियातिवा, पलिओवमेतिवा

वगैरह हैं वहांतक मनुष्य क्षेत्र है जहांतक ग्राम यावत् राज्यधानी है वहांतक यह मनुष्य लोक है जहांतक अरिहंत, चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, जंघा चारण, विद्या चारण, विद्याधर साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका व भद्रिक प्रकृति वाले मनुष्य हैं वहां तक यह मनुष्य क्षेत्र है जहांतक समय, आवलिका श्वासोच्छ्वास, स्तोक, लव, मुहूर्त, दिवस, अहोरात्रि, पक्ष मास, ऋतु, अयन, संवत्सर युग, वर्ष, सो वर्ष, सहस्र वर्ष, लाख वर्ष, पूर्वांग, पूर्व, त्रुटितांग, त्रुटित ऐसे ही अटट, अवव, हूहूप, उत्पल पद्म, नलिन, अर्थनिपुर, अयुत, नयुत, प्रयुत, चूलिका यावत् शीर्षप्रहेलिका, पल्योपम, सागरोपम,

मूल

सागरोवमेतिवा अवसप्पिणीतिवा उसप्पिणीतिवा, तावचण अर्सिसलोएति पवुच्चति, जाव चण बादरे विज्जुकारे बायर थणियसद्द ताव चण अर्सिस लोगेतिवुच्चति जाव चण बहवे उराले बलाहका ससेयाति समुच्छति वास वासति ताव चण अर्सिसलोए, जाव चण बायरे तेउकाए ताव चण अर्सिसलोए, जावचण आगरातिवा नदीओतिवा णिधीतिवा ताव चण अर्सिसलोएति पवुच्चति, जाव चण अगडातिवा णदीतिवा ताव चण अर्सिसलोए, जाव चण चदोवरागाइतिवा, सूरोवरागाइतिवा चंदपरिएसातिवा, सूरपरिएसातिवा, पडिचदातिवा, पडिसूरातिवा इद धणूइवाउदगमच्छेइवा कप्पिहसिताणिवा ताव चण अर्सिसलोएति पवुच्चइ; जाव चण चदस सूरिय गहगण णक्खचताराइरूवेण

अर्थ

उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी हैं वहां लग मनुष्य लोक है जहां लग बादर विद्युत व बादर स्थनित शब्द है वहां लग यह लोक कहा है जहां लग बादर मेघ उत्पन्न होवे व प्रलय होवे वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग बादर तेउकाया है वहां लग यह मनुष्य लोक है, जहां लग आगर व निधि हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है, जहां लग अगड नदी वगैरह हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, चंद्र की चारों ओर कुंडल, सूर्य की चारों ओर कुंडल, प्रतिचंद्र, प्रतिसूर्य, इन्द्रधनुष्य, उदक मत्स्य, व कपि हसित हैं वहां लग यह मनुष्य लोक है जहां लग चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा का गमनागमन,

अभिगमण निगमण वुड्डि निवुड्डि अणवट्ठित संठाण संठिती आयेज्जति तावचण अस्सिंलोएति पवुचति ॥ २७ ॥ अतोण भते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाण तेण भते ! देवा किं उड्डोववण्णगा कप्पोववन्नगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्डोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गोतिसमावण्णगा, उड्डमुह कलंबुया पुप्फसंठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

वृद्धि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं वहां लग यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं ? अहो गौतम ! व देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं मीच्छे लोक में अपने स्थानिकों के विमान में उत्पन्न होते हैं, चारोत्पन्न अर्थात् चलनेवाले हैं, स्थिरचारी नहीं हैं, गति में रक्त हैं, गति समापन्न हैं, ऊर्ध्व मुखवाले कदंब-पुष्प के संस्थानवाले हैं अनेक हजार योजन ताप क्षेत्र व बाहिर की

महता महता णट्टगीय वादिय तंति तलताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवादितरवेण महया उक्किट्ठ सीहनायबोलकलयल सद्देण, विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा अच्छ पव्वयराय पव्वइंद पदाहिणावत्त मंडलायरमेरु अणुपरियट्टंति ॥ २८ ॥ जयाण भंते ! तेसिं देवाण इंदे चयति से कहमिदाणी पकरेंति ? गोयमा ! चत्तारि पंचसामाणिया तओट्ठाण उवसंपज्जित्ताण विहरंति, जाव तत्थ अण्णे इंदे उववण्णे भवति ॥ २९ ॥ इंदट्ठाणेणं भंते ! केवतिय कालविरहते उववातेण पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ ३० ॥ बाहिरियाण भंते ! मणुस्स-

अर्थ

विकुर्वित परिषदा सहित बडे २ नृत्य, गीत, वादित्र, तंत्र, ताल, तन्तल, त्रुटित, घन, झुसिर, व पडह के शब्द से बडे२ सिंहनाद जैसा कोलाहल करते हुवे विपुल भोगोपभोग भोगवते हुवे, स्वच्छ निर्मल मेरुपर्वतराज को प्रदक्षिणा करते हुवे मेरुकी पर्यटणा करते रहते हैं॥२८॥ अहो भगवन्! जब उनका इन्द्र चवता है, तब वे इन्द्र बिना कैसे करते हैं? अहो गौतम! जहां लग अन्य इन्द्र उत्पन्न होवे नहीं वहां लग, वहां के चार पांच सामानिक देव इन्द्र का स्थान अंगीकार कर रहते हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्र उत्पन्न होने का स्थान कितना काल तक विरहित रहता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास विरहित रहता है ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र के बाहिर के जो चन्द्र सूर्य

अभिगमण निगमण वुढि निवुढि अणवट्ठित संठाण संठिती आघेवजाति तावचण अर्सिसलोएति पवुचति ॥ २७ ॥ अतोण भते ! मणुस्स खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारा रूवाण तेण भते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा चारोववण्णा चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा, विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा नो चारठीतीया गतिसमावण्णगा, उड्ढमुह कलंबुया पुप्फसंठाण संठितेहिं, जोयण साहस्सितेहिं तावक्खेत्तेहिं साहस्सिताहिं बाहिरियाहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं

वृद्धि, हानि, अनवस्थितपना, संस्थान की संस्थिति वगैरह हैं यहां तक यह मनुष्य क्षेत्र कहा है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्षेत्र में जो चंद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा हैं वे क्या ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं, कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चार स्थितिवाले हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं ? अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व गति के उत्पन्न नहीं हैं, कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु ज्योतिषी लोक में अपने स्थानिक के विमान में उत्पन्न होते हैं, चारोत्पन्न अर्थात् चलनेवाले हैं, स्थिरचारी नहीं हैं, गति में रक्त हैं, गति समापन्न हैं, ऊर्ध्व मुखवाले कदंब पुष्प के संस्थानवाले हैं अनेक हजार योजन ताप क्षेत्र व बाहिर की

अण्णाण समोचगाढाई लेस्साहिं, ते पदेसे सव्वतो समता ओभास उज्जोवेति, तवेति पभासेति ॥ ३१ ॥ जहेण भते ! तेसिणं देवाण इंदे चयाति से कहमिदाणि पकरेति ? गोयमा ! जाव चत्तारि पच सामणिया तठाण उवसपज्जित्ताण विहरति जाव तत्थ अण्णेइदे उववण्णे भवति ॥ इयट्ठाणेण भते ! केवतिय काल विरहिए उववाएण ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा॥३२॥ पुक्खरवरेण दीव पुक्खरोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाणे जाव सपरिक्खित्ताण चिट्ठति ॥ पुक्खरोदेण भते ! समुद्दे केवतिय चक्कवाल विक्खभेण केवतिय परिक्खे-

अर्थ

लेश्या से शिखर जैसे स्थित बने हुवे वे चंद्र सूर्य उन प्रदेशों को प्रकाशित करते हैं, उद्योत करते हैं, तपते हैं, प्रकाश करते हैं व प्रकर्ष से प्रकाश करते हैं ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! जब इन का इन्द्र चवता है तब इन्द्र विना वे क्या करते हैं ? अहो गौतम ! यावत् जहां लग इन्द्र होवे नहीं वहांलग चार पांच सामानिक उस स्थान को अंगीकारकर विचरते हैं अहो भगवन् ! इन्द्र स्थान का कितना विरह कहा है? अहो गौतम! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास का विरह होता है ॥ ३२ ॥ पुष्करवरद्वीप की चारों ओर पुष्करवर्त्त दधि समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है अहो भगवन् ! पुष्करोदधि समुद्र कितना चक्रवाल विष्कंभपने है, व कितनी परिधि है ! अहो गौतम ! संख्यात लाख योजन की चक्रवाल चौडाइ है और

खेत्तस्स जे चंदिम सूरिय गहगण नक्खत्त तारारूवाण तेण भंते ! देवा किं उड्ढोववण्णगा कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा, चारोववण्णगा, चारठितीया गतिरतिया गतिसमावण्णगा? गोयमा! तेण देवा णो उड्ढोववण्णगा णो कप्पोववण्णगा विमाणोववण्णगा,नो चारोववण्णगा चारठितीया,नो गतिरतिया नो गतिसमावण्णगा,पक्किट्ठग संठाण संठितेहिं जोयण सयसाहस्सिएहिं तावक्खेत्तेहिं सय साहस्सीहिय बाहिराहिं वेउव्वियाहिं परिसाहिं-महया २ अहयनट्ट गीय वाइतरवेण दिव्वाइ भोग भोगाइ भुंजमाणा विहरति, जाव सुभलेस्सा, सीयलेस्सा मंदलेस्सा मंदयवलेस्सा चित्ततरलेस्सा कुडाइव ठाणठिता

ग्रह, नक्षत्र तारा रूप ज्योतिषी देव हैं वे ऊर्ध्व गति उत्पन्न हैं,- कल्पोत्पन्न हैं, विमानोत्पन्न हैं, चारोत्पन्न हैं, चारस्थित हैं, गति में रक्त हैं या गति समापन्न हैं क्या? अहो गौतम ! वे देव ऊर्ध्व उत्पन्न व कल्पोत्पन्न नहीं हैं परंतु अपने २ विमान में उत्पन्न होते हैं चलने वाले नहीं हैं परंतु स्थिर हैं, गति में रक्त व गति समापन्न नहीं हैं पकी हुई ईंट के संस्थान वाले हैं अनेक लाख योजन पर्यंत ताप क्षेत्र और लाखों गम बाहिर की विकुर्वित परिषदा सहित बड़े २ नृत्य, गीत वादित्र के शब्द से दीव्य भोगोपभोग भोगवते हुवे विचरते हैं यावत् शुभ लेश्या, शीतलेश्या, मंदलेश्यावंत हैं चित्रांतर लेश्यावंत व परस्पर अवगाहित

॥३१॥ वरुण वर, दीव वरुणोदे णाम समुद्दे वट्टे वलयागार जाव चिट्ठति समचक्कवाल, विसठिति तहेव सव्व भाणियव्व, विक्खभ परिक्खेवो संखेज्जाइं जोयण दारतरंच पउमवर वणसंडे पएसा जीवा• अत्थे• ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति वरुणोदे समुद्दे ? गोयमा ! वरुणदस्सणं समुद्दस्स उदये से जहा नामए चंदप्पभाइवा मणसिलागाइवा वरसिंधु वरवारुणीइवा पत्तासवेइवा पुप्फासवेइवा चोयासवेइवा फलासवेइवा महुमेरएइवा जातिप्पसन्नाइवा खज्जूरसारेइवा मुद्दियासारेइवा कापिसाइणेइवा सुपक्कए खोयरसेइवा पभूतसभारसचिता पोसमास सतभिसय जोग ठविया निरुवहत विसिट्ठ दिण्ण कालोवयारी सुद्धोवा उक्कोसगभट्ठ

अर्थ

द्वीपके चारों ओर वारुणोदधिसमुद्र वर्तुल वलयाकार यावत् रहा हुवा है यह सम चक्रवाल संस्थानवाला है विष्कंभ व परिधि संख्यात योजन की कहना द्वारांतर भी ऐसे ही कहना पद्मवर वेदिका, वनखण्ड, प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह पूर्ववत् जानना अहो भगवन्! वारुणोदधि नाम क्यों कहा है? अहो गौतम! वारुणोदधि का पानी जैसे चन्द्र प्रभा मदिरा, मणसिला का मदिरा, प्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी (मद्य विशेष) पत्रका आसव, पुष्पका आसव, चूया वनस्पतिका आसव, फलका आसव, मधुमेरक, जातवंत रसका मदिरा, खजूर सार द्राक्ष सार, कापिशायन, अच्छी तरह पकाया हुवा सेंदी का रस समान मद्य, बहुत समार से बना हुवा, पोष मास में बनाने के योग मदिरा निरुपहत, बहुत उपचार से बनाइ हुइ सूरा, सुभा मधुर

परिक्खेवेण पण्णत्ते, पउमवरवेइया वणसडवण्णओ दारतेरय पदेसा जीवा तहेव सव्व सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ वारुणवरदीवे २ ? गोयमा ! वारुणवरेणं दीवे तत्थ २ देसे २ तहिं २ बहवे खुड्डा खुड्डियाओ जाव बिलपंतियाओ अच्छाओ पत्तेय २ पउमवरवेइया वणसड परिक्खित्ता वारुणोदग पडिहत्थाओ पासादीयाओ ४, तासुण खुड्डा खुड्डियासु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाय पव्वया जाव खडहडगा सव्वफलिहामया अच्छा तहेव वरुणवरुणप्पभा ॥ एत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिव सति. से तेणट्ठेण जावणिच्च,जोतिस सव्व संखेज्जगुण जाव तारागण कोड कोडीओ,

पद्मवर वेदिका,व वनखण्ड है द्वार के अंतर प्रदेश जीवोत्पत्ति वगैरह सब पूर्ववत् जानना अहो भगवन् ! किसलिये वारुणवर नाम कहा ? अहो गौतम ! वरुणवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी वावडियों यावत् बिल पंक्तियों हैं वे स्वच्छ यावत् प्रतिरूप हैं प्रत्येक को एक २ पद्मवर वेदिका व वनखण्ड वेष्टित है वारुणोदक (मदिरा प्रधान पानी) कर परिपूर्ण प्रासादिक, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं उन छोटी बडी वावडियों यावत् बिल पंक्तियों में बहुत उत्पात पर्वत यावत् खडहडग हैं सब स्फटिक रत्नमय स्वच्छ व प्रभावाले हैं यहां वरुण व वरुणप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं इस लिये इस का वरुणवर नाम कहा है अथवा वह शाश्वत् नित्य है, ज्योतिषी सब संख्यातगुने जानना यावत् कोडाकोड ताराओं कहना ॥ १४ ॥ वारुणवर

वण्णेण उववेता गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! वारुणोदस्सण समुद्दस्स उदए इत्तो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएण पण्णत्ते, वारुणी वारुणिकंता इत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे, सव्व जोतिस संखेज्जकेण णातव्वं ॥ ३५ ॥ वारुणोण्णएण समुद्द खीरवरेणामदीवे वट्टे ज व चिट्ठति, सव्व संखेज्जग विक्खंभे परिक्खेवोय जाव अट्ठो बहुओ खुड्ड खुड्डिओ वावीओ जाव सरसर पंतियाओ खीरोदग पडिहत्थाओ पासादियाओ॥तासुण

अर्थ

कंदर्प बढाने वाली, सब इन्द्रिय गात्र को प्रल्हाद करने वाली, पुष्टकारी, मनोहर शुभवर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त सुरा होवे वैसा क्या पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस का पानी इस से भी अत्यंत मनोहर यावत् स्वाद वाला है और भी वहां पर वारुणी व वारुणीकांत ऐसे दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं अहो गौतम ! इसलिये वारुणोदधि नाम कहा यावत् इस का नाम नित्य शाश्वत है चन्द्रादिक ज्योतिषी सब संख्यात गुने अधिक जानना ॥ ३५ ॥ वरुणोदधि के चारों ओर क्षीरोदक नामक द्वीप कहा है वह वर्तुलाकार समचतुस्र संस्थान वाला है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा है व संख्यात योजन की परिधिवाला है यावत् अर्थ कहना वहां बहुत छोटी बडी

पिट्ठपुट्ठा मुसाइतबरकिमदिण्ण कद्दमाकोमपत्ता अच्छा वरवारुणी अतिरसा जम्बूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा वलविणी अहिय महुर२ पेज्जइसीसरत्त णेत्ता कोमल कवोल करणी जाव आसादिता विसीता अणिहुय सल्लाव करण हरिसपीति जणणी सतोस तिव्वो कहाव विममविलास वेल्ल हल गमल करणी त्रिवण अहियसत्त जणणीय होति सगामदेसकाले कायर नरसमरपसरकरणी कढिणाण विज्जुयाति हियदाग मउयकरणीहोति उववेसितासमापीगाति सलावितेग्ग सथलेंमि षिसभावुप्फालिया सरभग्ग सेप सहगारसुरभिरस दिवीया सुगधा आसायणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणणिज्जा मयणिज्जा दप्पणिज्जा सर्विंशदियगाय पल्हायणिज्जा, आसला मासला पेसला

समान स्वरूप से अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, घुस से बनाइ हुइ कर्दम समान एक्रायसी प्रमुख वस्तु से बनाई हुई काली चमत्कारी निर्मल प्रधानवत् वारुणी अती रस युक्त जाम्बू फल के पृष्ट भाग समान वर्णवाली, ओष्ट के अवलम्बन करनेवाली अर्थात्—शीघ्रमेव नशा चढे ऐसी, अधिक मधुर पीने योग्य, किंचित् लाल चक्षु बनावे, कपोल स्वल्प कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुपम कार्य रने वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, सताप, विभ्रम, विलास, करनेवाली, वल्लभ मन करनेवाली, विशेष अधिक सत्व उत्पन्न करनवाली, रण सग्राम मूरत्व युक्त, हृदय कोमल बनानेवाली, उपवासित बनाई हुई सहकारके सुगंधित य आस्वादनीय, विशेष स्वाद योग्य, शरीर का वृद्धि करने वाली, पुष्टि करते वाली, कंदर्प बढाने वाली,

सूत्र

वण्णेण उववेता गंधेणं उववेया रसेणं उववेया फासेणं उववेया भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! वारुणोदस्सणं समुद्दस्स उदए इत्तो इट्ठतराए चेव जाव अस्साएणं पण्णत्ते, वारुणी वारुणिकंता इत्थे दो देवा महिड्डिया जाव परिवसंति, से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे, सव्वं जोतिसं संखेज्जकेणं णातव्वं ॥ ३५ ॥ वारुणोण्णएणं समुद्दं खीरवरेणामदीवे वट्टे जाव चिट्ठति, सव्वं संखेज्जगं विक्खंभे परिक्खेवोय जाव अट्ठो बहुओ खुड्डा खुड्डिओ वावीओ जाव सरसर पंतियाओ खीरोदग पडिहत्थाओ पासादियाओ॥ तासुणं

अर्थ

कंदर्प बढाने वाली, सब इन्द्रिय गात्र को प्रल्हाद करने वाली, पुष्टकारी, मनोहर शुभवर्ण गंध रस व स्पर्श युक्त सुरा होवे वैसा क्या पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस का पानी इस से भी अत्यंत मनोहर यावत् स्वाद वाला है और भी यहां पर वारुणी व वारुणीकांत ऐसे दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं अहो गौतम ! इसलिये वारुणोदधि नाम रखा यावत् इस का नाम नित्य शाश्वत है चंद्रादिक ज्योतिषी सब संख्यात गुने अधिक जानना ॥ ३८ ॥ वरुणोदधि के चारों ओर क्षीरोदक नामक द्वीप कहा है यह वर्तुलाकार समचतुस्र संस्थान वाला है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा है व संख्यात योजन की परिधिवाला है यावत् अर्थ कहना यहां बहुत छोटी बडी

पिट्ठपुट्ठा सुखाइतवरकिमदिण्ण कद्दमाकोमपक्षा अच्छा वरवारुणी अतिरसा जम्बूफलपिट्ठ वण्णा सुजाता इसी उट्ठा वलंविणी अहिय महुर२ पेज्जइसीसरच णेत्ता कोमल कवोल करणी जाव आसादिता विसीता अणिहुय सल्लाव करण हरिसपीति जणणी सतोस विन्वो कहाव विभमविलास वेल्ल हल गमल करणी विरण अहियसत्त जणणीय होति संगामदेसकाले कायर नरसमरपसरकरणी कढिणाण विज्जुयाति हिययाग मउयकरणीहोति उववेसितासमाणीगति खलाविलेग सथलेंमि विसभावुप्फालिया सरसगग धेण सहगारसुरभिरस दिवीया सुगधा आसायणिज्जा विसायणिज्जा, उप्पणेज्जा पीणणिज्जा मयणिज्जा दप्पणिज्जा सर्विंदियगाय पल्हायणिज्जा, आसला मासला पेसला

समान उत्कर्ष से अष्ट प्रकार के पिष्ट से बनाई हुई, मूल से बनाए हुए कर्दम समान एलापत्री प्रमुख वस्तु से बनाई हुई कादंबरी चमत्कारी निर्मल प्रधानवत् वारुणी अती रस युक्त जाम्बू फल के पृष्ट भाग समान वर्णवाली, ओष्ठ के अवलम्बन करनेवाली अर्थात्—शीघ्रमेव नशा चढ ऐसी, अधिक मधुर पीने योग्य, किंचित् लाल चक्षु बनावे, कपाल स्थल कोमल करनेवाली, हित करनेवाली, अनुपम कार्य करने वाली, हर्ष उत्पन्न करनेवाली, हाव, विभ्रम, विलास, करनेवाली, बहुत मन करनेवाली, विशेष अधिक सत्व उत्पन्न करनेवाली, रण संग्राम सूरत्व युक्त, हृदय कोमल बनानेवाली, उपलक्षित बनाई हुई सहकार के सुगंधित व आस्वादनीय, विशेष स्वाद योग्य, शरीर को वृद्धि करने वाली, पुष्टि करने वाली, कंदर्प बढाने वाली,

सु उसहो मारु पल्लु अज्जुन तरुण सरपत्ते कोमल अच्छीयतण पण्डग वरिच्छु वारिणीण लवगपत्त पुप्फ पल्लव, कक्कोलग सफलरुक्खा बहुसुगुच्छगुम्म कलितो एलवट्टी महुरपऊर पिप्पली फलीतवल्ली वर त्रिविर वारणीण अप्पोदगवीतसहर समभूमिभागानिज्झाए सुहेसिताण सुपोसति सुधाताण रोग परिवज्जिताण निरुवहतसरीराण कालप्पसवाण त्रितीयतचीय समपसूताण अजण वरगवेलय वलय जलधरत जच्च जण रिट्ठ भमर परहुत समप्पभाण गावीण कुडदोह-

अर्थ—पोंडग वनस्पति, श्रेय वारुणी, लवग वृक्ष के पत्र, पुष्प, फल, व कुपलवाले अकुर, ककोल नामक फल वृक्ष, गुच्छ, गुल्म सहित इलायची की लकडी का रस, नेठीमध मधुरपीपरफल की वेल का रस और प्रधान वारुणि सुरा विशेष जैसा स्वाद योग्य होवे, और श्रेष्ठ भूमि में विचरनेवाली, अल्प उदक वाला कर्दम रहित श्रेष्ठ भूमि भाग में निर्भय से बैठने वाली, रोग रहित, निर्भय स्थान में रहने वाली, उपद्रव रहित, अखंड शरीरवत क्रीडा से सुख पूर्वक प्रसववाली, दो तीन वार प्रसूत हुई ऐसी, वर्ण में अजन समान, महिष भृग समान, जम्बू, अरिष्ट व भ्रमर समान काली गाय होवे और जिस का दुग्ध रहने का स्थान घडा कुडा समान होवे, उसका दुग्ध चार स्थानक से परिणया हुवा होवे, ऐसी श्याम वर्णवाली गाय का दुग्ध

खुड्डीयाखुड्डीसु जाव बिलपंतियासु बहवे उप्पाए पव्वयगा सव्वरयणमया जाव पडिरूवा॥ पुंडरीय पुप्फदंता इत्थं दोदेवामहिड्डियाजाव परिवसति से तेणट्ठेणं जाव णिच्चे जाव जोतिस सव्व संखेज्ज ॥ ३६ ॥ खीरवरेण दीवं खीरोदणाम समुद्दे वट्टे वलियागार संठाण संठिए जाव परिक्खिवित्ताणं चिट्ठति समचक्कवाल संठिते नो विसमचक्कवाल संठिते, संखेज्जाइं जोयणाइं सहस्साइं विक्खंभो परिक्खेवेणं तहेव सव्व जाव अट्ठो, गोयमा ! खीरोयस्सणं समुद्दस्सउदग से जहा नामते

बावडीयों यावत् सरसरपंक्तियों में दुग्ध जैसा पानी भरा हुआ है उन बावडीयों में बहुत उत्पात पर्वत हैं वे सब रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं यहां पुंडरीक व पुष्पदंत नामक महर्धिक दो देव रहते हैं इसलिये नित्य कहा है चंद्रादिक ज्योतिषी देव संख्याते कहे हैं ॥ ३६ ॥ क्षीरवर द्वीप के चारों ओर क्षीरोदधि नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुआ है सम चक्रवाल संस्थान वाला है परन्तु विषम चक्रवाल संस्थान वाला नहीं है संख्यात योजन का चक्रवाल चौडा व संख्यात योजन की परिधिवाला है वैसे ही सब कहना यावत् अहो भगवन् ! क्षीरोद ऐसा क्यों नाम रखा ? अहो गौतम ! जैसे अर्जुन नाम वरुण रस सहित, कोपल पत्र सहित, और अखण्ड तृणाग्र वाली औषधि का रस, हरितु देश विशेष,

खीरोद समुद्द घतवरे णाम दीवे वट्ट वलयाकार सठाण सठिए जाव परिक्खि-
विताण चिट्ठइ समचक्कवाल णो विसमचक्कवाले सखेज्ज विक्खम परिधि पदेसा
जाव अट्ठो गोयमा ! घतवरेणाम दीव तत्थ २ देस २ तहिं बहवे खुड्डाखुड्डिया
वावीओ जाव घतोदग पडहत्थाओ उप्पाय पव्वगा जाव खडखडगा सव्वकच
णामया अच्छा जाव पडिरूवा कणग कणगप्पभा इत्थ दो देवा महिड्डिया चदा
सखेज्जा ॥३८॥ घतवरेण दीव घतोदेणाम समुद्दे वट्टे वलयागार सठाण सठिते जाव
चिट्ठति, समचक्कवाल सठाण सठिते तहेव दारा पदेसा जीवाय अट्ठो गोयमा! घयोदय-

अर्थ

समचक्रवाल है परतु विषम चक्रवाल नहीं हैं सख्यात योजन की चक्रवाल चौडाइ है और सख्यात
योजन की परिधि हैं यावत् अर्थ कहा है घृतवर द्वीप में बहुत छोटी बडी वावडीयो में पानी घृत जैसा
भरा हुवा है उन पर उत्पात पर्वत यावत् खडक रहे हुवे है वे सब कांचनमय यावत् प्रति रूप हैं यहां
कनक व कनकप्रभा नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं, इस लिये घृतवर द्वीप नाम कहा है, चद्रमादिक
ज्योतिषी सब असंख्यात हैं ॥ ३८ ॥ घृतवर द्वीप के चारो ओर वर्तुल वलयाकार सस्थान वाला
घृतोद समुद्र रहा है वह समचक्रवाल सस्थानवाला है वैसे ही द्वार प्रदेश, और जीव का जानना इस

धाण बद्दत्थी पच्छजाण स्ढाण मधुमासकाल सगाहिते होज्ज पाउरकेवहोज्ज-तासि, खीर महुरस विविगच्छ बहुहत्थ सपयुत्ते, पयत्त मवगीसु कढिती आउचरसद गुड मच्छडितो वावतेरसो पाउरत चाउंरतचक्कवट्टिस्स उवट्ठाविए आसादणिज्जे विसायणिज्जे पीणणिज्जे जाव सार्व्विदियगातपल्हायणिज्जे जाव वण्णेण उववेए जाव फासेण भवेयारूवेसिया ? णोतिणट्ठे समट्ठे, खीरोदस्सण से उदगे एत्तो इट्ठतराचेव जाव आसाएण पण्णत्ते, विमल विमलप्पभाए इत्थदोदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेण खखेज्जा चदा जाव तारा ॥ ३७ ॥

मधुर रस सहित होवे उसे मंदाग्नि से पकाकर उसमें शक्कर, गुड, मिश्री डालकर चातुरंत चक्रवर्ती के लिये खाने योग्य क्षीर बनावे वह स्वाद योग्य, शरीर में पुष्टि करनेवाली यावत् सब गात्र को आनंदकारी होवे, सुवर्ण गंध यावत् स्पर्श युक्त होवे अहो भगवन् क्षीर समुद्र का पानी क्या ऐसा है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है क्षीरोद समुद्र का पानी इस से भी अत्यंत यावत् आस्वाद योग्य है यहां विमल और विमल प्रभ नामक दो महर्द्धिक देव यावत् रहते हैं इस कारन से क्षीरोद समुद्र ऐसा नाम कहा है इस में संख्यात ज्योतिषी हैं ॥ ३७ ॥ क्षीरोद समुद्र के चारों ओर घृतवर द्वीप वर्तुल वलयाकार है वह

सूत्र

घतोदेण समुद्द खोदवरेणाम दीवे बट्ट वलयागारे जाव चिट्ठति, तहेव जाव अट्ठो ॥ खोदवरेण दीव तथ २ दसे २ तहिं २ खुड्डा खुड्डीओ जाव खोदोदग पडहत्थाओ उप्पात पव्वतगा सव्ववेरुलियामया जाव पडिरूवा, सुप्पभा महाप्पभा इत्थदोदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, सेतेणट्ठेण सव्व जोइस तहेव जाव तारा ॥ ४० ॥ खाद्वरण दीव खादोदेणाम समुद्दे वट्टेवलयागार जाव सखेज्जाइ जोयणसत परिक्खेवण जाव अट्ठो ॥ गोयमा ! खोउदस्सण समुदस्स उदये जहासे मासल मासल पसत्थे वीसत निद्ध सुकमाल भूमिभागेसु छिन्नेसु कट्ठुलट्ठ विसट्ठ निरुवहय

अर्थ

॥ ३९ ॥ घृतोद समुद्र के चारों ओर इक्षुरस नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार कहा है यावत् अर्थ पर्यंत कहना अहो भगवन् ! इक्षुवर द्वीप नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! इक्षुवर द्वीप में स्थान २ पर छोटी बडी बावडियों यावत् इक्षुरस समान पानी भरा है, वहां उत्पात पर्वत हैं वे वैडूर्य रत्नमय यावत् प्रतिरूप हैं वहां सुप्रभ व महाप्रभ नामक दो महर्द्धिक देव रहते हैं इस से इक्षुवर द्वीप कहा है सब ज्योतिषी चन्द्रादिक संख्यात हैं ॥ ४० ॥ इक्षुवर द्वीप के चारों ओर इक्षुवर समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है, यावत् संख्यात योजन की परिधि है यावत् अहो भगवन् ! उस का इक्षुवर नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! मनोहर प्रशस्त, विश्रांत, स्निग्ध सुकुमाल भूमि भाग जहां होवे, वैसा देश में इक्षु स

स्सण समुद्दस्स उदये जहा से जवग्गफुल्लसल्लइ विमुकुल कणियार सरसवसुविसुद्ध कोरंटदाम पिंडितरस्सणिद्ध गुण तेय दीविय निरुवहत विसिट्ठ सुंदरतरस्ससुजाय दधिमथित तद्दिवस सगाहित णवणीय पडुघणावित सुकढितउद्दावसज्जवीसादितस्स, अहिय पीवर सुरभिगंध मणहर मधुर परिणाम दरसणिज्ज पच्छाणिमलसुहोव भोगस्स सरयकालम्मिहोज्ज गोघयवरस्समढ भवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे गोयमा ! घतोदयस्सण समुद्दस्स एतो इट्ठतरे जाव अस्साएण पण्णत्ते कंते सुकताय इत्थ दो देवा महिड्ढिया जाव परिवसंति सेस तहेव जाव तारागण कोडि कोडीओ ॥ ३१ ॥

का अर्थ की पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! घृतवर समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ! अहो गौतम ! उसका पानी विकसित कणयर के पुष्प व कोरंट वृक्ष के पुष्पमाला समान श्वेत पिण्डवाला, स्निग्धपना का गुण सहित, ददीप्यमान, निरुपम, सुंदर ऐसा दधि का मन्थन करके मक्खन नीकाले, फीर उस तपाकर घृत बनावे, जो बहुत सुगंध युक्त, देखने योग्य, प्रशस्त, निर्मल, मुख से मागने योग्य शरत्काल में गोघृतोपर होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते है कि क्या घृतवर समुद्र का ऐसा पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है उस से भी अधिकतर आस्वादने योग्य है और भी वहां कांत सुकांत नामक दो देव रहते हैं शेष सब वैसे ही जानना चंद्रादि ज्योतिषी संख्यात हैं यावत् संख्यात कोडाकोड ताराओं हैं

किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते,मूले विच्छिन्ना मज्झेसंखित्ता उप्पिं तणुया,गोपुच्छ संठाण,संठिया सव्व अजणमया अच्छा जाव पडिरूवा पत्तेय २ पउमवर वेइया परिक्खित्ता, पत्तेय २ वणसंड परिक्खित्ता वण्णओ,तेसिणं अजण पव्वयाणं उवरि पत्तेय २ बहुसमरमणिज्ज भूमिभागा पण्णत्ता से जहा नामए आलिंग पुक्खरेतिवा जाव सयति॥तेसिणं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झ देसभाए पत्तेय २ सिद्धायतणा, एगमेकं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरि जोयणाति उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखंभ सयसंनिविट्ठाणं वण्णओ, गोयमा !

अर्थ वेदिका और वनखंड हैं वे दोनों वर्णन योग्य हैं उन अंजनगिरी पर्वतपर बहुत समरमणिक भूमिभाग है जैसे मादलकादल वगैरह यावत् वहां बैठते हैं उस बहुत रमणीय भूमिभाग के मध्य में पृथक् सिद्धायतन कहे हैं व एक सो २ योजन के लम्बे, पचास २ योजन के चौडे, बहत्तर योजन ऊंचे हैं सेकडों स्थंभ सहित हैं, उन का वर्णन जानना अहो गोतम ! उस सिद्धायतन के चार द्वार चार दिशी में कहे हुवे हैं जिन के नाम देवद्वार २ असुरद्वार ३ नागद्वार और ४ सुवर्ण द्वार उनपर महर्द्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले चार देव रहते हैं जिन के नाम-देव, असुर, नाग और सुवर्ण वे द्वार सोलह

चत्तारि अंजण पव्वया पण्णत्ता, तेण अंजणग पव्वयगा चउरासिति जोयण सहस्साइ उड्ढं उच्चत्तेण एगमेग जोयण सहस्स उव्वेहेण मूले दस जोयण सहस्साइ, किं चिविसेसाहिए आयाम विक्खंभेण, धरणियले दस जोयण सहस्साइ आयामविक्खंभेण ततोणंतरं चणं माताए २ पदेस परिहायेमाणा २ उवरिं एगमेग जोयण सहस्स आयाम विक्खंभेण, मूले एकतीस जोयण सहस्साइ छच्चतेवीस जोयणसते किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण धरणियले एकतीस जोयणसहस्साइ छच्च तेवीसे जोयणसए देसूणा परिक्खेवेण सिहरितले तिण्णि जोयण सहस्साइ एगाय बावट्ठ जोयण सत

चार दिशि में चार अंजन गिरि पर्वत कहे हैं वे अंजनगिरि पर्वत ८४ हजार योजन के ऊंचे एक हजार योजन के गहरे, मूल में दश हजार योजन से अधिक लम्बे चौडे है, धरणितल में दश हजार योजन लम्बे चौडे हैं तदनंतर एक २ प्रदेश कमहोते २ उपर एक हजार योजन लम्बे चौडे रहे हैं मूल में इकतीस हजार छसो तेवीस योजन से किंचित् अधिक परिधि है, धरणितल में एकतीस हजार छसो तेवीस योजन में कुछ कम परिधि है शिखरतल में तीन हजार एक सो बासठ योजन से कुछ कम परिधि है मूल में विस्तारवाले बीच में संकुचित व उपर पतले हैं गोपुच्छ संस्थानवाले स्वच्छ है, प्रत्येक को एक पद्मवर

पण्णत्ता, तेण दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेण तावतिय चेव पवेसेण सेस तचेव जाव वणमालाओ, एव पिच्छाघर मंडवावि तचेव पमाण, जे मुहमंडवाण दारावि तहेव णवर बहुमज्झदेस भाये पेच्छाघरमंडवाण अक्खाडगा, मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणप्पमाणाओ सीहासणा अपरिवारा जाव दामा थूभावि चउद्दिसिं तहेव णवरिं सोलस जोयणप्पमाणा, साइरेगाइं सोलसउच्चा,- सेस तहेव जाव जिणपडिमाओ चेइरुक्खा तहेव चउद्दिसिं तचेव पमाण जहा विजयाए रायहाणीए, णवर मणिपे-

द्वार कहना प्रेक्षागृह मंडप के मध्यभाग में अखाटक है उन के मध्य भाग में मणिपीठिका है वह आठ योजन के प्रमाण है उस पर परिवार रहित सिंहासन है यावत् दाम-माला है चारों दिशाओं स्तूप भी पूर्ववत् कहना परतु ये स्तूप सोलह योजन प्रमाण हैं साधिक सोलह योजन के ऊंचे हैं शेष सब वैसेही कहना, जिन प्रतिमा है, चारों दिशी में चैत्यवृक्ष हैं वगैरह सब विजया राज्यधानी जैसे कहना विशेष में मणिपीठिका सोलह हजार योजन की ऊंची हैं उन चैत्यवृक्ष के चारों दिशी में चार मणिपीठिकाओं हैं वे आठ योजन की चौडी चार योजन की जाडी है उस पर महेन्द्रध्वजा ६४ योजन

तेसिण सिद्धायतणाण पत्तेय २ चउद्दिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता तजहा—देवदारे, असुरदारे, नागदारे, सुवण्णदारे ॥ तत्थण चत्तारि देवा महिड्डिया जाव पलिओवम ठितीया परिवसति तजहा—देवे, असुर,णागे,सुवण्णे ॥ तेणदारा सोलस जोयणाइ उड्ढ उच्चत्तेण अट्ठ जोयणाइ विक्खंभेण,तावतिय पवेसेण सेतावरकणगत्थूभिआ सेसतचेव जाव वणमाला ॥ तेसिण दाराण चउदिसिं चत्तारिमुहमडवा पण्णत्ता, तेण मुहमडवा एगमेग जोयण सय आयामेण, पण्णास जोयणाइ विक्खंभेण, सातिरेगाइ सोलस जोयणाइ उड्ड उच्चत्तेण वण्णओ ॥ तेसिण मुहमडवाण चउद्दिसिं चत्तारि चत्तारिदारा

योजन ऊंचे व आठ योजन चौरे हैं उन का प्रवेश भी आठ योजन का है वे श्वेत कनकमय वगैरह वर्णन योग्य यावत् लम्बी लटकती हुई वनमाला है उन द्वार की चार दिशी में चार मुख मंडप कहे हैं वे एक सो योजन के लम्बे पचास योजन के चौरे और साधिक सोलह योजन के ऊंचे यावत् वर्णन योग्य है. उन मुख मंडप की चार दिशी में चार द्वार कहे हैं वे द्वार सोलह योजन के ऊंच आठ योजन के चौरे व उतने ही प्रवेश वाले हैं शेष सब वनमाला पर्यंत पूर्ववत् जानना ऐसेही प्रेक्षागृह मंडप का वर्णन जानना उस का प्रमाण वैसेही कहना जैसे मुख मंडप के द्वार कहे वैसेही प्रेक्षा गृह मंडप के

भागे मणिपेढिया सोलस जोयणाइं आयाम विक्खंभेण अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेण ॥ तासिणं मणिपेढियाणं उप्पिं देवच्छंदगा सोलस जोयण आयाम विक्खंभेण सातिरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेण सव्वरयणमया अट्ठसय जिणपडिमाण सव्वो सोचेव गमो जहेव माणिमय सिद्धायणस्स तत्थणं जेसे पुरत्थिमिल्लेणं अंजणपव्वते तस्सणं चउद्दिसिं चत्तारि नंदापुक्खरिणीओ पन्नत्ताओ तंजहा णंदोत्तराय णंदा आणंदा णंदिवद्धणा॥ताओ णंदापुक्खरणीओ एगमेगं जोयणसयसहस्सं आयाम विक्खंभेण दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ सण्हाओ जाव पडिरूवाओ पत्तेयं २ पउमवरवेइया

अर्थ

सोलह योजन लम्बा चौडा कहा है और अधिक सोलह योजन ऊंचा है सब रत्नमय हैं यहां १०८ जिन प्रतिमा हैं इस का सब अधिकार वैमानिक सिद्धायतन का कहा वैसे ही कहना यहां जो पूर्व दिशा का अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशा में चार नंदापुष्करणि हैं जिनके नाम, नंदोत्तरा, नंदा आनंदा और नंदीवर्धना यह नंदा पुष्करणियों एक लाख योजन की लम्बी चौडी है, दश योजन की ऊंडी हैं, स्वच्छ श्लक्ष्ण है प्रत्येक को पद्मवर वेदिका और वनखण्ड हैं यहां यावत् त्रिसोपान प्रतिरूप कहे हैं, व तोरण हैं उस नंदा पुष्करणी के बीच में पृथक् २ दधि मुख पर्वत हैं ये दधि मुख पर्वत

ढियाओ सोलस जोयणप्पमाणाओ ॥ तेसिण चेइयरुक्खाण चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढिओ अट्ठ जोयण आयाम विक्खभेण, चउजोयण बाहल्लाओ, महिंदज्झयाण चउसट्ठि जोयणुच्चा जोयणउव्वेहो जोयणविक्खभा सेस तहेव, एव चउद्दिस चत्तारि नदा पुक्खरणीओ णवर खोयरसपडिपुण्णाओ, जोयण सयं आयामेण, पन्नास जोयणाइ विक्खभेण, दस जोयणाइ उव्वेहेण सेस तहेव, मणोगुलिया गोमाणसीया अडयालीस २ सहस्साओ पुरच्छिमेणवि सोलससहस्सा, पच्चत्थिमेणवि सोलससहस्सा, दाहिणेणावि अट्ठ सहस्साओ, उत्तरणवि अट्ठ सहस्साओ, तहेव सेस उल्लोया भूमिभागा, जाव बहुमज्झदेस भूमि

की ऊंची है एक योजन गहरी जमीन में व एक योजन की चौडी है शेष वैसेही कहना, एसे चारों दिशा में चार नद पुष्करणीयों हैं, इन में पानी इक्षुरस जैसा भरा है, ये एक सो योजन लम्बी है, पचास योजन चौडी है, दश योजन गहरी हैं शेष सब वैसे ही कहना. मनोगुलक और गोमाणसीका अडतालीस हजार हैं जिस में से सोलह हजार पूर्व में, सोलह हजार पश्चिम में, दक्षिणमें आठ और उत्तर में आठ हजार वैसेही बहुत भूमिभाग यावत् उस के मध्यभाग में मणिपीठिका है, यह सोलह योजन की लम्बी चौडी व आठ योजन की जाडी है उन मणिपीठिका पर देव छंदक कहा है यह

सुवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव उप्पि अट्ठट्ठ मंगलया ॥ तत्थण जेसे दक्खिणिल्लेण अंजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि णंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा भद्दाय विसालाय कुमुयाय पुंडरिगिणी तचेव प्पमाण तहेव दहिमुह पव्वया तचेव पमाण जाव सिद्धायणे ॥ तत्थण जेसे पच्चत्थिमेण अंजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारिणंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा णंदिसेणाय अमोहाय गोत्थुभाय सुदसणा तचेव सव्व भाणियव्व जाव सिद्धाययण ॥ तत्थण जेसे उत्तरिल्ले अंजणपव्वए तस्सण चउद्दिसिं चत्तारि नंदापुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ तंजहा विजया वेजयंति

अर्थ

मण पर्वत यावत् सिद्धायतन वगैरह कथन कहना जो पश्चिम दिशा में अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदापुष्करणियों हैं जिन के नाम—नंदिसेना, अमोघा, गोस्तुभ व सुदर्शना इसका भी सिद्धायतन पर्यंत कथन पूर्ववत् जानना उत्तर दिशा में जो अंजनक पर्वत है, उन की चारों दिशि में चार नंदा पुष्करणियों कही हैं जिन के नाम—विजया, वैजयन्ती, जयंती और अपराजिता इन में सिद्धायतन पर्यंत सब कथन पूर्ववत् जानना यहां बहुत भवनपति वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक देव चतुर्मासिक

१ चतुर्मासिक पूर्णिमा व प्रतिपदा तीन हैं अषाढ महिने की, कार्तिक व फाल्गुन महिने की..

पत्तेय १ वणसंड परिक्खित्ता तत्थ २ जाव तिसोमाण पडिरूवेगा, तोरणा, ॥ तासिणं पुक्खरिणीणं बहु मज्झदेसभाए पत्तेय २ दाहिमुहपव्वए पण्णत्ते ॥ तेणं दहिमुह पव्वया चउसट्ठिं जोयण सहस्साइं उड्डु उच्चत्तेण एगं जोयण सहस्सं उव्वेहेण सव्वत्थसमा पल्लगसठाण संठिता, दस जोयण सहस्साइं विक्खंभेण, इक्कतीसं जोयण सहस्साइं छच्चतेवीस जोयणसए परिक्खेवेण पण्णत्ता सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, पत्तेय २ पउमवर वेतिया वणसंड वण्णओ, बहु समरमणिज्ज भूमिभागा जाव आसयंति, सिद्धाययण तचेव पमाण तं अंजण पव्वए

चौसठ हजार योजन के ऊंचे हैं एक हजार योजन के जमीन में हैं, सब स्थान समपल्येक संस्थान वाले हैं दश हजार योजन के चौडे हैं इकतीस हजार छसो तेवीस योजन की परिधि है सब रत्नमय, स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है प्रत्येक की चारों ओर पद्मवर वेदिका व वनखण्ड हैं बहुत रमणीय भूमि भाग यावत् वहां देव बैठते हैं सिद्धायतन का प्रमाण वैसे ही जानना यों अंजनक पर्वत की वक्तव्यता कहना यावत् ऊपर आठ २ मंगल कहे हैं दक्षिण का अंजनक पर्वत है उस की चारों दिशि में चार नंदा पुष्करणीयों हैं जिन के नाम—भद्रा, विशाला, कुमुदा और पुंडरीकिणी इस का सब वर्णन पूर्ववत् जानना दवि

सूत्र

बलयागार संठाण संठिए जाव सव्व तहेव अट्ठो जहाक्खोदोदगस्स जाव सुमणस सोमणसाय इत्थ देवा महिड्डीया जाव परिवसति सेस तहेव जाव तारग्ग ॥ ४२ ॥ नंदिसरोद समुद्द अरुणोनाम दीवे वट्टे वलयागार संठाण संठिए सपरिक्खित्ताण चिट्ठइ ॥ अरुणेण भंते!दीवे किं समचक्कवाल संठिये, विसमचक्कवाल संठिए? गोयमा! समचक्कवाल संठिए नो विसम चक्कवाल संठिए केवइय चक्कवाल? गोयमा! संखेज्जाइ जोयण सहस्साइ चक्कवाल विक्खंभेण, संखेज्जाइ जोयण सहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ता,

अर्थ

संस्थानवाला कहा है इस का सब कथन पूर्ववत् कहना इक्षुवर समुद्र जैसे यहां का पानी इक्षुरस समान है यावत् सुमनस व सोमनस ये दो देव महर्द्धिक यावत् रहते हैं शेष सब वैसेही जानना यावत् संख्याते चंद्रमादिक ज्योतिषी हैं ॥ ४२ ॥ नंदीश्वर समुद्र भति अरुण नामक नववा द्वीप वर्तुल वलयाकार संस्थान वाला है अहो भगवन्! अरुण द्वीप क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है? अहो गौतम! सम चक्रवाल संस्थानवाला है परंतु विषम चक्रवाल संस्थानवाला नहीं है अहो भगवन्! अरुण नामक द्वीप कितना चौडा है और उन की कितनी परिधि है? अहो गौतम! संख्यात लाख योजन चौडा है और संख्यात लाख योजन की परिधि है और भी पद्मवर

जयती अपराजिता, सेस तहेव जाव सिद्धाययणा सव्वो चेतियपरिवरण्णा णेयव्वा, तत्थण बहवे भवणवइ वाणमंतर जाइस वेमाणिया देवा चाउमासिय पडिवएसु संवच्छरेसुय अण्णेसु बहु जिणजम्मण निक्खमण णाणुप्पपात परिणिव्वाण मादिएसुय देवकज्जेसुय देवसमुदएसुय देवसमतीसुय देवसमवाएसुय देवपउमणेसुय एगतओसहिया समुवागया समाणा पमुदित पकीलिया अट्ठाहियाओ महामहिमाओ कारेमाणा पालेमाणा सुहंसुहेण विहरति कयस्सास हरिवाहणाय तत्थ दुवे देवा महिड्ढीया जाव पलिउमाठितीया परिवसति से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव णिच्च जोतिस संखज्ज ॥ ४२ ॥ णदी सरवरण्ण दीवे णदिस्सरवरोदे णामं समुद्दे वट्टे

प्रतिपदा संवत्सर में और अन्य बहुत जिनभगवान के जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान, और निर्वाण कल्याण इत्यादि दिनों में, देव कार्य, देव समुदाय, देव गोष्ठि, देव संबंधी समवाय, और देव संबंधी जीत व्यवहार के प्रयोजन में देवता एकत्रित होते हैं वहां आनंद क्रीडा, अष्टाधिका महामहोत्सव करते हुवे सुख पूर्वक विचरते हैं और भी कैलास व हरिवाहन नामक दो महर्द्धिक देव यावत् यहां रहते हैं अहो गौतम ! इस लिये नंदीश्वर द्वीप ऐसा नाम कहा यावत् यह नाम शाश्वत है ज्योतिषी चंद्रादिक सब संख्याते हैं यह नंदीश्वर द्वीप का कथन हुवा ॥ ४२ ॥ नंदीश्वर द्वीप के चारों ओर नंदीश्वर समुद्र वर्तुल वलयाकार

सूत्र

सव्व जाव अट्ठो खोदयोदगपडिहत्थओ उप्पाय पव्वयगा सव्व वइरामया अच्छा जाव पडिरूवा अरुणवर महाभद्दा इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव परिवसंति॥ ४६॥एवं अरुणवरो दंवि समुद्दे जाव अरुणवर महाअरुणवरा एत्थ दो देवा, सेस तहेव अरुणवरोदण समुद्द अरुणवरोभासे नामं दीवे वट्टे जाव देवा अरुणवराभास भद्दा अरुणवरोयमास महाभद्दा महिड्डिया सेस तहेव ॥ ४८ ॥ एवं अरुणवरोभासोदेवि समुद्दं णवरिंदेवा अरुणवरोभासवर अरुणवरो भास महावरा, एत्थ दो देवा महिड्डीया ॥ ४९ ॥ कुडलदीवे कुडलभद्दाय कुडलमहाभद्दाय एत्थ दो देवा ॥ ५० ॥

अर्थ

वैसेही सब कहना, यहां की सब बावडियों में पानी इक्षुरस समान है, उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय है स्वच्छ यावत् प्रतिरूप है, अरुणवरभद्र व अरुणवरमहाभद्र ऐसे दो देव रहते हैं ॥ ४६ ॥ ऐसेही अरुणोवर समुद्र का जानना यावत् यहां अरुणवर और महाअरुणवर ऐसे दो देव रहते है शेष वैसेही ॥ ४७ ॥ अरुणवर समुद्र के चारो ओर अरुणवरभास नामक द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है, यावत् अरुणवरभासभद्र और अरुणवरभासमहाभद्र ऐसे दो देव ऋद्धिक है, ॥ ४८ ॥ ऐसेही अरुणवर भास समुद्र का जानना, परंतु यहां अरुणवर भासवर और अरुणवर भासमहावर नामक दो देव महर्द्धिक रहते हैं, ॥ ४९ ॥ इस से अनन्तर चारहवा कुडल द्वीप है इस में कुडलभद्र व कुडल महाभद्र

पउमवर वणसंडा दारा दारतराय तहेव, संखिज्जाइं जोयण सहस्साइं दारतर जाव अट्ठो- वावीओ खोतोदग पडिहत्थाओ उप्पाय पव्वयका सव्ववइरामया अच्छा जावपडिरूवा असोग वीयसोगा एत्थ दुवेदेवा महिड्डिया जाव परिवसति, से तेणट्ठेण जाव संखेज्जग सव्व ॥४४॥ अरुणदीव अरुणोदे नाम समुद्दे तस्सवि तहेव परिक्खवो अट्ठोक्खोदो दग णवरिं सुभद्द सुमणभद्दा एत्थ दोदेवा महिड्डिया सेसं तहेव ॥४५॥ अरुणोदग समुद्द अरुण वरनामे दीवे वट्टेवलयागार सठाण सठिए सेस तहेव संखेज्जग

वादिका वनखण्ड द्वारांतर वैसेही कहना प्रत्यक द्वार में संख्यात लाख योजन का अंतर है यावत् अर्थ कहते हैं उस में बावडियों प्रमुख हैं, इक्षुरस समान पानी भरा है वहां उत्पात पर्वत हैं, सब वज्ररत्नमय है अशोक और विनशोक नामक दो महर्धिक देव वहां रहते हैं इसलिये अरुणद्वीप कहा है सब ज्योतिषी संख्याते हैं ॥ ४४ ॥ अरुण द्वीप के चारों ओर अरुणोद नामक समुद्र वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है उस की चौडाई संख्यात लाख योजन है परिधि भी संख्यात लाख योजन की है अर्थ की पृच्छा ? यहां पानी समुद्र के पानी जैसा है इस का सब कथन इक्षुरस समुद्र जैसा जानना परंतु यहां सुमण व सुमणभद्र ऐसे दो महर्द्धिक देव रहते हैं शेष वैसेही कहना, ॥ ४५ ॥ अरुणोदक समुद्र को अरुणवर द्वीप वर्तुल वलयाकार रहा हुवा है संख्यात योजन का लम्बा चौडा है

सूत्र

गोयमा! समचक्कवाल नो विसमचक्कवाल ... रिक्खेवेण पण्णत्ते ? ... सव्वत्थमणोरमाय इत्थ देवा सेस तहेव ... दोदे समुद्दे सखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण दारतरा सखेज्जाइ जा।तेसंपि सव्व सखेज्ज भाणियव्व अट्ठोवि तहेव, खोदोदस्स णवर सुमणसामाणसाय यत्थ दो देवा महिड्ढीया तहेव रुयगाओ आढत असखिज्ज विक्खम परिक्खेवो, दारतरच जोइसय सव्व असखेज्ज भाणियव्व ॥ ५७ ॥ रुयगोदण समुद रुयगवरे णाम दीविवट्टे, रुयगवरभद,

अर्थ

अहो गौतम ! सम चक्रवाल है परतु विषम चक्रवाल नहीं है अहो भगवन् ! यह कितना चक्रवाल चौडा है ? अहो गौतम ! संख्यात योजन का चौडा है यहां सर्वार्थ और मनोरम ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं ॥ ५६ ॥ रुचकोद समुद्र का इक्षुवर समुद्र जैसे कहना यह सख्यात योजन का लम्बा चौडा है सख्यात योजन की परिधि है, प्रत्येक द्वार का अंतर भी सख्यात योजन का है, सब ज्योतिषी भी सख्यात हैं अर्थ इक्षुवर समुद्र जैसे कहना यहां सोमनस व सुमानस ऐसे दो देवता रहते हैं वैसे ही कहना यों रुचक समुद्र पर्यंत सब सख्याते हैं इतआगे सब असख्यात हैं द्वीप समुद्र की चौडाइ परिधि, द्वार का अतर, ज्योतिषी सब असख्याते हैं ॥५७॥ रुचकवर द्वीप के चारों ओर रुचकवरभद्र नामक द्वीप कहा है यहां रुचकवरभद्र व रुचकवर महाभद्र नामक देव हैं तदनंतर रुचकवर समुद्र कहा है यहां रुचकवर

कुंडलोदे समुद्दे चक्खुसुह चक्खुकताय इत्थ दो देवा महिड्डिया,॥ ५१ ॥कुंडलवरदीवे कुंडलवरभद्दा कुंडलवरमहाभद्दा एत्थदो देवा महिड्डिया ॥ ५२ ॥ कुंडलवरोदे समुद्दे कुंडलवर कुंडल महावरा एत्थ दो देवा महिड्डीया ॥ ५३ ॥ कुंडलवरोभासे दीव कुंडलवरोभासभद्दे कुंडलवरोभासमहाभद्दा यत्थ दो देवा, ॥ ५४ ॥ कुंडलवरोभासोदे समुद्दे कुंडलवराभासवर कुंडलवरोभासमहावरा, इत्थ दो देवा महिड्डिया जाव पलिओवमाठितीया परिवसति ॥ ५५ ॥ कुंडलवरो भास समुद्दं रुयगे नाम दीवे वट्टे वलया जाव चिट्ठति॥किं समचक्कवाल विसमचक्कवाल?

नामक दो देव रहते हैं ॥५०॥ बारहवा कुंडलोद समुद्र है यहां चक्षुशुभ व चक्षुकांत नामक दो महर्धिक देव रहते है ॥५१॥ तेरहवा कुंडलवरभद्र द्वीप यहां कुंडलवरभद्र और कुंडलवर महा भद्र नामक दो महर्धिक देव रहते हैं ॥५२॥तत्पश्चात कुंडलवर समुद्र हैं इसमें कुंडलवर व कुंडलमहावर नामक दो महर्धिक देव रहते हैं, ॥ ५३ ॥ कुंडलवराभास चौदहवा द्वीप है यहां कुंडलवराभासभद्र व कुंडलवराभासमहाभद्र ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं तत्पश्चात् कुंडलवराभास समुद्र है यहां कुंडलवराभासवर व कुंडलवरा भास महावर नामक दोदेव महर्धिक यावत् पल्योपम की स्थिति वाले रहते हैं ॥ ५५ ॥ कुंडलवराभास समुद्र के चारों ओर रुचक द्वीप वलयाकार यावत् रहा हुवा है। अहो भगवन् ! यह क्या सम चक्रवाल है या विषम चक्रवाल है ?

समुद्द,हारवर भासवर,हारवरावभास महावरा एत्थ दो देवा एव ॥ सव्वे तिपडोयाराणेयव्वा जाव सूरवरो भासोदे समुद्दे दीवे भद्दनामा वरनामा होंति उदहीसु जाव पच्छिम भावच खोतवरादि, सयभूरमणपज्जतेसु वावीओ खोतोदग पडिहत्थाओ पव्वयगाय सव्व वइरामय,देवदीवे दो देवा महिड्ढीया देव भद्दा महाभद्दा एत्थ दो देवा, देव समुद्दे देववर देव महावराय एत्थ जाव सयभूरमणे सयभूरमणभद्द सयभूरमणमहाभद्दा एत्थ दो देवा महिड्ढिया सयभूरमणेण्णदीव सयभूरमणोद नाम समुद्दे तहेव वट्टे वलयागार जाव

अर्थ

वैसे द्वीप या समुद्र का नाम लगाना इक्षुवर द्वीप से स्वयभूरमण द्वीप पर्यंत सब द्वीप में पुष्करणियों हैं सब में इक्षुरस समान पानी है सब में उत्पात पर्वत हैं वे सब वज्र रत्नमय हैं सूर्यवरावभास समुद्र से आगे देव द्वीप है यहां देवभद्र और देव महाभद्र ऐसे दो देव रहते हैं उस से आगे देवोदधि समुद्र है यहां देववर व देव महावर नामक दो महर्धिक देव हैं इस से आगे नाग द्वीप नाग नाम समुद्र, यक्षद्वीप यक्षसमुद्र,भूतद्वीप,भूतसमुद्र,स्वयभूरमण द्वीप स्वयभूरमणसमुद्र है इससे आगे द्वीपसमुद्र नहीं है परंतु मात्र अलोक है स्वयभूरमणद्वीप में स्वयभूरमण भद्र और स्वयंभूरमण महाभद्र देव है स्वयभूरमण द्वीप की चारों ओर स्वयभूरमण समुद्र वर्तुल वलयाकार है असंख्यात योजन का लम्बा चौडा है असंख्यात योजन की परिधि है अहो भगवन् ! स्वयभूरमण समुद्र ऐसा नाम क्यों कहा ? अहो गौतम ! स्वयभू

रुयगवरमहाभद्दाय इत्थ दो देवा महिड्डिया रुयगवरोदे समुद्दे रुयगवरा रुयगमहावरा, इत्थ दोदेवा महिड्डिया रुयगवरोभासे दीवे रुयगवरोभास भद्द, रुयगवरोभासमहाभादेय इत्थदोदेवा-रुयगवराभासोदे समुद्दे रुयगवरो भासवर, रुयगवरोभासमहावरा इत्थ दो देवा ॥हारदीवे हारभद्द हारमहाभद्दा इत्थ दो देवा॥हारोदे समुद्दे हारवरमहावरा यत्थ दो देवा ॥ हारवरदीवे हारवरभद्द हारवरमहाभद्दा हारवरोदे हारवर, हारमहावरा, हारवरवरोभासेदीवे हारवरवरोभासभद्द हारवरवरोभास महाभद्दा, हारवरवरोभासोदे

रुचक महावर नाम दो देव हैं तदनतर रुचक वरावभास द्वीप है यहां रुचकवराभास भद्र और रुचक वरावभास महाभद्र देव हैं तत्पश्चात् रुचकवरावभास समुद्र है यहां रुचक वरावभासवर और रुचक वरावभास महावर ऐसे दो देव हैं तत्पश्चात् हार द्वीप है यहां हारभद्र व हार महा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हार समुद्र है यहां हारवर व, हारमहावर देव हैं तत्पश्चात् हारवर द्वीप है यहां हारवर भद्र व हारवरमहाभद्र देव हैं तत्पश्चात् हारवर समुद्र है इस में हारवर व हार महावर दो देव हैं तत्पश्चात् हारवरावभास द्वीप है, यहां हारवरावभासभद्र व हारवरावभासमहा भद्र देव हैं, तत्पश्चात् हारवरावभास समुद्र है यहां हारवरावभासवर और हारवरावभास महावर देव हैं ये सब द्वीप समुद्र के तीन नाम जानना यावत् सूर्यवरावभास पर्यंत कहना द्वीप में भद्र व महाभद्र और समुद्र में वर व महावरदेव है सब के

सूत्र

देवोदे समुद्दे पण्णत्ते एव णागे जक्खे भूतेसयभूरमणे दीवे एगे सयभूरमणेसमुद्दे नाम-धेज्ज पण्णत्ते ॥ ५९ ॥ लवणस्सण भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! लवणस्स उदए आइले रइल कवे लवणे कडुए अपेज्ज बहू दुपय चउप्पय मिग पसु पक्खि सरिसवाण पण्णत्थण, तज्जोमियाण सत्ताण ॥ कालोयस्सण भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए अस्साएण पण्णत्ते ? गोयमा ! आसले मासले पसले काले मासरासिवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते॥पुक्खरोदस्सण भंते !

अर्थ

नाम का एक ही द्वीप है, देवोदधि नाम का एक ही समुद्र है, ऐसे ही नाग द्वीप, नाग समुद्र, यक्ष द्वीप, यक्ष समुद्र, भूतद्वीप, भूत समुद्र, स्वयभूरमण द्वीप, स्वयभूरमण समुद्र के नाम के एक २ ही द्वीप समुद्र हैं ॥५९॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! लवण समुद्र का पानी मलिन, गोमूत्र जैसा, लवण जैसा, कटुक, सार युक्त, अपेय, और उस ही पानी में उत्पन्न होनेवाले मत्स्य कच्छादि सिवाय अन्य पशु पक्षी सरिसर्प वगैरह को पीने योग्य नहीं है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! सुखकारी, व मनोहर है वर्ण से श्याम वर्णवाला,माष(उडिद) की राशि जैसा है,और स्वाभाविक पानी जैसा स्वाद है अहो भगवन् ! पुष्करोद समुद्र का कैसा पानी है ? अहो गौतम ! स्वच्छ निर्मल, जातिवंत, हलका व स्फटिक समान श्वेत है, और

असंखेज्जाइं जोयण सतसहस्साइं परिक्खेवेण जाव अट्ठो ॥ गोयमा ! सयभूरमणोदे उदये अच्छे पच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेण पण्णत्ते, सयंभूरमणवर सयंभूरमणमहावरा, यत्थ दोदेवा महिड्डीया, सेस तहेव जाव असंखेज्जाओ तारागण कोडीओ सोभिसुवा ३ ॥ ५८ ॥ केवतियाण भंते ! जंबुद्दीवे नामधेज्जेहिं पण्णत्ते? गोयमा! असंखेज्जा जंबूदीवा दीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥केवतियाण भंते! लवणसमुद्दा पण्णत्ता? गोयमा! असंखेज्जा लवणसमुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता॥एवंधायति संडावि एवं जाव असंखेज्जा सूरदीवा नामधेज्जेहिं पण्णत्ते, एगे देवेदीवे पण्णत्ते एगे

रमण समुद्र का पानी निर्मल, स्वच्छ, पथ्य, निरोगी, आविर्वत, हलका स्फटिक वर्ण जैसा, और स्वाभाविक पानी के स्वाद वाला है वहां सयंभूरमणवर और सयंभूरमणमहावर ऐसे दो महर्धिक देव रहते हैं शेष सब वैसे ही पूर्ववत् जानना वहां असंख्यात क्रोडा क्रोडी ताराने शोभा की, शोभा करते हैं व शोभा करेंगे ॥ ५८ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप के नामवाले कितने द्वीप कहे हैं ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप के नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं अहो भगवन् ! लवण समुद्र के नाम के कितने द्वीप कहे हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र के नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं ऐसे ही धातकी खण्ड नाम के असंख्यात द्वीप यावत् सूर्यवराभास नाम के असंख्यात द्वीप कहे हैं परंतु देव द्वीप

सूत्र

णो तिणट्ठे समट्ठे वारुणोदए एत्तो इट्ठतराएचेव जाव आसाएणं पण्णत्ते ॥ खीरोदस्सणं भंते ! उदए केरिसए अस्साएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा नामए रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स चतुरक्क गोखीरे पयत्तमंदग्गिसु कढित आउत्तखंडमच्छंडितोववेते वण्णेण उववेते जाव फासेण उववेए भवतारूवे सिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! खीरोयस्स एत्तो इट्ठ जाव अस्साएण पण्णत्ते॥धतोदस्सण जहा नामए सारतिक्कस्स गोघयवरस्स मंडेसल्लइ किण्णियार पुप्फवण्णाभे सुकढित उदार सज्झवीसंदिते वण्णेण उववेते जाव फासेण उववेते

अर्थ

चार स्थान परिणमित गौ का दुग्ध को मंद अग्नि से पकावे, उस में उत्तम गुड सक्कर वगैरह डालकर चतुरंत चक्रवर्ती के लिये भाग योग्य बनावे यावत् वह वर्ण यावत् स्पर्शयुक्त होवे अहो भगवन् ! क्या क्षीरोद समुद्र का पानी ऐसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से अधिक स्वादवाला क्षीरोद समुद्र का पानी है अहो भगवन् ! घृतोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे सल्लकी अथवा कणवर के पुष्प समान श्वेत अच्छा तरह उष्ण किया हुवा स्वच्छ गौ घृत वर्ण यावत् स्पर्शयुक्त होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते हैं क्या ऐसा घृतोद समुद्र का पानी है? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस से भी अधिक स्वादवाला घृतोद समुद्र का पानी है अहो भगवन् ! इक्षुरस समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? जैसे जातिवंत, पक्व होने से हरताल जैसे पीले

समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अच्छे पच्छे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे पगतीए उदगरसेणं पण्णत्ते॥ वारुणोदस्सणं भंते ! समुद्दस्स उदए केरिसए आसाएणं पण्णत्ते ? गोयमा ! से जहा णामए पत्तासवातिवा चोयासवेतिवा खज्जुरसारेतिवा मुद्दियसारेतिवा सुपिक्कखोयरसेतिवा, मेरएतिवा काविसायणेतिवा चंदप्पभातिवा मणोसिलागातिवा वरसिधूतिवा वरवारुणीतिवा अट्ठपिट्ठ परिनिट्ठियातिवा जंबूफल कालियावण्णा वरपसण्णा उक्कासमदप्पत्ता ईसिं उट्ठावलंबिणी ईसिं तंबच्छिकरणी, ईसिं वोच्छोयकडुई आसला मांसला पेसला वण्णेणं उववेता जाव

स्वाभाविक पानी समान स्वादवाला है अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! जैसे पत्र का आसव, पुष्प का आसव, खर्जुर का आसव, द्राक्षासव, पका हुवा इक्षु का रस, मेरक मद्यजाति, कालिसायन, चंद्र प्रभा मदिरा विशेष, मण.शीला का मदिरा, वरप्रधान सिंधु, उत्तम वारुणी, मदिरा, आठवार पिष्ट परिणत मदिरा, जम्बूफल समान कृष्ण वर्ण वाली मदिरा कृष्ण रसवंत, ओष्ट से पाने से किंचित् विलग होवे, पढने से चक्षुओं लाल होवे, आस्वाद योग्य, पुष्टकारी, मनोहर वर्ण युक्त यावत् संस्कार युक्त है अहो भगवन् ! वारुणोद समुद्र का पानी क्या ऐसा स्वाद वाला है ! अहो गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं है वारुणोदधि समुद्र का पानी इस से भी अत्यंत इष्टकार यावत् स्वादवंत है अहो भगवन् ! क्षीरोद समुद्र का पानी कैसा स्वाद वाला है ? अहो गौतम ! जैसे

गोयमा ! चत्तारिसमुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता तजहा—लवणे, वरुणोदे, खीरोदे घउदे ॥ कतिण भंते ! समुद्दा पगतीए उदगरसेण पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ समुद्दा पगतीए उदगरसेण पण्णत्ता ? तजहा—कालोयण पुक्खरोदे सयभूरमणे ॥ अवसेसो समुद्दा ? अवसेसा समुद्दा उस्सण्ण खोयरसाए पण्णत्ता समणाउसो!॥ ६१॥कइण भंते! समुद्दा बहु मच्छ कच्छभाइण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ पण्णत्ता ? तजहा—लवणे कालोयणे सयभूरमणे अवसेसा समुद्दा अप्प कच्छमच्छ माइण्णा पण्णत्ता लवणेण भंते ! समुद्दे कतिमच्छजाति कुलकोडिजोणी पमुह सतसहस्सा पण्णत्ता ?

अर्थ

पृथक् २ स्वादवाला है ? अहो गौतम ! चार समुद्र का पानी पृथक् २ स्वादवाला है जिन के नाम-लवणसमुद्र, वारुणोदधि, क्षीरोदधि और घृतोदधि, अहो भगवन् ! कितने समुद्र का पानी स्वाभाविक पानी जैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! तीन समुद्र का पानी स्वभाविक पानी जैसा स्वादवाला है जिनके नाम-कालोदधि, पुष्करोदधि, और स्वयम्भूरमणसमुद्र अहो आयुष्यवंत श्रमणो ! शेष सब समुद्र का पानी प्राय इक्षुरस समान ही है ॥ ६१ ॥ अहो भगवन् ! बहुत मत्स्य कच्छ वाले कितने समुद्र हैं ? अहो गौतम ! ऐसे तीन समुद्र हैं जिन के नाम—लवण, कालोद और स्वयंभूरमण, शेष सब समुद्र अल्प कच्छ, मत्स्य वाले हैं अहो भगवन् !

भंवेतारूवासिया ? नो तिणट्ठे समट्ठे एतो इट्ठतराए ॥ खोदोदगस्स से जहा नामए उच्छुण जवाण पुडवाण हरियाण विजराण भेरुड उच्छूणवा कालपोराणतिभागणिव्वा डियवाडाण मलवगपरजत परिमागालियमिचो जेयरसे होज्जा वत्थपूते चाउ जातिग सुवासिते अइपत्थ लहुए वण्णेण उववेते जाव भंवेतारूवेसिया ? णो तिणट्ठे समट्ठे, एतो इट्ठतराए ॥ एव ससगणावि समुद्दाण यढो जाव सयभूरमणस्सावि णवरिं अच्छे जहा पुक्खरोदस्स ॥ ६० ॥ कातिण भंते ! समुद्दा पत्तेगरसा पण्णत्ता ?

इक्षु के टुकडे होवे उस का ऊपर व नीचे का भाग काटकर मध्य भाग को पर्यंत वेलों से पकाने के यंत्र से रस नीकाले, उसे कपडे मे छानकर तृण रहित बनावे, पुनः उस में दालचिनी एलायची केसर कर्पूर वगैरह डालकर सुवासित बनावे अत्यंत पथ्यकारी शिरोमी इसका और वर्ण यावत् स्पर्श से युक्त होवे तब गौतम स्वामी पृच्छा करते है कि क्या ऐसा पानी है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, इस से भी अत्यंत इष्ट है यों सब समुद्र का पानी इक्षु समान जानना यावत् भूतोदधि समुद्र पर्यंत कहना अहो भगवन् ! स्वयंभूरमण समुद्र का पानी कैसा स्वादवाला है ? अहो गौतम ! स्वयंभूरमण समुद्र का पानी स्वच्छ जातिवंत निर्मल पुष्करोदधि जैसा है ॥ ६० ॥ अहो भगवन् ? कितने समुद्र का पानी

जोयण सयाइ उक्कोसेण, सयभूरमणे जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेण दस जोयण सयाइ ॥ ६३ ॥ कवतियाण भंते ! दीव समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ? गोयमा! जावइया लोगे सुभानामा सुभा वण्णा जाव सुभाफासा एवतिया दीव समुद्दा णामधेज्जेहिं पण्णत्ता ॥६४॥ दीव समुद्दाण भंते! कवतिया उद्धार समएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जावइया अड्ढाइज्जाइ उद्धार सागरोवमाण उद्धार समया एवतिया दीव समुद्दा उद्धार समएण पण्णत्ता ॥ ६५ ॥ दीव समुद्दाण भंते ! किं पुढवि परिणामा आउपरिणामा जीव परिणामा पोग्गल परिणामा ? गोयमा ! पुढवि परिणामावि

अर्थ

स्वयंभूरमण समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बड़ी अवगाहना कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की ॥ ६३ ॥ अहो भगवन् कितने नाम वाले द्वीप समुद्र हैं? अहो गौतम! लोकमें जितने शुभ नाम, शुभ वर्ण शुभगंध शुभरस शुभ स्पर्श वाली वस्तु के नाम हैं उतने नामवाले द्वीप समुद्र हैं ॥६४॥ अहो भगवन्! द्वीपसमुद्र कितने अद्धा समय जितने हैं? अहो गौतम! उद्धार अढ़ाइ सागरोपम के जितने समय होवे उतने द्वीप समुद्र हैं ॥ ६५ ॥ अहो भगवन् ! द्वीप समुद्र क्या पृथ्वी परिणाम हैं, अप् परिणाम हैं, जीव परिणाम और पुद्गल परिणाम हैं ? अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालो-यएण भंते! समुद्द कतिमच्छजाति पण्णत्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयंभूरमणेण भंते !समुद्द कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेणं भंते!समुद्दे मच्छाण के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग, उक्कोसेणं पंच जोयण सयाइं एवं कालोयणे सत्त

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन् ! कालोद समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोड कही हैं?अहो गौतम! नव लाख कुल कोटी कही अहो भगवन्! स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साढे बारह लाख कुल कोटि कही ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात सो योजन की अहो भगवन्!

गोयमा ! सत्तमच्छ जाति कुलकोडि जोणिपमुह सत सहस्सा पण्णत्ता ॥ कालो-यणेण भंते ! समुद्द कतिमच्छजाति पण्णत्ता? गोयमा! नवमच्छजाति कुलकोडीजोणी पमुह सयसहस्सा पण्णत्ता॥सयभूरमणेण भंते !समुद्द कतिमच्छजाति कुलकोडी पण्णत्ता? गोयमा ! अद्धतेरस मच्छजाति कुलकोडी जोणी पमुह सय सहस्सा पण्णत्ता ॥ ६२ ॥ लवणेण भंते!समुद्दे मच्छाण के महालया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग, उक्कोसेण पंच जोयण सयाइं एवं कालोयणे सत्त

लवण समुद्र में मत्स्य की कितने लाख कुल कोटि कही हैं ? अहो गौतम ! लवण समुद्र में सात लाख कुल कोटी कही है अहो भगवन् कालोद समुद्र में मच्छ की कितने लाख कुल कोट कही है? अहो गौतम! नव लाख कुल कोटी कही अहो भगवन्! स्वयंभूरमण समुद्र में कितने लाख मत्स्य की कुल कोटि कही है? अहो गौतम ! साढे बारह लाख कुल कोटि कही ॥ ६२ ॥ अहो भगवन् ! लवण समुद्र में मत्स्य के शरीर के कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट पांचसो योजन की अहो भगवन् ! कालोदधि समुद्र में मत्स्य के शरीर की कितनी कही अवगाहना कही है? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात सो योजन की अहो भगवन्!

परिणामेण, एवं वालेसवादिय तिसएहिंवि सुरूवपरिणामे, दुरूवपरिणामेय एवं सुब्भिगंध परिणामेव, दुब्भिगंध परिणामेय॥ एवं सुरस परिणामेय, दुरस परिणामेय एवं सुफासपरिणामेव दुफासपरिणामेय ॥ २ ॥ सेणूण भंते! उच्चावए सुसद्द परिणामेसु, उच्चावएसु रूवपरिणामेसु, एवं गंध रस-फास-परिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमंतिवि वत्तव्वंसिया? हंता गोयमा! उच्चावएसु सद्दपरिणामेसु परिणममाणा पोग्गला परिणमंति वत्तव्वंसिया ॥ ३ ॥ सेणूणं भंते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दावा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा ! सुब्भिसद्दा दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ॥ से णूण भंते ! सुरूवा पोग्गला

अर्थ — ऐसे ही गंध के दो भेद सुरभिगंध परिणाम व दुरभिगंध परिणाम रस परिणाम के दो भेद-सुरस परिणाम व दुरस परिणाम ऐसे ही शुभ स्पर्श परिणाम व दुष्ट स्पर्श परिणाम ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! उत्तम अधम शब्द परिणाम, उत्तम अधम रूप परिणाम, ऐसे ही गंध परिणाम, रसपरिणाम व स्पर्श परिणाम में परिणमते हुए पुद्गल परिणमते हैं ऐसा क्या कहना ? हां गौतम ! उत्तम अधम शब्द परिणाम में यावत् परिणमने वाले पुद्गल परिणमते हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! शुभशब्द के पुद्गल दुष्ट शब्दपने क्या परिणमते हैं अथवा दुष्ट शब्द के पुद्गल-शुभशब्द पने क्या परिणमते हैं ? हां गौतम ! शुभ शब्द के

आउपरिणामावि जीवपरिणामावि पोग्गल परिणामावि ॥ ६२ ॥ दीव समुद्दाण भंते ! सव्वपाणा सव्वभूया सव्वजीवा सव्वसत्ता पुढवि काइयत्ताए जाव तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ? हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणतखुत्तो ॥ इतिदीव समुद्दा उद्देसो सम्मत्तो ॥ ६७ ॥ कतिविहेणं भंते ! इंदियविसये पोग्गल परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय विसए पोग्गल परिणामे पन्नत्ते तंजहा—सोइंदिय विसये जाव फासिंदिय विसए ॥ १ ॥ सोइंदिय विसएणं भंते ! पोग्गल परिणामे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुब्भिसद्द परिणामेय दुब्भिसद्द

पृथ्वी परिणाम, अप परिणाम, जीव परिणाम व पुद्गल परिणाम इन चारों परिणाम मय है ॥६६॥ अहो भगवन्! द्वीप समुद्र में सब प्राण, भूत, जीव व सत्त्व क्या पृथ्वीकायापने यावत् त्रसकायापने परिणमे? हां गौतम! एक वार अथवा अनंत वार यों द्वीप समुद्र का उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ६७ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय विषय रूप पुद्गल परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय विषय के पुद्गल परिणाम के पांच भेद कहे हैं, जिन के नाम—श्रोत्रेन्द्रिय का विषय यावत् स्पर्शेन्द्रिय का विषय. ॥१॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय विषयका पुद्गल परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! इस के दो भेद कहे हैं सुपना-सुरभिशब्द परिणाम और दुरभिशब्द परिणाम ऐसे ही चक्षु इन्द्रिय विषय के दो भेद सुरूप व दुष्ट रूप परिणाम

पोग्गलेखिविचा पभू तमेव अणुपरियट्टित्ताणं गिण्हित्तए ? हंता पभू ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ देवेण महिड्ढीए जाव गिण्हित्ता ? गोयमा ! पुग्गल खिवित्ते समाणे पुव्वामेव सिग्घगती भवित्ता,तओ पच्छा मदगती भवति, देवेण महिड्ढीए जाव महाणु भागे पुव्वापिपच्छापि सीहे सीहगइ चेव तुरिए तुरियगई चेव, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जाव तमेव अणुपरियट्टित्ताण गिण्हित्तए ॥५॥ देवेण भंते! महिड्ढीए जाव महाणु भागे बाहिरए पुग्गले अपरियाइत्ताय पुव्वामेव बाल अछेत्ता अभित्ता पभू गठित्तए !

अर्थ पहिले पाषाणादि पुद्गल डाल और जम्बूद्वीप की प्रदक्षणा कर उसे पुन ग्रहण करने में क्या समर्थ है ? हां गौतम! वह समर्थ है अहो भगवन् ! ऐसा क्यों कहा कि महर्धिक देव पाषाणादि डालकर यावत् लेने को समर्थ है ? अहो गौतम ! जिस पुद्गल का प्रक्षेप किया जाता है उसकी प्रथम शीघ्र गति होती है और पीछे से मंद गति होती और महर्द्धिक यावत् महानुभाग देवको पहिले पीछे शीघ्र त्वरित गति होती है,इसलिये ऐसा कहा है यावत् जम्बूद्वीपको परिवृत्तना करके उसपुद्गलको ग्रहण कर सकता है ॥५॥ अहो भगवन्! महर्द्धिवाला देव यावत् महानुभागवाला देवता बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना ही पहिले से बाल का छेदन भेदन किये बिना ग्रहण करने में क्या समर्थ है ? अहो गौतम

दुरूवत्ताए परिणमति दुरुवा पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमति ? हता गोयमा ! एव सुब्भिगधा पोग्गला दुब्भिगधत्ताए परिणमति दुब्भिगधा पोग्गला सुब्भिगधात्ताए परिणमति ? हता गोयमा ! एव सुरसा दुरसत्ताए दुरसा सुरसत्ताए परिणमति ? हंता गोयमा ! एव सुफासा दुफासा त्ताए दुफासा सुफासत्ताए ? हता गोयमा ! ॥ तचेव भते ! सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति दुब्भिसद्दा सुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ? हता गोयमा ! एव सुरूवा दुरूवा एव गधावि रसावि फासावि तचेव सुफासा दुफासा दुफासासुफात्ताए परिणमति ? हता गोयमा ! जाव परिणमति ॥ ४ ॥ देवेण भते ! महिड्डिए जाव महाणुभावे पुव्वामेव

पुद्गल दुष्ट शब्दपने परिणमते है और दुष्ट शब्द के पुद्गल शुभ शब्दपने परिणमते हैं अहो भगवन् ! सुरूप के पुद्गल क्या दुष्ट रूपपने परिणमते हैं अथवा दुष्ट रूप के पुद्गल सुरूप पने क्या परिणमते हैं ? हां गौतम ! ऐसे ही सुरभि गंध के पुद्गल दुरभिगंध पने परिणमते हैं और दुरभिगंध के पुद्गल सुरभिगंध पने परिणमते है सुरस के पुद्गल दुष्ट रसपने परिणमते हैं और दुष्ट रस के पुद्गल सुरसपने परिणमते हैं और शुभ स्पर्श के पुद्गल दुष्ट स्पर्श पने और दुष्ट स्पर्श के पुद्गल शुभस्पर्श पने परिणमते हैं इस तरह शब्द रूप, गंध रस व स्पर्श का वर्णन हुआ ॥ ५ ॥ अहो गौतम ! कोई महर्द्धिक यावत् महानुभाववाला देव

सूत्र

अभेत्ता पमूदीही करित्तएवा हस्सीकरेत्तएवा? नोतिणट्ठे समट्ठे ॥ एव चत्तारिविगमा॥ पढमबियमगेसु अपरियाइत्ता एगतरियग अछेत्ता अभेत्ता सेस तहेव तचेवण सधि छउमत्थ ण जाणति णपासति एव सुहमचण दीही करेज्जवा हस्सी करेज्जवा॥ ६॥ अत्थिण भते ! चदिम सूरियाण हेट्ठिंपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि समपि तारारूवा, अणुपि तुल्लावि उप्पिपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि ? हता अत्थि ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चति अत्थिण चदिम सूरियाण जाव उप्पिपि तुल्लावि ? गोयमा !

अर्थ

गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है ऐसे ही चारगमा कहना पहिले दूसरे में ग्रहण किये विना और तीसरे चौथ भाग में छेदन भेदन रहित कहना सभी भी छद्मस्थ जानने देखने समर्थ नहीं है, क्यों की दीर्घ और ह्रस्व करने की विधि बहुत ही सूक्ष्म है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! चद्र सूर्य के विमान नीचे जो तारा सूर्य ज्योतिषी देव हैं वे क्या कांति से हीन अथवा तुल्य है चंद्र सूर्य के समविभाग में तारा रूप हैं वे क्या कांति से हीन व तुल्य है, और चद्र सूर्य ऊपर तारा हैं व क्या कांति में हीन व तुल्य हैं ? अहो गौतम ! वे तारा कांति में हीन व तुल्य हैं अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र सूर्य के नीचे जो तारा रूप विमान हैं व कांति में हीन और तुल्य है यावत् ऊपर के तारा कांति में हीन व तुल्य है ? अहो गौतम ! जैसे २

णो तिणट्ठे समट्ठे॥ देवेण भंते! महिड्डीए जाव महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पुव्वामेव वालं छित्ता भित्ता पभू गण्हित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे॥ देवेण भंते! महिड्डीए बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पुव्वामेव वालं अछित्ता अभित्ता पभू गण्हित्तए? णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ देवेण भंते! महिड्डीए जाव महाणुभाग बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पुव्वामेव वालं छित्ता भित्ता पभू गण्हित्तए? हंतापभू ॥ तंचेवणं सिंधि छउमत्थे णजाणति न पासति, एव सुहुमंचणं गढ्ढा॥ देवेण भंते! महिड्डिए पुव्वामेव वालं अछेत्ता

यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण किये बिना पहिले से बालका छेदन भेद कर ग्रहण करने में क्या समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महानुभाग देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर बालका पहिले से ही छेदन भेदन किये बिना ही ग्रहण करने में समर्थ है? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! महर्धिक यावत् महानुभाग वाला देव बाहिर के पुद्गल ग्रहण कर और बाल को पहिले से ही छेदन भेदन कर क्या उसे ग्रहण करने में समर्थ है? हां गौतम! वह समर्थ है इनको छद्मस्थ नहीं जान सकते हैं नहीं देख सकते हैं क्योंकी वह बहुत सूक्ष्म होती है अहो भगवन्! महर्द्धिक यावत् महानुभाग वाले देव पहिले से ही बालका छेदन भेदन किये बिना ही दीर्घ अथवा ह्रस्व करने में क्या समर्थ है? अहो

सूत्र

मिल्लाओ चरिमंताउ केवतिय अवाहए जोतिस चारचरंति ? गोयमा ! एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अवाहए जोतिसए चार चरेति ॥ एव दक्खिणिल्लाओ पच्चत्थिमिल्लाओ उत्तरिल्लओ एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयण जाव चार चरति ॥ ९ ॥ लोगन्ताओ भंते ! केवतिय अबाहाए जोतिसए पन्नत्ते ? गोयमा ! एक्कारसेहिं एक्कारएहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोतिसे पन्नत्ते ॥ १० ॥ इमीसेण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो केवतिय अबाहाए सव्वहट्ठिल्ले ताराख्वे चार चरति केवतिय अबाहाए सूरिएविमाणे चार चरति केवतिय अबाहाए चदविमाणे चार चरति केवइयं अबाहाए सव्वउवरिल्ले ताराख्वे चार चरइ ? गोयमा ! इमीसेण

अर्थ

चाल चलते हैं। अहो गौतम! मेरु पर्वत से ११२१ योजन के अन्तर से ज्योतिषी चलते हैं, ऐसे ही दक्षिण, पश्चिम व उत्तर दिशा का जानना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! लोकान्त से लोक में कितने दूर ज्योतिषी रहे हैं ? अहो गौतम ! ११११ योजन पर ज्योतिषी है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमि भाग से कितने दूर ऊपर सब से नीचे के तारे चाल चलते हैं, कितनी दूर पर सूर्य का विमान चलता है कितनी दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितनी दूर पर ऊपर के तारों के विमान चलते हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमि भाग से ७९०

जहा जहाण तेसिं देवाण तवनियम बंभचेरवासाइं उक्कडाइं उस्सियाइं भवति तहातहाण तेसिं देवाण एवं पण्णायति तजहा अणुएवा तुल्लावा सेतेणट्ठेण गोयमा ! अत्थिणं चंदिमसूरियाणं आव हेट्ठिंपि तारारूवा अणुपि तुल्लावि ॥ ७ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! चंदिम सूरियस्स केवतिओ णक्खत्त परिवारो पण्णत्तो ? केवतिओ महग्गह परिवारो पण्णत्तो, केवतिओ तारागण कोडा कोडीओ परिवारो पण्णत्तो ? गोयमा ! एग मेगस्सण चंदिम सूरियस्स अट्ठासीयगहा अट्ठावीसंच होइ णक्खत्ता एग ससीपरिवारो पण्णत्ता, एतो तारागण छावट्ठिसहस्साइं णवचेवसयाइं पचसत्तराइं एगससी परिवारो तारागण कोडा कोडीण ॥ ८ ॥ जंबूद्दीवेण भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थि

तारा रूप विमान के अधिष्ठाता देवोंने पूर्व भव में तप, नियम, ब्रह्मचर्य प्रमुख उत्कृष्ट किया अैसे वे देवता कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य होते हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा है कि चंद्र सूर्य के नीचे तारा यावत् ऊपर के तारा कांति आदिगुणों से हीन व तुल्य है ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! एक चंद्रमा के कितना नक्षत्रोंका परिवार, कितने ग्रहका परिवार व कितने ताराओं का परिवार है? अहो गौतम! एक चंद्र सूर्य का अठ्ठासी ग्रह अठ्ठाइस नक्षत्र और छासठ हजार नवसो पचत्तर कोडा कोडी तारा का परिवार है ॥८॥ अहो भगवन् जम्बूद्वीप के मेरु से पूर्व के परिमाण से ज्योतिषी कितने अंतर पर रहकर

सूत्र

तोण भते ! केवइए अवाहाए चदविमाणे चार चरइ, केवइय सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चरइ ? गोयमा ! सूरविमाणातोण असीएहिं जोयणेहिं अबाहाए चदविमाणे चार चरति, जोयणसए अबाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चराति ॥ चदविमाणाओण भते ! केवतिय अवाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूव चार चरति ? गोयमा ! चदविमाणातोण वीसाए जोयणहिं अबाधाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चार चराति, एवामेव से पुव्वावरेण दसुत्तरसत जोयण बाहल्ले तिरिय मसखेज्जे जोतिस विसए पण्णत्ते ॥ ११ ॥ जबूद्दीवेण भते ! कयरे नक्खत्ते सव्वब्भतरिल्ल तारारूवे चार चारति, कयरे नक्खत्ते सव्व बाहिरिल्ल

अर्थ

दूर ऊपर चद्रका विमान है और कितनी दूरपर ऊपर के तारारूप विमान है ? अहो गौतम ! सूर्य विमान से चद्र विमान ८० योजन ऊपर है और १०० योजन ऊपर तारा रूप विमान है अहो भगवन् ! चद्र विमान से तारा कितने दूरपर है ? अहो गौतम ! चद्र विमान से ऊपर बीस योजन तारारूप है यों सब मीलकर ११० योजन में तीरछा असख्यात योजन पर्यंत ज्योतिषी के विमान कहे हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में कौनसा नक्षत्र सब के अभ्यंतर तारारूप में चाल चलता है, कौनसा नक्षत्र सब से बाहिर तारारूप में चाल चलता है कौनसा नक्षत्र सब से ऊपर तारारूप चाल चलता है और

रयणप्पभाए पुढवीए बहु समरमणिज्ज सत्तहिं णउएहिं जोयण सतेहिं अबाहाए सव्वहेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति अट्ठहिं जोयण सतेहिं अबाहाए सूरविमाण चार चरइ, अट्ठहिं असीएहिं जोयण सएहिं अबाहाए चंदविमाण चारचरइ नवहिं जोयण सएहिं अबाधाए सव्वउवरिल्ल तारारूवे चार चरति॥ सव्वहिट्ठिल्लाओण भंते ! तारारूवाओ केवतिय अबाहाए सूरविमाण चार चरइ, केवतिय आबाहाए चंदविमाणे चार चरइ, केवतिय अबाहाए सव्व उवरिल्ले तारारूवे चारं चरति ? गोयमा ! सव्वहेट्ठिल्लातोण दसहिं जोयणेहिं सूरविमाणे चार चरति, णवएहिं जोयणेहिं अबाधाए चंदविमाणे चार चरति, दसुत्तरे जोयणसए अबाहाए सव्वउवरिल्ले तारारूवे चार चरति ॥ सूरविमाण

योजन ऊंचे सब ज्योतिषी के नीचे तारा मंडल कहा है, ८०० योजन ऊंचे सूर्य विमान चलता है, ८८० योजन ऊंचा चंद्र विमान चलता है, ९०० योजन ऊंचा उपर के तारा रूप विमान चलते हैं अहो भगवन् ! सब से नीचे के तारारूप विमान से कितने दूर पर सूर्य का विमान चलता है, कितने दूर पर चंद्र का विमान चलता है और कितना दूर पर उपर के तारा रूप मंडल है ? अहो गौतम ! सब से नीचे के तारा रूप विमान से १० योजन ऊपर सूर्य का विमान चलता है, ९० योजन ऊपर चंद्र का विमान चलता है और ११० योजन ऊंचे उपर के तारा विमान चलते हैं अहो भगवन् सूर्य विमान से कितनी

सूत्र

चंदविमाणाण भंते ! केवतिय आयाम विक्खंभेण केवइय परिक्खेवेण केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! छप्पन्नएगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेण, त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, अट्ठावीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते॥ सूरविमाणस्स सच्चेव पुच्छा ? गोयमा ! अडयालीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, चउव्वीस एगसट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेण पण्णत्ते, एव गहविमाणेवि अद्ध जोयण आयाम विक्खंभेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, कोस बाहल्लेण पण्णत्ते, ताराविमाणेण कोस आयाम विक्ख-

अर्थ

॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमान कितना लम्बा चौडा व कितना परिधिवाला व कितना जाडा है ? अहो गौतम ! एक योजन के ६१ भाग में से ५६ भाग का लम्बा चौडा है, इस से तीन गुनी से अधिक परिधि है और एक योजन के एकसठिये अट्ठाइस भाग का जाडा है सूर्य विमान की पृच्छा? अहो गौतम ! एक योजन के एकसठिये अडतालीस भाग का लम्बा चौडा है इससे कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है और एक साठये २८ भागका जाडा है ग्रह विमान आधा योजन का लम्बा चौडा है तीन गुनी से अधिक परिधि है, और एक कोस जाडा है तारा विमान एक कोस का लम्बा चौडा है

चारं चराति, कयरे नक्खत्ते सव्व उवरिल्ले चार चराति, कयरे णक्खत्ते सव्व हेट्ठिल्ले तारारूवे चार चरति ? गोयमा! जम्बूद्दीवे अभिइ णक्खत्ते सव्वब्भिंतरिल्ले तारारूवे चार चराति, मूल णक्खत्ते सव्व बाहिरिल्ले तारारूवे चार चराति, साती णक्खत्ते सव्वुप्परिल्ले जाव चराति, भरणी णक्खत्त सव्व हेट्ठिल्ल तारारूवे चार चराति ॥१२॥ चंदविमाणेण भंते ! किं संठित ? गोयमा! अद्ध कविट्ठ संठाण संठित, सव्व फालि-यामये अब्भुगतमूसितप्पहसिते वण्णओ, एवं सूरविमाणावि, एवं गहविमाणावि, नक्खत्त विमाणावि, ताराविमाणावि, सव्वे अद्ध कविट्ठ संठाण संठिते ॥ १३ ॥

कौनसा नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ? अहो गौतम ! जम्बूद्वीप में अभिजित नक्षत्र सब से अभ्यतर तारारूप में चाल चलता है मूल नक्षत्र सब से बाहिर के तारारूप में चाल चलता है स्वाति नक्षत्र सब से ऊपर यावत् चाल चलता है और भरणि नक्षत्र सब से नीचे के तारारूप में चाल चलता है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमान का क्या संस्थान कहा हुवा है ? अहो गौतम ! अर्ध कपित्थ फल के संस्थान है सब स्फटिक रत्नमय है अभ्युद्गत कांतिवाला वगैरह वर्णन सब पूर्ववत् जानना ऐसे ही सूर्य, ग्रह, नक्षत्र व तारा विमान का जानना ये सब अर्ध कपित्थ के संस्थान वाले

न्नितगतीण ऊसियसुणिमियसुजाय अफोडियाणगुलाण वयरामय णक्खाण वयरामय एताण वयरामयदाढाण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज जोतगसुजोचि याण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाण मणोरमाण मणोहराण अमियगतीण अमिय बलवीरियपुरिसक्कार परक्कमाण महय अफोडितसीहनाइय बोल कलयलरवण महुरेण मणहरेणय पूरेता अबरदिसाओय सोभयता चचारिदेव साहस्सीउ सीहरूव धारिण देवाण पुरिच्छिमिल्लं बाह परिवहाति ॥ ५ ॥ चदविमाणस्सण दक्खिणेण सेयाण

वन की गति गर्वयुक्त है, ऊंचे से नीची झालती हुई उन की पुच्छा है, वज्र रत्नमय नख हैं, वज्र रत्नमय दाढा है, रक्त सुवर्णमय जिव्हा और तालु है, रक्त सुवर्णमय ओत्तर से जोते हुवे हैं, इच्छानुसार चलने वाले प्रीतिकारी गमन वाले, मन जैसे शीघ्र गति वाले, मनोरम गति वाले, मनोहर गति वाले, अमित गति, बल, वीर्य, पुरुषाकार व पराक्रम वाले हैं बड २ आस्फोटित सिंह नाद कलकल और मनोहर शब्द से आकाश को पूरते हुवे, दशोंदिशि को शोभित बनाते हुवे चार हजार देव पूर्व दिशा की बाहा उठाकर चलते हैं ॥ ५ ॥ चन्द्रमा के दक्षिण दिशा में चार हजार देव हस्ती के रूप से विमान उठाते हैं वे हस्ती श्वेत शुभकांति वाले शंख तक समान विमल निर्मल दधि पिण्ड, गोक्षीर, समुद्र

भेण त तिगुण सविसेस परिक्खेवेण, पंचधणुसयाइं बाहल्लेण पण्णत्ते ॥ १४ ॥ चंदविमाणेणं भंते! कतिदेव साहस्सीओ परिवहति? गोयमा ! सोलस देव साहस्सीओ परिवहंति, चंदविमाणस्सणं पुरत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सप्पभाणं संखतलविमलनिम्मल दधिघण गोखीर फेण रययणिगर पगासाणं थिर लट्ठ पउट्ट पीवर सुसिलिट्ठ सुतिक्ख-दाढा विडंबियत मुहाणं रत्तुप्पल पत्तमउय सूमाल तालु जीहाणं, पसत्थ सलट्ठ वेरुलिय भिसंत कक्खडाणं विसाल पिवरोरु पडिपुण्णविउल खंधाणं मिउविसत्तय पसत्थ सुकुमाल सुहुम लक्खण विछिण्ण केसरसढोव सोभिताणं चंकामिय ललित पुलिय धवलग-

कुछ अधिक तीन गुनी परिधि है, और ५०० धनुष्य का जाडा है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमानको कितने हजार देव उठाते हैं ? अहो गौतम ! सोलह हजार देव चंद्र विमान को उठाते हैं जिन में से चार हजार देव पूर्व दिशा में सिंहरूप धारन कर उठाते हैं उनका वर्णन करते हैं वे सिंह सुभग प्रभावाले श्वेत शंख जैसे विमल, दधि समूह, गोदुग्ध, समुद्र का फेन, चंद्र जैसा श्वेत हैं स्थीर लष्ट प्रकोष्ठ पुष्ट स्निग्ध व गोल तीक्ष्ण दाढा सहित मुखवाले हैं उन की जिव्हा और तालु रक्त कमल जैसा सुकोमल है उन के नख प्रशस्त वैडूर्यरत्नमय और कर्कश हैं, विस्तीर्ण और पुष्ट उरु स्थल हैं, प्रतिपूर्ण विपुल स्कंध हैं, मृदु, विशद प्रशस्त, सूक्ष्म लक्षणवंत व विस्तार वाली केसरा का आटोप है, चंक्रमीता, ललिता, पुलिता, गति और वाहन से

सूत्र

वइरामयातिक्खलअकुस कुभजुयलतारोडियाणं तवणिज्जसुबद्ध कच्छदप्पि यघलुज्जलाण जबूणयाविमलघणमडलवयरामय लालालिलियताल णाणा मणिरयण घटपासग रययामय रज्जुबद्धलबिय घटाजुयल महुर समणहराण अल्लीणपमाणजुत्त वट्टियसुजाय लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालग्गस परिपुच्छणाण उवचिय पडिपुण्ण कुम्मचलणलहुविक्कमाण अकामयणक्खाण तवणिज्जतालूयाण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज जातस जोतियाण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाण मणोहराण अमिय गईण अमियबलवीरियपुरिसक्कार परक्कमाण महयागमीर गुलगुलाइयरवेण महुरेण

अर्थ

तिलक से परिमंडित हैं उन की गरदन में अनेक प्रकार के मणिरत्नमय घण्टिए युक्त आभूषण हैं वैडूर्य रत्नमय दण्ड वाला निर्मल वज्ररत्नमय तीक्ष्ण दृढ अंकुश कुम्भस्थल पर रखा है रक्त सुवर्णमय कम्मर का बंध है जम्बूनद रत्नमय निर्मल निबड मंडल है वज्ररत्नमय लोल हैं अनेक मणिरत्नमय घंटा व पासा हैं, चांदी की रस्सी से बंध बंधे हुवे हैं उन घंटा युगल के शब्द से मनोहर दीखते हैं छप रहित प्रमाणोपेत गोल अच्छे लक्षण वाली प्रशस्त रक्त सुवर्णमय जिव्हा तालू है रक्त सुवर्णमय जोत से जोते हुवे हैं, उन का गमन इच्छानुसार, प्रीतिकारी, मन के अनुसार, व मनोहर है अपरिमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रमवंत, हैं बडे गंभीर गुहगुल ट और

सुभगाण सुप्पमाण ससतल विमल णिम्मल दधिघण गोक्खीरफेण रयणियर प्पकासाण वयरामयकुंभजुयल सुट्ठित पीवरवर वइरसोंडाविस दित्त सुरत्त-पउमप्पकासअब्भुण्णयमुहाण तवणिज्ज विसाल चंचल चलंत चवल कण्ण विमलुज्जुलाण मधुवण्ण भिसंत णिद्ध पिंगलपत्तल तिवण्णमणि रयणलोयणाण अब्भुगतमउलमल्लिया धवल सरिस संठित णिव्वणदढ कसिण फालियामय सुजाय दंत मुसलोवसोभिताण कंचणकोसपविट्ठ दंतग्ग विमल मणिय रयणरुइरपेरंत चित्तरूवग्ग विराइयाण तवणिज्जविसाल तिलग पमुह परिमंडिताण णाणामणिरयण मुद्धगेवेज्जबद्धगलयवरभूसणाण वेरुलिय विचित्त दंडनिम्मल

फन और पानी समान प्रकाश वाले हैं वज्ररत्नमय कुंभस्थल के युगल में पुष्ट वज्ररत्नमय सूंडादंड से देदीप्यमान रक्त पद्म समान मुख है रक्त सुवर्णमय विस्तार वाले अति चपल नेत्र हैं, मधुर वर्ण से देदीप्यमान स्निग्धशीलता हुवा पीला कलादि दोष रहित काल पीले व श्वेत वर्ण वाले माणिरत्न मय नेत्र है अति ऊंचे कोमल मालतीपुष्प जैसे धवल, छिद्र रहित दृढ देदीप्यमान स्फटिक रत्नमय मातिरव दो अवल दंतमूशल हैं उन दंतमूशल के अग्रभाग में सुवर्णवलय जडे हुवे हैं [illegible] मणिरत्न से मनोहर दांत के अग्र भाग विविध रूप से विराजित हैं रक्त सुवर्णमय विशाल

पीवरसुसठितकढीण उलबपलब लक्खण पसत्थ रमणिज्ज बालगडाणं समखुर वालिधराण समलिहितितिक्खग्ग गुप्पसिंगाण तणुसुहुम सुजातणिद्ध लोमच्छविवराण उवचित मसल विसाल पडिपुण्ण खधपमुहसुदराण वेरुलिय भिसत कडक्खसु णिरिक्खणीण जुत्तप्पमाण पधाण पसत्थ रमणिज्ज गग्गरगल, सोभिताण घग्घरग सुबद्धकठ मडियाण,णाणामाणि कणगरयण घटिये वेयत्थग सुकय रातिय मालियाणवरघटा गलगललिय सोभत सस्सिरीयाण पउमप्पल सगल सुरभिमाला विभूसियाणं वइरखुराण विविह विक्खुराण फलियकामयदताण, तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज तालुयाण तवणिज्ज

अर्थ—अतिपूर्ण विपुल विस्तार वाले कपोल हैं, किंचित् नम्न ओष्ट हैं, चय निचित श्रेष्ट लक्षण युक्त चक्रमित, ललित चक्रवाली चपल गति है, पुष्ट गोल सस्थित कटिभाग है, अवलब मलब ऐसे लक्षण युक्त प्रशस्त रमणिक पुछ है, समखुर हैं, समान व तीक्ष्ण शृंग हैं, पतली सूक्ष्म शोभित स्निग्ध रोमराजी है, पुष्ट मांसल विशाल अतिपूर्ण वैडूर्य रत्नमय देदीप्यमान चक्षुवाला उन का निरीक्षण है, प्रमाणोपेत प्रधान प्रशस्त रमणिक गलकबल है, घुघरवाले कण्ठ में धारन किया है, अनेक मणिरत्नोंवाला कच्छ आभूषण से बनाई हुई वरमाला धारन की है प्रधान घण्ट से सुशोभित सश्रीक हैं पद्मवर उत्पल कमल की सुगधमाला से विभूषित हैं, उन के खुर वज्ररत्नमय हैं, स्फटिक रत्नमय दन्त हैं, रक्त सुवर्णमय जिव्हा

मणहरेणं पूरिता अंबरं दिसाओय सोभयंता चत्तारि देव साहस्सीओ गयरूवधारीणं देवाणं दक्खिणिल्लं बाहं परिवहंति ॥ ६ ॥ चंदविमाणस्स पच्चत्थिमेणं सेयाणं सुभगाणं सप्पभाणं चंकमिय ललिय पुलित चवल चपल ककुह सीलाणं सण्णय पासाणं संगयपासाणं सुजायपासाणं मियमाइत पीणरतिपासाणं झसविहग सुजातकुच्छीणं पसत्थ णिद्धमधु गलित भिसत पिंगलनक्खाणं विसाले पीवरोरुय पडि पुण्णविपुलखंधाणं वट्ट पडिपुण्णविपुल कण्णकडियाणं, हासे आणयवसणो वट्टाणं घणणिचित सुबद्धलक्खणुण्णत चंकमितललित चलचवल गव्वितगतीणं वट्टिय

मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूर्ते और दशों दिशी को शोभित करते हुए चार हजार देव हाथी के रूप से दक्षिण दिशा की बाहा उठाते हैं ॥ ६ ॥ चंद्र विमान से पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ के रूप से विमान उठाते हैं वे वृषभ श्वेत, सुभग कान्ति वाले हैं चन के पासे (पसली) चक्रमित, ललित व पुलित गति से हलन चलन वाले स्वरूप से सुशोभित हैं मोलवे हुवे हैं, सुगात हैं प्रमाणोपेत और आनंदकारी हैं झस मच्छ अथवा पक्षी जैसी उन को कुक्षि है मधुर मधुसमान पीली देदीप्यमान मोक चक्षु है उन के विस्तीर्ण स्कंध है गोल

धारण तिवइ गईण सिक्खितगतीण सण्णतपासाण सगयपासाण सुजाय पासाण मितमाइतपीणरइयपासाण झसविहगसुजात कुच्छीण पीणपीवर वट्टित सुसाठित कडीण उलंब पलंब लक्खण पसत्थ रमणिज्ज वालगंडाण तणुसुहुम सुजाय णिद्धलोमच्छविधराण मिउविसय पसत्थ सुहुम लक्खण विकिण्ण केसरवालिधराण ललियलास गाललाड वरभूसणाण मुहमंडगोपुच्छ चमर थोसग परिमंडिय कडीण तवणिज्ज खराण तवणिज्ज जीहाण तवणिज्ज जोतग सुजोतियाण, कामगमाण पीतिगमाण मणागमाण मणोहराण अमितगतीण अमिय बलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमेण महया

अर्थ पसली नम्न, सुजात, परिमित, पुष्ट है मत्स्य अथवा पक्षी जैसी कुक्षि है उस का व पुष्ट कटिभाग गोल है, अवलम्ब ऐसे लक्षणोंवाला पुष्ट है पतली स्निग्ध सूक्ष्म सुजात रोमराजी है, मृदु सुकुमार विशाल सूक्ष्म और लक्षणोपेत स्कंध के केश (केशवाली) है, ललित लासक नामक उत्तम आभूषण के धारक हैं, सुखकारी गाय पुच्छ के चामर और थोपग आभरण विशेष से उन का कटि प्रदेश परिवाहित है रक्त सुवर्णमय खुर है, रक्त सुवर्णमय जिव्हा और तालु है रक्त सुवर्णमय जोत से बंधे हुए हैं इच्छानुसार उन का गमन है और भी उन का गमन प्रीतिकारी और मन को अनुसरता हुआ है अमित गति बल, वीर्य पुरुषकार और पराक्रम है वगैरे र देशात अथवा किलकिल महा

ओचग सुक्कोतियाण कामगमाण पीतिगमाण मणोगमाणं मणोहराण अमियगतीण अमियबलवीरिय पुरिसक्कार परक्कमाण महया गंभीरगज्जिय रवेण महुरेण महया मणहरेय पूरेत्ता अबरदिसाओय सोभयता चचारि देव साहस्सीओ वसहरूवधारिण देवाण पच्च-त्थिमिल्ल बाह परिवहति ॥ ७ ॥ चदविमाणस्सण उत्तरेण सेताणं सुभगाणं सुप्प-माण जच्चाण वरमल्लिहायणाण हरिमेलामउल मल्लियच्छीण घणणिचित सुबद्ध लक्खण्णत चकमितललित पुलिय चल चचल चवल गतीण, लघण वग्गण धवण

और वाहू हैं, रक्त सुवर्णमय जोत से जोते हुए हैं, इच्छानुसार प्रीतिकारी मनानुकूल व मनोहर चन का गमन है, अमित गति, बल, वीर्य, पुरुषात्कार व पराक्रम युक्त हैं, बडे गंभीर शब्द से गर्जना करते हुवे मधुर मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे दसोदिशी में शोभा करते हुए चार हजार देव वृषभ के रूप से पश्चिम दिशी की बाहा उठाकर चलते हैं ॥ ७ ॥ चन्द्र विमान से उत्तर में चार हजार देव अश्व के रूप से विमान उठाकर चलते हैं, उन का वर्णन करते हैं ये श्वेत, उज्ज्वल, सुभग, जातिवंत हैं, तरुण हरिमेला (वनस्पति विशेष) मल्लिका वनस्पति उन समान उज्ज्वल उन के नेत्रों हैं, निविड मांसल वैसे उन्नत चक्रमित ललित पुलित चपल चपल गति है, उल्लंघना, कूदना, दौडना, धणिवण, चलना, त्रिपदी छेदना ऐसी गति है उन की

तुरगरूवधारीण देवाण उत्तरिल्लं वाह परिवहति ॥ १० ॥ एव णक्खत्त विमाण स्सवि पुच्छा ? गोयमा ! चत्तार देव साहस्सीओ परिवहति तजहा-सीहरूव धारीण देवाण एगा देव साहस्सी, पुरच्छिमिल्लं वाह एव चउदिसिंपि, एव तारगाणवि णवरि दो देव साहस्सीउ परिवहति तजहा-सीहरूव धारीण देवाण पचदेवसया पुरच्छिमिल्लं वाह परिवहति, एव चउद्दिसिंपि ॥ ११ ॥ एतेसिण भते ! चदिम सूरिय गहगण णक्खत्त तारारूवाण कयरे कयरेहिंतो सिग्घगतीवा मदगतीवा ? गोयमा ! चद हिंतो सूरा सिग्घगती, सूराहिंतो गहा सिग्घगती, गहेहिंतो णक्खत्ता सिग्घगति, णक्खत्ते हिंतो तारासिग्घगती, सव्वप्पगती चदा, सव्वासिग्घगतीओ तारारूवे ॥ ११ ॥ एएसिण

अर्थ

दो हजार देव उत्तर दिशा में अश्व रूप से हैं ॥ १० ॥ ऐसे ही नक्षत्र विमान की पृच्छा कहना नक्षत्र विमानको चार हजार देव उठाते हैं, जिनमें से सिंह रूप से एक हजार देव पूर्व दिशा में, यावत् एक हजार देव उत्तर दिशा में अश्व रूप से हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! चद्र सूर्य ग्रह, नक्षत्र और ताराओं में से किस की गति मद है और किस की गति शीघ्र है ? अहो गौतम ! चद्र से सूर्य की गति शीघ्र है, सूर्य से ग्रह की गति शीघ्र है, ग्रह से नक्षत्र की गति शीघ्र है, और नक्षत्र से तारा की शीघ्र है सब से मद गति चद्र की है और सब से शीघ्र गति तारा की है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र

हयहेसिय किलकिलाइय रवेण महुरेणय मणहरेणय पूरिता अबरदिसाओय सोभयता चत्तारि देव साहस्सीओ हयरूवधारीण देवाण उत्तरिल्ल बाह परिवहति, ॥ ८ ॥ एव सूरविमाणस्सवि पुच्छा ? गोयमा ! सोलस देव साहस्सीओ परिवहति ॥ ९ ॥ पुव्वकमण, ॥ १ ॥ एव गहविमाणाण भते ! कतिदेव साहस्सीओ परिवहति ? गोयमा ! अट्ठदेव साहस्सीओ परिवहति तजहा सीहरूवधारीण दो देव साहस्सीओ पुरच्छिमिल्ल वाह परिवहति, दाहिणेण गयरूव धारीण दो देव साहस्सीउदाहिणिल्ल वाह दो देव साहस्सीओ वसभरूवधारीण, देवाण पच्चत्थिमिल्ल बाहपरिवहति दो देव साहस्सीओ

मधुर, मनोहर शब्द से आकाश पूरते हुवे चार हजार देव अश्वरूप से उत्तर दिशाके चन्द्र विमान की बाँहा उठाते हैं ॥ ८ ॥ एसे ही सूर्य विमान की पृच्छा करना ? अहो गौतम ! सोलह हजार देव सूर्य विमान उठाते हैं इस का क्रम भी पूर्वानुसार जानना अर्थात् चार हजार देव पूर्व में सिंहरूप से हैं दक्षिण दिशामें चार हजार देव हाथी के रूप से, पश्चिम दिशा में चार हजार देव वृषभ रूप से और उत्तर दिशा में चार हजार देव अश्व रूप से हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! ग्रह विमान को कितने हजार देव उठाते हैं ! अहो गौतम ! आठ हजार देव ग्रह विमान उठाते हैं जिस में से दो हजार देव पूर्व में सिंह रूप से, दो हजार देव दक्षिण में हस्ती रूप से दो हजार देव पश्चिम में वृषभ रूप से और

उक्कोसेण दोगाउयाइ, तारारूवे जाव अतरे पण्णत्ते ॥ ३ ॥ चदस्सणं भते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो कतिअग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! चत्तारि अग्गमहिसीउ पण्णत्ताओ तंजहा—चदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभकरा ॥ तत्थण एगमेगाए देवीए चत्तारि २ देवीए चत्तारि २ देवी साहस्सीओ परिवारो पण्णत्तो

अर्थ

आओ को अन्तर है यह जघन्य२६६ योजन उत्कृष्ट १२२४२ योजन का अंतर है और निर्व्याघात आश्री जघन्य ५०० धनुष्य उत्कृष्ट दो गाउ का अंतर है ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रमा को कितनी अग्र महिषियों कही है ? अहो गौतम ! चार अग्रमहिषियों कही है जिन के नाम—चंद्रप्रभा, दोषिनाभा, अर्चिमाली और प्रभंकरा एक देवि को चार २ हजार देवी का

१ निषध नीलवंत पर्वत ४०० योजन ऊंचे हैं उपर ५०० योजन ऊंचे कूट हैं ये मूल में ५०० योजन लम्बे चौडे हैं मध्य में ३७५ योजन और उपर २५० योजन लम्बे चौडे हैं कूटके दोनों आठ २ योजन दूर तारामंडल चलता है इस से २५०+१६= २६६ योजन का अंतर रहा.

२ दस हजार योजन का मेरु पर्वत चौडा है, इन के दोनों पास ११२१ योजन दूर तारा मंडल चलता है इस तरह तीनों के योजन मील कर १२२४२ योजन के अंतर हुवा

भंते ! चंदिम सूरिय जाव ताराख्वाण कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढीयावा महिड्ढीयावा ? गोयमा ! तारारूवेहिंतो णक्खत्ता महिड्ढिया, णक्खत्तेहिंतो गहा महिड्ढीया, गहेहिंतो सूरा महिड्ढीया, सूरेहिंतो चंदा महिड्ढीया ॥ सव्वप्पड्ढिया तारा सव्वमहिड्ढीया चंदा ॥ १२ ॥ जंबूद्दीवेणं भंते ! दीवे तारारूवस्सय २ एसणं केवतिए अबाधाए अंतरे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे अंतरे पण्णत्ते तंजहा-वाघातिमेय निव्वाघातिमेय, तत्थणं जेसे वाघातिमे से जहण्णेणं दोण्णिछावट्ठे जोयणसये उक्कोसेणं बारस जोयण सहस्साइं दोण्णिय बायाले जोयणसए तारारूवस्सय २ अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥ तत्थणं जेसे णिव्वाघातिमे से जहण्णेणं पंचधणुसयाइं

सूर्य यावत् तारा में से कौन २ अल्प ऋद्धि वाले हैं और कौन २ महा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! तारा से नक्षत्र महा ऋद्धि वाले हैं, नक्षत्र से ग्रह महा ऋद्धि वाले हैं, ग्रह से सूर्य महा ऋद्धि वाले हैं और सूर्य से चंद्र महा ऋद्धि वाले हैं सब से अल्प ऋद्धि वाले तारा हैं और महर्द्धिक चंद्र हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जम्बूद्वीप में तारा २ में परस्पर कितना अंतर कहा है ? अहो गौतम ! अंतर के दो भेद कहे हैं तद्यथा व्याघात आश्री और निर्व्याघात आश्री उस में के व्याघात

समुग्गएसु बहुयाओ जिणस कहाओ चिट्ठति, जाओण चदस्स जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो अण्णेसिंच बहूण जोतिसियाण देवाणय देवीणय अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ तासिण पणिहाय नापभू चद जोइसराया चदवडेंसए विमाणे सभाए सुम्माएचद सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ॥ अदुत्तरचण गोयमा ! पभू चद जोतिसिंदे जोतिसराया चदवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए चदसि सीहासणसि चउहिं सामाणिय साहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्ख देव साहस्सीहिं अन्नेहिय बहूहिं जोतिसिएहिं देवेहिय देवीहिय सद्धि सपरिवुडे

समर्थ नहीं है ? अहो गौतम ! चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा को चद्रावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में माणवक नामे चैत्य है वज्ररत्नमय गोल डब्बे हैं जिन में जिनदाढा है ये जिनदाढा ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा चंद्र यावत् अन्य ज्योतिषी देव व देवियों को अर्चनीय पूजनीय हैं यावत् सेवा करने योग्य हैं इस से अहो गौतम ! चद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा के चन्द्र विमानकी सुधर्मा सभामें चंद्र सिंहासन पर रहा त्रुटित सख्यातवाली देवियों साथ भोग भोगनेमें समर्थ नहीं है परतु वह चद्रावतसक विमान में सुधर्मा सभा में चद्र सिंहासन पर चार हजार सामानिक यावत्

पभूण ततो एगमेगा देवी अन्नाइ चत्तारि २ देवी साहस्साइ परिवार विउव्वित्तेय, एवामेव सपुव्वावरेण सोलस देवी साहसीओ पण्णत्ताओ सेत्त तुडिए ॥ १४ ॥ पभूण भंते ! चंदे जोतिसिंदे जोतिसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदसिंसीहासणंसि तुडिएण सद्धिं दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ नो पभू चंदे जोइसराया चंदवडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए चंदसि सीहासणंसि तुडिएण सद्धिं विपुल भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? गोयमा ! चंदस्सण जोतिसिंदस जोइसरण्णो चंद-वडिंसए विमाणे सभाए सुधम्माए माणवगंसि चेतियखंभंसि वइरामतेसु गोलवट्ट

परिवार है यों सोलह हजार देवी जानना और प्रत्येक अग्रमहिषी चार २ हजार रूप की विकुर्वना करने में समर्थ होवे यों सब मीलकर देवियों का सोलह हजार का परिवार हुवा यह त्रुटित सत्य हुई ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र नामक ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रावतंसक विमान में सुधर्मा सभा में चंद्र सिंहासन पर त्रुटित साथ दिव्य भोगोपभोग भोगते हुवे विचरने को क्या समर्थ है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् वह भोग भोगने में समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से चंद्र नाम के ज्योतिषी का इन्द्र ज्योतिषी का राजा चंद्रावतंसक विमान में यावत् त्रुटित साथ भोग भोगने में

जयती, अपराजिता, तेसिंपि तहेव ॥ १५ ॥ चदविमाणेण भंते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ? एव जहा ठिती पदे तहा भाणियव्वा जाव ताराण ॥ १६ ॥ एतेसिण भंते ! चंदिम सूरिय गह नक्खत्ततारारूवाण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! चंदिमसूरियाए तेण दोण्णवि तुल्ला सव्वत्थोवा, संखेज्जगुणा णक्खत्ता, संखेज्जगुणागहा, संखेज्जगुणाओ तारगाओ ॥ जोइस उद्देसओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥ * * * * * * *

कहिण भंते ! वेमाणियाण देवाण विमाणा पण्णत्ता ? कहिण भंते ! विमा-

अर्थ

की चार अग्रमहिषी कहना तद्यथा-विजया, वैजयंति जयंती और अपराजिता ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! चंद्र विमानवासी देव की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जैसे स्थान पद में स्थिति कही वैसेही कहना यावत् तारा की जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! इन चंद्र सूर्य, ग्रह नक्षत्र और ताराओं में कौन किससे अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! चंद्र और सूर्य परस्पर तुल्य और सब से थोडे हैं, इस से नक्षत्र संख्यात गुने, इस से ग्रह संख्यात गुने और इस से तारा संख्यात गुने अधिक हैं, यों ज्योतिषी का उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ ३ ॥ : : : : : :

अहो भगवन् ! वैमानिक देव के विमान कहां कहे हैं ? और वैमानिक देव कहां रहते हैं ? अहो

महया हय नट्ट गीय वाइय तंतीतल ताल तुडिय घणमुइंग पडुप्पवाइय रवेण दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए, केवलपरियार तुडिएण सद्धिं भोग भोगाइं भोसाढिए (भुंजीए) नो चेवण मेहुणवत्तिय ॥ १४ ॥ सूरस्सण भंते ! जोतिसिंदस्स जोतिसरन्नो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा सूरिप्पभा, आतयाभा, अच्चिमालि, पभंकरा ॥ एवं अवसेस जहा चंदस्स णवरिं सूरवडेंसकेविमाणे सूरंसि सीहासणंसि तहेव सव्वेसिं विगहाईण चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तंजहा- विजया, वेजयंती,

सोलह हजार आत्मरक्षक और अन्य बहुत ज्योतिषी देव व देवियों के साथ परवरा हुवा बडे नृत्य गीत, वादित्र, तंती, तल, ताल, त्रुटित, घण, मृदंग के शब्द से दीव्य भोगोपभोगता हुवा विचरता है देवियों के वृन्द को मात्र दृष्टि से देखे परंतु मैथुन वार्ता करे नहीं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सूर्य नामक ज्योतिषी के इन्द्र व ज्योतिषी के राजा को कितनी अग्रमहिषी कही ? अहो गौतम !, चार अग्रमहिषी कही जिनके नाम सूर्य प्रभा, अर्चा प्रभा, अर्चीमालीनी और प्रभंकरा शेष अधिकार सब चंद्रवत् जानना परंतु इतना विशेष कि सूर्यावतंसक विमान और सूर्य सिंहासन कहना. वैसे ही सब ग्रहादिक ज्योतिषी

बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए चोद्दसदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए सोलसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ एवं देवीणवि पुच्छा ? गोयमा ! सक्करस देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरिसाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए छच्चदेवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए पचदेवीसया पण्णत्ता ॥ २ ॥ सक्करसणं भंते! देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं केवइयं कालठिई पण्णत्ता, एवं मज्झिमियाए, बाहिरियाएवि ? गोयमा ! सक्कस्सणं देविंदस्स देवरण्णो देवाणं अब्भिंतरियाए परिसाए देवाणं पचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झि-

अर्थ

आभ्यंतर परिषदा में बारह हजार देव, मध्य की परिषदा में चौदह हजारदेव, और बाहिर की परिषदा में सोलह हजार देव कहे हैं अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा में कितनी देवी, मध्य परिषदा में कितनी देवी और बाहिर की परिषदा में कितनी देवी कही हैं ? अहो गौतम! आभ्यंतर परिषदा में सातसो देवी, बीच की परिषदा में छ सो देवी और बाहिर की परिषदा में पांच सो देवी कही हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की अभ्यंतर परिषदा में देवों की कितनी स्थिति कही, बीचकी परिषदा के देवोंकी कितनी स्थितिकही और बाहिर परिषदा के देवों की कितनी

णियादवा परिवसति ! जहा ठाणपदे तहा सव्व भाणियव्व, णवरं परिसाओ भाणियव्वाओ जाव सक्के अण्णेसिंच बहुण सोहम्मकप्पवासीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय जाव विहरति ॥ १ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा–समिता चंडा जाया, अब्भिंतरिया समिता, मज्झिमियाचंडा, बाहिरिया जाया ॥ २ ॥ सक्कस्सण भंते ! देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरिया परिसाए कतिदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ? मज्झिमियाए बाहिरियाए तहेव पुच्छा ? गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अब्भिंतरियाए परिसाए

गौतम ! जैसे स्थानपद में वर्णन किया वैसा ही यहां सब कहना विशेष में यहां तीन परिषदा जानना यावत् शक्र देवेन्द्र और अन्य बहुत सौधर्म विमानवासी देव और देवियों का अधिपतिपना करता हुवा यावत् विचरता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! शक्र देवेन्द्र की कितनी परिषदा है ? अहो गौतम ! तीन परिषदा कही हैं जिन के नाम—समिता, चंडा और जाया आभ्यंतर की समिता, मध्य की चंडा और बाहिर की जाया ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! शक्रेन्द्र की आभ्यंतर परिषदा में कितने देव रहते हैं, मध्य परिषदा में कितने देव कहे हैं और बाहिर की परिषदा में कितने देव कहे हैं ? अहो गौतम ! शक्रदेवेन्द्र की

परिसाए दसदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए चोद्दस देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ देवीण पुच्छा? गोयमा! अब्भितरियाए परिसाए णव देवीसया पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए अट्ठ देवीसया पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए सत्त देवीसया पण्णत्ता ॥ देवाण ठिती पुच्छा? गोयमा! अब्भितरियाए परिसाए देवाण सत्तपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए छपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता बाहिरियाए पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥ देवीण पुच्छा? गोयमा! अब्भितरियाए परिसाए पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता मज्झिमियाए परिसाए चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए

अर्थ में दश हजार देव, बीच की परिषदा में बारह हजार देव और बाहिर की परिषदा में चौदह हजार देव हैं देवी की पृच्छा? अहो गौतम! आभ्यंतर परिषदा में नव सो देवी, मध्य परिषदा में आठ सो देवी और बाहिर की परिषदा में सात सो देवी हैं देवों की स्थिति की पृच्छा? आभ्यंतर परिषदा के देवों की सात पल्योपम की, मध्य परिषदा के देवों की, छ पल्योपम और बाहिर के परिषदा के देवों की पांच पल्योपम की स्थिति कही है देवियों की स्थिति की पृच्छा? आभ्यंतर परिषदा की पांच पल्योपमकी मध्य परिषदा की चार

मियाए परिसाए देवाण चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए देवाण तिण्णपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥ अब्भिंतरियाए परिसाए देवीण तिन्नि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए दोण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए एग पलिओवम ठिती पण्णत्ता, अट्ठो सोचेव जहा भवणवासीण कहिण भंते! ईसाणगाणं देवाण विमाणा पण्णत्ता ? तहेव सव्व जाव ईसाणेइत्थ देवे जाव विहरति॥४॥ईसाणस्सणं भंते! देविंदस्स देवरण्णो कतिपरिसाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! तओपरिसाओ पण्णत्ताओ तंजहा समिता चंडा जाया, तहेव सव्व, णवरिं अब्भिंतरियाए

स्थिति कही ! अहो गौतम! शक्र देवेन्द्र के अभ्यंतर परिषदा के देवोंकी पांच पल्योपमकी मध्य परिषदा के देवों की चार पल्योपम की और बाहिरकी परिषदा के देवों तीन पल्योपमकी स्थिति है आभ्यंतर परिषदा के देवी की तीन पल्योपम, मध्य परिषदा की देवी को दो पल्योपम और बाहिर की परिषदा की देवी की एक पल्योपम की स्थिति है शेष भवनावासी देवो की परिषदा के देव जैसा ही जानना, ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! ईशान देवेन्द्र देव राजाकी कितनी परिषदा हैं! अहो गौतम ! तीन परिषदा कही जिन के नाम-समिता, चण्डा और जाया इस का कथन सब पूर्वोक्त जैसे जानना विशेष में आभ्यंतर परिषदा

ठिती पण्णत्ता, बाहिरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, अट्ठोमोचेव ॥ एवं माहिंदस्स तहेव जाव तत्थ परिसाए छदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ मज्झिमियाए परिसाए अट्ठदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए दसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती देवाण, अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं, सत्तपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपंचमाइं सागरोवमाइं, छप्पलिओवमाइं बाहिरियाए परिसाए अद्ध. पंचमाइं सागरोवमाइं पंचपलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, तहेव सव्वेसिं इंदाणठाणगमेण विमाण।

अर्थ

देव और बाहिर की परिषदा में दश हजार देव हैं स्थिति-आभ्यतर परिषदा में साढे चार सागरोपम सात पल्योपम, मध्य परिषदा में साढे चार सागरोपम छ पल्योपम, और बाहिर की परिषदा में साढे चार सागरोपम पांच पल्योपम की स्थिति है इसी तरह इन्द्रों स्थानपद से जानना यहां क्रम से परिषदा कहते हैं प्रथम इन्द्र की तीन परिषदा-आभ्यतर में चार हजार देव, मध्य में छ हजार देव और बाहिर की परिषदा में आठ हजार देव हैं आभ्यतर परिषदा के देवों की स्थिति साढे आठ सागरोपम और पांच पल्योपम मध्य परिषदा में साढे आठ सागरोपम चार पल्योपम और बाहिरकी परिषदा में साढे आठ

तिण्णिपलिओवमाइ ठितीपण्णत्ता अट्ठो तहेव भाणियव्वो ॥ १५ ॥ सणकुमाराण पुच्छा ? तहेव ठाणपदगमेण जाव सणकुमारस्स तओ परिसाओ समितादि तहेव, णवरिं अभिंतरियाए परिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, मज्झिमियाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए परिसाए बारसदेव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ अभिंतरियाए परिसाए देवाण ठिती अद्धपंचमाइ सागरोवमाइ, पंचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता, मज्झिमियाए परिसाए अद्धपंचाइ सागरोवमाइ चत्तारि पलिओवमाइ

पल्योपमकी और बाहिरकी परिषदाकी देवीयों की तीन पल्योपमकी स्थिति कही है कार्य सब भवनपति जैसे कहना ॥१५॥ सनत्कुमार की पृच्छा? इसका सब कथन स्थानपदसे जानना यावत् समितादि तीन परिषदा कहना विशेष में आभ्यतर परिषदा में आठ हजार देव, मध्य परिषदा में दश हजार देव और बाहिर की परिषदामें बारह हजार देव हैं (यहां देवियों नहीं है) आभ्यतर परिषदाके देवकी साडेचार सागरोपम और पांच पल्योपम की स्थिति है, बीचकी परिषदाकी साडे चार सागरोपम और चार पल्योपमकी कही है और बाहिर की परिषदा के साढ चार सागरोपम और तीन पल्योपम की स्थिति कही है कार्य पूर्ववत् जानना ऐसे ही माहेन्द्र देवेन्द्र का कहना यावत् यहां आभ्यतर परिषदामें छ हजार देव, मध्य परिषदामें आठ हजार

वमाइ सत्तपलिओवमाइ ठिती, मज्झिमियाए परिसाए बारससागरोवमाइ छच्च पलिओवमाइ ठिती बाहिरियाए परिसाए बारससागरोवमाइ पचपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता अट्ठो सोचेव ॥ महासुक्क पुच्छा ? गोयमा ! जाव अब्भिंतरियाए एग देव साहस्सीओ मज्झिमियाए परिसाए दो देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ बाहिरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ ॥ ठिती अब्भिंतरियाए परिसाए अद्धसोलससागरोवमाइ पचपलिओवमाइ, मज्झिमियाए अद्धसोलससागरोवमाइ चत्तारि पलिओवमाइ बाहिरियाए अद्धसोलससागरोवमाइं तिण्णि पलिओवमाइ अट्ठो सोचेव ॥ सहस्सारेपुच्छा ? जाव अब्भिंतरियाए परिसाए पचसया, मज्झिमियाए परिसाए एगादेवसाहस्सीओ,

अर्थ

है स्थिति आभ्यतर परिषदा में १५॥ सागरोपम पांच पल्योपम, मध्य परिषदा में १५॥ सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में १५॥ सागरोपम तीन पल्योपम की है कार्य पूर्ववत् सहस्रार की तीन परिषदा आभ्यतर में पांच सो देव, मध्य में एक हजार और बाहिर में दो हजार स्थिति अभ्यतर की १७॥ सागरोपम सात पल्योपम, बीच की १७॥ सागरोपम छ पल्योपम और बाहिर की १७॥ सागरोपम पांच पल्योपम की है आणत प्राणत इन दोनों का एक ही इन्द्र होने से इन की तीन परिषदा

णेतव्वा, ततो पच्छा परिसाओ पत्तेय२ वुच्चति॥ बंभस्सवि तओ परिसाओ पण्णत्ताओ अब्भितरियाए परिसाए चत्तारि देव साहस्सीओ, मज्झिमियाए परिसाए छदेव साहस्सीओ, बाहिरियाए अट्ठदेव साहस्सीओ ॥ देवाण ठिती अब्भितरियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं पंचपलिओवमाइं, मज्झिमियाए परिसाए अद्धणवमाइं सागरोवमाइं, चत्तारि पलिओवमाइं, बाहिरियाए अद्धनवमाइं सागरोवमाइं, तिण्णि पलिओवमाइं अट्ठोसो चेव ॥ लंतगस्सवि' जाव तओ परिसाओ जाव अब्भितरियाए दो देव साहस्सीओ मज्झिमियाए चत्तारि देवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, बाहिरियाए छदेवै साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती भाणियव्वा अब्भितरियाए परिसाए देवाण बारस सागरो-

सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति है कार्य पूर्ववत् लंतक देवेंद्र की तीन परिषदा आभ्यंतर में दो हजार देव, मध्य में चार हजार देव और बाहिर की परिषदा में छ हजार देव हैं आभ्यंतर परिषदामें देवों की स्थिति बारह सागरोपम सात पल्योपम, बीचकी परिषदामें बारह सागरोपम छ पल्योपम और बाहिरकी परिषदा की बारह सागरोपम पांच पल्योपम की है कार्य पूर्ववत् महा शुक्र की तीन परिषदा आभ्यंतर परिषदा में एक हजार देव, मध्य परिषदा में दो हजार देव और बाहिर की परिषदा में चार हजार देव

सूत्र

देवाण तहेव अच्चुए परिवारे जाव विहरति॥अच्चुयस्सण देविंदस्स तओ परिसाओ प० अब्भितर परिसाए देवाण पणुवीस सय, मज्झिमियाए अड्ढाइज्जसया, बाहिर परिसाए पचसया ॥ अब्भितराय एकवीस सागरोवमाइ सत्तपलिओवमा, मज्झिमियाए एक्कवीस सागरोवमाइ छपलिओवमा, बाहिराए एक्कवीस सागरोवमाइ पचपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥ कहिण भते ! हिट्ठिम गेविज्जगाण देवाण विमाणा पण्णत्ता ? कहिण भते ! हिट्ठिम गेवेज्जगा देवा परिवसति? जहेव ठाणपए तहेव, एव मज्झिम गेविज्जगा उवरिम गेविज्जगा, अणुत्तराय जाव अहमिंदा नाम ते देवा पण्णत्ता समणाउसो ! ॥ पढमो वेमाणियउद्देसउ सम्मत्तो ॥ ४ ॥ ० ०

अर्थ

बाहिर की परिषदा में ५०० देव हैं आभ्यतर परिषदा में २१ सागरोपम सात पल्योपम मध्य परिषदा में २१ सागरोपम ६ पल्योपम और बाहिर की परिषदा में २१ सागरोपम पांच पल्योपम की स्थिति कही है अहो भगवन् ! नीचे के ग्रैवेयक के स्थान कहां कहे हैं ? और वे कहां रहते हैं ? अहो गौतम ! जैसे स्थानपद में कहा वैसे ही जानना ऐसे ही मध्य ग्रैवेयक, ऊपर की ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानका जानना यावत् अहमेन्द्र पर्यंत कहना यह वैमानिक का प्रथम उद्देशा हुआ ॥ ४ ॥ १ ॥

बाहिरियाए दो देव साहस्सीओ पण्णत्ताओ ॥ ठिती अब्भिंतरियाए अट्ठारस सागरोवमाइ, सत्तपलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता एव मज्झिमियाए अट्ठारस सागरोवमाइ छपलिओवमाइ, बाहिरियाए अट्ठारस सागरोवमाइ, पचपलिओवमाइ अट्ठो सोचेव ॥ आणयपाणयस्सावि पुच्छा जाव तओ परिसाओ, णवरिं अब्भिंतरियाए अड्डाइज्जा देवसया, मज्झिमियाए पच देवसया, बाहिरियाए एगादेव साहस्सीओ ॥ठिती अब्भिंतरियाए एगूणवीस सागरोवमाइ, पच पलिओवमाइ, मज्झिमियाए परिसाए एगूणवीस सागरोवमाइ चत्तारि पलिओवमाइ, बाहिरियाए परिसाए एगूणवीस सागरोवमाइ तिण्णि पलिओवमाइ ॥ ठिती अट्ठो सोचेव ॥कहिण भते ! आरणच्चुयए

आभ्यतर में २५० देव, बीच की परिषदा में ५०० और बाहिर की परिषदा में १००० देव हैं आभ्यतर परिषदा में स्थिति गुनीससागरोपम और पांच पल्योपम, मध्य परिषदा में गुनीस सागरोपम चार पल्योपम और बाहिर की परिषदा में उन्नीस सागरोपम तीन पल्योपम की स्थिति कही शेष पूर्ववत जानना अहो भगवन् ! आरण अच्युत का इन्द्र कहां रहता है ? यावत् विचरता है इस की तीन परिषदा कही है आभ्यतर परिषदा में १२५ देव, बीच की परिषदा में २५० और

अणुत्तरोववाइया पुच्छा? गोयमा! उवासतर पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ १ ॥ सोहम्मीसाण कप्पेसु-विमाण पुढवी केवइय बाहल्लेण पण्णत्ता? गोयमा ! सत्तावीस जोयणसयाइ बाहल्लेण, एव पुच्छा? सणकुमार माहिंदेसु छव्वीस जोयणसयाइ, बंभलंतएसु पन्नवीस, महासुक्क सहस्सारेसु चउवीस, आणयपाणय आरणच्चुएसु तेवीस सयाइ, गेविज्जविमाण पुढवी बावीस, अणुत्तरविमाण पुढवी एक्कवीस जोयणसयाइ बाहल्लेण ॥ २ ॥ सोहम्मीसाणसुण भंते! कप्पेसु विमाणे केवतिय उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता? गोयमा! पंच जोयण सयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, सणकुमारमाहिंदेसु छ जोयणसयाइ, बंभलंतएसु सत्तजोयण सयाइ

अर्थ

गौतम ! आक शास्त्रि काया के आधार मे हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान की पृथ्वी का कितना जाडपन है? अहो गौतम! २७०० योजनकी विमान की नीव का जाडपना है, आगमी पृच्छा करना सनत्कुमार माहेन्द्र में २६०० योजनकी विमानकी नीवका जाडपन है, ब्रह्म और लांतक देवलोक में २५०० योजनका विमानकी नीवका जाडपन है, महाशुक्र और सहस्रार में २४०० योजनका जाडपना है आणत प्राणत आरण और अच्युत में २३०० योजन का विमानकी नीवका जाडपना है, ग्रैवेयक विमानमें २२०० योजन का पृथ्वी का जाडपना है और पांच अनुत्तर विमान की पृथ्वी का २१०० योजन का जाडपना है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने ऊंचे हैं ? अहो गौतम !

सोहम्मीसाणेसुण कप्पेसु विमाण पुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! घणोदधि पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ सणकुमारे माहिंदे कप्पेसु विमाणे पुढवी किं पइट्ठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! घणवाय पइट्ठिया पण्णत्ता । बंभलोएण भंते ! कप्पे विमाण पुढवी पुच्छा ? गोयमा ! घणवाय पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ लंतगेण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! तदुभय पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ महासुक्क सहस्सारेसुवि तदुभय पइट्ठिया आणय जाव अच्चुएसुण भंते ! कप्पेसु पुच्छा ? गोयमा ! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता ॥ गेविज्जविमाण पुढवीण पुच्छा ? गोयमा ! उवासंतर पइट्ठिया पण्णत्ता

अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान की पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनोदधि के आधार से पृथ्वी रही है ? अहो भगवन् ! सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक में पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनवात के आधार से रही है अहो भगवन् ! ब्रह्म देवलोक में विमान की पृथ्वी किस आधार से रही है ? अहो गौतम ! घनवात के आधार से रही है लंतक की पृच्छा, अहो गौतम ! दोनों के आधार से रही है महाशुक्र और सहस्रार में घनोदधि और घनवात इन दोनों के आधार से रही है आणत से अच्युत देवलोक में विमान आकाशास्तिकाया के आधार से हैं ग्रैवेयक की पृच्छा ! अहो गौतम ! आकाशास्ति काया के आधार से है अनुत्तर विमान की पृच्छा ? अहो

॥ ४ ॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! कप्पेसु विमाणा केवतियं आयामविक्खंभेण केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय जहा नरगा तहा अनुत्तरोववाइया संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय तत्थण जेते संखेज्जवित्थडे से जंबुद्दीवप्पमाणा, तत्थ जेते असंखेज्जवित्थडा असंखेज्जाइं जोयण सयाइं जाव परिक्खवेण पण्णत्ता ॥ ५ ॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! विमाणा कतिवण्णा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचवण्णा पण्णत्ता तंजहा— किण्ह नीला लोहिया हालिद्दा सुक्किला ॥ सणकुमार माहिंदेसु चउवण्णा नीला

और श्याम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने लम्बे चौडे हैं और कितनी परिधिवाले है ? अहो गौतम ! वे विमान दो प्रकार के हैं संख्यात योजन के विस्तारवाले और असंख्यात योजन के विस्तारवाले, यों नरक का कहा वैसे ही यहां जानना यावत् अनुत्तरोपपातिक संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं इन में जो संख्यात योजन के विस्तारवाले हैं वे जम्बूद्वीप प्रमाण हैं, और असंख्यात योजन के विस्तारवाले यावत् असंख्यात योजन की परिधि कही है ॥५॥ अहो भगवन् सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने वर्णवाले हैं ? अहो गौतम ! पांच वर्णवाले कहे हैं जिन के नाम—कृष्ण, नील, लोहित, हालिद्र और शुक्ल सनत्कुमार और माहेन्द्र में चार वर्णवाले विमान हैं जिन के नाम—नील, लोहित, हालिद्र

महासुक्कसहस्सारसु अट्ठ,आणय पाणय आरणअच्चुएसुनव जोयणसयाइ॥गेवेज्जविमाणाण भंते ! केवइय उड्ढ उच्चत्तेण पण्णत्ता ? गोयमा! दस जोयणसयाइ अणुत्तरविमाणाण एक्कारस जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण ॥ २ ॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते! कप्पेसु विमाणा किं संठिता पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—आवलियाए बाहिराय ॥ तत्थणं जेते आवलिय पविट्ठा ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा—वट्टा तसा चउरसा ॥ तत्थण जे ते आवलिय बाहिरा तेण णाणा संठाण संठिता पण्णत्ता, एवं जाव गवेज्जविमाणा ॥ अणुत्तरोववातिय विमाणा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—वट्टाय तसाय

५०० योजन ऊंचे हैं, ऐसेही सनत्कुमार और माहेन्द्रमें ६०० योजन ऊंचे हैं, ब्रह्म और लांतकमें ७०० योजन ऊंचे, महाशुक्र और सहस्रारमें ८०० योजन ऊंचे, आणत, प्राणत, आरण और अच्युतमें ९०० योजन ऊंचे, नव ग्रैवेयक में विमान १००० योजन ऊंचे हैं, और अनुत्तर विमान ११०० योजनकी ऊंचाइवाले हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में जो विमान हैं, वे किस संस्थानवाले हैं ? अहो गौतम ! विमानके दो भेद आवलिका प्रविष्ट सो श्रेणिबद्ध और आवलिका बाहिर सो पुष्पावकीर्ण इनमें जो आवलिका प्रविष्ट हैं, वे वर्तुल, त्र्यंस और चतुरंस, यों तीन प्रकारके हैं, और जो आवलिका बाहिर हैं वे विविध प्रकार के संस्थानवाले हैं यों ग्रैवेयक विमान पर्यंत कहना अनुत्तरोपपातिक में विमान दो प्रकार के हैं वर्तुल

सूत्र

इट्ठतरगा चेव जाव गधेण पण्णत्ता, जाव अणुत्तर विमाणा॥ सोहम्मीसाणेसु विमाणा केरिसया फासेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए आईणेतिवा रूवेइवा तहेव सव्वो फासो भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववातिया विमाणे ॥ ८ ॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! विमाणा के महालिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अयण्ण जंबूद्दीवे २ सव्वदीव समुद्दाण सोचेवगमो जाव छम्मासे वीईवएज्जा जाव अत्थेगइया विमाणावासा वीइवएज्जा अत्थेगइया विमाणावासा नो वीइवएज्जा जाव अणुत्तरो-

अर्थ

अनुत्तर विमान पर्यंत कहना ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान का कैसा स्पर्श कहा है ? अहो गौतम ! अजिन मृगचर्म रुइ वगैरह सब स्पर्श का वर्णन करना यावत् अनुत्तरोपपातिक पर्यंत जानना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कितने बडे कहे हैं ? अहो गौतम ! सब द्वीप समुद्र में यह जम्बूद्वीप एक लाख योजन का लम्बा चौडा है इस की परिधि ३१६२२७ योजन से कुछ अधिक है कोई देवता तीन चिमटि बजावे उतने में इक्कीस वार इस की पर्यटना कर आवे ऐसी दीव्य शीघ्रगति से छमास पर्यंत परिभ्रमण करे तो भी कितनेक विमानों को उल्लंघ सकता है और कितनेक विमानों का उल्लंघ नहीं सकता है यों अनुत्तरोपपातिक विमान पर्यंत कहना।

जाव सुक्किला ॥ एवं बंभलोग लंतएसु तिवण्णा लोहिया जाव सुक्किला ॥ महासुक्क सहस्सारेसु दुवण्णा हालिद्दाय सुक्किलाय ॥ आणत पाणत आरण अच्चुतेसु सुक्किला, एवं गेविज्जविमाणेसुवि अणुत्तरोववाइय विमाणे परम सुक्किला वण्णेणं पण्णत्ता ॥६॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केरिसयाए पभाए पण्णत्ता ? गोयमा ! णिच्चालोया णिच्चुज्जोया सयपभाए पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववाइया विमाणा णिच्चालोया णिच्चुजोया सयपभाए पण्णत्ता ॥ ७ ॥ सोहम्मीसाणेसुणं भंते ! कप्पेसु विमाणा केरिसया गंधेण पण्णत्ता ? से जहा नामए कोट्ठ पुडाणवा एवं जाव एतो

और शुक्ल ब्रह्मलोक और लंतक में रक्त पीत और श्वेत यों तीन वर्णवाले विमान हैं महा शुक्र सहस्रार में पीत श्वेत ऐसे दो वर्णवन्त विमान हैं आणत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक विमान में शुक्ल वर्ण पाते हैं और अनुत्तरोपपातिक विमान परम शुक्ल वर्णवाले कहे हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कैसी प्रभावाले हैं ? अहो गौतम ! वे सदैव प्रकाशवंत, उद्योतवंत हैं और अपनी प्रभा सहित हैं यों अनुत्तर विमान पर्यंत कहना वे भी सदैव प्रकाशवंत हैं, सदैव उद्योतवंत हैं और अपनी प्रभा सहित हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान कैसी गंधवाले हैं ? अहो गौतम ! जैसे कोष्ठ पुडा वगैरह सब वर्णन पूर्ववत् जानना इससे भी अधिक इष्टतर यावत् गंधवाले कहे यों

सूत्र

दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जवा असखेज्जवा उववज्जति, एव जाव सहस्सारो॥आण यादि गेवेज्जा अणुत्तराय एक्कावा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा उववज्जति॥ १२ ॥ सोधम्मीसाणेसुण भते ! देवा समये २ अवहीरमाणा २ केवतिय कालेण अवहिरिया सिया ? गोयमा ! तेण असखेज्जा समय २ अवहीरमाणा २ असखेज्जाहिं उस्सप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरति नोचवण अवहिरिया जाव सहस्सारो ॥ आणतादिगेसु चउसुवि गेवेज्जसुय समये २ जाव केवतिकालेण अवहीरिया सिया ? गोयमा ! तेण असखेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ असखेज्जखेत्त पलियस्स सुहुमस्स असखेज्जेण

अर्थ

में कितने देव उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट सख्यात असख्यात उत्पन्न होते हैं यों सहस्रार पर्यंत कहना आणत से अनुत्तरापपातिक तक एक दो तीन यावत् सख्यात उत्पन्न होते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में से देवता को समय २ में अपहरते कितने समय में अपहरण होवे ? अहो गौतम ! वे देव असख्यात हैं प्रतिसमय एक २ अपहरन करते असख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जाय तो भी अपहरण नहीं होता हैं यों सहस्रार पर्यंत कहना आनतादि चार देवलोक, नव ग्रैवेयक में यावत् कितने काल में अपहरन होवे ? अहो गौतम ! वे असख्यात देव हैं

सवाहय विमाणा अत्थेगातिया विमाणा वीइवएज्जा अत्थेगतिया नो वीइवएज्जा ॥९॥ सोहम्मीसाणेसुण भंते ! विमाणा किमया पण्णत्ता? गोयमा ! सव्वरयणामया पण्णत्ता, तत्थण बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति सासयाण ते विमाणे दव्वट्ठयाए जाव फासपज्जवेहि असासया जाव अणुत्तरोववाया विमाणा ॥१०॥ सोहम्मीसाणेसुण देवा कओहिंतो उववज्जंति उववातो नेयव्वो जहा वक्कतीए, तिरिएसुमणुएसु एव पंचेंदियेसु समुच्छिमवज्जेसु उववाय वक्कतीगमेणजाव अणुत्तरा ॥११॥ सोहम्मीसाणेसु देवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति? गोयमा! जहण्णेण एक्कोवा

इसमें कितनेक का उल्लंघन कर सकते हैं और कितनेक का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं अर्थात् चार अनुत्तर विमान असंख्यात योजन के हैं और सर्वार्थ सिद्ध विमान एक लक्ष योजन का है ॥९॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में विमान किसके हैं ? अहो गौतम ! सब रत्नमय हैं वहां बहुत जीव और पुद्गल आते हैं उत्पन्न होते हैं और चवते हैं वे द्रव्यसे शाश्वत हैं और वर्ण पर्यायसे यावत् स्पर्श पर्यायसे अशाश्वत हैं यों अनुत्तर विमान पर्यंत जानना ॥१०॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में जीव कहां से आकर उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! समूर्छिम वर्जकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में से उत्पन्न होते हैं यों सहस्रार देवलोक पर्यंत जानना यहां से आगे मात्र मनुष्य उत्पन्न होते हैं ॥११॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशानदेवलोक में एकसमय

सूत्र

असंखेज्जति भागे उक्कोसेणं जोयण सतसहस्स, एव एक्केक्का ओसारित्ताण जाव अनुत्तराण एक्कारयणी, गेविज्जअणुत्तरेण एगा भवधार णिज्जसरीरये, उत्तर वेउव्विया नत्थि ॥ १४ ॥ सोधम्मीसाणेसु देवाण सरीरगा किं संघयणी पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्हं संघयणीण असंघयणी पण्णत्ता, नवट्ठी नेवच्छिरा णेवण्हारु णवसंघयण मत्थि जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव तेसिं संघातत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववातिया ॥ १५ ॥ सोधम्मीसाणसु देवाण सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा सरीरा पण्णत्ता तंजहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्वियाय, तत्थण जेते भवधारणिज्जा ते समचउरंस संठाण

अर्थ

हाथ की, महाशुक्र सहस्रार में चार हाथ की, आणत प्राणत आरण व अच्युत ये चार देवलोक में तीन हाथ की, नव ग्रैवेयक में दो हाथ की और पांच अनुत्तर विमान में एक हाथ की शरीर की अवगाहना है नव ग्रैवेयक और पांच अनुत्तर विमान में उत्तर वैक्रेय शरीर नहीं करते हैं ॥१४॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर कौनसे संघयणवाले हैं ? अहो गौतम ! छ संघयण में से एक भी संघयण नहीं है क्योंकि उनका हड्डी, शिरा, नस नहीं है परंतु जो इष्ट कांत यावत् मनोज्ञ पुद्गल हैं वे संघयणपने परिणमते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत जानना ॥१५॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का संस्थान कैसा कहा है ? अहो गौतम ! उन के शरीर के दो भेद भवधारणीय और उत्तर वैक्रेय उन में जो भवधारणीय है

कालेण अवहीरति नोचेवण अवहीरियासिया ॥ अणुत्तरोववाइया पुच्छा ? तेण असखेज्जा समये २ अवहीरमाणा २ पलिओवम असखेज्जति भागमेत्ते अवहीरति नोचेवण अवहीरियासिया ॥ १३ ॥ सोहधम्मीसाणेसुण भते ! कप्पेसु देवाण के महल्लिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तजहा भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय ॥ तत्थण जे से भवधारणिज्जे स जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भागे, उक्कोसेण सत्तरयणीओ ॥तत्थण जे से उत्तर वेउव्विए स जहण्णेण अगुलस्स

वहां से प्रतिसमय एक २ अपहरते २ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम के असख्यातवे भाग तक अपहरन करे परन्तु अपहरन होवे नहीं अनुत्तरोपपातिक की पृच्छा? अहो गौतम! वे असख्यात हैं प्रत्येक समय में एक अपहरन करते हुवे पल्योपम के असख्यात वे भाग तक अपहरन करे परन्तु अपहरन होवे नहीं ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! सौधर्म ईशान देवलोक में देवताओं के शरीर की कितनी अवगाहना कही है? अहो गौतम! अवगाहना के दो भेद हैं तद्यथा—भवधारणीय और उत्तर वैक्रय उस में भवधारणीय अवगाहना जघन्य अगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट सात हाथ, उत्तर वैक्रय अवगाहना जघन्य अगुल का असख्यातवा भाग उत्कृष्ट एक लाख योजनकी, यों एक एक हाथ कम करते अनुत्तरोपपातिक विमानमें एक हाथ की अवगाहना जानना अर्थात् सनत्कुमार माहेन्द्र में ७ हाथ की, ब्रह्म और लतक में पांच

साणेसुण भंते ! कप्पेसु देवाण सरीरगा केरिसया गंधेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए कोट्ठापुडाणवा तहेव सव्व जाव मणामतरा चेव गंधेण पण्णत्ता जाव अणुत्तरोववातिया ॥ १८ ॥ सोधम्मीसाण देवाण सरीरगा केरिसया फासेण गोयमा ! थिरमउय णिद्ध सुकुमाल छवीय फासेण पण्णत्ता, एवं जाव अणुत्तरोववातिया ॥ १९ ॥ सोहम्मीसाण देवाण केरिसगा पुग्गला उस्सासत्ताए परिणमति ? गोयमा ! जे पोग्गला इट्ठा कता जाव एतेसिं उस्सासत्ताए परिणमति जाव अणुत्तरोववातिया, एव जाव आहारत्ताएवि जाव अणुत्तरोववातिया ॥ २० ॥ सोधम्मीसाणे देवाण कतिलेसाओ

अर्थ सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर की गंध कैसी कही ? अहो गौतम ! जैसे कोष्टपुट यावत् मनामतर गंध कही यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों के शरीर का कैसा स्पर्श है ? अहो गौतम ! उन के शरीर स्थिर मृदु सुकोमल व स्निग्ध सुकोमल स्पर्शवंत हैं, यावत् अनुत्तर विमान के देव पर्यंत कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक के देव कैसे पुद्गल उच्छ्वासपने ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जो पुद्गल इष्टकांत यावत् उच्छ्वासपने परिणमते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ऐसे ही आहार कलिये पुद्गल ग्रहण करते हैं यों अनुत्तरोपपातिक पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! सौधर्म ईशान देवलोक में देवों को

ट्ठग देवाणं भंते ! अपज्जत्तगाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं सव्वट्ठ सिद्धग देवाणं भंते ! पज्जत्तगाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहण्ण मणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई

रत्नाओंकी कितने काल की स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य भी अन्तर मुहूर्त की और उत्कृष्ट भी अन्तर मुहूर्त की अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध महाविमान वासी पर्याप्त देवताओंकी कितने कालकी स्थिति कही है? अहो गौतम! अजघन्य अनुत्कृष्ट तेतीस सागरोपम में अन्तर मुहूर्त कम

रत्नप्रभा पृथ्वी १३ पाथडे का अलग २ आयुष्य

पाथडे		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	सागर	१० हजार वर्ष	१० लाख वर्ष	९० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	भाग	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
	छेदक	०	०	०	०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	सागर	९० हजार वर्ष	९० लाख वर्ष	क्रोड पूर्व	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१
	भाग	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
	छेदक	०	०	०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०

शर्कर प्रभा पृथ्वी में ११ पाथड़े का आयुष्य

पाथड़ा		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
जघन्य	सा०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
	मा०	०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९
	छ०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
उत्कृष्ट	सा०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	मा०	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	०
	छ०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०

वालुप्रभा पृथ्वी के ९ पाथड़े का आयुष्य

पाथड़ा		१	२	३	४	५	६	७	८	९
जघन्य	सा०	३	३	३	४	४	५	५	६	६
	मा०	०	४	८	३	७	२	६	१	५
	छ०	०	९	०	०	९	०	९	२	९
उत्कृष्ट	सा०	३	३	४	४	५	५	६	६	७
	मा०	४	८	३	७	२	६	१	५	०
	छ०	०	९	०	०	९	९	९	०	०

पंकप्रभा के ७ पाथड़े का आयुष्य

पाथड़ा		१	२	३	४	५	६	७
जघन्य	सा०	७	७	७	८	८	९	९
	मा०	०	३	६	२	५	१	४
	छ०	७	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	सा०	७	७	८	८	९	९	१०
	मा०	३	६	२	५	१	४	०
	छ०	७	७	७	७	७	७	७

धूम्रप्रभा के ५ पाथडे आयुष्य

	पाथडे	१	२	३	४	५
जघन्य	सा०	१०	११	१२	१४	१५
	मा०	०	२	४	१	३
	छ०	५	५	५	५	०
उत्कृष्ट	सा०	११	१२	१४	१५	१७
	मा०	२	४	१	३	०
	छ०	५	५	५	५	५

तम प्रभा के ३ पा० आयुष्य

	पाथडे	१	२	३
जघन्य	सा०	१७	१८	२०
	मा०	०	२	१
	छ०	३	३	३
उत्कृष्ट	सा०	१८	२०	२२
	मा०	२	१	०
	छ०	३	३	०

तमस्तमप्रभा का एकही पाडे का आयुष्य

जघन्य	उत्कृष्ट
२२	३३

भुवनपति के देवता देवी की स्थिति का यन्त्र

	दक्षिण के		उत्तर के	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
देव असुर कुमार	१०००० वर्ष	१ सागरो०	१०००० वर्ष अ०	१ सागरो अ
देवी असुर कुमारी	१०००० वर्ष	३॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	४॥ पल्यो
नवनीकाय देवता	१०००० वर्ष	१॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	२ पल्यो
नवनीकाय देवी	१०००० वर्ष	॥। पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	१ पल्यो

पृथ्वीकायाका आयुष्य

पृथ्वीकया	जघन्य	उत्कृष्ट
सूक्ष्म पृथ्वी	अन्तर मु०	१०००० वर्ष
मधा पृथ्वी	अन्तर मु०	१२००० वर्ष
वालु पृथ्वी	अन्तर मु०	१४००० वर्ष
मणशिला पृथ्वी	अन्तर मु०	१६००० वर्ष
शकरा पृथ्वी	अन्तर मु०	१८००० वर्ष
खर पृथ्वी	अन्तर मु०	२२००० वर्ष

तिर्यंच पंचेन्द्रिय का उत्कृष्टायुष्य

	समूर्च्छिम	गर्भज
जलचर	क्रोडपूर्व वर्ष	१ क्रोड पूर्व वर्ष
स्थलचर	८४००० वर्ष	३ पल्योपम
खेचर	७२००० वर्ष	१ पल्यका असंख्या-तवे भाग
उरपर	५३००० वर्ष	१ क्रोडपूर्व वर्ष
भुजपर	४२००० वर्ष	१ क्रोडपूर्व वर्ष

धूम्रप्रभा के ५ पाथड़े आयुष्य

	पाथड़े	१	२	३	४	५
जघन्य	सा०	१०	११	१२	१४	१५
	मा०	०	२	४	१	३
	छे०	५	५	५	५	०
उत्कृष्ट	सा०	११	१२	१४	१५	१७
	मा०	२	४	१	३	०
	छे०	५	५	५	५	५

तम प्रभा के ३ पा० आयुष्य

	पाथड़े	१	२	३
जघन्य	सा०	१७	१८	२०
	मा०	०	२	१
	छे०	३	३	३
उत्कृष्ट	सा०	१८	२०	२२
	मा०	२	१	०
	छे०	३	३	०

तमस्तमप्रभा का एकही पाथड़े का आयुष्य

जघन्य	उत्कृष्ट
२२	३३

भुवनपति के देवता देवी की स्थिति का यन्त्र

	दक्षिण के		उत्तर के	
	जघन्य	उत्कृष्ट	जघन्य	उत्कृष्ट
देव असुर कुमार	१०००० वर्ष	१ सागरो०	१०००० वर्ष अ०	१ सागरो अ
देवी असुर कुमारी	१०००० वर्ष	३॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	४॥ पल्यो
नवनीकाय देवता	१०००० वर्ष	१॥ पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	२ पल्यो
नवनीकाय देवी	१०००० वर्ष	॥। पल्यो०	१०००० वर्ष अ०	१ पल्यो

१२ चक्रवर्ति का आयुष्य

१ भरत राजा	८४ लाख पूर्व
२ सागर राजा	७२ लाख पूर्व
३ माघव राजा	५ लाख वर्ष
४ सनत्कुमार रा	३ लाख वर्ष
५ शांति राजा	१ लाख वर्ष
६ कुंथु राजा	९० हजार वर्ष
७ अर राजा	८४ हजार वर्ष
८ संभूम राजा	६० हजार वर्ष
९ महापद्म राजा	३० हजार वर्ष
१० हरिषेण राजा	१० हजार वर्ष
११ जयचद्र राजा	३ हजार वर्ष
१२ ब्रह्मदत्त राजा	७०० वर्ष.

९ बलदेव का आयुष्य

१ अचल	८५ लाख वर्ष
२ विजय	७० लाख वर्ष
३ भद्र	६५ लाख वर्ष
४ सुप्रभ	५५ लाख वर्ष
५ सुदर्शन	१७ लाख वर्ष
६ आणंद	८५ हजार व
७ नंद	६५ हजार व
८ पद्म (राम)	१५ हजार व
९ बल भद्र	१२०० वर्ष

९ वासुदेव के आयुष्य

१ त्रिपृष्ट	८४ लाख वर्ष
२ द्विपृष्ट	७२ लाख वर्ष
३ स्वयंभू	६० लाख वर्ष
४ पुरुषोत्तम	३० लाख वर्ष
५ पुरुष सिं	१० लाख वर्ष
६ पुरुष पुंड	६५ हजार व
७ दत्त	५६ हजार व
८ लक्ष्मण	१२ हजा व
९ कृष्ण	१ हजा व

वासुदेव जितनाही प्रतिवासु देवकाका आयुष्य होता है

२४ तीर्थंकरोंका आयुष्य

१ ऋषभनाथजी	८४ लाख पूर्व
२ अजितनाथजी	७२ लाख पूर्व
३ संभवनाथजी	६० लाख पूर्व
४ अभिनंदनजी	५० लाख पूर्व
५ सुमतिनाथजी	४० लाख पूर्व
६ पद्मप्रभुजी	३० लाख पूर्व
७ सुपार्श्वनाथजी	२० लाख पूर्व
८ चन्द्रप्रभजी	१० लाख पूर्व
९ सुविधिनाथजी	२ लाख पूर्व
१० शीतलनाथजी	१ लाख पूर्व
११ श्रेयांसनाथजी	८४ लाख वर्ष
१२ वासुपूज्यजी	७२ लाख वर्ष
१३ विमलनाथजी	६० लाख वर्ष
१४ अनंतनाथजी	३० लाख वर्ष
१५ धर्मनाथजी	१० लाख वर्ष
१६ शांतिनाथजी	१ लाख वर्ष
१७ कुंथनाथजी	९५ हजार वर्ष
१८ अरनाथजी	८४ हजार वर्ष
१९ मल्लिनाथजी	५५ हजार वर्ष
२० मुनिसुव्रतजी	३० हजार वर्ष
२१ नमीनाथजी	१० हजार वर्ष
२२ रिष्टनेमीजी	१ हजार वर्ष
२३ पार्श्वनाथजी	१०० वर्ष
२४ वर्द्धमान स्वामीजी	७२ वर्ष

सौधर्म देवलोक के देवों के १३ प्रतरोंका अन्तर आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प	१ प
उत्कृष्ट	०	०	०	०	०	०	१ सा	१ सा	१	१	१	१	२
भाग	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	०
छेदक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

इस यत्र में एक सागर के १३ भाग में के भाग ग्रहण करना.

सौधर्म देवलोक की परिग्रही देवी का आयुष्य का यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्कृष्ट	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
भाग	१	२	५	११	४	१०	३	९	२	८	१	७	०
छेदक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

देवीयों क दोनों यत्र में एकपल्प के १३ भाग में के भाग ग्रहण करना

सौधर्म देवलोक की अपरिग्रही देवीयों के आयुष्यका यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्कृष्ट	३	७	११	११	१९	२२	२६	३०	३४	३८	४२	४६	५०
भाग	११	९	७	५	३	१	१२	१०	८	६	४	२	०
छेदो	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

अकर्म भूमि मनुष्य

देव कुरु	३ पल्योपम
उत्तर कुरु	३ पल्योपम
हरीवास	२ पल्योपम
रम्यक वास	२ पल्योपम
हेम वय	१ पल्योपम
एरण वय	१ पल्योपम
५६ अंतर्द्वीप	१ पल्योपमके असं•वे भाग

कर्मभूमी मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य

अवसर्पिणी में	उत्सर्पिणी में
पहिला आरा ३ पल्योपम	२० वर्ष
दूसरा आरा २ पल्योपम	१२० वर्ष
तीसरा आरा १ पल्योपम	१ क्रोड पूर्व
चौथा आरा १ क्रोड पूर्व	१ पल्योपम
पांचवा आरा १२० वर्ष	२ पल्योपम
छठा आरा २० वर्ष	३ पल्योपम

ज्योतिषी का आयुष्य

जघन्य	उत्कृष्ट
चंद्रदेव पावपल्य	एक पल्य १ लाख वर्ष
चद्रदेवी पावपल्य	आधा पल्य ५० हजार वर्ष
सूर्यदेव पावपल्य	१ पल्य १ हजार वर्ष
सूर्यदेवी पावपल्य	आधा पल्य ५०० वर्ष
ग्रहदेव पावपल्य	एक पल्य
ग्रहदेवी पावपल्य	आधा पल्य
नक्षत्रदेव पावपल्य	आधा पल्य
नक्षत्रदेवी पावपल्य	पावपल्य कुछ अधिक
तारा देव पावपल्य	पावपल्य कुछ अधिक
तारादेवी पल्य का आठवा भाग	पल्य का आठवा भाग कुछ अधिक

यह सनत्कुमार देवलोक के देवता का आयुष्यका यन्त्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	०	१०	११	१२
जघन्य	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
उत्कृष्ट	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	[illegible]
भाग	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेद	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१२	१२	१२	१२	१२	१२

माहेन्द्र देवलोक के देवता का आयुष्य का यन्त्र
सर्व स्थान कुछ अधिक मानना

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
जघन्य	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
उत्कृष्ट	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७
भाग	५	१०	३	८	१	६	११	४	९	२	७	०
छेदक	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

ब्रह्मदेवलोक का आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४	५	६
जघन्य	७	७	७	७	७	७
उत्कृष्ट	७	८	८	९	९	१०
भाग	३	०	३	०	३	०
छेद	६	६	६	६	६	६

लांतक देवका आयुष्यका यन्त्र

प्रतर	१	२	३	४	५
जघन्य	१०	१०	१०	१०	१०
उत्कृष्ट	१०	११	१२	१३	१४
भाग	४	३	२	१	०
छेद	५	५	५	५	५

महाशुक्रदेवका आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४
जघ	१४	१४	१४	१४
उत्कृ	१४	१५	१६	१७
भाग	३	२	१	०
छेद	४	४	४	४

सहस्रारदेव का आयुष्य

प्रतर	१	२	३	४
जघ	१७	१७	१७	१७
उत्कृ	१७	१७	१७	१८
भाग	१	२	३	०
छेद	४	४	४	४

ईशान देवलोक के देवता का आयुष्य का यन्त्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघन्य	१ १०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
उत्कृष्ट	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२
भाग	२	४	६	८	१०	१२	१	३	५	७	९	११	
छेदक	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

इस यंत्र में अंक जो दीये हैं उस से कुछ अधिक आयुष्य सर्व स्थान जानना

ईशान देवलोक की परिग्रही देवी का आयुष्य का यन्त्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्क	१	२	२	३	४	४	५	६	६	७	८	८	९
भाग	८	३	११	६	१	९	४	१२	७	२	१०	५	०
छेद	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

ईशान देवलोक की अपरिग्रही देवी का आयुष्य का यंत्र

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
जघ	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
उत्क	४	८	१२	१६	२१	२५	२९	३३	३८	४२	४६	५०	५५
भाग	३	६	९	१२	२	५	८	११	१	४	७	१०	०
छेद	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

॥ पञ्चम पर्याय पदम् ॥

कइविहाणं भंते ! पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता तंजहा-जीव पज्जवाय, अजीवपज्जवाय ॥ जीव पज्जवाणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नो संखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जीव पज्जवा नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखिज्जा नेरइया, असंखिज्जा असुरकुमारा, असंखिज्जा नागकुमारा, असंखिज्जा सुवण्णकुमारा, असंखिज्जा विज्जु-कुमारा, असंखिज्जा अग्गिकुमारा, असंखिज्जा दीवकुमारा, असंखिज्जा उदधिकुमारा,

अर्थ

अब पांचवे पद में उदायिक भाव आश्री सब जीव अजीव के पर्याय में परस्पर हीनाधिक का स्वरूप बताते हैं अहो भगवन् ! पर्याय कितनी कही है ! अहो गौतम ! पर्याय के दो भेद कहे हैं जीव पर्याय व अजीव पर्याय अहो भगवन् ! जीव पर्याय क्या संख्यात, असंख्यात या अनंत हैं ! अहो गौतम ! जीव पर्याय संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत जीव पर्याय हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जीव पर्याय संख्यात व असंख्यात नहीं हैं परंतु अनंत हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात नारकी, असंख्यात असुरकुमार, असंख्यात नागकुमार, असंख्यात सुवर्ण कुमार, असंख्यात विद्युत्कुमार,

आणत स्वर्क आयुष्य का यंत्र					पाणत देवका आयुष्य					आरणदेवका आयुष्य					अच्युत देवका			
प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४	प्रतर	१	२	३	४
जघन्य	१८	१८	१८	१८	जघन्य	१९	१९	१९	१९	जघन्य	२०	२०	२०	२०	जघन्य	२१	२१	२१	२१
उत्कृष्ट	१८	१८	१८	१९	उत्कृष्ट	१९	१९	१९	२०	उत्कृष्ट	२०	२०	२०	२१	उत्कृष्ट	२१	२१	२१	२२
भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०	भाग	१	२	३	०
छेद	४	४	४	४	छेद	४	४	४	४	छेद	४	४	४	४	छेद	४	४	४	४

पण्णत्ता ॥ इतिपण्णवणाए भागवईए चउत्थ ठिईय प्रय सम्मत्त ॥ ४ ॥

की स्थिति कही है ॥ इति पन्नवणा भगवती का चौथा स्थिति नामक पद समाप्त ॥ ४ ॥

पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहण ट्ठयाए सीय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे - असखिज्जइभागहीणेवा, सखिज्जइभागहीणेवा, सखिज्जगुणहीणेवा, असखिज्जगुणहीणेवा ॥ अह अब्भहिए असखेज्जइभाग मब्भहिए सखज्जइभाग मब्भहिए असखिज्जगुण मब्भहिएवा

अनत पर्याय नारकी को कही है अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है कि नारकी को अनत पर्याय हैं ? अहो गौतम! नारकी नारकी से तुल्य है, क्यों कि सब को एकसारी जीव है, प्रदेश से तुल्य हैं क्यों कि सब जीव के लोकाकाश समान आकाश प्रदेश हैं, अवगाहना से कदाचित् हीन, क्वचित् तुल्य व क्वचित् अधिक है यदि हीन होवेतो असख्यात भाग हीन होवे जैसे नरक के एक जीवकी ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे और दूसर की अगुल के असख्यातवे भाग की अवगाहना होवे २ सख्यात भाग हीन होवे तो एक की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे और दूसरे की ४९८ धनुष्य की

इस में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ तुल्य कहे यह द्रव्य से उदयिक भाव पर्याय, अवगाहना अर्थ कहा यह क्षेत्र से उदयिक भाव पर्याय, स्थिति अर्थ कहा यह काल से उदयिक भाव पर्याय, वर्णादि कहा यह भाव से उदयिक भाव पर्याय और ज्ञान दर्शन कहा यह क्षयोपशमिक व क्षायिक भाव पर्याय यों सब स्थान जानना

असंखिज्जा दिसाकुमारा, असंखिज्जा वाउकुमारा, असंखिज्जा थणिय कुमारा ॥ असंखिज्जा पुढवि काइया, असंखिज्जा आउकाइया, असंखेज्जा तेउकाइया, असंखिज्जा वाउकाइया, अणंता वणस्सइकाइया, असंखिज्जा बेइंदिया, असंखिज्जा तेइंदिया, असंखिज्जा चउरिंदिया, असंखिज्जा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया, असंखिज्जा मणुस्सा, असंखिज्जा वाणमंतरादेवा, असंखिज्जा जोइसिया, असंखिज्जा वेमाणिया, अणंतासिद्धा सेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जीव पज्जवा नोसंखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता ॥ १ ॥ नेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

असंख्यात अग्निकुमार, असंख्यात द्वीपकुमार, असंख्यात उदधिकुमार, असंख्यात दिशाकुमार, असंख्यात वायुकुमार, असंख्यात स्तनित कुमार, असंख्यात पृथ्वीकाया, असंख्यात अप्काया, असंख्यात तेउकाया, असंख्यात वायुकाया, अनंत वनस्पतिकाया, असंख्यात बेइन्द्रिय, असंख्यात तेइन्द्रिय, असंख्यात चतुरेंद्रिय, असंख्यात तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात मनुष्य असंख्यात वाणव्यंतर देव, असंख्यात ज्योतिषि, असंख्यात वैमानिक और अनंत सिद्ध हैं इस से अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि जीव पर्याय संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी का कितने पर्याप्त कहे हैं * ? अहो गौतम !

* अब नारकी प्रमुख सब जीवों को अल्पा० उदीयक, क्षयोपशमिक व क्षायिक भाव आश्रिय पर्याय कहते हैं

हीणेवा, सखिज्जगुणहीणेवा, असखिज्जगुणहीणेवा, अणतगुणहीणेवा ॥ अहभब्भहिए अणतभाग मब्भाहिएवा, असखिज्जभाग मब्भहिएवा, सखिज्जभाग मब्भाहिएवा, सखिज्जगुण मब्भहिएवा, असखिज्जगुण मब्भहिएवा, अणतगुण मब्भहिएवा ॥ नीलवण्ण पज्जवेहिं लोहियवण्ण पज्जवेहिं, पीयवण्ण पज्जवेहिं, सुक्किलवण्ण पज्जवेहिं, छट्ठाणवडिए ॥ सुब्भिगध पज्जवेहिं, दुब्भिगध पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए ॥ तित्तरस

होवे तो असख्यात भाग हीन भी हैं जैसे एक नरीये का दश हजार वर्षका आयुष्य है और दूसरेका सपूर्ण तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है, यह असख्यात भाग हीन सख्यात भाग हीन में एक का तीन सागरोपम का आयुष्य है और दूसरे का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है, सख्यात भाग हीन एक का सपूर्ण तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है और दूसरे का दश हजार वर्ष कम का है, यह असख्यात गुण हीन और सख्यात गुण हीन एक का ३२ सागरोपम का आयुष्य है और दूसरे का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है यह सख्यात गुण हीन है यदि अधिक होवे तो असख्यात भाग अधिक जैसे एक नेरीये का तत्तीस सागरोपम में दश हजार वर्ष कम का आयुष्य है और एक का सपूर्ण तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है यह असख्यात भाग अधिक हुवा २ सख्यात भाग अधिक एक का ३२ सागरोपम का आयुष्य है और एक का ३३ सागरोपम का आयुष्य है सख्यात गुन अधिक एक का तीन सागरोपम का

सखिज्जगुण म०भहिए, ठिइए सिय हीण सियतुल्ले सिय अब्भहिएवा, जइहीण अस-खिज्जइभागहीणेवा, संखिज्जइभागहीणेवा, संखिज्जगुणहीणेवा असंखिज्ज गुणहीणेवा, अहअब्भहिए असंखिज्जइभाग मब्भहिएवा, संखिज्जइभाग मब्भहिएवा, संखिज्जइगुण मब्भहिएवा, असंखिज्जइगुण मब्भहिएवा ॥ कालवण्ण पज्जवेहिं सियहीणे सियतुल्ले, सिय मब्भहिए ॥ जइहीणे अणंतभागहीणेवा, असंखिज्जभागहीणेवा, संखिज्जभाग

अवगाहना होवे, संख्यात गुना हीन होवे जैसे एक की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे जब दूसरे की १०० धनुष्य की अवगाहना होवे, अथवा असंख्यात गुण हीन होवे जैसे एक नरीये की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे और दूसरे किसी नरीये की अंगुल के असंख्यातवा भाग की अवगाहना होवे यह असंख्यात गुना हीन मानना यह चार भाग हीन आश्रिय जानना अब अधिक का कहते हैं यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक होवे जैसे कोई नेरीये की पांच सो धनुष्य में अंगुल का असंख्यातवा भाग कम जितनी अवगाहना होवे और दूसरे की संपूर्ण पांच सो धनुष्य की अवगाहना होवे यह असंख्यात भाग अधिक मानना संख्यात भाग अधिक होवे-जैसे किसी की ४९८ धनुष्य की अवगाहना होवे और अन्य की ५०० धनुष्य की अवगाहना होवे यह संख्यात भाग अधिक जानना स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है. यदि हीन

लुक्खफास पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए ॥ आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं, सुयनाणपज्जवेहिं ओहिनाण पज्जवेहिं, मइअण्णाण पज्जवेहिं, सुय अण्णाण पज्जवेहिं, विभगणाण पज्जवेहिं, चक्खु दसण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवेहिं, ओहिदसण पज्जवेहिय, छट्ठाण वडिए ॥ सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ नेरइयाण नो सखिज्जा, णो असखिज्जा, अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ २ ॥ असुरकुमाराण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ असुर

पीत वर्ण पर्यव, शुक्ल वर्ण पर्यव, सुरभिगध पर्यव, दुरभिगध पर्यव, तिक्त रस पर्यव, कटुक रस पर्यव, कषाय रस पर्यव, अम्बट रस पर्यव, मधुर रस पर्यव कर्कश स्पर्श पर्यव, मृदु स्पर्श पर्यव, गुरु स्पर्श पर्यव, लघु स्पर्श पर्यव, शीत स्पर्श पर्यव, ऊष्ण स्पर्श पर्यव, स्निग्ध स्पर्श पर्यव, व रूक्ष स्पर्श पर्यव की साथ अलग षट्गुण हानि वृद्धि करना वैसे ही आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यव, श्रुत ज्ञान पर्यव, अवधि ज्ञान पर्यव, मति अज्ञान पर्यव, श्रुत अज्ञान पर्यव, विभग ज्ञान पर्यव, चक्षु दर्शन पर्यव, अचक्षु दर्शन पर्यव, व अवधि दर्शन पर्यव की साथ उक्त जैसे षट्गुन हीन अधिक हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा गया है कि नारकी के संख्यात नहीं है असंख्यात नहीं है परन्तु अनत पर्यव हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार के अनंत पर्यव कहे हैं अहो

पज्जवेहिं, कडुयरस पज्जवेहिं, कसायरस पज्जवेहिं, अंबिलरस पज्जवेहिं, महुररसपज्ज वेहिय छट्ठाण वडिए ॥कक्खडफास पज्जवेहिं,महुयफास पज्जवेहिं गरुयफास पज्जवेहिं, लहुयफास पज्जवेहिं सीयफास पज्जवेहिं, उसिण फास पज्जवेहिं, निद्धफास पज्जवेहिं,

आयुष्य है, और एक का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है, और ४ असंख्यात गुन अधिक एक का दश हजार वर्ष का आयुष्य है एक का तेत्तीस सागरोपम का आयुष्य है अब भाव से कहते हैं—काला वर्ण पर्यव से अनंतभाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यातगुन हीन असंख्यातगुन व अनंतगुण हीन यह षट्गुण हीन कहे अब अधिक होवे तो १ अनंत भाग अधिक २ असंख्यात भाग अधिक ३ संख्यात भाग अधिक ४ संख्यात गुण अधिक ५ असंख्यात गुण अधिक व ६ अनंत गुण अधिक यों षट्गुण अधिक कहे× जैसे कालावर्ण पर्यव का कहा, वैसे ही नील वर्ण पर्यव,रक्त वर्ण पर्यव,

× अनंत जीवों की राशि से भाग देते जो रहे सो अनंत भाग हीन, असंख्यात लोकाकाश प्रदेश प्रमाण राशि से भाग देते जो रहे सो असंख्यात भाग हीन और उत्कृष्ट संख्याते कृष्ण पर्यायवाले नारकी से भाग देते जो रहे उस संख्यात भाग हीन कहना अब गुना आश्रिय कहते हैं-उत्कृष्ट संख्यातेको जघन्य संख्यात से गुने करते जितने होवे उस अपेक्षा से संख्यात गुण हीन, असंख्यात लोकाकाश प्रदेश की राशी के वर्ण के प्रमाण से गुणा करते जितने होवे यह असंख्यात गुणहीन, और अनंत जीवों को वर्ण से गुणा करते जितने होवे सो अनंतगुणहीन

ओहियणाण पज्जवेहिं, मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं विभगणाण पज्जवेहिं चक्खुदसण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवेहिं, ओहिय दसण पज्जवेहिं, छट्ठाण वडिए॥ सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ असुर कुमाराण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव जहा नेरइया जहा असुर कुमारा तहा नागकुमारावि जाव थणिय कुमारावि ॥ ३ ॥ पुढवि काइयाण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! पुढवी

अर्थ

आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यव, श्रुत ज्ञान पर्यव, अवधि ज्ञान पर्यव, मति अज्ञान पर्यव, श्रुत अज्ञान पर्यव, व विभग ज्ञान पर्यव, चक्षुदर्शन पर्यव अचक्षुदर्शन पर्यव व अवधि दर्शन के पर्यव की साथ षट्गुण हीन अधिक जानना अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा है कि असुरकुमार को अनत पर्यव कहे हैं, यों सब नारकी जैसे जानना जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही नागकुमार यावत् स्तनित कुमार का जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस तरह पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया द्रव्य से तुल्य है, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना से हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यातगुन हीन, या चार स्थान है और अधिक है तो

कुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! असुरकुमारे असुर कुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिइए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए एवं नीलवण्ण पज्जवेहिं, लोहियवण्ण पज्जवेहिं हालिद्दवण्ण पज्जवेहिं सुक्किलवण्ण पज्जवेहिं, सुब्भिगंध पज्जवेहिं, दुब्भिगंध पज्जवेहिं, तित्तरस पज्जवेहिं, कडुयरस पज्जवेहिं, कसायरस पज्जवेहिं, अंबिल रस पज्जवेहिं महुररस पज्जवेहिं कक्खडफास पज्जवेहिं मउयफास पज्जवेहिं, गरुयफास पज्जवेहिं, लहुयफास पज्जवेहिं, सीयफास पज्जवेहिं, उसिण फास पज्जवेहिं, णिद्धफास पज्जवेहिं, लुक्खफास पज्जवेहिं, आभिणि बोहिय नाण पज्जवेहिं, सुयणाण पज्जवेहिं,

भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि असुर कुमार को अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! असुर कुमार २ असुर कुमार से द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक (१ असंख्यात भाग हीन २ संख्यात भाग हीन, ३ संख्यात गुण हीन और ४ असंख्यात गुण हीन) स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और काला वर्ण पर्यव से छ स्थान हीनाधिक ऐसे ही नील वर्ण पर्यव रक्त वर्ण पर्यव, पीत वर्ण पर्यव, शुक्ल वर्ण पर्यव, सुरभिगंध पर्यव, दुरभिगंध पर्यव, तिक्त रस पर्यव, कटुक रस पर्यव, कषाय रस पर्यव, अम्बट रस पर्यव, मधुर रस पर्यव, कर्कश स्पर्श पर्यव, शीत स्पर्श पर्यव, उष्ण स्पर्श पर्यव, स्निग्ध स्पर्श पर्यव व रूक्ष स्पर्श पर्यव वैसे ही

ओहियणाण पज्जवेहिं, मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं विभंगणाण पज्जवेहिं चक्खुदसण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवेहिं, ओहिय दसण पज्जवेहिं, छट्ठाण वडिए॥ सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ असुर कुमाराण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव जहा नेरइया जहा असुर कुमारा तहा नागकुमाराविं जाव थणिय कुमाराविं ॥ २ ॥ पुढवि काइयाण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता? सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ?गोयमा!पुढवी

मर्थ

आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यव, श्रुत ज्ञान पर्यव, अवधि ज्ञान पर्यव, मति अज्ञान पर्यव, श्रुत अज्ञान पर्यव, व विभग ज्ञान पर्यव, चक्षुदर्शन पर्यव अचक्षुदर्शन पर्यव व अवधि दर्शन के पर्यव की साथ षट्गुण हीन धिक जानना अहो गौतम' इसलिये एसा कहा है कि असुरकुमारको अनत पर्यव कहे हैं; यों सब नारकी जैसे जानना जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही नागकुमार यावत् स्तनित कुमार का जानना ॥ २ ॥ अहो भगवन्' पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ! अहो भगवन् ! किस तरह पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया द्रव्य से तुल्य है, प्रदेश से तुल्य है, अवगाहना से हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो असख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यातगुन हीन, या चार स्थान है और अधिक है तो

काइए पुढवी काइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सियअब्भाहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहिणेवा, संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जगुणहीणवा असंखिज्ज गुणहीणेवा, अब्भहिए असंखिज्ज भाग मब्भाहिएवा, संखिज्जभाग मब्भहिएवा, संखिज्ज गुणमब्भहिएवा, असंखिज्ज गुणमब्भहिएवा ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सिय मब्भाहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्ज भागहिणेवा, संखिज्ज गुणहीणवा अह अब्भहिएवा असंखिज्ज भाग मब्भाहिएवा, संखिज्ज भाग मब्भाहि-

असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यातगुण अधिक व असंख्यातगुन अधिक, स्थिति आश्रिय स्यात हीन स्यात तुल्य व स्यात अधिक है यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन क्यों कि किसी का बावीस हजार वर्ष का संपूर्ण आयुष्य है और किस का एक समय कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है, २ संख्यात भाग हीन क्यों कि किसीका पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसीका आवलिका कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है वैसे ही संख्यात गुन हीन किसी का पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसी का दो हजार वर्ष का ही आयुष्य है यों तीन स्थान पाते है परंतु चौथा स्थान नहीं पाता है क्यों कि एकेन्द्रिय में संख्यात वर्ष का ही आयुष्य है २५६ आवलीका का एक भव, ऐसे एक मुहूर्त में ६५५३६ भव होते हैं यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात

एश, सखिज्जगुण मब्भहिएश ॥ वण्णपज्जवेहिं, गधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जयेहिं, अचक्खुदसण पज्जवेहिंय छट्ठाणवडिए ॥ सेतेणट्ठेण गोयमा'एव वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता॥ ४॥आउकाइयाण भते केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ आउकाइयाण अणता पज्जवा ? गोयमा आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाएँ चउट्ठाणवडिए, ठिईं तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गध-रस फास मइअण्णाण सुयअण्णाणय अचक्खुदसण पज्जवेहिए छट्ठाणवडिए से एणट्ठेण

अर्थ

भाग अधिक, व सख्यात गुन अधिक है पांच वर्ण, दो गध पांच रस व आठ स्पर्श की पर्याय से वैसे ही मति अज्ञान की पर्याय श्रुत अज्ञान की पर्याय व अचक्षुदर्शन की पर्याय मे षट्स्थान हीनाधिक हैं ? अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पृथ्वी काया के पर्यव सख्यात असख्यात नहीं परंतु अनत हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अप्काया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया के अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस तरह अप्काय के अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया अप्काया की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य है, प्रदेश आश्रिय तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक पृथ्वी जैसे स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक पृथ्वीकाया जैसे पांच वर्ण, दो गध, पांच रस, आठ स्पर्श

काइए पुढवी काइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जगुणहीणवा असंखिज्ज गुणहीणेवा, अब्भहिए असंखिज्ज भाग मब्भहिएवा, संखिज्जभाग मब्भहिएवा, संखिज्ज गुणमब्भहिएवा, असंखिज्ज गुणमब्भहिएवा ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सिय मब्भहिए, जइहीणे असंखिज्ज भागहीणेवा, संखिज्ज भागहीणवा, संखिज्ज गुणहीणवा अह अब्भहिएवा असंखिज्ज भाग मब्भहिएवा, संखिज्ज भाग मब्भहि-

असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यातगुण अधिक व असंख्यातगुन अधिक, स्थिति आश्रिय स्यात हीन स्यात तुल्य व स्यात अधिक है यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन क्यों कि किसी का बावीस हजार वर्ष का संपूर्ण आयुष्य है और किस का एक समय कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है, २ संख्यात भाग हीन क्यों कि किसीका पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसीका आवलिका कम बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है वैसे ही संख्यात गुन हीन किसी का पूर्ण बावीस हजार वर्ष का आयुष्य है और किसी का दो हजार वर्ष का ही आयुष्य है यों तीन स्थान पाते हैं परन्तु चौथा स्थान नहीं पाता है क्यों कि एकेन्द्रिय में संख्यात वर्ष का ही आयुष्य है २५६ आवलीका का एक भव, ऐसे एक मुहूर्त में ६५५३६ भव होते हैं यदि अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात

एत्रा, सखिज्जगुण मब्भहिएत्रा ॥ वण्णपज्जवेहिं, गधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं मइअण्णाण पज्जवेहिं सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए ॥ सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ४ ॥ आउकाइयाण भते केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ आउकाइयाण अणता पज्जवा ? गोयमा आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाएँ चउट्ठाणवडिए, ठिई तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गध-रस फास मइअण्णाण सुयअण्णाणय अचक्खुदसण पज्जवेहिए छट्ठाणवडिए से एणट्ठेण

अर्थ

भाग अधिक, व सख्यात गुन अधिक है पांच वर्ण, दो गंध पांच रस व आठ स्पर्श की पर्याय से वैसे ही मति अज्ञान की पर्याय श्रुत अज्ञान की पर्याय व अचक्षुदर्शन की पर्याय मे षट्स्थान हीनाधिक हैं ? अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि पृथ्वी काया क पर्यव सख्यात असख्यात नहीं परंतु अनत हैं ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! अप्काया क कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया के अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस तरह अप्काय के अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अप्काया अप्काया की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य है, प्रदेश आश्रिय तुल्य है, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक पृथ्वी जैसे स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक पृथ्वीकाया जैसे पाच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श

गोयमा ! एवं वुच्चइ आउकाइयाणं अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ५ ॥ तेउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाण अणतापज्जवा ? गोयमा ! तेउकाइयाए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण गंध-रस फास मइ-अण्णाण-सुयअण्णाण अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥६॥ वाउकाइयाण पज्जवा पुच्छा ?

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन इन में षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि अप्काया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तेउकाया को अनंत पर्यव है ? अहो गौतम ! तेउकाया तेउकाया की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति से तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षुदर्शन में षट् स्थान हीनाधिक है ? अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?

गोयमा ? वाउकाइयाणं अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ वाउकाइयाणं अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वाउकाइए वाउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस फास पज्जवेहिं मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ वाउकाइयाणं अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ७ ॥ वणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ वणस्सइ काइयाणं अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वणस्सइकाइए वण

अर्थ

अहो गौतम ! वायुकाया के अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! वायुकाया को अनंत पर्यव किस तरह कहे हैं ? अहो गौतम ! वायुकाया वायुकाया से द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक और पांच वर्ण दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक है॥७॥ अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया को अनंत पर्यव किस तरह कहे हुवे है ? अहो गौतम ! वनस्पतिकाया वनस्पतिकाया से द्रव्य आश्रीय तुल्य प्रदेश आश्रीय तुल्य, अवगाहना आश्रीय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति

गोयमा ! एवं वुच्चइ आउकाइयाणं अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ ५ ॥ तेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणतापज्जवा ? गोयमा ! तेउकाइयाए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण गंध-रस फास मइ-अण्णाण-सुयअण्णाण अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए,तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ तेउकाइयाणं अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥६॥ वाउकाइयाणं पज्जवा पुच्छा ?

मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन इन में षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि अपकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! तेउकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं ? अहो गौतम ! तेउकाया तेउकाया की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति से तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षुदर्शन में षट् स्थान हीनाधिक है ? अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि तेउकाया को अनंत पर्यव हैं ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! वायुकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?

सखिज्जगुणहीणेवा, असखिज्जगुणहीणेवा अहअब्भहिए असखिज्जइ भागमब्भहिएवा, सखिज्जइभाग मब्भाहिएवा, सखिज्जगुण मब्भाहिएवा, असखेज्जगुण मब्भहिएवा ॥ ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण गध रस फास आभिणिबोहियणाण सुयनाण मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेण गोयमा! एववुच्चइ बइदियाण अणतापज्जवा पण्णत्ता॥एव तेइदियाणवि, नवर दो दसणा, चक्खुदसणअचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए॥९॥ पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण पज्जवा जहा नेरइयाण तहा भाणियव्वा ॥१०॥मणुस्साण भते! केवइया पज्जवा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता॥सेकेणट्ठेण

अर्थ

यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक, सख्यात भाग अधिक, सख्यातगुन अधिक व असंख्यातगुण अधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, मति अज्ञान श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन के पर्यवकी साथ षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि बेइन्द्रियों को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसेही तेइन्द्रिय का जानना और चतुरेन्द्रिय का भी वैसेही कहना परंतु दर्शन दो जानना चक्षु दर्शन व अचक्षु दर्शन इन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक ॥९॥ तिर्यंच पंचेन्द्रियके पर्यव नारकी जैसे कहना ॥१०॥ अहो भगवन्! मनुष्य को कितने पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि

स्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईएतिट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास मइअण्णाण सुयअण्णाण अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से एणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ वणस्सइकाइयाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ८ ॥ बेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! बेइंदिया बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे, सियतुल्ले, सिय अब्भाहिएवा ॥ जइहीणे असंखिज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जइभागहीणेवा

आश्रीय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व अचक्षु दर्शन आश्रीय षट्स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वनस्पति काया को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय बेइन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य हैं, अवगाहना आश्रीय स्यात् हीन स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं यदि हीन हैं तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, व असंख्यात गुण हीन हैं

वाडिया, वण्णाईहिं छट्ठाण वडिया ॥ जोइसिय वेमाणियावि एव चेव णवरं ठिईए तिट्ठाण वडिया ॥ १२ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए नेरइए जहण्णोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ल पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाण वडिए॥ वण्णगधरसफास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दसणेहिं छट्ठाण वाडिए, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण

अर्थ

जानना ज्योतिषी वैमानिक का भी वैसे ही कहना परन्तु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक क्योंकि मात्र असख्यात वर्ष की स्थिति है परतु सख्यात वर्ष की स्थि ति नहीं है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी जघन्य अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य क्यों कि जघन्य अवगाहना सब की एकसी होती है, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्यों कि जघन्य अंगुल के असख्यातवे भाग की अवगाहनावाले

भंते! एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा प० ? गोयमा! मणुस्से मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस फास आभिणबोहियणाण सुयणाण ओहिणाण मणपज्जवणाण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिंअण्णाणेहिं, तिहि दसणेहिय छट्ठाण वडिए, केवल दसण पज्जवेहिं तुल्ले, सेएणट्ठेणं गोयमा एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ ११ ॥ वाणमंतरा उगाहणट्ठयाए ठिइए चउट्ठाण

मनुष्य को अनंत पर्यव हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य हैं, प्रदेश से तुल्य हैं अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्योंकी मनुष्य में असंख्यात वर्ष का आयुष्य भी है और वर्ण गंध, रस, स्पर्श, आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन और अवधि दर्शन इन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक हैं, और केवल ज्ञान केवल दर्शन आश्रिय तुल्य हैं क्योंकि सब केवलज्ञान केवलदर्शन सदृश होते हैं उन में किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है अहो गौतम ! इस लिये मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ॥ ११ ॥ वाणव्यन्तर की अवगाहना व स्थिति चार स्थान हीनाधिक हैं और वर्णादि आश्रिय षट् स्थान हीन

वाडिया, वण्णाईहिं छट्ठाण वडिया ॥ जोइसिय वेमाणियावि एव चेव णवरं ठिईए तिट्ठाण वडिया ॥ १२ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णोगाहणए नेरइए जहण्णोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाण वडिए॥वण्णगधरसफास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिहिं अण्णाणहिं, तिहिं दसणेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण नेरइयाण

जानना ज्योतिषी वैमानिक का भी वैसे ही कहना परतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक क्योंकि मात्र असंख्यात वर्ष की स्थिति है परतु सख्यात वर्ष की स्थिति नहीं है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले नारकी को अनत पर्यव कहे ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले नारकी जघन्य अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य क्यों कि जघन्य अवगाहना सब की एकसी होती है, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्यों कि जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की अवगाहनावाले

अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ उक्कोसोगाहणगाण भंते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ उक्कोसोगाहणयाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! उक्कोसोगाहणए नेरइए, उक्कोसोगाहणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले,ठिईए, सियहीणे, सियतुल्ले सिय अब्भहिए ॥ जइहीणे असंखिज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जइ भागहीणेवा, अह अब्भहिए असंखिज्ज भागमब्भहिएवा, संखिज्ज भागमब्भहिएवा ॥ वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं तिहिंनाणेहिं तिअण्णाणेहिं, तिहिंदसणेहिं, छट्ठाण वडिए

नारकी की स्थिति जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपमकी होती है वर्ण,गंध,रस, स्पर्श,तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक है अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! उत्कृष्ट ५०० धनुष्य की अवगाहनावाले नेरीये को कितने पर्यव कहे हैं?अहो गौतम! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से उत्कृष्ट अवगाहनावाले नेरीये को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकी उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकी से द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश आश्रिय तुल्य हैं, अवगाहना आश्रिय है तुल्य क्यों कि

सेएणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ उक्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणतापज्जवा पण्णत्ता॥ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाण भते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाण नरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए नेरइए अजहण्णेमण्णुक्कोसोगाहणगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे तुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे असखेज्ज भागहीणेवा सखेज्ज भागहीणेवा सखेज्जगुण हीणेवा, असखेज्जगुण हीणेवा अहअब्भहिएवा असखे-

अर्थ

सबकी उत्कृष्ट अवगाहना एकसी है, स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तब असख्यात भाग हीन, सख्यात भाग हीन और जब अधिक है तब असख्यात भाग अधिक व सख्यात भाग अधिक हैं यहां पर दो स्थान हीनाधिक पाते हैं क्यों कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले की स्थिति बावीस सागरोपम स तेत्तीस सागरोपम की है पांच वर्ण, दो गध, पांच रस, आठ स्पर्श, तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि उत्कृष्ट अवगाहनावाले नारकीको अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्य अनुत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहनावाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! मध्यम अवगाहनावाले नारकी को

उजभाग मब्भाहिएवा,सखेज्ज भागमब्भाहिएवा, सखेज्जगुण मब्भाहिएवा, असखेज्जगुण मब्भाहिएवा ठीईए सियहीणे, सियतुल्ले सिय अब्भहीए जइहीणे असखेज्ज भागहीणेवा सखेज्जभागहीणेवा असखेज्जगुणहीणेवा, सखेज्जगुणहीणेवा अह अब्भहिए असखेज्जइ भाग अब्भाहिएवा, सखेज्जइ भाग अब्भहिएवा, सखेज्जगुण अब्भहिए, असखेज्जगुण अब्भहिएवा वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाण वाडिए ॥ सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवंवुच्चइ अजहण्णुक्कोसोगाहणगाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ जहण्णठिईयाण भंते !

भनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि मध्यम अवगाहना वाले नारकी को अनंत पयव कहे हैं? अहो गौतम! मध्यम अवगाहनावाले नारकी मध्यम अवगाहनावाले नारकी की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं यदि हीन होवे तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन हैं और अधिक होवे तो असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यातगुण अधिक है यों चार स्थान हीनाधिक हैं स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं

नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता सेकेणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ जहण्णठिईयाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए नेरइए जहण्णेण ठिईए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण गध रस फास पज्जवेहि तिहिनाणेहिं तिहिअन्नाणेहिं तिहिंदसणेहिं छट्ठाण वडिए, सेएणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णठिईयाण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसठिईएवि, एव अजहण्णमणुक्कोस-

अर्थ

जब हीन है तो असख्यात भाग हीन, सख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन है पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, व आठ स्पर्श के पर्यव की साथ वैसे ही तीनज्ञान, व तीन दर्शन तीन अज्ञान से षट् स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि मध्यम अवगाहनावाले नारकी को अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले नारकी को अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले नारकी जघन्य स्थितिवाले नारकी की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य हैं, प्रदेश आश्रिय तुल्य हैं, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक हैं, स्थिति आश्रिय तुल्य हैं, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव से वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक

ठिईएवि, एवं नवरं सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाण भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? सेकेण-ट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णगुणकालए नेरइए जहण्णगुणकालगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले,

अहो गौतम! इसलिये जघन्य स्थितिवाले नारकीको अनंतपर्यव कहे हैं ऐसेही उत्कृष्ट स्थिति वाले नारकी का जानना वैसेही मध्यम स्थितिवाले नारकीका जानना, परतु स्थिति आश्रिय चारस्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन्! जघन्य कालागुणवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से जघन्य काला गुणवाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! जघन्य कालागुणवाले नारकी जघन्य कालागुण वाले नारकी की साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव आश्रिय वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक हैं इस लिये अहो गौतम ! जघन्य काला गुणवाले नारकी

अग्गतासहि वण्ण गंध रस फास पज्जवहिं तिहिं नाणेहि, तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिंदस णेहिय, छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णगुण कालगाणं नेरइयाण अणतापज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुण कालएवि एवचेव, नवर कालवण्ण पज्जवेहिंवि, छट्ठाणवडिए, एव अवसेसा चत्तारि वण्णा, दो गंधा, पचरसा, अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्ण आभिणिबोहियणाणीण भते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभि

को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला गुणवाले नारकी का जानना मध्यम काला गुणवाले नारकी का भी वैसे ही कहना परतु काला गुण आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना जैसे काला वर्ण का कहा वैसे ही शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले के साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के

बोहिय ज्ञाणी नेरइयए जहण्णाभिणिबोहिय णाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाण पज्जवेहिं, ओहिणाण पज्जवेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, अण्णाणा नत्थि, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहिय णाणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, एवं चेव नवरं अभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणीवि, एवं चेव णवरं जस्सणाणा तस्स

पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य, श्रुत ज्ञान अवधि ज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक हैं इस में अज्ञान नहीं होने से ग्रहण नहीं किये हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान का जानना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ षट्स्थान हीनाधिक कहना, ऐसेही श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान का कहना, तीन ज्ञान का कहा वैसे ही तीन अज्ञान का कहना परंतु जहां ज्ञान होवे वहां अज्ञान नहीं कहना और

अण्णाणा नत्थि, जहा णाणा तहा अण्णाणावि भाणियव्वा, णवर जस्स अण्णाणा तस्स-णाणा नभवति ॥ जहण्ण चक्खुदसणीण भंते ! नेरइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जहण्णचक्खु दसणीण नेरइयाण अणता पज्जवा प० ? गोयमा ! जहण्णचक्खुदसणीण णेरइए जहण्णचक्खुदसणि णणरसणेरइयस्स दव्वट्ठयाएतुले, पएसट्ठयाएतुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्ण गध रस फासपज्जवेहिं तिहिंणाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं छट्ठाणवडिए, चक्खुदसण पज्जवेहिंतुल्ले, अचक्खुदसण पज्जवेहिं ओहिदसण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए

अर्थ जहां अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं कहना अहो भगवन् ! जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य चक्षु दर्शनी नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी जघन्य चक्षु दर्शनी नारकीकी साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चारस्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध रस व स्पर्श वैसे ही तीन ज्ञान तीन अज्ञान, अचक्षु दर्शन व अवधि दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना और चक्षुदर्शन की साथ तुल्य कहना अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा

ओहिय नाणी नेरइयए जहण्णाभिबोहिय नाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,पएसट्ठयाए तुल्ले,ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्ण-गंध-रस-फास पज्जवेहि-छट्ठाणवडिए,आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयनाण पज्जवेहिं, ओहिणाण पज्जवेहिं, तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, अण्णाणनत्थि, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिबोहिय णाणीण नेरइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि,अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि,एवं चेव नवर अभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि, ओहिणाणीवि, एवं चेव णवरं जस्सणाणा तस्स

पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य, श्रुत ज्ञान अवधि ज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक है, इस में अज्ञान नहीं होने से ग्रहण नहीं कीये हैं- अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले नारकी को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनि बोधिक ज्ञान का जानना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ षट्स्थान हीनाधिक कहना, ऐसेही श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान का कहना, तीन ज्ञान का कहा वैसे ही तीन अज्ञान का कहना परंतु जहां ज्ञान होवे वहां अज्ञान नहीं कहना और

एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण असुरकुमाराण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ उक्कोसोगाहणएवि एव ॥अजहण्ण मणुक्कोसोगाहणएवि, एव चव, णवर सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए, एव जहा नेरइया तहा असुरकुमारा, एव जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ जहण्णोगाहणगाण भत ! पुढविकाइयाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ, जहण्णोगाहणगाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले,

तीन दर्शन की साथ षट स्थान हीनाधिक, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार को अनत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का कहना मध्यम अवगाहना का भी ऐसे ही कहना परतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही शेष सब जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत सब का कहना ॥१४॥अहो भगवन्! जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ?अहो गौतम! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया जघन्य अवगाहनावाली पृथ्वीकाया से द्रव्य से तुल्य,

सेएणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसचक्खुदंसणीवि, अजहण्णमणुक्कोस चक्खुदंसणीवि, एवं चेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं अचक्खुदंसणीवि ओहिदंसणीवि॥१३॥ जहण्णोगाहणगाणं भंते! असुरकुमाराणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णोगाहणए असुरकुमारे जहण्णोगाहणगस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णादिहिं छट्ठाणवडिए, तिहिं णाणेहिं तिएहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणाहिंय छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेणं गोयमा!

गया है कि जघन्य चक्षुदर्शनी नारकी का अनंत पर्याय कहे हैं एवं ही उत्कृष्ट चक्षुदर्शनी को भी जानना मध्यम चक्षुदर्शन का वैसा ही कहना परंतु चक्षुदर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही अचक्षुदर्शन व अवधि दर्शन का कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन्! जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार को कितने पर्याय कहे हैं? अहो गौतम! अनंत पर्याय कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार का अनंत पर्याय कहे हैं? अहो गौतम! जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार जघन्य अवगाहना वाले असुर कुमार की साथ द्रव्य में तुल्य, प्रदेश में तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस स्पर्श, तीन ज्ञान तीन अज्ञान व तीन

तुल्ले ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण गंध रसं फास पज्जवेहिं, मइअण्णाण सुयअण्णाय चक्खुदसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाठिईयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि, एवं चेव, णवरं सट्ठाणे तिट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुणकालयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णगुणकालए पुढविकाइए जहण्णगुणकालगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए

द्रव्यसे तुल्य, प्रदेशसे तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस आठ स्पर्श दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाली पृथ्वीकाया का मानना मध्यम स्थितिवाली पृथ्वीकाया का वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन् ! जघन्य काला गुणवाली पृथ्वीकाया के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य काला गुणवाली पृथ्वीकाया जघन्य काला गुणवाली पृथ्वीकाया की

ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ, जहण्णोगाहणगाण पुढवि काइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणएणवि, अजहण्णमणुक्कोसोगाह-णएवि, एवं चेव, णवर सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णे ठिईयाण भते ? पुढवि-काइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णाठिईयाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णट्ठिईए पुढविकाइए जहण्णाठिईयस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए

प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठस्पर्श, दो अज्ञान, व अचक्षुदर्शन के पर्यव की साथ षट्स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम! जघन्य अवगाहनावाले पृथ्वी काया को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले का जानना मध्यम अवगाहनावाले पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना परतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीना-धिक जानना अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया का अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया जघन्य स्थितिवाली पृथ्वीकाया की साथ

वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्ण मइअण्णाणी पुढविकाइयए जहण्ण मइअण्णाणिस्स पुढवि काइयस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिठाण वडिए, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, मइअण्णाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवहिय छट्ठाण वडिए, सेएवट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णमइअण्णाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसमइअण्णाणीवि, जहण्णमणुक्कोस मइअण्णाणीवि एव चेव, णवर सठाणए छट्ठाण वडिए एव सुयअण्णाणीवि, अचक्खु दसणीवि, एव चेव, एव जाव वणस्सई

अर्थ — कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनत पर्यव कहे गये हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक, मति अज्ञान पर्यव की साथ तुल्य, श्रुतअज्ञान पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य मति अज्ञानवाली पृथ्वीकाया को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट का जानना मध्यम मति अज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही श्रुत अज्ञान व अचक्षु

तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ल, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, ॥ कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, दोहिं अण्णाणहिं अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवं सेस णवर सट्ठाणण छट्ठाणवडिए ॥ एवं पंचवण्ण दोगंध पंचरसा अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्ण मइअण्णाणीण भंते ! पुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से कणट्ठेण भंते ! एवं

साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, कालावर्ण पर्यव की साथ तुल्य शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श की साथ ऐसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये जघन्य काला गुण वाली पृथ्वी काया का अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला गुण वाली पृथ्वी काया का जानना मध्यम काला गुण वाली पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श का कहना जघन्य मति अज्ञान वाले पृथ्वी काया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया को अनंत पर्यव

वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्ण मइअण्णाणी पुढविकाइयए जहण्ण मइअण्णाणिस्स पुढवि काइयस्स दव्वट्टयाएतुल्ले पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिठाण वडिए, वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, मइअण्णाण पज्जवेहि तुल्ले, सुयअण्णाण पज्जवेहिं, अचक्खु दसण पज्जवहिय छट्ठाण वडिए, सेएवट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णमइअण्णाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसमइअण्णाणीवि, जहण्णमणुक्कोस मइअण्णाणीवि एव चेव, णवर सठाणण छट्ठाण वडिए, एव सुयअण्णाणीवि, अचक्खु दसणीवि, एव चेव, एव जाव वणस्सई

अर्थ

कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनत पर्यव कहे गये हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव की साथ पट् स्थान हीनाधिक, मति अज्ञान पर्यव की साथ तुल्य, श्रुतअज्ञान पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ पट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये एसा कहा गया है कि जघन्य मति अज्ञानवाली पृथ्वीकाया को अनत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट का जानना मध्यम मति अज्ञान का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय पट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही श्रुत अज्ञान व अचक्षु

तुले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, ॥ कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाण पुढविकाइयाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवं चेव णवर सट्ठाणण छट्ठाणवडिए ॥ एवं पंचवण्ण दोगंध पंचरसा अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्ण मइअण्णाणीण भंते ! पुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एवं

साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, कालावर्ण पर्यव की साथ तुल्य शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श की साथ ऐसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इसलिये जघन्य काला गुण वाली पृथ्वी काया का अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला गुण वाली पृथ्वी काया का जानना मध्यम काला गुण वाली पृथ्वी काया का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श का कहना जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य मति अज्ञान वाली पृथ्वी काया को अनंत पर्यव

ओगाहणाए चउट्ठाणवडिए॥ जहण्णठितीयाणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णठिईए बेइंदिए जहण्णठितियस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठितीए तुल्ले वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्ण ठिईयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता एवं उक्कोसठितीएवि, णवरं दोणाणा अब्भहिया, अजहण्णमणुक्कोसठिईए जहा उक्कोसठितीए णवरं ठिईए तिट्ठाणवडिए॥ जहण्णगुणकालयाणं बेइंदियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता पज्जवा

अर्थ

जानना परंतु इन में ज्ञान नहीं है मध्यम अवगाहना का भी जघन्य अवगाहना जैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय चार स्थान हीनाधिक जानना अहो भगवन्! जघन्य स्थितिवाले बेइंद्रिय की पृच्छा, अहो गौतम! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम! जघन्य स्थितिवाले बेइंद्रिय जघन्य स्थितिवाले बेइंद्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पर्यव वैसे ही दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना अहो गौतम! इस लिये जघन्य स्थितिवाली बेइंद्रियकी अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले बेइंद्रिय का जानना प.सू.

काइया ॥ १५ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! बेंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए बेइंदिए जहण्णोगाहणगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाण वडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥ एवं उक्कोसोगाहणएवि णवर णाणणत्थी ॥ अजहण्णो मणुक्कोसोगाहणए जहा जहण्णोगाहणए, णवर सट्ठाणे

दर्शन का मानना जैसे पृथ्वी कायाका कहा वैसे ही अपूकाया यावत् वनस्पतिकाया का जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ! अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, दो ज्ञान, दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन के पर्यव की साथ छ स्थान हीनाधिक जानना अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहनावाले बेइंद्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले बेइंद्रिय का

पचरसा, अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते ! बेइंदियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिनिबोहियणाणीणं बेइंदियाणं अणंतापज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी बेइंदिए जहण्णाभिणिबोहिअण्णाणिस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाणपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, अचक्खु दंसण पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए,

अर्थ

जघन्य गुण काला बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट काला व मध्यम गुण काला का जानना परंतु मध्यम गुण काला में स्वस्थान आश्रित षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध पांच रस, व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय के साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस व स्पर्श पर्यव वैसेही श्रुत ज्ञान

पण्णत्ता ॥ से केणट्टेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाण बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्ण गुणकालए बेइंदिए जहण्णगुणकालयस्स बेइंदियस्स दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसण पज्जवेहिय छट्ठाणवडिए, से तेणट्टेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुणकालगाण बेइंदियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुणकालएवि, एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं पंचवण्णा दो गंधा,

दो ज्ञान आश्रित कहना मध्यम स्थितिवाले का उत्कृष्ट स्थितिवाले जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक मानना जघन्य गुणकाला बेइन्द्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला बेइन्द्रिय जघन्य गुण काला बेइन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही दो ज्ञान दो अज्ञान व अचक्षु दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक मानना अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि

याण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहए पचिंदिए तिरिक्खजोणियस्सए जहणोगाहण- गस्स पचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगा- हणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए ॥ वण्ण गध रस फास पज्जवेहिं दोहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दसणाहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहणे णोगाहणगाण पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता, एव उक्कोसोगाहणएवि,

अर्थ

जघन्य अवगाहना वाले तिर्यच पचेन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहना वाले तिर्यच पचेन्द्रिय को अनत पर्यव कहे हैं ! अहो गौतम ! जघन्य अवगाहना वाले तिर्यच पचेन्द्रिय जघन्य अवगाहना वाले तिर्यच पचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, क्षेत्र से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तुल्य, स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जघन्य अवगाहनावाले संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले होने से पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो ज्ञान दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक, क्यों कि जघन्य अवगाहनावाले तिर्यच में अवधि ज्ञान व विभग ज्ञान नहीं होता है और उक्त दोनों

से तणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण, बेइंदियाणअणंता पज्जवा पण्णत्ता एव उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि एवचेव, णवर छट्ठाणवडिए सट्ठाणेण एव सुयणाणीवि, मइअण्णाणीवि, सुयअण्णाणीवि, अचक्खुदसणीवि णवरं जत्थ णाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि, जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि ॥ जत्थ दसण तत्थ णाणावि, अणाण्णावि, एवंचेव तेइंदियावि, चउरिंदियाणवि, एव चेव णवर चक्खुदसण अब्भहिय, ॥ १६ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणि

पर्यव व अचक्षु दर्शन पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना और आभिनिबोधिक ज्ञान की साथ तुल्य जानना अहो गौतम ! इसलिये जघन्य आभिनि बोधिक ज्ञान वाले बेइन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का जानना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञान वाले का भी वैसे परन्तु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही श्रुतज्ञान का जानना जैसे आभिनिबोधिक ज्ञान व श्रुत ज्ञान का कहा वैसे ही मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान का जानना अचक्षु दर्शन का भी वैसे ही कहना परन्तु जहां ज्ञान वहां अज्ञान नहीं और अज्ञान होवे वहां ज्ञान नहीं और जहां दर्शन है वहां ज्ञान अज्ञान दोनो ही हैं ऐसा कहना जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय का जानना चतुरेन्द्रिय का भी वैसे ही कहना परंतु चक्षुदर्शन अधिक जानना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् !

ठिईए तुल्ले, वण्ण गध रस फास पज्जवेहि, दोहि अण्णाणेहि, दोहि दसणेहिं, छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णठिईयाण पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण अणता पज्जवा, एव उक्कोसठिईएवि, एव चेव णवर दो णाणा अब्भहिया, अजहण्णमणुक्कोसठिइएवि एव चेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, तिण्णि णाणा तिण्णि अण्णाणा तिण्णि दसणा ॥ जहण्ण गुणकाल गाण भते ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा १ण्णत्ता से कणट्ठेण भते! एव वुच्चइ जहण्णगुणकालगाण पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणता

अर्थ

न्द्रिय जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पचन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, मदश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य, वर्ण, गध, रस व स्पर्श मैंम ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच अपर्याप्त होते हैं इस से उस में सम्यक्पना का अभाव होने से ज्ञान नहीं पाता है अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पचन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले तिर्यंच पचेन्द्रिय का जानना परतु इस में दो ज्ञान अधिक जानना अर्थात् दो ज्ञान, दो अज्ञान व दर्शन होते हैं उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होवे हैं उस में दो ज्ञान दो अज्ञान निश्चय ही होवे हैं मध्यम स्थिति का उत्कृष्ट स्थितिवाले

णवर तिहिणाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए ॥ जहा उक्कोसो गाहणए तहा जहण्णमणुक्कोसागाहणवि, णवर ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णट्ठिईयाण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अनंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णठिईए पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए,

सहित जीव तिर्यंच में नहीं उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य अवगाहनावाले तिर्यंच को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले तिर्यंच का जानना परंतु तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना जैसे उत्कृष्ट अवगाहना का कहा वैसे ही मध्यम अवगाहनावाले का जानना परंतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं ! अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले तिर्यंच पंचे-

यव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण भंते ! पचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणी पचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णाभिणिबोहिय णाणी पचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णाभिणिबोहियणाणीस पचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्ण गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ आभिणिबोहियणाण पज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं, छट्ठाणवडिए, चक्खुदंसण पज्जवेहिं अचक्खुदंसण पज्ज-

हीनाधिक जानना अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला का जानना मध्यम गुण काला का भी वैसे ही जानना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही पांचों वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानवाले को कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण,

पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण कालए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए जहण्णगुण कालयरस पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले,पएसट्ठयाएतुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ॥ ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिंतुल्ले, अवसेसहि वण्ण-गध रस फास पज्जवेहिंतिहिं णाणेहिं, तिहिं अण्णाणेहिं, तिहिं दंसणहिं छट्ठाणवडिए, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ अजहण्णगुणकालगाण पंचिंदिए तिरिक्खजोणियाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव उक्कोसगुणकालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवचेव णवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव पचवण्णा, दोगधा पचरसा अट्ठफासा भाणि-

वैसे कहना परंतु इस में स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन कहना अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पचेन्द्रिय के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा है कि जघन्य गुण काला तिर्यंच पचेन्द्रिय को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य गुण काला तिर्यंच पचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य और शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श, वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट्स्थान

जहण्णोहियणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए जहण्णोहियणाणिस्स पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध-रस फास पज्जवेहिं आभिणिबोहियणाण सुयणाण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, ओहियण्णा पज्जवेहिं तुल्ले, अण्णाणणत्थि, चक्खुदसण पज्जवेहिं अचक्खु-दसण पज्जवेहिं, ओहिदसण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणी पचेंदिय तिरिक्खजोणियाण अणत पज्जवा ॥ एव उक्कोसोहिणाणीवि, अजहण्ण मणुक्कोसोहिणाणीवि एव चेव, णवर सट्ठाणेण छट्ठाणवडिए, जहा आभिणि

अर्थ

पंचेन्द्रिय जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तीन स्थान, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श वैसे ही आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुत ज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन व अवधि दर्शन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक अवधि ज्ञान आश्रिय तुल्य, इस में अज्ञान नहीं है, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि जघन्य अवधि ज्ञान वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट अवधिज्ञानी का जानना मध्यम अवधि ज्ञानी का भी वैसे ही कहना- परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना जैसे आभिनिबोधिक ज्ञानी

वहिं छट्ठाण वडिए से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णाभिणीबोहियणाणीणं पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता एवं उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि णवरं ठिईए तिट्ठाण वडिए॥ तिण्णिणाणा तिण्णिदंसणा, सट्ठाणे तुल्ले सेसेसु छट्ठाणवडिए, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एवं सुयणाणीवि ॥ जहण्णोहिणाणीणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णोहियणाणी पंचिंदिए तिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा ? गोयमा !

गंध, रस, व स्पर्श वैसे ही श्रुत ज्ञान चक्षुदर्शन व अचक्षु दर्शन आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक, आभिनिबोधिक ज्ञान आश्रिय तुल्य, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी को अनंत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी का कहना, स्वस्थान आश्रिय तुल्य कहना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी का उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और स्वस्थान आश्रिय भी षट् स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही श्रुतज्ञानी का जानना जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय को अनंत पर्यव किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी तिर्यंच

तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, उक्कोसोगाहणगवि एवचेव णवरं ठिईए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असंखेज्जइभाग मब्भहिए, दोणाणा दोअण्णाणा, दो दंसणा, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवचेव णवरं ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए

अर्थ

तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि जघन्य अवगाहनावाले युगलिये नहीं होने से संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की अपेक्षा से षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्याय हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले का भी वैसे ही जानना परंतु स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन और यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक है दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन होते हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले युगलिये होते हैं इस लिये उस में मात्र दो ज्ञान होते हैं, परंतु अवधि ज्ञान व

बोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअणाणीय, जहा ओहिणाणी तहा विभगणाणीय, चक्खुदसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणात्थि, ॥ जत्थ दसणा तत्थणाणात्रि अण्णाणावि, अत्थित्ति भाणियव्व ॥ १७ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्साण दव्वट्ठयाए तुल्ले, - पएसट्ठयाए

का कहा वैसे ही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का जानना अवधिज्ञानी जैसे विभग ज्ञानी का कहना चक्षुदर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना परन्तु इस में जहां ज्ञान है वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है-वहां ज्ञान नहीं है ॥१७॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से

तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता, उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव णवर ठिईए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे असंखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असंखेज्जइभाग मब्भहिए, दोणाण दोअण्णाणा, दो दसणा, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, एवंचेव णवर ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए

अर्थ

तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि जघन्य अवगाहनावाले युगलिये नहीं होने से संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की अपेक्षा से षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्याय हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले का भी वैसे ही जानना परन्तु स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन और यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक है दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन होते हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले युगलिये होते हैं इस लिये उस में मात्र दो ज्ञान होते हैं, परन्तु अवधि ज्ञान व

वोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय, जहा ओहिणाणी तहा विभगणाणीय, चक्खुदसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणात्थि, ॥ जत्थ दसणा तत्थणाणावि अण्णाणावि, अत्थित्ति भाणियव्व ॥ १७ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए मणूसे जहण्णोगाहणगस्स मणुस्साण दव्वट्ठयाए तुल्ले, - पएसट्ठयाए

का कहा वैसे ही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का जानना अवधिज्ञानी जैसे विभग ज्ञानी का कहना चक्षुदर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना परतु इस में जहां ज्ञान हैं वहां अज्ञान नहीं है और जहां अज्ञान है-वहां ज्ञान नहीं है ॥१७॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से

तुल्ले, आगाहणट्टयाए तुल्ले, ठिईए तिट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं, तिहिं णाणेहिं दोहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता, उक्कोसोगाहणएवि एवचेव णवर ठिईए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे असखिज्जइभागहीणे, अह अब्भहिए असखेज्जइभाग मब्भहिए, दोणाण दोअण्णाणा, दो दसणा, अजहण्णमणु-क्कोसोगाहणएवि, एवचेव णवर ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए

अर्थ तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि जघन्य अवगाहनावाले युगलिये नहीं होने से संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव वैसे ही तीन ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की अपेक्षा से षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि जघन्य अवगाहनावाले मनुष्य को अनंत पर्याय हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले का भी वैसे ही जानना परंतु स्थिति आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन है तो असंख्यात भाग हीन और यदि अधिक है तो असंख्यात भाग अधिक है दो ज्ञान, दो अज्ञान व दो दर्शन होते हैं उत्कृष्ट अवगाहनावाले युगलिये होते हैं इस लिये उस में मात्र दो ज्ञान होते हैं, परंतु अवधि ज्ञान व

आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदसण पज्जवेहिं तुल्ले ॥ जहण्णाठिईयाण भंते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ जहण्णाठिईयाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! ज-हण्णठिईए मणुस्से जहण्णठिइयस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध रस फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णाठिईयाणं

अवधि दर्शन नहीं होते हैं मध्यम अवगाहनावाले मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान, केवल दर्शन की साथ तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के कितने पर्यव हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य जघन्य स्थितिवाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य वर्ण, गंध, रस

मणुस्साणं अणता पज्जवा, प०॥एव उक्कोसठिईएवि,णवरं दोणाणा अब्भहिया,अजहण्णम-
णुक्कोसठिईएवि एव,णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए,आइल्लेहिं
चउहिंणाणहि छट्ठाण वडिए,केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले,तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं
छट्ठाणवडिए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाण भते ! मणुस्साण केवइया
पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ
जहण्णगुण कालयाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनन्त पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का जानना परतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं मध्यम स्थितिवाले का भी वैसे ही कहना परतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक केवल दर्शन आश्रिय तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनते पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्यकी

आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले, तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदसण पज्जवेहिं तुल्ले ॥ जहण्णठिईयाण भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता-से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ जहण्णठिईयाण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठिईए मणुस्से जहण्णठिईयस्स मणुसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं, दोहिं दसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ जहण्णठिईयाणं

अवधि दर्शन नहीं होते हैं मध्यम अवगाहनावाले मनुष्य का भी वैसे ही कहना परतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान व मन पर्यव ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान, केवल दर्शन की साथ तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के कितने पर्यव हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से जघन्य स्थितिवाले मनुष्य को अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थितिवाले मनुष्य जघन्य स्थितिवाले मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय तुल्य वर्ण, गंध, रस

मणुस्साणं अणता पज्जव प०॥एवं उक्कोसठिईएवि,णवरं दोणाणा अन्नाणा अब्भहिया,अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवं,णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए,आइल्लेहिं चउहिंणाणेहि छट्ठाण वडिए,केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले,तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दसणहिं छट्ठाणवडिए, केवलदसणपज्जवेहिं तुल्ले, जहण्णगुण कालयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुण

अर्थ

व स्पर्श पर्यव की साथ वैसे ही दो अज्ञान व दो दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य स्थितिवाले मनुष्य के अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले मनुष्य का जानना परंतु दो ज्ञान अधिक कहना, क्यों कि उत्कृष्ट स्थितिवाले युगलिये होते हैं मध्यम स्थितिवाले का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, पहिले के चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक केवल दर्शन आश्रिय तुल्य अहो भगवन् ! जघन्य गुण काला मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुण काला मनुष्य जघन्य गुण काला मनुष्य की

कालएमणूस जहण्णगुणकालगमणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्ण-गंध रस-फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए आइल्लेहिं चउहिं णाणेहिं छट्ठाण वडिए केवलणाण पज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए, केवलदंसण पज्जवेहिं तुल्ले, सेतेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालगमणूसाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता॥एवं उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोसगुण कालएवि एवंचेव, णवरं सट्ठाणे

साथ द्रव्य आश्रिय तुल्य, प्रदेश आश्रिय तुल्य, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काला वर्ण पर्यव आश्रिय तुल्य, शेष चार वर्ण, दो गंध, पांच रस व आठ स्पर्श के पर्यव वैसे ही पहिले चार ज्ञान, तीन अज्ञान व तीन दर्शन की साथ षट्स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य गुण काला मनुष्य के अनंत पर्यव हैं ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काला मनुष्य का जानना मध्यमगुण काला मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसे ही पांच वर्ण, दो गंध, पांच, रस, व आठ स्पर्श का जानना अहो भगवन् ! जघन्य

छट्ठाणवडिए ॥ एव पचवण्णा, दोगधा, पचरसा, अट्ठफासा भाणियव्वा ॥ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण भते ! मणूसाण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहिय णाणीण अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियणाणी मणुस्से जहण्णाभिणिबोहिय णाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाएतुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णगधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥ आभिणि

आभिनिबोधिक ज्ञानवाले मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं। अहो भगवन्! किस कारन से अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी जघन्य, आभिनिबोधिक ज्ञानीकी साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस, व स्पर्श के पर्यव आश्रिय षट स्थान हीनाधिक आभिनिबोधिक ज्ञानी के पर्यव की साथ तुल्य श्रुत ज्ञान के पर्यव व दो दर्शनकी साथ षट्स्थान हीनाधिक अहो गौतम! इसलिये ऐसा कहा गया है कि जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी के अनत पर्यव कहे हैं ऐसे ही उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी का जानना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक तीन ज्ञान व तीन दर्शन के पर्यव की

वोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं दोहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए सेसेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण अणता पज्जव पण्णत्ता॥एव उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, णवर आभिणिबोहिय नाणपज्जवेहिं तुल्ले ठिईए तिट्ठाणवडिए, तिहिं णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए,अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव सुयणाणीवि॥ जहण्णोहिणाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणीण मणुस्साण

साथ षट् स्थान हीनाधिक कहना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी का उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसेही श्रुतज्ञानका जानना अहो भगवन् ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक दो ज्ञान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक, अवधि ज्ञान

अणता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोहिणाणी मणुस्से जहण्णोहिणाणिस्स मणुसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, आगाहणट्ठयाए तिट्ठाणवडिए, ठिईए तिट्ठाणवडिए,वण्णगधरस फास पज्जवेहिं दाहिणाणेहिं छट्ठाणवडिए, ओहिणाण पज्जवहिं तुल्ले, मणपज्जवणाणपज्जवहिं छट्ठाणवडिए तिहिं दसणेहिं, छट्ठाणवडिए, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणीण मणूसाण अणता पज्जवा ॥ एव उक्कोसोहि-णाणीवि, अजहण्णमणुक्कोसोहिणाणीवि एवचेव ॥ णवर ओगाहणठयाए चउट्ठाण वडिए सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव मणपज्जवणाणीवि भाणियव्वो, णवर आगाहणट्ठयाए

अर्थ

आश्रिय तुल्य, मन.पर्यव ज्ञान व तीन दर्शन आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक ऐसे ही उत्कृष्ट अवधि ज्ञान का जानना मध्यम अवधि ज्ञान का वैसे ही कहना परतु अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक और स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक जैसे अवधि ज्ञानी का कहा वैसे ही मन पर्यव ज्ञानी का कहना परतु अवगाहना आश्रिय तीन स्थान जैसे आभिनिबोधिक ज्ञानी का कहा वैसेही मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का कहना अवधि ज्ञानी जैसे विभग ज्ञानी का कहना चक्षु दर्शनी व अचक्षु दर्शनी का आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना और अवधि दर्शनी का अवधि ज्ञानी जैसे कहना जहां ज्ञान हैं वहां अज्ञान नहीं हैं और जहां अज्ञान हैं वहां ज्ञान नहीं हैं और जहां दर्शन हैं वहां ज्ञान व अज्ञान

वोहियणाणपज्जवेहिं तुल्ले, सुयणाण पज्जवेहिं दोहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जहण्णाभिणिबोहियणाणीण अणता पज्जव पण्णत्ता॥एव उक्कोसाभिणिबोहियणाणीवि, णवर आभिणिबोहिय नाणपज्जवेहिं तुल्ले ठिईए तिट्ठाणवडिए, तिहिं णाणेहिं तिहिं दसणेहिं छट्ठाणवडिए, अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियणाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियणाणी, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए, सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव सुयणाणीवि॥ जहण्णोहियणाणीण भते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जहण्णोहिणाणीण मणुस्साण

साथ षट् स्थान हीनाधिक कहना मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी का उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जैसे कहना परंतु स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक स्वस्थान आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक जानना ऐसेही श्रुतज्ञानका जानना अहो भगवन् ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य के अनत पर्यव कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा गया है ? अहो गौतम ! जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य जघन्य अवधि ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक दो ज्ञान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक, अवधि ज्ञान

ट्टयाए तुल्ले ओगाहणट्टयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तिट्ठाण वडिए, वण्ण-गंध-रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, केवलणाण पज्जवेहिं केवल दसण पज्जवेहिं तुल्ले, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ केवलणाणीण मणुस्साण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ एव केवलदंसणीवि मणुस्से भाणियव्वे ॥ १८ ॥ वाणमतरा जहा असुरकुमारा ॥ एव जोइसिया वेमाणिया, णवर ठिईए तिट्ठाण वडिए भाणियव्वा, सेत्त जीवपज्जवा ॥ १९ ॥ * ॥ अजीव पज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा रूवि अजीव पज्जवाय, अरूवि अजीव पज्जवाय ॥ अरूवि

अर्थ

ज्ञान सिवा अन्य ज्ञान व केवल दर्शन सिवा अन्य दर्शनों का अभाव होने से नहीं ग्रहण कीये हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा गया है कि केवल ज्ञानी के अनत पर्यव कहे हैं जैसे केवल ज्ञानी का कहा वैसे ही केवल दर्शनी का जानना ॥ १८ ॥ जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही वाणव्यतर का कहना यह ज्योतिषी व वैमानिक का भी वैसे ही कहना परंतु स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक जानना यह जीव पर्यव संपूर्ण हुवा ॥ १९ ॥ अब अजीव पर्यव का वर्णन करते हैं अहो भगवन् ! अजीव पर्यव के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अजीव पर्यव के दो भेद कहे हैं १ रूपी अजीव पर्यव और २ अरूपी अजीव पर्यव अहो भगवन् ! अरूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे हैं ?

तिट्ठाणवडिए, जहा आभिणिबोहियणाणी तहा मइअण्णाणी सुयअण्णाणीय भाणियव्वा, जहा ओहिणाणी तहा विभंगणाणीवि भाणियव्वो, चक्खुदंसण अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियणाणी, ओहिदंसणी जहा ओहिणाणी, जत्थणाणा तत्थ अण्णाणा णत्थि जत्थ अण्णाणा तत्थ णाणा णत्थि॥ जत्थ दंसणा तत्थणाणावि अण्णाणावि ॥ केवल-णाणीण भंते ! मणुस्साण केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ केवलणाणीणं भंते! मणुस्साण अणंता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! केवलणाणी मणुस्से केवलणाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएस-

दोनों हैं अहो भगवन् ! केवल ज्ञानी मनुष्य के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन ! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! केवल ज्ञानी मनुष्य केवल ज्ञानी मनुष्य की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चार स्थान हीनाधिक × स्थिति आश्रिय तीन स्थान हीनाधिक क्यों की मात्र संख्यात वर्ष का ही आयुष्य होता है, वर्ण, गंध, रस व स्पर्श के पर्यव से षट् स्थान हीनाधिक और केवल ज्ञान व केवल दर्शन के पर्यव की साथ तुल्य केवल

× अपर्याप्त अवस्था में केवल ज्ञान नहीं होता है परंतु केवल समुद्घात करते संपूर्ण लोक व्यापी केवली के प्रदेश होने से असंख्यात गुनी हीनाधिक होती है

नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ तेण नो सखेज्जा नो असखेज्जा, अणता ? गोयमा ! अणता परमाणु पोग्गला, अणता दुपए सियाखधा, जाव अणता दसपएसियाखधा, अणता सखिज्ज पएसियाखधा, अणता असखेज्ज पएसियाखधा, अणता अणत पएसियाखधा, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ तेण नो सखेज्जा असखेज्जा अणता ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलाण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणता पज्जवा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणु पोग्गलस्स

असख्यात नहीं परतु अनंत हैं अहो भगवन् ! किस कारन से रूपी अजीव पर्यव अनत हैं ? अहो गौतम ! अनत परमाणु पुद्गल, अनत द्विप्रदेशिक स्कध, यावत् अनत दश प्रदेशिक स्कध अनत सख्यात प्रदेशिक स्कंध, अनत असख्यात प्रदेशिक स्कध व अनत अनतप्रदेशिक स्कंध हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वे सख्यात व असख्यात नहीं परतु अनंत रूपीअजीव पर्यव जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं! अहो भगवन्! किस कारनसे अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि समान प्रदेशावगाही होने से

अजीवपज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ?, तंजहा धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्सपएसा ॥ अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्सदेसे, अहम्मत्थिकायस्स पएसा ॥ आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसा, आगासत्थिकायस्सपएसा, अद्धासमए ॥ सेत्त अरूवि अजीवपज्जवा ॥ २० ॥ रूवि अजीव पज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ते ? गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा खंधपएसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा !

भहो गौतम ! अरूपी अजीव पर्यव के दश भेद कहे हैं १ धर्मास्तिकाया का स्कंध सो संपूर्ण विभाग, २ धर्मास्तिकाया का देश सो अर्ध, तृतीयादि विभाग और ३ प्रदेश सो निर्विभागरूप सूक्ष्म खण्ड ऐसे ही ४ अधर्मास्तिकाया का स्कंध ५ अधर्मास्तिकाया का देश और ६ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश ७ आकाशास्तिकाया का स्कंध ८ आकाशास्तिकाया का देश और ९ आकाशास्तिकाया का प्रदेश और १० काल यह अरूपी अजीव पर्यव हुए ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! रूपी अजीव पर्यव के चार भेद कहे हैं १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश व ४ परमाणु पुद्गल अहो भगवन् ! वे क्या संख्यात असंख्यात व अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात नहीं

नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ तेण नो सखज्जा नो असखज्जा, अणता ? गोयमा ! अणता परमाणु पोग्गला, अणता दुपए सियाखधा, जाव अणता दसपएसियाखधा, अणता सखिज्ज पएसियाखधा, अणता असखेज्ज पएसियाखधा, अणता अणत पएसियाखधा, से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ तेण नो सखज्जा असखेज्जा अणता ॥ २१ ॥ परमाणु पोग्गलाण भते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणता पज्जवा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणु पोग्गलस्स

असख्यात नहीं परतु अनत हैं अहो भगवन् ! किस कारन से रूपी अजीव पर्यव अनत हैं ? अहो गौतम ! अनंत परमाणु पुद्गल, अनत द्विप्रदेशिक स्कध, यावत् अनत दश प्रदेसिक स्कध अनत सख्यात प्रदेशिक स्कंध, अनत असख्यात प्रदेशिक स्कध व अनत अनतप्रदेशिक स्कंध हैं अहो गौतम ! इस लिये ऐसा कहा गया है कि वे सख्यात व असख्यात नहीं परतु अनंत रूपीअजीव पर्यव जानना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! परमाणु पुद्गल के कितने पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं? अहो भगवन्! किस कारनसे अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! परमाणु पुद्गल परमाणु पुद्गल की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से तुल्य, क्योंकि समान प्रदेशावगाही होने से

अजीवपज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता ?, तंजहा धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्सदेसे, धम्मत्थिकायस्सपएसा ॥ अहम्मत्थिकाए, अहम्मत्थिकायस्सदेसे अहम्मत्थिकायस्स पएसा ॥ आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्सदेसा, आगासत्थिकायस्सपएसा, अद्धासमए ॥ सेत्त अरूवि अजीवपज्जवा ॥ २० ॥ रूवि अजीव पज्जवाण भंते ! कइविहा पण्णत्ते ? गोयमा चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा—खंधा, खंधदेसा खंधपएसा, परमाणुपोग्गला ॥ तेण भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा !

भा॰ गौतम ! अरूपी अजीव पर्यव के दस भेद कहे हैं १ धर्मास्तिकाया का स्कंध सो संपूर्ण विभाग, २ धर्मास्तिकाया का देश सो अर्ध, तृतीयादि विभाग और ३ प्रदेश सो निर्विभागरूप सूक्ष्म खण्ड ऐसे ही ४ अधर्मास्तिकाया का स्कंध ५ अधर्मास्तिकाया का देश और ६ अधर्मास्तिकाया का प्रदेश ७ आकाशास्तिकाया का स्कंध ८ आकाशास्तिकाया का देश और ९ आकाशास्तिकाया का प्रदेश और १० काल यह अरूपी अजीव पर्यव हुए ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! रूपी अजीव पर्यव के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! रूपी अजीव पर्यव के चार भेद कहे हैं १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश व ४ परमाणु पुद्गल अहो भगवन् ! वे क्या संख्यात असंख्यात व अनंत हैं ? अहो गौतम ! संख्यात नहीं

मज्झहिएवा, सखिज्जइभाग मज्झहिएवा संखिज्जगुण मज्झहिएवा, असखिज्जगुण मज्झहिएवा, अणतगुण मज्झहिएवा ॥ एव सेसवण्ण गध रस - फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, फासाण सीय उसिण णिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाणवडिए से तणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥२२॥ दुपएसियाण खधाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता॥ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ दुपएसियाण खधाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! दुपएसिए दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले

अर्थ

अधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक, असंख्यात गुण अधिक व अनंत गुण अधिक है ऐसे ही शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना स्पर्शमें शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष ये चार स्पर्श लेना अहो गौतम ! इस कारनसे ऐसा कहा गया है कि परमाणु पुद्गल के अनंत पर्यव हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंध द्विप्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य क्यों कि द्विप्रदेशिक सब स्कंध समान हैं, प्रदेश से तुल्य हैं क्यों को सब में दो प्रदेश हैं अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं

दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठए तुल्ले, ठिईए सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भाहिए, जइहीणे असखेज्जइभागहीणेवा, सखेज्जइ भागहीणेवा, सखिज्जगुणहीणेवा, असखेज्जगुण हीणेवा, अह अब्भहिए, असखिज्जइ भाग मब्भहिएवा, सखिज्जइभाग मब्भाहिएवा, सखिज्जगुण मब्भहिएवा, असखिज्जगुण मब्भहिएवा, कालवण्ण पज्जवेहिय सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भहिए, जइहीणे, अणतभागहीणे, असखज्जइभागहीणेवा, सखेज्जइभागहीणेवा सखेज्जइगुणहीणेवा, असखिज्जइगुणहीणेवा, अणतगुणहीणेवा, जइ अब्भहिए, अणतभागे मब्भाहिएवा असखिज्जभाग

स्थिति से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन है, परमाणु पुद्गल की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल की है जब अधिक होवे तब असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यात गुण अधिक काले वर्ण पर्याय से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तब अनंत भाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन, व अनंत गुण हीन, यों छ स्थान हीन है जब अधिक है तो अनंत भाग

मज्झाहिएवा, संखिज्जइभाग मज्झहिएवा संखिज्जगुण मज्झहिएवा, असंखिज्जगुण मज्झहिएवा, अणतगुण मज्झहिएवा ॥ एव सेसवण्ण गंध - रस - फास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, फासाण सीय उसिण णिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाणवडिए से तणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ परमाणु पोग्गलाण अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥२२॥ दुपएसियाण खंधाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता॥ से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ दुपएसियाण खंधाण अणता पज्जवा पण्णत्ता? गोयमा! दुपएसिए दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले

अर्थ

अधिक, असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक, असंख्यात गुण अधिक व अनंत गुण अधिक है ऐसे ही शेष वर्ण, गंध, रस व स्पर्श की साथ षट् स्थान हीनाधिक जानना स्पर्शमें शीत, उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष ये चार स्पर्श लेना अहो गौतम ! इस कारनसे ऐसा कहा गया है कि परमाणु पुद्गल के अनंत पर्यव हैं ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा, अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्यव कहे हैं? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कंध द्विप्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य क्यों कि द्विप्रदेशिक सब स्कंध समान हैं, प्रदेश से तुल्य हैं क्यों को सब में दो प्रदेश हैं अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक हैं

दव्वट्ठयाए तुल्ले , पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठए तुल्ले, ठिईए सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भहिए, जइहीणे असंखेज्जइभागहीणेवा, संखेज्जइ भागहीणेवा, संखिज्जगुणहीणेवा, असंखेज्जगुण हीणेवा, अह अब्भहिए, असंखिज्जइ भाग मब्भहिएवा, संखिज्जइभाग मब्भहिएवा, संखिज्जगुण मब्भहिएवा, असंखिज्जगुण मब्भहिएवा, कालवण्ण पज्जवेहिय सियहीणे सियतुल्ले, सियअब्भहिए, जइहीणे, अणतभागहीणे, असंखेज्जइभागहीणेवा, संखेज्जइभागहीणेवा संखेज्जइगुणहीणेवा, असंखिज्जइगुणहीणेवा, अणतगुणहीणेवा, जइ अब्भहिए, अणतभागे मब्भहिएवा असंखिज्जभाग

स्थिति से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तो असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन व असंख्यात गुण हीन है, परमाणु पुद्गल की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल की है जब अधिक होवे तब असंख्यात भाग अधिक, संख्यात भाग अधिक, संख्यात गुण अधिक व असंख्यात गुण अधिक काले वर्ण पर्यव से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक है जब हीन है तब अनंत भाग हीन, असंख्यात भाग हीन, संख्यात भाग हीन, संख्यात गुण हीन, असंख्यात गुण हीन, व अनंत गुण हीन, यों छ स्थान हीन है. जब अधिक है तो अनंत भाग

वुच्चइ ? गोयमा ! संखिज्जपएसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्टयाए तुल्ले पएसट्टयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे संखिज्जभागहीणेवा संखिज्जइगुण-हीणेवा अह अब्भहिए संखेज्जइभाग मब्भहिएवा संखेज्जइगुण मब्भहिएवा, ओ-गाहणट्टयाए दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णइहि उवरिल्लेहि चउफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! असंखिज्जपएसिए खंधे असंखिज्जपएसियस्स

अर्थ

अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से संख्यात प्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन होवे तो संख्यात भाग हीन व संख्यात गुण हीन और अधिक होवे तो संख्यात भाग अधिक संख्यात गुन अधिक अवगाहना आश्रिय दो स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व चार स्पर्श आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक असंख्यात प्रदेशिककी पृच्छा? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारनसे अनंत कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशिक स्कंध असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की साथ

पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए सिय हीणे, सिय तुल्ल सिय अब्भाहिए, जइहीणे पदसहीणे, अहमब्भहिए पदेस अब्भहिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिय, पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ एव तिपएसिएत्ति, णवरं ओगाहणट्टयाए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइहीणे पएसहीणेवा, दुपएसहीणेवा, अह अब्भहिए पएसमब्भहिएवा, दुपएस मब्भहिएवा, एवं जाव दस पएसिए, णवर ओगाहणाए पएसपडिवुड्डीकायव्वा, जाव दस पएसिए, णवर पएसहीणेत्ति ॥ सखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्टेण भते ! एव

यदि हीन होवे तो एक प्रदेश हीन होवे और अधिक होवे तो एक प्रदेश अधिक होवे (द्विप्रदेशिक स्कंध एक आकाश प्रदेशावगाही भी होते हैं और दो प्रदेशावगाही भी होते हैं) स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण गंध रस व चार स्पर्श आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक ऐसे ही तीन प्रदेशिक का कहना परंतु अवगाहना आश्रिय स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन होवे तो एक प्रदेश हीन, दो प्रदेश हीन होवे और अधिक होवे तो एक प्रदेश अधिक व दो प्रदेश अधिक होवे ऐसे ही दश प्रदेशिक स्कंध पर्यंत कहना परंतु जैसे एक २ प्रदेश स्कंध में बढाते जावे, वैसे ही अवगाहना में भी बढाना यावत् दश प्रदेशिक स्कंध में नव प्रदेश हीन अथवा अधिक जानना संख्यात प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा? अहो गौतम!

वुच्चइ ? गोयमा ! सखिज्जपएसिए सखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए, जइ हीणे सखिज्जभागहीणेवा सखिज्जइगुणहीणेवा अह अब्भहिए सखेज्जइभाग मब्भहिएवा सखेज्जइगुण मब्भहिएवा, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहि उवरिल्लेहि चउफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ असखिज्जपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा ॥ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा! असखिज्जपएसिए खधे असखिज्जपएसियस्स

अर्थ

अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से संख्यात प्रदेशिक स्कंध के अनत पर्यव कहे हैं ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से स्यात् हीन, स्यात् तुल्य व स्यात् अधिक जानना यदि हीन होवे तो संख्यात भाग हीन व संख्यात गुण हीन और अधिक होवे तो संख्यात भाग अधिक संख्यात गुन अधिक अवगाहना आश्रिय दो स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्ण, गंध, रस व चार स्पर्श आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक असंख्यात प्रदेशिककी पृच्छा? अहो गौतम ! अनत पर्यव कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारनसे अनंत कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशिक स्कंध असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की साथ

खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, आगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, ॥ वण्णाइहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिं छट्ठाणवडिए अणंतपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अणंतपदेसिए खंधे अणंतपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहिं अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए ॥ २३ ॥ एगपएसोगाढाणं

द्रव्य से तुल्य प्रदेश से चार स्थान हीनाधिक, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, वर्णादि और चार स्पर्श की साथ षट् स्थान हीनाधिक अनंत प्रदेशिक स्कंधकी पृच्छा। अहो गौतम ! अनंत पर्यव कहे हैं अहो भगवन्! किस कारन से अनंत पर्यव कहे हैं! अहो गौतम ! अनंत प्रदेशिक स्कंध अनंत प्रदेशिक स्कंध की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश आश्रिय षट् स्थान हीनाधिक, अवगाहना आश्रिय चार स्थान हीनाधिक क्योंकि आकाश प्रदेश असंख्यात हैं स्थिति आश्रिय चार स्थान हीनाधिक, काल भी असंख्यात हैं वर्ण, गंध, रस व आठ स्पर्श के पर्यव की साथ षट् स्थान हीनाधिक ॥ २३ ॥ अब क्षेत्र आश्रिय प्रश्न करते हैं, अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही पुद्गल के

पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईउवरिल्लचउफाससहिय, छट्ठाण वडिए ॥ एव दुपएसोगाढेवि, जाव दसपएसोगाढेवि ॥ संखिज्ज पएसोगाढाण पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! संखिज्ज पएसोगाढे

अर्थ — कितने पर्याय हैं ! अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन् ! एक प्रदेशावगाही के अनंत पर्याय किस कारन से कहे हैं ? अहो गौतम ! एक २ प्रदेश अवगाही परमाणु पुद्गल अन्य एक प्रदेश अवगाही परमाणु पुद्गल की अपेक्षा कर द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं क्यों कि अनंत प्रदेश भी एक प्रदेश अवगाही होता है अवगाहना की अपेक्षा तुल्य हैं क्योंकि दोनों एक प्रदेशावगाही हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्शकी अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं यह जैसा एक प्रदेश अवगाही पुद्गलका कथन कहा ऐसाही द्विप्रदे-शावगाही यावत् दश प्रदेशावगाही का कथन करना संख्यात प्रदेशावगाही का प्रश्न ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि संख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल के अनंत

पोग्गल संखिज्ज पएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ असंखिज्ज पएसोगाढाण पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! असंखिज्ज पएसोगाढपोग्गले असंखिज्ज पएसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णाईहिं अट्ठफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥२४॥ एगसमयठितीयाणं

पर्याय ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशावगाही पुद्गल अन्य संख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल की आपेक्षाकर द्रव्यार्थ पने तुल्य हैं, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना से दो स्थान हीनाधिक है स्थिति आश्रिय चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की आपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ असंख्यात प्रदेशावगाही की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल अन्य असंख्यात प्रदेश अवगाही पुद्गल की अपेक्षा कर द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ २५ ॥ अब काल आश्रिय कहते हैं ॥ अहो

पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठिईयस्स पोग्गलस्स, दव्वट्टयाए तुल्ले, पएसट्टयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्टयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले वण्णगधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए॥एव जाव दस समय ठितीयाण,सखेज्जसमयठिईयाण एवचेव, णवर ठिईए दुट्ठाणवडिए ॥ असखिज्ज समयठितीयाण एवचेव, णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥२५॥

अर्थ

भगवन् ! एक समय स्थिति वाले पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! एक समय स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक समय स्थिति वाले अन्य एक समय की स्थितिवाले पुद्गल की साथ द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहनाकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण रस गंध स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ जैसा यह एक समय की स्थिति का कहा वैसाही दश समय की स्थिति तक का कहना संख्यात समय की स्थिति वालेका भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष संख्यात समय की स्थिति के समय द्विस्थान हीनाधिक कहना क्योंकि संख्यात समयकी ही स्थिति है ऐसे ही असंख्यात समयकी स्थितिवालेका भी कहना जिस में इतना विशेष की स्थिति चतुस्थान हीनाधिक हैं क्यों कि असंख्यात काल की स्थिति है ॥ २५ ॥ एक गुनकाल

एगगुणकालगाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसहिं वण्णइ गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एवं जाव दसगुण कालए ॥ संखिज्जगुण कालएवि एवं चेव॥ णवर सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एवं असंखज्जगुण कालएवि णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एवं

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे है, किस लिये अहो भगवन् ! एक गुन काले पुद्गल की अनंत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतु स्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काला वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा तैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दश गुण काले पुद्गलों का कहना संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होवे हैं क्यों कि संख्यात ही हैं ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

अणतगुण कालएवि, णवर सट्ठाणे छट्ठाण वाडिए ॥ एवं जहा कालए वण्णस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, तहा सेसाणवि वण्ण गध रस फासाण वत्तव्वया भाणियव्वा, जाव अणतगुण लुक्खे ॥ २६ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! दुपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णो गाहणए दुपएसिएखध जहण्णोगाहणगस्स दुपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले, पएसट्ठ-

अर्थ

जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना, क्योंकि असख्यात हैं ऐसे ही अनंत गुण काल वर्ण की पर्याय का कहना, जिस में इतना अधिक स्वस्थान में पट्स्थान हीनाधिक हैं यह जिस प्रकार काले वर्ण पुद्गलों की वक्तव्यता कही उस ही प्रकार शेष बाकी रहे चारों वर्ण के पुद्गलों की व्याख्या करनी, और ऐसे ही दो गंध की पांच रस की और आठ स्पर्श की वक्तव्यता कहना यावत् २० वा बोल अनंत गुण रूक्ष पुद्गल तक कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? (परमाणु पुद्गल अत्यन्त सूक्ष्म होने से और सदैव एक ही आकार में रहने से उस की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना नहीं होती है इसलिये उस का प्रश्न नहीं पूछते द्विप्रदेशिक स्कन्ध का प्रश्न यहां पूछा है) अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं ?

एगगुणकालगाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ल, अवसेसेहिं वण्णाइ गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एव जाव दसगुण कालए ॥ संखिज्जगुण कालएवि एव चेव॥ णवर सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एव असंखिज्जगुण कालएवि णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एव

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे है, किस लिये अहो भगवन् ! एक गुन काले पुद्गल की अनंत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतु स्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा वैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दश गुण काले पुद्गलों का कहना संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होते हैं क्यों कि संख्यात ही हैं ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

अणतगुण कालएवि, णवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए ॥ एव जहा कालए वण्णस्स वत्तव्वया भाणियव्वा, तहा सेसाणवि वण्ण गध रस फासाण वत्तव्वया भाणियव्वा, जाव अणतगुण लुक्खे ॥ २६ ॥ जहण्णोगाहणगाण भते ! दुपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिएखध जहण्णोगाहणगस्स दुपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले, पएसट्ठ-

अर्थ

जिस में इतना विशष स्वस्थान काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना, क्योंकि असख्यात हैं ऐसे ही अनंत गुण काल वर्ण की पर्याय का कहना, जिस में इतना अधिक स्वस्थान में षट्स्थान हीनाधिक हैं यह जिस प्रकार काले वर्ण पुद्गलों की वक्तव्यता कही उस ही प्रकार शेष बाकी रहे चारों वर्ण के पुद्गलों की व्याख्या करनी, और ऐसे ही दो गंध की पांच रस की और आठ स्पर्श की वक्तव्यता कहना यावत् २० वा बोल अनंत गुण रूक्ष पुद्गल तक कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? (परमाणु पुद्गल अत्यन्त सूक्ष्म होने से और सदैव एक ही आकार में रहने से उस की जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना नहीं होती है इसलिये उस का प्रश्न नहीं पूछते द्विप्रदेशिक स्कन्ध का प्रश्न यहां पूछा है) अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ॥ अहो भगवन् ! द्विप्रदेशिक के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं !

एगगुणकालगाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! एग गुण कालेवि पोग्गले एगगुणकालगस्सपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसराहिं वण्णइ गंध रस फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एव जाव दसगुण कालए ॥ संखिज्जगुण कालएवि एव चेव॥ णवर सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए ॥ एव असंखज्जगुण कालएवि णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ एव

पुद्गल पर्याय की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे है, किस लिय अहो भगवन ! एक गुन काले पुद्गल की अनंत पर्याय कही हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काला पुद्गल अन्य एक गुन काला पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतु स्थान हीनाधिक, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पुद्गल की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष चार वर्ण दो गंध पांच रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक हैं जैसा यह एक गुण काले पुद्गलों का कहा तैसा ही दो गुण तीन गुण यावत् दस गुण काले पुद्गलों का कहना संख्यात गुण काले पुद्गलों का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष की स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय का द्विस्थान हीनाधिक होवे हैं क्यों कि संख्यात ही हैं ऐसे ही असंख्यात गुण काले पुद्गलों का भी कहना

पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा! जहा जहण्णोगाहणए दुपएसिए एव उक्कोसोगाहणएवि, एव अजहण्ण मणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव॥जहण्णोगाहणगाण भते ! चउपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपएसिएतहा, उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि ॥ एव अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि, चउप्पएसिए

अर्थ

भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि त्रिप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय ! अहो गौतम ! जिस प्रकार द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा वैसा ही त्रिप्रदेशिक स्कंध का कहना, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहनावाले त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का कहना और ऐसे ही अजघन्यउत्कृष्ट अवगाहना वाले त्रिप्रदेशिक स्कन्ध का कहना क्यों कि जघन्य अवगाहना वाला त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाश प्रदेश को अवगाहकर रहता है, मध्यम अवगाहना वाला त्रीप्रदेशिक स्कन्ध दो आकाश प्रदेश अवगाहकर रहता है ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाला चतुप्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसा द्विप्रदेशिक स्कन्ध का कहा वैसा ही चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध का भी कहना, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना वाले चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध का कहना, और ऐसे ही अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा-स्यात् हीन है स्यात् तुल्य है स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है और यदि अधिक है तो एक प्रदेश अधिक है क्यों कि जघन्य एक प्रदेश अवगाही और उत्कृष्ट

याए तुल्ले ओगाहणट्टयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सेस वण्णगंधरसफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, सीतउसिण णिधलुक्ख फासेहिं छट्ठाण वडिए सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णोगाहणगाण दुपएसियाण खंधाण अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसोगाहणए वि याण, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणओणत्थि ॥ २७ ॥ जहण्णोगाहणयाण भंते ! तिपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहनावाला द्विप्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा से द्रव्यार्थ पने तुल्य हैं प्रदेशार्थ पने भी तुल्य हैं, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध के अनंत पर्याय हैं जिस प्रकार जघन्य अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध का कहा उस ही प्रकार उत्कृष्ट अवगाहनावाले द्विप्रदेशिक स्कंध का कहना किन्तु द्विप्रदेशिक स्कंध की अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) अवगाहना नहीं होती है क्योंकि जो द्विप्रदेशिक स्कंध एक आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहा है वह जघन्य अवगाहनावाला कहा जाता है और जो दो आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा है वह उत्कृष्ट अवगाहनावाला कहा जाता है इस के अंतर में कुछ भी नहीं होता है इस लिये मध्यम अवगाहना नहीं होती है ॥ २७ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले त्रिप्रदेशिक स्कंध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो

गाहणगस्स सखिज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाह णट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णादि उवरिल्ल चउफासे पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए ॥ एव उक्कोसोगाहणएवि अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर, सट्ठाणे वडिए ॥ एव उक्कोसोगाहणएवि अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर, सट्ठाणे दुट्ठाण वडिए॥२९॥जहण्णोगाहणगाण भते! असंखेज्जपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए अस- खिज्जपएसिए खधे जहण्णोगाहणगस्स असखिज्जपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

अर्थ

नाकी अपेक्षा तुल्य हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं, ॥ जैसा यह संख्यात प्रदेशिक जघन्य अवगाहना का कहा वैसाही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना और अजघन्य अवगाहना का भी ऐसा ही कहना, जिसमें इतना विशेष स्वस्थान अवगाहनाकी अपेक्षा दोस्थान हीनाधिक हैं ॥२०॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले असंख्यात प्रदेशिककी पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं, अहो भगवन् ! किस कारन अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहनावाला एक असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, अवगा-

णवर ओगाहणट्ठयाए सिय हीणेसिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइहीणे, पदेसहीणे, अह अब्भहिए, पदेस अब्भहिए, एवं जाव दस पएसिए णेयव्वं, णवरं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पएस परिवुड्ढी कायव्वा, जाव दसपएसियस्स, सत्तपएसा परिवुड्ढिज्जति ॥२८॥-- जहण्णोगाहणगाणं भंते ! संखिज्ज पदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए संखिज्जपएसिए जहण्णो-

चतुष्प्रदेशिक अवगाही और मध्यम दो तथा तीन प्रदेश अवगाहि होता है इसलिये चार प्रदेश अवगाह की अपेक्षा एक प्रदेश हीन और एक प्रदेश अवगाह की अपेक्षा द्वीप्रदेश अवगाही एक प्रदेश अधिक कहा जाता है यों आगे भी सर्व स्थान कहना ऐसे ही यावत् दस प्रदेश अवगाही पर्यन्त कहना, जिस में इतना विशेष कि अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] अवगाह के सूत्र में अवगाहना की अपेक्षा एक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दस प्रदेशिक अजघन्योत्कृष्ट स्कन्ध में सात प्रदेश हीनाधिक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाले संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य अवगाहना वाला संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा कर द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने द्विस्थान हीनाधिक है क्यों कि संख्यात प्रदेशिक है अवगा-

तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ उक्कोसोगाहणएवि एवचेव, णवर ठिईए तुल्ले, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगाण भंते ! अणतपदेसियाण पुच्छा? गोयमा ! अणता से केणट्ठेण? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए अणतपएसिए खधे, अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स अणतपदेसियस्सखधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए, चउट्ठाणवडिए, वण्णाइहिं अट्ठफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥ २१ ॥ जहण्णाठिईयाण भंते ! परमाणु पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता,

क्योंकि उत्कृष्ट अवगाहना वाला चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध सर्व लोकव्यापी होते है ये अचत महिमा स्कन्ध और केवलि समुद्घात कर्म स्कन्ध यह दोनोंही होते हैं दंड कपाट मंथन अन्तर पूरे करते चार समयकी ही स्थिति होती है ज्यादा नहीं होती है इसलिये स्थिति आश्रिय तुल्य है, अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना वाला अनंत प्रदेशिक के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] अवगाहनावाला अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहनावाले स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, पांच वर्ण, दो गंध, पांच रस, आठ स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ॥ २१ ॥ जघन्य स्थितिवाले

पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए एव ॥ उक्कोसोगाहणएवि ॥ अजहण्णमणुक्कोसोगाहणाएवि एव चेव, णवर सट्ठाणे चउट्ठाण वडिए ॥ १ ॥ जहण्णोगाहणगाण भंते ! अणत पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए अणतपएसिए खंधे जहण्णोगाहणगस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए

हना की अपेक्षा तुल्य है. स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक मानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहनावाले अनंत प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं किसलिये अहो भगवन् ! ऐसा कहा है ? अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहना अनंत प्रदेशिक स्कन्ध अन्य अनंत प्रदेशी स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने षट्स्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध, रस ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना जिस में इतना विशेष स्थिति अपेक्षा तुल्य कहना

पएसट्टयाए तुल्ले, ओगाहणट्टयाए सियहीणे सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइहीणे पदेसहीणे, अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए तुल्ले, वणाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ एव उक्कोसठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसठिईए एवंचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए ॥ एव जाव दसपएसिए णवर आगाहणट्टयाए तिसुविगमएसु पएस परिवड्ढी कायव्वा ॥ जाव दसपएसिए णव पएसा वड्ढिज्जति, जहण्णठिईयाण भते ! संखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भते !

अर्थ स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपन तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है अधिक है तो भी एक प्रदेश अधिक है स्थितिकी अपेक्षा तुल्य है, वर्ण गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्शकी अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिवाले द्विप्रदे और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति का भी ऐसा ही कथन करना जिस में इतना विशेष स्थिति के स्थान चार स्थान हीनाधिक करना ॥ यों यावत् दश प्रदेशी तक कथन करना, जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा तीनों ही सूत्र में प्रदेशों की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेशिक स्कन्ध में नव प्रदेश तक वृद्धि होवे ॥ अहो भगवन् ! जघन्य स्थिति वाला संख्यात प्रदेशी स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला

सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा ! जहण्णठिईए परमाणुपोग्गले जहण्ण ठिईयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिइए तुल्ले, वण्णाईहिं दुफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसेठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसठिइएवि एवंचेव णवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए जहण्णठिईयाणं दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए दुपएसिए जहण्णठिईयस्स दुपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले,

परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन् ! जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल के अनंत पर्याय किस कारन से है ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले परमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने भी तुल्य है, क्योंकि एक प्रदेशी है, अवगाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा भी तुल्य है, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के द्विस्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना का भी ऐसे ही कहना, परंतु जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति द्विप्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनंत पर्याय हैं किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा है? अहो गौतम! एक जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाला द्विप्रदेशिक

पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए असंखिज्ज पएसिएखंधे जहण्णठिईअस्स असंखेज्ज पएसियस्सखंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवं चेव णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए ॥ ३२ ॥ जहण्णठिईयाणं अणंत पदेसियाणं पुच्छा ?

अर्थ

धिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थितिका भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थितिका भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति आश्रिय चतुस्थान हीनाधिक कहना अहो भगवन्! जघन्य स्थितिवाले अनंत प्रदेशिक स्कंध के कितने पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ! किस कारन से अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य स्थिति के अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थिति के अनंत प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, वर्ण, गंध, रस आठ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति का भी कहना, और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है ॥ ३२ ॥ जघन्य गुण काले वर्ण के परमाणु पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा

भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिइए संखिज्ज पएसिए खंधे जहण्णठिईयस्स संखिज्ज पएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि, अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवचेव, णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णठिईयाणं भंते ! असंखिज्ज पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा

स्कंध। प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य प्रदेशिक संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य प्रदेशार्थ पने द्विस्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना की अपेक्षा द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य हैं, वर्ण, गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना जिसमें इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक कहना जघन्य स्थितिवाले असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं, किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य स्थितिवाला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य स्थितिवाले असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा, द्रव्यार्थपने तुल्य हैं, प्रदेशार्थपने चतुस्थान हीनाधिक हैं, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा तुल्य हैं, वर्ण, गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीना-

ट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाण वडिए, कालवण्ण पज्जवेहिय तुल्ल, अवसेसा वण्णा गंधि गंधरसदुफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एवचेव, णवर सट्ठाण छट्ठाणवडिए जहण्णगुण कालयाण भंते! दुपएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्ण गुणकालए दुपएसिए जहण्णगुण कालगस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए, जइ हीण

अर्थ — अहो गौतम! अनत पर्याय कहे हैं? किस कारन से अहो भगवन्! अनत पर्याय कहे हैं? अहो गौतम! एक जघन्य गुण काला द्विप्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुण काला द्विप्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक प्रदेश अधिक है स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काल वर्ण की अपेक्षा तुल्य है अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस ऊपरके चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है॥ एसे ही उत्कृष्ट गुनकालकाभी कहना, अजघन्योत्कृष्ट गुणकाले काभी ऐसे ही कहना, जिस मे इतना विशेष स्वस्थान षट्स्थान हीनाधिक है,॥ ऐसे ही यावत् दश प्रदेशी पर्यन्त कहना, जिसमें इतना विशेष अवगाहनामें एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेशिक में

गोयमा ! अणता, से केणट्ठेण? गोयमा! जहण्णठिईए अणत पदेसिए जहण्णठिईयस्स अणत पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले, वणादि अट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए एव उक्कोसठिईएवि ॥ अजहण्ण मणुक्कोसठितीएवि एवचेव णवर ठिईए चउट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण कालयाण परमाणु पोग्गलाण पुच्छा? गोयमा! अणता से केणट्ठेण? गोयमा! जहण्णगुण कालए परमाणु पोग्गले जहण्णगुण कालगस्स परमाणु पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, उगाहण-

कहा ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुण काला परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य गुण काले परमाणु की अपेक्षा से द्रव्यार्थपने तुल्य है, प्रदेशार्थपने तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काल वर्ण के पर्यव की अपेक्षा तुल्य है, ऊपर शेष चार वर्ण नहीं कहना क्योंकि यहां फक्त काल वर्ण का ही वर्णन है, गंध, रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुण काल वर्ण के परमाणु का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट गुण काला वर्णवाले परमाणु का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान काल वर्ण की पर्याय आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक है जघन्य गुण काले द्विप्रदेशिक स्कंध की पृच्छा ?

तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए ठितीए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसे वण्णाइहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाणवडिए ॥ एवं उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि, एवंचेव, नवर सट्ठाणेछट्ठाण वडिए॥ जहण्णगुण कालगाण असंखिज्ज पएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणंता पण्णत्ता॥ सेकेणट्ठेण? गोयमा! जहण्णगुणकालए असंखिज्ज पएसिए जहण्णगुणकालगस्स असंखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णादि उवरिल्ले चउफासेहिय

अर्थ

भगवन्! किस कारन अनन्त पर्याय कही है? अहो गौतम! एक जघन्य गुन काला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुन काला असंख्यात प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ पने चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण के पर्याय की अपेक्षा तुल्य है, अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस व ऊपर के ४ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है. ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना अजघन्यगुन काला अनंत प्रदेशिक की पृच्छा? अहो गौतम! अनन्त पर्याय कहे हैं किस कारन अहो भगवन्! ऐसा कहा? अहो गौतम! एक जघन्य गुन काला अनंत प्रदेशिक स्कंध अन्य जघन्य गुन काला अनंत प्रदेशिक स्कंध की अपेक्षा द्रव्यार्थपने

पदसहीणे अब्भहिए, पएस मब्भहिए ठिईए चउट्ठाण वडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाण वडिए एव उक्कोसगुण कालएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि, एवचेव नवर छट्ठाणे सट्ठाण वडिए, एव जाव दसपएसिए, णवर उगाहणाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा ओगाहणा तहेव॥ जहण्णगुण कालगाण भते! संखिज्ज पएसियाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता? से केणट्ठेण? गोयमा! जहण्ण गुण कालए संखिज्ज पएसिए जहण्णगुण कालगस्स संखिज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए

नव प्रदेश की वृद्धि करना अहो भगवन्! जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशी स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम! अनतपर्याय हैं अहो भगवन्! किस कारन अनतपर्याय हैं! अहो गौतम! एक जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य गुनकाले संख्यात प्रदेशिक स्कंध से द्रव्यापेक्षा तुल्य है, प्रदेशार्थपने द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहनाकी अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है कालेवर्ण के पर्याय की अपेक्षा भी तुल्य है, अपर शेष ४ वर्ण सब रस ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट [मध्यम] गुन काला का भी इस ही प्रकार कहना जिस में इतना विशेष स्वस्थान काले वर्ण की पर्याय षट् स्थान हीनाधिक कहना अब ५ गुन काले असंख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनत पर्याय कहे हैं अहो

सूत्र

-अविल महुररसपज्जवेहिय एव चेव भाणियव्वा, णवर परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंधस्स दुब्भिगंधा न भण्णइ, दुब्भिगंधस्स सुब्भिगंधो न भण्णइ, तित्तस्स अवसेसा न भण्णाति, एव कडुयादी णिविसेस तचेव ॥२२॥-जहण्णगुण- कक्खडाण अणतपएसियाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा! जहण्ण-गुणकक्खड अणतपएसिए जहण्णगुणकक्खडस्स अणतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ल, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठाणवडिए,

अर्थ

प्रमानु पुद्गलको सुभिगध के स्थान दुर्भिगध नहीं कहना और दुर्भिगन्धी के सुभिगधी नहीं कहना वैसे तिक्त रस प्रमानु का अन्य चारों रस मय नहीं कहना क्यों कि यह सब प्रतिपक्षी हैं, ऐसे ही कटुकादि पांचों रसों का जानना और सब वैसा ही कहना ॥ २२ ॥ अब स्पर्श का प्रश्न करते हैं, इस में कर्कश मृदु गुरु और लघु यह चारों स्पर्श असंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध तक नहीं पाते हैं, फक्त अनंत प्रदेशिक स्कन्ध में ही पाते हैं इसलिये इन का प्रश्न यहां पूछते हैं अहो भगवन् ! जघन्यगुन कर्कश स्पर्श के अनंत प्रदेशिक स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन् ! जघन्य गुन कर्कश स्पर्श के अनंत पर्याय किस कारन कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन कर्कश अनंत प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य गुन कर्कश अनंत प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है प्रदेशार्थ पट् स्थान हीनाधिक है

छट्ठाणवडिए एव उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्ण मणुक्कोस गुणकालएवि एव चेव नवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुणकालगाणं भंते ! अणतपएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्ण-गुणकालए अणतपएसिए जहण्णगुणकालगस्स अणतपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, काल-वण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिं वण्णाईहिं अट्ठफासपज्जवेहिय-छट्ठाणवडिए ॥ एव उक्कोसगुणकालएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि एव चेव, णवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए, एवं नील लोहिय हालिद्द सुक्किल्ल, सुब्भिगध दुब्भिगध तित्त कडुय कसाय

तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, काले वर्ण की अपेक्षा परस्पर तुल्य है अपर शेष ४ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट गुन काले का भी कहना अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) गुन कालेका भी ऐसेही कहना जिसमें इतना विशेष स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक है, जैसे काले वर्ण के पुद्गलों का कथन करा, वैसे ही हरे लाल पीले सफेद, इन चारों वर्णों का, सुरभिगंध दुर्भिगंध दोनों गंधों का, तिक्त कटुक कषाय अम्बट व मधुर इन पांचों रस का भी कहना जिस में इतना विशेष

ओगाहणट्ठयाए तुल्ले, ठिईए चउट्ठाणवडिए, वण्ण-गंध रसेहिं-छट्ठाणवडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले ॥ उसिणफासाणभण्णइ, णिद्ध लुक्खफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एवं उक्कोसगुणसीएवि, अजहण्णमणुक्कोसगुणसीएवि एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाण-वडिए जहण्णगुणसीयाणं दुपएसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! जहण्णगुणसीए दुपएसिए जहण्णगुणसीयस्स दुपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले,

अर्थ

गाहना की अपेक्षा भी तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्पर्श नहीं कहना क्यों कि यह प्रतिपक्षी है, स्निग्ध रूक्ष की अपेक्षा षट स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट शीत स्पर्श का भी कहना और अजघन्यात्कृष्ट (मध्यम) शीत स्पर्श का भी ऐसा ही कहना जिसमें इतना अधिक कि स्वस्थान षटस्थान आश्रिय हीनाधिक कहना जघन्य गुण शीत द्विप्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंतपर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम! एक जघन्यगुण शीत द्विप्रदेशिक अन्य जघन्यगुण शीत द्विप्रदेशिक से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ तुल्य है अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन है, स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है, यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक

वण्ण-गंध रस-पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, कक्खडफास पज्जवेहिं तुल्ले अवसेसहिं सत्तफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसगुण कक्खडेवि ॥ अजहण्णमणुक्कोस गुणकक्खडफासेवि एवं चेव, णवर सठाणे छट्ठाणवडिए ॥ एवं मउय गुरुय लहुएवि भाणियव्वा ॥ ३४ ॥ जहण्णगुणसीयाण भंते ! परमाणु पोग्गलाण पुच्छा? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए परमाणुपोग्गले जहण्णगुणसीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले,

अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, कर्कश स्पर्श की तुल्य अपेक्षा है अवर शेष सात स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुण कर्कश स्पर्श अनंत प्रदेशिक स्कंध का कहना और अजघ न्योत्कृष्ट (मध्यम) गुण कर्कश स्पर्श का भी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान कर्कश स्पर्श के पर्याय से षट्स्थान हीनाधिक कहना ऐसे ही कोमल, भारी, और लघु का भी कहना यह चारों स्पर्श का हुवा ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य गुन शीत स्पर्श परमाणु पुद्गल में कितने पर्याय पाते हैं ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय पाते हैं किस कारन अनंत पर्याय पाते हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन परमाणु पुद्गल अन्य जघन्य गुन परमाणु पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अव-

सीयस्स सखिज्ज पएसिएयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए सीयफास पज्जवेहिं तुल्ल, उसिणणिद्ध लुक्खेहि छट्ठाण वडिए, ॥ एवं उक्कोसगुणसीएवि अजहणमणुक्कोसगुण सीएवि एव चेव णवर सट्ठाण सट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण सीयाण असखिज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण जहण्णगुण सीत असखिज्जपएसिए जहण्णगुण सीतस्स असखेज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीय फास

अर्थ

अहो गौतम ! एक जघन्य गुण शीत सख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य गुण शीत सख्यात प्रदेशिक द्रव्यार्थ तुल्य है प्रदेशार्थ द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी जानना ऐसे ही अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी जानना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्शकी पर्याय षट् स्थान हीनाधिक है जघन्य गुन शीत असख्यात प्रदेशिक की पुच्छा ? अहो गौतम ! अनत पर्याय है, अहो भगवन्! किस कारन अनत पर्याय है? अहो गौतम ! एक जघन्य गुन शीत असख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य

सिय अब्भहिए, जइ हीणे पएसहीण, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले, ॥ उसिण णिद्ध लुक्खफास पज्जवेहि छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसगुणसीएवि, अजहण्णमणुक्कोस-गुणसीएवि एवचेव णवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए, एव जाव दसपएसिए, णवर ओगा-हणट्ठयाए, पएपसपरिवुड्ढी कायव्वा,जावदस पएसियस्स नवपएसियसा पएसावुड्ढीअति ॥ जहण्णगुणसीयाण सखेज्ज पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए संखिज्जपएसिए जहण्णगुण

प्रदेश अधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध, रस के पर्यव की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी कहना, और अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी ऐसे ही कहना, जिस में इतना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्श की पर्याय की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है जैसा यह द्विप्रदेशिक का कहा ऐसे ही तीन, चार, पांच यावत् दश प्रदेशिक का कहना जिस में इतना विशेष अवगाहना की अपेक्षा एकेक प्रदेश की वृद्धि करना यावत् दश प्रदेश पर्यंत नव प्रदेश अधिक कहना जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहा है किस कारन अनंत पर्याय कहा है ?

सीयस्स संखिज्ज पएसिएयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडिए, ओगाह-णट्ठयाए दुट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए सीयफास पज्जवेहिं तुल्ल, उसिणणिद्ध लुक्खेहिं छट्ठाण वडिए, ॥ एवं उक्कोसगुणसीएवि अजहण्णमणुक्कोसगुण सीएवि एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णगुण सीयाणं असंखिज्ज पएसियाणं पुच्छा ? गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण जहण्णगुण सीत असंखिज्जपएसिए जहण्णगुण सीतस्स असंखेज्ज पएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए ठिइए चउट्ठाण वडिए, वण्णाइपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, सीय फास

अर्थ

अहो गौतम! एक जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य गुण शीत संख्यात प्रदेशिक द्रव्यार्थ तुल्य है प्रदेशार्थ द्विस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा भी द्विस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, वर्ण, गंध रस की अपेक्षा छ स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श की अपेक्षा षट्स्थान हीनाधिक है, ऐसे ही उत्कृष्ट गुण शीत का भी जानना ऐसे ही अजघन्योत्कृष्ट शीत का भी जानना विशेष स्वस्थान शीत स्पर्शकी पर्याय षट् स्थान हीनाधिक है जघन्य गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम! अनंत पर्याय है, अहो भगवन्! किस कारन अनंत पर्याय है? अहो गौतम! एक जघन्य गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक अन्य जघन्य

पज्जवेहिं तुल्ले उसिणणिद्ध लुक्ख फास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ एवं उक्कोसगुण सीएवि, अजहण्णमणुक्कोस गुणसीएवि एव चेव, णवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए जहण्णगुणसीयाण अणत पएसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता से केणट्ठेण ? गोयमा ! जहण्णगुणसीए अणत पएसिए जहण्णगुण सीतस्स अणत पदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ल पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिइए चउट्ठाणवडिए, वण्णाईहिं छट्ठाणवडिए, सीयफास पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसहिं

गुन शीत असंख्यात प्रदेशिक से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ चतुस्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है वर्ण गंध रस के पर्याय की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है, शीत स्पर्श की अपेक्षा तुल्य है, उष्ण स्निग्ध रुक्ष स्पर्श के पर्यव की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट गुन शीत का जानना मध्यमगुन शीत का भी वैसे ही कहना परंतु स्वस्थान आश्रिय षट्स्थान हीनाधिक जघन्यगुण शीत अनंत प्रदेशिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत अहो भगवन् ! किस कारन से अनंत कहे हैं ? अहो गौतम! जघन्य गुन शीत अन्य जघन्य गुण शीत की साथ द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से षट्स्थान हीनाधिक अवगाहना से चार स्थान, स्थिति से चार स्थान हीनाधिक वर्णादि पर्यव से षट्स्थान, शीत की साथ तुल्य अपर शेष मात स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है एनहि उत्कृष्ट गुन शीतका भी कहना, अजघन्योत्कृष्ट गुन शीतका भी ऐसाही कहना जिस में इतना अधिक स्वस्थान शीत के पर्याय कर षट् स्थान हीनाधिक हैं जैसे शीत स्पर्श का वर्णन कहा,

प्रकाशक-राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

सत्तफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए, एव उक्कोसगुणसीएवि॥अजहण्णमणुक्कोस गुणसीएवि एवंचेव, नवर सट्ठाणे छट्ठाण वडिए एव उसिणेणिद्धे लुक्खे जहासीए, परमाणु पोग्गलास्स तहेव पडिपक्खो, सव्वेसिं नभण्णाची भाणियव्व ॥३५॥ जहण्णपएसियाण भते ! खधाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्णपएसिए खधे जहण्णपएसियस्स खधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सिय अब्भहिए, जइहीणे पएसहीणे, अह अब्भहिए पएसमब्भहिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए वण्णाईहिं उवरिल्ल चउफासेहिय छट्ठाण वडिए ॥ उक्कोसपएसियाण खधाण पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ

ऐसा ही उष्ण स्निग्ध रूक्ष स्पर्श का कहना, सर्व स्थान प्रतिपक्ष स्पर्श को छोडकर कहना, शीत का उष्ण प्रतिपक्षी वैसे उष्ण का शीत प्रतिपक्षी, स्निग्ध का रूक्ष प्रतिपक्षी वैसा रूक्ष का स्निग्ध प्रतिपक्षी यों जिस प्रकार शीत परमाणु आदि की व्याख्या की वैसे सब की करना ॥ ३५ ॥ अहो भगवन् ! जघन्य (द्विप्रदेशिक) स्कन्ध के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! अनत पर्याय हैं किस कारन अहो भगवन ! जघन्य प्रदेशिक स्कन्ध के अनत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य प्रदेशिक स्कन्ध अन्य जघन्य प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा से द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा स्यात् हीन हैं स्यात् तुल्य है, स्यात् अधिक है यदि हीन है तो एक प्रदेश हीन है, अधिक है तो एक प्रदेश अधिक हैं, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है,

अणत पज्जवा पण्णत्ता ? से केणठ्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा! उक्कोस पएसिएखंधे उक्कोसपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए ॥ अजहण्णमणुक्कोस पएसियाणं खंधाणं पुच्छा ? गोयमा! अणता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा! अजहण्णमणुक्कोस पएसिएखंधे अजहण्णमणुक्कोस पएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण

वर्ण गंध रस और ऊपर के चार स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ उत्कृष्ट (अनंत प्रदेशिक) स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय है ॥ किस कारन अहो भगवन् ! उत्कृष्ट स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध अन्य उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ भी तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ॥ अजघन्या उत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध के अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रदेशिक स्कन्ध अन्य अजघन्य अनुत्कृष्ट स्कन्ध की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की

वाहिए, वण्णाइहिं अट्ठफासे पज्जवेहि छट्ठाण वडिए, जहण्णोगाहणगाण पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता, स केणट्ठण गोयमा ! जहण्णोगाहणए पोग्गले जहण्णागाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वाहिए, ओगाहणट्ठयाए तुल्ल, ठितीए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं उवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाणवडिए, उक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवर ठिईए तुल्ले, अजहण्णमणुक्कोसगाहणगाण पोग्गलाण पुच्छा? गोयमा ! अणता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण ? गोयमा !

अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है जघन्य एक प्रदेशावगाही अवगाहना वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय हैं अहो भगवन् ! जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अनंत पर्याय किस कारन है ? अहो गौतम ! एक जघन्य अवगाहना वाला पुद्गल अन्य जघन्य अवगाहना वाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, ऊपर के चार प्रदेश की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट अवगाहना का भी कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, क्यों कि उत्कृष्ट अवगाहनावाला सर्व लोक व्यापक अचित्त महा स्कन्ध और केवली समुद्घात के समय कर्म स्कन्ध यह

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्व-ट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए आगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाण भंते ! पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

अट्ठफास पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एवं उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव, णवरं ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाणं भंते ! पोग्गलाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काल वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ? किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काल वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्व-ट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाण भंते ! पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

अट्ठफास पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाण भंते ! पोग्गलाण केव-इया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गंध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक हैं अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काल वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ? किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काल वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्व-ट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए आगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाण भंते ! पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

सूत्र

अट्ठफास पज्जवेहिय छट्ठाण वडिए, एव उक्कोसठिईएवि अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि एवचेव, णवर ठिईए चउट्ठाण वडिए, जहण्णगुण कालगाण भंते ! पोग्गलाण केव-इया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ॥ से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ? गोयमा! जहण्णगुण कालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्ण पज्जवेहिं तुल्ले, अवसेसेहिय वण्ण गध रस पज्जवेहिं छट्ठाण वडिए, से तेणट्ठेण

अर्थ

स्थितिवाला पुद्गल अन्य जघन्य स्थितिवाले पुद्गल की अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य प्रदेशार्थ षट् स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक है ऐसे ही उत्कृष्ट स्थिति वाले का भी कहना और अजघन्योत्कृष्ट स्थिति वाले का भी ऐसा ही कहना, जिस में इतना विशेष स्थिति की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है अहो भगवन् ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के कितने पर्याय हैं ? अहो गौतम ! जघन्य गुन काले वर्ण के पुद्गल के अनंत पर्याय है ! किस कारन अहो भगवन् ! अनंत पर्याय हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्यगुण काल वर्णवाला पुद्गल अन्य जघन्य काले गुनवाले पुद्गलकी अपेक्षा द्रव्यार्थ तुल्य है, प्रदेशार्थ षट्स्थान हीनाधिक है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा

अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स, दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए चउट्ठाण वडिए, वण्णाईहिं अट्ठफास पज्जवेहि छट्ठाणवडिए ॥ जहण्णठिईयाण भंते ! पोग्गलाण पुच्छा ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठिईए पोग्गले जहण्णठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए, ठिईए तुल्ले, वण्णाईहिं

दोनों होते हैं, इन दोनों की स्थिति दंड कपाट मथन लोक पूर्ण करे तब चार समय की होती है, इसलिये तुल्य कहे हैं अजघन्योत्कृष्ट (मध्यम) पुद्गल स्कन्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं अहो भगवन् ! अजघन्योत्कृष्ट पुद्गल स्कन्ध की अनंत पर्याय किस कारन कही है ? अहो गौतम ! एक अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना का स्कन्ध अन्य अजघन्योत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा द्रव्यार्थ पने तुल्य है, प्रदेशार्थपने षट् स्थान हीनाधिक होता है, अवगाहना की अपेक्षा चतुस्थान हीनाधिक है, स्थिति की अपेक्षा भी चतुस्थान हीनाधिक है, ५ वर्ण २ गंध ५ रस ८ स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं जघन्य स्थिति वाले पुद्गल की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो भगवन् ! किस कारन जघन्य स्थिति वाले के अनंत पर्याय कहे हैं ? अहो गौतम ! एक जघन्य

* षष्ठम विरह पदम् *

बारस, चउवीसाइ, सतरय, एगसमय, कत्तोय, उव्वट्टण, परभावियाउयच, अट्ठेव चआगरिसा ॥ १ ॥ निरयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारसमुहुत्ता मणुयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥ देवगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता

अर्थ

अब छठ पद में जीव का उपपातादि सम्बधी विरह (अंतर) कहते हैं इस के आठ द्वार हैं जिस के नाम १ सामान्य से बारे मुहूर्त का उपपात उद्वर्तन का विरह द्वार २ चौवीस मुहूर्तादि विशेष उपपात उद्वर्तन द्वार, ३ उपपात उद्वर्तन का अंतर, ४ एक समय में उपपात उद्वर्तन, ५ कहां से आकर कर उत्पन्न होवे यह आगतद्वार ६ मरकर कहां जावे सो गतद्वार, ७ परभव का आयु कितने प्रकार से बंध, और ८ आठवा आगरिसा द्वार प्रथम विरह द्वार सामान्य से कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में कितने काल का विरह होता है ? [एकादि जीव नरक में उत्पन्न हुवे बाद फिर जितने काल बाद दूसरा जीव आकर उत्पन्न होवे उसे विरह कहते हैं] अहो गौतम ! जघन्य से एक समय उत्कृष्ट बारा मुहूर्त [प्रश्न प्रथमादि सातों नरक म से किसी भी नरक में चौवीस मुहूर्त से कम विरह नहीं कहा तो यहां १२ मुहूर्त का विरह

गोयमा ! एवं वुच्चइ जहण्णगुण कालयाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता, एवं उक्कोसगुण कालएवि अजहण्णमणुक्कोस गुणकालएवि, एव चेव ॥ णवरं सट्ठाणे छट्ठाण वडिए, एव जहा कालवण्ण पज्जवाणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वण्ण गंध रस फासाणं वत्तव्वयाभाणियव्वा जाव अजहण्ण मणुक्कोसगुण लुक्खे सट्ठाणे छट्ठाण वडिए, सेत्त रूवि अजीव पज्जवा ॥ सेत्त अजीव पज्जवा ॥ सेत्त पज्जवा ॥ इति पण्णवणा भगवईए विसेसपय पंचम सम्मत्त ॥ ५ ॥

भी चतुस्थान हीनाधिक है काले वर्ण के पर्यव की अपेक्षा तुल्य है, ऊपर शेष वर्ण गंध-रस स्पर्श की अपेक्षा षट् स्थान हीनाधिक हैं, इस कारन अहो गौतम ! ऐसा कहा जघन्य काले गुन के पुद्गल के अनंत पर्याय ऐसे ही उत्कृष्ट काले गुन के भी असंख्यात पर्याय कहना और अजघन्य उत्कृष्ट काले गुन का भी ऐसा ही कहना विशेष-स्वस्थानमें षट् स्थान हीनाधिक कहना यों जिस प्रकारसे काले वर्ण के पुद्गल की व्यक्तव्यता कही तैसे ही शेष वर्ण गंध रस स्पर्श की व्यक्तव्यता कहना यावत् अजघन्योत्कृष्ट गुन रूक्ष पुद्गल स्वस्थान षट् स्थान हीनाधिक है यह रूपी अजीव के पर्यव का अधिकार हुआ यह अजीव के पर्यव का अधिकार हुआ और यह सर्व प्रकार के पर्यव का अधिकार समाप्त हुआ इति भगवती पन्नवना का पर्यव विशेष नामक पांचवा पद समाप्तम् ॥ ५ ॥

* षष्ठम विरह पदम् *

बारस, चउवीसाइ, सतरय, एगसमय, कत्तोय, उव्वट्टण, परभवियाउयच, अट्ठेव चआगरिसा ॥ १ ॥ निरयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारसमुहुत्ता मणुयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥देवगईण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता

अर्थ—अब छठे पद में जीव का उपपातादि सम्बंधी विरह (अंतर) कहते हैं इस के आठ द्वार हैं जिस के नाम १ सामान्य से बारे मुहूर्त का उपपात उद्वर्तन का विरह द्वार २ चौवीस मुहूर्तादि विशेष उपपात उद्वर्तन द्वार, ३ उपपात उद्वर्तन का अंतर, ४ एक समय में उपपात उद्वर्तन, ५ कहां से आकर कर उत्पन्न होवे यह आगतद्वार ६ मरकर कहां जावे सो गतद्वार, ७ परभव का आयु कितने प्रकार से बंध, और ८ आठवा आगरिसा द्वार प्रथम विरह द्वार सामान्य से कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में कितने काल का विरह होता है ? [एकादि जीव नरक में उत्पन्न हुवे बाद फिर जितने काल बाद दूसरा जीव आकर उत्पन्न होवे उसे विरह कहते हैं] अहो गौतम ! जघन्य से एक समय उत्कृष्ट बारा मुहूर्त [प्रश्न प्रथमादि सातों नरक में से किसी भी नरक में चौवीस मुहूर्त से कम विरह नहीं कहा तो यहां १२ मुहूर्त का विरह

गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ सिद्धिगईण भंते ! केवइय काल विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ १ ॥ निरयगईण भंते ! केवइय काल विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ तिरियगईण भंते ! केवइय

किस प्रकार कहा ? उत्तर—समुच्चय सातों नरक में कोई भी जीव उत्पन्न नहीं होवे इस आश्रिय बारह मुहूर्त का विरह कहा है] अहो भगवन् ! तिर्यंचगति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का (यह तिर्यंच गति का विरह अन्य गति में आकर उत्पन्न होवे उस अपेक्षा से कहा है, क्योंकि पांच स्थावर में तो वे ही मरकर समय २ असख्यात, तथा वनस्पति में अनंत उत्पन्न होते हैं) अहो भगवन् ! मनुष्य गतिका कितना विरह कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त अहो भगवन् ! देवगति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का । अहो भगवन ! सिद्ध गति का विरह कितने काल का कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ महीने का ॥ १ ॥ अब निकलने आश्रिय विरह कहते हैं अहो भगवन् ! नरक में निकलने आश्रिय कितने काल का विरह कहा है ? [एक जीव नरक का मरे बाद दूसरा जीव मरे उस का जितना अंतर पड़े] अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त अहो भगवन् ! तिर्यंच गति में निकलने का कितने

काल विराहिया उवट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥ मणुयगईण भते ! केवइय कालं विरहिया उवट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता एव देवगइएवि ॥ १ ॥ २ ॥ रयणप्पभापुढवि नेरइयाण भते ! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता ॥ सक्करप्पभा पुढवि नेरइयाण भते! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सत्तराइदियाइ ॥ बालुयप्पभा पुढवि नेरइयाण भत ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेण एग समय उक्कोसेण अद्धमास॥ पकप्पभा

अर्थ

काल का विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का अहो भगवन् ! मनुष्य गति का कितने काल का विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का अहो भगवन् ! देवता का निकलने आश्रिय कितने काल का विरह कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का और सिद्ध तो सादि अपर्यवसित (सादि अनंत) है वे चवते नहीं है इसलिये उन का चवन आश्रिय विरह नहीं होता है यह प्रथम द्वार ॥ २ ॥ अब चौवीस ही दंडक का अलग २ कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक में उत्पात आश्रिय कितने काल का

पुढवि नेरइयाण भत ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णण एग समय, उक्कोसेण मास ॥ धूमप्पभापुढवि नेरइयाण भते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण दोमासा ॥ तमप्पमा पुढवि नेरइयाण भत ! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण चत्तारिमासा ॥ अहे सत्तमा पुढवि नेरइयाण भते! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णण एग समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥ ३ ॥ असुरकुमाराण भते ! केवइय काल विराहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण चउव्वीस

विरह कहा है ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का [ऐसे आगे भी प्रश्नोत्तर मानना] शर्कर प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात अहो रात्रि का, वालु प्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्दरह दिन, पंकप्रभा पृथ्वी में जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक महीना का, धूम्रप्रभा नरक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो महीने का, तमप्रभा में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चार महिने का और सातवी तमतमा नरक में जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ महीने का ॥ ३ ॥ असुरकुमार देवता का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का, जैसा असुर

मुहुत्ता॥णागकुमाराण भते'केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा!जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता॥एव सुवण्णकुमाराण विज्जुकुमाराण अग्गिकुमाराण, दीवकुमाराण, दिसा कुमाराण, उदहि कुमाराण, वाउकुमाराण, थणियकुमाराणय पत्तय २ जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता ॥ ४ ॥ पुढविकाइयाण भते ! कवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ? गोयमा ! अणुसमयमविरहिय उववाएण पण्णत्ता एव आउकाइयाणवि, तेउकाइयाणवि, वउकाइयाणवि वणस्सइकाइयाणवि,अणुसमयम विरहिय उववाएण प०॥५॥बेइंदियाण भते' केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता?गोयमा! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण अतोमुहुत्ता॥एव तेइंदियाय

अर्थ

कुमार का कहा ऐसा ही नाग कुमार, सुवर्ण कुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार वायुकुमार, और स्तनित कुमार इन दशोंही भवनपति देवों को अलग २ जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौवीस मुहूर्त का विरह जानना ॥ ४ ॥ पृथ्वीकायिकादि चारों स्थावर में समय २ असंख्यात उत्पन्न होते हैं और वनस्पति में साधारन आश्रिय समय २ अनंत जीवों उत्पन्न होते हैं इसलिये अविरहित जानना ॥ ५ ॥ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय व चौरिन्द्रिय का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तका समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रियका भी जघन्य एक समयका उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तका, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियका जघन्य

चउरिंदियाय सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥ गब्भवक्कतिय पांचिंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥ सम्मुच्छिम मणुस्साण भंते! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता। गब्भवक्कतिय मणुस्साण भंते! पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण बारस मुहुत्ता॥६॥ वाणमतराण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता॥ जोइसियाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता, सोहम्मे कप्पे देवाण भंते? केवइय काल विरहिया उववाएण

एक समय का उत्कृष्ट बारह मुहूर्त का, समूर्च्छिम मनुष्य का जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का (यद्यपि समूर्च्छिम मनुष्य का आयुष्य अंतर्मुहूर्त का है तथापि किसी वक्त में ऐसा ही योग बनता है कि कोई भी समूर्च्छिम २४ मुहूर्त तक उत्पन्न नहीं होता है) गर्भज मनुष्य का जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह मुहूर्त ॥ ६ ॥ वाणव्यन्तर देव का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, ज्योतिषी देव का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, सौधर्म ईशान देवलोक का जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त, सनत्कुमार देवलोक का जघन्य एक समय उत्कृष्ट नव दिन बीस मुहूर्त का, माहेन्द्र देवलोक का

पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता ॥ ईसाणे कप्पे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता॥सण कुमार देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण णवराइंदियाइ वीस मुहुत्ताइ ॥ माहिंद देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण बारसराइंदियाइ दस मुहुत्ताइ ॥ बभलोए देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण अद्धतेवीसराइंदियाइ ॥ लतग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण पणयालीस राइंदियाइ ॥ महासुक्कदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असीतिराइंदियाइ ॥सहस्सार देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण राइंदियसत, आणय देवाण पुच्छा ? गोयमा !

अर्थ

जघन्य एक समय उत्कृष्ट बारह दिन दश मुहूर्त, ब्रह्म देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट साढे बावीस अहोरात्रि लांतक देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट पैंतालीस अहोरात्रि, महाशुक्र देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट अस्सी अहोरात्रि, सहस्रार देवलोक मे जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक सो (१००) अहोरात्रि, आनतदेवलोक में और प्राणत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात महीने आरण और अच्युत देवलोक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात वर्ष, ग्रीवेक की नीचे की त्रिक में संख्यात सो वर्ष

जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जमासा, पाणय देवाण पुच्छा ? जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जमासा ॥ आरण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखेज्जवासा ॥ अच्चुय देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जवासा ॥ हेट्ठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जाइ वास सयाइ, ॥ मज्झिम गेविज्जग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखिज्जाइ वाससहस्साइ उवरिम गेविज्जग देवाण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण सखेज्जाइ वाससयसहस्साइ ॥ विजय वेजयत जयत अपराजिय देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण

वर्ष, मध्यम ग्रैवयक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट सख्यात हजार वर्ष, ऊपर की ग्रैवेक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात लाख वर्ष, विजय वेजयत जयत और अपराजित विमान में जघन्य एक समय उत्कृष्ट असख्यात काल और सर्वार्थ सिद्ध विमान का जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का सख्यातवा भाग का अहो भगवन्! सिद्ध भगवत सिद्धपने उत्पन्न होवे सो कितने काल का विरह होवे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट छ मास का (यहा सख्यात महीने आये वहां, पूरा नहीं सख्यात सो वर्ष आये वहां पूरे हजार वर्ष नहीं, जहां सख्यात हजार वर्ष आये वहां पूरे लाख नहीं और जहां सख्यात लाख

असखेज्ज काल॥सव्वट्ठसिद्ध देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण पलिओवमस्स सखेज्जइभाग ॥ सिद्धाण भंते ! केवइय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण छम्मासा ॥ ७ ॥ रयणप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते ! केवइय काल विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण एगसमय उक्कोसेण चउव्वीस मुहुत्ता एवसिद्धि वज्जाउव्वट्टणाएवि भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवर जोइसिय वेमाणिएसु चयनि अहिलावो कायव्वो॥ २॥ ८ ॥

अर्थ

वर्ष कोड वहां पूरा क्रोड वर्ष नहीं ९९९९८९९ वर्ष इग्यारा महीने २९ दिन जानना कुछ भी कम सर्व स्थान समझना) ॥ ७ ॥ अब निकलन (मरते) आश्रिय विरह कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में निकलने का विरह पडे तो कितना काल का पडे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय का उत्कृष्ट चौबीस मुहूर्त का अर्थात् चौबीस मुहूर्त के बाद कोइ भी पहिली नरक का नेरीया जरूर ही मरे यों यावत् जैसे उत्पन्न होने का विरह कहा वैसही मर चवने का विरह कहना यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत परन्तु चवने में सिद्ध नहीं कहना क्योंकि सिद्ध सादि अपर्यवसित है, कभी चवते नहीं हैं और ज्योतिषी विमानिक के स्थान उद्वर्तन नहीं कहना किन्तु चवन कहना क्योंकि-व मरकर नीचे उत्पन्न होते हैं ॥ इति दूसराद्वार ॥ ८॥

नेरइयाण भंते ! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति ? गोयमा ! संतरपि उववज्जंति, निरंतरपि उववज्जंति ॥ तिरिक्खजोणियाण भंते ! किं संतर उववज्जंति, निरंतर उववज्जंति ? गोयमा ! संतरपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति ॥ मणूसाण भंते ! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति? गोयमा! संतरपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति ॥ देवाण भंते ! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति ? गोयमा ! संतरपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति॥देवाण भंते! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति ? गोयमा! संतरपि उववज्जंति निरंतरपि उववज्जंति॥रयणप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते! किं संतर

अब तीसरा अंतर द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [तब ही विरह पडता है] और अंतर रहित निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह त्रस तिर्यंच आश्रिय] निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

उववज्जति निरतर उववज्जति? गोयमा! सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति ॥ एव जाव अहे सत्तमाए सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति॥ असुरकुमाराण भते! देवा किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उववज्जति निरतर उववज्जति ॥ एव जाव थणियकुमारा सतरपि उववज्जति निरतरपि उववज्जति पुढवि काइयाण भते! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति? गोयमा! नो सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ॥ एव जाव वणस्सइकाइया नो सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ॥ बेइंदियाण भते! किं सतर उववज्जति निरतर उववज्जति ? गोयमा ! सतरपि उवव-

अर्थ

होते हैं और अतर रहित भी उत्पन्न होते हैं अब चौबीस दण्डक आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के जीव अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं जैसा रत्नप्रभा नरक का कहा तैसा ही सातोंही नरक का जानना अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अतर सहित भी उत्पन्न होते हैं और अतर रहित भी उत्पन्न होते हैं ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वी काया के जीव अतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया अतर सहित उत्पन्न नहीं होवे

नेरइयाण भंते ! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति ॥ तिरिक्खजोणियाण भंते ! किं संतर उववज्जंति, निरंतर उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ मणूसाण भंते ! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति ॥ देवाण भंते ! किं संतर उववज्जंति निरंतर उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥देवाण भंते!किं संतर उववज्जंतिनिरंतर उववज्जंति ? गोयमा!संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति॥रयणप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते!किं संतर

अब तीसरा अंतर द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नेरिये अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [तब ही विरह पडता है] और अंतर रहित निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक क्या अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न होते हैं [यह त्रस तिर्यंच आश्रिय] निरंतर भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! मनुष्य अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी और अंतर रहित भी उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! देवता अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि अंतर रहित उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी उत्पन्न

सूत्र

वज्जा भाणियव्वा जाव वेमाणिया, णवरं जोतिसिय वेमाणिएसु चयण अभिलावो कायव्वो ॥ ९ ॥ १० ॥ नेरइयाण भंते ! एगसमएण केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जंति ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ असुरकुमाराण भंते ! एग समएण केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण संखिज्जावा असंखेज्जावा ॥ एवं णागकुमारा जाव थणियकुमाराविं भाणियव्वा ॥ पुढविकाइयाण भंते ! एग

अर्थ

परंतु सिद्ध भगवंत का उद्वर्तन नहीं कहना और ज्योतिषी तथा वैमानिक का चवन कहना ॥ इति तीसरा द्वार॥ १० ॥ चौथा एकसमय में उत्पन्न होने आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीये एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात जैसा यह समुच्चय नरक का कहा वैसे ही रत्नप्रभा आदि सातों नरक का कहना अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात ऐसे ही नाग कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! समय २ में विरह रहित असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही यावत् वायु काया

ज्जति, निरतरपि उववज्जति ॥ एव जाव पचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सतरवि उवव-ज्जति निरतरंपि उववज्जति ॥ मणूसाण भते! किं सतर उववज्जति निरतरं उववज्जति? गोयमा! सतरपि उववज्जति निरंतरपि उववज्जति ॥ एव वाणमतर जोइसिया सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्ध देवाय सतरपि उववज्जति निरंतरपि उववज्जति ॥ सिद्धाण भते ! किं सतर सिज्झति निरतर सिज्झति ? गोयमा ! सतरपि सिज्झति निरतरपि सिज्झति ॥ १ ॥ नेरइयाण भते ! किं सतर उवट्टति निरतर उवट्टति ? गोयमा ! सतरपि उवट्टति निरतर उवट्टति ॥ एव जाव जहा उववाओ भणिओ तहा उवट्टणावि सिद्धि-

परतु निरन्तर उत्पन्न होते हैं ऐसे ही वनस्पति काया तक कहना - अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय अंतर सहित उत्पन्न होते हैं कि निरंतर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! अन्तर सहित भी उत्पन्न होते हैं और निरंतर भी उत्पन्न होते हैं, ऐसे ही तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक यावत् सर्वार्थ सिद्ध विमान पर्यंत कहना सब निरंतर दोनों प्रकार उत्पन्न होते हैं ॥ अहो भगवन् ! सिद्ध भगवंत अंतर सहित सिद्ध होते हैं कि निरंतर सिद्ध होते हैं अहो गौतम ! दोनों हो प्रकार सिद्ध होते हैं ॥ १ ॥ अब निकलने आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! नरक के जीवों अंतर सहित निकलते हैं कि निरंतर निकलते हैं ? अहो गौतम ! जैसा उत्पन्न होने का कहा वैसा ही उद्वर्तन-निकलने का भी कहना

जोणिया, गब्भवक्कतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया ॥ समुच्छिममणुस्सा, वाणमतरा जोइसिया सोहम्मीसाण सणकुमार माहिंद बभलाय लतक महा सुक्क सहस्सार कप्पेदेवा एते जहा नेरइया॥ गब्भवक्कतिय मणुस्साणयपाणय आरण अच्चुय गेविज्जगअणुत्तरो-ववाइयाय एते जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा उववज्जति सिद्धाण भते ! एग समएण केवइया सिज्झति ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण अट्ठुसय॥ १ १॥नेरइयाण भते! एग समएण केवइया उवट्टति? गोयमा! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखिज्जावा असखिज्जावा उवट्टति, एव जहा

अर्थ जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात असख्यात उत्पन्न होते हैं और गर्भज मनुष्य आणत प्राणत आरण अच्युत यह चार देवलोक में नव ग्रैवेयक में पांच अनुत्तर विमान में जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात ही उत्पन्न होते हैं क्यों कि गर्भज मनुष्य तो सख्यात ही हैं और नववे देवलोक से यावत् सर्वार्थ सिद्ध तक मनुष्य ही मरकर जाते हैं, इसलिये एक समय में सख्यात ही उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! सिद्ध एक समय में कितने सिद्ध होवे हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट एक सो आठ सिद्ध होवे हैं ॥ ११ ॥ अब उद्वर्तन कहते हैं अहो भगवन् ! नरकमें से एक समय में कितने जीवों का उद्वर्तन होता है अर्थात् एक समय में कितने जीवों निकलते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य

सूत्र

समएण कवइया उववज्जति ? गोयमा ! अणुसमय अविरहिय असखेज्जा उववज्जति॥ एव जाव वाउकाइयाण ॥ वणस्सइकाइयाण भते ! एग समएण केवइया उववज्जति? गोयमा! सट्ठाणुववाय पडुच्च अणुसमय अविरहिय अणता उववज्जति ॥ परट्ठाणुववाय पडुच्च अणुसमय अविरहिय असखेज्जा उववज्जति ॥ बेइदियाण, भते ! केवइया एगसमएण उववज्जति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा ॥ एव तेइदिय चउरिंदिय सम्मुच्छिमपचिंदियतिरिक्ख

अर्थ

र्यंत कहना अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! स्वस्थान आश्रिय अर्थात् वनस्पति से मरकर पुन वनस्पति में उत्पन्न होना उस अपेक्षा समय २ में विरह रहित अनत उत्पन्न होते हैं और परस्थान आश्रिय असख्यात उत्पन्न होते हैं क्योंकि वनस्पति छोड अन्य स्थान में असख्यात ही जीवों हैं अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय एक समय में कितने उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट सख्यात असंख्यात उत्पन्न होते हैं ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय, समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय समूर्च्छिम मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, और प्रथम सौधर्म देवलोक से यावत् आठवे सहस्रार देवलोक तक नरक जैसे ही एक समय में

सूत्र

तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, णो बेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, णोतेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, णो चउरिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, किं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जदि जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उव-

अर्थ

अहो गौतम ! एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चउरिन्द्रिय से तो नेरीये उत्पन्न नहीं होते हैं परन्तु तिर्यंच पचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! यदि तिर्यंच पचेन्द्रिय से नेरीये उत्पन्न होते हैं तो क्या जलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय से होते हैं कि स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय से होते हैं कि खेचर तिर्यंच पचेन्द्रिय से होते हैं ? अहो गौतम जलचर स्थलचर खेचर तीनों से ही होते हैं यदि अहो भगवन् ! जलचर तिर्यंच

उवावओ भणिओ तहा उवट्टणावि सिद्धवज्जा भाणियव्वा ॥ जाव अणुत्तरोववाइया णवर जोइसिय वेमाणियाण चयणेण अभिलावो कायव्वो॥४॥१२॥ नेरइयाण भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ! किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइया णो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो देवेहिंतो उववज्जंति जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, बेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, तेइंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो, चउरिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णो एगिंदिय

एक, दो, तीन उत्कृष्ट असंख्यात असंख्यात यों जिस प्रकार उत्पात कहा वैसा ही उद्वर्तन का कहना किन्तु सिद्ध का उद्वर्तन नहीं कहना और ज्योतिषी वैमानिक का चवन कहना ॥ इति चौथा द्वार ॥ १२ ॥ अब पांचवा आगत द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नरक के जीवों कहां से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होते हैं तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं, मनुष्य से उत्पन्न होते हैं, कि देवता से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये नरक मे उत्पन्न नहीं होते हैं, वैसे ही देव से भी उत्पन्न नहीं होवे हैं किन्तु तिर्यंच और मनुष्य से उत्पन्न होते हैं यदि अहो भगवन् ! नरक के जीवों तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं तो क्या एकेन्द्रिय तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं, कि बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं ?

पज्जत्त गब्भवक्कतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जति णो अपज्जत्तग गब्भवक्कतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जति ॥ जइ थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति किं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ? परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति, परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरि-जोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति किं समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहितो उववज्जति गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जति? गोयमा! समुच्छिम चउप्पय थलचर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति, गब्भवक्कतिय

अर्थ

उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय जलचर से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त जलचर तिर्यंच गर्भज से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त गर्भज जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त गर्भज जलचर से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि अहो भगवन्

वज्जति? गोयमा! सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भ-वक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तग सम्मुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जंति अपज्जत्त गब्भवक्कंतिय जलयर पंचिंदिए हिंतो उववज्जंति? गोयमा!

पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं कि गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय से होते हैं? अहो गौतम! समूर्च्छिम गर्भज दोनों से ही होते हैं यदि अहो भगवन्! समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय से

वक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति असंखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, नो असंखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ संखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, अपज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति? गोयमा! पज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो

कि असंख्यात वर्षायुगर्भज चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायुवाले होवे हैं परन्तु असंख्यात वर्षायुवाले नहीं होते हैं यदि संख्यात वर्षायु गर्भज चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच पचेन्द्रिय नेरीयों पने उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त संख्यात वर्षायु गर्भज स्थलचर पचेन्द्रिय उत्पन्न होते हैं अपर्याप्त संख्यात वर्षायु गर्भज स्थल पचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं परन्तु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि परिसर्प स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो

चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइसमुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति किं पज्जतग समुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तग सम्मुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति? गोयमा! पज्जत्तग सम्मुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तग सम्मुच्छिम चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जदि गब्भवक्कतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं संखेज्जवासाउय गब्भ-

स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच से उत्पन्न होते हैं तो क्या चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं कि परिसर्प से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम! दोनों सेही उत्पन्न होते हैं यदि चतुष्पद स्थलचर होते हैं तो क्या समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं कि गर्भज चतुष्पद स्थलचर से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम! दोनों से ही उत्पन्न होते हैं यदि समूर्च्छिम चतुष्पद से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त समूर्च्छिम से होते हैं, कि अपर्याप्त समूर्च्छिम से होते हैं ? अहो गौतम! पर्याप्त से हैं परंतु अपर्याप्त से नहीं होते हैं यदि गर्भज चतुष्पद स्थलचरसे उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्षायुवाले गर्भज चतुष्पद से उत्पन्न होते हैं

उववज्जति पज्जत्तग सम्मुच्छिम उरपरिसप्पथलयर पचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तग सम्मुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! पज्जत्तग सम्मुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति नो अपज्जत्तग सम्मुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ गब्भवक्कतिय उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तग गब्भवक्कतिय उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति किं अपज्जत्तएहिंतो ? गोयमा ! पज्जत्तग गब्भवक्कतिय उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तग गब्भवक्कतिय उरपरिसप्प थलयर पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ भुजपरिसप्प थलयर

अर्थ

परतु अपर्याप्त से नहीं होते हैं यदि गर्भज उरपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रियसे उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्तसे उत्पन्न होते हैं अथवा अपर्याप्त गर्भजसे उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प से उत्पन्न होते हैं परतु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि भुजपर सर्प से उत्पन्न होते हैं तो क्या संमूर्च्छिम से उत्पन्न होते हैं कि गर्भज से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम! दोनों से ही उत्पन्न होते हैं यदि संमूर्च्छिम भुजपरिसर्प से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो

उववज्जति, नो अपज्जत्तग संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति॥ जइ परिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, भुजपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति जदि उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा! समुच्छिमेहिंतोवि गब्भवक्कंतिएहिंतोवि उववज्जति जइ समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो

क्या उरपरिसर्प स्थलचर पचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं कि भुजपरिसर्प स्थलचर पचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम ! दोनों से ही उत्पन्न होते हैं यदि उरपरि सर्प स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या संमुच्छिम उरपरसर्पसे उत्पन्न होते हैं कि गर्भज उरपरिसर्पसे उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! दोनों से ही उत्पन्न होते हैं यदि समुच्छिम उरपरि सर्प स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक मे उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं

एहिंतो उववज्जति ॥ जइ खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं सम्मुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जति ॥ जइ सम्मुच्छिम खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥ जइ गब्भवक्कतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं सखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, असखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्ख-जोणिएहिंतो

अर्थ

होवे हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होवे हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होवे हैं यदि गर्भज खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले उत्पन्न होवे हैं कि असंख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होवे हैं ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायु से उत्पन्न होते हैं परन्तु असंख्यात वर्षायु से उत्पन्न नहीं होवे हैं यदि संख्यात वर्षायु गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त से उत्पन्न होवे हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होवे हैं किन्तु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होवे हैं यदि मनुष्य से नरक में उत्पन्न होवे हैं तो क्या संमूर्च्छिम उत्पन्न

पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति कि समुच्छिम भुजपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जति गब्भवक्कतिय भुजपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जति ॥ जइ समुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए हिंतो उववज्जति कि पज्जत्तयसमुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जति अपज्जत्तग सम्मुच्छिम भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए हिंतो उववज्जति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥ जइ गब्भवक्कतिय भुयपरिसप्प थलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जति कि पज्जत्तएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ? गोयमा! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति नो अपज्जत्त-

गौतम ! पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं किन्तु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि गर्भज भुजपरि सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक मे उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त मे उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि मे उत्पन्न होवे तो क्या संमूर्छिम खेचर से उत्पन्न होवे कि गर्भज से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम! दोनों से उत्पन्न होते हैं यदि संमूर्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होवे हैं तो क्या

गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्से-हिंतो उववज्जति, नो अकम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥ जइ कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं संखेज्जवासाउय कम्मभूमिगगब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, असंखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति? गोयमा ! संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति नो असंखिज्ज वासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति॥ जइ संखेज्ज वासाउय कम्मभूमिग मणुस्सेहिंतो उववज्जति, किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति, गोयमा! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति॥१२॥रयणप्पभा पुढवि

अर्थ

होते हैं कि असंख्यात वर्षायुवाले उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायुवाले मनुष्य नरक में उत्पन्न होते हैं किन्तु असंख्यात वर्षायुवाले मनुष्य नरक में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि संख्यात वर्षायुवाले उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त मनुष्य नरक में उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त मनुष्य नरक में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त मनुष्य नरक में उत्पन्न होते हैं किन्तु अपर्याप्त मनुष्य उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ २१ ॥ अब सातों नरक में अलग २ उत्पन्न होने का

उववज्जति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, नो असंखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जति, अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सम्मुच्छिम मणुस्सेहिंतो उववज्जति गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! नो सम्मुच्छिम मणुस्सेहिंतो उववज्जति गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति अकम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, अंतरदीवग

मनुष्य से होते हैं कि गर्भज मनुष्य से होते हैं ? अहो गौतम ! गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं किन्तु समूर्च्छिम मनुष्य से नरक में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि गर्भज मनुष्य से होते हैं तो क्या कर्म भूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं कि अकर्म भूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं कि अन्तरद्वीप के मनुष्य से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कर्म भूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं किन्तु अकर्म भूमि और अन्तरद्वीप मनुष्य से नहीं होते हैं यदि कर्म भूमि मनुष्य से नरक में उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्षायुवाले उत्पन्न

पकप्पभापुढवि नेरइया नवर चउप्पएहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो, तमप्पभा पुढवि नेरइयाण भंते ! कओहिंता उववज्जति ? गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढवि नेरइया नवर थलयराहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो, इमेण अभिलावेण। जइ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति किं जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जति, नो थलयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जति नो खहयर पंचिंदिएहिंतो उववज्जति ॥ जइ मणुस्सेहिंतो

अर्थ

परंतु जिस में इतना विशेष चतुष्पद स्थलचर धूम्र प्रभा में उत्पन्न नहीं होवे अहो भगवन् ! तमप्रभा पृथ्वी में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! धूम्र प्रभा का कहा वैसा ही कहना परतु स्थलचर उत्पन्न नहीं होवे तमप्रभा पृथ्वी का इस प्रकार आभिलापक-यदि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होवे तो क्या जलचरसे उत्पन्न होवे कि स्थलचर से उत्पन्न होवे कि खेचर से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! मात्र एक जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होते हैं परतु स्थलचर और खेचर से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि मनुष्यसे उत्पन्न होतेहैं तो क्या कर्मभूमिसे उत्पन्न होतेहैं कि अकर्म भूमिसे उत्पन्न होतेहैं कि अतरद्वीप के मनुष्यसे उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कर्म भूमि से उत्पन्न होते हैं परतु अकर्मभूमि और अतर द्वीप से उत्पन्न

नेरइयाण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जहा ओहिया उववाइया तहा रयणप्पभापुढवि नेरइयावि उववाएव्वा ॥ सक्करप्पभापुढवि नेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहा ओहिया तहेव एएवि उववाएयव्वा, नवर सम्मुच्छिमाहिंतो पडिसेहो कायव्वो ॥ वालुयप्पभापुढवि नेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहेव वालुयप्पभा पुढवि नेरइयाण तहेव एएवि णवर भुयपरिसप्पेहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो ॥ पकप्पभापुढवि नेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहा वालुयप्पभा पुढवि नेरइया णवर खहयरेहिंतो पडिसेहो कायव्वो ॥ धूमप्पभापुढविनेरइयाणं भते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहा

कहते हैं अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नेरीये कहां से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा ऊपर औघिक-समुचय नरकमें उत्पन्न होनेका कथन कहा वैसेही रत्नप्रभा नरकमें भी उत्पन्न होनेका कहना शर्कर प्रभा नरकका भी औधिक जैसाही कहना परंतु इतना विशेषकी शर्करप्रभामें समूर्च्छिम मरकर उत्पन्न नहीं होवे जैसा शर्करप्रभा पृथ्वीका कहा वैसाही वालुकप्रभा पृथ्वीका जानना परंतु इतना विशेष भुजपरि सर्प मरकर तीसरी नरक में उत्पन्न नहीं होवे वालुक प्रभा जैसा ही पंक प्रभा में उत्पन्न होने का जानना परंतु उसमें इतना विशेष कि खेचर मरकर पंक प्रभा में उत्पन्न नहीं होवे पंक प्रभा जैसा ही धूम्र प्रभा का कहना

हिंतो उववजाति पुरिसेहिंतो उववज्जति, नपुंसएहिंतो उववज्जति, गोयमा ! इत्थीहिंतो उववज्जति, पुरिसेहिंतोवि उववज्जति नपुंसएहिंतो उववज्जति॥ अहे सत्तमाए पुढवि नेरइयाणं भते ! कओहिंतो उववज्जति गायमा ! एवंचेव, नवर इत्थीहिंतो पडिसेहो कायव्वो ॥ १४ ॥ (एगाहा) असण्णी खलु पढम, दोच्च चसिरीसिवा तइयापक्खी सीहा-जति चउर्थीए, उरगापुण पचमिं पुढविं ॥ १ ॥ छट्ठिंच इत्थियाओ, मच्छामणुया सत्तमि पुढविं ॥ एसापरमुववाओ बोधव्वो णरग पुढवीण ॥ २ ॥ १५ ॥ असुरकुमाराण भत ! कओहिंतो उववज्जति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जति तिरिक्ख जोणिए

अहो गौतम ! स्त्री पुरुष नपुंसक तीनों से उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! नीचे की सातवी नरक में कहां से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा छठी नरक का कहा तैसा ही सातवी नरक का भी कहना जिस में इतना विशेष स्त्री मरकर सातवी नरक में उत्पन्न नहीं होवे ॥ १४ ॥ अब सातों नरक में जा २ उत्पत्ति है वह कहते हैं प्रथम नरक में असन्नी समूर्च्छिम, दूसरी में से भुजपरी सर्प, तीसरी में खेचर-पक्षी, चौथी में चतुष्पद सिंहादि, पांचवी में उरपर सर्प, छठी में स्त्री और सातवी में गर्भज मनुष्य और जलचर, इस प्रकार सातों नरक में उत्पन्न होने का उत्कृष्टपना जानना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता कहां से उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होवे तिर्यंच से उत्पन्न होवे

उववज्जति किं कम्मभूमिग मणुस्सेहिंतो उववज्जति, अकम्मभूमिग मणुस्सेहिंतो उववज्जति अंतरदीवग मणुस्सेहिंतो उववज्जति? गोयमा! कम्मभूमिएहिंतो उववज्जति, णोअकम्मभूमिएहिंतो नो अंतरदीवएहिंतो उववज्जति॥जइ कम्मभूमिएहिंतो उववज्जति किं संखेज्जवासाउय कम्मभूमिएहिंतो उववज्जति, असंखेज्जवासाउय कम्मभूमिएहिंतो उववज्जति? गोयमा! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति॥ जइ संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति? गोयमा! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति नोअपज्जत्तएहिंतो उववज्जति। जइ पज्जत्तएहिंतो किं इत्थी-

नहीं होते हैं यदि कर्मभूमि मनुष्य से तम प्रभा पृथ्वी में उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं कि असंख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! संख्यात वर्षायु वाले उत्पन्न होते हैं परंतु असंख्यात वर्षायुवाले उत्पन्न नहीं होते हैं संख्यात वर्षायुवाले मनुष्य उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त मनुष्य उत्पन्न होते हैं, कि अपर्याप्त मनुष्य उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! पर्याप्त मनुष्य उत्पन्न होते हैं, परंतु अपर्याप्त मनुष्य उत्पन्न नहीं होते हैं, यदि पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्म भूमी मनुष्य से छठी नरक में उत्पन्न होते हैं तो क्या स्त्री से उत्पन्न होते हैं कि पुरुषसे उत्पन्न होते हैं कि नपुंसक से उत्पन्न होते हैं?

सूत्र

मणुस्सेहिंतो उववज्जति, देवेहिंतो उववज्जति॥ जइ तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति, किं एगिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति, जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! एगिंदिए तिरिक्ख जोणिएहिंतावि जाव पंचिंदिए तिरिक्ख जोणिए हिंतावि उववज्जति ॥ जइ एगिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंतो उववज्जति किं पुढविकाइएहिंता जाव वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! पुढविकाइए हिंतोवि जाव वणस्सइकाइएहिंतोवि ॥ जइ पुढविकाइएहिंतो उववज्जति किं सुहुम पुढविकाइएहिंतो उववज्जति बायर पुढवि काइएहिंतो उववज्जति ॥ जइ सुहुम

अर्थ

काया में आकर उत्पन्न होवे तो क्या एकेन्द्रिय से उत्पन्न होवे, बेइन्द्रिय से, तेइन्द्रिय से, चौरिन्द्रिय से कि पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पांचों ही जाति से आकर पृथ्वी काया में उत्पन्न होता है यदि एकेन्द्रिय से पृथ्वीकाया में आकर उत्पन्न होवे तो क्या पृथ्वीकाया से पृथ्वीकाया में उत्पन्न होवे कि अप्काया से उत्पन्न होवे, कि तेउकाया से उत्पन्न होवे कि वायुकाया से उत्पन्न होवे कि वनस्पतिकाया से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पांचों काया से मरकर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं यदि पृथ्वीकाया से पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं तो क्या सूक्ष्म पृथ्वीकाया से उत्पन्न होते हैं कि बादर पृथ्वीकाया से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! दोनों ही से उत्पन्न होते हैं यदि

हिंतो उववज्जति मणुस्सेहिंतो उववज्जति, देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा! नो नेरइए हिंतो उववज्जति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जति एवं जेहिंतो नेरइयाण उववाओतेहिंतो असुरकुमाराणवि भाणियव्वो नवर असंखेज्ज वासाउय अकम्मभूमिग अंतरदीवगमणुस्स तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ॥ सेस तचेव ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ १६ ॥ पुढवि काइयाण भंते ! कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति जाव देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जति

मनुष्य से उत्पन्न होवे कि देवता से उत्पन्न होवे यों जिस प्रकार नरक का उत्पात कहा तैसा ही असुरकुमार देवता का भी कहना जिस में इतना विशेष असंख्यात वर्षायु कर्म भूमि, अकर्म भूमि और अन्तरद्वीप के मनुष्य तथा तिर्यंच में से उत्पन्न होवे शेष अधिकार तैसा ही कहना यों जैसा असुरकुमार का कहा तैसा ही यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया में कहां से आकर उत्पन्न होवे, क्या नरक से उत्पन्न होवे कि तिर्यंच से उत्पन्न होवे कि मनुष्य से उत्पन्न होवे कि देवता से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नरक का जीव पृथ्वी काया में उत्पन्न नहीं होवे परंतु तिर्यंच से मनुष्य से, और देवता से मरकर पृथ्वी काया में उत्पन्न होता है यदि तिर्यंच योनिक से पृथ्वी

सूत्र

जलयर पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो एएसिंपि भाणियव्वो नवर पज्जत्तग अपज्जत्तगेहिंतोवि उववज्जति सेसं तचेव ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जति गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति अकम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जहा नेरइयाण णवर अपज्जत्तएहिंतोवि उववज्जति ॥ जइदे-

अर्थ

प्रकार यहां भी कहना, जिस में इतना विशेष पृथ्वीकाय में पर्याप्त अपर्याप्त दोनों ही उत्पन्न होवे यदि मनुष्य में से उत्पन्न होवे होवे तो क्या संमूर्च्छिम मनुष्यसे उत्पन्न होवे कि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! दोनों मे ही उत्पन्न होवे यदि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होवे तो क्या कर्मभूमि से उत्पन्न होवे कि अकर्मभूमी मे होवे कि अन्तरद्वीप के मनुष्य से होवे ? अहो गौतम ! जैसे नरक का कहा वैसा यहां भी कहना जिस में इतना विशेष कि यहां पर्याप्त अपर्याप्त कर्मभूमी दोनों प्रकार के मनुष्य उत्पन्न होते हैं यदि देवता में उत्पन्न होवे तो क्या भवनपति से होवे की वाणव्यन्तर से होवे कि ज्योतिषी से होवे कि वैमानिक से होवे ? अहो गौतम ! चारों ही जाति के देवता में से उत्पन्न होते है यदि भवन

पुढविकाइएहिंतो उववज्जाती, किं पज्जत्तग सुहुम पुढविकाइएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तग सुहुम पुढविकाइएहिंतो ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जाती ॥ जइबादर पुढवि काइएहिंतो उववज्जाती किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जति,अपज्जत्तएहिंतो उववज्जाती? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जाति ॥ एव जाव वणस्सइकाइया चउक्कएण भेएण उववाएयव्वा॥ जइ बेइंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जाति किं पज्जत्त बेइंदिएहिंतो उववज्जाति अपज्जत्त बेइंदिएहिंतो उववज्जाति ? गोयमा ! दोहिंतो उववज्जाति ॥ एव तेइंदिय चउरिंदिएहिंतोवि ॥ जइ पचिंदिय तिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जाति किं

सूक्ष्म पृथ्वीकाया से उत्पन्न होवे तो क्या अपर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय से उत्पन्न होवे कि पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाया से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! दोनों से ही होवे जैसा सूक्ष्म पृथ्वीकाया का कहा वैसा बादर पृथ्वीकाया का भी कहना और जैसा पृथ्वीकाय का कहा वैसा ही अप् तेउ वायु वनस्पति पांचों स्थावर का कहना यदि बेन्द्रिय में से पृथ्वीकाय में उत्पन्न होवे तो क्या पर्याप्त बेन्द्रिय मे उत्पन्न होवे कि अपर्याप्त बेन्द्रिय से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! दोनों ही से उत्पन्न होवे जैसा बेन्द्रिय का कहा वैसा ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय का भी कहना यदि तिर्यंच पंचेन्द्रिय से उत्पन्न होवे तो क्या जलचर से होवे कि स्थलचर से होवे कि खेचर से होवे ? अहो गौतम ! जिस प्रकार नरक का उत्पन्न होना कहा उस ही

हिंतो जाव ताराविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाण जोइसिय देवेहिंतो जाव ताराविमाण जोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइवेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति कप्पातीयग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति नो कप्पातीतग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति ॥ जइ कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो उववज्जंति जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! सोहम्मीसाणेहिंतो उववज्जंति नो सणकुमारेहिंतो जाव नो अच्चुएहिंतो उववज्जंति ॥ एवं आउकाइयावि, एवं तेउवाउकाइयावि नवर देववज्जेहिंतो उववज्जंति, वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया, बेइंदिय तेइंदिय

परंतु कल्पातीत से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं तो क्या सौधर्म देवलोक से उत्पन्न यावत् अच्युत देवलोकसे उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! सौधर्म और ईशान इनदोनों देवलोक से उत्पन्न होते हैं शेष सनत्कुमारादि देवलोकसे उत्पन्न नहीं होते हैं जैसा, यह पृथ्वीकाया का कहा वैसाही अप्काया का भी कहना, वैसे ही तेउकाया का भी कहना, वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि तेजस्काय और वायुकाया में चारोंही जाति के देवता उत्पन्न नहीं होते हैं और जैसा पृथ्वीकाया में उत्पन्न होने का कहा ऐसा ही वनस्पतिकाया का भी जानना बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरिन्द्रिय का तेउकाया, वायु काया

वेहिंतो उववज्जति ।कि भवणवासी देवेहिंतो उववज्जति जाव वेमाणिएहिंतो उववज्जति गोयमा ! भवणवासीदेवोहिंतावि उववज्जति जाव वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जाति ॥ जइ भवणवासी देवेहिंतो उववज्जति किं असुरकुमारदेवोहिंतो उववज्जति जाव थणिय कुमार देवेहिंता उववज्जति ? गोयमा ! असुरकुमार देवोहिंतोवि उववज्जति जाव थणिय कुमार देवेहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ वाणमंतर देवेहिंतो उववज्जति किं पिसाएहिंतो जाव गधव्वेहिंतो उववज्जाति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि जाव गधव्वहिंतोवि उववज्जति ॥ जइजोइसिय देवेहिंतो उववज्जति किं चदविमाण-

पतिसे उत्पन्न होवे तो क्या असुरकुमार से होवे कि यावत् स्वनित कुमार से होवे ? अहो गौतम ! दश ही भुवनपति देव से चवकर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं यदि वाणव्यन्तर देव से उत्पन्न होवे तो क्या पिशाच से उत्पन्न होते हैं यावत् गंधर्व से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! आठ ही जाति के व्यन्तर पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं यदि ज्योतिषी से उत्पन्न होवे तो क्या चद्रमा से होवे कि सूर्य से होवे कि ग्रह स होवे कि नक्षत्र से होवे कि तारा स होवे ? अहो गौतम ! पांचों प्रकार के ज्योतिषी से पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं यदि वैमानिक से उत्पन्न होवे तो क्या कल्पोत्पन्न (बारेदेवलोक) से उत्पन्न कि कल्पातीत ग्रैवेयक अनुत्तर विमान से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! कल्पोत्पन्न से उत्पन्न होते हैं

ज्जति जाव किं पचिंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएहिंतोवि उववज्जति जाव पचिंदिएहिंतोवि उववज्जंति ॥ जइ एगिंदिएहिंतो उववज्जति किं पुढविकाइएहिंतो उववज्जति जाव किं वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! एव जहा पुढविकाइयाणं उववाओ भणिओ तहेव एएसिंपि भाणियव्वो, नवर देवेहिंतो जाव सहस्सार कप्पोवग वेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जति, नो आणय कप्पोवग वेमाणिय देवेहिंतो उववज्जति जाव नो अच्चुयकप्पेहिंतो उववज्जति ॥ १८ ॥ मणुस्साण भते! कओहिंतो उववज्जति किं नेरइएहिंतो उववज्जति जाव किं देवेहिंतो उववज्जंति?

अर्थ पंचेंद्रिय से होवे ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय से भी उत्पन्न होवे यावत् पंचेन्द्रिय से भी उत्पन्न होवे यदि एकेन्द्रिय से उत्पन्न होवे तो पृथ्वीकाय से उत्पन्न होवे कि यावत् वनस्पतिकाय से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाय से भी उत्पन्न होवे यावत् वनस्पतिकाय से भी उत्पन्न होवे यों जिस प्रकार पृथ्वीकाय में उत्पन्न होने का कहा या तैसा ही इस का भी कहना जिस में इतना विशेष यहां आठवे सहस्रार देवता उत्पन्न होते हैं परंतु आगे आनत प्राणतादिक देवता उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य में कहां से आकर उत्पन्न होवे हैं क्या नरक से आकर उत्पन्न होते हैं यावत् क्या देवता

चउरिंदिया एते जहा तेउवाउदेववज्जेहिंतो भाणियव्वो ॥ १७ ॥ पाचिंदियतिरिक्ख जोणियाण भते ! कओहिंतो उववज्जति, किं नेरइएहिंतो जाव किं देवेहिंतो उववज्जति गोयमा ! नेरइएहिंतोवि उववज्जति, तिरिक्ख जोणिएहिंतोवि उववज्जति, मणुस्सेहिंतोवि, उववज्जति, देवेहिंतोवि उववज्जति ॥ जइ नेरइएहिंतो उववज्जति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जति जाव किं अहे सत्तमावि पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जति? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतोवि उववज्जति जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइएहिंतोवि उववज्जति ॥ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं एगिंदिएहिंतो उवव-

वैसा कहना अर्थात् चारों जाति के देवता बेइंद्रिय, तेइंद्रिय में उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कहां से आकर उत्पन्न होवे क्या नरक से उत्पन्न होवे कि तिर्यंच से उत्पन्न होवे कि मनुष्य से उत्पन्न होवे कि देवता से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! चारों गति का जीव तिर्यंच पंचेन्द्रियमें आकर उत्पन्न होते हैं यदि नरक से उत्पन्न होवे तो क्या रत्न प्रभा नरक से उत्पन्न होवे कि यावत् सातवी नरक से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! रत्न प्रभा से भी उत्पन्न होवे यावत् नीचे की सातवी नरक से भी उत्पन्न होवे यदि तिर्यंच योनिक से उत्पन्न होवे तो क्या एकेन्द्रिय से होवे कि यावत्

उववज्जावेयव्वा ॥ १९ ॥ वाणमतर देवाण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? किं नेरइएहिंतो जाव किं देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जेहिंतो असुरकुमारा तेहिंतो वाणमतरावि भाणियव्वा ॥ २० ॥ जोइसिय देवाण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! एवचेव, णवरं सम्मुच्छिम असखेज्जवासाउय खहयर पंचिंदिय अतरदीव मणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयव्वा ॥ २१ ॥ एव वेमाणियावि सोहम्मीसाणगा भाणियव्वा, एव सणकुमारगावि णवर असखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग वज्जेहिंतो

अर्थ

सर्वार्थसिद्ध तक का मनुष्य में आकर उत्पन्न होता है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यन्तर देवता कहां से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से आकर उत्पन्न होवे हैं यावत् क्या देवता से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा असुरकुमार देवता का कहा तैसा ही वाणव्यन्तर देवता का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता कहां से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा वाणव्यन्तर देव का कहा तैसा ही ज्योतिषीदेव का कहना परतु जिस में इतना विशेष समूर्छिमतिर्यंच, असख्यात वर्ष के आयुष्य वाले खेचर तिर्यंच पचेन्द्रिय और अतरद्वीप के मनुष्य इतने ज्योतिषी देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं ॥ २१ ॥ जैसा ज्योतिषी का कहा तैसा ही वैमानिक का भी सौधर्म और ईशान देवलोक तक कहना, सनत्कुमार देवलोक में इतना विशेष असख्यात वर्षायुवाले अकर्मभूमि मनुष्य छोडकर शेष सब उत्पन्न

गोयमा ! नेरइएहिंतोवि जाव देवेहिंतावि ॥ जइ नेरइएहिंतो उववज्जति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जति जाव किं अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जति जाव तमप्पभापुढवि नेरइएहिंतो उववज्जंति नो अहे सत्तमा पुढवि नेरइएहिंतो उववज्जति ॥ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति किं एगिंदिय तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति एव जेहिंतो पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो मणुसाणवि निरविसेसो भाणियव्वो, नवर अहे सत्तमा पुढवि नेरइया तेउवाउकाइएहिंतो न उववज्जति, सव्वदेवेहिंतोवि उववज्जाएयव्वा जाव कप्पातीतग वेमाणियस्स सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतोवि

से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! चारोंगति से आकर मनुष्य में उत्पन्न होते हैं यदि नरक से आकर उत्पन्न होते हैं तो क्या रत्नप्रभा नरक से अथवा नीचे की सातवी तमतमप्रभा नरक से उत्पन्न होते हैं ! अहो गौतम ! रत्नप्रभा से यावत् छठी तमप्रभा पृथ्वी तक का मरकर मनुष्य होता है परंतु सातवी नरक का मनुष्य नहीं होता है यदि तिर्यंच योनिक से मनुष्य होता है तो जैसा तिर्यंच पंचेन्द्रिय में तिर्यंच का उत्पन्न होने का कहा वैसा ही यहां भी कहना परंतु उस में इतना विशेष सातवी नरक तेउकाय और वायुकाय इनका मनुष्य नहीं होता है और कल्पोत्पन्न तथा कल्पातीत यावत्

उववज्जावेयव्वा ॥ १९ ॥ वाणमतर देवाण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? किं नेरइएहिंतो जाव किं देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! जेहिंतो असुरकुमारा तेहिंतो वाणमतरावि भाणियव्वा ॥ २० ॥ जोइसिय देवाण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! एवचेव, णवर सम्मुच्छिम असखेज्जवासाउय खहयर पचिंदिय अतरदीव मणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयव्वा ॥ २१ ॥ एव वेमाणियावि सोहम्मीसाणगा भाणियव्वा, एव सणकुमारगावि णवर असखेज्जवासाउय अकम्मभूमिग वज्जेहिंतो

अर्थ

सर्वार्थसिद्ध तक का मनुष्य में आकर उत्पन्न होता है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यन्तर देवता कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से आकर उत्पन्न होते हैं यावत् क्या देवता से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा असुरकुमार देवता का कहा वैसा ही वाणव्यन्तर देवता का कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता कहाँ से आकर उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! जैसा वाणव्यन्तर देव का कहा वैसा ही ज्योतिषीदेव का कहना परंतु जिस में इतना विशेष समूर्च्छिमतिर्यंच, असख्यात वर्ष के आयुष्य वाले खेचर तिर्यंच पचेन्द्रिय और अंतरद्वीप के मनुष्य इतने ज्योतिषी देवता में उत्पन्न नहीं होते है ॥ २१ ॥ जैसा ज्योतिषी का कहा वैसा ही वैमानिक का भी सौधर्म और ईशान देवलोक तक कहना, सनत्कुमार देवलोक में इतना विशेष असख्यात वर्षायुवाले अकर्मभूमि मनुष्य छोडकर शेष सब उत्पन्न

उववज्जति ॥ एवं जाव सहस्सारकप्पोवग वेमाणिय देवा भाणियव्वा ॥ आणय देवाण भते ! कओहिंतो उववज्जति ? किं नरइएहिंतो उववज्जति जाव देवेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति नो तिरिक्खजोणिएहिंतो मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहिंतो उववज्जति ॥ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सम्मुच्छिम मणुस्सेहिंतो उववज्जति गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति नो सम्मुच्छिम मणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥ जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उव-

होते हैं, सनत्कुमार के जैसा ही सहस्रार देवलोक तक कहना आणत प्राणत देवलोक में कहां से आकर उत्पन्न होते हैं क्या नरक से उत्पन्न होते हैं यावत् कि देवता से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक तिर्यंच और देवता से मरकर ऊपर के देवलोक में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु एक मनुष्य से उत्पन्न होते हैं यदि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं तो क्या संमूर्च्छिम मनुष्य से उत्पन्न होते हैं कि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं परंतु संमूर्च्छिम मनुष्य से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं तो क्या कर्मभूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं कि अकर्म भूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं कि अंतरद्वीप मनुष्य से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! कर्म भूमि मनुष्य

वज्जति, अकम्मभूमिगमणुस्सेहिंतो उववज्जति अंतरदीवग मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! कम्मभूमिग मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अकम्मभूमिग मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो अंतरदीवग मणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥ जइ कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति, असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जति ॥ जइ संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जति, नो अप-

अर्थ

होते हैं परंतु अकर्म भूमि और अंतरद्वीप के मनुष्य से उत्पन्न नहीं होते हैं ? यदि कर्मभूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं तो क्या संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य से होते हैं कि असंख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायु कर्मभूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं परंतु असंख्यात वर्षायु कर्म भूमि मनुष्य से उत्पन्न नहीं होते हैं यदि संख्यात वर्षायु कर्म भूमि मनुष्य से उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त से उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त से उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त उत्पन्न होते हैं परंतु अपर्याप्त उत्पन्न नहीं होते हैं यदि पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्म भूमि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं तो क्या सम्यक् दृष्टी से कि मीश्र दृष्टि से उत्पन्न होते हैं अहो गौतम ! सम्यक् दृष्टी और मिथ्यादृष्टि

ज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥ जदि पज्जत्तय सखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सम्मद्दिट्ठी पज्जत्त सखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी पज्जत्तय सखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति सम्मामिच्छद्दिट्ठी पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, मिच्छद्दिट्ठी पज्जत्तगेहिंतोवि उववज्जति नो सम्मामिच्छद्दिट्ठी पज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥ जइ सम्मद्दिट्ठी पज्जत्त सखेज्जवासाउय

दोनों प्रकार के कर्मभूमि मनुष्य से आकर उत्पन्न होवे परंतु मिश्रदृष्टि उत्पन्न नहीं होवे क्यों कि मिश्रदृष्टि में मृत्यु नहीं होता है यदि सम्यक् दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षायु कर्मभूमि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होवे तो क्या संयति से उत्पन्न होवे कि असंयति से उत्पन्न होवे कि संयतासंयति से उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! तीनों में से ही आकर उत्पन्न होवे हैं ऐसे ही बारवे अच्युत देवलोक पर्यंत कहना ऐसे ही ग्रैवेयक में उपजने का कहना जिस में इतना विशेष असंयति और संयतासंयति उत्पन्न नहीं होवे हैं और जैसे ग्रैवेयक के देवता का कहा वैसा ही अनुत्तर विमान के देवता का कहना परतु जिस में इतना विशेष मात्र सर्व विरति साधु ही अनुत्तर विमान में उत्पन्न होवे हैं यदि संयति सम्यक दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षायु

सूत्र

कम्मभूमिग गब्भवक्कतियमणुस्सेहिंतो उववज्जति किं सजय सम्मदिट्ठी पज्जत्तएहिंतो असजयसम्मादिट्ठी पज्जत्तएहिंतो सजयासजयसम्मादिट्ठी पज्जत्तएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! तिहिंतोवि उववज्जति ॥ एव जाव अच्चुआकप्पो, एव गेविज्जगदेवावि, णवर सजयासजयाएते पडिसेहेयव्वा एव जहेव गेविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइयावि, इम णाणत्त सजयाचेव ॥ जइसजयसम्मादिट्ठी पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जति, किं पमत्तसजए-हिंतो अपमत्त सजएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! अपमत्तसजएहिंतो उववज्जति,नो पमत्तसजएहिंतो उववज्जति ॥ जइ अपमत्त सजएहिंतो उववज्जति किं इड्डिपत्त अपमत्त सजएहिंतो अणिड्डिपत्त अपमत्त सजएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! दोहिंतोवि उववज्जति ॥ ५ ॥२२॥ नेरइयाण भते ! अणतर उवट्टित्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जति,किं

अर्थ

कर्म भूमि गर्भज मनुष्य से उत्पन्न होते हैं वो क्या प्रमत्त संयति से होते हैं कि अप्रमत्त संयति से होते हैं ? अहो गौतम ! अप्रमत्त संयति होते हैं परंतु प्रमत्त संयति उत्पन्न नहीं होते हैं यदि अप्रमत्त संयति से उत्पन्न होवे हैं वो ऋद्धिवंत (लब्धिवंत) संयति से आकर उत्पन्न होवे कि ऋद्धि रहित संयति से आकर उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! दोनों ही उत्पन्न होते हैं ॥ इति पंचम द्वार ॥ २१ ॥ अब गति द्वार कहते हैं

नेरइएसु उववज्जति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति मणुस्सेसु उववज्जति देवेसु उववज्जति गोयमा ! नेरइएसु उववज्जात तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति मणुस्सेसु उववज्जति, नो देवेसु उववज्जति॥जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति किं एगिंदिएसु उववज्जति जाव किं पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए, उववज्जति,एवं जहिंतो उववाओ भणिओ तेसुउववट्टणावि भाणियव्वा णवर समुच्छिमेसु ण उववज्जति॥एवं सव्वपुढवीसु भाणियव्व,णवर अहेसत्तमाओ मणुस्सेसु नउववज्जंति ॥ असुरकुमाराण भंत ! अणतरं उवट्टित्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति जाव किं देवेसु उववज्जाति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जति तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु उववज्जति, णो देवेसु उववज्जति ॥ जइ तिरिक्खजोणि-

अहो भगवन् ! नारकी के जीवे नरक से निकलकर निरंतर कहां उत्पन्न होते हैं क्या नरक में उत्पन्न होते हैं कि तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं, कि मनुष्य में उत्पन्न होते हैं, कि देवता में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक में और देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच में और मनुष्य में उत्पन्न होते हैं यदि तिर्यंच योनिक में उत्पन्न होते हैं तो क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं कि यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! एकेन्द्रिय बेन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रियमें उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच पंचेन्द्रिय में

एसु उववज्जंति किं एगिंदिएसु जाव किं पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? गोयमा ! एगिंदिएसु उववज्जति, नो बेइंदिएसु उववज्जति, नो तेइंदिएसु नो चउरिंदिएसु उववज्जति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ॥ जइ एगिंदिएसु उववज्जति किं पुढविकाइय एगिंदिएसु उववज्जति जाव किं वणस्सइकाइय एगिंदिएसु उववज्जति? गोयमा! पुढविकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति आउकाइय एगिंदिएसु उववज्जति, नोतेउकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति, नो वाउकाइय एगिंदिएसु उववज्जंति वणस्सइकाइएसु उववज्जति जइ पुढविकाइएसु उववज्जंति किं सुहुम पुढविकाइएसु उववज्जति बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति ?

अर्थ

उत्पन्न होवे हैं यों जिस प्रकार आगति में उपपात कहा तैसा ही यहां भी उद्वर्तन कहना जिस में इतना विशेष समूर्च्छिम मरकर नरक में उत्पन्न तो होते हैं परंतु नरक के जीव निकल कर समूर्च्छिम में उत्पन्न नहीं होवे हैं जैसा यह समुच्चय नरक का दंडक कहा ऐसा ही सातों नरक का भी कहदेना जिस में इतना विशेष कि सातवी नरक का निकला मनुष्य में आकर उत्पन्न नहीं होता है अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नरक और देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच और मनुष्य में उत्पन्न होते हैं यदि तिर्यंच में उत्पन्न होते हैं तो क्या एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते

गोयमा! बायर पुढविकाइएसु उववज्जंति नो सुहुम-पुढविकाइएसु उववज्जति॥जइ बायर पुढविकाइएसु उववज्जति किं पज्जत्तग-बायर पुढविकाइएसु उववज्जति अपज्जत्तग बायर पुढविकाइएसु उववज्जति? गोयमा! पज्जत्तएसु उववज्जति, नो अपज्जत्तएसु उववज्जति॥ एवं आउ वणस्सईसुवि भाणियव्व,पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसुय जहा नेरइयाण उव्वट्टणा,सम्मुच्छिम वज्जा तहा भाणियव्वा॥एव जाव थणियकुमारा पुढविकाइयाण भंते! अणंतरं उव्वट्टइत्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जति? किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जति? गोयमा!नो नेरइएसु उववज्जति,तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति,मणुस्सेसु उववज्जंति,नो

हैं कि यावत् पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं परंतु बेन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं तो क्या पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं यावत् वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकाय इन तीनों में उत्पन्न होते हैं परंतु तेउकाय और वायुकाय इन में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि पृथ्वीकाय में उत्पन्न होते हैं तो क्या सूक्ष्म पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं कि बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं? अहो गौतम! बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं परंतु सूक्ष्म

देवेसु उववज्जति ॥ एव जहा एएसिंचेव उववाओ तहा उव्वट्टणावि देववज्जा भाणि-यव्वा ॥ एव आउवणस्सइ बेइदिय तेइदिय चउरिंदियावि एव तेउवाउवि, णवर मणु-स्सवज्जेसु उववज्जति ॥ पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जति? किं नेरइएसु उववज्जति जाव किं देवेसु उववज्जति ? गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जति, जाव देवेसुवि उववज्जति ॥ जइ नेरइएसु उवव-ज्जति किं रयणप्पभा पुढवि नेरइएसुवि उववज्जति जाव अहेसत्तमा पुढवि नेरइएसु

अर्थ पृथ्वीकाया में उत्पन्न नहीं होते हैं यदि बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं तो क्या पर्याप्त बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं कि अपर्याप्त बादर पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पर्याप्त में उत्पन्न होते हैं परतु अपर्याप्त में उत्पन्न नहीं होते हैं जैसा पृथ्वीकाया का कहा तैसा ही अप्कायाका और वनस्पतिकाया का भी कहना यदि तिर्यंच पचेन्द्रिय से व मनुष्य से आकर उत्पन्न होते हैं तो उन का कथन जैसा नरक का कहा तैसा ही कहना जैसा यहां असुरकुमार का कहा तैसा ही यावत् स्थनित कुमार तक दशों ही जाति के भवनपति का कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के जीव अनतर निकलकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया के जीवों नरक में और देवता में उत्पन्न

उववज्जति ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवि नेरइएसुवि उववज्जति जाव अहे सत्तमा पुढवि नेरइएसुवि उववज्जति ॥ जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति किं एगिंदिएसु उववज्जति जाव किं पचिंदिएसु उववज्जति ? गोयमा ! एगिंदिएसुवि उववज्जति जाव पचिंदिएसुवि उववज्जति, एवं जहा एएसिंचेव उववाओ उव्वट्टणावि तहेव भाणियव्वा णवरं असंखेज्ज वासाउएसुवि एते उववज्जति जइ मणुस्सेसु उववज्जति किं समुच्छिम मणुस्सेसु उववज्जति गब्भवक्कतिय मणुस्सेसु उववज्जति, गोयमा! दोसुवि उववज्जति॥

नहीं होते हैं परन्तु तिर्यंच और मनुष्य में उत्पन्न होते हैं यों जिस प्रकार इन में उत्पन्न होने का कथन कहा वैसा ही उद्वर्तन का भी कहना ऐसा ही अपकाया वनस्पतिकाया बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिंद्रिय का कहना और एसा ही तेउकाया तथा वायुकाया का भी कहना परन्तु इस में इतना विशेष कि तेउकाया वायुकाया के निकले मनुष्य में उत्पन्न नहीं होते हैं बाकी सर्व स्थान उत्पन्न होते हैं अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर कहां उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय नरक तिर्यंच मनुष्य और देवता इन चारों गति में उत्पन्न होते हैं यदि नरक में उत्पन्न होवे तो सातों पृथ्वी में उत्पन्न होवे, यदि तिर्यंच में उत्पन्न होवे तो एकेन्द्रिय से यावत् पंचेन्द्रिय पर्यन्त होवे यों जिस प्रकार इन के उपपात

एव जहा उववाओ तहेव उव्वट्टणावि भाणियव्वा, नवर अकम्मभूमिग अतरदीवग असखज्जवासाउएसुवि एए उववज्जतिचि भाणियव्वा ॥ जइ देवेसु उववज्जति किं भवणवईसु उववज्जति जाव किं वेमाणिएसु उववज्जति ? गोयमा ! सव्वसुचेव उववज्जति ॥ जइ भवणवईसु उववज्जति किं असुरकुमारेसु उववज्जति जाव किं थणियकुमारेसु उववज्जति ? गोयमा ! सव्वेसुचेव उववज्जति ॥ एव वाणमतर जोइसिय वेमाणिएसु निरतर उववज्जति, जाव सहस्सारोकप्पोत्ति ॥ मणुस्साण भते ! अणतर

अर्थ

का कहा उस ही प्रकार उद्वर्तन का भी कहना परतु इतना विशेष कि असख्यात वर्षायुवाले मनुष्य तिर्यंच में भी उत्पन्न होते हैं यदि मनुष्य में उत्पन्न होवे तो क्या समूर्च्छिम मनुष्य में उत्पन्न होते हैं कि गर्भज मनुष्य में उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! दोनों में ही उत्पन्न होते हैं यों जिस प्रकार उपपात कहा वैसा ही उद्वर्तन का भी कहना परतु इतना विशेष अकर्मभूमि अन्तरद्वीप असख्यातवर्षायु मनुष्य में तिर्यंच पचेन्द्रिय उत्पन्न होते हैं यदि देवता में उत्पन्न होवे तो भवनपति में उत्पन्न होवे यावत् वैमानिक में भी उत्पन्न होवे यदि भवनपति देवता में उत्पन्न होवे तो असुरकुमार आदि दश ही जाति के देवता में उत्पन्न होते हैं ऐसे ही सब वाणव्यन्तर में सब ज्योतिषी में, और वैमानिक में यावत् आठवे

उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति कहिं उववज्जति किं नेरइएसु उववज्जति, जाव किं देवेसु उववज्जति ? गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जति जाव देवेसुवि उववज्जति ॥ एवं निरंतर सव्वेसु ठाणेसु पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेसु ठाणेसु उववज्जति, ण कहिंवि पडिसेहो· कायव्वा जाव सव्वट्ठसिद्ध देवेसु उववज्जति, अत्थेगइया सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वायति सव्व दुक्खाणमंतकरेति ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिय सोहम्मीसा- णाय जहा असुरकुमारा, णवरं जोइसियाण वेमाणियाणय चयंतिति अभिलावो

सहस्रार देवलोक तक उत्पन्न होवे अहो भगवन् ! मनुष्य मरकर अन्तर रहित कहां उत्पन्न होवे ? अहो गौतम ! नरक तिर्यंच मनुष्य देवता चारों ही गति में उत्पन्न होते हैं सातों ही नरक में दश ही भवनपति देव में, पांचों ही स्थावर में, तीनों विकलेन्द्रिय में, तिर्यंच, मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, और वैमानिक में यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त सर्व स्थान में उत्पन्न होते हैं और कितनेक सर्व कर्म का क्षय कर सिद्ध होते हैं, बुद्ध होते हैं मुक्त होते हैं यावत् सर्व दुःख का अन्त करते हैं वाणव्यन्तर ज्योतिषी और प्रथम दूसरे देवलोक का जैसा असुरकुमार का कहा तैसा कहना जिस में इतना विशेष कि ज्योतिषी को चवने का कहना सनत्कुमार देव का भी असुरकुमार देव जैसा ही कहना परंतु जिस में इतना विशेष

कायव्वो ॥ सणकुमार देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहा असुरकुमारा नवर एगिंदिएसु न उववज्जति ॥ एव जाव सहस्सारगदेवा, आणय जाव अणुत्तरोववाइया एवचेव, णवर णो तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति मणुस्सेसु पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्म-भूमिग गब्भवक्कातिय मणुस्सेसु उववज्जति ॥ ६ ॥ २३ ॥ नेरइयाण भते ! कइया भागावसेसाउया परभविआउय पकरेंति ? गोयमा! नियमा छम्मासा-वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ॥ एव असुरकुमारावि जाव थणियकुमारा ॥

अर्थ — एकेंद्रिय में उत्पन्न नहीं होवे सनत्कुमार के जैसा ही सहस्रार देवलोक पर्यन्त कहना और आणत प्राणत से लगाकर यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त एसा ही कहना परंतु इतना विशेष की वे तिर्यंच योनि में आकर उत्पन्न नहीं होते हैं वे तो मनुष्य पर्याप्त सख्यात वर्षायुवाला कर्मभूमि गर्भज मनुष्य में ही उत्पन्न होते हैं इति छठा द्वार ॥ २३ ॥ परभव आयुष्यबन्ध द्वार अहो भगवन् ! नरक के जीवों कितने भाग आयु बाकी रहता है तब आगे के भव का आयुष्य का बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये नियमा से छ महीने का आयुष्य बाकी रहता है तब आग के आयुष्य का बध करते हैं ऐसे ही असुरकुमार से यावत् स्थनित कुमार पर्यन्त जानना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के जीव कितने भाग आयुष्य

पुढविकाइयाण भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पण्णत्ता ? तंजहा सोवक्कमाउयाय निरुवक्कमाउयाय, तत्थण जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभावियाउय पकरेंति ॥ तत्थण जेते सोवक्कमाउया तेण सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सिय-तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति, सियतिभागतिभागतिभागावसे साउया परभवियाउय पकरेंति ॥ आउतेउवाउ वणस्सइकाइयाण बेइंदिय तेइंदिय

बाकी रहे तब परभव का आयुर्बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया दो प्रकार की कही है उन के नाम—१ सोपक्रमआयुष्यवाले जो उपक्रम से मृत्यु पावे और २ निरुपक्रम जो उपक्रम को प्राप्त न होवे (सात कर तथा भय कर २ क्षुधा से, अति आहार से, ३ शस्त्र से, ४ शूलादि वेदना से, ५ कूपादि में पडने से, ६ सर्पादि विषय से और ७ अतिश्वासोश्वास से जिन का दीर्घ आयुष्य स्वल्प काल में पुरा होवे वह सोपक्रमी, और यह उपक्रम नहीं लगते पूर्ण आयुष्य भोगवे वे निरूपक्रमी जानना) इस में जो निरूपक्रमी आयुष्यवाले हैं वे निश्चय से अपने आयुष्य का तीसरा भाग बाकी रहे परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो सोपक्रमी आयुष्यवाले हैं वे कदाचित तीसरे भाग में भी परभवायुर्बन्ध करते हैं, तीनमी-नववे भाग में आयुष्य बाकी रहे परभवायुर्बन्ध करते हैं, कितनेक-

चउरिंदियाणवि एवंचेव ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा संखिज्ज वासाउयाय असंखेज्जवासा उयाय ॥ तत्थणं जेते असंखेज्जवासाउयातेनियमा छम्मासावसेसाउया परभविआउय पकरेंति तत्थणं जेते संखिज्जवासाउयाते दुविहा पण्णत्ता तंजहा सोवक्कमाउआय निरुवक्कमाउआय तत्थणं जेते निरुवक्कमाउआय तेनियमातिभागावसेसाउया परभावयाउय पकरेंति ॥ तत्थणं जेते सोवक्कमाउया तेणं सियतिभागावसेसाउया परभविआउय पकरेति, सिय तिभागातिभाग

तीन-तीन-तीन सत्ताईसवे भाग में आयुष्य का बन्ध करते हैं कितनेक इक्यासीवे भाग में, कितनेक इक्यासी भी २४३ व भाग में यों यावत् ५ के अन्तमुहूर्त आयुष्य बाकी रहे तब भी परभव का आयुष्य बन्ध करते हैं ऐसे ही अपकाय तेजस्काय वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौरिंद्रिय, सब का पृथ्वीकाय जैसा ही कहना अहो भगवन् ! पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक परभव का आयुष्य का बन्ध कितना आयुष्य रहे करते हैं ? अहो गौतम ! पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक दो प्रकार के कहे हैं उन के नाम १ संख्यात वर्षायुवाले और २ असंख्यात वर्षायुवाले; इन में जो असंख्यात वर्षायुवाले हैं वे निश्चय से छ महीने आयुष्य बाकी रहे तब परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो संख्यात वर्षायुवाले हैं वे दो प्रकार के कहे हैं ? सोपक्रमआयुष्यवाले और २ निरुपक्रम आयुष्य

तिभागातिभागावसेसाउया परभावियाउय पकरेंति, सिय तिभागतिभागतिभागा वसेसाउया परभवियाउय पकरेंति ॥ एवं मणुस्सावि वाणमतर जोइसिय वेमाणिया जहा नेरइया ॥ ७ ॥ २४ ॥ कइविहेण भंते ! आउबंधे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउबंध पण्णत्ते तंजहा जाइणामणिहत्ताउए, गइणामणिहत्ताउए, ठिईनामनिहत्ताउए ओगाहणाणामनिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए अणुभावणामणिहत्ताउए ॥ नेरइयाण भंते ! कइविह आउयबंधे पण्णत्ते ? गोयमा !

वाले इस में जो निरूपक्रम आयुष्य वाले हैं वे निश्चय से अपने आयुष्य का तीसरा भाग बाकी रहे तब परभव का आयुष्य का बन्ध करते हैं और जो सोपक्रमी आयुष्य वाले हैं वे स्यात् तीसरे भाग में स्यात् नवे भाग में स्यात् सत्तावीसवे भाग में स्यात् इक्यासीये भाग में स्यात् दोसे अडतालीसवें भाग में यावत् कितनेक अंतर्मुहूर्त आयुष्य बाकी रहते भी परभव का आयुर्बन्ध करते हैं जैसे तिर्यच पंचेन्द्रिय का कहा तैसे ही मनुष्य का भी जानना और वाणव्यन्तर ज्योतिषि वैमानिक का जैसा नारकी का कहा तैसा कहना अर्थात् छ महिने आयुष्य बाकी रहे तब परभव का आयुर्बन्ध करे इति सप्तम द्वार ॥ २ ॥ आठवा आयुर्बन्ध द्वार अहो भगवन् ! कितने प्रकार का आयुर्बन्ध कहा है ? अहो गौतम ! छ प्रकार का आयुबन्ध कहा है उस का नाम ? जाति नाम निद्धत्तआयु अर्थात् एकेन्द्रियादि पांचों जाति नामकर्म

छव्विहे आउयबधे पण्णत्ते, तजहा जाइणामनिहत्ताउए, गइणामनिहत्ताउए ठिईनाम निहत्ताउए, ओगाहणानामानिहत्ताउए, पएसणामणिहत्ताउए, अणुभाव णामणिहत्ताउए ॥ एव जाव वेमाणियाण ॥ २५ ॥ जीवाण भत ! जाइनामनिहत्ताउय कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णण एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेण अट्ठहिं ॥ नेरइयाण भते ! जाइणामणिहत्ताउय कतिहिं आगरिसेहिं

अर्थ

रूपनिद्धतायु (कर्म पुद्गल की अनुभव रचना) २ गति नाम निद्धतायु सो चारों गति में की गति का आयुर्बन्ध, ३ स्थिति नाम स्थिति बन्ध कर, ४ अवगाहना नाम निद्धतायु अवगाहना (शरीर प्रमान का) बन्ध करे, ५ प्रदेश नाम निद्धतायु सो कर्म के परमाणुओं का बन्ध करे और ६ अनुभाग नाम निद्धतायु वह शुभाशुभकर्मों का विपाक का बंध, परभव का आयुर्बन्ध करना इन छे प्रकृति के साथ बन्ध करता है अब आयुर्बन्ध के आकर्ष कहते हैं आकर्षायु उस कहते हैं कि जो यथाविधि प्रयत्न कर कर्म पुद्गल का ग्रहण करना उसे आकर्षायु कहते हैं [जैसे गाय पानी पीती हुई भय करके वारम्वार ऊर्ध्व मुख करे प्रथम शीघ्रता से पानी पीवे फिर धीरे २ पीवे तैसे जीव भी अति तीव्र आयुर्बन्ध के अध्यवसाय कर जात्यादि नाम निद्धत्तायु का बन्ध करता एक ही अति तीव्र आकर्ष बन्धे, और जो कुछ मंद अध्यवसाय हो तो उसी बन्ध को दो, तीन, चार आकर्ष कर बन्धे, ज्यादा मंद भाव हो तो

पकरेंति ? गोयमा! जहण्णेण एक्केणवा दोहिंवा, तिहिंवा उक्कोसेण अट्ठहिं ॥ एव जाव वेमाणियाण ॥ एव गइनामनिहत्ताउएवि, ठिईनामनिहत्ताउएवि, ओगाहणानाम निहत्ताउएवि, पएसनामनिहत्ताउएवि, अणुभावनामनिहत्ताउएवि ॥ एएसिण भते ! जीवाण जाइनामणिहत्ताउय जहण्णेण एक्कणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेण अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसा-

पांच, छ, सात तथा आठ आकर्ष करे इस से ज्यादा आकर्ष नहीं करे, यहां जात्यादि नाम—कर्म का आयुष्य के साथ बन्ध होवे ही आकर्ष होते हैं परन्तु बाकी के शेष काल में आकर्ष नहीं होते हैं क्यों कि कितनेक कर्म प्रकृति ध्रुव बन्धवाली है और भी सत्ता में विद्यमान भी होती है उस कर बन्ध काल बहुत भी होता है इस लिये आकर्षनियत नहीं है और आयुष्य कर्म तो एक, दो, तीन यावत् उत्कृष्ट आठ आकर्ष करके ही बन्धता है तहां तीव्र अध्यवसाय में आठ आकर्ष करके अन्तर्मुहूर्त काल में बन्ध करे वह निरूपक्रम आयुष्य होता है और उस से कम आकर्ष कर मंद अध्यवसाय से स्वल्प काल में बन्ध होता है वह सोपक्रम आयुष्य होता है] अहो भगवन् ! नरक के जीवों कितने प्रकार आयुर्बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार आयु बन्ध करते हैं—१ पचेन्द्रिय जाति नाम निद्धत्तायु, २ नरक गति नाम निद्धत्तायु, ३ स्थिति (आयुष्य) नाम निद्धत्तायु, ४ अवगाहना नाम निद्धत्तायु, ५ प्रदेश नाम निद्धत्तायु

हिवाया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा जाइणामनिहत्ताउय अट्ठाहिंआगरिसे पकरेमाणा, सत्तहिं आगरिसहिय पकरेमाणा सखिज्जगुणा, छहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा सखिज्जगुणा, पचहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा सखिज्जगुणा, तिहिं साखिज्जगुणा चउहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा सखिज्जगुणा, दोहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा सखिज्जगुणा,

[कर्म के दल । और ६ अनुभाग नाम निद्धत्तायु (कर्मका रस) जैसा नरकका कहा तैसा ही यावत् वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडकका जानना अहो भगवन् ! जीव जाति नाम निद्धतायु कितने आकर्षकर बन्धकरे ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट आठ आकर्ष इस ही प्रकार यावत् वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक कहना और जैसा यह जाति नाम निद्धतायु का कहा तैसा ही गति नाम निद्धतायु का भी, ३ स्थिति नाम निद्धतायु का भी, ४ अवगाहना नाम निद्धतायु का भी, ५ प्रदेश नाम निद्धतायु का भी, और ६ अनुभाग नाम निद्धतायु का भी जानना अहो भगवन् ! यह जीव जाति नाम निद्धतायु का जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट आठ आकर्ष करता हुवा कौनसा थोडा बहुत तुल्य या विशेषाधिक करता है ? अहो गौतम ! सब से थोडे जाति नाम निद्धतायु जानना आठ अकर्ष करता हुवा (मतिमद अध्यवसाय से) उस से सात आकर्ष करता सख्यातगुने, क्यों कि इस में परिणामों की विभ्रता अधिक है, छ अकर्ष करने वाले संख्यात गुने, उस से पांच आकर्ष

एगेण अगरिसेण पगरमाणा सखिज्जगुणा ॥ एव एएण अभिलावेण जाव अणुभाग-
निहत्ताउया ॥ एव एते छप्पि अप्पाबहु दडगा जीवादिया भाणियव्वा ॥ ८ ॥ इति
पण्णवण्णा भगवईए वक्कंतिअपय छट्ठ सम्मत्त ॥ ६ ॥ ० ०

करने वाले सख्यात गुने, उस से चार आकर्ष करने वाले सख्यात गुनें, उस से तीन आकर्ष करने वाले
संख्यात गुने, उस से दो आकर्ष करनेवाले संख्यात गुने, और उस से एक आकर्ष करनेवाले सख्यातगुने
यों इस ही प्रकार इस ही अभिलाप करके यावत् गति स्थिति अवगाहना प्रदेश अनुभाग सब की अल्पा
बहुत चोवीस दंडक में कहना ॥ इति आकर्ष द्वार ॥ इति भगवती पन्नवणा का छठा व्युत्क्रांति
नामक पद समाप्तम् ॥ ६ ॥ ० ० ०

एगेण अगरिसेण पगरमाणा संखिज्जगुणा ॥ एवं एएण अभिलावेण जाव अणुभाग-निहत्ताउया ॥ एवं एते छप्पि अप्पाबहु दंडगा जीवादिया भाणियव्वा ॥ ८ ॥ इति पण्णवण्णा भगवईए वक्कंतिअपय छट्ठं सम्मत्तं ॥ ६ ॥
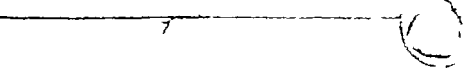
करने वाले संख्यात गुने, उस से चार आकर्ष करने वाले संख्यात गुने, उस से तीन आकर्ष करने वाले संख्यात गुने, उस से दो आकर्ष करनेवाले संख्यात गुने, और, उस से एक आकर्ष करनेवाले संख्यातगुने यों इस ही प्रकार इस ही अभिलाप करके यावत् गति स्थिति अवगाहना प्रदेश अनुभाग सब की अल्पाबहुत्व चौवीस दंडक में कहना ॥ इति आकर्ष द्वार ॥ इति भगवती पन्नवणा का छठा व्युत्क्रांति नामक पद समाप्तम् ॥ ६ ॥

शास्त्रोद्धार प्रारंभ — वीराब्द २४४२

इति
पन्नवणा सूत्र
समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति — वीराब्द २४४६ विजयादशमी

शास्त्रोद्धार कार्यालय का जलसा

(धर्मस्य त्वरिता गति —धर्मकाम जल्दी करो।)

☞ पधारीये । पधारीये ॥ जरूर पधारकर सोभा बढाईये !!!

सं० १९७७ के कार्तिक सुदी ५ सोमवार, ता० १५—११—१९२० बारा बजे से सीकन्द्राबाद स्टेशन रोड पर जैन शास्त्रोद्धार छापखाने के मकान में शास्त्रोद्धार कार्य समाप्ति की सभा होगी।

आज पाच वर्ष से बालब्रह्मचारी पंडित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज ने जैन धर्म के ३२ ही शास्त्रों जो अर्धमागधी भाषा में हैं उन का हिन्दी भाषानुवाद किस परिश्रम से किया है, तथा दानवीर राजाबहादुर लालाजी सुखदेव सहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरी ने रु० ४२००० का सद्व्यय कर सब शास्त्रों किस प्रकार छपवाये हैं, यह बत्तीस

शास्त्रो के भंडार किन २ को और किस प्रकार अमूल्य दिये जावेंगे वह सब इस सभा में बताया जायगा पांचसो गाम की अर्जीयों आइ है सो भी सुनाइ जावेगी शास्त्रोद्धार प्रम के [illegible] दिया जावेगा

विशेष में महाराज श्री का व्याख्यान, सभागणों के भाषण, व रसिक रागों में गायन श्रवण करने का भी महा लाभ प्राप्त होवेगा ऐसा मौका फिर कभी मिलने का नहीं है, इस लिये कार्तिक सुदी ५ सोमवार दो पहर दिन के बारा बजे जैन शास्त्रोद्धार छापाखाने में जरूर पधारीये !

विहार

पूज्यपाद बालब्रह्मचारी पंडित मुनि श्री श्री १००८ श्री अमोलख ऋषिजी वैराग्यश्री श्री रामऋषिजी और तपस्वी श्री उदय ऋषिजी ठा० ३ मृगसर वदी १ वार शुक्र को फजर ७॥ बजे यहां से विहार कर के हैद्राबाद पधारेंगे, और यहां मात्र चार दिन ही रहकर मृगसर वदी ५ मंगलवार

दो विहार कर वाडी होते हुए यादगिरी पधारने के भाव हैं

सघ का सेवक

निहालचन्द गंभीरमल

यह जाहिरात स्थानक का दरोगा लछमैय्या और पचायती सेवक द्वारा हैदराबाद, चारकस, अलवाल, बुलारम, कोरों और सीकदराबाद के सब बजारों में बाट दी

ज्ञान पचमी के दिन छापखाने के मकान का नीचे का कमरा जिस में छपे हुवे ... रखे थे उसे खाली कर जाजम सतरजी लालाजी के फोटो तसवीरों केलेंडर ... से सुशोभित किया गया था सन्मुख ऊच तखत के ऊपर हम तीनों साधु बैठे, ... बारा बजे के अदाज में श्रावक श्राविकाओं के झुड मोटर, बग्गी, तागे, झटके में ... व पैदल आने लगे दो सो तीन सो बाइयों भाइयों से कमरा चिकार भरा गया सर्व लोगों आनन्द हुलसित बने

प्रथम मैने व्याख्यान सुरु किया —

श्लोक—मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तार कर्मभूभृताम्। ज्ञातार विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धय ॥

प्रथम इष्टितार्थ की सिद्धी के लिये मोक्षमार्ग के नेता, कर्मों के विदारनेवाले और विश्व तत्त्व के जानने वाले जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार कर आज ज्ञान पचमी और ज्ञान का महात्म्य दर्शानेवाली शास्त्रोद्धार की अन्तिम सभा होने से कुछ ज्ञान की महिमा कहताहू

श्लोक—आहार निद्रा भय मैथुनानि, तुल्यानि मार्थ पशुभिर्नराणाम्।
ज्ञान विशेषो खलु मानुषाणाम् ज्ञानेन हीना पशुभिःसमाना ॥
चाणक्यनीति ॥

जिस में गमन करे उसे गति कहते हैं, ऐसी चार गति हैं तद्यथा—१ नरक, २ तिर्यच, ३ मनुष्य और ४ देव, इस में से नरक अधो लोक में और स्वर्ग ऊर्ध्व लोक में हैं इस मध्यलोक में मनुष्य और तिर्यच दो हैं जिस में मनुष्य उत्तम और तिर्यच अधम गिने जाते हैं इस का जो कारण है सो उक्त चाणक्य नीति के श्लोक में

को विहार कर यादी होते हुए यादगिरी पधारने के माघ में

सघ का सेवक

निहालचन्द गंभीरमल

यह जाहिरात स्थानक का दरोगा लछमैय्या और पचायती सेवक द्वारा हैदराबाद, कोठी, बारकस, अलवाल, बुलारम, कोरों और सिकदराबाद के सब बजारों में बाट दी

ज्ञान पचमी के दिन छापखाने के मकान का नीचे का कमरा जिस में छपे हुवे शास्त्रों रखे थे उसे खाली कर जाजम सतरजी लालाजी के फोटो तसवीरों केलेंडर वगैरा से सुशोभित किया गया था सन्मुख ऊंचे तखत के ऊपर हम तीनों साधु बैठे, साडी चारा बजे के अदाज में श्रावक श्राविकाओं के झुड मोटर, बग्गी, तागे, झटके में व पैदल आने लगे दो सो तीन सो बाइयों भाइयों से कमरा चिकार भरा गया सर्व लोगों आनन्द हुलसित थे

उक्त कथन से निश्चय हुआ होगा कि—ज्ञान या विद्या का धारक होना यही मनुष्यत्व का मुख्य कर्त्तव्य है ज्ञान की धातु 'ज्ञ' जिस का अर्थ जानना और विद्या कि धातु विद् जिस का अर्थ प्रकाशना होता है अर्थात् जिस के हृदय में जान पने रुप प्रकाश हुआ है उसे ही ज्ञानवान या विद्यावान कहा जाता है ज्ञान दो प्रकार के कह है तद्यथा—१ सम्यग् ज्ञान और २ मिथ्या ज्ञान, इस में मिथ्या ज्ञान तो आत्मा क अनादि सानिध्य है परन्तु सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति होना दुर्लभ है कवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक अर्हन्त जिनेश्वर प्रणित जो शास्त्रों हैं उन से प्राप्त होता ज्ञान ही सम्यग् ज्ञान कहाता है

इस पंचम काल में तीर्थंकर केवलज्ञानी, मन पर्यव, अवधि ज्ञानी व पूर्व धारीयों रूप सूर्य का अभाव होने से घोर अन्धकार छा गया है जिस में दीपक समान प्रकाश के करने वाले मात्र तीर्थंकर प्रणित शास्त्र ही रहे हैं

श्री महावीर स्वामीजी के गौतमादि गणधरो ने १४००० शास्त्रों की रचना की

प्रदर्शित कर दिया गया है अर्थात् आहार करना, निद्रा लेना भय भीत होना और उपभोग परिभोग (मैथुन) का सेवन करना यह मनुष्य और तिर्यंच के समान हैं,
।न का ही है तिर्यंच पशु में प्राय वाचा शक्ति की न्यूनता
ग सकते हैं फक्त अपने शरीर रक्षणार्थ उदर पोषणादि के
मज्ञा उन में है और मनुष्य वाचा शक्ति सम्पन्न होने से
। । ६ ।उ ८ ८।रा इस लोक में सुखोपजीवी बन परलोक का भी सुख
साधन कर सकते हैं इस लिये मनुष्यत्व में ज्ञान का ही विशेषत्व है न कि अवयवोंका जो कर्ण चक्षु हस्त पादादि अवयव के धारक ही मनुष्य कहा जाता हो तो मनुष्य सामान अवयव मरकट बंदर के भी होते हैं विशेष में पूछ उसे होती है तो क्या वह मनुष्य कहा जायगा ? नहीं कदापि नहीं मनुष्य समान इन्द्रियों का धारक हो कर भी वह पशु कहलाता है इस का मुख्य कारण अज्ञानता का ही है इस लिये भर्तृहरीने भी कहा है कि– विधानाम नरस्य रूपमधिक ' अर्थात् विद्याही मनुष्य के रूप का विशेष चिन्ह है और ' विद्या विहीन पशु ' अर्थात् विद्या रहित मनुष्य पशु तुल्य है ?

उक्त कथन से निश्चय हुआ होगा कि—ज्ञान या विद्या का धारक होना यही मनुष्यत्व का मुख्य कर्तव्य है ज्ञान की धातु ' ज्ञ ' जिस का अर्थ जानना और विद्या कि धातु विद् जिस का अर्थ प्रकाशना होता है अर्थात् जिस के हृदय में जान पने रुप प्रकाश हुआ है उसे ही ज्ञानवान या विद्यावान कहा जाता है ज्ञान दो प्रकार के कह है तद्यथा—१ सम्यग् ज्ञान और २ मिथ्या ज्ञान, इस में मिथ्या ज्ञान तो आत्मा क अनादि सानिध्य है परन्तु सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति होना दुर्लभ है केवल ज्ञान केवल दर्शन के धारक अर्हन्त जिनेश्वर प्रणित जो शास्त्रों हैं उन से प्राप्त होता ज्ञान ही सम्यग् ज्ञान कहाता है

इस पंचम काल में तीर्थंकर केवलज्ञानी, मन पर्यव, अवधि ज्ञानी व पूर्व धारीयों रूप सूर्य का अभाव होने से घोर अन्धकार छा गया है जिस में दीपक समान प्रकाश के करने वाले मात्र तीर्थंकर प्रणित शास्त्र ही रहे हैं

श्री महावीर स्वामीजी के गौतमादि गणधरो ने १४००० शास्त्रों की रचना की

साकाहार मीमांसा

प्रदर्शित कर दिया गया है अर्थात् आहार करना, निद्रा लेना भय भीत होना और
उपभोग परिभोग (मैथुन) का सेवन करना यह मनुष्य और तिर्यंच के समान हैं,
...न का ही है तिर्यंच पशु में प्राय वाचा शक्ति की न्यूनता
...र सकते हैं फक्त अपने शरीर रक्षणार्थ उदर पोषणादि के
...मझा उन में है और मनुष्य वाचा शक्ति सम्पन्न होने से
... इस लोक में सुखोपजीवी बन परलोक का भी सुख
साधन कर सकते हैं इस लिये मनुष्यत्व में ज्ञान का ही विशेषत्व है न कि अवयवोंका
जो कर्ण चक्षु हस्त पादादि अवयव के धारक ही मनुष्य कहा जाता हो तो मनुष्य
सामान अवयव मरकट बंदर के भी होते हैं विशेष में पूछ उसे होती है तो क्या वह महा
मनुष्य कहा जायगा ? नहीं कदापि नहीं मनुष्य समान इन्द्रियों का धारक हो कर भी
वह पशु कहलाता है इस का मुख्य कारण अज्ञानता का ही है इस लिये भर्तृहरीने
भी कहा है कि– विद्यानाम नरस्य रूपमधिक' अर्थात् विद्याही मनुष्य के रूप का
विशेष चिन्ह है और विद्या विहीन पशु' अर्थात् विद्या रहित मनुष्य पशु तुल्य है ?

पास कराने लगे शिष्यों की प्रमाद दशा में शास्त्री लीपि के ज्ञाता ब्राह्मणादि लहियों को नोकर रख उन के पास कराने लगे अज्ञ लोगों फक्त उदर पूर्णार्थ काम करते हैं उनोने कापि टू कापि उतारते हुवे शास्त्रों में बडा ही घोटाला कर दिया है ;इस वक्त भी शास्त्रोद्धार की पूर्ण आवश्यकता जान और हैद्राबाद के ज्ञान वृद्धिखाते से हजारों अमूल्य पुस्तकों प्रसिद्ध होती देख बहुत से मुनि महात्माओं की तरफ से हिन्दी भाषानुवाद युक्त शास्त्रों प्रसिद्धी में रखने की सूचना हुइ, परतु शास्त्रों प्रसिद्धी रखने का काम महा जोखम दारी का जान हिम्मत हुई नहीं तपस्वीराज श्री केवल ऋषिजी महाराज देवलोक पधारे बाद जो मुक्ति सोपान पुस्तक छपाइ थी उस का काम दीपमालिका तक पूर्ण हो जाय इस विचारने शास्त्रोद्धार की कल्पना उत्पन्न की, बत्तीस ही शास्त्रों के कितने फारम होंगे इस का मनोमय हिसाब लगाते १००० १२०० फारम का अदाज आया, जिस का खरच १५००० का अदाज हुवा यह कथन अनायास लालाजी के आगे कहा और जब सीकद्राबाद का चौमासा पूर्ण होते हमारे विहार का अवसर नजीक आया तब मानो हमार को रोकने के लिये ही लाला सुखदेवसहायजीने बारा महिने की बात का स्मरण करा कहा कि-' जो आप के हाथ से सब शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद लिख

थी और उस वक्त बुद्धि की प्रबलता के कारण से थे सब साधुओं के कठस्थ थे पश्चात काल के प्रभाव बुद्धि की मदता होने से शास्त्र विस्मरण होने लगा तब वीरनिर्वाणत् ९६७ वर्ष बाद बल्लभी नगरीमें जैनाचार्योंने महासभा कर शास्त्रोंको पुस्तकारुढ किये १२ वर्ष में शिर्फ ७२ शास्त्रों का लेख हुआ, जिन के नाम नन्दी सूत्र में उपस्थित हैं नन्तर महादुष्काल प्राप्त होने से शास्त्रों भडार में स्थापन किये गये वीर निर्वाण के २००० वर्ष बाद अहमदाबाद के भडार के शास्त्र निकाले जिस में से शीर्फ ३२ अखण्ड निकले बाकी के कितनेक पूरे और कितने अर्धदग्ध दीमक (रुणी) जन्तु के उपभोगी बनगये उन बत्तीस का पुनरोद्धार अर्ध मागधी भाषा के अच्छे ज्ञाता और लेख कार्य में प्रवीन श्री लोंकाजी श्रावक के हाथ से हुआ

यहा तक शास्त्रों शीर्फ मूल मात्र लिखे हुअे थे आगे मागधी भाषा का लोप हो गया तब देशी भाषा में उस का टबार्थ पार्श्वचन्द्र सूरीने तथा धर्मसिंह अनगारने बना पुनरोद्धार किया वह टबार्थ अपभ्रंश गुजराती भाषा में लिखा गया नन्तर जिस का उपारा कितनेक काल तक विद्वान आचार्यों ने किया फिर वे प्रमादी बन अपने शिष्यों

पास कराने लगे शिष्यो की प्रमाद दशा में शास्त्री लीपि के ज्ञाता ब्राह्मणादि लहियों को नोकर रख उन के पास कराने लगे अज्ञ लोगों फक्त उदर पूर्णार्थ काम करते हैं उनोने कापि टू कापि उतारते हुवे शास्त्रों में बडा ही घोटाला कर दिया है ;इस वक्त भी शास्त्रोद्धार की पूर्ण आवश्यकता जान और हैद्राबाद के ज्ञान वृद्धिखाते से हजारों अमूल्य पुस्तकों प्रसिद्ध होती देख बहुत से मुनि महात्माओं की तरफ से हिन्दी भाषानुवाद युक्त शास्त्रों प्रसिद्धी में रखने की सूचना हुइ, परतु शास्त्रों प्रसिद्धी रखने का काम महा जोखम होने का जान हिम्मत हुई नहीं तपस्वीराज श्री केवल ऋषिजी महाराज देवलोक पधारे बाद जो मुक्ति सोपान पुस्तक छपाइ थी उस का काम दीपमालिका तक पूर्ण हो जाय इस विचारने शास्त्रोद्धार की कल्पना उत्पन्न की, बत्तीस ही शास्त्रों के कितने फारम होंगे इस का मनोमय हिसाब लगाते १००० १२०० फारम का अदाज आया, जिस का खरच १५००० का अदाज हुवा यह कथन अनायास लालाजी के आगे कहा और जब सीकद्राबाद का चौमासा पूर्ण होते हमारे विहार का अवसर नजीक आया तब मानो हमार को रोकने के लिये ही लाला सुखदेवसहायजीने बारा महिने की बात का स्मरण करा कहा कि-' जो आप के हाथ से सब शास्त्रों का हिंदी भाषानुवाद लिख

धी और उस वक्त बुद्धि की प्रबलता के कारण से वे सब साधुओं के कठस्थ थे पश्चात काल के प्रभाव बुद्धि की मदता होने से शास्त्र विस्मरण होने लगा तब वीरनिर्वाणत् ९८० वर्ष बाद वल्लभी नगरीमें जैनाचार्योंने महासभा कर शास्त्रोंको पुस्तकारुढ किये १२ वर्ष में शिर्फ ७२ शास्त्रों का लेख हुआ, जिन के नाम नन्दी सूत्र में उपस्थित हैं नन्तर महादुष्काल प्राप्त होने से शास्त्रों भंडार में स्थापन किये गये वीर निर्वाण के २००० वर्ष बाद अहमदाबाद के भंडार के शास्त्र निकाले जिस में से शीर्फ ३२ अखण्ड निकले बाकी के कितनेक पूरे और कितने अर्धदग्ध दीमक (रुणी) जन्तु के उपभोगी बनगये उन बत्तीस का पुनरोद्धार अर्ध मागधी भाषा के अच्छे ज्ञाता और लेख कार्य में प्रवीन श्री लोंकाजी श्रावक के हाथ से हुआ

यहा तक शास्त्रों शीर्फ मूल मात्र लिखे हुअे थे आगे मागधी भाषा का लोप हो गया तब देशी भाषा में उस का टब्बार्थ पार्श्वचन्द्र सूरीने तथा धर्मसिंह अनगारने बना पुनरोद्धार किया वह टबार्थ अपभ्रंश गुजराती भाषा में लिखा गया नन्तर जिस का उसारा कितनेक काल तक विद्वान आचार्यों ने किया फिर वे प्रमादी बन अपने शिष्यों

वे आपको बताते हुवे आज मुझे बड़ा ही हर्षानन्द उत्पन्न होता है, यह महा प्रताप बाल ब्रह्मचारी पंडित मुनिराज श्री अमोलक ऋषिजी महाराज का और जैन स्थम्भ दान वीर राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी का ही है

सवैया—आनन्द आज अति मन हुलसत । मेरी शास्त्रोद्धार समाये ॥
पांच वर्ष परिश्रम का फल । आज सज्जनो सन्मुख आये ॥
शास्त्र बत्तीसो रखे प्रसिद्ध ये । इच्छित कार्य सिद्ध भयाये ॥
प्रताप सब मुनिराज लालाजीका । हर्षित मणि दर्शाय रहाये ॥

जब से शास्त्रोद्धार कार्य सुरु किया तब से ही कार्य निर्विघ्नता से और शीघ्रता से समाप्ति करने के आशय से सदैव एक भक्त भोजन नियम धारन किया उसे आज तक पाल रहे हैं प्रात के छ बजे से श्याम के छ बजे तक शरीर कारण और संयम कार्य का समय छोड बाकी सब समय लेखन पठन मिलान मनन वगैरा शास्त्रों को शुद्ध सरल और अच्छे बनाने में ही लगाया जिस वक्त प्रथम प्लेग की बिमारी चली उस वक्त महाराज श्री के मन उपरान्त श्रावकों के आग्रह से लालाजी का दूसरा

दने की कृपा करो तो उस को प्रसिद्धी में रखने का रु० १५००० का खरच से प्रसिद्ध कर उसका लाभ लेनेकी मेरी इच्छा है' लालाजीके इस वचनने जादू की माफक मेरे हृदय में असर किया और गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज की आज्ञा व परमाशिर्वाद से यह काम किस प्रकार आज समाप्त हुवा है जिस का अहवाल माणिलाल भाई दर्शाते हैं सो दत्त चित्त से श्रवण कीजिये ? इस के बाद माणि० लजी खडे हो सब साधुओं को नमस्कार कर सब सभा को प्राणिपत कर कहने लगे कि—

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिता सिद्धाश्च सिद्धी स्थिता। आचार्या जिनशासनो न्नतिकराः पूज्या उपाध्यायका॥
श्रीसिद्धान्त सु पाठका मुनिवरा रत्न त्रयाः राधका। पंचैते परमेष्ठिनाप्र त्यहंदिन कुर्वंतु वो मंगलं॥

अहो सभासदो आज पांच वर्ष के पहिले आज ही के दिन अर्थात् कार्तिक सुदी पंचमी ज्ञान पंचमी के दिन आप लोगों की सभा के समक्ष महाराज श्री के कर कमल से और लालाजी की परमउदारता से कार्य क्षेत्र में शास्त्रोद्धार का बीजारोप किया गया था उस का परिश्रम रूप जल सींचन से हरा भरा फला फूला वृक्ष बन जो फल लगे हैं

वे आपको बताते हुवे आज मुझे बडा ही हर्षानन्द उत्पन्न होता है यह महा प्रताप बाल ब्रह्मचारी पंडित मुनिराज श्री अमोलक ऋषिजी महाराज का और जैन स्थम्भ दान वीर राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी का ही है

सवैया—आनन्द आज अति मन हुलसत। ऐसी शास्त्रोद्धार समाये॥
पांच वर्ष परिश्रम का फल। आज सज्जनो सन्मुख आये॥
शास्त्र बत्तीसो रसे प्रसिद्ध ये। इच्छित कार्य सिद्ध भयाये॥
प्रताप सब मुनिराज लालाजीका। हर्षित मणि दर्शाय रहाये॥

जब से शास्त्रोद्धार कार्य सुरु किया तब से ही कार्य निर्विघ्नता से और शीघ्रता से समाप्ति करने के आशय से सदैव एक भक्त भोजन नियम धारन किया उसे आज तक पाल रहे हैं प्रात के छ बजे से श्याम के छ बजे तक शरीर कारण और संयम कार्य का समय छोड बाकी सब समय लेखन पठन मिलान मनन वगैरा शास्त्रों का शुद्ध सरल और अच्छे बनाने में ही लगाया जिस वक्त प्रथम प्लेग की बिमारी चली उस वक्त महाराज श्री के मन उपरान्त श्रावकों के अत्याग्रह से लालाजी का दूसरा

श्यामसुदर नामक बाग में रहे यहा पाचों साधुओं मलेरीया बुखार से पीडित हुवे तब सब साधुओं की समाल, दूर से आहार औषध का सयोग मिलाना वगैरा कार्य करते २ जब २ फुरसत मिलती तब २ भगवती सूत्र का भाषान्तर करने में ही लग जाते यों इस पुस्तक के दूसरे विभाग में लिखित कितनेक बनावो का दिग्दर्शन कराया और महाराज श्री के गुणानुवाद का सवैया सुनाया,

सवैया या बाम्यन्तरबाद् । ल सीजिनमगबुद्ध ॥
ब्र तपवे महापाल । स दर्दीगुनी है ॥
चा रिम ने ज्ञानरंत । री तिनीती मकाबत॥
श्री भाशोद्धार काम । अ त्युत्तम गुनी है ॥
मो क्षपथ दर्शावत । ल सीजन हर्षावत ॥
क शोमे बखानुगुन । ऋ जुतादि पनी है॥
पि तमित हित चित । जी चित सफलाखत॥
बाल ब्रह्मचारी ऋषि अमोलक मुनि है ॥ १ ॥

फिर कहा कि—इस शास्त्रोद्धार कार्य कराने के ऊपर लालाजी सुखदेवसहायजी का कितना जबर प्रेम था कि वह सम्पूर्णतया दर्शाने में असमर्थ हू, लाला साहेब को देखने-वाले खुदही जानते हैं फिर इस ही मीमासा के तीसरे प्रकरण में छपे हुवे लालाजी के गुणों का दिग्दर्शन कराया था लालाजी के गुणानुवाद का भी सवैया सुनाया

सवैया रा षे जिन धर्ममांही । जा षे चिंतामणी साही ॥
म हुष धर्मंग धर । हा मी सष पूरिया ॥
दू रित हरण कर्म । र च्यो शास्त्रोद्धारा श्रम ॥
ला खों द्रव्य खर्च कर। ला म लिया सूरिया ॥
सु खी किये बहु प्राणी। स्व री भक्ति भाव ठाणी॥
दे वगुरु धर्म तणी । ब रभक्ति पूरिया ॥
स हायक श्रायक गुणी। हा भर सुखदेवसहाय ॥
य थपि स्वरगवास । जी वन इनूरीया ॥

फिर कहा कि-इस वक्त जो उक्त लालाजी साहेब हाजर होते तो उन के और

श्यामसुदर नामक बाग में रहे वहा पाचों साधुओं मलेरीया बुखार से पीडित हुवे तब सब साधुओं की समाल, दूर से आहार औषध का सयोग मिलाना वगैरा कार्य करते २ जब २ फुरसत मिलती तब २ भगवती सूत्र का भाषान्तर करने में ही लग जाते थे। इस पुस्तक के दूसरे विभाग में लिखित कितनेक बनावो का दिग्दर्शन कराया और महाराज श्री के गुणानुवाद का सवैया सुनाया,

सवैया बा बाभ्यन्तरवाद | ल स्रीजिनमगबुद्ध ॥
ब्र तपर्ष महापाल | क्ष दर्दागुनी है ॥
चा रिब ने ब्रानरंत | री तिनीथी प्रकाशत॥
श्री शास्त्रोद्धार काम | अ त्युत्तम युनी है ॥
मो क्षपथ दर्शावत | ल खीजन हर्षावत ॥
क हंको बसानुगुन | ऋ जुवादि पनी है ॥
पि तमित हिव मित्र | जी मित सफलासत॥
बाल ब्रह्मचारी ऋषि अमोलक मुनि है ॥ १ ॥

नहीं है यद्यपि मैं इन का नोकार हू तथापि आज तक मेरे साथ में सहोदर भ्रात से भी अधिक प्रेम भाव से वर्ताव कर रहैं रु० १५०० का प्रस और रु० ६०० का सुवर्ण हार व सुवर्ण पदक मुझे इनाम में दिया है इस सिवाय अन्य कर्मचारीयों को भी रु० ५०० के सुवर्ण के दागीने व चांदी के पाद इनाम में दिये हैं शीर्फ ५ वर्ष के काम में रु० २६०० का इनाम नोकरों के लिये देकर छोटे लालाजी साहेबने हमारे बडे लालाजी का वियोग का दु ख विस्मरण कर दिया हमारे भाव तो मानो बडे लाला साहेब ही यहा आकर विराजमान हो गये हैं

सभा गणों ! मैंने इस प्रकार लालाजी साहेब की जो प्रशसा की है सो करना उचित ही हैं क्यों कि मैं इन का नोकर हू और इन के ही प्रसाद से शास्त्र ज्ञान की प्राप्ति का तथा शास्त्र उद्धार की सेवा का महा लाभ प्राप्त कर सका हू तैसे ही व्यवहार में भी प्रेस का व द्रव्य का साधन जिंदगी के सुख के लिये अच्छा प्राप्त कर सका हू, तथापि मैं कहता हू कि मैंने जो जो लालाजी के गुणगान किये हैं वे बिलकुल ही खुशामदियेपने से अत्युक्ति लगाकर नहीं किये हैं जैसे गुन बडे लालाजी में थे और छोटे लालाजी में विद्यमान देखे जाते हैं वैसे ही प्रगट किये हैं मैं निश्चयात्मक हो कहता हू कि—

अपने दिल का अपूर्व आनन्द का अवसर प्राप्त होता परन्तु इस बात का कोई उपाय नहीं है, जिस प्रकार बडे लालाजी साहेब गुणवन्त धर्म प्रेमी दानवीरादि गुन के धारक थे उस ही प्रकार यह छोटे लाला साहेब भी गुणवन्त दानवीरादि गुण कर युक्त हैं इन लालाजी साहेब के उदारतादि गुणों ज्यों २ प्रकाश में आते जाते हैं त्यों २ हमे बडाही हर्षानन्द होता है कि बडे लाला साहेब की तरह ये ही जैन स्थम्भ दानादि गुण कर अखण्ड कीर्ती प्राप्त करेंगे इस वक्त भी लालाजी ज्वालाप्रसादजी के गुणानुवाद का सवैया सुनाया

सवैया ला यक सर्व हो शुभ गुणोंपम । त्ला म लिया धर्म ज्ञान उजमाला ॥
ज्वा लित तेज प्रताप सदा रहो। ला सों ही लाभ लहो सुविशाला ॥
प्र गट पुण्य प्रताप विराजत । शा स्रोद्धार किया ज्ञान उजाला ॥
द क्ष सुलक्ष समस्त ही शोभे । जी धन धन्य ज्वालाप्रसादजी लाला॥

छोटे लालाजी इतने श्रीमान धीमान गुणवान होकर भी किंचित मात्र अभिमानी

नहीं है यद्यपि मैं इन का नोकार हू तथापि आज तक मेरे साथ में सहोदर भ्रात से भी अधिक प्रेम भाव से वर्ताव कर रहैं रु० १५०० का प्रेस और रु० ६०० का सुवर्ण हार व सुवर्ण पदक मुझे इनाम में दिया है इस सिवाय अन्य कर्मचारीयों को भी रु० ५०० के सुवर्ण क दागीने व चादी के चाद इनाम में दिये हैं शीर्फ ५ वर्ष के काम में रु० २६०० का इनाम नोकरों के लिये देकर छोटे लालाजी साहेबने हमारे बडे लालाजी का वियोग का दु ख विस्मरण कर दिया हमारे भाव तो मानो बडे लाला साहेब ही यहा आकर विराजमान हो गये हैं

सभा गणों ! मैंने इस प्रकार लालाजी साहेब की जो प्रशसा की है सो करना उचित ही है क्यों कि मैं इन का नोकर हू और इन के ही प्रसाद से शास्त्र ज्ञान की प्राप्ति का तथा शास्त्र उद्धार की सेवा का महा लाभ प्राप्त कर सका हू तैसे ही व्यवहार में भी प्रेस का व द्रव्य का साधन जिंदगी के सुख के लिये अच्छा प्राप्त कर सका हू, तथापि मैं कहता हू कि मैंने जो जो लालाजी के गुणगान किये हैं वे बिलकुल ही खुशामदियेपने से अत्युक्ति लगाकर नहीं किये हैं जैसे गुन बडे लालाजी में थे और छोटे लालाजी में विद्यमान देखे जाते हैं वैसे ही प्रगट किये हैं मैं निश्चयात्मक हो कहता हू कि—

अपने दिल का अपूर्व आनन्द का अवसर प्राप्त होता परन्तु इस बात का कोई उपाय नहीं है, जिस प्रकार बड़े लालाजी साहेब गुणवन्त धर्म प्रेमी दानवीरादि गुन के धारक थे उस ही प्रकार यह छोटे लाला साहेब भी गुणवन्त दानवीरादि गुण कर युक्त हैं इन लालाजी साहेब के उदारतादि गुणों ज्यों २ प्रकाश में आते जाते हैं त्यों २ हमे बड़ाही हर्षानन्द होता है कि बड़े लाला साहेब की तरह ये ही जैन स्थम्भ दानादि गुण कर अखण्ड कीर्ति प्राप्त करेंगे इस वक्त भी लालाजी ज्वालाप्रसादजी के गुणानुवाद का सवैया सुनाया

सवैया—ला पक सर्व हो शुभ गुणोंपम । ला भ लिया धर्म ज्ञान उजमाला ॥
ज्वा लित तेज प्रताप सदा रहो। ला खों ही लाभ लहो सुविशाला ॥
प्र गट पुण्य प्रताप विराजत । शा स्रोद्धार किया ज्ञान उजाला ॥
द स सुलक्ष समक्ष ही सोभे । जी धन धन्य ज्वालाप्रसादजी लाला॥

छोटे लालाजी इतने श्रीमान धीमान गुणवान होकर भी किंचित मात्र अभिमानी

गये) यह प्रथम आचारांग शास्त्र है, देखिये ! इस का टाइटल तीन रंग का छपा हुवा इस प्रकार मनोहर बनाया गया है फिर अंदर रहे दोनों लालाजी के फोटो बताये, फिर चारों पेजों जो दो रंग में छपे हैं वे सम्पूर्ण सुनाये, फिर आचारांग की प्रस्तावना सम्पूर्ण सुनायी और फिर आचारांग के एक दो सूत्र शब्दार्थ भावार्थ सुनाकर पुछा कि- भावार्थ में आप सब समझ गये ? लोगों बोले हां तब मणिलालजी बोले ऐसा ही सब शास्त्रों का अर्थ बालबोध पढे हुवे अल्पज्ञों के भी सरलता से समझ में आजावे तैसा बनाया गया है इस में साधु के आचार गोचार का कथन है और अन्त में श्री महावीर स्वामी का जीवन चरित्र है यह दूसरा सुयगडांग सूत्र है इस में मत मतान्तरों का निराकरण किया गया है यह तीसरा स्थानांग सूत्र है इस में एकेक बोल से दश दश बोल तक का कथन है इस की चौभंगायों बहुत ही खूबीदार है यह चौथा समवायांग सूत्र है इस में एक बोल से क्रोड क्रोड बालों का कथन है यह पांचवा सब से बडा ज्ञान का सागर भगवतीजी सूत्र है इस में गौतम स्वामी के ३६००० प्रश्नो वगैरे है इस में गंगेया अनगार आदि के भांगे बडे गहन हैं वे सरलता से समज में आजावे तथा मन चाहे भांगे बना सके ऐसा एक यत्न भी दिया गया है यह छट्ठा ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र है, इस

महाराज श्री अमोलक ऋषिजी जैसे, लालाजी जैसे दृढ प्रतिज्ञी अचल वचनी हिम्मतबहादुर साहसिकपना वगैरह गुन के धारक साधु और श्रावक मेरी तीन वर्ष की उपदेशक तरीके की मुसाफरी में कोई भी देखने में व सुनने में भी नहीं आया आप इतने सभागणों में से भी कोई ऐसा एक हाथ से शीर्फ तीन वर्ष में बत्तीस शास्त्रों का लिखने वाला साधु और बत्तीस ही शास्त्रों को प्रसिद्धी में रख १००० प्रतों का अमूल्य दान देनेवाला श्रावक रत्न इन सिवाय किसी का बता सकोगे क्या? 'नहीं' भर्तृहरीने कहा है कि—

श्लोक—निन्दतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवतु । लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ॥
अद्यैव मरण मस्तु युगांतरे वा । न्यायात्पथः प्रविचलतिपदं न धीरा ॥

अर्थ—कोइ निंदा करो या स्तुति करो, लक्ष्मी प्राप्त हो या आज ही चली जावो, मृत्यु युगान्तर में आवो या आज ही आ जावा परतु सत्पुरुषों नीति पथ उल्लघन कर एक पद मात्र नहीं रखते हैं यह गुनों इन महा पुरुषों प्रत्यक्ष दृष्टीगत होते हैं!

उक्त प्रकार कार्याधिकारीयों के गुण दर्शाये बाद अब मैं अपना कार्य बताता हू, (शास्त्रों के ढगले में से आचारागादि शास्त्र को उठाकर बताते गये और फोरमैन व्यवस्थापी उन शास्त्रों को 'अमूल्य लाला जैन शास्त्र भडार' की सदूक में जमाते

गये) यह प्रथम आचारांग शास्त्र है, देखिये ! इस का टाइटल तीन रंग का छपा हुवा इस प्रकार मनोहर बनाया गया है फिर अंदर रहे दोनों लालाजी के फोटो बताये, फिर चारों पेजों जो दो रंग में छपे हैं वे सम्पूर्ण सुनाये, फिर आचारांग की प्रस्तावना सम्पूर्ण सुनायी और फिर आचारांग के एक दो सूत्र शब्दार्थ भावार्थ सुनाकर पूछा कि- भावार्थ में आप सब समझ गये ? लोगों बोले-हां तब मणिलालजी बोले ऐसा ही सब शास्त्रों का अर्थ बालबोध पढे हुवे अल्पज्ञों के भी सरलता से समझ में आजावे तैसा बनाया गया है इस में साधु के आचार गोचार का कथन है और अन्त में श्री महावीर स्वामी का जीवन चरित्र है यह दूसरा सुयगडांग सूत्र है इस में मत मतान्तरों का निराकरण किया गया है यह तीसरा स्थानांग सूत्र है इस में एकेक बोल से दश दश बोल तक का कथन है इस की चौभंगीयों बहुत ही खूबीदार है यह चौथा समवायांग सूत्र है इस में एक बोल से क्रोड क्रोड बोलों का कथन है यह पांचवा सब से बडा ज्ञान का सागर भगवतीजी सूत्र है, इस में गौतम स्वामी के ३६००० प्रश्नो वगैरे है इस में गांगेया अनगार आदि के भांगे बडे गहन हैं वे सरलता से समज में आजावे तथा मन चाहे भांगे बना सके ऐसा एक यंत्र भी दिया गया है यह छठ्ठा ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र है, इस

महाराज श्री अमोलक ऋषिजी जैसे, लालाजी जैसे दृढ प्रतिज्ञी अचल वचनी हिम्मतबहादुर साहसिकपना वगैरह गुन के धारक साधु और श्रावक मेरी तीन वर्ष की उपदेशक तरीके की मुसाफरी में कोई भी देखने में व सुनने में भी नहीं आया और इतने सभागणों में से भी कोई ऐसा एक हाथ से शीर्फ तीन वर्ष में बत्तीस शास्त्रों का लिखने वाला साधु और बत्तीस ही शास्त्रों को प्रसिद्धी में रख १००० प्रतों का अमूल्य दान देनेवाला श्रावक रत्न इन सिवाय किसी का बता सकोगे क्या? 'नहीं' भर्तृहरीने कहा है कि—

श्लोक—निन्दंतु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवतु । लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ॥
अद्यैव मरण मस्तु युगांतरे वा । न्यायात्पथः प्रविचलंतिपदं न धीरा ॥

अर्थ—कोइ निंदा करो या स्तुति करो, लक्ष्मी प्राप्त हो या आज ही चली जावो, मृत्यु युगान्तर में आवो या आज ही आ जावो परतु सत्पुरुषों नीति पथ उल्लंघन कर एक पद मात्र नहीं रखते हैं यह गुनों इन महा पुरुषों प्रत्यक्ष दृष्टीगत होते हैं!

उक्त प्रकार कार्याधिकारीयों के गुण दर्शाये बाद अब मैं अपना कार्य बताता हू (शास्त्रों के ढगले में से आचारागादि शास्त्र को उठाकर बताते गये और फोरमैन व्यंकटस्वामी उन शास्त्रों को 'अमूल्य लाला जैन शास्त्र भंडार' की सदूक में जमाते

श्रीने अपने ब्रह्मचर्य के प्रताप से निर्विघ्न पने इसे लिखा और छपाया [illegible]
विधा का बहुत विस्तार से कथन किया है यह अठारवा सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र है चन्द्रप्रज्ञप्ति
और सूर्य प्रज्ञप्ति में शर्फि नाम मात्र फरक है, दोनों का फक्त प्रथम की मडणी सिवाय
सब समास एक ही है यह उन्नीसवे से तेत्रीसवे तक निरियावलीका कप्पिया पुप्फीया
पुप्फचूलिका और वन्हिदशा इन पांचों सूत्र का एक ही युथ है नरक में व देवलोक
में गमन करने वाले जीवों का कथन है यह बारा उपाग कहलाते हैं यह चौवीसवे से
सत्तावीसवे तक अलग२ चारों ही छेद सूत्र हैं इनमें साधु के लिये हित शिक्षा व आचार में भग
लगजाय तो उस का प्रायश्चित है इन छेदों को प्रथम छपाने का विचार नहीं था
परतु डो जीवराज भाइ की तरफ से बृहदकल्प प्रसिद्धी में आया देख चारों ही छेद प्रसिद्ध
किये हैं यह अठावीसवा दशवैकालिक सूत्र है इस में साधु के आचार का कथन है
इसे कितनेक स्वयभवाचार्य कृत बताते हैं परतु यह कथन अयोग्य है, सब शास्त्रों तीर्थंकर
प्रणित और गणधरों रचित ही हैं यह गुनतीसवा उत्तराध्ययन सूत्र है यह भगवत
महावीर स्वामीजी ने निर्वाण समय सुनाया है प्रथम उत्तराध्ययनजी तीन चार स्थान
छपे हैं परतु कथा सहित उत्तराध्ययनजी तो यहा-ही छपा है, यह तीसवा नंन्दी सूत्र है,

के १९ अध्ययन में मेघकुमारादि की बहुत छटादार नीति मय कथाओं है यह आठवा अतगड सूत्र है, इस में कर्मअन्त करता का कथन है यह नववा अनुत्तरोववाइ सूत्र है, इस में अनुत्तर विमान गामी पुरुषों का कथन है यह दशवा प्रश्नव्याकरण सूत्रहै यद्यपि इस का अर्थ बहुत सरल है तथापि ऐसी विषम शैली से लिखा गया है कि उक्त शास्त्रों से इस मे मगज मारी बहुत करना पडा, इस में पाच आश्रव पाच सवर का कथन है, यह एकादश विपाक सूत्र है, इस में १० जीवों ने दुःख २ से और १० जीव सुख २ से मुक्ति प्राप्त की जिनका कथन है यह इग्यारा अग कहलाते हैं यह बारवा उववाइ सूत्र है इस में समवसरण का तपश्चर्या का व देवगति में रूप से विशेष आयुष्य प्राप्त करने वाले जीवोंका और मुक्तिका कथन है यह तेरवा राजप्रश्नीय सूत्र है इसमें नास्तिक मति परदेशी राजा और केशीकुमार श्रमणकी चर्चा बहुत ही छटादार है यह चौदवा जीवाभिगम सूत्र है,इस में जीवाजीव का स्वरूप दर्शाया है यह पन्दरवा पन्नवणा सूत्र है सो थोकडों का सागर ही है यह सोलवा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र है इस में भूगोल विद्या का बहुत खुबी के साथ वर्णन किया है यह सतरवा चन्द्र प्रज्ञप्ति सूत्र है इस को बडा ही चमत्कारिक जान बडे २ महात्माओं भी इस का पठन करने अचकाते हैं परतु महाराज

श्रीने अपने ब्रह्मचर्य के प्रताप से निर्विघ्न पने इसे लिखा और छपाया इस में ज्योतिष विद्या का बहुत विस्तार से कथन किया है यह अठारवा सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र है चन्द्रप्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति में शर्फ नाम मात्र फरक है, दोनों का फक्त प्रथम की मडणी सिवाय सब ममास एक ही है यह उन्नीसवे से तेवीसवे तक निरियावलीका काप्पिया पुप्फीया पुप्फचूलिका और वन्हिदशा इन पांचों सूत्र का एक ही युथ है नरक में व देवलोक में गमन करने वाले जीवों का कथन है यह बारा उपाग कहलाते हैं यह चौवीसवे से सत्तावीसवे तक अलग२ चारों ही छेद सूत्र हैं इनमें साधु के लिये हित शिक्षा व आचार में भग लगजाय तो उस का प्रायश्चित है इन छेदों को प्रथम छपाने का विचार नहीं था परतु डो जीवराज भाइ की तरफ से बृहदकल्प प्रसिद्धी में आया देख चारों ही छेद प्रसिद्ध किये हैं, यह अठावीसवा दशवैकालिक सूत्र है इस में साधु के आचार का कथन है इसे कितनेक स्वयंभवाचार्य कृत बताते हैं परतु यह कथन अयोग्य है, सब शास्त्रों तीर्थंकर प्रणित और गणधरों रचित ही हैं यह गुनतीसवा उत्तराध्ययन सूत्र है यह भगवत महावीर स्वामीजी ने निर्वाण समय सुनाया है प्रथम उत्तराध्ययनजी तीन चार स्थान छपे हैं परतु कथा सहित उत्तराध्ययनजी तो यहा ही छपा है, यह तीसवा नन्दी सूत्र है

वे १९ अध्ययन में मेघकुमारादि की बहुत छटादार नीति मय कथाओं है यह आठवा अंतगड सूत्र है, इस में कर्मअन्त करता का कथन है यह नववा अनुत्तरोववाइ सूत्र है, इस में अनुत्तर विमान गामी पुरुषों का कथन है यह दशवा प्रश्नव्याकरण सूत्र है यद्यपि इस का अर्थ बहुत सरल है तथापि ऐसी विषम शैली से लिखा गया है कि उक्त शास्त्रों से इस में मगज मारी बहुत करना पडा, इस में पाच आश्रव पाच सवर का कथन है, यह एकादश विपाक सूत्र है, इस में १० जीवों ने दुःख २ से और १० जीव सुख २ से मुक्ति प्राप्त की जिनका कथन है यह इग्यारा अंग कहलाते हैं यह वारवा उववाइ सूत्र है इस में समवसरण का तपश्चर्या का व देवगति में रूप से विशेष आयुष्य प्राप्त करने वाले जीवोंका और मुक्तिका कथन है यह तेरवा राजप्रश्नीय सूत्र है इसमें नास्तिक मति परदेशी राजा और केशीकुमार श्रमणकी चर्चा बहुत ही छटादार है यह चौदवा जीवाभिगम सूत्र है, इस में जीवाजीव का स्वरूप दर्शाया है यह पन्दरवा पन्नवणा सूत्र है सो थोकडों का सागर ही है यह सोलवा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र है इस में भूगोल विद्या का बहुत खुबी के साथ वर्णन किया है यह सतरवा चन्द्र प्रज्ञप्ति सूत्र है इस को बडा ही चमत्कारिक जान बडे २ महात्माओं भी इस का पठन करने अचकाते हैं परंतु महाराज

यह काम कितने महत्व का है सो आप ही ख्याल करलीजीये ! आज हमारे अहो भाग्य हैं कि हम उस कार्य को पूर्ण कर कृतार्थ बने हैं ! यह सब पुण्य प्रताप महाराज श्री का और लालाजी साहेब का ही है !

सभासदों में कुछ कम्पोजिटर या प्रेसमेन वगैरा छापेका काम करने वाला नहीं हू कि जिस से मैं अकेला ही इस काम को कर सका होउ परतु इस काम में सहायक कर्मचारीयों का उपकार भी मुझे भूलना उचित नहीं है [यों कह सब प्रेस के कर्मचारीयों को सभागण के सन्मुख खडे कर क्रम से गुण व इनाम दर्शाया] १ यह फोरमैन व्यकटस्वामी प्रेस सम्बन्धी सब कामों में निपुण, दक्ष कार्य कुशल बडे ही होंश्यार हमारे सहायक हैं जब से शास्त्रोद्धार कार्य सुरु हुवा तब स यह इस कार्यालय में रहकर सब कार्य की व्यवस्था जमाइ व याथोचित काम किया इन की रु० ३० महावार है और १३१, का इनाम है २ यह हेड कम्पोझीटर बालाराम दाने शाने कार्य दक्ष व तीन वर्ष स यहा काम कर रहे हैं, इन की भी रु० ३० महावार व रु० ११० का इनाम है ३ स्थानक का दरोगे लछमैय्या हैं, आज १३ वर्ष से महाराज श्री की सेवा में रहते हैं ये सामायिक

इस में पाच ज्ञान चार बुद्धि का कथन है, चारों बुद्धि पर चौरासी कथाओं दीगइ है यह एकतीसवा अनुयोगद्वार सूत्र है, इस में निक्षेप नय प्रमाण भग समुत्कीर्तन, व्याकरण स्वर, नव रस आदि का बहुत ही उत्तम प्रकार से कथन किया गया है और यह छोटासा परतु जैनीयों के सदैव उपयोग में आने वाला बत्तीसवा आवश्यक सूत्र है आवश्यक आज तक केइ प्रगट हुवे और कहो तो गच्छ २ सम्प्रदाय २ के अलग हो रहे हैं परतु यह आवश्यक सर्व मान्य साधु श्रावक सब को निर्विवाद पने एकसा उपयोगी है फिर शास्त्र की सदूक पर रखी हुइ तीनों पट्टी, यों दो में ३४ अस्वध्याय और एक में कालिक उत्कालिक सूत्र तथा दूसरी तरफ अनुवादक, प्रकाशक व भडार के नाम बताये फिर जिन२ ग्राम की अर्जीयों आइ उन के नाम मात्र सुनाये सो आगे देखेंगे,

प्रेक्षकगणो! पाच वर्ष के परिश्रम से और ४२००० रुपे के खरच से जो फल प्राप्त हुवा है उस का आज आप को दिग्दर्शन हो गया मै निश्चयात्मक कहताहू कि इतने सभासदों में से बत्तीस शास्त्र सुनना तो दूर रहा परतु दर्शन करनेका मौका भी आज ही मिला होगा!! जिन को दर्शन मात्र ही दुर्लभ हैं उन को पढना लिखना और छपाकर प्रसिद्धी में रखना,

सभा खास पुस्तकों अमूल्य प्रसारी धेमाथे रुपे खरचे लाखन है जी ॥ ऐसे ॥ ४ ॥
चार महा पुरुषों की दीक्षा कराइ, कान्फरन्स सभा पांचवी मरन है जी ॥ ऐसे ॥ ५ ॥
शास्त्रोद्धार महा कार्य कराया, अमर नाम किया जग में सुजन है जी ॥ ऐसे ॥ ६ ॥
चिरजीवो सुख सम्पती वृद्धी पावो, यों अर्ज करे दास लछमन है जी ॥ ऐसे ॥ ७ ॥

फिर मैंने कहा कि यह शास्त्रोद्धार सभा का साराही अहेवाल से मणिलाल भाइने वाकेफ किये हैं यह कार्य होने में मुख्यता में महान उपकारी तपस्वीराज श्री केवल ऋषिजी महाराज हैं कि जो वृद्धावस्था को प्राप्त होते भी जालना से हैदराबाद तक १३५ कोस के विकट पथ में आहार व दिलासा की पूर्ण सहायता कर मुझे यहा ले आये और महाराज साहब का जंघा बल क्षीण होने से यहा रहने का प्रसंग प्राप्त हुवा, उन ही के पुण्य प्रताप से लालाजी जैसे नर रत्न जैनमार्ग को महा दिप्त करनेवाले बने और अन्य अनेक लोगों को भी धर्म की प्राप्ति हुई दूसरा उपकार अहमदनगर में चतुर्मास रहे हुवे पूज्यपाद गुरुवर्य श्री रत्न ऋषिजी महाराज का है कि जिनों की आज्ञा से व परमाशिर्वाद से शास्त्रोद्धार जैसा महा जवाबदारी काम उठाया उसे सुख शान्ती के साथ पूर्ण कर सका तीसरा उपकार लालाजी सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी का है कि जिन के

पय हो राजा बहादुर लालाजी । सुखदेव सहायजी कीर्ति गाजी ॥
ज्वालाप्रसादजी सुखी रे समाजकाजी ॥ आ० ॥ ३ ॥
लाखों द्रव्य का खरच किया है । धर्मतमय ज्ञान दान दिया है ॥
शास्त्रोद्धार सा काय किया मुख्य साजकाजी ॥ आ० ॥ ४ ॥
चिरायु रहो सब सतती पायो । ऐसे ही काय कर कीर्ति फैलावो ॥
हार्दिक मुबारक चहाते हम सब राजकाजी ॥ आ० ॥ ५ ॥
मणिलालजी मेनेजर सहाय । हम सब रागें सब सुख पाये ॥
प्रभु के कमचारी गुण गात शिरताजकाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥

फिर स्थानक के दरोगे छगनभैय्याने गायन सुनाया

(यारियां यारिया यारियारे-यह चाल)

धन्य है धन्य है धन्य है जी ऐसे जैन समाजी को धन्य है ॥ टेर ॥
धन्य ब्रह्मचारी अमोलक ऋषिजी, राज ऋषिजी उदय ऋषिजी गुणवंत है जी ॥ ऐसे ॥ १ ॥
धन्य राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी, ज्वालाप्रसादजी रतन है जी ॥ ऐसे ॥ २ ॥
आप के प्रसाद से शहर दोनों दीपे, हैद्राबाद सिकंद्राबाद दखन है जी ॥ ऐसे ॥ ३ ॥

खास-जैन साधुमार्गीयों के लिये सुभिता

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जैन धर्म स्थम्भ दानवीर राजा बहादुर लालाजी सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरीने बत्तीस ही शास्त्रों मूल हिन्दी भाषानुवाद सहित छपाने के लिये सीकन्द्राबाद में "जैन शास्त्रोद्धार प्रिंटिंग प्रेस" कायम किया था वह सब शास्त्रों छापने का काम समाप्त हुए बाद भी यथावत् कायम की हुई वस्तु से आगे भी धर्म कार्य निपजता रहे खास इस ही हेतु से शास्त्रोद्धार जैसे बड़ा परिश्रमी और महाजोखमी कार्य के कार्यालय का मैनेजरीपना बोटाला (काठियावाड़) निवासी मणिलाल शिवलाल शेठने जिस उत्साह से स्वीकारा था उस ही उत्साह से उस कार्य का यथोचित समाप्त किया यह आगे भी इस ही प्रकार अन्य कार्य करेंगे ऐसी खातरी होने से उन को प्रेस बक्षीस कर दिया है

अब आप मणिलाल भाई की इच्छा स्वदेश के विरमगाम में रहने की और प्रेस भी वहीं रखने की है जिस से धार्मिक कार्य सदैव चालू रहे इस हेतु से "साधुमार्गीय जैन" नामक पाक्षिक पत्र निकालने की योजना की गई है रु० २०००० की थापन रख जिन के ब्याज के खर्च से उस पत्र की १००० प्रतों निकाली जायगी और फीफ टपाल खरच तथा पॅकिंग खरच के ४ आने सालाना लगेगा—१ जहां २ साधुमार्गीय जैन के स्थानक उपाश्रय सभा सोसायटी लायब्ररी आदि धर्म संस्था हो वहां २ कम से कम २५ मनुष्यों उसे एक वक्त जरूर ही पढे तथा सुने यहां ३ जिस दिन अखबार पढे तथा सुने उस दिन ब्रह्मचर्य का अवश्य ही पालन करे यहां ४ कम से कम पावाना नित्य निकाल कर धर्म खाते में अपने पास जमा रखे यहां और ५ पद

सम्बन्ध से मुझ बत्तीस ही शास्त्रों लिखने का मालिकी में रख कर शास्त्र सेवा व संघ सेवा बजाने का अपूर्व महा लाभ प्राप्त हुवा चौथा उपकार मणिलाल भाई का है ऐसे सज्जन पुरुष का संयोग करानेवाले उक्त गुरुवर्य ही हैं विद्वान शांत स्नेहालु कार्य दक्ष सद्यामिश्र शास्त्रोद्धार कार्य करने के बडे खतीले, तन तोड परिश्रम उठानेवाले और बिना सूचना ही यथोचित सब कार्य करनेवाले हैं ऐसे सुपुरुष के संयोग से ही मेरी संयम वृत्ति के पूर्ण संरक्षण के साथ इतनी शीघ्रता से इस कार्य को पार कर सका हूं पांचवा उपकार सीकन्दराबाद के श्रावकों का भी भूलना उचित नहीं है क्यों कि हैदराबाद सीकन्दराबाद में ऐसा अन्य स्थान नहीं कि जहां २१ घर साधुमार्गियों के एक स्थान हों फक्त एक मारकेट बजार में ही हैं इन के सम्बन्ध से आहार पानी मकान की यथोचित सुख साता प्राप्त होने से व मेरे स्वभाव के निर्वाहक श्रावकों होने से यह काम पांच साधुओं के साथ में रहकर सुख से कर सका।

अब एक नवी योजना भी सुन लीजिये। फिर रामलालजी कीमतीने निम्नोक्त योजना पढकर सुनाई थी

खास-जैन साधुमार्गीयों के लिये सुभिता

दक्षिण हैदराबाद निवासी जैन धर्म स्थम्भ दानवीर राजा बहादुर लालाजी सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरीने बत्तीस ही शास्त्रों मूल हिंदी भाषानुवाद सहित छपाने के लिये सीकंद्राबाद में ' जैन शास्त्रोद्धार प्रिंटिंग प्रेस " कायम किया था वह सब शास्त्रों छापने का काम समाप्त हुवा बाद जो यथार्थ कायम की हुई वस्तु से आगे भी धर्म कार्य निपजता रहे खास इस ही हेतु से शास्त्रोद्धार जैसे बड़ा परिश्रमी और महाजसवी कार्य के कार्यालय का मैनेजरीपना शोधाला (काठियावाड़) निवासी मणिलाल शिवलाल शेठने जिस उत्साह से स्वीकारा था उस ही उत्साह से उस कार्य का यथाचित समाप्त किया वह आगे भी इस ही प्रकार अन्य कार्य करेंगे ऐसी खातरी होने से उन को प्रेस बक्षीस कर दिया है

अब आप मणिलाल भाई की इच्छा स्वदेश के पिरमगाम में रहने की और प्रेस भी वहीं रखने की है जिस से धार्मिक कार्य सदैव चालु रहे इस हेतु से ' साधुमार्गीय जैन " नामक पाक्षिक पत्र निकालने की योजना की गई है रु० १०००० की थापन रख जिस के व्याज के उत्पन्न से इस पत्र की ५०० प्रतों निकाली जायगी और फीफ टपाल खरच तथा पेकिंग खरच के ४ आने सालाना लेना—१ जहां ' साधुमार्गीय जैन के स्थानक उपाश्रय सभा सोसायटी लायब्रेरी आदि धर्म संस्था हो वहां २ कम से कम २५ मनुष्यों जिसे एक वक्त जरूर ही पढे तथा सुने वहां ३ जिस दिन अखबार पढे तथा सुने उस दिन ब्रह्मचर्य का अवश्य ही पालन करे वहां ४ कम से कम पानाना नित्य निकाल कर धर्म खाते में अपने पास जमा रखें वहां और ५ पढ

सम्बन्ध से मुझ बत्तीस ही शास्त्रों लिखने का प्रसिद्धी में रख कर शास्त्र सेवा व संघ सेवा बजाने का अपूर्व महा लाभ प्राप्त हुवा चौथा उपकार मणिलाल भाई का है ऐसे सज्जन पुरुष का संयोग करानेवाले उक्त गुरुवर्य ही हैं विद्वान शांत स्वहाल कार्य दक्ष सद्यमित्र शास्त्रोद्धार कार्य करने के बडे खतीले, तन तोड परिश्रम उठानेवाले और बिना सूचना ही यथोचित सब कार्य करनेवाले हैं ऐसे सुपुरुष के संयोग से ही मेरी संयम वृत्ति के पूर्ण स्वरक्षण के साथ इतनी शीघ्रता से इस कार्य को पार कर सका हूं पांचवा उपकार सीकन्दराबाद के श्रावकों का भी भूलना उचित नहीं है क्यों कि हैदराबाद सीकन्दराबाद में ऐसा अन्य स्थान नहीं कि जहां २१ घर साधुमार्गीयों के एक स्थान हो फक्त एक मारवेट बजार में ही हैं इन के सम्बन्ध से आहार पानी मकान की यथोचित सुख साता प्राप्त होने से व मेरे स्वभाव के निर्वाहक श्रावकों होने से यह काम पांच साधुओं के साथ में रहकर सुख से कर सका

अब एक नवी योजना भी सुन लीजिये ! फिर रामलालजी कीमतीने निम्नोक्त योजना पढकर सुनाई थी

खास-जैन साधुमार्गीयों के लिये सुमिता

दक्षिण हैद्राबाद निवासी जैन धर्म स्थम्भ दानवीर राजा बहादुर लालाजी सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी जौहरीने बत्तीस ही शास्त्रों मूळ हि दी भाषानुवाद सहित छपाने के लिये सीकंद्राबाद में 'अमर शास्त्रोद्धार प्रिंटिंग प्रेस' कायम किया था वह सब शास्त्रों छपने का काम समाप्त हुए बाद भी यथार्थ कायम की हुई वस्तु से आगे भी धर्म कार्य निपजता रहे खास इस ही हेतु से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रमी और महा भेखमी कार्य के कार्यालय का मैनेजरीपना मोरबी (काठियावाड) निवासी मणिलाल शिवलाल शेठने जिस उत्साह से स्वीकारा था उस ही उत्साह से उस कार्य का यथोचित समाप्त किया वह आगे भी इस ही प्रकार अन्य कार्य करेंगे ऐसी खातरी होने से उन का प्रेस बक्षीस कर दिया है

अब भाग मणिलाल भाई की इच्छा स्वदेश के गिरमगाम में रहने की और प्रेस भी वहीं रखने की है उस से धार्मिक कार्य सदैव चालू रहे इस हेतु से 'साधुमार्गीय जैन' नामक पत्रिका पर निम्न नी योजना की गई है रु० १०००० की थापन रख जिस के व्याज के पत्र प्रत्येक पर ही ५०० प्रतों निकाली जायगी और फीफ टपाल खरच तथा पेकिंग खरच के ६ आने सालाना उतरे—१ जहां २ साधुमार्गीय जैन के स्थानक उपाश्रय सभा सोसायटी लायब्ररी आदि धर्म संस्था हो वहां २ कम से कम २५ मनुष्यों उसे एक वक्त जरूर ही पढे तथा सुन वहां ३ जिस दिन अखबार पढे तथा सुने उस दिन ब्रह्मचर्य का अवश्य ही पालन करे वहां ४ कम से कम पाजाना नित्य निकाल कर धर्म खास में अपने पास जमा रखें वहां और ५ पढ

हर अखबार के अंक को रद्दी में नहीं डालते सब भेले कर उन की फाइल बना कर रखे वहां, पर ।त अमूल्य भेजना प्रत्येक ग्राम की योग्यतानुसार एक दो प्रत से अधिक नहीं भेजी जायगी और जिन की इच्छा स्वयं पढ़ने के लिये ही लेने की हो वे रु० ५० वक्त फण्ड में भर देंगे तो उन का अखबार चलेगा वहां तक एक प्रत अमूल्य भेज दी जावेगी, इस प्रकार नियम किये हैं इस अखबार के प्रत्येक अंक में—१ शास्त्राधिकार में आचारांग शास्त्र से प्रारंभ कर आवश्यक पर्यन्त अनुक्रम से विशदार्थ युक्त, २ कथाधिकार में महा पुरुषों महासतीयों के जीवन चरित्र तथा उपदेशिक दृष्टान्तिक कथाओं और ३ धर्मोपदेश यह तीन विषय तो कायमी चलेंगे प्राप्त होते धर्म वृद्धि के समाचार उचित लगे तो वे भी छाप जायेंगे जिन को पत्र लेने की इच्छा हो वे प्रतिज्ञा पूर्वक पत्र द्वारा सूचना दें

उक्त प्रेस के और अखबार के मैनेजर मणिलाल शिवलाल शेठ रहेंगे यह तीन वर्ष रतलाम कॉलेज में रहकर प्राकृत, संस्कृत अंग्रेजी का अभ्यास कर; तीन वर्ष उपदेशक का कार्य किये पीछे मेरे पास पांच वर्ष रह दक्षिण हैदराबाद में शास्त्र के भाषानुवाद की पुनरावृती लिख छपा प्रुफ तपास कर शास्त्र ज्ञान के पुक्ताभ्यासी बने हैं इन के हाथ से काम कैसा होगा यह कहने की कुछ जरूर नहीं पाठक खुद ही समज सकेंगे

☞ यह प्रेस भी साधुमार्गीय का है और प्रेस के मैनेजर भी चुस्त साधुमार्गीय श्रावक हैं, इस लिये साधुमार्गीयों का कर्तव्य है कि संस्कृत प्राकृत हिन्दी गुजराती लिपी में या भाषा में कोई भी पुस्तक पेंफलेट पत्रिका कार्ड वगैरा जो कुछ शुद्ध साफ सुशोभित और सस्ता पूर्वक छपवाना हो तो

इन के पास ही भेजना उचित है

पत्ता–मणिलाल शिवलाल शठ
अमूल्य लाला जैन शास्त्रोद्धार प्रि प्रेस, विरमगाम (गुजरात) } ज्ञान वृद्धि इच्छक, अमोलऋषि,

इस के बाद अखबार के लिये प्राप्त हुई रकम जाहिर की गई थी

रु० २००० राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

रु० १५००स्व ताराचंदजी कोठारी मस्से (मारवाड) वालेकी सुपत्नीकी तरफ से

रु० १००० ढाणकीवाले उदयराजजी कालुरामजी की तरफसे

रु० ५०० नवलमलजी सुरजमलजी धोका यादगिरीवाले की तरफ से

फिर सिकंदराबाद मारकट बजारवाले की पास रु० १००० धर्म खाते के थे उसे नहीं देने की नियत से झगडा होने से सभा बिखर गई

सवत १९७२ के कार्तिक शुदी ५ से सवत १९७७ के कार्तिक शुदी ५ तक का हिसाब

जमा	खर्च
(२०३५) श्रीमान राजा बहादुर लालाजी	२२००७॥=॥) श्री कागद खाते रीम ६३१

इस अखबार के अंक को रद्दी में नहीं डालते सब मेले कर उन की फाइल बना कर रखें यहां, पर ।त अवश्य भेजना प्रत्येक ग्रा म की योग्यतानुसार एक ।। मत म अधिक नहीं मनी जायगी और जिन की इच्छा रु॰ पन्ने के लिय ही लेने की हो वे रु० ५० उक्त फण्ड में भर देंगे तो उन को अखबार चलेगा वहां तक एक प्रत अमूल्य भेज दी जावेगी, इस प्रकार नियम किये है इस अखबार के प्रत्येक अंक में—१ शास्त्राधिकार में आचारांग शास्त्र से प्रारंभ कर आवश्यक पर्यन्त अनुक्रम से विशेषार्थ युक्त, २ कथाधिकार में महा पुरुषों महासतीयों के जीवन चरित्र तथा वैराग्योत्पादक दृष्टान्तिक कथाओं और ३ धर्मपदेश यह तीन विषय तो कायमी चलेंगे प्राप्त होते धर्म वृद्धि के समाचार उचित लगे तो वे भी छाप जायेंगे जिन को पत्र लेने की इच्छा हो वे प्रतिज्ञा पूर्वक पत्र द्वारा सूचना दें

उक्त प्रेस के और अखबार के मैनेजर माणिकलाल शिवलाल सेठ रहेंगे यह तीन वर्ष रतलाम कॉलेज में रहकर प्राकृत संस्कृत अंग्रेजी का अभ्यास कर, तीन वर्ष उपदेशक का कार्य किये पीछे मेरे पास पांच वर्ष रह ३२ शास्त्र के भाषानुवाद की पुनरावृत्ती लिख छपा प्रूफ तपास कर शास्त्र ज्ञान के पुक्ताभ्यासी बने हैं इन के हाथ से काम कैसा होगा यह कहने की कुछ जरूर नहीं पाठक स्वयं ही समझ सकेंगे

☞ यह प्रेस भी साधुमार्गीय का है और प्रेस के मैनेजर भी चुस्त साधुमार्गीय श्रावक हैं, इस लिये साधुमार्गीयों का कर्तव्य है कि संस्कृत प्राकृत हिन्दी गुजराती लिपी में या भाषा में कोई भी पुस्तक पेंफलेट पत्रिका कार्ड वगैरा जो कुछ शुद्ध साफ सुशोभित और सस्ता पूर्वक छपवाना हो तो

इन के पास ही भेजना उचित है

पत्ता—मणिलाल शिवलाल शेठ
अमूल्य लाला जैन शास्त्रोद्धार प्रि प्रेस, विरमगाम (गुजरात) } ज्ञान वृद्धि इच्छक, अमोलकऋषि,

इस के बाद अखबार के लिये प्राप्त हुई रकम जाहिर की गई थी

रु० २००० राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

रु० १५००स्व ताराचंदजी कोठारी मस्से (मारवाड) वालेकी सुपत्नीकी तरफ से

रु० १००० द्वाणकीवाले उदयराजजी कालुरामजी की तरफसे

रु० ५०० नवलमलजी सुरजमलजी धोका यादागिरीवाले की तरफ से

फिर सिकंदराबाद मारकट बजारवाले की पास रु० १००० धर्म खाते के थे उसे नहीं देने की नियत से झगडा होने से सभा बिखर गई

संवत १९७२ के कार्तिक शुदी ५ से संवत १९७७ के कार्तिक शुदी ५ तक का हिसाब

जमा	खर्चे
४२०१५) श्रीमान राजा बहादुर लालाजी	२२००७॥=॥) श्री कागद खाते रीम ६३१

हुवे अखबार के अंक को रद्दी में नहीं डालते सब मेले कर उन की फाइल बना कर रखे वहाँ, पर १त अमूल्य भेजना प्रत्येक ग्राम की योग्यतानुसार एक दो प्रत से अधिक नहीं भेजी जायगी और जिन की इच्छा स्वय पढने के लिये ही लेनेकी हो वे रु० ५० उक्त फण्ड में भर देंगे तो उन को अखबार चलेगा वहाँ तक एक प्रत अमूल्य भेज दी जावेगी, इस प्रकार नियम किये हैं इस अखबार के प्रत्येक अंक में—१ शास्त्राधिकार में आचारांग शास्त्र से प्रारंभ कर आवश्यक पर्यन्त अनुक्रम से विशेषार्थ युक्त, २ कथाधिकार में महा पुरुषों महासतीयों के जीवन चारित्र तथा उपदेशिक दृष्टान्तिक कथाओं और ३ धर्मोपदेश यह तीन विषय तो कायमी चलेंगे मात्र होते धर्म वृद्धि के समाचार उचित लगे तो वे भी छाप जायेंगे जिन को पत्र लेने की इच्छा हो वे प्रतिज्ञा पूर्वक पत्र द्वारा सूचना दें

उक्त प्रेस के और अखबार के मैनेजर मणिलाल शिवलाल शेठ रहेंगे यह तीन वर्ष रतलाम कॉलेज में रहकर प्राकृत संस्कृत अंग्रेजी का अभ्यास कर; तीन वर्ष उपदेशक का कार्य किये पीछे मेरे पास पांच वर्ष रह इस्वाम ही शास्त्र के भाषानुवाद की पुनरावृती लिख छापा प्रुफ तपास कर शास्त्र ज्ञान के पुकाभ्यासी बने हैं इन के हाथ से काम कैसा होगा यह कहने की कुछ जरूर नहीं पाठक स्वयं ही समझ सकेंगे

☞ यह प्रेस भी साधुमार्गीय का है और प्रेस के मैनेजर भी चुस्त साधुमार्गीय श्रावक हैं, इस लिये साधुमार्गीयों का कर्तव्य है कि-संस्कृत प्राकृत हिन्दी गुजराती लिपी में या भाषा में कोई भी पुस्तक पेंफलेट पत्रिका कार्ड वगैरा जो कुछ शुद्ध साफ सुशोभित और यत्ना पूर्वक छपवाना हो तो

इन के पास ही भेजना उचित है

पत्ता–मणिलाल शिवलाल शठ
अमूल्य लाला जन शास्त्रोद्धार प्रि प्रेस, विरमगाम (गुजरात) } ज्ञान वृद्धि इच्छक, अमोलकऋषि,

इस के बाद अखबार के लिये प्राप्त हुई रकम जाहिर की गई थी

रु० २००० राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी

रु० १५००स्व ताराचंदजी कोठारी मस्से (मारवाड) वालेकी सुपत्नीकी तरफ से

रु० १००० ढाणकीवाले उदयराजजी कालुरामजी की तरफसे

रु० ५०० नवलमलजी सुरजमलजी धोका यादगिरीवाले की तरफ से

फिर सीकंदराबाद मारकट बजारवाले की पास रु० १००० धर्म खाते के थे उमे नहीं देने की नियत से झगडा होने से सभा बिखर गई

संवत १९७२ के कार्तिक शुदी ५ से संवत १९७७ के कार्तिक शुदी ५ तक का हिसाब

जमा	खर्च
(८२०३८) श्रीमान राजा बहादुर लालाजी	२२००७।।(=।।) श्री कागद खाते रीम ६११

सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी
जौहरी हैद्राबाद

४१ — सूत्र खर्च सूत्र बाहिर से मगाये गये
६२८४। छपवाई के फार्म नं. ११७८
८९८।–८ फाल्डींग खर्च
१५६०) प्रेस खाते प्रेस का सामान मणिलाल
शिवलाल शेठ को दिया गया
३२३४।–। श्री परचुरण खर्च खाते
४००) कटिंग मशीन
१०००) इनाम नोकरों को दिया
१० ०) ट्रंक खाते
३८४१।॥=१ मणिलाल की तनखा साल पांच
७ ८५॥ नानचंद की तनखा साल ढढ

जोड ४२०३५

मणिलाल शिवलाल शेठ

८ मूल्य राता जैन शास्त्र भंडार की सदूकें जिन ग्रामों में भेजीं उन का लिस्ट

१ इटवा	१६ पोगजी	३१ यशा	४६ मायला	६१ महिदपुर	७६ मनफरा
२ साकराबाद	१७ लूणार	३२ लाकडीया	४७ बरवाडा	६२ रपर	७७ फलोदी
३ आगरा	१८ अहमदाबाद	३३ सामखारीया	४८ मगा	६३ भाटकोट	७८ मांडवी
४ थानरोड	१९ भावनगर	३४ राजकोट	४९ गोंडल	६४ रावलपिंडी	७९ वमा
५ नार	२० समीत	३५ टकारा	५० मूली	६५ कुकावाव	८० सीपरी केम्प
६ अहमदाबाद	२१ लाहोर	३६ चिह्नोली	५१ राजकोट सीटी	६६ हरसाणा	८१ धंधका
७ बुलदाना	२२ सायर कुंडला	३७ पेवाम	५२ रलोळ	६७ स्वाह	८२ जैनउसर
८ अहमद बाद	२३ इटवा	३८ सभात	५३ घोंघलपुर	६८ मळवली	८३ भीनासर
९ मोरारा	२४ कुचेरा	३९ सरधार	५४ भाबाळा	६९ मोजपुर	८४ मणासा
१० भावनगर	२५ कलोम	४० खुदी माका गुरु	५५ कसूर	७० अमरेली	८५ बासबद
११ स्यालकोट	२६ गोंडल	४१ लखतर	५६ भागर	७१ जावद	८६ बरसत
१२ साणद	२७ रव	४२ नदराय	५७ माकाला	७२ रायपर	८७ बुंदी
१३ खदा	२८ पोरबंदर	४३ लिंबडी	५८ विपलपुर	७३ घार बडोदरा	८८ रामपुर
१४ माटलगढ	२९ घघा	४४ लिंबडी	५९ मुम्बई	७४ मांडवी	८९ भीमरी
१५ रावलपिंडी	३० जालभरा	४५ इंदौर	६० कडी	७५ नवराण शहर	९० चीतळ

१०६ प्रतापगढ	२१४ भगासा	२३२ धारी	२५० मुठल भादा	२६८ नामपसाडा	२८६ रापर
१०७ सामाना	२१५ माखा	२३३ लीलीयामोटा	२५१ मच्छी भादा	२६९ उज्जैन	२८७ पेन्टदा
१०८ पीपलाद्रा	२१६ रायचूर	२३४ सीहोरकॅन्टोन्मेंट	२५२ दीरही	२७० जोधपुर	२८८ महिया
१०९ सरदारगढ	२१७ मार	२३ ताजपुर	२५३ उदयपुर	२७१ कुकाना	२८९ धार
२०० सनवाद	२१८ छपरोली	२३६ घरोट	२५४ गेता	२७२ दनोदाबडा	२९० कुरुमी
२०१ नेतपुर	२१९ नयजन	२३७ पहना	२५५ कान्ही	२७३ रामोद	२९१ बडीसादडी
२०२ लाटी	२२० बेरामल	२३८ बडवाण केम्प	२५६ खिरपुडा	२७४ गुजर वाला	२९२ लिसाद
२०३ चिपवद	२२१ चिचोदी	२३९ धांइला	२५७ सेमाना	२७५ छसरा	२९३ धाराजी
२०४ दुरदा	२२२ रठोडा	२४० रायकोट	२५८ नफाद	२७६ पालीआद	२९४ पुना
२०५ जालार	२२३ चिन्नूर	२४१ मचाउ	२५९ गा।धार	२७७ उरमढ	२९ नरखदा
२०६ डग	२२४ मागपर	२४२ गढ सिवाण	२६० हांसी	२७८ भोजपुरा	२९६ पोरबंदर
२०७ जम्मु	२ ५ बडवाण सीटी	२४३ कालु खेडा	२६१ महरोली	२७९ छेटी सादरी	२९७ मनपाड
२०८ धराणया	२२६ गगेरु	२४४ भळवरमन्टोन्मेंट	२६२ एलम	२८० कुकडेश्वर	२९८ सीतापुर
२१० फरीदकोट	२२७ निनार	२४५ मुद्रा	२६३ सनहल	२८१ करी	२९९ जामनगर
२१० नारायणगढ	२८ जयपर	२४६ भावर	२६४ कैथल	२८२ तीतरवाडा	३०० लाहोर
२११ रोहतक	२२९ उज्जैन	२४७ धुलिया	२६५ धमाचोर	२८३ सानापर	३०१ खदप
२१२ धारपुरा	२३० मीरी	२४८ श्यामपुरा	२६६ जुनामावर	२८४ बरेली	३०२ राजपरा
२१३ अलीगढ	२३१ अमेर	२४९ लासलगांव	२६७ मगढी	२८५ राहमी	३०३ फतेहगढ

३०४ अमरावती
३०५ गोंदिया
३०६ रंगून
३०७ सतारा
३०८ अहमदाबाद
३०९ किशनगढ़
३१० अजमेर
३११ रतपुर
३१२ ठुंडवा
३१३ मांगरोल
३१४ मुम्बई
३१५ सलतर

३१६ पन्नीमोटी
३१७ बड़ोदा
३१८ लासापुर
३१९ पीपाड़
३२० रामकोट
३२१ दामनगर
३२२ लाहौर
३२३ नालछा
३२४ भेतारन
३२५ रामापड़ी
३२६ परोरा
३२७ मुजपर

३२८ पुदामड़ा
३२९ ५घर
३३० माधली
३३१ कुन्दड़ी
३३२ विपला
३३३ भावनगर
३३४ सलेगांव
३३५ पीहाज
३३६ जिंछिया
३३७ बीकानेर
३३८ चुडा
३३९ पाथी

३४० मादरण
३४१ दमा
३४२ साप०
३४३ पहधरी
३४४ पालिम
३४५ कोटाकरा
३४६ रत्र
३४७ सजीव
३४८ आगरा
३४९ गुजरानवाला
३५० लाहौर
३५१ मुम्बई

३५२ जगरामा
३५३ पूना
३५४ सतारा
३५५ बेगु
३५६ मुलक
३५७ जोधपुर
३५८ पट्टी
३५९ सनाम
३६० निम्बहेड़ा
३६१ दखलपुर
३६२ श्यामड़ी
३६३ अहमदनगर

३६४ झाबुआ
३६५ गोंडल
३६६ चांदनवाड़ा
३६७ रायण
३६८ पत्री
३६९ नागोर
३७० ग्रोवाला
३७१ समदड़ी

नाट—इस में कितनेक स्थान एक ही गांव वा नाम दो तीन वार भी आये हैं वा वहां पर अलग २ स्थानक, भंडार अथवा लायब्रेरी होने से अलग २ ही शास्त्र भंडार भेजा गया है

॥ अन्तिम-विज्ञप्ति ॥

गाथा-आयार पण्णातिधरं, दिट्ठिवाय महिज्जगं ॥
वइविक्खलियं नच्चा, न त उवहसे मुणी ॥ ४९ ॥

दशवैकालिक अ० ८

अहो सुज्ञ पाठक श्रोतागणो ! इस शास्त्रोद्धार मीमांसा के आद्यन्त पठन से आप को विदित हुआ होगा कि–श्री जिनेन्द्र प्रणित परम वागेश्वरी से प्रणित शास्त्रों का आजतक किस प्रकार परावर्तन हुआ है जब केवल ज्ञान के निदर्शित, सब भाव को अतिशयादि से व्याख्यान की परम शक्ति के धारक तीर्थकरों भी पूर्ण वाणीधारा वागर नहीं सके, तीर्थकरों का पूर्णाशय गणधर ग्रहण नहीं कर सके, गृहणार्थ को पूर्णता से रच नहीं सके और रचितार्थ के पूर्णाशय को श्रुत केवली पूर्णता से नहीं समज सकें

१०४ ममनार	११६ प नळीमोटी	१२८ सुदामडा	१४० मादरण	१५२ जगरामा	१६४ मानुमा
१०५ गोंदिया	११७ वडोदरा	१२९ पचर	१४१ दमा	१५३ पूना	१६५ गोंडल
१०६ रगून	११८ कोल्हापुर	१३० माघरी	१४२ साथ	१५४ सतारा	१६६ पादनवाडा
१०७ पगारा	११९ पीपाड	१३१ कुम्रडी	१४३ पदधरी	१५५ बेगु	१६७ रापण
१०८ अहमदाबाद	१२० राजकोट	१३२ पिपळा	१४४ प्रांतिज	१५६ सुनक	१६८ पभी
१०९ बिकानेर	१२१ दावनगर	१३३ भावनगर	१४५ कोदाकरा	१५७ जोधपुर	१६९ नागोर
११० अमार	१२२ लाहोर	१३४ तळेगांव	१४६ रव	१५८ पट्टी	१७० झोपाळा
१११ रतपुर	१२३ नालछा	१३५ पीहाज	१४७ सजीत	१५९ सनाम	१७१ समदडी
११२ तुंवर्दा	१२४ मेतारन	१३६ मिंछिया	१४८ आगरा	१६० निम्बहेडा	
११३ पांगरोळ	१२५ रामामंडी	१३७ बीकानेर	१४९ गुजरानवाला	१६१ इचलपुर	
११४ मुम्बई	१२६ बरोरा	१३८ चुदा	१५० लाहोर	१६२ श्यामदो	
११५ मलतर	१२७ मुजपर	१३९ मथी	१५१ मुम्बई	१६३ अहमदनगर	

नोट—इस में कितनेक स्थान एक ही गांव वा नाम दो तीन वार भी आये हैं वा वहां पर अलग २ स्थानक, भंडार अथवा साधर्मी होने से अलग २ ही शास्त्र भंडार भेजा गया है

॥ अन्तिम-विज्ञप्ति ॥

गाथा-आयार पण्णातिधरं, दिट्ठिवाय महिज्जगं ॥
वइविक्खलियं नच्चा, न त उवहसे मुणी ॥ ४९ ॥

दशवैकालिक अ० ८

अहो सुज्ञ पाठक श्रोतागणो ! इस शास्त्रोद्धार मीमांसा के आद्यन्त पठन से आप को विदित हुआ होगा कि—श्री जिनेन्द्र प्रमित परम वागेश्वरी से प्रणित शास्त्रों का आजतक किस प्रकार परावर्तन हुआ है जब केवल ज्ञान के निदर्शित, सब भाव को अतिशयादि से व्याख्यान की परम शक्ति के धारक तीर्थकरों भी पूर्ण वाणीधारा वागर नहीं सके, तीर्थकरों का पूर्णाशय गणधर ग्रहण नहीं कर सके, गृहणार्थ को पूर्णता से रच नहीं सके और रचितार्थ के पूर्णाशय को श्रुत केवली पूर्णता से नहीं समज सके

इस पर से भगवानने कहा है कि आचारांग प्रज्ञप्ति (भगवती) और दृष्टीवादांग जैसे अस्खुट अपरमपार ज्ञान के धारक भी वचनोच्चार करते स्खलित हो जाय चूक जाय तो मुनियों का कर्तव्य है कि उन का उपहास्य करे नहीं, और भी तत्त्वार्थ (मोक्ष शास्त्र) के रचयिता उमास्वामी का कहना है कि—

" को नवि मुह्यति शास्त्र समुद्रे "

विद्वरों ! शास्त्र का भाषानुवाद करना यह कार्य मेरे जैसे तुच्छ ज्ञानी से पूर्णता से यथोचित होना विलकूलही असमर्थ है अनेक मुनिवरों श्रावकों के तरफ से वारम्वार अत्याग्रह पूर्वक सूचना होते भी ग्रहण करने की हिम्मत नहीं कर सका । परतु लालाजी के पवित्र हृदय के प्रेमोत्सुक भक्ति भाव से उत्पन्न हुए विद्युत् शक्ति समान वचनोच्चार मेरे श्रवण से अथडातेही मेरे हृदय पर सपोट] ऐसी असर हुइ कि तीन दिन तक तो मैं विचार सागर में गोते खाता ही रहा ! लालाजी के निश्चयात्मक वचन रूप जादू के आगे मेरा विचार रूप गारुडी का कुछ भी नहीं चला और मानो वलात्कार से ही किसी कार्य का किसी को स्वीकार कराते हो उस ही

प्रकार मेरे हृदय की प्रेरणा से मुझे बत्तीस ही शास्त्रों के भाषानुवाद का स्वीकार करना ही पडा और डगमगते मन से लालाजी सन्मुख 'हां' कहा गया लालाजीने उस वचन को बडा ही प्रेम पूर्वक बधा लिया साधु का वचन तो अटल होता है, तदनुसार गुरुदयाल की आज्ञा प्राप्त कर प्रकाश में हर्ष बधाइ छपाइ और ज्ञान पचमी को भाषानुवाद प्रारम किया और चत सप्तमी से छपना सुरु किया शुभ काम में विघ्न बहुत ही हैं आते हैं तदनुसार शास्त्रोद्धार कार्यालय के मकान के मालक पर आफत आने से उसे बदलना पडा, थोडे ही दिन बाद प्लेग की सुरुआत होते काम बन्ध कर सब कर्मचारीयों चले गये हम साधुओ भी मरणांतिक कष्ट से बचे इतना परिश्रम पाये कुच्छ दिनों के बाद लालाजी का अचिंत्य स्वर्गगमन होगया तीसरे साल फिर प्लेग सुरु हुआ तब लालाजी के खरच से सर्व कर्म चारीयों को जगल में कूटि बनाकर एक स्थान रख काम चलु रखा, चौथे वर्ष दत्तचित्त से काम करने वाला एक कम्पोजिटर का मृत्यु निपजा व प्रेस के कर्म चारीयों में बडी गडबड मची, पाचवे वर्ष

इस पर से भगवान ने कहा है कि आचारांग प्रमुख (भगवती) और चतुर्दशपूर्वी जैसा उत्कृष्ट ज्ञानप्रकाश ज्ञान के धारक भी प्रमादवश प्रमाद सहित हो जाय चूक जाय तो मुनियों का कर्तव्य है कि उन का उपहास करे नहीं, और भी तत्त्वार्थ (मोक्ष शास्त्र) के रचयिता उमास्वामी का कहना है कि—

" को नहि मुह्यति शास्त्र समुद्रे "

विद्वद्वरों ! शास्त्र का भाषानुवाद करना यह कार्य मेरे जैसे तुच्छ ज्ञानी से पूर्णता से यथोचित होना बिलकुलही असंभव है जानके मुनिवरों श्रावकों के तरफ से वारम्वार आग्रह पूर्वक सूचना होते भी ग्रहण करने की हिम्मत नहीं कर सका ! परन्तु लालाजी के पवित्र हृदय के प्रेमोत्सुक भक्ति भाव से उत्पन्न हुवे विद्युत् शक्ति समान वचनाघात मेरे श्रवण से आघातही मेरे हृदय पर सपोट] ऐसी असर हुई कि तीन दिन तक तो मैं विचार सागर में गोते लगाता ही रहा ! लालाजी के निश्चयात्मक वचन रूप आयू के आगे मेरा विचार रूप गाड़ी का कुछ भी नहीं चला और मानो बलात्कार से ही किसी कार्य का मिरा को स्वीकार करना हो वैसा ही

प्रथम मूल का शुद्ध लेख करना नन्तर मूल पर ही लक्ष रख तदनुसार अर्थ लिखना विशेपार्थ वाली प्रतों पर से उस का खुलासा फूट नोट वगैरा लिखना पूर्ण शास्त्र लिखे बाद उस का मिलान करना, और एक वक्त प्रेस प्रुफ का मिलान करना, इस प्रकार अनुक्रम से ३२ ही शास्त्रों शीर्फ तीन वर्ष जितने स्वल्प काल में पूरे लिख देना एसी मुशीबतों में इतनी मिथा दारती—तपास रखते हुअे भी मूलों रहगइ हैं, क्यों कि छमस्त मूल पात्र होता है, इस उक्त कथन के तरफ लक्ष रखकर और उक्त प्रथम कही हुई गाथा में वीतराग आज्ञा को लक्ष में लेकर अर्थात् "दृष्टीवादाग जैसे ज्ञाता का भी वचन स्खलित होजावे तो अहो मुनि! उन का उपहास्य नहीं करना" तो मेरे जैसे अल्पज्ञ का तो कहना ही क्या? इस लिये उपहास्य नहीं करते हुअे जो ना पसद हो तो इस से भी अच्छा कार्य शीघ्रता से कर बताना यही सत्य पुरुषों का लक्षण है Be slow to promise but quick to perform कम कहो और करो अधिक

पाठकों! यह काम प्रारभ हुवे बाद इस कार्य को और कार्य कर्ता का चखोदने में खुद अपने साधुमार्गीयोंने ही कसर नहीं रखी है—१ एक मुनि महात्मा तरफ से

परम सहायता क करने घाले तपस्वीजी ज्ञानानन्दी श्री देवऋषिजी का ४७ वर्ष के वय में और घालब्रह्मचारी विद्या विलासी श्री मोहन ऋषिजी का २१ वर्ष की वय में ये दोनों साधु चेत कृष्ण सप्तमी की दिन एक श्याम के और दूसरे प्रात के चार बजे स्वर्ग गमन कर गये कितनेक दिन वाद लाला ज्वाला प्रसादजी को भी निमुनीय होगया धर्म पसाय यह भी महान सकट दूर हुआ इस प्रकार जब से कार्य सुरु हुआ तब से ऐसे बडे २ विघ्न प्राप्त हुअे और भी कार्यालय के कर्मचारीयों की गेरहाजरी नवे २ कर्म चारीयों स्थापित करने से वे अवाकेफ होने से काम की गडबड, विशेष काम चलने से टाइप का खराबा, खुट टाइप मगाने पर चार २ महिने तक नहीं भेजने से घिसे टाइप से छपने से अक्षरों की क्षीणता, युद्ध प्रसग कागज स्याही टाइप वगैरा कार्य के साहित्यों के महगाइ, मुह मागे दाम देते ही वस्तु की अप्राप्ति, बीस हजार के खरच में धारा हुआ काम चालीस हजार के खरच में भी पार पडने की कठिनता वगैरा कहा तक वर्णन किया जावे इतने कथन ऊपर से ही पाठक गणों खयाल कर सकेंगे कि एसी २ मुशीबतों प्राप्त होते हुअे स्वीकृत कार्य तरफ एकसा लक्ष रख, भडारों से चार २ पाच प्रतों मगवा परस्पर सबका मिलान कर निर्णय कर अशुद्धीयों को छाट कर

प्रथम मूल का शुद्ध लेख करना नन्तर मूल पर ही लक्ष रख तदनुसार अर्थ लिखना विशेपार्थ वाली प्रतों पर से उस का खुलासा फूट नोट वगैरा लिखना पूर्ण शास्त्र लिखे बाद उस का मिलान करना, और एक वक्त प्रेस प्रुफ का मिलान करना, इस प्रकार अनुक्रम से ३२ ही शास्त्रों शीर्फ तीन वर्ष जितने स्वल्प काल में पूरे लिख देना एसी मुशीबतों में इतनी सिघा दास्ती—तपास रखते हुअे भी भूलों रहगइ हैं, क्यों कि छद्मस्त मूल पात होता है, इस उक्त कथन के तरफ लक्ष रखकर और उक्त प्रथम कही हुई गाथा में वीतराग आज्ञा को लक्ष में लेकर अर्थात् " दृष्टीवादाग जैसे ज्ञाता का भी वचन स्खलित होजावें तो अहो मुनि ! उन का उपहास्य नहीं करना " तो मेरे जैसे अल्पज्ञ का तो कहना ही क्या ? इस लिये उपहास्य नहीं करते हुअे जो ना पसद हो तो इस से भी अच्छा कार्य शीघ्रता से कर बताना यही सत्य पुरुषों का लक्षण है *Be slow to promise but quick to perform* कम कहो और करो अधिक

पाठकों ! यह काम प्रारम हुवे बाद इस कार्य को और कार्य कर्ता का बखोडने में खुद अपने साधुमार्गीयोंने ही कसर नहीं रखी है—१ एक मुनि महात्मा तरफ से

सूचना आई थी कि—यह कार्य अमाल ऋषि के हाथ से करावोगे तो अपने धर्म को एक जबर लाछन (धब्बा) लगावोगे स्वमति अन्यमति में निन्दा पात्र बनोगे मारवाड मालवा क कितनक साधु श्रावकों कहते हैं कि छपाने क काम में जबर पाप लगाता है भ्रष्टाचारी साधु यह काम करते हैं ३ कितनेक महात्माओं ऐसा भी उपदेश करते हैं कि गृहस्थ को शास्त्र पढना ही नहीं चाहिये ! गृहस्थ के घर में शास्त्र रखना ही नहीं चाहिये गृहस्थ के घर में शास्त्र रहने स धनादि की हानि होती है ऐसी २ बातों सुन लोगों शंकाशील बन केई यहा आकर उक्त प्रश्न करते-उन को यही जवाब दिया जाता कि वे तो मरा भला चहाते हैं, मुझे पाप से बचने के लिये ही चेताते हैं परतु मेरे अब ऐसा ही जोग है जिन को यह काम खराब मालुम पडता है तब ही वे ऐसी बात करते हैं परतु मुझे यह काम लाभ दाता मालुम होता है तब ही मैं करता हू कितनेक वक्ता व्याख्यानी साधुओं व्याख्यान श्रवण के लिये लोगों को आमत्रण पत्र देते हैं व्याख्यान होने के लिये मडप बनवाते हैं देशावरों से हजारों लोगों दर्शनार्थ व्याख्यान श्रवणार्थ आते हैं उन के लिये मकान भोजनादि का बदोबस्त कियाजाता है जिस में हजारों रुप खरच होता है और आरभ भी निपजता है लाभ—व्याख्यान श्रवण से व

साधु दर्शन से ज्ञान प्राप्ति होती है, उतना खरच और उतना आरंभ तो शास्त्रोद्धार के काम में नहीं है और एक हजार भंडार ३२ शास्त्रों के हजार स्थान रहेंगे जिनका केई वर्षों तक हजारों महात्माओं पठन करेंगे और लाखों श्रावकादि श्रवण करेंगे हजार स्थान शास्त्र भंडार होने से साधु संतों को शास्त्र उठाने का शास्त्र पठन के लिये निरास होने का खुशामदि वगैरा का प्रसंग न आवेगा, चर्चा संवाद में निर्णयार्थ शास्त्र की जरूरत होवे शीघ्र प्राप्त हो सकेंगे, इत्यादि लाभ का उक्त साधु के दर्शन व व्याख्यान श्रवण से कमी है इत्यादि उत्तर सुन लोगों को बडा ही संतोष प्राप्त होता था,

एक वक्त कितनेक तेरापंथी सम्प्रदाय के श्रावकोंने पूछा कि—आप जैसे ज्ञानी गुनी साधु को छपाने के पाप का काम करना उचित है क्या ? मैंने कहा—मुझे इस में कौनसा पाप लगता है ? मैं तो फक्त कापी लिख कर देता हु, शास्त्र लिखने में तो कुछ पाप नहीं है, तब वे बोले आप के निमित्त से ही छपनेका सब आरंभ होता है ? मैंने पूछा-तुमारे में हर बारा महिने महासुद ७ का जो पाटोत्सव होता है, वह पूज्यजी ही स्थापन करते होंगे ? उनोंने कहा हां पूज्यजी स्थापन करते हैं, उस पर खरच कितनेक होता होगा ? उनोंने कहा—अंदाज

२० २५ हजार का होता होगा मैंने कहा इतना खरच किस लिये? उनोंने कहा एक दम दो सो तीन सो साधु साध्वी के दर्शन का लाभ प्राप्त कहा होता है इस लिये हजारों श्रावक श्राविका आते हैं उन के लिये इतना खरच होता है तब मैंने कहा इतना आरंभ पाटोत्सव स्थापन करनेवाले को लगता है क्या? वे बोले नहीं पूज्यजी कुछ आरंभ थोडी ही करते हैं, यह तो सब श्रावकों का काम है तब मैंने कहा कि—पाटोत्सव से उपकार क्या होता है? फिर वे कुछ बोले नहीं, तब मैंने कहा कि—मैं भी कुछ आरंभ नहीं करता हू छापने का काम गृहस्थों करते हैं पाटोत्सव से तो शास्त्रोद्धार का काम बडा उपकारी है, उक्त प्रकार सब कहा सुनकर सब चुप चले गये, इस प्रकार अपने लोगोंने भी प्रश्न किया जिन को तत्काल में हुवा युवाचार्यजी का रतलाम के उत्सव के दाखले से समजाये, यों जहां तक शास्त्रोद्धार कार्य चला तहां तक केई प्रसंग प्राप्त हुवे, परंतु किसी प्रकार की दरकार नहीं रखते जो काम धारन किया था उस को यथा शक्ति यथा बुद्धि यथा वचन जैसा बना वैसा किया है,

॥ भाषा शुद्धि ॥

पाठक गणों ! आप को जानना चाहिये कि जगत् में परिवर्तन क्रम अनादि से चला आता है, सब पदार्थों का पलटा होता ही रहता है तैसे ही भाषा का भी परिवर्तन भी सदैव होता ही रहता है और प्राचीन भाषा से अर्वाचीन भाषा उत्तमोत्तम पद प्राप्त करती रहती है इस काल में हुवे कईयों पण्डितों के व्याकरणादि ग्रन्थों का अवलोकन कीजिये पातजलाजी कृत व्याकरण में शाकटायनजीने खोट निकाली है, शाकटायनजी के व्याकरण को माघजीने अशुद्ध बताया है माघ काव्य में हरीभद्रजीने फरक निकाला है इस प्रकार अब भी परिवर्तन हो रहा है प्राय सब भाषाओं के ग्रन्थावलोकन कीजिये प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थों की भाषा में बहुत ही फरक देखने में आवेगा इस से अनुमान किया जाता है कि—अभी की सुधरी हुई भाषा को भविष्य लोक पंडितो अशुद्धी कहे इस में आश्चर्य ही कौनसा ? इस से जानना चाहिये कि—भाषा पंडितों (वैयाकरणियों) जो भाषा सम्बन्धी विवाद कर शीर्फ भाषा के ही पक्षपाती बन आशय अवलोकन किये बिना जो एकेक को सब झूठे बनाते हैं वे मिथ्यावादी गिने जाते हैं

२० २५ हजार का होता होगा मैंने कहा इतना खरच किस लिये ? उनोंने कहा एक क्षम दा सो तीन सो साधु साध्वी के दर्शन का लाभ प्राप्त कहा होना है इस लिये हजारो श्रावक श्राविका आते हैं उन के लिये इतना खरच होता है, तब मैंने कहा इतना आरभ पाटोत्सव स्थापन करनेवाले को लगता है क्या ? वे बोले नहीं पूज्यजी कुछ आरभ थोडी ही करते हैं, यह तो सब श्रावकों का काम है, तब मैंने कहा कि—पाटोत्सव से उपकार क्या होता है ? फिर वे कुछ बोले नहीं, तब मैंने कहा कि—मैं भी कुछ आरभ नहीं करता हू छापने का काम गृहस्थों करते हैं पाटोत्सव से तो शास्त्रोद्धार का काम बडा उपकारी है, उक्त प्रकार सब कहा सुनकर सब चुप चले गये, इस प्रकार अपने लोगोंने भी प्रश्न किया जिन को तत्काल में हुवा युवाचार्यजी का रतलाम के उत्सव के दाखले से समजाये, यों जहा तक शास्त्रोद्धार कार्य चला तहा तक केई प्रसग प्राप्त हुवे, परतु किसी प्रकार की दरकार नहीं रखते जो काम धारन किया था उस को यथा शक्ति यथा बुद्धि यथा वचन जैसा बना वैसा किया है,

भाषा दोष स्थापन कर महान हित करने वाले ग्रन्थोंको वखोड डालते हैं उस के लाभ प्राप्तिसे लोगों को वचते हैं सत्यकथनीयों के द्वेषी बना देते हैं वे कितना अन्याय करते हैं सो जरा विचारीये ! एक गुजराती कवीने कहा है "स्यु जाणे व्याकरणी, भजनने स्यु जाणे। कठ सूधी पूर्ण भरी पण स्वाद न जाणे त्ररणी भजनने• ॥ मतलब की व्याकरण के ज्ञाता हुवे विना अनुभव की प्राप्ति होती ही नहीं, ऐसे हठाग्री मिथ्या प्रलापी होते हैं वे ग्रन्थों के ग्रन्थों कठाग्र कर कदाचित् कठ तक ज्ञान से भरा गये हों तो भी अनुभव ज्ञान प्राप्त कर सकते नहीं हैं यह बात प्रत्यक्ष सिद्ध है परन्तु व्याकरण शास्त्र के ज्ञान विना भी केई महात्मा होगये हैं और वर्तमान में भी हैं

उक्त भाषा सम्बन्धी कथन इतने विस्तार से कहने का यह प्रयोजन है कि—मुझे खुद को भी भाषा शास्त्र का ज्ञान अधिक नहीं है, तथा मारवाडी, गुजराती, मराठी व हिन्दी भाषा में बोलने का मुझे बहुधा प्रसग प्राप्त होता है इस लिये मेरे लेख में उक्त चार भाषा में के शब्दों का सेल मेल होता है लेख लिखती वक्त जितना लक्ष विषय शुद्धी के सुधारे का रहता है, उतना भाषा शुद्धी का नहीं रहता है इस लिये मेरे लेख में भाषा

मुमुक्षु प्राणीयों का कर्तव्य है कि भाषा के विरुद्धावाद का त्याग कर शास्त्र के वचनाशय पर निघा धर अपना हित साधना चाहिये ! कि जिस से ज्ञान और ज्ञानवंत की आस्छा दना के भागी अपन नहीं बने

आप देख लीजिये स्वमत के प्राचीन रचित ग्रन्थों रासो स्तवन स्वाध्यायों वगरा की भाषा और अर्वाचीन देशी भाषामें ग्रन्थों ढालों राशो आदि की भाषा इस में बहुत तफावत दीखगा तो क्या वे सब अशुद्ध खोटे गिने जावेंगे अन्य मतावलम्बीयों के कबीरजी नानकजी आदि के बनाये ग्रन्थों पदों आदि का भी अवलोकन कीजिये भाषा शास्त्रीयों ? आप कहा तक भाषा का विवेक करोगे ? कहावत है कि " बारे कोसे बोली पलटे " अर्थात बारह २ कोसान्तर में भाषा का पलटा होता है हिंदी २ भाषा भी सब की एकसी नहीं होती है पंजाब की, दिल्ली की, आगरे की, कानपुर की, पूर्व की यह स्थान खास हिंदी भाषा बोलनेवाले के हैं तो भी इन में परस्पर बहुत भेद पावेगा यह तो जरूर समजीए केवल एक भाषा तो मिलना मुशकिल है ! प्राय सब भाषाओं अन्य भाषाओं कर मिश्रित बनी हुइ है, कोइ कम और कोइ ज्यादा ऐसा होते हुओ भी भाषा शास्त्रीयों पक्ष बनाकर

भाषा दोष स्थापन कर महान हित करने वाले प्रन्थोंको वखोड डालत हैं उस के लाभ प्राप्तिसे लोगों को षचते हैं सत्यकथनीयों के द्वेषी बना देते हैं वे कितना अन्याय करते हैं सो जरा विचारीये! एक गुजराती कवीने कहा है "स्यु जाणे व्याकरणी, भजनने स्यु जाणे। कठ सूधी पूर्ण भरी पण स्वाद न जाणे वरणी भजनने॰ ॥ मतलब की व्याकरण के ज्ञाता हुवे विना अनुभव की प्राप्ति होती ही नहीं, ऐसे हठाग्री मिथ्या प्रलापी होते हैं वे प्रन्थों के प्रन्थों कठाग्र कर कदाचित् कठ तक ज्ञान से भरा गये हों तो भी अनुभव ज्ञान प्राप्त कर सकते नहीं हैं यह बात प्रत्यक्ष सिद्ध है परन्तु व्याकरण शास्त्र के ज्ञान विना भी केई महात्मा होगये हैं और वर्तमान में भी हैं

उक्त भाषा सम्बन्धी कथन इतने विस्तार से कहने का यह प्रयोजन है कि—मुझे खुद को भी भाषा शास्त्र का ज्ञान अधिक नहीं है, तथा मारवाडी, गुजराती, मराठी व हिन्दी भाषा में बोलने का मुझे बहुधा प्रसग प्राप्त होता है इस लिये मेरे लेख में उक्त चार भाषा में के शब्दों का सेल भेल होता है लेख लिखती वक्त जितना लक्ष विषय शुद्धी के सुधारे का रहता है, उतना भाषा शुद्धी का नहीं रहता है इस लिये मेरे लेख में भाषा

सम्बन्धी अशुद्धीयॉ बहुत निकलती है उने देख कितनेक भाषा शास्त्रीयों अपवाद फैलाते हैं, ग्रन्थ पठन से गुण ग्रहण से लोगों को बचते हैं यहा से प्रसिद्ध हुवे पुस्तकों के वाद कितनेक स्थान से ऐसा जानने में आया इस लिये उन के आत्मा के हितार्थ तथा बहुत जीवों को ज्ञान की अन्तराय नहीं लगे इस हित मित विचार से इतना लिखने की यहा आवश्यकता जानी है क्यों कि यहा से जो शास्त्रों प्रसिद्धी में रखे जाते हैं उन का भाषानुवाद करते सावधानता रखते हुवे भी भाषा का मिश्रण होगया हो तो उस की तरफ लक्ष नहीं देते हुवे मूलाशय की तरफ दृष्टी रख गुण ही गुण के ग्राहक बनीये जिस आशय से यह कार्य किया है उस ही आशय को सफल कीजिये

॥ इति शास्त्रोद्धार मीमांसा समाप्तम् ॥

जैन शास्त्रोद्धार कार्यालय के कर्मचारी

कुरसीपे बैठे

१ मेनेजर मणिलाल शिवलाल शेठ
२ पंडित गजानन्द शास्त्री
३ क्लार्क सुखराज
४ फोरमेन व्यंकटस्वामी
५ हेड कंपोझीटर सखाराम

पीछे खडे हुवे

६ मशीनमेन ईरग्या
७ कंपोझीटर रामकैलास
८ स्थानक का दरोगा लछमैय्या
९ मेसमेन नागैय्या

नीचे बैठे हुवे

१० कंपोझीटर लक्ष्मीनारायण
११ कंपोझीटर सुखनंदन
१२ कंपोझीटर नरसय्या
१३ फोल्डर पन्नालाल

सम्बन्धी अशुद्धीयों बहुत निकलती है उने देख कितनेक भाषा शास्त्रीयों अपवाद फैलाते हैं, ग्रन्थ पठन से गुण ग्रहण से लोगों को बचते हैं यहा से प्रसिद्ध हुवे पुस्तकों के बाद कितनेक स्थान से ऐसा जानने में आया इस लिये उन के आत्मा के हितार्थ तथा बहुत जीवों को ज्ञान की अन्तराय नहीं लगे इस हित मित विचार से इतना लिखने की यहा आवश्यकता जानी है क्यों कि-यहा से जो शास्त्रों प्रसिद्धी में रखे जाते हैं उन का भाषानुवाद करते सावधानता रखते हुवे भी भाषा का मिश्रण होगया हो तो उस की तरफ लक्ष नहीं देते हुवे मूलाशय की तरफ दृष्टी रख गुण ही गुण के ग्राहक बनीये जिस आशय से यह कार्य किया है उस ही आशय को सफल कीजिये

॥ इति शास्त्रोद्धार मीमांसा समाप्तम् ॥

☞ मैं आज अत्यन्त हर्षानन्द में गर्क होकर चारों ही संघ से नम्र निवेदन करता हूं कि 'अमोलक ऋषि' नामक व्यक्ति बडी भाग्यशाली है, क्योंकि जिस को तपस्वीराज श्री केवल ऋषिजी महाराज के परम प्रताप से, गुरुवर्य महात्मा श्री रत्न ऋषिजी महाराज की शुभाज्ञा से और लालाजी सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी के सम्बन्ध से 'शास्त्र सेवा' का अपूर्व महालाभ प्राप्त हुवा बत्तीस ही शास्त्रों को व्याख्यान में सुनाना, हाथ से लिखना, प्रसिद्धि में रखना यह महा लाभ आज तक अमोल सिवाय अन्य को मिला हो ऐसा जानने में नहीं आया इस लिये अहो भाग्य मेरे !

शास्त्रोद्धार प्रारम
वीराब्द २४४२ ज्ञान पंचमी

इति
शास्त्रोद्धार मीमांसा
समाप्तम्

शास्त्रोद्धार समाप्ति
वीराब्द २४४६ विजयादशमी